ऐश्वरिक सत्य

पार्ट - II

सिद्धार्थ चटर्जी

Saptarshi Prakashan

First Edition:
January, 2014

Published by :
Saptarshi Prakashan
44A, Chakraborty Lane, Srirampur, Hooghly

Sales Counter:
51, Sitaram Ghosh Street, Kolkata - 700 009
Mobile : 98303 71467, 9974395017
Email : saptarshiprakashan@hotmail.com

Printed by :
Diamond Art Press
37A Bentinck Street,
Kolkata - 700 069

Cover Designed by :
Arun Deb Nath

Price :
450.00

इस पुस्तक की सुरक्षा और प्रसार की जिम्मेदारी मैं हजरत वारिस पाक को सौंपता हूँ।

सूचना

मेरी मातृभाषा हिंदी नहीं है, इस पुस्तक को हिंदी में लिखने का मुख्य कारण भारतवर्ष के ज्यादा से ज्यादा लोगों तक इस पुस्तक को पहुँचाना। मेरे साथ इस पुस्तक में काम करने वाले सुलभ श्रीवास्तव और जहांगीर आलम को मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। हम में से कोई भी हिंदी भाषा का पंडित नहीं और इसमें हर भुल चुक की जिम्मेदारी लेते हुए मैं क्षमाप्रार्थी हूँ और आशा करता हूँ पाठक मुझे और मेरी भावनाओं को समझते हुए मुझे क्षमा कर देंगे। कुरान शरीफ पढ़ते हुए मेरे दिमाग में जो भावना उत्पर्ण हुई मैंने उसी को इस पुस्तक के द्वारा लोगों के समक्ष रखने की कोशिश की है। मेरा उद्देश्य किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है, मेरी भावनाओं को पढ़ते हुए अगर किसी के दिमाग में किसी भी प्रकार के प्रश्न उत्पर्ण होते है तो मैं आग्रह करूंगा कि वो इस पुस्तक की व्याख्या और पैगाम पर गौर फरमाये ताकि उसका उत्तर वो स्वयं खोज पाए।

ये पुस्तक मैं माननीय जहांगीर आलम को समर्पित करता हूँ।

This is the book of explanation of the Holy Quran with logic science, spiritual physiology, human nature, linguistic and with the combination of love, peace, humanity, truth, knowledge, brotherhood and basic ideology of nature and religion. Under the holy light of Hazrat Mohammed (S.A.W.) and Hazrat Waris Ali Shah (Pak) and all the spiritual and religious incarnation and existance.

भूमिका

ईमान लाने वालों का कारसाज खुद अल्लाह ताला है वो उन्हें अंधेरों से रोशनी की तरफ निकाल ले जाता है और काफिरों के औलिया शैतान है। वो इन्हें रोशनी से निकाल कर अंधेरों की तरफ ले जाते है ये लोग जहन्नमी है जो हमेशा इसमें पड़े रहेंगे।

सुरा बकर आयत नं २५७

प्रेम, ज्ञान, अहिंसा, शांति और प्राकृतिक सत्य ही सर्वशक्तिमान ईश्वर प्राप्ति का रास्ता है। सृष्टि में अप्राकृतिक बोल कर कोई तत्व नहीं होता। सारे किया-प्रकिया प्रकृतिक है, यहां तक कि ''अप्राकृतिक शब्द भी प्रकृति पर आधारित है''। जिसे सच्चे ज्ञान का प्रकाश प्राप्त होता है उसे ही अल्लाह ताला की अनुकम्पा और आशीर्वाद प्राप्त है। जिसका दिमाग शांति से परिपूर्ण होता है उसे ही कष्ट और अशांति से मुक्ति मिलती है यानी ''अंधकार से उजाले की तरफ'' उसे अल्लाह ताला ले जाता है। सच्चा ज्ञान और शांति प्राप्त होने के बाद जो मनुष्य अपनी उत्वकांक्षा को जरूरत से ज्यादा लोभ, मोह-माया और हिंसा के द्वारा प्रभावित करते है, वही मानव उजाले से अंधेरे की तरफ चला जाता है।

कुरान शरीफ की हर आयत मानव और मानव समाज को ज्ञान, अहिंसा, शांति, प्रेम और मानवता की शिक्षा देती है। आयतों की भावधारा कभी भी मनुष्य के बुरे चरित्र से प्रभावित नहीं हो सकती। हिंसा की आग कभी भी इन आयतों को जला नहीं सकती और ये आयते मनुष्य की जरूरत से ज्यादा उत्वाकांक्षा का लक्ष्य नही बन सकती। आयतों के आदर्श अटल, अमर और अजय है (लाफानी, लाजवाल और लामहदूद)। इसकी बुनियाद सृष्टि की शुरूआत से लेकर अंत तक प्रकृति की हर अणु-परमाणु में प्रतिफलित होती है।

आयतों की बुनियाद सच्चाई पर है और इसके नियम इंसान और इंसानी समाज को बेहतर से बेहतर बनाने का हकदार है। आयतों की गहराई को समझकर इसे अपनी जीवन में लागू करना हर इंसान का कर्त्तव्य है और ये हर इंसान के लिए एक मुकम्मिल जीवनधारा है। समाज की पवित्रता के लक्ष्य में आयतों के सच्चे भाव आदर्शों को समस्त इंसानों तक पहुँचाना जिस जरह मेरा कर्त्तव्य है ठीक उसी तरह हर नेकी, मोहब्बत, अहिंसा और शांति चाहने वाले इंसानों का भी कर्त्तव्य है। अल्लाह के रहमों करम से जो भाव आदर्श मुझे प्राप्त हुए उसे समझते हुए मैंने इसे अपनी भाषा में लोगों को समझाना की कोशिश की है। आयतों को व्याख्या करते वक्त जो भाषा मेरे दिमाग में उत्पन्न हुई मैंने उसी को लिखित रूप प्रदान किया।

अल्लाह बेनयाज और तारीफों वाला है।

सुरा इब्राहीम आयत नं ८

जर्रा-जर्रा अल्लाह की तारीफ करता है मगर अल्लाह को किसी चीज की जरूरत नहीं। कूदरत के भंडार से जो भी इंसान को मिला उसकी सच्चाई और लक्ष्य इंसान और इंसानी समाज को तरक्की और शांति प्रदान करते है। मगर इंसान की मूर्खता इस बात को नहीं समझ सकती। कहीं-कहीं वे अपने लक्ष्य से भटक कर अपने चरित्र और अन्तात्मा को गुनाह से प्रभावित कर लेते है और अशांत हो जाता है। अहिंसा, प्रेम और मानवता में जो प्राप्ति है उससे ऐसे इंसान वंचित हो जाते है।

आज इंसान के पास जो कुछ भी है और सभ्यता के विकास के शुरूआत से इंसान को जो भी मिला वो सब मानव मस्तिश्क का कमाल है। आज तक मजहब को जिस तरह से सोचा गया उससे इंसान को और इंसानी सभ्यता को न हीं कोई लाभ पहुँचा और न पहुचेगा। मजहब से लाभ अगर किसी को हुआ तो वो केवल मजहब की ठेकेदारों को। झूठ-मुठ की कुछ कहानियां और कुछ बाते बेचकर इसे अपनी कमाई का जरियां बनाया। अल्लाह के अदृश्य अस्तित्व को हत्यार बनाकर इंसानी समाज को कु-संस्कार में ढकेल कर अपना दबदबा कायम रखने की कोशिश की। इंसानी समाज को इस साजिश से मुक्ति दिलवाने के लिए और मजहब को वैज्ञानिक नियमों के द्वारा समझाने के लिए पाक-परवरदिगार

ने मेरे दिमाग में मजहबी किताबों के वो राज प्रदान किये जिससे मानव और मानव समाज में ज्ञान, अहिंसा, प्रेम और मानवता फैलेगी।

अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत और इल्म प्रदान करते है।

सुरा बकर आयत नं १०५

विज्ञान के द्वारा ही मानव सभ्यता को ज्यादा से ज्यादा फायदा मिला। अल्लाह के सीधे और सच्चे रास्ते के द्वारा मानव और मानव सभ्यता को शांति और प्रगति प्राप्त हुई। शांति और प्रगति का लक्ष्य ही है मजहब की कशती ।

नदी, नाला, खाल और दरियां सबका पानी समुद्र में जाकर गिरता है। ठीक इसी तरह हर इबादत जिसमें सच्ची पुकार हो, प्रेम हो, सच्चाई हो और वो नजायज न हो और जिस इबादत से किसी को कोई नुकसान न हो या समाज को कोई नुकसान न हो या उसके खुद का नुकसान न हो वो सब खुदा की तरफ ही जाती है। कोई कितनी ही बहस क्यों न करे सृष्टि के आरंभ से आज तक यही हक है और कुरान शरीफ भी इसकी तस्दीख करता है। (२२/६७)

पवित्र मानव केवल पवित्रता, सच्चाई और ज्ञान की तरफ ही लोगों को बुलाते है। उनका लक्ष्य होता है शांति जो अल्लाह को बेहद पसंद है। फसाद करने वालों से अल्लाह नफरत करता है। कुरान शरीफ में फरमाया हर कोई अपने दीन और अपने अमाल का खुद जिम्मेदार है (१०९/६) और साथ में ये भी फरमाया कि इसमें कोई जबरदस्ती नही है। (२/२५६) हर सच्चाई बताने वाले नबियों पर ईमान लाने के लिए कहा गया (३/८४, २/१३६) ताकी सम्प्रदाय के नाम पर फसाद न हो और साथ में ये भी कहा गया है कि हर सम्प्रदाय में सच्चाई बताने वाले रसुल आये जिन्हें संस्कृत में अवतार कहा गया है। (१६/३६, १४/४)।

अल्लाह और उसकी सृष्टि से मोहब्बत और उसकी सच्चाई को पहचानना इंसान का पहला कर्त्तव्य है और ये क्यों ? प्रकृति तौर पर मनुष्य के अंदर ही अच्छे-बुरे की पहचान रखी जैसे कि एक ५ वर्ष का बच्चा भी ये समझ सकता है कि झुठ बोलना और चोरी करना पाप है। जब बच्चा कोई चीज चुराता है तो कूदरती तौर पर वो उसे छुपानी की कोशिश करता है ये बहुत ही हल्की बात है और ये सब लोग जानते भी है। मजहबी किताबें ये सारी हल्की बातें इंसानों को सिखाने के लिए नहीं है। क्योंकि कूदरत ये सारी बुनियादी बाते इंसान को खुद सीखा देती है। मजहबी किताब वो सच्चा रास्ता दिखाती है जिससे मनुष्य को सच्चा ज्ञान, अहिंसा और प्रेम के द्वारा शांति प्राप्त हैती है।

धर्म वो चीज है जिसे इंसान खुद अपने अंदर धारण करता है यानी इसका विवेक। कोई कपड़ा या रहन-सहन का तरीका नहीं और इस विवेक को पवित्र और शांतिपूर्वक रखने के लिए अल्लाह ताला ने इंसानी समाज में धर्म पुस्तकों की सृष्टि की और यही सत्य है फसाद करने वाले मनुष्य इसे बिलकुल नहीं समझते।

इंसान क्यों दुनिया में आता है?क्यों दुनिया में जीता है और क्यों वो मरता है?मानव जन्म सबसे उत्तम जन्म है।प्रकृति का आनंद और उसका लाभ जितना मानव उठा सकता है कोई भी दूसरा प्राणी उसका आनंद और लाभ नहीं उठा सकता। एक जानवर भी अपने अच्छे-बुरे की पहचान रखता है मगर मनुष्य ये नहीं समझता कि शांति और ज्ञान के द्वारा वो प्रकृति को बेहतरीन तरीके से समझ सकते है और इसका मजा ले सकते है। प्रकृति ने मनुष्य को उत्तम मस्तिक्ष दिया, फिर भी वो फसाद, जरूरत से ज्यादा लालच, ईर्ष्या और उत्वाकांक्षा से प्रभावित हो जाता है - ये क्यों?प्रकृति ने हर पहलू का विपरीत पहलू रखकर मानव को रंग-बिरंगा जीवन प्रदान किया और हर ख्यालात का मालिक अल्लाह है।

मेरे (सिद्धार्थ चटर्जी) जहन में कुरान शरीफ की आयतों के जो ख्यालात उत्पन्न हुए वो भी अल्लाह के है ये ख्यालात किसी को समझ में आये या न आये, किसी को अच्छा लगे या न लगे ये सब अल्लाह की मर्जी से ही होता है। दिमाग में ख्यालात उत्पन्न करना, उसे अंजाम देना या मिटाना ये सारे काम वो सर्वशक्तिमान अल्लाह का खेल है और ख्यालात के मतभेद भी कूदरत के नियमानुसार ही अंजाम पाते है। सृष्टि के नियमानुसार परिवर्तन समय चक्र अनुसार निश्चित है और इस नियम के बाहर कोई भी नही जा सकता।

मै कोई अनोखा रसुल नहीं। मै नही जानता कि मेरा साथ क्या किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या? मै तो उसी की इत्तबा करता हूँ जो मेरी तरफ वही होती है।

(सुरा एहकाफ आयत नं ९)

अल्लाह ने रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद को संबोधित करते हुए लोगों को कहा था कि रसुल का काम है सिर्फ पैगाम पहुँचाना। ये लोगों की निजी फितरत है कि वो सच्चाई को कबूल करने में कितने साबित कदम रहते है। जो सच्चाई रसुल-ए-पाक हरजत मोहम्मद ने लोगों तक पहुँचाई और तमाम रसुलों ने जो हक लोगों को समझाया था समय के दायरे में जब लोग उस हक से दूर होते गये तब अल्लाह ताला की मर्जी से इस हक को लोगों तक पहुँचाना मै अपनी जिम्मेदारी समझता हूँ और ये इसकी एक अदना कोशिश है कि लोगों के बीच का फसाद और नफरत कम हो।

सुरा -फातिहा सुरा -बकर सुरा -इमरान सुरा -निसा सुरा -माइदा सुरा -अनआम सुरा -आराफ- सुरा अनफाल सुरा -तौबा सुरा यूनुस - कुरान शरीफ की इन सुरतों की व्याख्या हक-ए-इलाही पार्ट २ में प्रकाशित की जा रही है और जैसे-जैसे और सुरते मुकम्मिल होती जाएंगी उसे मै अपना फर्ज समझते हुए उन्हें प्रकाश करने की चेष्टा करता रहूँगा। कुरान शरीफ के और भी बहुत सारे रहस्य धीरे-धीरे प्रकाश होते रहेंगे।

धर्म मानव के अन्तात्मा को अनुशाषित करती है लेकिन जब मानव की अन्तात्मा कु-संस्कार से प्रभावित हो जाती है तब धर्म की आदर्शों से बढ़कर मानव मस्तिक्ष में कु-संस्कार अपना प्रभाव विस्तार कर लेते है, और मानव की इच्छापूर्ति ना होने पर जो हताशा की सृष्टि होती है कुसंस्कार उसका लक्ष्य बन जाता है, और धर्म के बुनियादी आदर्शों को भुलाकर मानव कु-संस्कार को अपना धर्म मानने लगता है। उसके लिए आचार-विचार या रश्म रिवाज मुख्य हो जाते है। धर्म के मुल उद्देश्य उसके लिए कोई महत्व नहीं रखता। उदाहरण स्वरूप कुरान शरीफ की सुरा तहरीम की आयत नं १०-११ का उल्लेख करना एक महत्वपूर्ण सूचना और प्रमाण है- ''अल्लाह काफिरों के शिक्षा के लिए नूह और लूथ की बीवियों की वर्णनाना देते है। दोनों ही अल्लाह की दो नेक बंदों की पत्नी होने के बावजूद विश्वासघातकता की फलस्वरूप उन्हें अल्लाह के अजाब से मुक्ति नहीं मिली और कहा गया था कि तुम जहन्नमियों के साथी हो जाओ।''

अल्लाह ताला ने ईमान वाले के उदाहरण स्वरूप फिरौन की पत्नी की वर्णनना दी, जब उन्होंने कहा ऐ -अल्लाह! जन्नत में मेरे लिए एक माकन बनाओ और मेरी रक्षा करो फिरौन और उनके जुल्म और उनके चरित्र से और मेरी रक्षा करो इस अत्याचारी सम्प्रदाय से--- पहली आयत में पैगम्बर लूथ और पैगम्बर नूह की बीवियों को काफिर कहा गया, जबकि उन दोनों के पति पैगम्बर थे और ये इसलिए की ''काफिर'' शब्द एक मानव चरित्र की व्याख्या करता है, किसी पैगम्बर की पत्नी होना या किसी विशेष सम्प्रदाय का होना या न होना इस शब्द को प्रभावित नहीं करता। ठीक इसी तरह इसके बाद वाले आयत में अत्याचारी राजा फिरौन की पत्नी को ईमान वाली बीवी का दर्जा दिया गया क्योंकि वो पवित्र और शांतिकामी मानवता की पुजारी थी।

क्षमा, प्रेम, अहिंसा, शिक्षा, मानवता, पवित्रता, शांति, दया, ममता, भ्रातित्व - ये सारे अनुभव मानव मस्तिक्ष में डाल कर कूदरत ने मानव को रिश्तों में बांधा और इन रिश्तों के द्वारा ही मानव समाज की सृष्टि हुई। इन शब्दों के आदर्शों का उल्लंघन अल्लाह के आदर्शों का उल्लंघन है। इसलिए कोई भी धर्म ये सारे आदर्शों के विरूद्ध जाकर कोई भी कार्य करने की अनुमति नहीं देते। इन शब्दों के आदर्शों का पालन करना अल्लाह के आगे सजदा करना है और इसकी शिक्षा धर्म पुस्तकों से मानव को मिलती है।

मेरा विचार किसी को नीचा या उंचा दिखाने का नहीं है। अल्लाह ने मेरे मस्तिक्ष में उनकी आयतों की जो विचारधारा डाली मैने सिर्फ उनकी व्याख्या की, मेरी दुर्बल भाषा शैली के लिए मै क्षमापार्थी हूँ, मेरे मस्तिक्ष में जब जिस तरह की भाषा की उत्पत्ति हुई मैने उसी तरह आयतों की व्याख्या की।

सिद्धार्थ चटर्जी

सूचि

१ सुरा -फातिहा
२ सुरा -बकरा
३ सुरा आले-इमरान
४ सुरा -निसा
५ सुरा अल-माइदा
६ सुरा अल-अनआम
७ सुरा अल-आराफ़
८ सुरा अल-अनफ़ाल
९ सुरा -तौबा
१० सुरा -यूनुस

किताब में हिंदी और अरबी कुरान की आयते इंटरनेट से डाउनलोड कि गेइ है इसलिए इसकी भाषा की जिम्मेदारी मेरी नही है।

बंगला और अंग्रेजी भाषा में प्रकाशना के साथ साथ हिंदी में ग्रंथ प्रकाश करने की ''सप्तर्षी'' की यह पहली उद्योग है। कह सकते है इस प्रचेष्टा में, हमें शामिल करने में मजबूर किया, इस पुस्तक का विषय और लेखक की दूरदृष्टि।

हमलोग ऐसे समय से गुज़र रहे है, जहाँ पर धर्म के नाम पर विवाद— सिर्फ हमारा देश ही नहीं, बल्कि सारी पृथ्वी में एक दुशचिन्ता की सृष्टि कर रही है। ठीक इसी समय, श्री सिद्धार्थ चटर्जी का कूरान की व्याख्या एक परिपूर्ण भावधारा की पुस्तक है। विशेष तौर पर इसे राष्ट्रीय भाषा में प्रकाश करना एक आवश्यक प्रयास है।

आशा है कि ''ऐश्वरिक सत्य'' पूरा भारतवर्ष उत्साह के साथ इसे ग्रहण करेंगे।

Saptarshi Prakashan

51, Sitaram Ghosh Street, Kolkata - 700 009

सुरा फातिहा

आयत ७

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ{1}

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है (१)

व्याख्या:- कहो तमाम आरंभ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्षमाकारी है।

الْحَمْدُ للهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ {2}

सब तारीफ अल्लाह ही के लिए है और सारे जहाँन का पालने वाला (२)

व्याख्या:- सारी प्रशंसा तमाम संसार बनाने वाले की।

पैगाम:- अल्लाह ताला को कोई भी प्रशंसा की जरूरत नहीं।इस प्रशंसा का मतलब है कि अल्लाह की प्रकृति से जो आनंद हमें मिलता है उसका कृतज्ञता स्वीकार करना।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ {3}

बड़ा मेहरबान रहम वाला है (३)

व्याख्या:- बड़ा दयालु और क्षमाकारी है

पैगाम:- सब प्राणियों का पालनहार है अल्लाह की प्रकृति जो सिर्फ अल्लाह की शक्ति द्वारा नियंत्रित होता है।

مَالِكِ يَوْمِ الدِّينِ{4}

रोज़े जज़ा का मालिक है (४)

व्याख्या:- अतीत, वर्तमान और भविष्य और समय चक्र के साथ-साथ सृष्टि की हर क्रिया-प्रक्रिया का मालिक।

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ{5}

हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं (५)

व्याख्या:- प्रकृति मानव का सबसे बड़ा साथी है और मददगार भी है और ये अल्लाह की शक्ति द्वारा नियंत्रित होती है और मानव अल्लाह से ही मदद मांगते है।

اهدِنَـــا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ {6}

तो हमको सीधी राह पर साबित क़दम रख (६)

व्याख्या:- सत्य, प्रेम, शिक्षा, मानवता, भाईचारा, अहिंसा और शांति का पथ ही मानव का सीधा और सच्चा पथ है। ऐ अल्लाह! हमें उसी रास्ते पे कायम रहने में मदद फरमाइएं।

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنعَمتَ عَلَيهِمْ غَيرِ الْمَغضُوبِ عَلَيهِمْ وَلا الضَّالِّينَ {7}

उनकी राह पर जिन्हें तूने नेअमत अता की है न उनकी राह जिन पर तेरा ग़ज़ब ढाया गया और न गुमराहों की (७)

व्याख्या:- हमें सच्चे, पवित्र और प्रेम के रास्ते पर चलाओ जिन पर सम्मान और शांति की जीवन की पुरूषकार है। उनपर नहीं जिन पर पाप और अशांति की अभिश्राप है।

अल्लाह इतना दयालु और मेहरबान है कि मानव के सुविधा के लिए उनके प्रार्थना की मंत्र मानव के मौखिक भाषा में व्याख्या किया।

सुरा-बक़रा

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है।(१)

व्याख्या:- तमाम आरंभ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्षमाकारी है।

الٓمٓ

व्याख्या:- अलीफ-से अल्लाह दूसरा कोई नहीं, यानी सृष्टि की हर अणु-परमाणु और क्रिया-प्रक्रिया सब अल्लाह की है और सृष्टि की सारी वस्तुएं अल्लाह की शक्ति द्वारा ही जन्म लेती है, प्रचालित होती है और विनाश होती है उसकी मर्जी के बगैर कुछ भी संभव नहीं। वैज्ञानिकों ने अल्लाह की आर्शीवाद से एक तत्त्व अविष्कार किया, जो अल्लाह के रहस्मय शक्ति की विवरण प्रदान करती है। एटम (परमाणु) के अन्दर प्रोटोन, इलैक्ट्रोन और न्यूट्रोन होता है, प्रोटोन बनता है क्वार्क और ग्लुऑन नाम की अतिखुद्र कना से, एक ग्लुऑन के साथ तीन क्वार्क कना जोड़कर न्यूट्रोन और प्रोटोन बनते है और उसके बाद परमाणु। बीग बैंग के समय जब ब्रह्माण्ड की सृष्टि हुई तब शुरु में परमाणु मौजूद नहीं थे और न्यूट्रोन, प्रोटोन भी नहीं था, सिर्फ क्वार्क और ग्लूऑन कना ही मौजूद थी, उस वक्त का तापमान एक लाख करोड़ डिग्री सेल्सियस था। जब धीरे-धीरे तापमान कम होने लगा तब परमाणु की सृष्टि हुई। ये सारी क्रिया-प्रक्रिया अल्लाह की शक्ति द्वारा परिचालित हुई थी और अभी भी हो रही है यानी भूत, भविष्य तथा वर्तमान की क्रिया-प्रक्रिया इसी शक्ति द्वारा संगठित होती है, इसलिए अल्लाह ही है और इसके सिवा कुछ नहीं और ये शक्ति अदृश्य, अविनाशी, अमर और अजय है।

लाम से ----- ''ला इलाहा इलाल्लाह'' यानी अल्लाह के सिवा कुछ भी नहीं। यानी सब कुछ अल्लाह ही का है या अल्लाह की है यानी अल्लाह है तो हम है। अल्लाह और उसकी सृष्टि दोनों अलग-अलग नहीं है । सृष्टि की हर अणु-परमाणु में अल्लाह की उपस्थिति या उसकी शक्ति की उपस्थिति दोनों एक है और इससे ये बात साबित होती है कि सिवाये अल्लाह के कुछ भी नहीं यानी ला इलाहा इलाल्लाह।

मीम से मोहम्मद ---- प्रेम, भाईचारा, मानवता, अहिंसा, ज्ञान, संयम और शांति की पथप्रदर्शक मोहम्मद है। प्राकृतिक सत्य और मानव की जीवनधारा की पथ बताने वाले मोहम्मद है और यही आदर्श को मानव समाज में लागू करने वाला तमाम पवित्र मानव की निशानदेही करता है मोहम्मद।

ذٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ {2}

वह किताब है। जिस में कुछ भी संदेह नहीं परहेज़गारों की रहनुमा है (२)

व्याख्या:- अल्लाह की सत्यता और प्राकृतिक आदर्शों पर कोई संदेह नही जो मानव और मानव सभ्यता के लिए ''मार्ग दर्शक'' है और ये कुरान इन्हीं आदर्शों का पुस्तक रूप है।

पैगाम:- संदेह की बात वहां की जाती है जहां पर सच्चाई कमजोर हो, अल्लाह की समस्त प्रकृति परम सत्य है। मानव स्वभाव को सामने रखते हुए इस आयत में संदेह की बात की गयी है और ये इसलिये की इस आयत की सच्चाई और गहराई को लोग समझे। अदृश्य अल्लाह एक रहस्य है और इस रहस्य पर हमेशा मानव ने संदेह किया और अलग-अलग किस्म के कुसंस्कार में डूब गए। इसी बात को सामने रखते हुए इस आयत में संदेह की बात की गयी है। मानव का संदेह मानव को खोज में उत्साहित करता है और जबतक परिणाम नहीं मिलता तबतक मानव उस खोज के उपर अलग-अलग तरह का अयौगतिक तत्व का निर्णय कर लेता है और वही सोच कभी-कभी कु-संस्कार का रूप धारण कर लेता है।

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ {3}

जो ग़ैब पर ईमान लाते हैं और नमाज़ अदा करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से खर्च करते हैं (३)

व्याख्या:- पाक-परवरदिगार मानव के लिए रहस्य है जो लोग इस रहस्य पर इमान रखते है और सभ्यता, संयम, मानवता, प्रेम, अहिंसा और सुख-शान्ति (नमाज) के आदर्श को अपना जीवन और समाज में लागू करते है और पाक परवरदिगार की दी हुई प्रकृति का आनंद उठाते है और सृष्टि के भंडार से जो उन्हें मिलता है उसी में से खर्च करते है।

पैगाम:- नमाज का कोई विशेष तरीका कुरान में उपलब्ध नहीं है और रसूल-ए-पाक हजरत मोहम्मद की जन्म से

पहले भी नमाज अदा की जाती थी। कुरान-शरीफ की सुरह अलहज आयत नम्बर ६७ में अल्लाह ताला ने फरमाया की उन्होंने हर सम्प्रदाय के लिए इबादत का तरीका अलग-अलग नियुक्त किया है और सुरा बकर की आयत १३६ और सुरा इमरान की आयत ८४ में भी हर नबी पर ईमान लाने का उपदेश देकर इन आदर्शों को और भी स्पष्ट किया गया। कुरान-शरीफ एक परिपूर्ण किताब है और मानव जाति तथा मानव सभ्यता के लिये अल्लाह के तरफ से आशीर्वाद स्वरूप मानव को मिला ताकि मानव का जीवन सुखमय हो। इसी कारण कुरान में बतायी हुई नमाज अल्लाह के वो पुजा-पद्धति है जो चारित्रिक गुण के द्वारा निभाया जाता है। मानव प्रकृति की उत्तम सृष्टि है और मानव तथा मानव सभ्यता के लिए कुछ नियम प्रकृति ने मानव को दिया और इस नियम को ही नमाज कहते है। हर सम्प्रदाय की पुजा-पद्धति अलग-अलग है और ये अल्लाह के तरफ से हर सम्प्रदाय को मिला क्योंकि अल्लाह के अनुमति के बगैर पृथ्वी में कोई भी किया-प्रक्रिया संभव नहीं और यही वजह है कि कुरान में कोई खास पुजा-पद्धति का वर्णन नहीं किया गया। प्रार्थना का सबसे उत्तम तरीका है कि मानव अपने चरित्र के दोष और गुण को पहचाने और अपने आपको पाप मुक्त रखें और अपने अस्तीत्व से किसी को भी कष्ट न दे।

नोट:- रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद के द्वारा बताया हुआ नमाज का तरीका उत्तम है जो शारीरिक और मानसिक लाभ प्रदान करता है और इसके साथ-साथ मानव को भाईचारे की शिक्षा और अनुशासित बनने में भी मदद करता है।

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ {4}

और जो कुछ तुम पर और तुम से पहले नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाते हैं और वही आख़िरत का यक़ीन भी रखते हैं (४)

व्याख्या:- जो लोग रसूलों के द्वारा मिली हुई समस्त आदर्शों पर ईमान रखते है और वह आखत पर भी ईमान रखते है।

पैगाम:- मानव दो किस्म के कर्त्तव्य का पालन करता है, एक अपने लिये दूसरा समाज के लिये। रसूलों की उपदेश मानकर मानव अपनी पूरी जीवन में सुख-शान्ति प्राप्त कर सकता है और साथ-साथ इन हिदायतों के द्वारा समाज के लिए जो कर्त्तव्य मानव के लिए बनता है उसका पालन करके मानव अपने आने वाले नस्ल के लिए भी सुख-शान्ति वाली समाज छोड़ सकते है। रसुल सच्चाई व्याख्या करते है और इंसानी सभ्यता की तरक्की का मार्ग दर्शन भी करते है। सृष्टि के नियमानुसार समय के परिवर्तन के साथ-साथ हर वस्तु की अवस्था का रूपांतर होता है। जब एक अवस्था से दूसरी अवस्था में किसी भी वस्तु की हालत का रूपांतर होता है तो मानव की भाषा में इसे मृत्यु कहते है। ठीक इसी तरह पृथ्वी पे मानव से पहले दूसरे प्राणी थे उदाहरण ''डायनासोरस'' फिर समय चक्र में मानव सभ्यता का विकास हुआ और इस समय चक्र में मानव सभ्यता का अंत भी होगा। इस अंत को कयामत यानी प्रलय कहते है। कारण कुछ भी हो कयामत अवश्य आयेगी और मानव को इस नियम पर ईमान लाने के लिए कहा गया है। इसका कारण ये है कि मानव की उत्वाकांक्षा लोभ मोह-माया और मानव मस्तिक्ष के सारे बुरे चरित्र पर नियंत्रण रखना ताकी मानव पाप कर्मो में लुप्त होकर न रह जाये। अगर पृथ्वी का हर मानव कयामत की गंभीरता को समझ जाये तो मानव सभ्यता में हिंसा और भेद-भाव पुरी तरह से मिट जायेगा। मृत्यु आवश्यक है, इस आदर्शों को अगर मानव ठीक तरह से उपलब्ध कर सकते है तो मानव मस्तिक्ष में जरूरत से ज्यादा लोभ और लालसा की उद्‌भव नहीं होगी।

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ {5}

यही लोग अपने परवरदिगार की हिदायत पर हैं और यही लोग अपनी दिली मुराद पाएँगे (५)

व्याख्या:- जो मनुष्य इन आदर्शों को सही तरीके से अनुभव करते है और किसी भी रसूल को छोटा या बड़ा समझकर उनके आदर्शों को विभाजित नहीं करते, ऐसा मनुष्य ही शांति और मुक्ति की पथ को अपनाया और

हिदायत पाई। ऐसे लोग हिंसा और अशांति की आग से मुक्त है।

पैगाम:- धर्म के विषय में कोई किसी का उत्तरदायी नहीं है, हर किसी को अपने कर्मों का फल (सजा और जजा) खुद भुगतना पड़ता है। इस लिहाज से दूसरों से हिंसा और नफरत रखना अपनी ही अशांति का कारण है।

{6} إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उनके लिए बराबर है ख़्वाह तुम उन्हें डराओ या न डराओ वह ईमान न लाएँगे (६)

व्याख्या:- पाक-परवरदिगार के नियम जो रसूलों के द्वारा मानव को मिले इसे न मानने वाले लोगों (काफिर) को जितना भी अशांति के प्रकोप से डराया जाए वो नहीं मानेंगे उदाहरण के तौर पर लालच, हषद और हवस मानव की अशांति का कारण है। जरूरत से ज्यादा ये वस्तुऐं जब मानव के दिमाग में बस जाती है तब मानव किसी भी हिदायत पर अमल नहीं कर सकता और जितने भी उसके बुरे लक्षणों के बारे में समझाया जाये वो इस हिदायत को नही मानता। जो मनुष्य सृष्टि के नियमों को (यानी मानव और मानव सभ्यता के लिए जो नियम नियुक्त किए है) अपनी अन्तात्मा से उपलब्ध नहीं करें और अपने कर्मों से उसे विनष्ट करते है वही काफिर है।

पैगाम:- इस आयत पर कुछ सवाल आते है:- अगर मुसलमानों के अलावा बाकी सारे काफिर है तो उन्हें डराए या न डराए वो ईमान नहीं लाएंगे। इस नियम की बुनियाद पर ये कह सकते है कि रसलु-ए-पाक हजरत मोहम्मद ने जब इस्लाम नाम की सम्प्रदाय की बुनियाद डाली थी तब उनके ईद-गिर्द सब काफिर थे और उनमें से ही लोगों ने रसुल के बताये हुए आदर्शो को समझा। जब अल्लाह सब कुछ जानता समझता है और काफिर न समझ है, ये अल्लाह खूब समझता है तो रसुलों को हिदायत नामा देने का क्या मतलब? सवालों की बुनियाद पर ये साबित होता है कि गुनहगार मानव जिसने पाप को दिलों दिमाग से कबूल कर लिया है वही काफिर है और ऐसे लोगों की जिद अल्लाह के सत्य और लाभकारी नियमों को अनुभव करने नहीं देती।

{7} خَتَمَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَعَلَىٰ سَمْعِهِمْ وَعَلَىٰ أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ

उनके दिलों पर और उनके कानों पर खुदा ने तसदीक़ कर दी है और उनकी आँखा पर परदा है और उन्हीं के लिए बड़ा अज़ाब है (७)

व्याख्या:- परमेश्वर ऐसे लोगों का विवेक मुर्दा कर देते है और उनके सोचने, समझने की क्षमता खत्म कर देते है और उनको अशांति का अभिश्राप देकर नर्क का जीवन व्यतीत करने पर बेवस कर देते है।

पैगाम:- पाप कर्मों को अपना लक्ष्य समझने वाले लोगों का विवेक अपने लक्ष्य के अलावा न ही कुछ देख सकता है और न ही कुछ सुन सकता है और ये पुरी तरह अल्लाह की मर्जी से ही होता है। अपने उत्वकांक्षा और लोभ मानव को पाप कर्मों में उत्साहित करते है और जिद से अंधे, बहरे तथा गूंगे हो जाते है और उनका हृदय पवित्रता की लाभकारी फलों को समझ नहीं पाता। मानव समाज और सभ्यता में पाप है तो ही मानव पुण्य के फल को अनुभव कर सकता है। पाप-पुण्य, सुख-दु:ख के साथ मानव जीवन बना है और इससे ही मानव समाज और मानव जीवन परिपूर्ण होता है।

{8} وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُم بِمُؤْمِنِينَ

और बाज़ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम खुदा पर और क़यामत पर ईमान लाए हालाँकि वह दिल से ईमान नहीं लाए (८)

व्याख्या:- कोई-कोई मनुष्य मौखिक तौर पर अल्लाह और उसके आदर्शों पर ईमान रखने का दावा करते है लेकिन अपने जीवन में उसका प्रयोग नहीं करते, ऐसे लोग निश्चित रूप से सभ्य और पवित्र नहीं।

पैगाम:- कुछ दुष्कर्मी और अपवित्र मानव ऐसे होते है जो ईमान का दावा करते है केवल दिखावे के लिये,

नकाबपोष, धोखेबाज मनुष्य सदेव पवित्रता का ढोंग रचाते है और अपने चेहरे को इस तरह से सजाते है जैसे कि वो अल्लाह के सारे आदर्शों का पालन करते है। इस तरह की वस्त्र धारण करते है जैसे कि कोई संत हो। झूठ और धोखा ऐसे लोगों का लक्ष्य होता है। हर वक्त अल्लाह या ईश्वर की शपथ लेते रहते है, ऐसे मानव दुष्कर्मी होते है। झूठों को ही अल्लाह की शपथ लेने की आवश्यकता पड़ती है। सच्चाई और सच्चे मानव का प्रकाश इतना उज्जवल होता है कि वो हमेशा समाज में दिखाई देते है और उन्हें शपथ लेने की आवश्यकता नही होती।

يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَمَا يَخْدَعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُم وَمَا يَشْعُرُونَ {9}

खुदा को और उन लोगा को जो ईमान लाए धोखा देते हैं हालाँकि वह अपने आपको धोखा देते हैं और कुछ शऊर नहीं रखते हैं (९)

व्याख्या:- ऐसे लोग समझते है कि वो अल्लाह ताला और ईमान वालों को धोखा देते है और इसमें खुश रहते है लेकिन अफसोस ऐसा करके वो अपने आपको धोखा दे रहे है और अशांति की जीवन प्राप्त करते है।

पैगाम:- अल्लाह या ईश्वर के आदर्श को अपनी जीवन में लागू किये बगैर सिर्फ रश्मों रिवाज पर अमल करके अल्लाह का सभ्य बंदा होना नामुमकिन है। अल्लाह ईश्वर या प्रकृति के तमाम आदर्श जो लोगों के लिए कर्त्तव्य है, वह है सभ्यता, प्रेम, संयम, मानवता, अहिंसा, शिक्षा, सुख-शान्ति और प्राणियों की सेवा और यही है बुनियाद यानी सच्चा और शांति का पथ।

فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ {10}

उनके दिलों में मर्ज़ था ही अब खुदा ने उनके मर्ज़ को और बढ़ा दिया और वह लोग झूठ बोला करते थे इसलिए उन पर तकलीफ देह अज़ाब है (१०)

व्याख्या:- ऐसे लोगों के बिमार विवके को पाक परवरदिगार और भी बिमारी देकर अशांति के प्रकोप में ग्रस्त कर देते है।

पैगाम:- नकाब-पोष बेहरूपी मानव अपने उत्वकांक्षा के वश में आकर लोगों को ईश्वर के नाम से धोखा देते है। ऐसे लोगों की उत्वकांक्षा इतनी अधिक होती है कि इसकी पूर्ति के लिए धर्म को हतियार बना लेते है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ {11}

और जब उनसे कहा जाता है कि जमीन में फ़साद न करते फिरो कहते हैं कि हम तो सिर्फ इसलाह करते हैं (११)

व्याख्या:- समाज को संवारने के नाम पर मानव को आपस में धर्म के नाम पर लड़ा कर ऐसे लोग कहते है कि हम तो लोगों को सबक दे रहे है और सत्य कायम करने के लिये फसाद कर रहे है।

पैगाम:- ऐसे लोगों को किसने ये जिम्मेदारी दी? सत्य सिर्फ अल्लाह का ही है और इस पृथ्वी में बसने वाले सारे प्राणी अल्लाह के है और इसको संवारने का उत्तरदायी अल्लाह ने किसी को नहीं सौंपी । (109/6, 2/256) धर्म के मामले में कोई किसी का उत्तरदायी नही है और धर्म मानव और अल्लाह की मेल-बंधन है और इसका उत्तरदायित्व सिर्फ अल्लाह के सामने ही है। अंजान लोगों को धर्म की सच्चाई बताये बगैर अपना दबदबा कायम करने के लिये या अपना फायदा पाने के लिए जो मानव धर्म का गलत इस्तमाल करता है वो अल्लाह या प्राकृतिक आदर्शों को तोड़ने वाला काफिर है। हर कोई अपने-अपने आदर्शों को दूसरों पर थोपने की कोशिश करते है या अपने आदर्शों को सर्वश्रेष्ठ और दूसरो के आदर्शों को गलत कहे तो निश्चित रूप से मानव समाज में हिंसा की नींव फैल जाएगी। हिंसा अल्लाह के आदर्शों के विरूद्ध है, सम्प्रदायिक सोच एक ऐसा आदर्श है जो मानव को सदेव झगड़ा पे उत्साहित करते है। आदर्शों के नींव पर सम्प्रदाय की सृष्टि मानव का भ्रम है और इसके साथ-साथ रूपरंग, आर्थिक अवस्था, रहन-सहन का तरीका इन सारे बातों पर भी सम्प्रदाय की सृष्टि बेबुनियाद है। चरित्र के आधार पर मानव के मध्य सिर्फ दो ही सम्प्रदाय है और वो है पवित्र और अपवित्र यानी पाप-पुण्य की सम्प्रदाय और इस आयत का यही पैगाम है। (६४/२)

'لا إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُونَ وَلَكِن لاَّ يَشْعُرُونَ {12}

ख़बरदार हो जाओ बेशक यही लोग फ़सादी हैं लेकिन समझते नहीं।

व्याख्या:- ऐसे लोगों को पहचानना और इससे अपने आप को और समाज को बचाना समझदारी की निशानी है और फसाद करने वाले यकिनन न समझ है और फसाद फैलाकर अपने शांति को बिगाड़ते है। प्राकृतिक तौर पर अल्लाह अपने आदर्श और सत्य ज्ञान लोगों के मस्तिक्ष में डाल देते है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ قَالُوا أَنُؤْمِنُ كَمَا آمَنَ السُّفَهَاء أَلا إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَاء وَلَكِن لاَّ يَعْلَمُونَ {13}

जब उनसे कहा जाता है कि जिस तरह और लोग ईमान लाए हैं तुम भी ईमान लाओ तो कहते हैं क्या हम भी उसी तरह ईमान लाएँ जिस तरह और लोग ईमान लाए, ख़बरदार हो जाओ यही लोग बेवक़ूफ़ हैं लेकिन नहीं जानते (१३)

व्याख्या:- अहिंसा, मानवता और सुख-शान्ति चाहने वाले लोगों को दंगा करने वाले लोग बेवकुफ और कमजोर समझते है और उनकी राह पर चलने से इनकार करते है।

पैगाम:- ईमान का झुठा दावा करने वाले लोगों के मस्तिक्ष में अल्लाह ने ऐसा पर्दा डाला कि मरते दम तक (कयामत के दिन तक) वो लोग शैतान के बन्दे बनकर रह जाएंगे और यकीनन ये लोग बेवकुफ है जो हिंसा और घृणा के द्वारा अशांति प्राप्त करते है और दिल में द्वेश रखकर अपनी मानसिक पीड़ा प्राप्त करते है। सुख-शांति की पथ को अपने जीवन में पूरी तरह से ग्रहण करना ही ईमान लाना है।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا إِلَى شَيَاطِينِهِمْ قَالُوا إِنَّا مَعَكُمْ إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُونَ {14}

और जब उन लोगों से मिलते हैं जो ईमान ला चुके तो कहते हैं हम तो ईमान ला चुके और जब अपने शैतानों के साथ तनहा रह जाते हैं तो कहते हैं हम तुम्हारे साथ हैं हम तो बनाते हैं (१४)

व्याख्या:- ऐसे लोग सभ्य और संयमी लोगों के सामने अपने चरित्र को अच्छा साबित करने की चेष्टा करते है और जब अपने तरह के पापियों के पास जाते है, तो उन्हीं का साथ देते है और सभ्य लोगों के सभ्यता और शांति के पथ का मजाक उड़ाते है।

पैगाम:- निकाबपोश बेहरूपिया चरित्र का पापी मानव।

اللّهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ {15}

खुदा उनको बनाता है और उनको ढील देता है कि वह अपनी सरकशी में ग़लत पेचाँ रहें (१५)

व्याख्या:- अपने पाप कर्मों को सच्चा प्रमाण करने की चेष्टा में तरह-तरह के बहानों के द्वारा कुछ लोग पापकर्मो में उलझ कर रह जाते है, ये भी अल्लाह की मर्जी है। मनुष्य के दरमियान पाप-पुण्य का भेद बरकरार रखने के लिये अल्लाह कुछ लोगों के विवेक को पाप कर्मों में बढ़ावा देते है ताकि मनुष्य के जीवन में एकांत न हो पृथ्वी में पाप की मौजूदगी मनुष्य को पुण्य की आवश्यकता और उसकी फल की याद दिलाती है। मनुष्य का विवेक पाप या पुण्य का रास्ता चुनता है, एक दायरे तक ये निर्णय मनुष्य के खुद के अधिकार में होता है और इसके बाद ये प्रकृति के मर्जी के अनुसार हो जाता है। मानव का विवेक कभी भी और किसी भी वक्त बदल सकता है।

أُولَـئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلالَةَ بِالْهُدَى فَمَا رَبِحَت تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ {16}

यही वह लोग हैं जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही ख़रीद ली, फिर न उनकी तिजारत ही ने कुछ नफ़ा दिया और न उन लोगों ने हिदायत ही पाई (१६)

व्याख्या:- ऐसे लोगों ने अशांति को शांति के बदले, अज्ञानता को ज्ञान के बदले ग्रहण किया, न ही उन्हें शांति मिली और न ही वो दूसरों को शांति दिलवा सके। एक वक्त तक मानव का विवेक उसके अधिकार में रहता है, ज्यादा पाने कि उत्वाकांक्षा जब उसके विवेक को पथभ्रष्ट कर देते है तब उसका विवेक उसके वश से बाहर हो जाता है और वो सभ्य और सच्ची बातों के बदले में झूठ और पाप को ग्रहण कर लेता है और कभी-कभी इच्छापूर्ति के लालच में कु-संस्कारछन्न हो जाते है।

पैगाम:- मानव की उत्वकांक्षा जब लोभ, लालच और अहंकार से प्रभावित हो जाती है तब उसका मस्तिक्ष और विवेक अशांति की आग में जलने लगता है इसका मतलब ये है कि सुख-शांति के बदले उसने अशांति को अपनाया।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا فَلَمَّا أَضَاءَتْ مَا حَوْلَهُ ذَهَبَ اللَّهُ بِنُورِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِي ظُلُمَاتٍ لَا يُبْصِرُونَ {17}

उन लोगों की मिसाल उस शख़्स की सी है जिसने भड़कती हुयी आग रौशन की फिर जब आग ने उसके गिर्दो पेश खूब उजाला कर दिया तो खुदा ने उनकी रौशनी ले ली और उनको घटाटोप अँधेरे में छोड़ दिया कि अब उन्हें कुछ सुझाई नहीं देता (१७)

व्याख्या:- ऐसे लोगों के पास उज्वल सत्य आने के बाद भी इन लोगों ने इस उपदेश के साथ लापरवाही की। अल्लाह ने उनके मस्तिक्ष से ज्ञान की रोशनी मिटा दी और फिर वह अंधकार में रह गये और उन्हें सच्चाई नजर नहीं आती तथा वो अशान्ति, अज्ञानता और कु-संस्कार के अंधेरे में भटकते रह जाते है।

पैगाम:- ज्ञान का प्रकाश मानव को पाप-पुण्य की पहचान देता है। सत्य प्रमाणित होने के बाद भी अगर कोई मानव अपनी जिद और अहंकार के वश में आकर सत्य को इनकार करें तो ये इसका खुद का भ्रम है सत्य का कोई दोष नहीं, सत्य हमेशा अपने आदर्शों पर कायम रहता है।

صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُونَ {18}

ये लोग बहरे गूँगे अन्धे हैं कि फिर अपनी गुमराही से बाज़ नहीं आ सकते (१८)

व्याख्या:- ऐसे लोगों के मस्तिक्ष के तमाम खिड़किया बंद हो जाती है, ज्ञान और शांति यानी अच्छाई और फायदा उनको समझ में नही आता।

पैगाम:- ऐसा मानव अपने विचार, विवेक और सोचने-समझने की सारी क्षमता खो देता है।

أَوْ كَصَيِّبٍ مِنَ السَّمَاءِ فِيهِ ظُلُمَاتٌ وَرَعْدٌ وَبَرْقٌ يَجْعَلُونَ أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ مِنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ وَاللَّهُ مُحِيطٌ بِالْكَافِرِينَ {19}

जैसे आसमानी बारिश जिसमें तारिकियाँ गरजदार बिजली हो मौत के खौफ़ से कड़क के मारे अपने कानों में उंगलियाँ दे लेते हैं हालाँकि खुदा काफ़िरों को घेरे हुए है (१९)

व्याख्या:- या असमानी बरसात (उपदेश) की तरह जिसमें अंधेरियां (रहस्य) और गरज (ताकत) और बिजली (ज्ञान का प्रकाश) हो, मौत से डरकर (अशांति का डर) कड़ाके की वजह से अपनी उंगलियां अपने कानों में डाल लेते है और अल्लाह (यानी प्रकृति) हर गुनहगार लोगों को अपने अभिश्राप के दायरे में घेरे हुए है।

पैगाम:- पाप चक्र में डूबा हुआ मनुष्य हमेशा भयभीत रहता है, अपने कर्मो फल की चिंता में और ज्ञान की शक्ति इसे डरने पर बेवश करती है। ये एक रहस्मय शक्ति द्वारा संगठित होता है और इस तरह अल्लाह ताला पापियों को अपने चक्रव्यूह में बंदी बना कर रखते है। जिस मानव के जीवन से सुख-शांति चली गयी हो यानी उसकी जीते-जी मौत हो गयी।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ كُلَّمَا أَضَاءَ لَهُمْ مَشَوْا فِيهِ وَإِذَا أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {20}

क़रीब है कि बिजली उनकी आँखों को चौन्धिया दे जब उनके आगे बिजली चमकी तो उस रौशनी में चल खड़े हुए और जब उन पर अँधेरा छा गया तो खड़े हो गए और खुदा चाहता तो यूँ भी उनके देखने और सुनने की कुव्वतें छीन लेता बेशक खुदा हर वस्तु पर क़ादिर है (२०)

व्याख्या:- मानव समाज में कुछ ऐसे लोग भी है जो चमकती हुई कोई भी चीज देखने के बाद अपनी दृष्टि या अपने लक्ष्य को पूरी तरह उसी की तरफ संचालित करते है और सारे आदर्श और उपदेश जो मानव को प्रगति की तरफ ले जाती है उसे भुला देते है। और इन चमकती हुई चीजों की छत्र छाया में ऐसे लोग चलते-फिरते है और अपने मकसद पर कामयाब न होने पर तमाम किस्म की शिकायतें लेकर उठ खड़े हो जाते है। अल्लाह चाहता तो ऐसे लोगों के जीवन में अशांति का अंधकार देकर उन्हें बरबाद कर देता। अल्लाह सर्वशक्तिमान और उनकी शक्ति हर अणु-परमाणु में उपस्थित है।

पैगाम:- कुछ वक्त तक अल्लाह-ताला ऐसे लोगों को छूट देता है फिर प्राकृतिक तौर पर ऐसे लोग समाप्त हो जाते है। सच्चाई इतनी रौशन है कि इसकी ताकत से गुनहगार और ईर्ष्या रखने वाले लोगों को बेशूमार तकलीफ पहुँचती है ऐसे लोग जब खुश रहते है अपने विचारधारा के साथ तब कोई भी शिकायात का बखेड़ा खड़ा नहीं करते मगर पीड़ा के साथ-साथ ही शिकायतें शुरू हो जाती है और अपने विचारधारा और कर्मों पर नजर नहीं डालते।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ {21}

ऐ लोगों अपने परवरदिगार की इबादत करो जिसने तुमको और उन लोगों को जो तुम से पहले थे पैदा किया है अजब नहीं तुम परहेज़गार बन जाओ (२१)

व्याख्या:- समस्त मानव जाति के लिए अल्लाह के उपदेश है ''अल्लाह और उसकी कूदरत की सेवा ही इबादत है''। अल्लाह और उनकी कूदरत ही सृष्टिकर्ता और पालनहार भी है। अतीत, वर्तमान और भविष्य में भी वही सृष्टि विनाश और प्रतिपालन का अधिकर्ता था, है और रहेगा। कूदरत उनके आदर्शों को यानी प्रेम, भाईचारा, मानवता, अहिंसा, शांति और उसकी खोज करने वाले अशांति के नर्क से मुक्ति पायेंगे।

पैगाम:- प्रकृति ने सृष्टि की आरंभ से ही मानव के अंदर कुछ खास चरित्र डाला है और ये मानव चरित्र हर समय के इतिहास और संस्कृति में पाया जाता है। अल्लाह की इबादत यानी मानव के अपने चरित्र में वो खुबिया अपनाना जिससे उसे मानव समाज, सभ्यता और आने वाली नसलों को फायदा पहुँचाये और उनमें सबसे उत्तम तरीका है प्रेम, शांति, दया, ममता और अनुकम्पा (ये सारे मानव चरित्र प्राकृतिक है)।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَأَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَندَادًا وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ {22}

जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को बिछौना और आसमान को छत बनाया और आसमान से जल बरसाया फिर उसी ने तुम्हारे खाने के लिए बाज़ फल पैदा किए पस किसी को खुदा का हमसर न बनाओ हालाँकि तुम खूब जानते हो (२२)

व्याख्या:- वही पाक परवरदिगार जिसने पृथ्वी को तकरीबन गोल बनाया और मानव की अमली जीवन के लिए वो फर्श की तरह है ताकि मानव इसमें चल फिर सके और वही मानव के लिए असमान रखा (ओजन लेयर) ताकि सूरज से निकली हुई तेज किरण (अल्ट्रावायलेट रेज) जमीन तक पहुंच न सके और उसी आसमान में बादल को ठहराया और उसी आसमान से बारिश उतारी ताकि जमीन में फसल हो और मानव को खुराक मिले इसकी तमाम प्रकृति जानने के बावजूद इसकी हिदायतों और आदर्शों को ठुकरा कर उसका शरीक न करो।

पैगाम:- जल भाप होकर आसमानी बादल बनता है और इसी बादल से बारिश होती है फिर वही जल दुबारा भाप बनकर आसमान में बादल बन जाता है यह एक प्राकृतिक रूपांतर नियम है। प्रश्न उठाने वाले लोग कहते है कि इस आयत में पृथ्वी को फर्श की तरह बताया गया है, मगर पृथ्वी तकरीबन गोल है और ये प्रमाण हो चुका है। इस आयत के आरंभ में ''तुम्हारे लिये'' कहकर अल्लाह ने मानव के लिये पृथ्वी को ''फर्श की तरह है'' का संदेश दिया।

وَإِن كُنتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّن مِّثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {23}

और अगर तुम लोग इस कलाम से जो हमने अपने बन्दे पर नाज़िल किया है संदेह में पड़े हो पस अगर तुम सच्चे हो तो तुम एक सूरा बना लाओ और खुदा के सिवा जो भी तुम्हारे मददगार हों उनको भी बुला लो (२३)

व्याख्या:- अल्लाह ताला ने मनुष्य के लिये जो कुछ भी दिया प्रकृति के भंडार से, मनुष्य की वश की बात नहीं है कि इस तरीके की कोई भी वस्तु वो खुद से बना ले। सृष्टि के नियम जैसे सृष्टि विनाश, अविष्कार, प्राकृतिक किया-प्रकिया जो अल्लाह के आशीर्वाद से मानव को मिला।

पैगाम:- सृष्टि की हर किया-प्रकिया अल्लाह खुद नियंत्रण करता है। मानव की वश की बात नहीं कि वो सृष्टि के किसी भी पहलू को नियंत्रण करें। कुछ मानव समझते है कि कुरान-शरीफ की आयतों के तरह सूर्ते बनाना असंभव है। लेकिन मै समझता हूँ ''आयत'' का मतलब है प्राकृतिक किया-प्रकिया और सृष्टि के नियम। अगर आयत से

मुराद कुछ अर्बी शब्द है तो निश्चित रूप से मुसलमान वीतर की नमाज में ''दुआएं कनुत'' पढ़ते है जो कुरान-शरीफ में नहीं है। इसके अलावा वो तमाम धर्म पुस्तकें जो हर सम्प्रदाय के पास उपस्थित है उसके आयतों पर ध्यान दिया जाए तो किसी के साथ किसी का कुछ भी ज्यादा फर्क नजर नहीं आएगा।

فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَن تَفْعَلُوا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي وَقُودُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ {24}

पस अगर तुम ये नहीं कर सकते हो और हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो उस आग से डरो जिसके ईंधन आदमी और पत्थर होंगे और काफ़िरों के लिए तैयार की गई है (२४)

व्याख्या:- अशांति की आग से मानव तब बच सकता है जब वह पापों से मुक्त हो और काम, क्रोध, लालच, ईर्ष्या इन सब वस्तुों से मस्तिक्ष पाक हो तब ही उसे शांति प्राप्त हो सकती है। इस आयत में ''अशांति'' को ''आग'' कहा गया है, पत्थर दिल मानव को इस अशांति की आग में जलना होगा इसलिये इस आयत में कहा गया है ''इस आग का ईंधन होंगे पत्थर और मानव''।

وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ كُلَّمَا رُزِقُوا مِنْهَا مِن ثَمَرَةٍ رِّزْقًا قَالُوا هَٰذَا الَّذِي رُزِقْنَا مِن قَبْلُ وَأُتُوا بِهِ مُتَشَابِهًا وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {25}

और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उनको खुशख़बरी दे दो कि उनके लिए वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं जब उन्हें इन बाग़ात का कोई मेवा खाने को मिलेगा तो कहेंगे ये तो वही उन्हें मिलती जुलती सूरत व रंग के मिला करेंगे और बहिश्त में उनके लिए साफ़ सुथरी बीवियाँ होगी और ये लोग उस बाग़ में हमेशा रहेंगे (२५)

व्याख्या:- शान्ति का जीवन अल्लाह का वर्दान है। सभ्य और पवित्र मानव का जीवन शान्ति के स्वर्ग में विराजमान रहते है जिसमें पवित्र शीतल जल की तरह ठंडक और लाभ होता है (नहर का जल)। अल्लाह के लाभकारी आदर्शों के द्वारा ऐसे लोगों का जीवन परिपूर्ण किया जाएगा। उन्हें पवित्र और शान्तिकामी साथी मिलेंगे। सृष्टि के आरंभ से ही अल्लाह के ये नियम मानव के लिए एक वरदान है और समय-समय पर इन नियमों के आधार पर मानव को सभ्यता और उन्नति प्राप्त हुई।

पैगाम:- नारी और पुरुष एक दूसरे के परिपूरक है, और प्रकृति में हर मानव का अधिकार एक जैसा है, इसमें कोई भेदभाव नहीं है। पुरुष अगर अच्छा काम करेगा तो उसे अच्छी नारी मिलेगी। नारी या हिजड़ा के अच्छे कर्मों का फल क्या होगा? इस नियम के आधार पर ''सभ्य पत्नी'' एक चिह्न है पवित्र साथी की जो मानव के आस-पास होने से उसके जीवन में सुख-शान्ति लाती है। प्रेम, संयम, मानवता, अहिंसा और शिक्षा-इन सारे आदर्शों पर जो विश्वास रखते है वो सारे मानव पृथ्वी के किसी भी कोने के क्यों न हो सब एक ही सम्प्रदाय के है यानी आपस में एक-दूसरे के साथी। कुरान-शरीफ की ये आयत इस आदर्श को स्पष्ट करती है कि मानव सम्प्रदाय के बीच विचारधारा के आधार पर सिर्फ दो ही किस्म का बंटवारा हो सकता है और वो है ''पाप और पुण्य'' यानी पवित्र और अपवित्र की। कुरान शरीफ की हर आयत हर समय, हर मनुष्य और मानव सभ्यता की हर प्रजाति के लिए एक परिपूर्ण पुस्तक है, इस आयत के शुरूआत में अच्छे कामों की बात कहकर हर मानव को अपने चरित्र की शुद्धि और पवित्रता के तरफ लाया गया।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَسْتَحْيِي أَن يَضْرِبَ مَثَلًا مَّا بَعُوضَةً فَمَا فَوْقَهَا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَيَقُولُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَٰذَا مَثَلًا يُضِلُّ بِهِ كَثِيرًا وَيَهْدِي بِهِ كَثِيرًا وَمَا يُضِلُّ بِهِ إِلَّا الْفَاسِقِينَ {26}

निसंदेह खुदा मच्छर या उससे भी बढ़कर की कोई मिसाल बयान करने में नहीं झेंपता पस जो लोग ईमान ला चुके हैं वह तो ये यक़ीन जानते हैं कि ये बिल्कुल ठीक है और ये परवरदिगार की तरफ़ से है वह लोग जो काफ़िर हैं पस वह बोल उठते हैं कि खुदा का उस मिसाल से क्या मतलब है, ऐसी मिसाल से अल्लाह बहुतेरों की हिदायत करता है मगर गुमराही में छोड़ता भी है तो ऐसे बदकारों को (२६)

व्याख्या:- अल्लाह उदाहरण देने में कमी नहीं करता चाहे वो मच्छर से भी कम क्यों न हो। सभ्य और ईमान वाले मानव अल्लाह की सारी प्रकृति की गहराई अनुभव कर सकते है और अपवित्र पापी मानव अल्लाह की प्राकृतिक

नियमों को नहीं पहचानतें और उन पर सवाल खड़ा कर देते है और पाक-परवरदिगार न समझने वाले जिद्दी लोगों को गुमराह करते है और यही लोग फासिक (झुठे) है और सभ्य लोगों को अल्लाह ताला सही राह दिखाते है और सुख-शांति का जीवन प्रदान करते है।

पैगाम:- सृष्टि के हर अणु-परमाणु में अल्लाह की उपस्थिति उनका अस्तित्व प्रमाण करती है। मानव जीवन इस प्रकृति के साथ-साथ उनके अस्तित्व को भी अनुभव करते है। अहंकारी, उत्लाकांक्षी, जिद्दी और मोह-माया में डूबा हुआ मनुष्य उनके इस अस्तित्व को नहीं पहचान सकते। अगर पाप नहीं होता तो पुण्य का परिचय नही होता और मानव जीवन एक यंत्र की तरह बन जाता। अल्लाह ताला ने पुण्य के साथ पाप को यानी हर पहलू का विपरीत पहलू रखकर मानव जीवन को बैचित्रमय किया और इस नियम के आधार पर ये बात प्रमाणित होता है कि पृथ्वी में जो कुछ भी होता है वो अल्लाह की इच्छानुसार से ही होता है और कलमा का पहला भाग ''ला इलाहा इलल्लाह'' मतलब नहीं कोई सिवाय अल्लाह के ये बात भी प्रमाणित होती है।

الَّذِينَ يَنقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَن يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ {27}

जो लोग खुदा के एहदो पैमान को मज़बूत हो जाने के बाद तोड़ डालते हैं और जिन का खुदा ने हुक्म दिया है उनको क़तल कर देते हैं और मुल्क में फ़साद करते फिरते हैं, यही लोग घाटा उठाने वाले हैं (२७)

व्याख्या:- अल्लाह के प्राकृतिक आदर्शों और उसके ज्ञान को अनुभव कर लेने के बाद जो लोग इसको विनष्ट या विरूद्धता करते है और मानव सम्प्रदाय में प्रेम, भाईचारा और ईकाई रखने की हिदायत को नही मानते और समाज की शांति को बिगाड़ते है, ऐसे लोग अपना ही नुकसान करते है।

पैगाम:- अंहिसा और शान्ति अल्लाह ताला के द्वारा मानव सभ्यता के लिए दिये हुए नियम और रक्षा कवच है। और इन नियमों के द्वारा मानव समाज के लिए अपने कर्त्तव्य का पालन करते है, और जो इन नियमों का उल्लंघन करते है वो काफिर है और अल्लाह ऐसे लोगों को पसंद नहीं करता।

كَيْفَ تَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَكُنتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ {28}

क्यों कर तुम खुदा का इन्कार कर सकते हो हालाँकि तुम बेजान थे तो उसी ने तुमको ज़िन्दा किया फिर वही तुमको मार डालेगा, फिर वही तुमको ज़िन्दा करेगा फिर उसी की तरफ लौटाए जाओगे (२८)

व्याख्या:- प्रकृति का हर पहलू अल्लाह के अधिकार में है, पृथ्वी की हर वस्तु मृत्यु के बाद अलग-अलग रूप परिवर्तन करता है और पृथ्वी की हर वस्तु एटम से बनी है और वही एटम एक के साथ एक जुड़ कर रूप धारण करती है, जब अल्लाह के आदर्शों से मानव प्रभावित होता है और उस आदर्श को अपने जीवन में लागू करते है तब अल्लाह की पवित्र ज्योति के साथ उसकी मुलाकात होती है यानी आत्मा के साथ परमात्मा का मिलन (यानी उसकी तरफ लौट कर जाएगा) । पृथ्वी पहले प्राणहीन थी, प्रकृति ने इसमें प्राण-संचार किया, इसके बाद हर प्राण की मृत्यु रखकर उसको एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तित किया।

पैगाम:- मानव की मौत के बाद उसके शरीर को चाहे जलाये या दफनाये आखिर कार एटम की रूप में ही आना पड़ता है, फिर वो एटम क्या रूप परिवर्तित होगा इसका ज्ञान प्रकृति के सिवा कोई नहीं जानता। प्रकृति की हर वस्तु एटम (अणु-परमाणु) यानी जर्रे से बनती है और फना के बाद वो फिर दुबारा जर्रे की रूप ग्रहण करती है। रूपांतर सृष्टि का नियम है और ये समय द्वारा प्रभावित होता है। इस आयत में मानव को संबोधित करके कहा गया है कि ''तुम मुर्दा थे'' इसका मतलब मानव सभ्यता से पहले जंगली जीवन जीते थे और सभ्यता का प्रकाश देकर उन्हें जिन्दा किया गया और ज्ञान के प्रकाश से अज्ञानता को दूर किया गया। मानव इतने असभ्य थे कि सभ्यता से पहले वो मनुष्य का मांस खाते थे। रूपांतर के नियमानुसार मानव सभ्यता की भी कभी न कभी मृत्यु होगी यानी कयामत होगी। प्राग ऐतिहासिक युग और मानव सभ्यता के मध्य परिवर्तन का नियम उपस्थित था और ये नियम वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित हो चुका है। कही न कही किसी न किसी रूप में सभ्यता का विकास होगा। विनाश सृष्टि

का नियम है और विनाश के बाद नये अवस्था का आरंभ होता है और इसे ही रूपांतर कहते है और इस रूपांतर को ही मानव की भाषा में मृत्यु कहते है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَ لَكُم مَّا فِي الأَرْضِ جَمِيعاً ثُمَّ اسْتَوَى إِلَى السَّمَاء فَسَوَّاهُنَّ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ {29}

वही तो है जिसने तुम्हारे के ज़मीन की कुल वस्तुों को पैदा किया फिर आसमान की तरफ़ मुतावज्जेह हुआ तो सात आसमान हमवार बना दिए और वह हर वस्तु से वाक़िफ है (२९)

व्याख्या:- अल्लाह की शक्ति द्वारा सष्टि की सारे वस्तुओं की रचना हुई है और जमीन के उपर सात आसमान बनाये यानी सात किस्म की हवाओं की तय सजाई और ये सारी रहस्य का मालिक है अल्लाह।

पैगाम:- सतह जमीन से महासुन्न की खाली जगह तक पाक परवरदिगार ने विभिन्न किस्म की गैसो की द्वारा प्राणीजगत को तरह-तरह से सुरक्षा और सुविधा प्रदान की और वैज्ञनिकों ने इसे ५ हिस्सों में बाटा

(१) एक से १० किलोमीटर ट्रापोस्फेयर

(२) ३२-८० किलोमीटर स्ट्रेटोसफेयर

(३) ८०-६४० तक ओजोनोस्फेयर

(४) ६४०-१००० तक आइनोसफेयर और

(५) १००० किलोमीटर से ज्यादा एक्सोस्फेयर ।

इन पांच आसमानी हिस्सों को इनकी चरित्र की बुनियाद पर और भी दो हिस्सों में बाटा जा सकता है, जहां पर जमीन की कशिश (gravitational pull) खत्म हो जाती है वहां पर तापमान का अमली रूपांतर होता है। और इसके द्वारा दुमदार (comets) सितारें पृथ्वी की जमीन से दूरी का फासला बरकरार रखते है और इस नियमों के आधार पर हवाओं की तह को परखने से सात आसमान मिलेंगे इस हिसाब से सात किस्म की हवाओं की तह का उल्लेख कुरानशरीफ में है और हर तह के द्वारा विभिन्न तरीकों से पृथ्वी की सुरक्षा प्रदान की जिसे सात आसमान कहा गया है। आज मानव पृथ्वी के बाहर अपने चरण रख चुका है, अल्लाह की इच्छानुसार उनके रहस्य जो वैज्ञानिक तथ्य स्वरूप मानव को मिले उसके आधार पर सात आसमान का तथ्य यही होना चाहिए।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلآئِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الأَرْضِ خَلِيفَةً قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاء وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لاَ تَعْلَمُونَ {30}

और उस वक्त को याद करो जब तुम्हारे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मै एक नाएब ज़मीन में बनानेवाला हूँ कहने लगे क्या तू ज़मीन पर ऐसे शख़्स को पैदा करेगा जो ज़मीन में फ़साद और ख़ूनरेज़ियाँ करता फिरे हालाँकि ख़लीफ़ा बनाना है क्योंकि हम तेरी तारीफ़ व तसबीह करते है और तेरी पाकीज़गी साबित करते है तब ख़ुदा ने फ़रमाया इसमें तो संदेह ही नहीं कि जो मै जानता हूँ तुम नहीं जानते (३०)

व्याख्या:- अल्लाह ने मनुष्य को दिमाग देकर अपने प्रतिनिधि का अधिकार दिया इसका मतलब ये है कि मनुष्य के द्वारा ही मनुष्य को पाप-पुण्य का फल दिया जाता है। और समाजिक कानून मनुष्य द्वारा ही लागू करके समाज को पाप-मुक्त करते है। इसलिए मनुष्य को प्रतिनिधि बनाया और प्राणियों में श्रेष्ठता प्रदान की। विवेक का सवाल ये है कि मनुष्य के ईर्ष्या और लालच देने के उपरांत उसे अल्लाह का प्रतिनिधि का अधिकार कहां से मिला, ये सवाल प्रकृति के तमाम पहलूओं में गूंजता है (यानी फरिश्तों का सवाल) ये सारी बाते एक रहस्य है जो अल्लाह के अधिकार में है। मनुष्य प्राणीश्रेष्ठ है और प्रकृति में सुख-दुख और पाप के साथ पुण्य देकर मनुष्य को एक सा जीवन से मुक्त किया।

पैगाम:- मनुष्य को पृथ्वी में प्राणी श्रेष्ठ बनाया और इसी प्रकृति के द्वारा (फरिश्ते) मानव को बेहतर से बेहतर जीवन प्राप्त करने का ज्ञान भी दिया। आयतों के वर्तमान तर्जुमा के अनुसार कुछ सवाल है:-

१ फरिश्तों को सवाल करने का अधिकार कहा से मिला?

२ क्या पृथ्वी बनने से पहले मनुष्य की बुनियाद डाली गयी थी? विज्ञान इसके विपरीत तथ्य देता है।

३ परवरदिगार और फरिश्तों के दरमियान जो वार्तालाप हुआ वो कौन किसको बता रहा है और ये सारी बातें पृथ्वी में पहुँचाने का क्या उद्देश्य है?

४ जब अल्लाह ही सब कुछ कर सकता है तो ये बात फरिश्तों को बता कर क्या अल्लाह फरिश्तों से मदद की उम्मीद कर रहा था?

५ अल्लाह के फैसले पर फरिश्तों का एहतराज जाहिर करना क्या फरिश्तों की नफरमानी नहीं है?क्या फरिश्ते भी अल्लह के प्रतिनिधि की उम्मीद रखते थे?क्या उम्मीद रखना उनकी चरित्र है?

६ इन सारे सवालों का जवाब एक ही तथ्य पर अधारित है और वो है सृष्टि के नियमानुसार हर पहलू का विपरीत पहलू होना।

इस आयत में एक विशेष मानव चरित्र का उल्लेख किया गया है। मानव समाज में मानव के द्वारा ही फसाद और हत्या जैसे अपवित्र कार्य संगठित होते हैं। कभी सम्प्रदाय के नाम से, कभी जात-पात के नाम से, कभी रूप-रंग के नाम से, कभी विचारधारा के अधार पर मानव आपस में ही लड़ते रहते है। ये क्यों? फरिश्तों का ये प्रश्न एक रहस्य की सूचना करती है, जो अल्लाह जानता है मगर फरिश्ते नहीं जानते और अल्लाह की मर्जी से ये रहस्यमय ज्ञान का तत्व मै व्याख्या कर रहा हूँ- सृष्टि का नियम है हर पहलू का विपरीत पहलू, अगर अशांति नहीं होता तो मानव को शांति का अनुभाव नहीं होता और इसीलिए अल्लाह मानव के द्वारा ही हर काम करवाते है। अशांति भी फैलाते उसके बाद शांति भी प्रतिष्ठित करते है ताकि जीवन बैचित्रमय हो और इस तत्व के आधार में शैतान यानी अपवित्रता की सृष्टि भी अल्लाह के द्वारा ही हुआ और अल्लाह के इच्छा के विरूद्ध कोई भी कार्य असंभव है।

وَعَلَّمَ آدَمَ الأَسْمَاء كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلآئِكَةِ فَقَالَ أَنبِئُونِي بِأَسْمَاء هَـؤُلاء إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {31}

और आदम को सब चीजों के नाम सिखा दिए फिर उनको फरिश्तों के सामने पेश किया और फ़रमाया कि अगर तुम अपने दावे में कि हम मुस्तहक़ ख़िलाफ़त हैं। सच्चे हो तो मुझे इन चीजों के नाम बताओ (३१)

व्याख्या:- प्राणी की बुनियाद आदम है और इस बुनियाद को तमाम ज्ञान (कलमा) दिया जिससे उसकी जीवन आसन हो और उस ज्ञान को संवारने और तरक्की के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी से मानव को दिमागी तरक्की उपलब्ध कराई और यह प्रकृति के द्वारा ही हुआ।

पैगाम:- फरिश्ते प्रकृति के हर पहलू की चिह्न है और इसी प्रकृति के द्वारा मानव को तमाम सुविधाएं उपलब्ध हुई। आदम तमाम प्राणियों के नींव है और मनुष्य सबसे बेहतरीन प्राणी है जिसे उत्तम मस्तिक्ष देकर अल्लाह ने सर्वश्रेष्ठ बनाया। समय-समय पर वैज्ञानिक ज्ञान देकर मानव को अल्लाह ने अपने कुछ रहस्य का ज्ञान प्रदान किया और इस आयत में इस बात का उल्लेख किया गया है यह कहकर ''चीजों का नाम सिखाया गया''।

قَالُوا سُبْحَانَكَ لاَ عِلْمَ لَنَا إِلاَّ مَا عَلَّمْتَنَا إِنَّكَ أَنتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ {32}

तब अर्ज़ की तू पाक व पाकीज़ा है हम तो जो कुछ तूने बताया है उसके सिवा कुछ नहीं जानते तू बड़ा जानने वाला, मसलहतों का पहचानने वाला है (३२)

व्याख्या:- मनुष्यों का ज्ञान और प्रकृति रूपांतर दोनों के दरमियान गंभीर सम्पर्क है, मनुष्य अपने ज्ञान द्वारा प्रकृति को अपने सुविधा के लिए इस्तेमाल करते है, अगर प्रकृति के हर पहलू को फरिश्तों का रूप दिया जाये तो देखा जाएगा कि मनुष्य और फरिश्ते एक ही वस्तु की पैदावार है और इस सिलसिले को नियंत्रण करती है एक अदृश्य शक्ति यानी अल्लाह।

पैगाम:- अल्लाह की शक्ति सारे नियमों को नियंत्रण करती है और सृष्टि का हर नियम एक-एक फरिश्ते का चिह्न है। सारे फरिश्तें यानी सारे प्राकृतिक नियम अल्लाह की शक्ति द्वारा ही जन्म लेती है, नियंत्रण होती है और परिवर्तित भी होती है। इस आयत में फरिश्तों ने अल्लाह के अस्तित्व को पवित्र कहा और ये पैगाम मानव को

मिलता है कि प्रकृति की हर पहलू पवित्र है। अपवित्रता में भी अल्लाह के पवित्रता की परछाई होती है और अल्लाह सब जानता है।

قَالَ يَا آدَمُ أَنبِئْهُم بِأَسْمَائِهِمْ فَلَمَّا أَنبَأَهُم بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ {33}

आदम को हुक्म दिया कि ऐ आदम तुम इन फ़रिश्तों को उन सब वस्तुों के नाम बता दो बस जब आदम ने फ़रिश्तों को उन चीजों के नाम बता दिए तो खुदा ने फरिश्तों की तरफ खिताब करके फ़रमाया क्यों, मै तुमसे न कहता था कि मै आसमानों और ज़मीनों के छिपे हुए राज़ को जानता हूँ, और जो कुछ तुम अब ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छिपाते थे जानता हूँ (३३)

व्याख्या:- अल्लाह ताला ने मनुष्यों को प्रकृति की तमाम वस्तुओं के बारे में और इसके व्यवहार के बारे में ज्ञान प्रदान किया, इसके अलावा और भी बहुत सारे प्राकृतिक वस्तुएं है जो अभी भी मनुष्यों के लिए अधूरी है या उनकी पहुंच से बहार। जब मानव ने प्रकृति के बारे में जानकारी प्राप्त की तब उन्हें पता चला कि जमीन और आसमान का मालिक खुदा ही है और सारे प्राकृतिक उतार-चढ़ाव भी प्रकृति की अधिकार में है। मनुष्यों को इसके बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त है और वह भी जितनी श्रृष्टि और समय के चक्रव्यहू से प्राप्त हुआ।

पैगाम:- ये वार्तालाप एक प्रतीक है मनुष्य के अनुसंधान से जो प्रकृति ज्ञान प्राप्त हुआ उस ज्ञान के प्रतीक के स्वरूप इस आयत को बयान किया गया।

सवाल:- जब अल्लाह सब कुछ जानता है तो छुपाने वाली बात कहा से आयी और क्या फरिश्ते ये नही जानते थे? आदम से सारी बातें फरिश्तों को बताने का क्या मतलब साबित करता है क्या मानव की हैसियत फरिश्तों से ज्यादा है?

२. आदम ने जब सब नाम फरिश्तों को बता दिए तब अल्लाह ने फरिश्तों से कहा की अल्लाह सब कुछ जानता है। इन सारे सवालों पर नजर रखते हुए इस आयत का एक ही नतीजा निकल सकता है और वो है प्रकृति यानी अल्लाह ने अपने राज की कुछ जानकारी सिर्फ और सिर्फ मानव को ही दी है और नतीजे के तौर पर मनुष्य को परमाणविक शक्ति का रहस्य, अणु-परमाणु की गठनशैली और gravitational pull और इसके साथ-साथ ''गोड पार्टिकल'' यानी ''न्यूट्रीनो'' इत्यादि का तथ्य प्रदान किया समयचक्र में।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَائِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ {34}

और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो सब के सब झुक गए मगर शैतान (इब्लीस) ने इन्कार किया और गुरूर में आ गया और काफ़िर हो गया (३४)

व्याख्या:- सृष्टि के नियमानुसार प्रकृति का हर पहलू मानव के इस्तेमाल के लिए और उनके जीवन धारा को आसान बनाने के लिए रखा गया। इस हिसाब से हम कह सकते है कि अल्लाह ने फरिश्तों के द्वारामानव को सजदा करवाया। और उनमें से एक प्रकृति (शैतान) जिसने मानव की सेवा करने से इनकार किया (इब्लीस) यानी मानव के अंदर अपवित्र विवके (शैतान) की उपस्थिति।

पैगाम:- आयत के अनुसार सारे देवता (फरिश्ते) अल्लाह के निर्देश अनुसार आदम को प्रणाम नियोदन किया था यानी सजदा किया। जब अल्लाह को अपने अलावा किसी का सजदा न पसंद है तो फरिश्तों से मानव को सजदा (प्रणाम निवेदन) करवाना क्या पैगाम देता है? इसका मूल लक्ष्य मानव के अंदर ईश्वर की ज्योति की उपस्थिति को प्रणाम नियोदन करना था। जब फरिश्ते मानव की सेवा के लिए नियुक्त हो सकते है और इस बात को कुरान शरीफ में उल्लेख करके अल्लाह ताला ने मानव को ये पैगाम दिया कि प्राणियों की सेवा ही सबसे उत्तम इबादत है। इब्लीस नाम के फरिश्ते जिसे शैतान कहां गया अहंकार में अंधे होकर अल्लाह के आदेश को इनकार किया और इसलिए फरिश्ते इब्लीस को काफिर या अधार्मिक कहा गया। मानव की अंतर्रात्मा के अंदर फरिश्ते इब्लीस की

उपस्थिति मानव को पाप करने के लिये उत्साहित करती है और इसकी शांति को बिगाड़ती है। कुरान की इस आयत से काफिर के दो अहम चरित्र प्रमाण होते है एक ''अहंकार'' और दूसरा ''अल्लाह के हुकम (प्रकृतिक नियम) की नफरमानी''। ये आयत रहस्यमय है और इस आयत का गंभीर रूप से अध्यान करने से मानव को ये पता चलेगा कि कौन शैतान (अपवित्र है) और कौन फरिश्ता (पवित्र) और इस आयत के द्वारा अल्लाह ताला ने मनुष्य को क्या आदेश दिया है।

وَقُلْنَا يَا آدَمُ اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ {35}

और हमने आदम से कहा ऐ आदम तुम अपनी बीवी समैत बहिश्त में रहा सहा करो और जहाँ से तुम्हारा जी चाहे उसमें से ब फ़रागृत खाओ मगर उस दरख़्त के पास भी न जाना फिर तुम अपना आप नुक़सान करोगे (३५)

व्याख्या:- अल्लाह ने ''मानव पैदा करने वाली रूह'' यानी फरिश्ते आदम और हउआ को जन्नत में रहने का आदेश दिया (अनंत खुशी में रूह यानी आत्मा का परमात्मा में मिल जाने का नाम जन्नत है) और पूरी-पूरी खुशी का मजा लेने को कहा। रूह यानी आत्मा को खाने की जरूरत नही पड़ती और शैतान यानी गुनहगार विवेक के करीब जाने से मना कर दिया ताकि मानव अत्याचारी न हो और शांति का जीवन प्राप्त करें।

पैगाम:- यहां पर खास पेड़ के पास आदम को जाने के लिए मना किया गया वो पेड़ मानव के तमाम पाप चरित्र का प्रतीक है और मनुष्य का विवेक जितना पाप कर्मों में उलझ जाएगा उतनी ही उसकी शांति भंग होती जाएगी। मरने के बाद मानव शरीर का कोई अस्तित्व नही होता (मानव के लिए), जब शरीर ही नही होगा तो खुराक का जिक्र जरूर किसी विशेष बात की निशानदेही करती है। इस शैतानी पेड़ को धार्मिक पुस्तकों में कही सेव और कही गुंदम कहकर सम्बोधित किया गया है। कुरान-शरीफ में अल्लाह ताला फरमाते है कि उसने मानव को मिट्टी से पैदा किया है और पृथ्वी की मिट्टी पर पाये गये सारे उपादान मानव शरीर में भी पाये जाते है। उससे ये प्रमाण होता है कि मानव शरीर पृथ्वी की पैदावर है और मानव मस्तिक्ष में पाप विवेक, मोह-माया, ईर्ष्या और लालच की उपस्थिति इसकी सुख-शान्ति को छिन लेती है और उसी को शैतान कहा गया है।

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيهِ وَقُلْنَا اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَىٰ حِينٍ {36}

तब शैतान ने आदम व हौव्वा को वहाँ से डगमगाया और आख़िर कार उनको जिस में थे उनसे निकाल फेंका और हमने कहा तुम उतर पड़ो तुममें से एक का एक दुशमन होगा और ज़मीन में तुम्हारे लिए एक ख़ास वक़्त तक ठहराव और ठिकाना है (३६)

व्याख्या:- लेकिन शैतान (गुनहगार विवेक) ने मनुष्य को बहका कर उनके अस्तित्व में दाखिल हुआ और इस पाक-अस्तित्व (अहिंसा, सुख-शान्ति, मानवता और प्रेम) को बिगाड़ दिया और अल्लाहताला ने मनुष्य की सारी खुशी यानी सुख-शान्ति खारीज कर दी यानी जन्नत से निकाल बाहार किया और शैतान यानी बदकार विवेक को मानव का दुश्मन नियुक्त किया और हर मानव को कुछ वक्त तक जमीन पर ठहरने और प्रकृति का आनंद लेना है।

पैगाम:- मानव की जीवन में सुख के साथ दुख जोड़कर अल्लाह ताला ने मानव को विरान जीवन से मुक्ति दी। और पापी लोगों को दिमागी अशांति देकर सुकुन की जन्नत से बाहर किया और एक दूसरे को आपस का दुश्मन बनाया यानी ''सभ्य विवेक'' और ''गुनहगार विवेक'' आपस में एक दूसरे का दुश्मन है। हर मानव को एक विशेष समय तक ही पृथ्वी में रहना है और प्रकृति ने हर मनुष्य का रहन-सहन और रोजी का ठिकाना अलग-अलग बनाया है। ये आयत एक रहस्यमय वैज्ञानिक तथ्य प्रदान करते है। सूरज से निकला हुआ गैस का गोला ठंडा होने के बाद दुनिया बनी। प्राणियों की सृष्टि से पहले जल की सृष्टि हुई। हाइड्रोजन और ऑक्सीजन गैस २:१ अनुपात में मिलकर जल बना, तमाम प्राणियों की नींव है जल। अगर सोचा जाए हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का रूहानी नाम

आदम और हउआ है तो ये प्रमाण होता है कि उनकी मिलन से ही प्राणियों की सृष्टि हुई। चारीत्रिक गुण के अनुसार हाइड्रोजन और ऑक्सीजन एक-दूसरे के विपरीत है और इसीलिए कुरान-शरीफ की इस आयत में उन्हें ''एक-दूसरे का दुश्मन'' कहा गया। रूप परिवर्तन श्रृष्टि का नियम है और समय के चक्रव्यूह में संगठित होता है। इस आयत में ''एक वक्त तक ठहरना और ठिकाना'' का बात कहकर परिवर्तन के नियमों को व्याख्या किया गया है।

فَتَلَقَّى آدَمُ مِن رَّبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ {37}

फिर आदम ने अपने परवरदिगार से चन्द कलमें सीखे पस खुदा ने उन अल्फाज़ की बरकत से आदम की तौबा कुबूल कर ली बेशक वह बड़ा माफ़ करने वाला मेहरबान है (३७)

व्याख्या:- मानव को अल्लाहताला ने खुशी और शांति से जीने के सारे तौर-तरीके सिखाये शारीरिक और रोहानी, इसी तरह से मानव को कुछ हद तक अशांति से मुक्ति दी यानी उनकी तौबा कबूल की, अल्लाह माफ करने वाला और दयालु है।

पैगाम:- सारे फरिश्तों ने पाक-परवरदिगार के आदेश अनुसार मानव को सजदा किया क्योंकि मानव के अंदर पाक-परवरदिगार की पवित्र ज्योति की उपस्थिति। फरिश्ते इब्लीस ने अहंकार में अंधे होकर पाक-परवरदिगार के आदेश को उल्लंघन करते हुए मानव को प्रणाम निवेदन करने से इनकार किया इसलिए उसे काफिर का दर्जा प्राप्त हुआ।

(१) जन्नत में शैतान की मौजूदगी

(२) जन्नत से मानव को उतारा गया

(३) जन्नत की मिट्टी से मानव पैदा हुआ

इस आयत के वर्तमान व्याख्या के अनुसार बहुत सारे सवाल खड़े हो सकते है और उनमें विशेष सवाल ये है।

(१) जन्नत में भी ऐसा पेड़ है जिसमें शैतान मौजूद है तो क्या शैतान जन्नती है? पाक-परवरदिगार के आदेश का उल्लंघन और अहंकार की वजह से शैतान को जन्नत से निकाल दिया था तो जन्नत में शैतन की उपस्थिति (पेड़) कहां से हुई? इस पेड़ के बारे में विभिन्न बातें कही गई है- कही गुंदम, कही सेव का उल्लेख आता है लेकिन कुरान में इसे सिर्फ पेड़ कहा गया है, इस आयत में ''आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन'' तो इसमें कौन किसका दुश्मन? आयत के अनुसार आदम ने पाक-परवरदिगार से कुछ कलमें सिखे है वो क्या है?सवालों के अनुसार वर्तमान तर्जुमा अंधी अकीदत की बुनियाद पर टिका हुआ है लेकिन इस्लाम और रसुल पाक के नियमों के अनुसार अंधि अकीदत शिर्क में शुमार होती है इस लिहाज से हजरत आदाम और अम्मा हव्वा को सीधे तौर से जन्नत में रहने वाले फरिश्तों का दर्जा दिया गया। मानव की पैदाइश के बारे में कुरान शरीफ की आयतों और वैज्ञानिक अनुसंधान पर गौर करने से ये साबित होता है कि मानव शरीर पृथ्वी पर ही सृष्टि हुआ और इसका आरंभ है जल यानी H_2O।

लाखों साल पहले सूरज से निकली हुई पृथ्वी ठंडी होने के बाद जल का अस्तित्व हुआ और जल से पृथ्वी की कदीम एक कोशी प्राणी बना (one cell animal) और सालों बाद विवर्तन के नियमानुसार मानव शरीर का जन्म हुआ। हाइड्रोजन आक्सीजन ये दोनों गैसे २:१ अनुपात से मिलकर जल बना और यही श्रृष्टि तत्व में समस्त प्राणियों की नींव है। जिसे आदम और हव्वा कहकर लोग पुकारते है वो हाइड्रोजन और आक्सीजन है जो तमाम श्रृष्टि की बुनियाद है। शैतान इब्लीस की नाम से जो प्रचलित है वो मानव की अंतरात्मा की अपवित्र हिस्सा है जो सिर्फ बुरा काम करता है, जब मानव खत्म हो जाता है उसका विवेक भी खत्म हो जाता है और साथ-साथ अपवित्र सोच भी खत्म हो जाती है।

नोट:- श्रृष्टि तत्व में मानाव ही चिंताशील है और ये चिंता उसे प्रकृति द्वारा मिलती है और मानव शरीर पृथ्वी से उत्पन्न हुई। चारीत्रिक गुणों के अनुसार हाइड्रोजन और आक्सीजन एक-दूसरे के विपरीत है इस बुनियाद पर

कुरान-शरीफ की इस आयत में उन्हें कहा गया है ''एक दूसरे का दुश्मन'', जब दोनों मिलते है तब जल की श्रृष्टि होती है।

इस आयत में- ''कुछ कलमे सीखने'' का मतलब वर्तमान ख्यालत के अनुसार हजरत आदम को हजरत मोहम्मद की वसिले से माफी हुई। कही-कही पर तो ये भी कहा जाता है कि आसमान पर लिखा हुआ हजरत मोहम्मद का कलमा ''ला इलाहा इल्लालाह मोहम्मदुर रसुल अल्लाह'' पढ़कर हजरत आदम को शैतानी पेड़ का फल खाने के पाप से मुक्ति मिली ये रवायत पुरी तरह कुरान-शरीफ की आदर्शों के विरुद्ध है और पाक परवरदिगार के बतलाए हुए तरीके के भी विरुद्ध। धार्मिक पुस्तकों के अनुसार हर प्राणी को अपनी सजा व जजा खुद भुगतनी पड़ती है। तमाम रसुलों ने सीधे तौर पर पाक-परवरदिगार और उनके आदर्शों को ही वसिला माना। इस लिहाज से मानव को सभ्यता और शिक्षा प्रदान करने वाला रसुल होता है और वो ज्ञान रसुलों को पाक-परवरदिगार के तरफ से प्राप्त होता है। पाक-परवरदिगार के तरफ से कुछ जीवन के आसान रास्ते मानव को मिले ताकि मानव का जीवन सुख और शांतिमय हो और इस राह के कुछ तरीकात के कलमों का जिक्र इस आयत में किया गया। गौर फरमाये मनुष्य के पाप-पुण्य के कर्मफल चारीत्रिक गुणों पर निर्धारित होता है और यह कानून मुँह जुबानी चंद कलमें पढ़ लेने से बदल नहीं जाता।

''हजरत आदम जब पचतावे में डूबे, पृथ्वी पर आये तो तौबा और असतगफार में व्यस्त हो गये और इस मौके पर फिर अल्लाह ताला ने राह नुमायी की और दस्त गिरी फरमायी और वो कलमें सिखा दिये। कुछ हजरात यहां एक विशेष रवायत का सहारा लेते हुए कहते है कि हजरत आदम ने अर्श इलाही पर ''ला इलाहा इल्ललाहा मुहम्मद रसुल अल्लाह'' लिखा हुआ देखा और मोहम्मद रसुल अल्लाह के वसीले से दुआ मांगी तो अल्लाह ताला ने उन्हें माफ फरमा दिया। ये रवायत बे-सनद है और कुरान शरीफ के भी विरूद्ध है। इसके अलावा अल्लाह ताला के बतलाये हुए तरीके के भी विरूद्ध है। तमाम नबियों ने हमेशा सीधे तौर पर अल्लाह ताला से दुआएं की है। किसी नबी, वली, बुजुर्ग का वास्ता और वसीला नहीं पकड़ा। नबी करीम के साथ-साथ तमाम नबियों का तरीका-ए-दुआ यही राह है के बगैर किसी वास्ते और वसीले के अल्लाह ताला की बारगाह में दुआ की जाएं।'' - (ये व्याख्या सौउदी अरब के राजा शा फैसल की तरफ से हाजियों को तौहफे में दिये गये कुरान-शरीफ से लिया गया है)।

قُلْنَا اهْبِطُوا مِنْهَا جَمِيعًا فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُم مِّنِّي هُدًى فَمَن تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {38}

ये हुक्म दिया था कि यहाँ से उतर पड़ो अगर तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से हिदायत आए तो जो लोग मेरी हिदायत पर चलेंगे उन पर में न कोई ख़ौफ़ होगा और न वह रंजीदा होगे (३८)

व्याख्या:- मानव के शर्म का कारण है 'पाप'। मानव का विवेक जब उससे पाप करवाता है तब उसे मानव समाज में असम्मानित होना पड़ता है और शांति का स्वर्ग उसे प्राप्त नहीं होता। पापों को अपनाने के बाद जब उसका पाप मानव समाज में जाहिर हो जाता है तब उसके ''शर्म की वस्तु जाहिर हो गई''। इस आयत के अनुसार पवित्र लोगों को इस वस्तु का भय नहीं होता और न ही पश्चताप की आग उन्हें सताती है।

पैगाम:- आयत नम्बर ३७ में कहा गया ''आदम ने अपने रब से कुछ कलमें सीखे'' यानी जीने के कुछ आसान रास्ते और सच्चे ज्ञान की कुछ बातों की निशानदेही करता है ''कलमा'' और इस बात को प्रमाण करती है आयत नम्बर ३८। कुरान-शरीफ अल्लाह ताला का वो उपदेश नामा है जिसमें ज्ञान के साथ-साथ मानव के जीने का आसान तरीका भी बताया गया है। मानव जब पाप करता है एक तो उसे उसकी अंर्तात्मा चैन से नहीं रहने देती और दूसरा समाज की तरफ से उसे असम्मानित होना पड़ता है और लोगों के घृणा के साथ उसे जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {39}

और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया तो वही जहन्नमी है और हमेशा दोज़ख़ में पड़े रहेगे (३९)

व्याख्या:- और जो अल्लाह की उपदेश और नियमों को इनकार करे उसे अशांति का नर्क मिलेगा और वो उसमें हमेश रहेंगे, जब तक वह अल्लाह के प्राकृतिक नियमों का पालन न करे।

पैगाम:- ''काफिर'' का मतलब है ''नही मानने वाला''। पृथ्वी पर उपस्थित हर सम्प्रदाय अपने-अपने आदर्शों पर चलते है यहां तक कि इस्लाम धर्म में भी बहुत सारे सम्प्रदाय है जो अपने-अपने आदर्शों को ही सही इस्लाम समझते है और दूसरों को काफिर की उपाधि देते है। आदर्शों की विभिन्नता कभी भी कुफ नहीं हो सकती। जब तक वो आदर्श अल्लाह और प्रकृति के सच्चे और सीधे आदर्शों का उल्लंघन न करें। हिंसा, घृणा, ईर्ष्या- ये सारे आदर्श सृष्टि के नियमों का उल्लंघन करते है और जो मानव इन आदर्शों को अपनाते है वही काफिर है। याद रखें सृष्टि के सारे नियम और काम अल्लाह की इच्छानुसार संभव है और मानव को ये अधिकार नही है कि वो अपने आपको सही समझे और दूसरों को काफिर। अल्लाह और उनकी सृष्टि के नियमानुसार पवित्रता और अहिंसा ही मानव का धर्म है और इस बात का प्रतीक है ''हजरत मोहम्मद''।

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوا بِعَهْدِي أُوفِ بِعَهْدِكُمْ وَإِيَّايَ فَارْهَبُونِ {40}

ऐ बनी इसराईल मेरे उन एहसानात को याद करो जो तुम पर पहले कर चुके है और तुम मेरे एहद व इक़रार को पूरा करो तो मै तुम्हारे एहद को पूरा करूँगा, और मुझ ही से डरते रहो (४०)

व्याख्या:- इसरायिल की आल औलाद को सम्बोधित करके कहा गया अल्लाह ताला की तरफ से जो प्राकृतिक वरदान उन्हें मिला उसको याद करें और उनकी उपदेश को पूरी तरह माने ताकि उसके बदले अल्लाहताला उनको शांति का जीवन पुरूषकार स्वरूप दे। मानव अल्लाह के सामने अंधिकार बध्य है और वो अंधिकार है प्रेम, शांति, मानवता, अहिंसा और शिक्षा और इस आयत में अल्लाह ने मानव को आदेश फरमाया इस अंधिकार को पुरा करने के लिए।

पैगाम:- मानव का शांति का जीवन और शांत अन्तर्आत्मा ही प्रकृति की तरफ से मानव की पवित्रता का पुरूषकार है। जिस मनुष्य का दिमाग लालच, ईर्ष्या, घृणा और अधिक उत्वाकांक्षा से आजाद है उसे ही प्राकृतिक तौर पर शांति प्राप्त होती है और यही मनुष्य के साथ प्रकृति का एहद है।

وَآمِنُوا بِمَا أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُونُوا أَوَّلَ كَافِرٍ بِهِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَإِيَّايَ فَاتَّقُونِ {41}

और जो मैने नाज़िल किया वह उस किताब की तसदीक़ करता हूँ जो तुम्हारे पास है और तुम सबसे पहले उसके इन्कार पर मौजूद न हो जाओ और मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत न लो और मुझ ही से डरते रहो (४१)

व्याख्या:- हर सम्प्रदाय के पास एक धर्मपुस्तक है और निश्चित रूप से हर धर्मपुस्तक सृष्टि के नियम से ही बने है, यह सत्य है और अल्लाह की तरफ से है। हर सम्प्रदाय अपनी पुस्तक के साथ-साथ दूसरे सम्प्रदाय की पुस्तक और आदर्शों का भी सम्मान करें। इसी मे शान्ति है और अल्लाह विवाद और हिंसा करने वालों को पसंद नहीं करता। अल्लाह से डरें और उनके आदर्शों को बिगाड़ कर अपना लाभ न सोचे।

पैगाम:- मानव समाज में मानव को सभ्यता के विकास के साथ-साथ जो भी मिला या मिलता रहा उस पर विश्वास करना मानव का कर्तव्य है यानी जो सत्य प्रमाणित हुआ उस पर विश्वास रखना और समय के चक्र में जो सच मनुष्य के सामने उनमोचित हुआ उसको इनकार करना कुफरियत है। सच्चाई को छुपा कर लोगों को लुटना भी कुफरियत है। झुठ से लोग डरे यही अल्लाह का फरमान और अल्लाह की हर किताब में एक ही नियम को अलग-अलग समय, अलग-अलग जगह और अलग-अलग भाषा में लोगों को दी गई। अल्लाहताला का बुनियादी कानून कभी नहीं बदलता। लोगों ने उनके कानून और किताबों को बदलने की प्रचेष्टा की लेकिन अल्लाहताला बारी-बारी किताबों की रूप में उपदेश भेज कर मानव को सही राह बताई। इस आयत में कहा गया ''उनके आयतों के बदले में थोड़ी कीमत न ले'', इसका मतलब कि अल्लाह के प्राकृतिक आदर्शों का गलत उपयोग करके उसके बदले में कीमत न ले। कही-कही देखा गया अल्लाह के उपदेशों का मतलब अपने तरह का बनाकर सच्चाई को

बिगाड़ने की कोशिश की गई, ये सरासर पाप है। अल्लाह के आदर्शों के साथ कु-संस्कार जोड़ देना भी पाप है। कुरान की हर आयत एक वैज्ञानिक तथ्य प्रदान करती है। उस तथ्य को समझना और उसकी वैज्ञानिक और यौगतिक आधार को अनुभव करना ही मानव कर्त्तव्य है।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ {42}

और सत्य को बातिल के साथ न मिलाओ और सत्य बात को न छिपाओ (४२)

व्याख्या:- सत्य खुद ब खुद प्रकाशित होता है, पापचक्र की लाख प्रचेष्टा के उपरांत सत्य का परिचय मानव को मिलता है, यही प्राकृतिक नियम है। सत्य और असत्य एक दूसरे की विपरीत है इसे मिलाने की चेष्टा हमेशा विफल होता है।

पैगाम:- सत्य असत्य के अंधकार में कभी नहीं डूब सकता। सत्य का प्रकाश इतना उज्जवल होता है कि किसी भी चकांत से प्रभावित नहीं होता। कु-संस्कार कभी भी संस्कार के लाभ को प्रभावित नहीं कर सकता क्योंकि संस्कार में सत्य का प्रकाश है। सत्य के इन नियमों के अनुसार धर्म पुस्तकों को समझना और उसे समय की बेहती धारा के साथ इन आदर्शों को पुस्तक में ढूँढना मानव सभ्यता के विकास का कारण है। धर्म पुस्तकों की सत्यता को न समझकर कु-संस्कार से प्रभावित होकर अंधविश्वास में डूबकर जो मानव अपना जीवन अतिवाहित करते है वो निश्चित रूप से अल्लाह के आदर्शों का उल्लंघन करते है, कुरान-शरीफ की आयते इन बातों को प्रमाणित करती है।

وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَارْكَعُوا مَعَ الرَّاكِعِينَ {43}

और नमाज कायम करो और ज़कात दिया करो और जो झुकते है उनके साथ तुम भी झुका करो (४३)

व्याख्या:- मानव नमाज कायम रखें (यानी अच्छाई बरकरार रखें) और जकात दे और रकू (अल्लाह की आदर्शों को पुरी तरह से मानना यानी उसके आगे पुरी तरह से अपने अन्तात्मा को झुका देना) करने वालों के साथ रकू करें।

पैगाम:- नमाज का लक्ष्य मानव समाज में अहिंसा, प्रेम, मानवता, भाईचारा और पवित्रता को प्रतिष्ठित करना। ये आदर्श हर सम्प्रदाय के लिये आवश्यक है। इसलिए कुरान शरीफ में नमाज का कोई विशेष नियम का उल्लेख नहीं है। कुरान शरीफ की सुरा अलहज की आयत नम्बर ६७ में अल्लाह ताला साफ और स्पष्ट तौर पर फरमाया की उन्होंने ''हर सम्प्रदाय के लिए अलग-अलग प्रार्थना पद्धति नियुक्त की है और इस बात में कोई झगड़ नहीं है।'' और साथ में ये भी कहा गया है कि लोगों को अल्लाह की आदर्शों की तरफ बुलाया जाए यानी अहिंसा और शान्ति (रकू करने वालों के साथ रकू करो) की तरफ। रकू का मतलब है झुकना यानी अल्लाह की आदर्शों और पवित्रता के आगे अपने सारी बुराईयों को त्यागना।

أَتَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنسَوْنَ أَنفُسَكُمْ وَأَنتُمْ تَتْلُونَ الْكِتَابَ أَفَلَا تَعْقِلُونَ {44}

और तुम लोगों से नेक काम करने को कहते हो?और अपनी ख़बर नहीं लेते हालाँकि तुम किताबे खुदा को पढ़ते हो तो तुम क्या इतना भी नहीं समझते (४४)

व्याख्या:- कुछ लोग ऐसे होते है कि दूसरे लोगों को पवित्रता के तरफ बुलाते है मगर खुद अपनी पवित्रता पर ध्यान नहीं देते। सत्य को समझने के बाद भी ये लोग ऐसा करते है न समझ बनकर।

पैगाम:- दुष्कृती मानव अपने किये को छुपाने के लिए दूसरे को नसीहत देते रहते है। अन्दर से वो अच्छे तरह से जानते है कि उन्होंने क्या पाप किये और उसका फल क्या होगा। हिंदुस्तान में ब्रह्माणों ने सैकड़ों सालों से यही काम किया है। वेद, गीता की सत्यता को छुपा कर यहा के समाज को कु-संस्कार में ढकेल दिया और छुआ-छुत की गंदी बीमारी का शिकार बनाया।

وَاسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ وَإِنَّهَا لَكَبِيرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخَاشِعِينَ {45}

सब्र और नमाज़ का सहारा पकड़ो और अलबत्ता नमाज़ दूभर तो है मगर उन ख़ाक़सारों पर जो बखूबी जानते है (४५)

व्याख्या:- अल्लाह के आदर्श ही मानव के जीवन में सुख-शांति ला सकते है, और जो मानव के लिये वरदान है। शांति और धैर्य सिर्फ अल्लाह पर यकीन ही ला सकता है और जो अल्लाह पर यकीन रखते है, उनके दिल से घृणा, लालच, ईर्ष्या, अहंकार और उत्वाकांक्षा कम हो जाती है और वो अपने हाल पर खुश रहते है, मौत भी इन्हे डरा नही सकती और यही धैर्य वाले है।

الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُوا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رَاجِعُونَ {46}

कि वह अपने परवरदिगार की बारगाह में हाज़िर होंगे और ज़रूर उसकी तरफ लौट जाएँगे (४६)

व्याख्या:- अल्लाहताला की आदर्शों और उसके अस्तित्व को जब मानव पूरी तरह से अनुभव कर लेता है तो उस वक्त उसकी उसके रब से मुलाकात हो जाती है और मौत के बाद मानव का शरीर प्रकृति में समा जाता है और आत्मा परमात्मा से मिल जाती है यानी अल्लाह की तरफ लौट जाती है।

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ {47}

ऐ बनी इसराइल मेरी उन नेअमतों को याद करो जो मैंने पहले तुम्हें दी और ये कि हमने तुमको सारे जहाँन के लोगों से बढ़ा दिया (४७)

व्याख्या:- ऐ बनी इसराइल अल्लाह के आदर्शों को याद करें और मानवता पर अत्याचार न करें। अल्लाह के आशीर्वाद से उन्हें पृथ्वी में हर सम्प्रदाय पर श्रेष्ठता मिली और मानव सभ्यता की प्रगति का ईधन बनाया। इस बात का ध्यान रखकर वो अहंकार न करें और न किसी मानव पर अत्याचार करें।

पैगाम:- अल्लाहताला का वादा कभी झुठा नहीं होता, आज भी मानव सम्प्रदाय में याकूब के वंश ही राज कर रही है जो सबके सामने उपस्थित है (यह आयत इंजील में भी है) और इस बात को उदाहरण के तौर पर लोगों को देखना चाहिए और इससे सबक लेना चाहिए और ''क्रिस्चन'' लोगों को इस आयत का सम्मान रखते हुए दूसरों पर जुल्म या दूसरों को लूटकर समाज को न बिगाड़े।

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ {48}

और उस दिन से डरो कोई शख़्स किसी की तरफ से न फिदिया दे सकेगा और न उसकी तरफ से कोई सिफारिश मानी जाएगी और न उसका कोई मुआवज़ा लिया जाएगा और न वह मदद पहुँचाए जाएँगे (४८)

व्याख्या:- हर मानव को अपना कर्मफल खुद भुगतना पड़ता है, कोई किसी का दु:ख या खुशी बांट नहीं सकता सिर्फ इसमे शरीक हो सकता है। ये एक प्राकृतिक अनुभव और सत्य है और इन मामलात में कोई भी सिफारिश कबूल नहीं होती।

وَإِذْ نَجَّيْنَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ {49}

उस वक्त को याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔन से छुड़ाया जो तुम्हें बड़े-बड़े दुख दे के सताते थे तुम्हारे लड़कों को मार डालते और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रहने देते थे और उसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से सख़्त आज़माइश थी (४९)

व्याख्या:- अल्लाहताला प्राकृतिक तौर पर अशांति (फिरौनियत) जैसे बदतरीन अभिश्राप से निजात देते है जब पृथ्वी में पाप का पलड़ा भारी हो जाता है।

पैगाम:- मानवता और उसकी सभ्यता पर जब संकट आता है तब अल्लाह ताला मानव में से ही किसी विशेष मानव के द्वारा उसे संकट से मुक्ति दिलवाते है। फिरौन एक मिसरी राजा था जो मानव और मानवता पर अत्याचार करता था और खुद को ईश्वर समझ बैठा था। अल्लाह ताला ने मुसा नाम के पैगम्बर से वहां के लोगों को मुक्ति दिलवायी और फिरौन का नाश किया।

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنجَيْنَاكُمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ {50}

और जब हमने तुम्हारे लिए दरिया को टुकड़े-टुकड़े किया फिर हमने तुमको छुटकारा दिया और फिरोनियों को तुम्हारे नजरों के सामने उसमें डूबो दिया(५०)

व्याख्या:- पहाड़ की तरह उंचा और समुद्र की तरह गहरे पाप और पापियों को मिटा कर अल्लाहताला समाज में सभ्यता और पवित्र मानव को सुरक्षा प्रदान करते है। फिरौन की कौम अत्याचार की हद पार कर चुकी थी। अल्लाहताला ने लोगों को मुसा के जरिये मुक्ति दिलवायी और इस बात को लोगों के लिये एक मिसाल बनायी ।
पैगाम:- जब-जब पृथ्वी में पाप बढ़ जाते है तब-तब रसुलों के द्वारा पापों को घटाकर पृथ्वी की शांति और समृद्धि का संतुलन बरकरार रखते है।

وَإِذْ وَاعَدْنَا مُوسَى أَرْبَعِينَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ {51}

जब हमने मूसा से चालीस रातों का वायदा किया था और तुम लोगों ने उनके जाने के बाद एक बछड़े पूजना शुरू कर दिया और जालिम बन गये (५१)
व्याख्या:- पैगम्बर मुसा ने चालीस रात तक सत्य का अनुसंधान करने के बाद जब लौटे तब उन्होंने देखा कि उनकी कौम सच्चाई को छोड़कर दुबारा कु-संस्कार में डूब गयी और अत्याचार करने लगी थी।
पैगाम:- कु-संस्कार समाज के लिए जुल्म है।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ {52}

फिर हमने उसके बाद भी दरगुज़र की ताकि तुम शुक्र करो (५२)
व्याख्या:- इसके उपरांत अल्लाहताला मानव को क्षमा करते है और वो इसलिए क्योंकि अल्लाहताला किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं रखता। जब सब कुछ उन्हीं का है या उनमें से है या वो खुद है और वह हमेशा मानव को सच्चाई का रास्ता दिखाते आ रहे है और वो अनंत है, इसीलिए मानव प्रार्थना करता है सिर्फ अपने लिये, अल्लाह को न इससे कोई फायदा पहुँचता है और न ही उसे उसकी आवश्यता है। मानव की गलतियां या बेवकूफी हमेशा इसकी आंखों के सामने आकर खड़ी हो जाती है और यही इसकी अल्लाह के तरफ से माफी है। कु-संस्कार में डूबे हुआ मनुष्य अपना ही क्षति करता है या अपने उपर जुल्म उठाता है।

وَإِذْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ {53}

और हमने मूसा को तुम्हारी हिदायत के लिए किताब और मोयजे अत: फरमाया। (५३)
व्याख्या:- मुसा के द्वारा फिरौन के अत्याचार से लोगों को मुक्ति दिलवाना अल्लाह का चमत्कार था। फिरौन एक शक्तिशाली राजा था। मुसा ने अल्लाह के नियमों को लोगों तक पहुँचाया और लोगों ने उसे समझा और इनक्लाब के द्वारा मुक्ति प्राप्त की, यह एक चमत्कार था और सत्य और असत्य का निर्णय भी।
पैगाम:- इस आयत में मुसा के हिदायत नामे को ''फुरकान'' कहा गया है और कुरान-शरीफ को भी लोग ''फुरकान'' के नाम से जानते है। इसका मतलब ये हुआ कि जो ज्ञान मुसा को प्राकृतिक तौर पर प्राप्त हुआ, वही ज्ञान हजरत मोहम्मद को भी प्राप्त हुआ था। कुछ लोग कहते है कि मुसा के कौम के लोगों ने उनके निधन के बाद किताब को बदल दिया, किताब की लिखावट तो बदल सकती है मगर अल्लाह के नियम कभी भी नहीं बदल सकते और वो लोगों के द्वारा हमेशा समाज में कायम रहते है और वो नियम है सभ्यता, प्रेम, मानवता, संयम, शिक्षा, अहिंसा और शान्ति और इन नियमों को मानने वाले सम्प्रदाय हर युग में मानव समाज में पाये जाते है और वे सब आपस में भाई-भाई है।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنفُسَكُم بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوبُوا إِلَىٰ بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِندَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ {54}

जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम तुमने बछड़े को माबूद बनाकर के अपने ऊपर बड़ा सख़्त जुल्म किया तो अब तुम अपने ख़ालिक की बारगाह में तौबा करो और वह ये है कि अपने को क़त्ल कर डालो तुम्हारे परवरदिगार के नज़दीक तुम्हारे सत्य में यही बेहतर है, फिर जब तुमने ऐसा किया तो खुदा ने तुम्हारी तौबा क़ुबूल कर ली बेशक वह बड़ा मेहरबान माफ़ करने वाला है (५४)

व्याख्या:- अल्लाहताला अदृश्य है और इसी कारण मानव के द्वारा ही मानव को अपना पैगाम पहुँचाया। मानव का कर्तव्य है कि अपनी अंदर की बुराई और कु-संस्कार की हत्या करते हुए, समाज की बुराई को खत्म करें और प्रकृति सदेव प्राणियों पर दयावान है।

(इस आयत में 'बछड़ा' कु-संस्कार और अज्ञानता की प्रतीक है और ''अपने आप की हत्या करने'' का मतलब अपने अंदर की बुराई को खत्म करना।)

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَى لَن نُّؤْمِنَ لَكَ حَتَّى نَرَى اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصَّاعِقَةُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ {55}

और जब तुमने मूसा से कहा था कि ऐ मूसा हम तुम पर उस वक्त तक ईमान न लाएँगे जब तक हम खुदा को ज़ाहिर बज़ाहिर न देख ले उस पर तुम्हें बिजली ने ले डाला, और तुम ताकते ही रह गए (५५)

व्याख्या:- ईश्वर के अस्तित्व की उपेक्षा करने के उपरांत भी ईश्वर मानव की भलाई के लिये हिदायत देता है। इस आयत में बिजली से मुराद अल्लाह की हिदायत, इस हिदायत के द्वारा मानव को अल्लाह अपने नियम बताते है। मानव अपने चरित्र के अनुसार अल्लाह द्वारा बताये हुए लाभकारी नियमों पर ईमान नहीं लाते क्योंकि ये नियम अल्लाह मानव के द्वारा ही मानव को बताते है। अल्लाह मानव के लिए अदृश्य है और इसलिए लोग इन नियमों (यानी सभ्यता, प्रेम और संयम) के लाभ को न समझते हुए उसे इनकार करते है और अशान्ति की आग में जलते रहते है। ये भी अल्लाह की प्रकृति है।

पैगाम:- बिजली वास्तव में लाभकारी भी है और इसकी शक्ति से मनुष्य की मृत्यु भी हो सकती है। बिजली को इस आयत में एक उदाहरण के तौर पर उपस्थित किया गया है।

ثُمَّ بَعَثْنَاكُم مِّن بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ {56}

फिर तुम्हें तुम्हारे मरने के बाद हमने जिला उठाया ताकि तुम शुक्र करो (५६)

व्याख्या:- पाप मानव की अन्तर्आत्मा को मृत्यु की तरफ ले जाता है और जब मानव का विवेक मर जाता है तब उसकी चारित्रिक मौत होती है। फिर अल्लाह (बिजली की तरह) अपनी उपदेश के द्वारा मानव के मृत विवेक को जिंदा करके समाज में सुख-शांति प्रतिष्ठित करते है।

पैगाम:- मानव के शरीर के साथ-साथ मस्तिक्ष की मौत होने से मानव वापस नहीं आता। विज्ञान के हिसाब से इस आयत के साथ मानव की शारीरिक मौत का कोई तालुक नहीं और विज्ञान भी अल्लाह की प्रकृति है तथा उसे इनकार करना नमुमकिन है। वैज्ञानिक तथ्य इस आयत द्वारा प्रभावित है और मानव को ये समझना चाहिए कि कुरान शरीफ की हर आयत वैज्ञानिक अविष्कारों की बुनियाद है। सृष्टि के नियामानुसार हर वस्तु का रूप परिवर्तन होता है और उस रूप परिवर्तन को मानव मृत्यु कहते है। अणु-परमाणु से बने हुए मानव मृत्यु के बाद फिर से अणु-परमाणु बन जाते है, यही सृष्टि का नियम है।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَى كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ {57}

हमने तुम पर अब्र का साया किया और तुम पर मन व सलवा उतारा और जो साफ़ सुथरी नफीस रोज़िया तुम्हें दी है उन्हें शौक़ से खाओ, उन लोगों ने हमारा तो कुछ बिगड़ा नहीं मगर अपनी जानों पर सितम ढाते रहे (५७)

व्याख्या:- पवित्र उपदेश के साथ-साथ मानव को पाक-परवरदिगार ने हर किस्म की सुख-सुविधा दी बादल और बारिश के द्वारा मानव जिस तरह खेती आबाद करते है उसी तरह अल्लाह मानव को अपनी प्रकृति के द्वारा बैचित्रमय जीवन दिया और तरह-तरह के जायकेदार नेमते तौफे में दिये, बादल की छाव की तरह प्राकृतिक ठंडक सुख-शांति (मन सलवा) बनकर सभ्य और संयमी मानव की जीवन को सुन्दर और सभ्य बनाती है। पाप का रास्ता अधिग्रहण करके मनुष्य अपने आप पर और अपने समाज पर अत्याचार करते है।

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَـٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطَايَاكُمْ وَسَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ {58}

जब हमने तुमसे कहा कि इस गाँव में जाओ और इसमें जहाँ चाहो फरागत से खाओ और दरवाजे पर सजदा करते हुए और जबान से हित्ता (बख़्शिश) कहते हुए आओ तो हम तुम्हारी खता ये बख़्श देगे और हम नेकी करने वालों की नेकी बढ़ा देगें (५८)

व्याख्या:- अल्लाहताला ने मानव को सच्चाई और सुख-शांति के दरवाजे से प्रवेश होकर उनकी उपदेशों को अपनाते हुए (सजदा) सुख-शांति से अपना जीवन जीये और अल्लाह की प्रकृति का आनंद उठाये। पृथ्वी में होने वाले सारे पापों से पाक रहने की दुआ करें और तमाम मानव अपने पापों के लिये माफी मांगे।

पैगाम:- मानव को सारा सुख-सुविधा देने के उपरांत वो पाप करता है सिर्फ अपने बेवकूफी के वजह से। जरूरत से ज्यादा काम, कोध, मोह, ईर्ष्या, लालच और हवस मानव को पाप करने पर मजबूर करती है, जिसकी इसके जीवन में कोई जरूरत नही। प्रकृति ने मानव को उत्तम मस्तिक्ष दिया ताकि वो सही और गलत की पहचान कर सके और उससे बचे। शांति वाले समाज को इस आयत में ''गांव'' कहकर संबोधित किया गया है और इस गांव में पाप मुक्त होकर इसमें प्रवेश करने का उपदेश दिया गया है।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ {59}

फिर उन जालिमों ने इस बात को जो उनसे कही गयी थी बदल डाली हमने भी उन जालिमों पर उनके फसक व नफरमानी की वजह से आसमानी अजाब नाजिल किया (५९)

व्याख्या:- इस सत्य को अत्याचारियों ने हमेशा पथभ्रष्ट करने की चेष्टा की और पृथ्वी का सुख-शांति को बिगाड़ा। अल्लाह ने इन अत्याचारियों को अशांति का अभिश्राप दिया।

पैगाम:- अल्लाह के सीधे-सच्चे और लाभदायक नियमों को कु-संस्कार और अयौतिक अचार-विचार के द्वारा समाज को गुमराह किया गया। कुछ मतलब परस्त, उत्वाकांक्षी और स्वार्थी लोगों ने ये काम किया। लोगों के मध्य अपनी प्रतिष्ठा कायम करने के लिए और धन कमाने के लिए अल्लाह के आदर्शों पर तरह-तरह की कहानियां रची गयी, जो इतिहास और विज्ञान के द्वारा गलत प्रमाण हो चुका।

وَإِذِ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۖ فَانفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۖ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۖ كُلُوا وَاشْرَبُوا مِن رِّزْقِ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ {60}

और जब मूसा ने अपनी कौम के लिए जल माँगा तो हमने कहा अपनी लाठी पत्थर पर मारो उसमें से बारह चश्में फूट निकले और सब लोगों ने अपना-अपना घाट बखूबी जान लिया और हमने आम इजाज़त दे दी कि खुदा की दी हुयी रोज़ी से खाओ पियो और मुल्क में फ़साद न करते फिरो (६०)

व्याख्या:- मुसा ने अल्लाह से अपने सहगोत्रियों के लिए सत्य और शांति के पथ की प्रार्थना की (पानी के लिए दुआ की) और उसे प्राप्ति के बाद लोगों में व्याख्या भी की और उनसे उम्मीद रखी की वो सत्य को समझेंगे और उसे अपनाएंगे। जल की तरह साफ-सुथरी सत्यता पत्थर दिल मानव के उपर लाठी की तरह बरसी और जब मानव ने सभ्यता का रास्ता अधिग्रहण किया तो बारह किस्म की सच्चाई वो समझ गये जिसके द्वारा उन्हें सुख और शान्ति प्राप्त हो सकती थी और इसी सच्चाई के द्वारा समस्त पृथ्वी में सुख:शांति कायम हो सकती है तथा सारे मनुष्य के मध्य का विवाद खत्म हो सकता है।

बारह किस्म की सच्चाई:-

१. प्राणीयों की सेवा।
२. शिक्षा।
३. जिस काम में कोई लाभदायक नतीजा न हो उसे त्यागना।
४. सच्चाई और ज्ञान बताने वालों का आदर करना।

५. अल्लाह एक, मनुष्य एक और पृथ्वी एक - इन आदर्शों पर कायम रहना।

६. अपने चारित्रिक व्यवहार से किसी को कष्ट न देना।

७. सृष्टि के भंडार से जो भी मिले उस पर संतुष्ट रहना और प्रकृतिक नियमों को अपनी उत्वाकांक्षा से प्रभावित न करना।

८. हर मनुष्य के विचार अलग-अलग होते है और ये प्राकृतिक नियम है और इन प्राकृतिक नियमों का आदर करना।

९. पाप के विरूद्ध जहाद करना (यानी लड़ना) और प्रेम, अहिंसा, भाईचारा, शांति, शिक्षा इन सारे नियमों पर ईमान ला कर अल्लाह की सेवा करना।

१०. जरूरत से ज्यादा लोभ, मोह-माया, ईर्ष्या, लालच, हषद (जो मनुष्य को पाप कर्मों में उत्साहित करती है) पर काबू पाना और किसी भी किस्म का नशा जो मनुष्य की बुद्धि को भ्रष्ट करता है उसे त्यागना।

११. संस्कार और कु-संस्कार दोनों का अंतर समझना और लोगों को समझाना। सृष्टि के नियामनुसार मृत्यु निश्चित है मानव अगर इस बात को पुरी तरह से अनुभव करे तो पाने की आशा में कु-संस्कार और मोह-माया से प्रभावित नहीं होगा।

१२. समय, अवस्था और परिवर्तन सृष्टि का नियम है और इस नियम को मानव समाज के आधुनिकता और उन्नति के लिए प्रयोग करना मानव कर्त्तव्य है।

وَإِذْ قُلْتُمْ يَا مُوسَى لَن نَّصْبِرَ عَلَىٰ طَعَامٍ وَاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنبِتُ الْأَرْضُ مِن بَقْلِهَا وَقِثَّائِهَا وَفُومِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا قَالَ أَتَسْتَبْدِلُونَ الَّذِي هُوَ أَدْنَىٰ بِالَّذِي هُوَ خَيْرٌ اهْبِطُوا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُم مَّا سَأَلْتُمْ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَاءُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللَّهِ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّينَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ذَٰلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ {61}

जब तुमने मूसा से कहा कि ऐ मूसा हमसे एक ही खाने पर न रहा जाएगा तो आप हमारे लिए अपने परवरदिगार से दुआ कीजिए कि जो वस्तु ज़मीन से उगती है जैसे साग पात तरकारी और ककड़ी और गेहूँ या लसून और मसूर और प्याज़ की जगह पैदा करें कहा क्या तुम ऐसी वस्तु को जो हर तरह से बेहतर है अदना वस्तु से बदलन चाहते हो तो किसी शहर में उतर पड़ो फिर तुम्हारे लिए जो तुमने माँगा है सब मौजूद है और उन पर रूसवाई और मोहताजी की मार पड़ी और उन लोगों ने क़हरे खुदा की तरफ पलटा खाया, ये सब इस सबब से हुआ कि वह लोग खुदा की निशानियों से इन्कार करते थे और पैग़म्बरों को नाहक शहीद करते थे, और इस वजह से कि वह नाफ़रमानी और सरकशी किया करते थे (६१)

व्याख्या:- लोगों ने रंग-बिरंगी जीवन मांगा, मुसा ने उन्हें सभ्यता और शांति के शहर में दाखिल होने को कहां, हर मानव एक-सा जीवन से बेजार हो जाता है, मानव की उत्वाकांक्षा कभी कम नहीं होती, उत्वाकांक्षा और लालच को काबू करने से शांति प्राप्त होती है। लोगों ने मुसा की इस हिदायत को ठुकराया और उनके दिलों में लालच और उत्वाकांक्षा (जिल्लत और मिस्कीनी) जरूरत से ज्यादा बढ़ गयी थी। मानव ने नबियों के आदर्शों की हत्या की।

पैगाम:- लालच और उत्वाकांक्षा मानव का प्राकृतिक स्वभाव है, मगर यही चारित्रिक गुण जब पापों से प्रभावित होती है तब मानव पाप करने लग जाता है और अपने ही सुख-शान्ति को बिगाड़ता है। सुख-शांति के बदले में मानव के धन-दौलत की लालच की कामना करना उनका भ्रम है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالنَّصَارَىٰ وَالصَّابِئِينَ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {62}

मुसलमानों और यहूदियों और नसरानियों और साईबिन में से जो कोई खुदा और रोज़े आख़िरत पर इमान लाए और अच्छे-अच्छे काम करता रहे तो उन्हीं के लिए उनका अज्र व सवाब उनके खुदा के पास है और न उन पर किसी का ख़ौफ होगा न वह रंजीदा दिल होंगे (६२)

व्याख्या:- एक परवरदिगार पर यकीन करने वाले तमाम धार्मिक लोग जो पवित्र काम करते है वो सारे इमान वाले है। अल्लाह की प्रकृति के मुताबिक ये लोग किसी विशेष भाषा या किसी विशेष सम्प्रदाय के दायरे में नही है। अल्लाह के नियमों के अनुसार मानव के मध्य सिर्फ दो ही सम्प्रदाय है, एक जो सभ्य, संयमी, सुख-शांति, प्रेम, मानवता और अहिंसा चाहने वाला सम्प्रदाय और दूसरा पापी और विवदा करने वाला सम्प्रदाय।

पैगाम:- हर सम्प्रदाय की पूजापद्धति अलग-अलग है और वो सारे पद्धति प्राकृतिक है, जब अल्लाह की इच्छा के विरूद्ध कोई भी काम असंभव है तो निश्चित रूप से प्रमाणित होता है कि दुनियां में जो भी हो रहा है वो अल्लाह की मर्जी से ही हो रहा है। मानव की पहचान होती है उसके चरित्र से और इस आयत के द्वारा सम्प्रदाय और मानव चरित्र को अलग किया गया है। कुरान-शरीफ या कोई भी उपदेश नामा किसी विशेष सम्प्रदाय के दायरे में नही है। ये सारी उपदेश नामा तमाम मानव जाति और मानव सभ्यता के लिए है। इस आयत के अनुसार सबसे बेहतर और अच्छी इबादत का तरीका है नेक काम करना यानी पवित्रता, शांति, और अहिंसा के नियमों पर चलना। यहां पर ''साईबिन'' शब्द उस सम्प्रदाय की निशानदेही करती है जिसका उल्लेख करना कुरान शरीफ में अल्लाह ने मुनासिब नहीं समझा, मगर उनका अस्तित्व दुनियां में है।

नोट:- सुरा तगाबुन की आयत नम्बर २ में अल्लाह ताला ने साफ और स्पष्ट तौर पर फरमाया ''वही है जिसने तुम्हें पैदा किया सो तुममें कोई काफिर और तुममें कोई मोमिन और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है''।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ {63}

और जब हमने तुमसे एक़रार कर लिया और हमने तुम्हारे सर पर तूर पहाड़ को लाकर लटकाया और कह दिया कि जो हमने तुमको दी है उसको मज़बूत पकड़े रहो और जो कुछ उसमें है उसको याद रखो ताकि तुम परहेज़गार बनो (६३)

व्याख्या:- इस आयत में शैतान की तुलना पहाड़ (कोह-तुर) से की गयी है। अल्लाह ने अच्छाई के साथ बुराई को भी रखा और बुराई से बचने के लिये अल्लाह के आदर्शों को सख्ती से पकड़ने का निदेर्श भी दिया।

पैगाम:- मनुष्य की अन्तर्आत्मा और समाज में बुरी ताकतों की मौजूदगी उचे पहाड़ की तरह विशाल बनकर मानव समाज को अशान्त कर देती है। और इस विशाल पाप शक्ति से बचने का एक ही तरीका है, अल्लाह या प्रकृति के नियमों को अपने जीवन और समाज में सख्ती से लागू करना। सभ्यता, संयम, प्रेम, मानवता, भाईचारा और अहिंसा इन सारे शब्दों को सिर्फ एक चिह्न बनाकर न रखें। इसे अपने विवेक के साथ जोड़कर ही बुरी ताकतों से बच सकते है तथा सुख, चैन और शान्ति प्राप्त कर सकते है।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَكُنتُم مِّنَ الْخَاسِرِينَ {64}

फिर उसके बाद तुम फिर गए पस अगर तुम पर खुदा का फज़्ल और उसकी मेहरबानी न होती तो तुमने सख़्त घाटा उठाया होता (६४)

व्याख्या:- बुराई हमेशा मानव को पवित्रता से बहकाती है और उसका नतीजा मानव समाज में पापों की बढ़ोतरी। इसके बावजूद भी अल्लाहताला ने मानव समाज को सदैव अत्याचार और तकलीफ से निजात देते रहे, जिसका नतीजा है कि आज भी मानव समाज में सभ्यता और अच्छाई की मौजूदगी। अगर प्रकृति की कृपा मानव समाज पर नहीं होती तो सबसे ज्यादा नुकसान मानव समाज को ही होता।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ {65}

और अपनी क़ौम से उन लोगों की हालत तो तुम बखूबी जानते हो जो शम्बे के दिन अपनी हद से गुज़र गए तो हमने उन से कहा कि तुम राइन्दे गए बन्दर बन जाओ (६५)

व्याख्या:- प्राकृतिक तौर पर मानव को पाप-पुण्य की पहचान है। बंदर मानव की मजाक की वस्तु है और मानव उसे देखकर अपना दिल बहलाते है और उससे डरते भी है। अगर मानव को बंदर की तरह सोचा जाये तो मानव के लिये जिल्लत होगी, वो मानव जिल्लत की जीवन जीते है जिसे अल्लाह ताला के अभिश्राप से बदसकूनी, तकलीफ

और बेईज्जती प्राप्त हो। मानव को हर बुराई की जानकारी है, जान-बूझकर जब मानव बुराईयों को अपनाते है तब वो अपमानित होते है और बंदर की तरह एक मजाक की वस्तु बन जाता है।

पैगाम:- मानव सभ्यता से पहले मानव बंदरों की तरह जंगली जीवन जीते थे, सारे प्राणी कुल में सिर्फ मानव को ही अल्लाह ताला ने सभ्यता और ज्ञान का प्रकाश दिया। फिर भी मानव अगर जानवरों की तरह व्यवहार करें तो अवश्य रूप से मानव खुद अपनी सभ्यता को अपने हाथों से बिगाड़ते है।

فَجَعَلْنَاهَا نَكَالاً لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ {66}

पस हमने इस वाक्ये से उन लोगों के वास्ते जिन के सामने हुआ था और जो बाद आनेवाले थे अज़ाब क़रार दिया, और परहेज़गारों के लिए नसीहत (६६)

व्याख्या:- सभ्यता के आरंभ से ही अल्लाहताला ने मानव के मध्य अभिश्राप और आशीर्वाद की अपनी उदाहरण छोड़ी, जो तमाम अगले-पिछले मानव के लिये सबक है और संयमी के लिय उपदेश और उदाहरण।

पैगाम:- पृथ्वी पर सभ्यता के विकास के साथ-साथ जंगली मानव की उपस्थिति एक उदाहरण है। ब्राजील की ऐमेजन नदी और भारत के अंडामन-निकोबार द्वीप के आस-पास आज भी जंगली मानव की उपस्थिति इस बात को प्रमाणित करती है।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوا بَقَرَةً قَالُوا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا قَالَ أَعُوذُ بِاللَّهِ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ {67}

और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि खुदा तुम लोगों को हुक्म करता है कि तुम एक गाय ज़बह करो वह लोग कहने लगे क्या तुम हमसे दिल्लगी करते हो मूसा ने कहा मै खुदा से पनाह माँगता हूँ कि मै जाहिल बनूँ (६७)

व्याख्या:- मुसा के द्वारा ''गाय'' जबा करने वाली बात एक चिह्न है। उस वक्त गाय मानव के लिये सबसे ज्यादा लाभकारी और कीमती थी। इस गाय को जबा करने वाली बात का मतलब मानव के अंदर की लालच और उत्वाकांक्षा की ''त्याग'' से है। जब मानव को अपनी ज्यादा लालच और उत्वाकांक्षा की त्यागाने की बात की जाती है, तो वो मोह-माया में उलझे हुए मानव संयमी का मजाक उड़ाते है। सत्य और शिक्षा की बात बताने वालों को जाहिल की उपाधि देते है।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَنَا مَا هِيَ قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَا فَارِضٌ وَلَا بِكْرٌ عَوَانٌ بَيْنَ ذَلِكَ فَافْعَلُوا مَا تُؤْمَرُونَ {68}

तुम अपने खुदा से दुआ करो कि हमें बता दे कि वह गाय कैसी हो मूसा ने कहा बेशक खुदा ने फरमाता है कि वह गाय न तो बहुत बूढ़ी हो और न बछिया बल्कि उनमें से औसत दरजे की हो, ग़रज़ जो तुमको हुक्म दिया गया उसको बजा लाओ (६८)

व्याख्या:- उत्वाकांक्षा, लोभ, ईर्ष्या, स्वार्थ और हिंसा सारी चरित्र प्रकृति ने मानव के अंदर डाली है और यह मानव की आदत है कि जितना भी उसे मिले उससे उसे संतुष्टी नहीं होती। यहां पर जिस ''गाय'' का उल्लेख है, जो इन सारी मानव चरित्र की निशानदेही करती है। मानव चरित्र की तुलना गाय से की गयी है, फरमाया गाय बिल्कुल बुढ़िया न हो (यानी अपने आशाओं को इतना भी बूढ़े न बनाये कि जीवन का आनंद ही खत्म हो जाए) और हद से न बढ़ों (और बच्चा न हो), मतलब अपने अंदर की उत्वाकांक्षा को बिलकुल ही खतम न करो कि जीने का मजा खत्म हो जाये और अल्लाहताला के प्राकृति से आनंद ही न उठा सके यानी ''म्याना रवि'' (बीच के उमर यानी नौजवानी के वक्त) ग्रहण करो और अपनी हद में रहो।

पैगाम:- बीच की उमर की गाय को जबा करके मानव को क्या प्राप्त होगा?दूसरी जान पर मनुष्य का क्या अधिकार है?गाय को खुराक के तौर पर मनुष्य के लिए नियुक्त किया गया है और उसकी कूरबानी के साथ मानव चरित्र का क्या सम्पर्क है? अयौकित निर्देश अल्लाह का नहीं हो सकता, तो इस लिहाज से ये कहा जा सकता है कि जवानी के समय ही मनुष्य के द्वारा ज्यादा से ज्यादा पाप होते है और इस बीच की उमर में ही मानव की आशा

और उत्वाकांक्षा हद से ज्यादा बढ़ जाती है। इस लिहाज से बीच की उमर में हद से ज्यादा लालच और उत्वाकांक्षा को त्यागने का आदेश दिया जा रहा है।

قالوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا لَوْنُهَا قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَاء فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النَّاظِرِينَ {69}

वह कहने लगे तुम अपने खुदा से दुआ करो कि हमें ये बता दे कि उसका रंग आखिर क्या हो मूसा ने कहा बेशक खुदा फरमाता है कि वह गाय खूब गहरे ज़र्द रंग की हो देखने वाले उसे देखकर खुश हो जाए (६९)

व्याख्या:- उत्वाकांक्षा का रंग हमेशा चमकीला होता है और मानव को बहकाने वाले सारी वस्तुं चमकदार होती है और इन चमकदार वस्तुओं में कोई फायदा नहीं होता। बनावटी वस्तुओं की चमक मानव को लालची बना देती है और पाप की तरफ ढकेल देती है।

قالوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّن لَّنَا مَا هِيَ إِنَّ الْبَقَرَ تَشَابَهَ عَلَيْنَا وَإِنَّا إِن شَاء اللّهُ لَمُهْتَدُونَ {70}

तब कहने लगे कि तुम अपने खुदा से दुआ करो कि हमें ज़रा ये तो बता दे कि वह और कैसी हो गाय तो और गायों में मिल जुल गई और खुदा ने चाहा तो हम ज़रूर पता लगा लेंगे (७०)

व्याख्या:- मानव ने इसकी विस्तार विवरण करने के लिये कहा। उत्वाकांक्षा और लालच मानव की विवेक में गहराई तक है, जो अनजाने में पनपती है और इसी चरित्र पर जो मानव काबू पा सकता है उसे ही शांति प्राप्त होती है और सुख-शांति मानव का परम लक्ष्य होता है।

पैगाम:- गाय जबा करना में और अल्लाह के सच्चे और सीधे रास्ते पर चलने का क्या तालुक है? गाय जबा करने से क्या मनुष्य को नेक राह प्राप्त होगी? इन सवालों के अनुसार आयतों को मौजूदा अनुवाद बिलकुल अल्लाह के नियमों के साथ मेल नहीं खाता। मेरा (सिद्धार्थ चटर्जी) व्याख्य ये प्रमाण करता है कि गाय एक चिह्न है जो मानव की उत्वाकांक्षा और लालच की तरफ इशारा करती है। और इसी चरित्र का बलिदान मानव और उसके समाज को शांति प्राप्त करने में सहायता करता है। आयत नं. ६७/६८/६९/७० में एक विशेष गाय का जिक्र किया गया है, जो जवान हो, खूबसुरत हो और जिसे देखकर लोग दंग रह जाये और उसके साथ-साथ आयत नम्बर ७१ में कहा गया है कि वो बिलकुल बेदाग हो, खेती में काम न करती हो और न ही जल ढोने या हल जोतने में उसे इस्तेमाल किया गया हो। गाय का खूबसुरत, जवान, जर्द रंग और बेदाग होना..... कुरबानी या जबा के साथ क्या सम्पर्क है? जब सारी जानों का मालिक अल्लाह है तो एक प्राणी का बलिदान मानव को क्या पूण्य दिला सकता है?खुराक के तौर पर अल्लाह ने जो जानवर मनुष्य के लिए नियुक्त किये है, उसके साथ जानवर के रंग-रूप का क्या तालुक है? क्या अल्लाह ऐसा हुक्म फरमायेगा जिसमें कोई ठोस वजह ही न हो?अल्लाह कभी भी बेबुनियाद बातों का हुक्म नहीं फरमाते। इस लिहाज से इन आयतों में जिस गाय का वर्णन किया गया उसके साथ मनुष्य की जवान उमर की तुलना की गयी है। जिस वक्त मनुष्य की उत्वाकांक्षा और सपने चरमसीमा पार करते है, उस वक्त मनुष्य को अपना चरित्र और पवित्रता की सुरक्षा और उसकी जरूरत से ज्यादा उत्वाकांक्षा को हालात और सब्र के द्वारा काबू में रखने का संदेश पहुँचाया गया है और गाय को एक उदाहरण के तौर पर पेश किया गया जिसका रंग चमकता हुआ पीला रखा गया और ये इसलिए क्योंकि सोने के चमकते हुए पीले रंग के साथ गाय के रंग की तुलना की गयी है और ये मानव के उत्वाकांक्षा के तरफ इशारा करते है। जरूरत से ज्यादा उत्वाकांक्षा पुरी न होने पर मनुष्य हताश हो जाता है और हताशा मनुष्य को पाप की तरफ ढकेल देता है। जो ज्यादा से ज्यादा जवानी में ही होता है। मानव समाज में पाप और पापियों की संख्या देखी जाये तो ७०प्रतिशत पाप २०-४० वर्ष के मानव से ही संगठित होता है जो मेहनत की कमाई नहीं खाना चाहते और इसका उदाहरण है आयत नम्बर ७१ जिसमें कहा गया है ''वो गाय न हल जोतने वाली है और न जल देने वाली''।

قَالَ إِنَّهُ يَقُولُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لاَّ ذَلُولٌ تُثِيرُ الأَرْضَ وَلاَ تَسْقِي الْحَرْثَ مُسَلَّمَةٌ لاَّ شِيَةَ فِيهَا قَالُوا الآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ فَذَبَحُوهَا وَمَا كَادُوا يَفْعَلُونَ {71}

मूसा ने कहा खुदा ज़रूर फरमाता है कि वह गाय न तो इतनी सधाई हो कि ज़मीन जोते न खेती सीचें भली चंगी एक रंग की कि उसमें कोई धब्बा तक न हो, वह बोले अब ठीक-ठीक बयान किया, ग़रज़ उन लोगों ने वह गाय हलाल की हालाँकि उनसे उम्मीद न थी वह कि वह ऐसा करेंगे (७१)

व्याख्या:- गाय एक पहेली है, जो न ही जमीन, खेत और जल पिलाने के काम आती है। तंदरूस्त और बे-दाग निशानियों का मतलब है, ज्यादा लालच, उत्वाकांक्षा बगैर सकून वाली जीवन, जो दिमागी पीड़ा से बे-दाग हो। सत्य की बात कोई मानने वाला न था, अल्लाह की हिदायत आने के बावजूद, मगर जब लोगों को सच्चाई का अनुभव हुआ तब उन्होंने अपनी गलतियों को कूरबान किया।

पैगाम:- ऐसी कोई गाय नहीं मिलेगी जो बिलकुल बे-दाग हो और जिससे कोई काम न लिया गया हो। लोग सोचे और मेरे (सिद्धार्थ चटर्जी) व्याख्या पर गौर फरमाये। एक गाय को कूरबान करके किसी को सही राह प्राप्त नहीं हो सकती जबतक वो अपनी अन्तात्मा से सही राह को पहचान न ले।

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادَّارَأْتُمْ فِيهَا وَاللَّهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنتُمْ تَكْتُمُونَ {72}

और जब एक शख़्स को मार डाला और तुममें उसकी बाबत फूट पड़ गई एक दूसरे को क़ातिल बताने लगा जो तुम छिपाते थे खुदा को उसका ज़ाहिर करना मंजूर था (७२)

व्याख्या:- जब मानव ने पहले रसूलों की हिदायत को इनकार (कत्ल) किया और आपस में मतभेद पैदा किया (तुम्हारे अंदर की सारी चालें अल्लाह जाहिर करने वाला था) और अल्लाह सारे मतभेद सबूतों के साथ मानव समाज में स्थापित कर देते है।

पैगाम:- अल्लाह के सच्चे और लाभदायक नियम जो रसुलों के द्वारा लोगों को मिले उन विचारधारा को जितना भी बदलने की चेष्टा क्यों न की गई हो, वो नियम हमेशा मानव समाज में प्रकट होते है। पाप मानव की लज्जाजनक चरित्र है और मानव सदेव प्रचेष्टा करते है पाप कर्मो को छुपाने की मगर सत्य इतना उज्जवल होता है कि उसके प्रकाश से पाप कर्म कभी भी छुप नहीं सकते।

فَقُلْنَا اضْرِبُوهُ بِبَعْضِهَا كَذَٰلِكَ يُحْيِي اللَّهُ الْمَوْتَىٰ وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ {73}

पस हमने कहा कि उस गाय को कोई टुकड़ा लेकर इस पर मारो यूँ खुदा मुर्दे को ज़िन्दा करता है और तुम को अपनी कुदरत की निशानियाँ दिखा देता है (७३)

व्याख्या:- रसुलों की हिदायत का एक मामुली हिस्सा (एक टुकड़ा घोस्त) मानव की अन्तात्मा को उज्जवल कर सकता है और वो जी उठता है। और इस तरह अल्लाह मुर्दा अन्तात्मा और पत्थर दिल लोगों को जिन्दा करके मानव के लिए अकलमंदी का उदाहरण छोड़ते है।

पैगाम:- इस आयत में (अरबी) गाय का जिक्र नहीं है और कुरान-शरीफ कहानियों के आधार पर टिका हुआ नहीं है।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوبُكُم مِّن بَعْدِ ذَٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ {74}

ताकि तुम समझो फिर उसके बाद तुम्हारे दिल सख़्त हो गये पस वह मिसल पत्थर के थे या उससे भी ज़्यादा करख़्त क्योंकि पत्थरों में बाज़ तो ऐसे होते है कि उनसे नहरें जारी हो जाती है और बाज़ ऐसे होते है कि उनमें दरार पड़ जाती है और उनमें से जल निकल पड़ता है और बाज़ पत्थर तो ऐसे होते है कि खुदा के ख़ौफ से गिर पड़ते है और जो कुछ तुम कर रहे हो उससे खुदा ग़ाफिल नहीं है (७४)

व्याख्या:- हकीकत को समझने के बाद मानव का ईमान पत्थर जैसा सख्त हो जाता है। कोई-कोई ईमान वाला मानव समाज के लिए जल की तरह फायदे का काम करता है और कोई ईमानदार मानव समाज के लिए इतना फायदेमंद हो जाता है जिसकी मिसाल जल के फव्वारे की तरह दी गई है और कोई-कोई मानव अल्लाह की राह पर अपने आपको कूरबान भी कर देता है।

पैगाम:- इस आयत में ''पत्थर'' से मुराद मानव के मजबूत ईमान से है और कुछ पत्थर दिल इंसान ऐसे भी होते है जो सच्चाई को कबूल नहीं करते और खुद चूर-चूर हो जाते है।

أَفَتَطْمَعُونَ أَن يُؤْمِنُوا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُونَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ يُحَرِّفُونَهُ مِن بَعْدِ مَا عَقَلُوهُ وَهُمْ يَعْلَمُونَ {75}

क्या तुम ये लालच रखते हो कि वह तुमपर ईमान लाएँगें हालाँकि उनमें का एक सम्प्रदाय ऐसा था कि खुदा का कलाम सुनाता था और अच्छी तरह समझने के बाद उलट फेर कर देता था हालाँकि वह खूब जानते थे (७५)

व्याख्या:- हकीकत बयान करने के बाद सभ्य मानव ये समझते है कि सुनने वाले इस हकीकत पर ईमान लाएंगे मगर उनकी उम्मीद को झुठा साबित करते हुए सुनने वालों में से एक सम्प्रदाय जान-बूझकर सच को बिगाड़ने की चेष्टा करते है।

पैगाम:- ये मानव का भ्रम है कि वो जो सोचते है या वो जो समझते है दूसरे भी ऐसा सोच या समझे। प्राकृतिक नियमानुसार हर मानव का सोचने और समझने की क्षमता विभिन्न होते है। इस आयत में अल्लाह ताला ने मानव की ये प्राकृतिक चरित्र पर दूसरे मानव की अधिकार का मात्रा निर्धारण किया। समाज में कुछ मानव ऐसे होते है जो सत्य को अनुभव करने के उपरांत उसे अपना उत्वकांक्षा पूरे करने की लक्ष्य से सत्य को छुपाते या बिगाड़ते है और कुछ मानव ऐसे होते है जो सत्य को समझ ही नहीं पाते। सृष्टि की सत्य नियमों को समझना मानव कर्त्तव्य है। मानव के जिद, अहंकार और लालच उस सत्य को अनुभव करने नहीं देता।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِينَ آمَنُوا قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ قَالُوا أَتُحَدِّثُونَهُم بِمَا فَتَحَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَاجُّوكُم بِهِ عِندَ رَبِّكُمْ أَفَلَا تَعْقِلُونَ {76}

और जब उन लोगों से मुलाकात करते है जो ईमान लाए तो कह देते है कि हम तो ईमान ला चुके और जब उनसे बाज़-बाज़ के साथ तख़लिया करते है तो कहते है कि जो कुछ खुदा ने तुम पर ज़ाहिर कर दिया है क्या तुम बता दोगे ताकि उसके सबब से कल तुम्हारे खुदा के पास तुम पर हुज्जत लाएँ क्या तुम इतना भी नहीं समझते (७६)

व्याख्या:- ऐसे दुष्कृति सत्य और प्रकृति पर विश्वास रखने वालों के सामने उसकी सच्चाई पर साक्षी देते है और उनकी पीठ पीछे उनको क्षति पहुँचाने की प्रचेष्टा करते है।

أَوَلَا يَعْلَمُونَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ {77}

लेकिन क्या वह लोग नहीं जानते कि वह लोग जो कुछ छिपाते है या ज़ाहिर करते है खुदा सब कुछ जानता है (७७)

व्याख्या:- क्या ये नहीं जानते कि अल्लाह उनका छुपा हुआ और प्रकाशित सब जानते है और सत्य इतना पवित्र और उज्जवल होता है कि यह हर हाल में प्रकाशित हो जाता है, इसे छिपाना मानव के वश में नहीं है।

पैगाम:- झूठ और कु-संस्कार प्राकृतिक नियमानुसार सत्य द्वारा गलत प्रमाणित होता है। कोई भी शक्ति इस नियम को बदल नहीं सकता।

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّونَ لَا يَعْلَمُونَ الْكِتَابَ إِلَّا أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ {78}

और कुछ उनमें से ऐसे अनपढ़ है कि वह किताबे खुदा को अपने मतलब की बातों केसिवा कुछ नहीं समझते और फक़त ख़्याली बातें किया करते हैं, (७८)

व्याख्या:- अज्ञानी लोग केवल बाहरी आचार-विचार से प्रभावित होते है और उनकी अज्ञानता सत्य की गंभीरता तक उन्हें पहुँचने नहीं देती। न वे जानते है और न जानने की चेष्टा करते है यानी बगैर समझे किसी भी नुकसानदेह आदर्शो को अपने जीवन में लागू कर लेते है।

पैगाम:- इस आयत में स्पष्ट रूप में घोषणा किया गया कि वो मूर्ख मानव है जो कोई भी पुस्तक को बगैर समझे सिर्फ कंटस्थ करते है या पढ़ते है और आशा रखते है कि बगैर समझे पढ़ने पर उन्हें पुण्य प्राप्त होगा, ये उनका भ्रम है। मानव के मध्य समस्त पुस्तकों की उपस्थिति मानव को ज्ञान प्रदान करती है और इसी कारण अल्लाह ताला ने मानव को ''पुस्तक'' की पहचान दी। कुछ लोग पुस्तक की पूजा करते है मगर उसके अंदर की ज्ञान को अनुभव नहीं करते, ये मूर्खता है। पुस्तक के पूजा का मतलब उसके अंदर के ज्ञान की प्राप्ति से है।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ يَكْتُبُونَ الْكِتَابَ بِأَيْدِيهِمْ ثُمَّ يَقُولُونَ هَٰذَا مِنْ عِندِ اللَّهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَوَيْلٌ لَّهُم مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُونَ {79}

पस वाए हो उन लोगों पर जो अपने हाथ से किताब लिखते है फिर है कि ये खुदा के यहाँ से है ताकि उसके ज़रिये से थोड़ी सी क़ीमत प्राप्त करें पस अफसोस है उन पर कि उनके हाथों ने लिखा और फिर अफसोस है उनपर कि वह ऐसी कमाई करते हैं (७९)

व्याख्या:- और ऐसे लोग धर्म के नाम पर अपने मनगढ़त आचार-विचार को जन्म देते है और उस पर अल्लाह का नाम देने की चेष्टा करते है और अल्लह की आदर्शों को अपने फायदे के लिए प्रभावित करने की प्रचेष्टा करते है और उसे बिगाड़ कर अपने फायदे के लिए लोगों को पथभ्रष्ट करके उसे पैसा बनाने का माध्यम बनाते है।

पैगाम:- अपने आपको धार्मिक कहने वाले कुछ लोग ऐसे है जो धर्म को अपनी तरह से अपने फायदे के लिए और सच्चाई को बिगाड़ते हुए लोगों के सामने पेश करते है सिर्फ अपनी नजायज उत्वाकांक्षा पूरी करने के लिए। जिसमें न कोई विधि है, न कोई लाभ और न कोई विज्ञान। मानव समाज को ऐसे विचारधारा कु-संस्कार और अज्ञानता के अंधेरे में ले जाते है।

وَقَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِندَ اللَّهِ عَهْدًا فَلَن يُخْلِفَ اللَّهُ عَهْدَهُ أَمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ {80}

और कहते है कि गिनती के चन्द दिनों के सिवा हमें आग छुएगी भी तो नहीं इन लोगों से कहो कि क्या तुमने खुदा से कोई इक़रार ले लिया है कि फिर वह किसी तरह अपने इक़रार के ख़िलाफ़ हरगिज़ न करेगा या बे समझे बूझे खुदा पर बोहतान जोड़ते हो (८०)

व्याख्या:- दुष्कृति सदेव कहते है कि उनको सिर्फ कुछ वक्त की कष्ट है और अशांति का आग उसे स्पर्श नहीं करेगा। सच्चाई तो ये है कि प्रकृति ने ऐसे लोगों से ऐसा कोई भी अंगिकार नहीं किया, ये लोग अल्लाह के बारे में झूठा अंगिकार का दावा करते है।

पैगाम:- सच को झुठा साबित करने की चेष्टा में कुछ लोग ये दावा करते है कि उन्हें शान्ति का स्वर्ग प्राप्त है, ये सिर्फ उनका दिखावा है और ये दिखावा करके वो लोगों को बेवकुफ बनाते है और उनकी भावना से खिलवाड़ करना ऐसे लोगों का पेशा है।

بَلَىٰ مَن كَسَبَ سَيِّئَةً وَأَحَاطَتْ بِهِ خَطِيئَتُهُ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {81}

जिसने बुराई प्राप्त की और उसके पापों ने चारों तरफ से उसे घेर लिया है वही लोग तो दोज़ख़ी हैं और वही उसमें हमेशा रहेंगे (८१)

व्याख्या:- अल्लाह के आदर्शों का उल्लंघन और बुरे काम करने वाले लोग हमेशा के लिए अशांति और मानसिक पीड़ा में जीते है, ये बात वो खुद अनुभव करते है मगर लोगों के सामने प्रकाश नहीं करते।

पैगाम:- मानव की अन्तर्आत्मा सदेव मानव को पाप बोद्ध की परिचय कराते है यही प्रकृति है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {82}

और जो लोग ईमानदार है और उन्होंने अच्छे काम किए हैं वही लोग जन्नती है कि हमेशा जन्नत में रहेंगे (८२)

व्याख्या:- अल्लाह के आदर्शों का पालन करने वाले सभ्य लोग हमेशा शांति के स्वर्ग में विराजमान होते है यानी जो सच्चाई को अनुभव करते हुए उसे अपने जीवन में लागू करते है वो ही शान्ति प्राप्त करते है और इन्हीं नियमों में अपनी जीवन बसर करते है।

पैगाम:- मानव का परम लक्ष्य है ''शांति'' जो मानव नहीं समझता। शांति प्राप्त का रास्ता है अहिंसा, प्रेम, पवित्रता और अपने बुरे चरित्रों को काबू में रखने की प्रचेष्टा। जो इस प्रचेष्टा में सफल होता है या कुछ हद तक सफल होता है उसे ही शांति प्राप्त होती है।

मुसा की उदाहरण के बाद बनी इसराइल का उदाहरण दिया जा रहा है

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ لَا تَعْبُدُونَ إِلَّا اللَّهَ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينِ وَقُولُوا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُعْرِضُونَ {83}

और जब हमने बनी ईसराइल से अहद व पैमान लिया था कि खुदा के सिवा किसी की इबादत न करना और माँ बाप और क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजों के साथ अच्छे सुलूक करना और लोगों के साथ अच्छी तरह से बातें करना और बराबर नमाज़ पढ़ना और ज़कात देना फिर तुममें से थोड़े आदिमियों के सिवा फिर गए और तुम लोग हो ही इक़रार से मुँह फेरने वाले (८३)

व्याख्या:- और जब अल्लाह ने बनी इसराइल से वादा लिया कि तुम अल्लाह के असूलों के सिवा दूसरों की इबादत (असूल) न करना (अपनाना) और मां-बाप के साथ अच्छा सलुक करना और अपने मिलने-जुलने वालों, यतीमों, गरीबों और लोगों को अच्छी बात कहना, नमाज (अल्लाह के असूल) कायम रखना और जखात देते रहना लेकिन थोड़े से लोगों के अलावा बाकि सब फिर गये और मुँह मोड़ लिया।

पैगाम:- इस आयत में बनी इसरायिल को नमाज कायम करने और जकात देने के लिए कहा जा रहा है। इसका मतलब ये हुआ कि बनी इसरायिल में नमाज और जकात दोनों ही मौजूद थी। कुरान-शरीफ के द्वारा मुसलमानों को भी इन दोनों नियमों को पालन करने का आदेश दिया गया है। बनी इसरायिल की प्रार्थना-पद्धति मुसलमानों से अलग है, इस हिसाब से नमाज का वो हुकुम है जो हर सम्प्रदाय के लिए एक-सा हुकुम रखता है वो है प्रेम, मानवता, भाईचारा, शान्ति, अहिंसा और ज्ञान की प्राप्ति और रही जकात की बात तो ये वो राशि है जो सरकार को दी जाती है और इसके बदले में सरकार अवाम को सुरक्षा, सुविधाएं और उन्नयन प्रदान करती है। और ये कानून हर देश और सम्प्रदाय पर लागू है। नमाज का कोई विशेष तरीका कुरान में नहीं है और ये इसलिए कि हर सम्प्रदाय की पूजापद्धथि अलग-अलग है और कुरान हर सम्प्रदाय के लिए एक परिपूर्ण किताब है। ये आयत इस को प्रमाणित करती है।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُونَ دِمَاءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُونَ أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ {84}

और जब हमने तुम से अहद लिया था कि आपस में खूनरेज़ियाँ न करना और न अपने लोगों को शहर बदर करना तो तुम ने इक़रार किया था और तुम भी उसकी गवाही देते हो (८४)

व्याख्या:- मानवता, भाईचारा, शांति, प्रेम, शिक्षा और अहिंसा मनुष्य और अल्लाह के मध्य प्राकृतिक अंगिकार है। आपस में रक्तपात और मनुष्य को उसके घर से निकाल देना (सुख-शान्ति छीन लेना) इस प्रतिज्ञा का उल्लंघन है। मानव जन्म और ईश्वर की मध्य का सम्पर्क है ये प्रतिज्ञा। अल्लाह सब कुछ देखता-जानता है। मानवता, भाईचारा और अहिंसा मानव मस्तिक्ष के उत्तम चरित्र और संकल्प है और ये मानव, उसके समाज और सभ्यता के विकास के लिए लाभकारी भी है।

पैगाम:- प्राणियों में सबसे उत्तम है मानव जन्म।

ثُمَّ أَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تَقْتُلُونَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُونَ فَرِيقًا مِنْكُمْ مِنْ دِيَارِهِمْ تَظَاهَرُونَ عَلَيْهِمْ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَإِنْ يَأْتُوكُمْ أُسَارَى تُفَادُوهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ أَفَتُؤْمِنُونَ بِبَعْضِ الْكِتَابِ وَتَكْفُرُونَ بِبَعْضٍ فَمَا جَزَاءُ مَنْ يَفْعَلُ ذَلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يُرَدُّونَ إِلَى أَشَدِّ الْعَذَابِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ {85}

फिर वही लोग तो तुम हो कि आपस में एक दूसरे को क़त्ल करते हो और अपनों से एक जत्थे के नाहक़ और ज़बरदस्ती हिमायती बनकर दूसरे को शहर बदर करते हो अगर वही लोग क़ैदी बनकर तम्हारे पास आए तो उनको फ़िदया देकर छुड़ा लेते हो हालाँकि उनका निकालना ही तुम पर हराम किया गया था तो फिर क्या तुम बाज़ बातों पर ईमान रखते हो और बाज़ से इन्कार करते हो पस तुम में से जो लोग ऐसा करें उनकी सज़ा इसके सिवा और कुछ नहीं कि ज़िन्दगी भर की रूसवाई हो और क़यामत के दिन सख़्त अज़ाब की तरफ लौटा दिये जाए और जो कुछ तुम लोग करते हो खुदा उससे ग़ाफ़िल नहीं है (८५)

व्याख्या:- पृथ्वी में कुछ लोग ऐसे भी है जो इस नियम को न मानकर आपस में सम्प्रदायिक दंगा करते हुए

एक-दूसरों के घरों को उजाड़ते है और दूसरों की मदद से अपने दुश्मनों को कैद करते है। यही लोग अल्लाह के कुछ असूलों को मानते है और कुछ असूलों को इनकार करते है। इन लोगों को अभिशप्त जीवन, पीड़ा और अशान्ति से भरी हुई अन्त प्राप्त होगा।

पैगाम:- युद्ध मानव सभ्यता के सर्वनाश का कारण है और शान्ति के नाम पर युद्ध करना अशान्ति का कारण है। कोई-कोई जहाद को भी युद्ध की रूप देते है, क्या युद्ध जहाद के नाम पर मनुष्य की हत्या करना अल्लाह का नियम है? आयत नम्बर ८४/८५ में अल्लाहताला ने मनुष्य को अपना रास्ता साफ और स्पष्ट तौर पर बता दिया है।

أُولَـئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ فَلاَ يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلاَ هُمْ يُنصَرُونَ {86}

यही वह लोग है जिन्होंने आख़ेरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी ख़रीद लिया है पस न उनके अज़ाब ही में तख़फ़ीफ़ की जाएगी और न वह लोग किसी तरह की मदद दिए जाएँगे (८६)

व्याख्या:- प्राकृतिक तौर पर मानव अपनी जीवन की आखिरी हिस्से में सबसे ज्यादा दिमागी और शारीरिक पीड़ा से गुजरता है, जो लोग उत्वाकांक्षा, मोह-माया और लालच के बगैर जीवन गुजारते है उनकी जीवन का आखिरी दौर भी अच्छी तरह गुजरता है। हत्या जैसा अपराध करने वाला यानी अपने विचारधारा को कायम करने के लिए या किसी भी लक्ष्य के लिए हत्या करें और दुनियावी वस्तु की लालच में उसका विवेक उसे शान्ति से जीने नहीं देगा और इस मामले में कोई भी उसका मददगार नहीं होता।

पैगाम:- जवानी मे मानव जितना भी संयम और पवित्र जीवन अतिवाहित करेगा बुढ़ापे या जयफी में उसको उतनी ही शांति और स्वस्थ जीवन मिलेगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَقَفَّيْنَا مِن بَعْدِهِ بِالرُّسُلِ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ أَفَكُلَّمَا جَاءكُمْ رَسُولٌ بِمَا لاَ تَهْوَى أَنفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ فَفَرِيقًا كَذَّبْتُمْ وَفَرِيقًا تَقْتُلُونَ {87}

और ये हकक़ी बात है कि हमने मूसा को किताब दी और उनके बाद बहुत से पैग़म्बरों को उनके क़दम ब क़दम ले चलें और मरियम के बेटे ईसा को वाज़ेए व रौशन मौजिजे दिए और पाक रूह के ज़रिये से उनकी मदद की क्या तुम उस क़दर बद दिमाग़ हो गए हो कि जब कोई पैग़म्बर तुम्हारे पास तुम्हारी ख़्वाहिशे नफ़्सानी के ख़िलाफ़ कोई हुक्म लेकर आया तो तुम अकड़ बैठे फिर तुमने बाज़ पैग़म्बरों को तो झुठलाया और बाज़ को जान से मार डाला (८७)

व्याख्या:- मानव चरित्र को सामने रखते हुए पाक-परवरदिगार ने किताब और रसूलों के द्वारा मानव को हिदायत दी लेकिन मानव ने अपने ख्याल से उसे झुठलाया और रसुलों को इनकार करते हुए उनकी हिदायत की हत्या की।

पैगाम:- मुसा को प्रकृति की तरफ से सत्य ज्ञान मिला और वो ही सच्चाई का प्रकाश सैकड़ों साल बाद ईसा को मिला और इस सच्चाई को प्रतिष्ठित करने के लिए उन लोगों को प्राकृतिक सहायता मिली थी (यानी पाक रूह)। कुछ वक्त के लिए कु-संस्कार में डूबे हुए लोगों ने इन सच्चे नियमों को झुठलाने की चेष्टा की और कभी-कभी उन सच्चे नियमों को पूरी तरह से इनकार (हत्या) किया।

وَقَالُوا قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَل لَّعَنَهُمُ اللّهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيلاً مَّا يُؤْمِنُونَ {88}

कहने लगे कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ चढ़ा हुआ है बल्कि उनके कुफ़्र की वजह से ख़ुदा ने उनपर लानत की है पस कम ही लोग ईमान लाते हैं (८८)

व्याख्या:- असभ्य दुष्कृति मानव अपनी लालच और मोह-माया के वश में आकर अच्छी बातों का इनकार करते है और अपने मस्तिक्ष के सारे सुराख बंद कर देते है ताकि सभ्यता, शांति और सच्चाई का प्रकाश उन तक न पहुँचे। ऐसे लोगों का प्रेम, पवित्रता, शांति और सत्यता पर विश्वास नहीं होता।

وَلَمَّا جَاءهُمْ كِتَابٌ مِّنْ عِندِ اللّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ وَكَانُوا مِن قَبْلُ يَسْتَفْتِحُونَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَمَّا جَاءهُم مَّا عَرَفُوا كَفَرُوا بِهِ فَلَعْنَةُ اللّهِ عَلَى الكَافِرِينَ {89}

और जब उनके पास खुदा की तरफ़ से किताब आई और वह उस किताब की जो तसदीक़ भी करती है। और उससे पहले काफ़िरों पर फतेह याब होने की दुआएँ माँगते थे पस जब उनके पास वह वस्तु जिसे पहचानते थे आ गई तो लगे इन्कार करने पस काफ़िरों पर खुदा की लानत है (८९)

व्याख्या:- अल्लाह के नियमों को ऐसे लोगों ने हमेशा अपवित्र करने की प्रचेष्टा की लेकिन परवरदिगार ने अपने आदर्शों को प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से युग-युग से रसूलों के द्वारा अपनी उपदेश मानव को दिया मानव के ही लाभ के लिए, फिर भी लोगों ने अल्लाह के आदर्शों के लाभ और रसूलों के बताए हुए नियमों को झुठलाया। और झुठलाने वालों को अल्लाह की तरफ से अशान्ति का अभिश्राप प्राप्त होता है।

पैगाम:- ये आयत प्रमाण करती है कि अल्लाह के नियम जो पुस्तक की रूप में लोगों के मध्य उपस्थित है, वो सारी पुस्तकें एक-दूसरे की परिपूरक है। और एक ही नियम अलग-अलग पुस्तकों में अलग-अलग तरीकें, समय, भाषा और जगह में बयान किया गया है।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ أَن يَكْفُرُوا بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ بَغْيًا أَن يُنَزِّلَ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ فَبَاءُوا بِغَضَبٍ عَلَىٰ غَضَبٍ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ مُّهِينٌ {90}

क्या ही बुरा है वह काम जिसके मुक़ाबले में वह लोग अपनी जानें बेच बैठे है कि खुदा अपने बन्दों से जिस पर चाहे अपनी इनायत से किताब नाज़िल किया करे इस रश्क से जो कुछ खुदा ने नाज़िल किया है सबका इन्कार कर बैठे पस उन पर ग़ज़ब पर ग़ज़ब टूट पड़ा और काफ़िरों के लिए रूसवाई का अज़ाब है (९०)

व्याख्या:- अल्लाह की आदर्शों और उपदेश को अपनी लक्ष्य से बदलना अल्लाह की असूलों के साथ कूफ़ करना है। आदर्शों की सत्यता जो अनुभव करते है और अपने जीवन में लागू करते है उसे तकलीफ पर तकलीफ देना कूफरियत है और ऐसा करने वालों को अल्लाह का अभिश्राप और अशांति प्राप्त होती है।

पैगाम:- संयमी मनुष्य को कष्ट देना पापियों की सबसे बड़ी भुल है क्योंकि वो बिलावास्ता अपने आपकों ही कष्ट देते है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ آمِنُوا بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا نُؤْمِنُ بِمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُونَ بِمَا وَرَاءَهُ وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُونَ أَنبِيَاءَ اللَّهِ مِن قَبْلُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {91}

जब उनसे कहा गया कि खुदा ने नाज़िल किया है उस पर ईमान लाओ तो कहने लगे कि हम तो उसी किताब पर ईमान लाए है जो हम पर नाज़िल की गई थी और उस किताब को जो उसके बाद आई है नहीं मानते है हालाँकि वह सत्य है और उस किताब की जो उनके पास है तसदीक़ भी करती है मगर उस किताब कुरान का जो उसके बाद आई है इन्कार करते है उनसे ये तो पूछो कि तुम अगर ईमानदार थे तो फिर क्यों खुदा के पैग़म्बरों का साबिक़ क़त्ल करते थे (९१)

व्याख्या:- पापियों ने अपने लक्ष्य से हर किताब में नुक्स (गलती) निकाला और इस नुक्स को साफ करने के लिए अल्लाह ने दूसरे रसूल और उपदेश भेजे। तब इन्होंने नुक्स और कुसंस्कार वाली किताब के असूलों को छोड़ने से इनकार किया।

पैगाम:- अब सवाल यह है कि अगर उनकी नुक्स वाली किताब सच्ची है तो उनसे पहली वाली या बाद वाली किताब पर उनका ईमान क्यों नहीं है? सब जानते है कि अल्लाह का असूल कभी नहीं बदलता और हर युग में अल्लाह ने अपने सच्चे और लाभकारी नियम अलग-अलग रसुलों के द्वारा भेजे। मानव सभ्यता और मानव समाज में उसे कायम रखने के लिए रूहानी मदद प्रदान की, किताबों में फूट डालने से अल्लाह के आदर्श बदल नहीं जाते क्योंकि ये एक प्राकृतिक सत्य है जो अल्लाह खुद-ब-खुद मानव समाज में फैलाते है और मानव उसे अनुभव करके अपनाते है। इसका मतलब है मानव हमेशा लाभकारी आदर्शों को ही अपनाते है। दुर्बल मस्तिक्ष वाले मानव अपना भला-बुरा नहीं समझ सकते।

وَلَقَدْ جَاءَكُم مُّوسَى بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِن بَعْدِهِ وَأَنتُمْ ظَالِمُونَ {92}
और तुम्हारे पास मूसा तो वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आ ही चुके थे फिर भी तुमने उनके बाद बछड़े को खुदा बना ही लिया और उससे तुम अपने ही ऊपर जुल्म करने वाले थे (९२)
व्याख्या:- यहां पर ''बछड़ा'' उत्वाकांक्षा और लालच का निशानदेही करता है। मुसा ने वही बताया जो पहले नबियों ने बताया था फिर भी वो लोग न माने और वो लोग अत्याचारी थे। जरूरत से ज्यादा लालच और उत्वाकांक्षा को अपना माबूद (लक्ष्य) बना लिया।
وَإِذْ أَخَذْنَا مِيثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّورَ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاسْمَعُوا قَالُوا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَأُشْرِبُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُم بِهِ إِيمَانُكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {93}
और जब हमने तुमसे अहद लिया और तूर को तुम्हारे सर पर लटकाया और जो हमने दी है मज़बूती से लिए रहो और सुनो तो कहने लगे सुना तो हम इसको मानते नहीं और उनकी बेईमानी की वजह से बछड़े की उलफ़त घोल के उनके दिलों में पिला दी गई उन लोगों से कह दो कि अगर तुम ईमानदार थे तो तुमको तुम्हारा ईमान क्या ही बुरा हुक्म करता था (९३)
व्याख्या:- पाक-परवरदिगार ने सुख-शांति का अंगिकार किया पवित्र मानव के लिए और पाप शक्ति (तूर) को मानव के अन्तात्मा में सम्मिलित किया और साथ में ये भी आदेश दिया कि 'मेरे (अल्लाह) नियमों को मजबूती से पकड़े रखो' लेकिन मानव ने इस बात को न समझकर नियमों का उल्लंघन किया, फिर उनके चरित्रों में लालच और उत्वाकांक्षा का जाल बिछा दिया गया और उनके विवेक को बुराई में ढकेल दिया और ये लोग काफिर हुए।
पैगाम:- बछड़े को घोल कर पिला देना का मतलब इस आयत में ये साबित होता है कि ''बछड़ा'' को उची ख्वाहिसात, लालच और ईर्ष्या का चिह्न बनाकर पेश किया और इसे इंसानी वजूद में मिला दिया।
قُلْ إِن كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْآخِرَةُ عِندَ اللَّهِ خَالِصَةً مِّن دُونِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {94}
इन लोगों से कह दो कि अगर खुदा के नज़दीक आखेरत का घर खास तुम्हारे वास्ते है और लोगों के वासते नही है पस अगर तुम सच्चे हो तो मौत की आरज़ू करो (९४)
व्याख्या:- अगर मानव सच्चे रास्ते पर हो और उसकी अन्तात्मा लालच, ईर्ष्या, नफरत और उत्वाकांक्षा से पवित्र है तो निश्चितरूप से मानव मृत्यु को प्रकृति समझकर नही डरोगे।
पैगाम:- सृष्टि के नियम अनुसार हर वस्तु की मृत्यु निश्चित है और इन आदर्शों को पुरी तरह से अपनाना ''कयामत पर ईमान लाना है''। जब मनुष्य सृष्टि के इन नियमों को समझ जाएगा और उस पर ईमान रखेगा तब उस मनुष्य के मस्तिक्ष से लालच, ईर्ष्या, लोभ, घृणा, अहंकार जैसी अपवित्र स्वभाव मिट जाएगी और यही परम सत्य है।
وَلَن يَتَمَنَّوْهُ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ {95}
लेकिन अपनी करतूतों को देखते हुए कभी भी मौत नहीं मांगेंगे अल्लाह ताला जालिमों को खूब जानता है (९५)
व्याख्या:- अपने लालच और उत्वाकांक्षा वाले करतूतों की प्रेम में मौत न मांगेंगे और अल्लाह ऐसे अत्याचारियों को खूब जानता है।
पैगाम:- जीवन को जीना मानव का कर्त्तव्य है और उस जीवन में शांति प्राप्त होना आशीर्वाद है। कुछ मानव का ये भ्रम होता है कि अपनी इच्छा पूर्ति से ही शांति प्राप्त होगी। मगर इच्छा और उत्वकांक्षा ऐसा चरित्र है जो कभी भी पूरा नही हो सकता। एक के बाद एक इच्छा और उत्वकांक्षा लोभ और मोह-माया का रूप लेकर मस्तिक्ष का शांति विनष्ट करते है।
وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلَى حَيَاةٍ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهِ مِنَ الْعَذَابِ أَن يُعَمَّرَ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ {96}
और तुम उन ही को ज़िन्दगी का सबसे ज़्यादा हरीस पाओगे और मुशरिकों में से हर एक शख़्स चाहता है कि काश उसको हज़ार बरस की उम्र दी जाती हालाँकि अगर इतनी तूलानी उम्र भी दी जाए तो वह अल्लाह के अज़ाब से

छुटकारा देने वाली नही, और जो कुछ वह लोग करते है खुदा उसे देख रहा है (९६)

व्याख्या:- बनावटी दुनियायी वस्तुओं की लालच इन्हीं लोगों में है और यही लोग अपनी उत्वाकांक्षा और लालच की चाह मे हजारों साल की जीवन की उम्मीद रखते है। जितनी भी जीवन उन्हें मिल जाये अशान्ति के अभिश्राप से मुक्ति नही होगी अल्लाह उनके कामों को देख रहा है।

पैगाम:- दुष्कृति यानी मुशिरक अपनी जीवन के मोह में हजारों साल जीने की अपेक्षा करते है तो क्या उन्हें इन हजार सालों में शांति प्राप्त होगी?

قُلْ مَن كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللَّهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ {97}

कह दो कि जो जिबरील का दुशमन है क्योंकि उस फ़रिश्ते ने खुदा के हुक्म से तुम्हारे दिल पर डाला है और वह उन किताबों की भी तसदीक करता है जो उसके सामने मौजूद है और ईमानदारों के वास्ते खुशख़बरी है (९७)

व्याख्या:- अल्लाह पलक झपकाते सब काम कर सकता है उसे किसी की मदद की जरूरत नहीं। उन्होंने जिस तरीके से रसूल के मस्तिश्क में जाग्रुकता पैदा की उस तरीकात का नाम ''जीब्रील'' कहा गया है। और कह दो जो इस तरीकात यानी जाग्रुकता पर संदेह करते है, (जिसमें अल्लाह की सारी उपदेशों का उल्लेख किया गया है) वो मानव मूर्ख और अत्याचारी है। मानने वाले लोगों के लिये शांति का जीवन की खुशखबरी इस जाग्रुकता पर है।

पैगाम:- लाखों, करोड़ों इंसानों के मध्य कोई एक विशेष ही होता है जिसे प्राकृति कुछ रहस्य के अविष्कार का अधिकारी बनाती है और इस प्राकृतिक सत्यता को जो नकारते है वो सत्यता और पवित्रता से कोसो दूर होते है।

مَن كَانَ عَدُوًّا لِّلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِّلْكَافِرِينَ {98}

जो शख़्स अल्लाह और उसके फरिश्तों और उसके रसूलों और जिबराईल व मीकाइल का दुशमन हो तो बेशक खुदा भी काफ़िरों का दुश्मन है (९८)

व्याख्या:- अल्लाह की बनायी हुई तमाम प्रकृति एक-एक देवता (फरिश्ता) है। उदाहरण के तौर पर आग, जल, हवा, मिट्टी यहां तक कि विज्ञान भी। अल्लाह के रसुल इन सारी प्रकृतियों की सुरक्षा के लिये काम करते है और जो लोग इन सारी प्रकृतियों को बिगाड़ने का या इसका गलत उपयोग करते है वो लोग आपस में दुश्मन है और प्रकृति को बिगाड़ने वाले ही काफिर है।

وَلَقَدْ أَنزَلْنَا إِلَيْكَ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ وَمَا يَكْفُرُ بِهَا إِلَّا الْفَاسِقُونَ {99}

और हमने तुम पर ऐसी निशानियाँ नाज़िल की है जो वाजेए और रौशन है और ऐसे नाफरमानों के सिवा उनका कोई इन्कार नहीं कर सकता (९९)

व्याख्या:- अल्लाह ने प्रकृति के लाभकारी नियमों को मानव के सामने प्रमाण के साथ पेश किया और जो इस प्रमाण को अस्वीकार करते हैं वो मनहूस होते है।

पैगाम:- मानव का आविश्वासिक चरित्र सत्य को सरलता से ग्रहण नहीं करता या इसे करना नहीं चाहता या ये भी कह सकते हैं कि अपने पुराने नियमों की चाहत में सच्चे नियमों को ठुकराते है, मगर वो ये नहीं समझते कि सच्चाई बुलंद और लाभदायी होती है।

أَوَكُلَّمَا عَاهَدُوا عَهْدًا نَّبَذَهُ فَرِيقٌ مِّنْهُم بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ {100}

जब कभी कोई अहद किया तो उनमें से एक फरीक़ ने तोड़ डाला बल्कि उनमें से अक्सर तो ईमान ही नहीं रखते (१००)

व्याख्या:- जब लोग इसे (सत्यता) रोशन करने की चेष्टा करते है तो उन्ही में से कुछ लोग इसे बिगाड़ने की चेष्टा में लग जाते है और वही लोग दुष्कृति है।

وَلَمَّا جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيقٌ مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ كِتَابَ اللَّهِ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُونَ {101}

जब उनके पास खुदा की तरफ से रसूल आया और उस किताब की जो उनके पास है तसदीक़ भी करता है तो उन अहले किताब के एक सम्प्रदाय ने किताबे खुदा को अपने पसे पुश्त फेंक दिया गोया वह लोग कुछ जानते ही नहीं (१०१)

व्याख्या:- कोई भी रसुल जब सत्य व्याख्या करते थे और प्रमाण के तौर पर पहले वाले रसुलों का इतिहास सामने रखते थे, तब समाज के कुछ लोग सत्यता से मुँह फेरकर कु-संस्कार को अपना लेते हैं और इस तरह का दिखावा करते कि उन्हें कुछ मालुम ही नहीं।

पैगाम:- रसुलों के आदर्श अल्लाह की रहस्यमय चरित्र की सत्यता को प्रमाण करते है यानी प्राकृतिक सत्य समय-समय पर मानव समाज में प्रतिष्ठित हुआ और यही मानव सभ्यता का इतिहास है। जो मानव इस इतिहास को पथभ्रष्ट करने का प्रचेष्टा करते है उस मानव को ही कुरान-शरीफ में काफिर कहा गया। काफिर का एक मुख्य चरित्र है अल्लाह के नियमों से मानव को विभ्रान्त करना।

وَاتَّبَعُوا مَا تَتْلُوا الشَّيَاطِينُ عَلَى مُلْكِ سُلَيْمَانَ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلَكِنَّ الشَّيَاطِينَ كَفَرُوا يُعَلِّمُونَ النَّاسَ السِّحْرَ وَمَا أُنزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوتَ وَمَارُوتَ وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولَا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ فَيَتَعَلَّمُونَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُونَ بِهِ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهِ وَمَا هُم بِضَارِّينَ بِهِ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَيَتَعَلَّمُونَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَلَقَدْ عَلِمُوا لَمَنِ اشْتَرَاهُ مَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهِ أَنفُسَهُمْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ {102}

जिसको सुलेमान के ज़माने की सलतनत में शयातीन जपा करते थे हालाँकि सुलेमान ने कुफ्र नहीं इख़्तेयार किया लेकिन शैतानों ने कुफ्र एख़्तेयार किया कि वह लोगों को जादू सिरवाया करते थे और वह वस्तुं जो हारूत और मारूत दोनों फ़रिश्तों पर बाइबिल में नाज़िल की गई थी हालाँकि ये दोनों फ़रिश्ते किसी को सिखाते न थे जब तक ये न कह देते थे कि हम दोनों तो फ़क़त है पस तो बेइमान न हो जाना उस पर भी उनसे वह सीखते थे जिनकी वजह से मिया बीवी में तफ़रक़ा डालते हालाँकि बग़ैर अज़्ने खुदा बन्दी वह अपनी इन बातों से किसी को ज़रर नहीं पहुँचा सकते थे और ये लोग ऐसी बातें सीखते थे जो खुद उन्हें नुक़सान पहुँचाती थी और कुछ पहुँचाती थी बावजूदकि वह यक़ीनन जान चुके थे कि जो शख़्स इन का ख़रीदार हुआ वह आख़िरत में बेनसीब है और बेशुबह बहुत ही बड़ा है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों को बेचा काश सोचे समझे होते (१०२)

व्याख्या:- तफरक्का (मतभेद) श्रृष्टि करने वाले लोग अप्राकृतिक नियमों के पीछे लग गये। बादशह सूलेमान पर भी प्रकृति बिगाड़ने का अभियोग लगा था और यह काम दुष्कृति पापी लोगों का था, जो लोगों को अयौगतिक, कु-संस्कार क्षण बातों पर विश्वास रखने की उपदेश देते थे और नहीं मानने पर तकलीफ होगी। यहां पर ''बाबूल'' शहर मानव के पवित्र चरित्र की चिह्न है और पवित्र शांतिकामी मानव के चारों तरफ शैतान (पाप चक्र) ने अयौगतिक और कु-संस्कार वाली बातें डाल दी जिसे ''हारूत-मारूत'' से उदाहरण दी गयी और ये लोग हमेशा ईमान वाले लोगों को लालच और उत्वकांक्षा के द्वारा बेहकाते रहते है और इनकी चेष्टा अल्लाह की मर्जी के बगैर कामयाब न होती थी। ये लोग वही काम करते थे जो सिर्फ समाज को और अपने आपको अशांति और कष्ट दे। ये लोग ये भी जानते है कि इन्हें अपनी जीवन के आखिरी वक्त में परेशानियों और पीड़ा से गुजरना पड़ेगा। ये लोग उत्तम वस्तुओं के बदले अपना सुख-शांति को बेचते है यानी सुख-शांति के बदले में पाप और अपवित्रता को अपनाते है।

पैगाम:- हारूत-मारूत बुरे कामों को अंजाम देने वाले चरित्र का चिह्न है और जो मानव के अंदर ही उपस्थित है।

وَلَوْ أَنَّهُمْ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَمَثُوبَةٌ مِّنْ عِندِ اللَّهِ خَيْرٌ لَّوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ {103}

और अगर वह ईमान लाते और पाप से बचकर परहेज़गार बनते तो खुदा की दरगाह से जो सवाब मिलता वह उससे कहीं बेहतर होता काश ये लोग समझते (१०३)

व्याख्या:- वो लोग अंजान है जो अल्लाह की प्रकृति से आनंद उठाना नहीं जानते। अगर वह संयमी होते तो अल्लाह के नियमों का लाभ पुरी तरह उन्हें मिलता।

पैगाम:- श्रृष्टि की हर किया-प्रकिया अल्लाह के शक्ति द्वारा परिचालित होता है उनकी शक्ति के बगैर कोई भी किया-प्रकिया संभव नहीं इस बात पर विश्वास रखना मानव के लिए लाभकारी है। जो मानव इस बात पर विश्वास नहीं रखते उनके मस्तिक्ष को लोभ, माया, उत्वकांक्षा, ईर्ष्या और घृणा इतना परेशान करेगी कि उसकी सारी शांति सुख और चैन बिगड़ जाएगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقُولُوا رَاعِنَا وَقُولُوا انظُرْنَا وَاسْمَعُوا وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ {104}

ऐ ईमानवालों तुम रआना न कहा करो बल्कि उनजुरना कहा करो और सुनते रहो और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है (१०४)

व्याख्या:- अल्लाह और उसके रसूलों को इनकार करने वाले काफिर है और उनको दर्दनाक अभिश्राप (दिमागी बदसकूनी) और अशान्ति। प्रमाणित और सत्य तत्व से इनकार करना (रआना कहना) पवित्र और ज्ञानी मानव का चरित्र नहीं है, वो हमेशा सत्य को स्वीकार करते है (उनजुरना) । पापी और कु-संस्कार छन्न मानव को कष्ट का जीवन मिलता है यानी उसका जीवन अशांत होता है।

مَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ وَلَا الْمُشْرِكِينَ أَن يُنَزَّلَ عَلَيْكُم مِّنْ خَيْرٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَاللَّهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ {105}

अहले किताब में से जिन लोगों ने कुफ्र इख़्तेयार किया वह और मुशरेकीन ये नहीं चाहते हैं कि तुम पर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से भलाई नाज़िल की जाए और खुदा जिसको चाहता है अपनी रहमत के लिए ख़ास कर लेता है और खुदा बड़ा फज़्ल वाला है (१०५)

व्याख्या:- अल्लाह के नियम जो पुस्तक के रूप में मनुष्य के मध्य उपस्थित है, इन सच्चे नियमों को समझने के बाद जो मनुष्य उसके विरूद्ध यानी पाप करते है वो है किताबी काफिर और मुशरकीन जो पुरी तरह से प्रमाणित सत्य को नकारते है और कुसंस्कार में डूबे रहते है ये लोग कभी भी नहीं चाहेंगे कि सभ्य और सच्चे राह पर चलने वालो को शांति और सच्चे नियम प्राप्त हो। अल्लाह बड़ा ही क्षमाकारी है।

مَا نَنسَخْ مِنْ آيَةٍ أَوْ نُنسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَا أَوْ مِثْلِهَا أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {106}

हम जब कोई आयत मन्सूख़ करते है या तुम्हारे ज़ेहन से मिटा देते है तो उससे बेहतर या वैसी ही नाज़िल भी कर देते है क्या तुम नहीं जानते कि बेशुबहा खुदा हर वस्तु पर क़ादिर है (१०६)

व्याख्या:- समय और सभ्यता के साथ-साथ अल्लाहताला ने मनुष्य को एक के बाद एक उत्तम से उत्तम वस्तु और समाज व्यवस्था प्रदान की और उनका जीवन सरल किया। ठीक इसी तरह एक के बाद एक रसुल भेज कर समय और सभ्यता के साथ-साथ एक नियम पर कायम रहते हुए आधुनिक, उत्तम जीवन और समाज प्रदान किया। मानव जीवन को उत्कर्ष बनाने के लिए अल्लाहताला अपनी प्रकृति से वो सारे वस्तु से मानव का परिचय कराया जिसके द्वारा मानव ने अपने जीवन को सुंदर बनाया और अल्लाह अपनी शक्ति द्वारा हर वस्तु का नियंत्रण करता है।

पैगाम:- उदाहरण के तौर पर सफर के मामले में मानव बैलगाड़ी से होते हुए आज हवाई जहाज के दौर तक पहुँच गया है। अल्लाह की सत्यता कभी भी नहीं बदलती और पापियों की लाख चेष्टाओं के उपरांत अल्लाह के नियम शुरू से आज तक एक ही है और वो मनुष्य को धीरे-धीरे हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करवाते आ रहे है। इस आयत के अंतिम में कहा गया कि "अल्लाह हर चीज पर कादिर है" ये बात फिर से प्रमाणित होती है कि सृष्टि के हर नियम और चीजें परमाणिवक शक्ति द्वारा सृष्टि होती है, परिचालित होती है, परिवर्तन भी होती है और साथ-साथ मृत्यु भी होती है। वही सर्वश्रेष्ठ शक्ति ऐश्वरिक शक्ति है, जो हर अणु-परमाणु में उपस्थित है।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ {107}

क्या तुम नहीं जानते कि आसमान और जमीन की सलतनत बेशुबहा ख़ास खुदा ही के लिए है और खुदा के सिवा तुम्हारा न कोई सरपरस्त है न मददगार (१०७)

व्याख्या:- प्रकृति का हर पहलू अल्लाह की अधिकार में है, इसके सिवा कोई भी किया-प्रकिया संभव नहीं। आज जो मानव पृथ्वी में मौजूद है, हजारों साल पहले भी थे और हजारों साल बाद तक भी रहेंगे। मानव के पास आज जो है वो हजारों साल पहले नहीं था और हजार साल बाद इसकी क्या रूप होगी, वो प्रकृति (अल्लाह) ही जानते है। महाकाश और पृथ्वी की हर नियम की नियंत्रण उसी शक्ति द्वारा होता है और मानव की सबसे बड़ा मित्र और सहायता करने वाले अल्लाह और उसकी शक्ति।

أَمْ تُرِيدُونَ أَن تَسْأَلُوا رَسُولَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوسَى مِن قَبْلُ وَمَن يَتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالإِيمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ {108}

क्या तुम चाहते हो कि तुम भी अपने रसूल से वैसै ही सवालात करो जिस तरह साबिक़ ज़माने में मूसा से सवालात किए गए थे और जिस शख़्स ने इमान के बदले कुफ़्र एख़्तेयार किया वह तो यक़ीनी सीधे रास्ते से भटक गया (१०८)

व्याख्या:- बदलती हुई प्रकृति, सभ्यता और समय के बारे में लोगों ने अपने रसूल से प्रश्न किया और यही प्रश्न मूसा से भी किया गया था। बदलती हुई प्रकृति, सभ्यता और समय पर विश्वास न रखने वाले लोग सीधी राह से भटक कर कुसंस्कार में भटक जाते है।

पैगाम:- प्रकृति, सभ्यता मानव की किया-प्रकिया और समय का नियंत्रणकर्ता अल्लाह है ।

وَدَّ كَثِيرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يَرُدُّونَكُم مِّن بَعْدِ إِيمَانِكُمْ كُفَّارًا حَسَدًا مِّنْ عِندِ أَنفُسِهِم مِّن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ فَاعْفُوا وَاصْفَحُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {109}

अहले किताब में से अक्सर लोग अपने दिली हसद की वजह से ये ख़्वाहिश रखते है कि तुमको ईमान लाने के बाद फिर काफ़िर बना दें उन पर हक़ ज़ाहिर हो चुका है उसके बाद भी पस तुम माफ़ करो और दरगुज़र करो यहाँ तक कि खुदा अपना हुक्म भेजे बेशक खुदा हर वस्तु पर क़ादिर है (१०९)

व्याख्या:- किताबों के द्वारा पाक-परवरदिगार ने जो सत्य पृथ्वी में रखा उसको समझने के बाद भी कुछ लोग दूसरी किताबों की सत्यता से सहमत होने के बजाये अपने अहंकार, जिद और ईर्ष्या से दूसरी किताबों के मानने वालों को पथभ्रष्ट करने की चेष्टा करते है। छोड़ दो उन लोगों को और उनको अनदेखा करो और उनकी चरित्र अल्लाह पर छोड़ दो, यही अल्लाह के नियम है।

وَأَقِيمُوا الصَّلاَةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ وَمَا تُقَدِّمُوا لأَنفُسِكُم مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِندَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ {110}

और नमाज़ पढ़ते रहो और ज़कात दिये जाओ और जो कुछ भलाई अपने लिए पहले से भेज दोगे उस को मौजूद पाओगे जो कुछ तुम करते हो उसे खुदा ज़रूर देख रहा है (११०)

व्याख्या:- ''नमाज'' मानव को बुराई से भलाई की तरफ लाती है और अल्लाह कहता है इसे कायम रखो और जकात के द्वारा समाज की प्रगति के लिए ''हुकुमत'' की सहायता करे। और जो पुण्य मानव करेगा वो घुमा फिरा के उन्हीं का भला करेगा और हर किसी का कर्मफल अल्लाह के अधिकार में होता है और वो सब देखता जानता है।

पैगाम:- ''नमाज'' का लबजी मतलब है परिस्तीश, इबादत, बंदगी। अल्लाह के साथ मानव की बंदगी प्रकृति के नियमा के साथ बंधे हुए है और सारे प्राकृतिक किया-प्रकिया अल्लाह की शक्ति द्वारा संगठित होते है। कुरान हर युग और हर मानव के लिए एक परिपूर्ण किताब है इसलिए मेरे (सिद्धार्थ चटर्जी) ख्याल से नमाज का गहरा मतलब है कि अल्लाह के तमाम आदर्शों के साथ बंदगी और इसे अमली जीवन में लागू करना। नमाज के तरीकात यानी अल्लाह की प्रकृति से प्रेम और उसकी प्राणियों की सेवा की तरफ ही जाती है और यही मानव के साथ अल्लाह की बंदगी का विशेष माध्यम है और यही नमाज है और यही मुख्य कारण है कि कुरान-शरीफ में नमाज की कोई विशेष पद्धति का उल्लेख नहीं है। जिस मानव के अंदर सभ्यता, संयम, प्रेममय हृदय और अहिंसा का भाव उपस्थित है और इसके साथ-साथ जो मानव अपने जरूरत से ज्यादा उत्वकांक्षा, लोभ, मोह-माया, ईर्ष्या और घृणा पर अपना नियंत्रण रख सकता है वही मानव नमाज अदा करते है।

وَقَالُوا لَن يَدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلاَّ مَن كَانَ هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ قُلْ هَاتُوا بُرْهَانَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {111}

और कहते है कि यहूद और नुसैरा के सिवा कोई बहिश्त में जाने ही न पाएगा ये उनके ख़्याली बंदिया है तुम उन से कहो कि भला अगर तुम सच्चे हो कि हम ही बहिश्त में जाएँगे तो अपनी दलील पेश करो (१११)

व्याख्या:- यहूदी और नुसरानियों में से कुछ लोग स्वर्ग का दावा करते है और ये दावा उनका उस सम्प्रदाय में पैदा होने की आधार पर है, चरित्र की आधार पर नहीं। अगर वो सच्चे होते तो अपने चरित्र और कर्मफल को प्रमाण स्वरूप पेश करते।

पैगाम:- शान्ति का पथ तब प्राप्त हो सकता है जब मानव सभ्यता, संयम, अहिंसा, शिक्षा और प्रेम को अपनाते है। स्वर्ग की बुनियाद है मानव का कर्मफल और ये नियम हर मानव सम्प्रदाय में लागू होता है चाहे वो यहूदी हो, नुसरानी हो या हिन्दू-मुसलमान।

بَلَىٰ مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لِلَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهُ أَجْرُهُ عِندَ رَبِّهِ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {112}

हाँ अलबत्ता जिस शख़्स ने खुदा के आगे अपना सर झुका दिया और अच्छे काम भी करता है तो उसके लिए उसके परवरदिगार के यहाँ उसका बदला है और ऐसे लोगों पर न किसी तरह का ख़ौफ़ होगा और न ऐसे लोग ग़मगीन होगे (११२)

व्याख्या:- निश्चित रूप से जब मानव प्राकृतिक नियमों के आगे आत्मसमर्पण करेगा और पवित्र कार्य में अपना योगदान रखेगा तो ऐसे मानव को अपनी रब की तरफ से अपने कर्मफल के बदले बहुत ही अच्छा बदला मिलेगा और न ही उसको डर होगा और न ही वो दु:खी होंगे।

पैगाम:- जो इन नियमों के आगे अपने आपको पुरी तरह से समर्पण करें उसे न कोई डर, न पश्चताप और न कोई उदासी होगी। मानव जन्म अल्लाह की उत्तम सृष्टि है और इस सृष्टि में ही मानव को पाप-पुण्य का परिचय दिया गया।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ لَيْسَتِ النَّصَارَىٰ عَلَىٰ شَيْءٍ وَقَالَتِ النَّصَارَىٰ لَيْسَتِ الْيَهُودُ عَلَىٰ شَيْءٍ وَهُمْ يَتْلُونَ الْكِتَابَ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ {113}

और यहूद कहते है कि नुसैरा का मज़हब कुछ नहीं और नुसैरा कहते है कि यहूद का मज़हब कुछ नहीं हालाँकि ये दोनों फरीक़ किताबे पढ़ते रहते हैं इसी तरह उन्हीं जैसी बातें वह भी किया करते है जो कुछ नही जानते तो जिस बात में ये लोग पड़े झगड़ते है क़यामत के दिन खुदा उनके दरम्यिान ठीक फैसला कर देगा (११३)

व्याख्या:- मानव समाज में उपस्थित हर धार्मिक सम्प्रदाय अपने आदर्शों को सर्वश्रेष्ठ और सत्य का दावा करते है और दूसरे के आदर्शों को बेबुनियाद कहते है, ये उनकी मूर्खता और अयौगतिक भावना है। मानव समाज में अच्छे बुरे का निर्णय अल्लाह प्रमाण के साथ मानव को दिखा देते है यानी जिन बातों पर मानव आपस में लड़ते है।

पैगाम:- हर मनुष्य या कोई भी धार्मिक सम्प्रदाय अपने विचारधारा को सही और दूसरों के विचारधारा को गलत ठहराने की चेष्टा करें तो ये सरासर अल्लाह ताला के आदर्शों के विरूद्ध होगा। मानव चरित्र ही पाप-पुण्य और अच्छे-बुरे की नीव है।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن مَّنَعَ مَسَاجِدَ اللَّهِ أَن يُذْكَرَ فِيهَا اسْمُهُ وَسَعَىٰ فِي خَرَابِهَا أُولَٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَن يَدْخُلُوهَا إِلَّا خَائِفِينَ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ {114}

उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो खुदा की मसजिदों में उसका नाम लिए जाने से रोके और उनकी बरबादी के दरपे हो, ऐसों ही को उसमें जाना मुनासिब नहीं मगर सहमे हुए ऐसे ही लोगों के लिए पृथ्वी में रूसवाई है और ऐसे ही लोगों के लिए आख़ेरत में बड़ा भारी अज़ाब है (११४)

व्याख्या:- अपवित्र और अत्याचारी मनुष्य जो (मस्जिदों में अल्लाह की जिक्र) अच्छी बातों से रोकते है और अल्लाह के आदर्श बताने वाले लोगों की बरबादी की चेष्टा करते है वो लोग अल्लाह से खौफ खाए और उसकी अभिश्राप की जानकारी के बाद ही मस्जिदों में दाखिल हो। इस किस्म की लोगों को मानव समाज में लांछन्न के साथ-साथ अपने जीवन के अंतिम क्षण में भी कष्ट और बदनामी है।

पैगाम:- जिस जगह से मनुष्य को ज्ञान और सत्यता प्राप्त होती है या जहां से शान्ति प्राप्त होती है वो सारी जगह मानव की धार्मिक स्थान है। सच्चा ज्ञान, जीवन के रास्ते पर सही तरीके से चलने की हिदायत, वैज्ञानिक ज्ञान के द्वारा कु-संस्कार को दूर करना अल्लाह के नियम है। और जिस-जिस जगह पर इन बातों का चर्चा होता है वो सब धार्मिक स्थान है। ये सभी जगहें सम्मानजनक है और मनुष्य की प्रार्थना का मुकाम है, अध्यात्मिक और समाजिक। धर्म का मतलब है इंसान जो धारण करता है यानी एक मनुष्य अपनी विवेक और अंर्तात्मा के साथ-साथ समाज और प्रकृति का हर पवित्र अस्तित्व को अपनाता है और वही पवित्र होता है और ईमान वाला भी।

وَلِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ فَأَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ {115}

खुदा ही की है पूरब पश्छिम बस जहाँ कही क़िब्ले की तरफ रूख़ करो वही खुदा का सामना है बेशक खुदा बड़ी गुन्जाइश वाला और खूब वाक़िफ है (११५)

व्याख्या:- सृष्टि का कोई भी कोना ऐसा नहीं है चाहे वो पूरब हो या पश्चिम, जहां पर अल्लाह ताला का अस्तित्व न हो। मनुष्य के अमाल का रूख या प्रार्थना का लक्ष्य सारे अल्लाह के द्वारा घिरे हुए है और अल्लाह ताला हर अणु-परमाणु पर ज्ञान और अधिकार रखते है।

पैगाम:- कुछ लोग ये समझते है कि हर वस्तु अल्लाह की है और अल्लाह किसी में भी नहीं लेकिन मै समझता हूँ कि हर वस्तु में अल्लाह है कोई भी वस्तु अल्लाह से जूदा नहीं पृथ्वी की हर वस्तु अल्लाह के नूर से बनती है और विज्ञान भी इसे साबित कर चुका है। अणु-परमाणु एक-दूसरे के साथ जुड़कर सृष्टि की हर किया-प्रकिया और वस्तुओं को रूप प्रदान और प्राण संचार करते है और जिस शक्ति से ये तमाम तथ्य प्रचालित होता है उसे अनाविक और परमाणविक शक्ति कहते है और ये आयत इस बात की निशानदेही करती है।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ بَل لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ كُلٌّ لَّهُ قَانِتُونَ {116}

और यहूद कहने लगे कि खुदा औलाद रखता है हालाँकि वह पाक है बल्कि जो कुछ ज़मीन व आसमान मे है सब उसी का है और सब उसकी के फरमाबरदार है (११६)

व्याख्या:- पृथ्वी की सारी जान अल्लाह की है, कोई भी प्रकृति उनके मर्जी के बगैर मुमकिन नही और इस लिहाज से तमाम प्रकृति उनकी औलाद है सारी प्रकृति उनसे है। वो पवित्र है और आसमान-जमीन का हर पहलू अल्लाह का आधीन है।

पैगाम:- ये आयत भी एटोमिक थियोरी को प्रमाणित करती है।

بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ {117}

आसमान व ज़मीन का मोजिद है और जब किसी काम का करना ठान लेता है तो उसकी निसबत सिर्फ कह देता है कि "हो जा" पस वह हो जाता है (११७)

व्याख्या:- आकाश और पृथ्वी की हर वस्तु की सृष्टिकर्ता अल्लाह है और सृष्टि की हर किया-प्रकिया अल्लाह की शक्ति द्वारा नियंत्रित होती है।

पैगाम:- ये आयत भी एटमिक थियोरी को प्रमाणित करती है।

وَقَالَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللَّهُ أَوْ تَأْتِينَا آيَةٌ كَذَٰلِكَ قَالَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِم مِّثْلَ قَوْلِهِمْ تَشَابَهَتْ قُلُوبُهُمْ قَدْ بَيَّنَّا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يُوقِنُونَ {118}

और जो कुछ नही जानते कहते है कि खुदा हमसे कलाम क्यों नही करता, या हमारे पास कोई निशानी क्यों नही आती, इसी तरह उन्ही की सी बाते वह कर चुके है जो उनसे पहले थे उन सब के दिल आपस में मिलते जुलते है जो लोग यक़ीन रखते है उनको तो अपनी निशानियाँ क्यों साफतौर पर दिखा चुके (११८)

व्याख्या:- मूर्ख इस पवित्र ज्योति (पाक-नूर) का रूप ढूँढ़ते है और इसके आंखों से देखने की इच्छा रखते है या इसके अस्तित्व का प्रमाण मांगते है। ऐसी दुविधा सभ्यता की शुरूवात से ही मानव समाज के मध्य उपस्थित थी लेकिन ज्ञानी अल्लाह के पवित्र ज्योति के अस्तित्व को अनुभव कर लेते है।

पैगाम:- सर्वशक्तिमान ईश्वर या अल्लाह का रहस्य मानव के लिए अधूरा है। मानव इस शक्ति को अनुभव कर सकते है मगर देख नहीं सकते। मानव उनके अस्तित्व को हर अणु-परमाणु (जर्रे) में अनुभव कर सकते है अगर वो उसे अपने अन्तर्आत्मा से अनुभव करें। अल्लाह है या नही या कहां है ये मानव के लिए जरूरी नहीं मानव के लिए जरूरी है कि अपने लिए प्रकृति की सुरक्षा करना और अपने लिए सभ्य, सुख-शांति और संयम का जीवन गुजारना और अपने लिए ही समाज को पवित्र रखना और अपने लिए ज्ञान अर्जित करना।

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا وَلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحَابِ الْجَحِيمِ {119}

हमने तुमको सच्चे दीन के साथ खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है और दोज़ख़ियों के बारे में तुमसे कुछ न पूछा जाएगा (११९)

व्याख्या:- मानव समाज में अल्लाह ने सत्य धर्म और ज्ञान के साथ कुछ लोगों को भेजा या ये कह सकते है कि मानव समाज में ऐसे कुछ मानव होते है जो ज्ञानी है और सत्य का अनुधावन कर सकते है। यही मानव के लिए आर्शीवाद है या शुसनवाद। इसके साथ-साथ पापियों के कर्मफल के द्वारा जो दु:ख और कष्ट पापियों को मिलता है उससे भयभीत होने वाला पवित्र मानव भी समाज में उपस्थित होता है और पापियों के कर्मफल का उत्तरदायी पवित्र मानव नहीं होता।

وَلَن تَرْضَى عَنكَ الْيَهُودُ وَلَا النَّصَارَى حَتَّى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَى وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم بَعْدَ الَّذِي جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ {120}

और न तो यहूदी कभी तुमसे रज़ामंद होंगे न नुसैरा यहाँ तक कि तुम उनके मज़हब की पैरवी करो कह दो कि बस खुदा ही की हिदायत तो हिदायत है और अगर तुम इसके बाद भी कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है उनकी ख़्वाहिशों पर चले तो तुमको खुदा से बचाने वाला न कोई सरपरस्त होगा न मददगार (१२०)

व्याख्या:- सम्प्रदायिकता मानव को अविश्वासी कर देते है और इसी के कारण यहूदी और नुसारा के कुछ लोग कहते थे जब तक लोग धर्म परिवर्तन करके उनके धर्म में न आ जाये तब तक उन्हें शान्ति और ज्ञान प्राप्त नहीं होगी, तो लोग ये समझ लें कि मानव समाज में अल्लाह की सत्य पथ ही पवित्र और शांति का पथ है (अल्लाह एक है साथ-साथ मानव भी एक है) ये ज्ञान मानव को प्राप्त होने के बाद भी अगर मानव सम्प्रदायिक कु-संस्कार वाले सोच में डूब जाते है तो वो मानव निश्चित रूप से पापी मानव है और कोई भी उसकी सहायता करने वाला नहीं होता।

पैगाम:- जब अल्लाह के आदर्शों की बुनियाद एक है और अल्लाह भी एक है तो सम्प्रदाय की सोच भ्रान्त और मुर्खता है। यहूदी और नुसरानी ने हजरत मोहम्मद को इनकार किया उन्होंने चाहा की हजरत मोहम्मद भी उनकी बातों पर चले। यहूदी नुसरानी कु-संस्कार और मन गढ़त नियमों को मानने लगे थे। कुरान की सुरा ५ आयत १७ में कहा गया है कि ''अल्लाह का कानून बदलता नहीं'' इस लिहाज से अगर यहूदी और नुसरानी सही राह पर रहते तो यकीनन हजरत मोहम्मद की जरूरत नहीं रहती, वो लोग गलत थे इसलिए हजरत मोहम्मद को उनकी ताबेदारी से मना फरमाया गया।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلَاوَتِهِ أُولَئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَمَن يَكْفُرْ بِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ {121}

जिन लोगों को हमने किताब दी है वह लोग उसे इस तरह पढ़ते रहते है जो उसके पढ़ने का सत्य है यही लोग उस पर ईमान लाते है और जो उससे इनकार करते है वही लोग घाटे में है (१२१)

व्याख्या:- अल्लाह के आदर्श और सृष्टि के नियम का ज्ञान जो मानव को मिला और जो उसका ठीक-ठीक पालन करते है वो अल्लाह की सत्य पथ को अवलंबन किया और जो मानव इसके विपरीत काम करते है उन्हें क्षति और कष्ट उठाना पड़ता है और निश्चित रूप से वो पथभ्रष्ट काफिर है।

يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اذْكُرُوا نِعْمَتِيَ الَّتِي أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّي فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ {122}

बनी इसराईल मेरी उन नेअमतों को याद करो जो मैंने तुम को दी हैं और ये कि मैंने तुमको सारे जहाँन पर फज़ीलत दी (१२२)

व्याख्या:- इजराइल का वंश जब तक सत्य, ज्ञान, मानवता और अहिंसा पर विश्वास रखते थे तब तक वो उत्तम थे और उन्हें शान्ति प्राप्त हुई थी और इसी ऐतिहासिक सत्य का ज्ञान उन्हें दिया जा रहा है इस आयत के द्वारा। मानवता के धर्म को जो मानव अपनाते है वो मानव सर्वश्रेष्ठ होता है।

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ شَيْئًا وَلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَلَا تَنفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ {123}

और उस दिन से डरो जिस दिन कोई शख़्स किसी की तरफ से न फिदया हो सकेगा और न उसकी तरफ से कोई मुआवेज़ा कुबूल किया जाएगा और न कोई सिफारिश ही फायदा पहुचाँ सकेगी, और न लोग मदद दिए जाएँगे (१२३)

व्याख्या:- हर मानव को अपने किये की सजा और जजा खुद भुगतनी पड़ती है मानव को उस दिन से डरना चाहिए जब उसे न कोई मददगार मिलेगा और न कोई दर्द बाटने वाला।

وَإِذِ ابْتَلَى إِبْرَاهِيمَ رَبُّهُ بِكَلِمَاتٍ فَأَتَمَّهُنَّ قَالَ إِنِّي جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا قَالَ وَمِن ذُرِّيَّتِي قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظَّالِمِينَ {124}

जब इबराहीम को उनके परवरदिगार ने चन्द बातों में आज़माया और उन्होंने पूरा कर दिया तो खुदा ने फरमाया मै तुमको पेशवा बनाने वाला हूँ अर्ज़ की और मेरी औलाद में से फरमाया मेरे इस अहद पर ज़ालिमों में से कोई शख़्स फ़ायज़ नहीं हो सकता (१२४)

व्याख्या:- इब्राहीम को पाक-परवरदिगार ने त्याग के द्वारा अजमाया फिर उन्हें त्याग और सभ्यता की मिसाल यानी इमाम बनाया। जब इब्राहीम ने अपनी आल औलाद के बारे में सवाल किया तो अल्लाह ने उनकी औलाद को अत्याचारी कहा।

पैगाम:- इब्राहीम के बाद उनका वंश धीरे-धीरे पाप कर्मों में लुप्त होने लगे थे, हर मानव अपने-अपने विवेक और कर्मफल का उत्तरदायी है। सभ्य मां-बाप की औलाद सभ्य होगी ये जरूरी नहीं-- इस आयत के द्वारा अल्लाह ने लोगों को ये पैगाम दिया। मानव चरित्र की बुनियाद है मानव की अन्तर्आत्मा। नाम, रूप-रंग और भाषा से मानव चरित्र का व्याख्या करना मूर्खता है।

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى وَعَهِدْنَا إِلَى إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ أَن طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّائِفِينَ وَالْعَاكِفِينَ وَالرُّكَّعِ السُّجُودِ {125}

जब हमने ख़ानए काबा को लोगों के सवाब और अमन की जगह क़रार दी और हुक्म दिया गया कि इबराहीम की जगह को नमाज़ की जगह बनाओ और इबराहीम व इसमाइल से अहद व पैमान लिया कि मेरे घर को तवाफ़ और एतकाफ़ और रूकू और सजदा करने वालों के वास्ते साफ सुथरा रखो (१२५)

व्याख्या:- काबा मानव सभ्यता के लिए मानवता, प्रेम, शांति, अहिंसा और भाईचारा की निशानदेही करता है। इब्राहीम का भी ये स्थान रह चुका है। काबा में रकु-सजदा की प्रथा हजरत इब्राहीम के समय से ही लागू थी, इसलिए अल्लाह ताला ने काबा को पाप और अपवित्रता से मुक्त रखने का आदेश फरमाया।

पैगाम:- इसके तवाफ करने का मतलब मानवता, प्रेम और भाईचारा के साथ एहद करना। इसके रकू का मतलब है समाज में मानवता, प्रेम और भाईचारा की स्थापना करना और इसके सजदे का मतलब है अल्लाह को हाजिर-नाजिर जानकर उनके आदर्शों के आगे आत्मसमर्पण करना और समाज में उनको आदर्शों के कायम रखने के लिए पापों के विरूद्ध संघर्ष करना। अल्लाह के कानून और नियमों को पूरी तरह से अपनाना ही अल्लाह को सजदा करना है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ اجْعَلْ هَذَا بَلَدًا آمِنًا وَارْزُقْ أَهْلَهُ مِنَ الثَّمَرَاتِ مَنْ آمَنَ مِنْهُم بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ قَالَ وَمَن كَفَرَ فَأُمَتِّعُهُ قَلِيلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهُ إِلَى عَذَابِ النَّارِ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ {126}

और जब इबराहीम ने दुआ माँगी कि ऐ मेरे परवरदिगार इस को पनाह व अमन का शहर बना, और उसके रहने वालों में से जो खुदा और रोज़े आखिरत पर ईमान लाए उसको तरह-तरह के फल खाने को दें खुदा ने फरमाया कुफ्र इख़्तेयार करेगा उसकी पृथ्वी में चन्द रोज़ फ़ायदा उठाने दूँगा फिर उसको मजबूर करके दोज़ख़ की तरफ खींच ले जाऊँगा और वह बहुत बुरा ठिकाना है (१२६)

व्याख्या:- इब्राहीम की दुआ के बदौलत अल्लाह ने काबा को अमन की निशानी बनाया। अमन बिगाड़ने वाले काफिर यानी गुनहगारों के लिए वकती चैन है और आखिर में उनके लिए एक दर्दनाक अभिश्राप।

पैगाम:- इस्लाम आने से पहले काबा में मुर्तियां हुआ करती थी और लोग अल्लाह की अलग-अलग रूप के द्वारा उनकी कल्पना करते थे, तो इस इबादत गाह के लिए अल्लाह की आशीर्वाद की प्रार्थना उचित थी या अनुचित? इस प्रश्न के अनुसार ये प्रमाण होता है कि काबा प्रेम, मानवता, अहिंसा और सुख-शांति की निशानदेही करता है।

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ {127}

और जब इबराहीम व इसमाईल खानाए काबा की बुनियादें बुलन्द कर रहे थे माँगते जाते थे कि ऐ हमारे परवरदिगार हमारी कुबूल कर बेशक तू ही सुनने वाला जानने वाला है (१२७)

व्याख्या:- मानवता और अहिंसा की नींव को मजबूत करने के बाद अल्लाह से उसे बुलंद और कायम करने की प्रार्थना की गई। इब्राहीम और इस्माइल ने काबा को मानवता और अहिंसा की नींव बनाया और अल्लाहताला सब जानता देखता है।

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِن ذُرِّيَّتِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا إِنَّكَ أَنتَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ {128}

ऐ हमारे पालने वाले तू हमें अपना फरमाबरदार बन्दा बना हमारी औलाद से एक सम्प्रदाय जो तेरा फरमाबरदार हो, और हमको हमारे हज की जगहों दिखा दे और हमारी तौबा कुबूल कर, बेशक तू ही बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है (१२८)

व्याख्या:- ऐ अल्लाह! समस्त मानव को आपकी आदर्शों की अनुगत कराए और सत्य पथ अनुसरण करने पर उत्साहित करें। प्राणी सम्प्रदाय में से मानव सम्प्रदाय को अपना सच्चा और सीधा पूजा पद्धति बताए और पापियों को उनके पाप कर्मों से मुक्त करें। निश्चित रूप से अल्लाह क्षमाकारी और दयालु है।

पैगाम:- इबादत का कोई विशेष तरीका नहीं सारे रसूलों ने विभिन्न तरीकों से पाक-परवरदिगार की इबादत की और इन तरीकात की बुनियाद है- सभ्यता, प्रेम, संयम, अहिंसा, शांति और मानवता।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيهِمْ رَسُولاً مِّنْهُمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيهِمْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ {129}

ऐ हमारे पालने वाले उन्हीं मे से एक रसूल को भेज जो उनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाए और आसमानी किताब और अक्ल की बातें सिखाए और उन के पाकीज़ा कर दें बेशक तू ही ग़ालिब और साहिबे तदबीर है (१२९)

व्याख्या:- ऐ अल्लाह! मानव सम्प्रदाय में ज्ञानी मानव प्रदान करें जो मानव को ज्ञान, विज्ञान और सत्य पथ की शिक्षा प्रदान करें और अल्लाह की वाणी व्याख्या करें और इसके साथ-साथ समाज को पवित्र भी करें। अल्लाह पराक्रान्त और प्रगामय है।

नोट:- सुरा इब्राहीम के आयत ४ में अल्लाह ने उनकी प्रार्थना कबूल फरमाते हुए हर भाषा में रसुल भेजने की बात की और विज्ञान द्वारा सच्चा ज्ञान प्रदान करते रहे।

وَمَن يَرْغَبُ عَن مِّلَّةِ إِبْرَاهِيمَ إِلاَّ مَن سَفِهَ نَفْسَهُ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنَاهُ فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ {130}

और कौन है जो इबराहीम के तरीके से नफरत करे मगर जो अपने को अहमक बनाए और बेशक हमने उनको पृथ्वी में भी मुन्तिखब कर लिया और वह जरूर आखेरत में भी अच्छों ही में से होगे (१३०)

व्याख्या:- अज्ञानी लोग सभ्यता, संयम, प्रेम, शांति, अहिंसा और मानवता जो इब्राहीम का धर्म था उससे विरोधीता करेंगे और खुद की शांति विग्नहीत करेगा और हमेशा विचलित रहेंगे। अल्लाह ने इब्राहीन का धर्म (दीन) मानने वाले लोगों को दुनिया और दीन यानी सुख-शांति और अमनोचैन दोनों ही प्राकृतिक आशीर्वाद स्वरूप दिया।

पैगाम:- जो मनुष्य सभ्य, प्रेम, मानवता, शांति, अहिंसा और अमनोचैन को अपनाते है वो नि:संदेह हजरत इब्राहीम और सारे रसुलों को मानने वाले है और वो ही ईमान वाले है और यही आदेश अल्लाह ने सुरा बकर की आयत १३६ और सुरा ईमरान की आयत ८४ में भी दी है। इस आयत की शुरूआत में कहा गया है ''जो इब्राहीम के इबादत की तरीके से नफरत करें'' वो अपने मोह-माया में उलझ कर सच्चाई से दूर है, इसका मतलब ये हुआ कि

इब्राहीम की इबादत का तरीका सही और सीधा था। काबा के सारे बूत इब्राहीम ने तोड़ दिए थे, सिवाएं एक के और इब्राहीम से लेकर हजरत मोहम्मद तक काबा में बूत परस्थी होती रही, यहां तक कि रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद के नबुअत पाने के बहुत सालों तक ये काम होता रहा। इस दौरान अल्लाह ताला ने अबाबील के लश्करों से काबा की सुरक्षा फरमायी थी। इन सब बातों पर गौर फरमाने से ये प्रमाण होता है कि इबादत के तरीके से बहुत उचां और बुलंद है मानव चरित्र और उसकी पवित्रता।

إِذْ قَالَ لَهُ رَبُّهُ أَسْلِمْ قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ {131}

जब कभी भी उन्हें उनके रब ने फरमाबरदार हो जा उन्होंने कहा मैंने रबुलआलअमीन की फरमाबरदारी की ।(१३१)

व्याख्या:- प्राकृतिक तौर पर मानव जब समझ जाएगा कि अल्लाह और उनके प्राकृतिक आदर्शों के आगे आत्मसमर्पण करे और आत्मसमर्पण ही सही और सच्ची पथ है तो उन्हें ये समझ आ जाएगा कि विश्व ब्रह्माण्ड के मालिक अल्लाह ही है।

पैगाम:- अहिंसा, प्रेम, मानवता, शांति और शिक्षा यही अल्लाह का सही पथ है इसके आगे जो मानव आत्मसमर्पण करेंगे वही उत्तम पथ के अधिकारी होंगे।

وَوَصَّى بِهَا إِبْرَاهِيمُ بَنِيهِ وَيَعْقُوبُ يَا بَنِيَّ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَى لَكُمُ الدِّينَ فَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُم مُّسْلِمُونَ {132}

और इसी तरीके की इबराहीम ने अपनी औलाद से वसीयत की और याकूब ने कि ऐ फरज़न्दों खुदा ने तुम्हारे वास्ते इस दीन को पसन्द फरमाया है पस तुम हरगिज़ न मरना मगर मुसलमान ही होकर (१३२)

व्याख्या:- सभ्यता, प्रेम, संयम, मानवता, अहिंसा और अमनोसकून के साथ अल्लाह की प्रकृति का सही इस्तेमाल की तलाश। इस धर्म की उत्तराधिकारी इब्राहीम और याकूब ने अपने औलाद को की और फरमाया की अल्लाह ने ईमान वालों के लिए इस धर्म को पसंद किया और हिदायत की कि इन आदर्शों पर अपनी मृत्यु तक कायम रहना।

पैगाम:- ये आयत प्रमाण करती है कि ''मुसलमान'' शब्द कोई विशेष सम्प्रदाय में सीमाबद्ध नहीं है। ''मुसलमान'' शब्द मानव के पवित्र और ज्ञानी चरित्रों को व्याख्या करते हैं या ये कह सकते है कि मानव के पवित्र ज्ञानी चरित्र का चिह्न है मुसलमान शब्द।

मूर्ति पूजा जब कु-संस्कार का आकार धारण किया और मानव के बीच हिंसा की नींव डाली तब रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद ने काबा में उपस्थित सारे मूर्तियों को मिटा दिया। मगर गौर करने की बात ये है कि हजरत इब्राहीम से लेकर हजरत मोहम्मद तक काबा में मूर्ति पूजा होती थी ये ऐतिहासिक सत्य है और इसी वजह से कुरान में पूजा पद्धति से ज्यादा मानव के पवित्र चरित्रों को प्राधान्य दिया गया।

أَمْ كُنتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوبَ الْمَوْتُ إِذْ قَالَ لِبَنِيهِ مَا تَعْبُدُونَ مِن بَعْدِي قَالُوا نَعْبُدُ إِلَٰهَكَ وَإِلَٰهَ آبَائِكَ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ إِلَٰهًا وَاحِدًا وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ {133}

क्या तुम उस वक्त मौजूद थे जब याकूब के सर पर मौत आ खड़ी हुई उस वक्त उन्होंने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद किसी की इबादत करोगे कहने लगे हम आप के माबूद और आप के बाप दादाओं इबराहीम व इस्माइल व इसहाक के माबूद व यकता खुदा की इबादत करेंगे और हम उसके फरमाबरदार है (१३३)

व्याख्या:- ईश्वर को बाट कर मनुष्यों अपने में ही सम्प्रदाय की सृष्टि की और विभाजित हो गये जो प्राकृतिक और ईश्वरिक आदर्शों के विरूद्ध है। याकूब के निधन के वक्त लोगों ने एक खुदा की इबादत और अज्ञाकारी की बात की जिस तरह से इब्राहीम, इस्माइल इसहाक और सारे पैगम्बरों ने की।

पैगाम:- अक्सर देखा जाता है कि सच्चे ज्ञान की बात करने वाले लोगों के निधन के बाद मानव उनको और उनकी बातों को भुला देते है, इस आयत का पैगाम है कि लोग ऐसा न करे बल्कि अतीत से शिक्षा प्राप्त करके अपने वर्तमान और भविष्य को सुन्दर बनाये।

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ {134}

वह लोग थे जो चल बसे जो उन्होंने कमाया उनके आगे आया और जो तुम कमाओगे तुम्हारे आगे आएगा और जो कुछ भी वह करते थे उसकी पूछगछ तुमसे नहीं होगी (१३४)

व्याख्या:- समय के चक्र के साथ-साथ लोगों की विचारधारा भी परिवर्तित होती रहती है लेकिन सच्चाई को इनकार करने वाले लोगों की सम्प्रदाय हमेशा पराजित होती रही। पाप करने वालों के कर्मफल उनके साथ और पुण्य करने वालों का कर्मफल पवित्र लोगों के साथ। कोई किसी के कर्मफल का उत्तरदायी नहीं है।

وَقَالُوا كُونُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ تَهْتَدُوا قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ {135}

कहते है कि यहूद या नुसरैनी हो जाओ तो राहे रास्त पर आ जाओगे कह दो कि हम इबराहीम के तरीक़े पर है जो बातिल से कतरा कर चलते थे और मुशरेकीन से न थे (१३५)

व्याख्या:- लोग एक-दूसरे को अपने सम्प्रदाय में शामिल करने की चेष्टा करते है उदाहरण के तौर पर यदि यहूदी या नुसरानी बन जाओगे तो राह पाओगे लेकिन असल धर्म तो इब्राहीम का धर्म है।

पैगाम:- मानव जाति के मध्य सिर्फ दो ही सम्प्रदाय का अस्तित्व है एक सभ्य, संयमी, प्रेम, मानवता, अहिंसा और अमनचैन में रहने वाले लोग यानी इब्राहीम का सम्प्रदाय और दूसरा बदकार जो हिंसा, अशांति, घृणा, मोह-माया और मानवता के विरूद्ध काम करते यानी पापी चरित्र वाला मनुष्य। शैतान ने मानव को धर्म के नाम पर सम्प्रदाय सृष्टि करके हर क्षेत्र में शांति विग्नहीत किया और मानव को आपस में लड़-मरने पर विवश किया, आदर्शों के अधार पर। इतिहास साक्षी है कि पृथ्वी में ज्यादा से ज्याद फसाद की जड़ है धार्मिक विचारों का मतभेद। हर सम्प्रदाय अपने आपको सच्चा और सही साबित करने की चेष्टा करते है और दूसरों को धर्म परिवर्तन करने का उपदेश भी देते है। मगर प्रकृति नियम ये है कि लोगों को उपदेश देना चाहिए की बुराई को छोड़कर अच्छाई पर आओ। यानी सच्चाई और अच्छाई ही अल्लाह का धर्म है।

नोट:- सुरा तगाबुन की आयत २ इस बात को प्रमाणित करती है जिसमें कहा गया है "उसने तुम्हें पैदा किया है, तुममें से कुछ तो काफिर है और कुछ ईमान वाले और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह ताला खूब देख रहा है"। सम्प्रदायिकता मानव समाज की एक भ्रान्त विचारधारा है और जब वो धर्म के नाम पे हो तब उसका कोई आधार ही नहीं होता, ये आयत इसी बात का पैगाम देती है।

قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ {136}

कहो कि हम तो खुदा पर ईमान लाए है और उस पर जो हम पर नाज़िल किया गया और जो सहीफ़े इबराहीम व इसमाइल व इसहाक़ व याकूब और औलादे याकूब पर नाज़िल हुए थे और जो किताब मूसा व ईसा को दी गई और जो और पैग़म्बरों को उनके परवरदिगार की तरफ से उन्हें दिया गया हम तो उनमें से किसी में भी तफरीक़ नहीं करते और हम तो खुदा ही के फरमाबरदार है (१३६)

व्याख्या:- अल्लाह का फरमान है (सभ्यता, प्रेम, संयम और अम्नसकून चाहने वाले लोग गहराई से महसूस करें और दिलो-दिमाग से उसे अपनाये) की ईमान लाये एक परवरदिगार पर और जो हिदायत रसूलों के द्वारा परवरदिगार से मिली और जो इब्राहीम, इस्हाक, इस्माइल, याकूब और उनकी औलाद पर उतारी गयी और जो कुछ अल्लाह की तरफ से मूसा और ईसा ने पृथ्वी में फैलाया "और जो तमाम नबियों को उनके रब" की तरफ से भेजी गयी सभ्य, संयमी और ईमान वाले लोग उनमें किसी में फर्क नहीं करते।

पैगाम:- इस आयत में "तमाम नबियों और उनके रब" कहकर इनसानों के दरमियान उपस्थित अल्लाह के तमाम नामों की मंजूरी दी, इन नामों पर ईमान रखकर मानव के दरमियान पाक-परवरदिगार के नाम का जो मतभेद था उसे मिटाया और उसके साथ-साथ नबियों और उनके किताबों के दरमियां जो मतभेद था उसे भी मिटाया क्योंकि तमाम नबियों ने एक ही आदर्श अलग-अलग जुबान और जगहों पर लोगों को बताया जिसके द्वारा शान्ति प्राप्त हुई। अल्लाह के आदर्श एक है लेकिन लोगों ने उसे अलग-अलग नाम दिये और एक-एक नाम के साथ एक-एक सम्प्रदाय की सृष्टि की। धर्म के नाम पर सम्प्रदाय की सृष्टि अल्लाह के नियमों के विरूद्ध है और ये आयत पुरी

तरह सम्प्रदायिकता की सोच को गलत साबित करती है। कुरान शरीफ हर इंसान के लिए अल्लाह की रहमत है और आज के दौर के लिए परिपूर्ण।

सुरा अंबिया की आयत नं २२ पर गौर करें तो इसमें कहा गया है कि ''आकाश और पृथ्वी में अगर अल्लाह ताला के अलावा कोई दूसरा माबूद होता तो निश्चित रूप से सब तहस-नहस हो जाता'' इस आयत के अनुसार श्रृष्टि में कोई दूसरा अल्लाह है ही नही यानी अल्लाह के सिवा कुछ भी नही यानी ला इलाहा इल-ल्लाह। निश्चित रूप से ये प्रमाण होता है कि एटम से हर चीज बनती और बिगड़ती है और इसमें जो शक्ति अमर, अनंत और अजय है, इस शक्ति के मर्जी के बगैर श्रृष्टि में कुछ भी नही हो सकता, हर जगह ये शक्ति मौजूद है, मगर इसे कोई देख नही सकता, इसे सिर्फ महसूस ही किया जा सकता है।

فَإِنْ آمَنُوا بِمِثْلِ مَا آمَنْتُمْ بِهِ فَقَدِ اهْتَدَوا وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِي شِقَاقٍ فَسَيَكْفِيكَهُمُ اللَّهُ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ {137}

पस अगर ये लोग भी उसी तरह ईमान लाए है जिस तरह तुम तो अलबत्ता राहे रास्त पर आ गए और अगर वह इस तरीके से मुँह फेर लें तो बस वह सिर्फ तुम्हारी ही जिद पर है तो उन से तुम्हारे लिए खुदा काफी होगा और वह खूब जानता सुनता है (१३७)

व्याख्या:- पृथ्वी के सारे मानव अल्लाह, उसके रसूल, उसकी किताबें और उसके पुकारे हुए अलग-अलग नामों पर ईमान लाये तो सकून की जीवन और समाज प्राप्त हो और अगर वो मुँह फेर ले तो मतभेद की बदसकूनी में गुमराह होंगे और अल्लाह उनके मतभेद का फैसला फरमा देगा और अल्लाक सब सुनने वाला और जानने वाला है।

पैगाम:- मजहबी मतभेद मानव के मस्तिक्ष को नफरत, हषद और बेरहमी की तरफ ढकेल देते है, कुरान शरीफ की इस आयत के द्वारा पाक-परवरदिगार ने तमाम मजहबों और उनके सच्चाई (अविष्कार) पर ईमान लाने को कहा, यहां तक कि उन तमाम मजहबी पथप्रदर्शक के द्वारा बुलाये गये नाम पर भी ईमान लाने के लिए कहा गया ताकि मानव के दरमियान मजहबी मतभेद की गुंजाइश तक न हो।

صِبْغَةَ اللَّهِ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ صِبْغَةً وَنَحْنُ لَهُ عَابِدُونَ {138}

रंग तो खुदा ही का रंग है जिसमें तुम रंगे गए और खुदाई रंग से बेहतर कौन रंग होगा और हम तो उसी की इबादत करते हैं (१३८)

व्याख्या:- इसलिये अल्लाह ताला की असूलों को पूरी तरह अधिग्रहण करो, अल्लाह की हिदायत से अच्छी हिदायत किसकी हो सकती है, हम इसकी हिदायत को अपनाते है और इसी की इबादत करते है।

पैगाम:- मुनष्य के जजबात यानी मनुष्य के मस्तिक्ष में प्रेम, मानवता और शान्ति की चाहत प्राकृतिक तौर पर उपस्थित है और यही प्राकृतिक रंग और इसी प्राकृतिक रंग से अपने आपको और समाज को रंगने में ही मनुष्य का लाभ है और ऐसा करने में अल्लाह की गुलामी है जिससे मनुष्य को सुख-शान्ति और ज्ञान प्राप्त होता है और वे हर बुराई से बचते है।

قُلْ أَتُحَاجُّونَنَا فِي اللَّهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ وَلَنَا أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُخْلِصُونَ {139}

कहो कि क्या तुम हम से खुदा के बारे झगड़ते हो हालाँकि वही हमारा परवरदिगार है तुम्हारा भी हमारे लिए है हमारी कारगुज़ारियाँ और तुम्हारे लिए तुम्हारी कारसतानियाँ और हम तो निरेखरे उसी में है (१३९)

व्याख्या:- ईमान वाले पूछते है कि लोग अल्लाह की अस्तित्व और असूलों के बारे में क्यों झगड़ते है?हालांकि अल्लाह की असूल तमाम मानव के लिए एक-सा है हर कोई अपने-अपने अमाल का जिम्मेदार है और हम इसी कानून को अधिग्रहण किये हुए है। हर किसी का रब एक है इसमें कोई संदेह नहीं।

पैगाम:- सारे मानव का रब एक ही है मानव ने उसे बाटकर आपस में मतभेद की नींव डाली, कभी-कभी अलग-अलग नाम देकर और कभी इबादत का तरीका अलग-अलग पेश करके। सच्चाई तो यह है कि न वो किसी की इबादत का मोहताज है और न ही उसको कोई नाम देकर उसके ला-महदूत (अनंत) अस्तित्व को घटा सकते है।

मानव ने अपनी आसानी और दिमागी तसल्ली के लिये उनका नाम और विभिन्न अंदाज से इबादत का तरीका ढूँढ़ा। इस आयत के द्वारा पाक-परवरदिगार ने मानव को ये पैगाम दिया कि नाम या इबादत की तरीके से भी बढ़कर पाक-परवरदिगार के असूलों की बुनियाद पर कायम रहते हुए मानव के अमाल ही ज्यादा एहमियत रखते है और हर मानव अपने अमाल का खुद जिम्मेदार है। पाक-परवरदिगार को लेकर मानव के दरमियांन दो बातों में गहरा मतभेद है और वो है इसका नाम और इबादत करने का तरीका। इस आयत में शुरू से ही इन बातों को ठुकराया गया है और इंसानी अमाल को उजागार किया गया है। मानव के दरमियान फसाद को रद्द करते हुए किसी की जिम्मेदारी किसी पर नहीं रखी मानव अमाल के फैसले की पुरी जिम्मेदारी पाक-परवरदिगार ने अपने तक ही सीमित रखी। ये जिम्मेदारी उसने न किसी मानव को और न किसी रसूल को दी। मानव सभ्यता और समाज में मुकर्रर शुदा कानून पाक-परवरदिगार की मर्जी से ही कायम है। अल्लाह एक है हर किसी का खुदा भी एक और अल्लाह के नियम भी एक है।

أَمْ تَقُولُونَ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوا هُودًا أَوْ نَصَارَىٰ قُلْ أَأَنتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللَّهُ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَتَمَ شَهَادَةً عِندَهُ مِنَ اللَّهِ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ {140}

क्या तुम कहते हो कि इबराहीम व इसमाइल व इसहाक़ व आलौदे याकूब सब के सब यहूदी या नुसैरनी थे पूछो तो कि तुम ज़्यादा वाकिफ़ हो या खुदा और उससे बढ़कर कौन ज़ालिम होगा जिसके पास खुदा की तरफ से गवाही हो और फिर वह छिपाए और जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे बेखबर नहीं (१४०)

व्याख्या:-लोग कहते थे इब्राहीम, इसहाक, याकूब और इस्माइल यहूदी थे या नुसरानी । इस मामले में लोग अल्लाह से ज्यादा नहीं जानते की उनकी औलादे किस मजहब से ताल्लुक रखती थी। इसका ज्ञान अल्लाह को ही था उनके अमाल और अल्लाह के असूल ही मुख्य है।

पैगाम:- सारे पवित्र मानव का धर्म और आदर्श होता है प्रेम, शिक्षा, संयम, मानवता, अहिंसा, पवित्रता और इसके साथ-साथ पाप के विरूद्ध युद्ध करने की चाहत और यही अल्लाह के आदर्श और फरमान है जो आयतों के द्वारा लोगों को दिये गए और ये आदर्श सम्प्रदाय के सोच से बहुत उपर है, अगर ये बात मानव समझ जाए तो निश्चित रूप से दुनियां में धर्म के नाम पर फसाद और नफरत मिट जाएगी।

नोट:- ये आयत भी प्रमाण करती है कि रसुलों को सम्प्रदाय के दायरे में रखना उनकी शान में गुस्ताखी है। और ये इसलिए कि सारे रसुलों के बताये हुए रास्ता तमाम मानव और मानवता के लिए है।

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُم مَّا كَسَبْتُمْ وَلَا تُسْأَلُونَ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ {141}

ये वह लोग थे जो सिधार चुके जो कुछ कमा गए उनके लिए था और जो कुछ तुम कमाओगे तुम्हारे लिए होगा और जो कुछ वह कर गुज़रे उसकी पूछगछ तुमसे न होगी (१४१)

व्याख्या:- कुरान पाक के द्वारा पाक-परवरदिगार ने उम्मत वाले ख्यालत को रद्द किया और मानव को उनके अमाल का खुद जिम्मेदार ठहराया।

पैगाम:- इस आयत के द्वारा सम्प्रदाय की सोच को पुरी तरह से रद्द किया गया और अमाल की बुनियाद पर दो सम्प्रदाय ही होते है यानी अच्छे इंसान और बुरे इंसान और इसी का पैगाम लोगों तक पहुँचाया गया। जो पवित्र मानव अतीत हो चुके है उन्हें मुर्दा न कहा जाए क्योंकि उनके जीने का तरीका, संघर्ष और आदर्श, इतिहास बनकर मानव सभ्यता में हमेशा जिन्दा रहते है।

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّاهُمْ عَن قِبْلَتِهِمُ الَّتِي كَانُوا عَلَيْهَا قُل لِّلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ {142}

बाज़ अहमक़ लोग ये कह बैठेगें कि मुसलमान जिस क़िबले बैतुल मुक़द्दस की तरफ पहले से सजदा करते थे उस से दूसरे क़िबले की तरफ मुड़ जाने का बाइस हुआ। कहो कि पूरब पच्छिम सब अल्लाह का है जिसे चाहता है सीधे रास्ते की तरफ हिदायत करता है (१४२)

व्याख्या:- बेवकुफ लोग कहेंगे जिस लक्ष्य से वो दिल की मुराद पुरी करना चाहते थे तो अल्लाह उसको कामियाब क्यों न किया?वो जान ले कि सारी दिशाएं अल्लाह की है और वो जिसे चाहे सीधी राह पर चलाते है।

पैगाम:- जब पाक-परवरदिगार ने ऐलान कर दिया है कि मगरीब व मशरीक सब उनका है तब इस आयत में किबला से मुराद मस्जिद अकसा या मस्जिद हराम नही है। हदिसों के मुताबिक १७ महीने तक मस्जिद अकसा किबला था और रसूल-ए-पाक के दिल के मुताबिक किबला बदलकर मस्जिद हराम हुआ। क्या रसूल को मालूम नही था कि सारी दिशाएं अल्लाह की है?रसूल के दिल में किबला बदलने का ख्याल क्यों आया?सारे रसुल अल्लाह के दिये हुए हर हाल मे खुश रहते है। यह आयत अगर किसी खास या किसी विशेष जगह की निशानदेही करती है तो यकीनन अल्लाह इस आयत के दरमियान में ये नहीं फरमाता की पुरब, पश्चिम सब अल्लाह का है और इस आयत के आखिर में अल्लाह ने मानव को सही रास्ता दिखाने का जिक्र फरमाया क्या सही रास्ता सिर्फ किबला बदलने से ही प्राप्त होगा? कोई डॉक्टर है तो कोई इंजीनियर और कोई सांइटिस्ट उनमें से कुछ मानव ही अपने दायरे में विशेषज्ञ होते है और यह राह मानव को अल्लाह ताला के द्वारा ही नसीब होती है। इस आयत में ''किबला'' से मतलब सारे मानव के लिए अल्लाह ताला की तरफ से नियुक्त लक्ष्य। वो मूर्ख है जो मनुष्य को उनके रहन-सहन या प्रार्थना के तौर-तरीके की बुनियाद पर अलग-अलग सम्प्रदाय की सृष्टि करते है। जब तमाम इंसानों का लक्ष्य एक है तो सम्प्रदाय का क्या अस्तित्व?

सवाल:- १. किबला.... जब पुरब पश्चिम सब अल्लाह का है तो किबला को मस्जिद अकसा (मशरीक) से मस्जिद हराम (मगरीब) की तरफ घुमाने का क्या लक्ष्य है?

२. क्या अल्लाह को रसूल के दिल का हाल मालूम न था जो १७ महीने के बाद मस्जिद हराम को किबला नियुक्त किया?

३. क्या रसूल को ये मालूम न था कि मगरीब और मशरीक सारे अल्लाह के है?

४. १७ महीने तक मस्जिद अक्सा को किबला बनाया जो यहूदियों का किबला था क्या ये यहूदियों को अपने घिरोह में लाने की रसूल की चेष्टा न थी?इन सारे सवालों का जवाब सिर्फ एक ही सोच पर आकर खत्म होती है और वो है किबले का मतलब ''इंसान की जीवन का लक्ष्य'', जो लक्ष्य मनुष्य और मानव समाज के लिए लाभकारी हो। सत्य तो ये है कि ''रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद किबला नाम के'' तंग ख्यालात के पाबंद नहीं थे, सारी दुनियां के लिए रसुल-ए-पाक की मौजूदगी एक रहमत थी और लोगों के दरमियान ''किबला'' लेकर जो फसाद या गलतफैमी है इस आयत के द्वारा अल्लाह ताला ने उसे मिटा दिया।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِّتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَن يَتَّبِعُ الرَّسُولَ مِمَّن يَنقَلِبُ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَإِن كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ إِنَّ اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَّحِيمٌ {143}

और जिस तरह तुम्हारे क़िबले के बारे में हिदायत की उसी तरह तुम को आदिल उम्मत बनाया ताकि और लोगों के मुक़ाबले में तुम गवाह बनो और रसूल तुम्हारे मुक़ाबले में गवाह बनें और जिस क़िबले की तरफ़ तुम पहले सज्दा करते थे हम ने उसको को सिर्फ इस वजह से क़िबला क़रार दिया था कि जब क़िबला बदला जाए तो हम उन लोगों को जो रसूल की पैरवी करते है हम उन लोगों से अलग देख लें जो उलटे पाव फिरते है अगरचे ये उलट फेर सिवा उन लोगों के जिन की अल्लाह ने हिदायत की है सब पर शाक़ ज़रुर है और अल्लाह ऐसा नहीं है कि तुम्हारे ईमान नमाज़ को जो बैतुलमुक़द्दस की तरफ पढ़ चुके हो बरबाद कर दे बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा ही रफ़ीक व मेहरबान है। (१४३)

व्याख्या:- सभ्यता, प्रेम, संयम, अहिंसा, शिक्षा और अम्नसुकून चाहने वाला दल को अल्लाह ताला ने सारे लोगों पर श्रेष्ठ बनाया और जिन लोगों के पाप समाज में जाहिर है ये लोग गवाह रहे। इंसानों को अपनी मुराद प्राप्त करने में

मुश्किले पैदा की ताकि अल्लाह ताला उन्हें अजमाये कि वो अपने गुरू (रसुल) की आज्ञा का कितना पालन करते है और कौन उनके विरूद्ध है। अल्लाह ताला उनकी ईमानदारी की मेहनत व्यर्थ नही करते, नि:संदेह अल्लाह लोगों के साथ इंसाफ करने वाला है।

पैगाम:- इस आयत और मोजुदा हदिसों के अनुसार मुसलमान नाम वाले दल पर तमाम लोगों की निगेबानी की जिम्मेदारी है और मुसलमान उन पर गवाह होंगे लेकिन कुरानी आयतों की अनुसार ये साबित होता है कि कोई किसी के अमाल का जिम्मेदार नहीं है और न ही कोई दूसरा किसी के अमाल का फैसले का निगेबान है, यहां तक कि सुरा एहकाफ की आयत नम्बर ९ में साफ तौर पर फरमाया कि ''रसूल को भी खुद मालूम नहीं कि अल्लाह उनके साथ क्या मामला करने वाला है और बाकी लोगों के साथ क्या फैसला होगा''। जब हर कोई अपने अमाल का स्वयं जिम्मेदार है तो अल्लाह ताला एक मनुष्य पर दूसरे मनुष्य को निगेबान कैसे रख सकते है। जब अल्लाह ताला पलक झपकते सारे काम कर सकते है और वो बेनियाज है और उन्हें किसी की मदद की जरूरत नही। इस आयत में ''निगेबानी'' का मतलब है हर मनुष्य अपने-अपने अमाल की निगेबानी करें और गुनहगारों के अमाल को खत्म करने की चेष्टा करें अपने लाभ के लिए।

आयते उदाहरण सहीत २/४८, १२३, १६५.. ७/१९७,१०/३, १७/५७, ३१/३३, ३४/३७, ३५/१८, ३९/७, ४६/९,१९, ५८/१७, ६०/३

قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّهِمْ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ {144}

क़िबला बदलने के वास्ते बेशक तुम्हारा बार बार आसमान की तरफ मुँह करना हम देख रहे है तो हम ज़रुर तुम को ऐसे क़िबले की तरफ फेर देगें कि तुम निहाल हो जाओ अच्छा तो नमाज़ ही में तुम मस्जिदे मोहतरम काबे की तरफ मुँह कर लो और ऐ मुसलमानों तुम जहाँ कही भी हो उसी की तरफ़ अपना मुँह कर लिया करो और जिन लोगों को किताब तौरेत वग़ैरह दी गयी है वह बख़ूबी जानते है कि ये तबदील क़िबले बहुत बजा व दुरुस्त है और उस के परवरदिगार की तरफ़ से है और जो कुछ वह लोग करते है उस से अल्लाह बेख़बर नही (१४४)

व्याख्या:- रसुल हमेशा अल्लाह से मदद की उम्मीद रखते है। जब रसूल किसी दुनियावी बातों पर गमगीन होते थे तब उस गम से निकलने के लिये अल्लाह से दुआ करते, तब अल्लाह अपनी मदद रसूलों और ईमान वालों को भेजता। तमाम लोग जो सभ्यता, प्रेम, संयम, अहिंसा, शिक्षा और शांति चाहते है उनका रूख मस्जिद हराम है, जो लोग किताबों के द्वारा अल्लाह के असूलों को पा चुके है तो यकीनन उन सारे लोगों का लक्ष्य और दिशा एक ही है।

पैगाम:- मस्जिद हराम तमाम सभ्य, प्रेम, संयमी और अमन चाहने वाले लोगों का चिह्न है। इस आयत के द्वारा मस्जिद हराम को उन लोगों का लक्ष्य बना कर उन्हें भाईचारा, प्रेम, अमन और एक साथ रहने का पैगाम दिया।

وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَّا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ وَمَا أَنتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ وَمَا بَعْضُهُم بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ {145}

और अगर एहले किताब के सामने पृथ्वी की सारी दलीलें पेश कर दोगे तो भी वह तुम्हारे क़िबले को न मानेंगे और न तुम ही उनके क़िबले को मानने वाले हो और खुद एहले किताब भी एक दूसरे के क़िबले को नहीं मानते और जो इल्म क़ुरान तुम्हारे पास आ चुका है उसके बाद भी अगर तुम उनकी ख़्वाहिश पर चले तो अलबत्ता तुम नाफ़रमान हो जाओगे (१४५)

व्याख्या:- बिगड़ी हुई रूप वाले नियमों के मानने वाले लोग कभी भी सभ्यता, प्रेम, संयमी, मानवता और शांति वाले ''किबले'' की पैरवी नहीं करेंगे जो रसूलों और ईमान वालों का किबला है और न ही सभ्य मानव उनके नियम वाले ''किबले'' की पैरवी करेंगे। जो नफरत, कु-संस्कार और ईर्ष्या के बुनियाद पर कायम है और हकीकत समझने के बावजूद लोग अगर अपवित्रता पर चलने की चेष्टा करेंगे तो यकीनन ऐसे लोग अत्याचारी बन जायेंगे।

पैगाम:- यह आयत उन तमाम मानव के लिए है जो अल्लाह के नियमों को पहचान चुके है और इस आयत के द्वारा अल्लाह ने उन्हें शैतान की पहचान दी। शैतान का दावा है कि वो अल्लाह की राह पर चलने वाले को बहकायेगा, मानव के अंदर ही पाप (शैतान) और पुण्य (अल्लाह वाली सोच) मौजूद है, मानव से ही अच्छे और बुरे काम होते है।

उदाहरण - सुरा-इराफ के आयतें निम्नलिखित है:

उसने कहां मुझे मोहलत दीजिए कयामत के दिन तक (१४)

अल्लाह ताला ने फरमाया तुझको मोहलत दी गयी (१५)

उसने कहां बासबब उसके कि आपने मुझको गुमराह किया है, मै कसम खाता हूं कि मै उनके लिये आपकी सीधी राह पर बैठूँगा(१६)

फिर उन पर हमला करूँगा आगे से भी और पीछे से भी और उनके दाय से और बाय से भी और आप उनमें से अकसर को शुकर गुजार न पायेंगे(१७)

इसके अलावा कुरान में और भी सुरते है ४/११, १५/३७-३८-३९-४०-४१, १७/६२-६३-६४-६५

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ {146}

जिन लोगों को हमने किताब दी है वह जिस तरह अपने बेटों को पहचानते है उसी तरह तरह वह उस पैगम्बर को भी पहचानते है और उन में कुछ लोग तो ऐसे भी है जो दीदए व दानिस्ता सत्य बात को छिपाते है (१४६)

व्याख्या:- जिस तरह मानव अपने बच्चों को महसूस करते है ठीक उसी तरह सभ्य मानव अल्लाह के असूलों को पहचानते है। कुछ लोग अल्लाह के असूलों को पहचानने के बावजूद अपने लक्ष्य के लिए इसे छिपाने की कोशिश करते है।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ {147}

सच्चाई तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से प्रमाणित है पस तुम कहीं शक करने वालों में से न हो जाना (१४७)

व्याख्या:- अल्लाह के असूलों को पहचानने वाले लोग कभी भी उन प्राकृतिक असूलों पर शक नहीं करते जो समाज को अच्छाई और सुख-शांति (अम्नसकून) की तरफ ले जाते है।

وَلِكُلٍّ وِجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يَأْتِ بِكُمُ اللَّهُ جَمِيعًا إِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {148}

और हर फरीक़ के वास्ते एक सिम्त है उसी की तरफ वह अपना मुँह कर लेता है पस तुम झगड़े को छोड़ दो और नेकियों मे उन से आगे बढ़ जाओ तुम जहाँ कहीं होगे अल्लाह तुम सबको अपनी तरफ ले आऐगा बेशक अल्लाह हर चीज पर क़ादिर है (१४८)

व्याख्या:- हर मनुष्य की पसंद-नपसंद रहन सहन का तरीका और सोच अलग-अलग होती है यानी वो किसी विशेष सोच के दायरे में सीमित है। मनुष्य को चाहिए कि पवित्रता और शांति को लक्ष्य बनाकर इस रास्ते में कामयाब रहे और इस लक्ष्य में रहने वाले हर मनुष्य को अल्लाह एक कर देगा और अल्लाह सर्वशक्तिमान है।

पैगाम:- समाज में कुछ लोग ऐसे भी है जो मानव समाज को धर्म, सम्प्रदाय और अलग-अलग तरीकों में बाटा। और इस आयत में गौर करने वाली बात यह है कि ''हर पहलू के लिए एक दिशा है'' और इससे ये प्रमाण होता है कि हर मनुष्य को अल्लाह ने अलग-अलग काम, अलग-अलग दिमाग और अलग-अलग जगह अत: फरमाया है मगर पवित्र मानव का लक्ष्य एक रखा और वो है शांति, पवित्रता और शिक्षा।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِن رَّبِّكَ وَمَا اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ {149}

तुम अपना मुँह मस्जिदे मोहतरम की तरफ़ कर लिया करो और बेशक ये नया क़िबला तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से हक है (१४९)

व्याख्या:- किसी भी उम्मत के सभ्य मानव आपस में एक है और सभ्यता, प्रेम, संयम, मानवता और शांति वाले किबले की तरफ है और ''मस्जिद-ए-हराम'' इस किबले की निशानदेही करता है।

पैगाम:- ईमान वाले यानी सभ्य, शांति, अहिंसा, शिक्षा, संयम, प्रेम और मानवता के नियमों पर कायम रहने वालों का चिह्न है ''काबा'', पापियों का नहीं। काबा को सिर्फ एक चोकोर पत्थर की इमारत न समझे और उसके रूहानी पहलू को समझकर इसका तवाफ (प्रदक्षीण) करें।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِي وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِي عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ {150}

और तुम्हारे कामों से अल्लाह ग़ाफिल नही है और तुम जहाँ से जाओ तुम अपना मुँह मस्जिदे हराम की तरफ कर लिया करो और तुम जहाँ कही हुआ करो तो नमाज़ में अपना मुँह उसी काबा की तरफ़ कर लिया करो तो तुम लोग उनसे डरो नही और सिर्फ़ मुझसे डरो और ताकि तुम पर अपनी नेअमत पूरी कर दूँ (१५०)

व्याख्या:- पृथ्वी के किसी भी कोने के सभ्य मानव अपना लक्ष्य पहचान ले ताकि दूसरे लोगों की कोई हुज्जत उन पर न रहे।

पैगाम:- प्रेम, पवित्रता, शांति, अहिंसा और शिक्षा - यही ५ बुनियादें है इस्लाम और नमाज की और इसका लक्ष्य है काबा। इस्लाम में जितने फिरके है सब अपने-अपने तरीके से नमाज पढ़ते है और इस इबादत के तरीका के बुनियाद पर ही सम्प्रदाय की श्रृष्टि होती है और ये बिल्कुल गैर इस्लामी है। मै प्रमाण के साथ कह सकता हूँ कि कुरान शरीफ के नियम सम्प्रदायिकता की सोच को बातिल करती है (यानी फिरका परस्थी)।

كَمَا أَرْسَلْنَا فِيكُمْ رَسُولًا مِنْكُمْ يَتْلُو عَلَيْكُمْ آيَاتِنَا وَيُزَكِّيكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُمْ مَا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ {151}

फायदा ये है ताकि इंसान हिदायत पाए मुसलमानों एहसान भी वैसा ही है जैसे हम ने तुम में तुम ही में का एक रसूल भेजा जो तुमको हमारी आयतें पढ़ कर सुनाए और तुम्हारे नफ़्स को पाकीज़ा करे और तुम्हारी किताब और ज्ञान की बातें सिखाए और तुम को वह बातें बतांए जिन की तुम्हें पहले से खबर भी न थी (१५१)

व्याख्या:- पाक-परवरदिगार मानव में से किसी एक मानव के द्वारा अपने असूल लोगों में फैलाये और वो (रसूल) ज्ञान लोगों को देते है जिसकी बदोलत लोग आपस में अमनो चैन से जी सकते है और जिन लोगों ने अमन से दूरी इख्तियार कर रखी है, उन्हें भी ज्ञान देते है जो उन्हें पहले कभी नही मिला था।

पैगाम:- मानव समाज में ये देखा गया कि कुछ विशेष मानव में कुछ विशेष गुण पाये जाते है जो आम मानव में नहीं पाये जाते।

فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوا لِي وَلَا تَكْفُرُونِ {152}

पस तुम हमारी याद रखो तो मै भी तुम्हारा ज़िक्र किया करुगाँ और मेरा शुक्रिया अदा करते रहो और नाशुक्री न करो (१५२)

व्याख्या:- सभ्य लोग पाक-परवरदिगार का शुक्र अदा करते है अपने कर्मों के द्वारा और अल्लाह के दिये हुए हर हाल में खुश रहते है और इसके परिणाम मे अल्लाह उन्हे सुख-शान्ति प्रदान करते है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَعِينُوا بِالصَّبْرِ وَالصَّلَاةِ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ {153}

ऐ ईमानदारों मुसीबत के वक़्त सब्र और नमाज़ के ज़रिए से अल्लाह की मदद माँगों बेशक अल्लाह सब्र करने वालों ही का साथी है (१५३)

व्याख्या:- सभ्य लोग हमेशा अल्लाह के दिये हुए हाल पर खुश रहते है और सब्र करते है। मानवता, प्रेम, सभ्यता, संयम, अहिंसा, शिक्षा और शांति के द्वारा इबादत (नमाज) करते है और अल्लाह पर ही भरोसा करते है।

पैगाम:- आयत १२५ की व्याख्या पढ़ ले जिसमें नमाज की हकीकत बयान की गयी है।

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِنْ لَا تَشْعُرُونَ {154}

और जो लोग अल्लाह की राह में मारे गए उन्हें कभी मुर्दा न कहना बल्कि वह लोग ज़िन्दा है मगर तुम उनकी ज़िन्दगी की हक़ीकत का कुछ भी शऊर नहीं रखते (१५४)

व्याख्या:- शांति और पवित्रता प्रतिष्ठित करने के लक्ष्य में अपने आप को बलिदान करने वाले लोगों को मुर्दा नही कहना चाहिए और उनकी कूरबानियां और असूल लोगों के अंदर मिसाल बनकर जिन्दा रहते है और उनके काम, संघर्ष और सच्चाई की मिशाल हमेशा लोगों के मस्तिक्ष में जिन्दा रहती है यानी लोग उनके कामों को पीढ़ी दर पीढ़ी याद रखते है।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوفْ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الأَمْوَالِ وَالأَنفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ {155}

और हम तुम्हें कुछ खौफ़ और भूख से और मालों और जानों और फलों की कमी से ज़रुर आज़माएगें और ऐसे सब्र करने वालों को खुशख़बरी दे दो (१५५)

व्याख्या:- शांति और संयम की राह में चलने वाले लोगों की अजमाइश भूख-प्यास दुश्मनों का डर, माल व जान की फिकर, फलों की कमी और तमाम किसमों की पीड़ा से होती है, इसके बावजूद सब्र करने वाले सभ्य मानव अपने असूल और लक्ष्य पर कायम रहते है।

الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ {156}

कि जब उन पर कोई मुसीबत आ पड़ी तो वह बोल उठे हम तो अल्लाह ही के है और हम उसी की तरफ लौट कर जाने वाले है (१५६)

व्याख्या:- और ऐसे लोगों पर जब कोई मुसीबत आती है तब उस मुसीबत को अल्लाह का दिया हुआ हाल समझ कर उसे कबूल करते है और अपने आपको अल्लाह की मलकियत में शूमार करते है।

أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ {157}

उन्हीं लोगों पर उनके परवरदिगार की तरफ से इनायतें है और रहमत और यही लोग हिदायत याफ्ता है (१५७)

व्याख्या:- इन पर इनके रब का आशीर्वाद और रहमतें है और यही लोग हिदायत वाले है।

पैगाम:- आयत के अनुसार ''इन लोगों का रब'' और ''कहने वालों का रब'' अलग-अलग नहीं हो सकता। अगर इस आयत को अल्लह की जुबानी देखा जाए तो क्या अल्लाह इन लोगों के रब से अलग है? नहीं! इस आयत में तमाम सभ्य, संयमी, प्रेम, मानवता और अमन व चैन चाहने वाले लोगों का रब एक ही है, चाहे ये लोग किसी भी वर्ग, फिरका या सम्प्रदाय से तालुक रखते हो। इस आयत से यही पैगाम लोगों को मिलता है।

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِن شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَن يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ {158}

बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह की निशानियों में से है पस जो शख़्स ख़ानए काबा का हज या उमरा करे उस पर उन दोनो के तवाफ़ करने में कुछ पाप नहीं और जो शख़्स खुश खुश सभ्य काम करे तो फिर अल्लाह भी क़दरदाँ वाक़िफ़कार है (१५८)

व्याख्या:- ऐतिहासिक पट भूमिका के आधार पर लोगों को सबक और उदाहरण के लक्ष्य से ''सफा मरवा'' नाम की दो चिन्ह मानव को दी गयी और ये चिन्ह मानव को अल्लाह की इतिहासिक रहमतों को याद दिलाते हुए हज और उमराह करने वाले लोगों के लिए एक रसम बनायी और यह मानव के लिए एक सब्र का सबक भी है।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنَاتِ وَالْهُدَى مِن بَعْدِ مَا بَيَّنَّاهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتَابِ أُولَئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللَّهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللَّاعِنُونَ {159}

बेशक जो लोग हमारी इन रौशन दलीलों और हिदायतों को जिन्हें हमने नाज़िल किया उसके बाद छिपाते है जबकि हम किताब तौरैत में लोगों के सामने साफ़ साफ़ बयान कर चुके है तो यही लोग है जिन पर अल्लाह भी लानत करता है और लानत करने वाले भी लानत करते है (१५९)

व्याख्या:- जो लोग अल्लाह के उपदेशों को अपने लक्ष्य से बदलते और छिपाते है इतना जानने के बाद की लोगों के लिए फायदामंद भी है, ऐसे लोगों पर अल्लाह की बदुआ और सुख-शान्ति चाहने वाले लोगों की फरियाद के बदौलत अल्लाह का अभिश्राप।

पैगाम:- उदाहरण के तौर पर भारत में हजारों साल से ब्राह्मण वर्ग के लोग अपने आपको उँचा प्रमाण करने के लिए छुआ-छुत की मन घढत रश्में समाज पर ठोप रखी थी और वेद के असुलों को लोगों तक पहुँचने ही नहीं दिया।

إِلاَّ الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَبَيَّنُوا فَأُوْلَـئِكَ أَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيمُ {160}

मगर जिन लोगों ने तौबा की और अपनी ख़राबी की इसलाह कर ली और जो किताबे अल्लाह में है साफ़ साफ़ बयान कर दिया पस उन की तौबा मै कुबूल करता हूँ और मै तो बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान हूँ (१६०)

व्याख्या:- जो लोग अपने पापों को समझ कर और उसे बयान करके तौबा करते है और सच्चाई को कबूल करते है तथा उसे बताने में डरते नहीं, तो यकीनन अल्लाह उन्हें माफ कर देगा।

पैगाम:- तौबा करने के बाद दुबारा पाप नहीं करते।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّهِ وَالْمَلآئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ {161}

बेशक जिन लोगों नें कुफ़्र एख़्तेयार किया और कुफ़्र ही की हालत में मर गए उन्ही पर अल्लाह की और फरिश्तों की और तमाम लोगों की लानत है हमेशा उसी फटकार में रहेंगे (१६१)

व्याख्या:- और जो लोग अल्लाह के असूलों को इनकार करते हुए पाप कर्मों के साथ मौत को गले लगाते है यकीनन उन्हें बदसकूनी का अभिश्राप हर तरह से मिलता है।

خَالِدِينَ فِيهَا لاَ يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلاَ هُمْ يُنظَرُونَ {162}

न तो उनके अज़ाब ही में तख़्फ़ीफ़ की जाएगी और न उनको अज़ाब से मोहलत दी जाएगी (१६२)

व्याख्या:- और यही बदसकूनी उनका मुकद्दर जब तक वो सत्य को पहचान न ले।

وَإِلَـهُكُمْ إِلَهٌ وَاحِدٌ لاَّ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ {163}

और तुम्हारा माबूद तो वही यकता अल्लाह है उस के सिवा कोई माबूद नहीं जो बड़ा मेहरबान रहम वाला है (१६३)

व्याख्या:- सच्चाई यही है कि तमाम लोगों का रब एक ही है इसके सिवा कोई दूसरा नहीं और वही है दयालु और क्षमाकारी।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَاخْتِلاَفِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِي تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنفَعُ النَّاسَ وَمَا أَنزَلَ اللّهُ مِنَ السَّمَاء مِن مَّاء فَأَحْيَا بِهِ الأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيهَا مِن كُلِّ دَآبَّةٍ وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَاء وَالأَرْضِ لآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ {164}

बेशक आसमान व ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के रद्दो बदल में और कश्तियों जहाज़ों में जो लोगों के नफ़े की वस्तुें ले कर चलते है और जल में जो अल्लाह ने आसमान से बरसाया फिर उस से ज़मीन को मुर्दा होने के बाद जिला दिया और उस में हर क़िस्म के जानवर फैला दिये और हवाओं के चलाने में और अब्र में जो आसमान व ज़मीन के दरमियान अल्लाह के हुक्म से घिरा रहता है अक़्ल वालों के लिए बड़ी बड़ी निशानियाँ है (१६४)

व्याख्या:- सृष्टि के नियमानुसार पृथ्वी और आकाश में अल्लाह ताला ने हर अस्तित्व के दो पहलू रखे उदाहरण के तौर पर रात और दिन । दिन की प्राप्ति रात के बगैर अधूरी है और मानव जीवन की कश्ती आकाश और जमीन की तमाम वस्तु से सजी हुई है और इसी तरह मानव जीवन गतिमय और रंग-बिरंगी है। पृथ्वी अगर समंदर है तो मानव जीवन इसमें कश्ती है और आकाश से बरश्ने वाला जल जो सूखी धरती को हरा-भरा करती है ठीक इसी तरह अल्लाह की रहमत से मानव को जंगली जीवन से एक सभ्य और खूबसुरत समाज दिया। जो ज्ञान रखते है वो इस बात को समझते है।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَتَّخِذُ مِن دُونِ اللّهِ أَندَادًا يُحِبُّونَهُمْ كَحُبِّ اللّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَشَدُّ حُبًّا لِّلّهِ وَلَوْ يَرَى الَّذِينَ ظَلَمُوا إِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلّهِ جَمِيعًا وَأَنَّ اللّهَ شَدِيدُ الْعَذَابِ {165}

और बाज़ लोग ऐसे भी है जो ख़ुदा के सिवा औरों को भी अल्लाह का मिसल व शरीक बनाते हैं जैसी प्रेम अल्लाह से रखनी चाहिए वैसी ही उन से रखते है और जो लोग ईमानदार है वह उन से कहीं बढ़ कर अल्लाह की उलफ़त

रखते हैं और काश ज़ालिमों को वह बात सूझती जो अज़ाब देखने के बाद सूझेगी कि यक़ीनन हर तरह की क़ूवत अल्लाह ही को है और ये कि बेशक अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब वाला है (१६५)

व्याख्या:- पृथ्वी में ऐसे लोग भी है जो अल्लाह के असूलों (यानी सभ्यता, प्रेम, संयम, शिक्षा, मानवता, अहिंसा और सुख-शांति यानी अल्लाह वाले) को इनकार करके शैतानी असूलों को ग्रहण करते है यानी हषद, हवस, गुस्सा, लालच और फसाद वाले शैतानी ख्यालत को पसंद करते है और अल्लाह वाले असूलों को ग्रहण करने वाले यानी ईमान वाले लोग अपने असूलों से प्रेम रखते है और सख्ती से उसपर कायम रहते है। इनकार करने वाले लोगों को जब तकलीफें घेरती है तब उसे पता चलता है कि तमाम ताकत सिर्फ अल्लाह की है अल्लाह ही सबको अभिश्राप देने वाला है तो हरगीज उसके असूलों को टूकड़ा कर शिर्क न करे।

पैगाम:- अल्लाह और उसका प्राकृतिक सत्य और सुख-शान्ति वाले आदर्शों को अपने विवेक द्वारा पुरी तरह से ग्रहण करना ही अल्लह से मोहब्बत करना है। अल्लाह का प्रेम मनुष्य को पवित्रता और सुख-शान्ति प्रदा करता है। सारी शक्ति अल्लाह की है और सारी किया-प्रकिया अल्लाह के द्वारा ही संघटित होती है। और इस आदर्श को भुला कर जो मानव अपनी उत्वाकांक्षा से प्रेम रखते है वो काफिर यानी अधार्मिक है, जो मानव पवित्रता और शिक्षा को सुख-शांति की बुनियाद बनाते है वही सफल है।

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِينَ اتُّبِعُوا مِنَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الأَسْبَابُ {166}

जब पेशवा लोग अपने पैरवो से अपना पीछा छुड़ाएगे और अज़ाब को देखेगें और उनके बाहमी ताल्लुक़ात टूट जाएँगे (१६६)

व्याख्या:- पाप, फसाद या नफरत फैलाने वाले लोग जब अपने ताबेदारों से तंग आ जाएंगे और पीड़ा को नजदीक से महसूस करेंगे तब पेशवा और उनके तमाम ताबेदारों के रिश्ते नाते टूट जाएंगे। अपवित्र पापी विवेक वाले मानव जब उत्वाकांक्षा से प्रभावित होकर हताश और निराश हो जाएंगे तब उनका कोई मददगार न होगा।

पैगाम:- मानव जो बोता है वही काटता है गुरू अपने शिष्य को जो सिखाता है वही उनके सामने आकर खड़ा हो जाता है। उत्वाकांक्षा मानव को पाप कर्मों की तरफ प्रभावित करती है।

وَقَالَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّؤُوا مِنَّا كَذَلِكَ يُرِيهِمُ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرَاتٍ عَلَيْهِمْ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنَ النَّارِ {167}

और पैरव कहने लगेंगे कि अगर हमें कही फिर पलटना मिले तो हम भी उन से इसी तरह अलग हो जायेंगे जिस तरह ऐन वक़्त पर ये लोग हम से अलग हो गए यूँ ही अल्लाह उन के आमाल को दिखाएगा जो उन्हें पास दिखाई देंगें और फिर भला कब वह दोज़ख़ से निकल सकतें है (१६७)

व्याख्या:- पाप, अपवित्रता और कु-संस्कार की शिक्षा देने वालों का धोखा जब मानव के सामने खुल जाएगा तब कु-संस्कार में विश्वास रखने वाले सच्चाई की तरफ जरूर लौटेंगे।

पैगाम:- सत्य कभी नहीं छिपता चाहे इसे जितना भी छुपाया जाये।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ كُلُوا مِمَّا فِي الأَرْضِ حَلاَلاً طَيِّبًا وَلاَ تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ {168}

ऐ लोगों जो कुछ ज़मीन में है उस में से हलाल व पाकीज़ा वस्तु खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो वह तो तुम्हारा ज़ाहिर ब ज़ाहिर दुश्मन है (१६८)

व्याख्या:- मानव की सेहत के लिए जो फायदामंद हो यानी हलाल वस्तुं उन्हें इस्तमाल में लाए और पाप की राह पर न चले। पाप मानव के अमनो चैन और सेहत को बिगाड़ने वाले खुला दुश्मन है।

पैगाम:- मानव के मस्तिक्ष की खुराक है ज्ञान। और अज्ञानता मानव और मानव समाज का खुला दुश्मन है।

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوءِ وَالْفَحْشَاءِ وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لاَ تَعْلَمُونَ {169}

वह तो तुम्हें बुराई और बदकारी ही का हुक्म करेगा और ये चाहेगा कि तुम बे जाने बूझे अल्लाह पर बोहतान बाँधो (१६९)

व्याख्या:- मानव का अपवित्र विवेक इसे पाप कर्मों में उत्साहित करते है और उसके मूर्खता को हथियार बनाकर उसे कु-संस्कार और अयौगतिक अचार-विचार में उलझा देते है ताकि उसे सच्चाई का पता न चले।

पैगाम:- अज्ञानता मानव को कु-संस्कार और अयौगतिक बातों की तरफ ढकेल देती है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ نَتَّبِعُ مَا أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ {170}

और जब उन से कहा जाता है कि जो हुक्म अल्लाह की तरफ से नाज़िल हुआ है उस को मानो तो कहते है कि नहीं बल्कि हम तो उसी तरीक़े पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया अगरचे उन के बाप दादा कुछ भी न समझते हों और न राहे रास्त ही पर चलते रहे हों (१७०)

व्याख्या:- जब गुमराह करने वाले लोगों से कहा जाता है कि अल्लाह के सच्चे असूलों पर अमल करो जो अल्लाह की तरफ से आया, तब वो लोग कहते है कि जो उनके पूरवज करते है, वो उन्हीं को मानकर चलेंगे चाहे वो जितना भी अयौगतिक और बे-अकली किरदार क्यों न हो।

पैगाम:- कु-संस्कार में डूबा हुआ मानव ज्ञान के प्रकाश से भयभीत होता है और यही भय इसे कु-संस्कार छोड़ने नही देता। मानव मस्तिक्ष जब धीरे-धीरे ज्ञान की प्रकाश की तरफ आया तब मानव सभ्यता का विकास हुआ और फलस्वरूप आज मानव एक आधूनिक जीवन व्यतीत करते है। प्रकृति के इच्छानुसार मानव मस्तिक्ष हमेशा आधुनिक प्रकृति की तरफ विकर्षित होता है।

وَمَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا كَمَثَلِ الَّذِي يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَاءً وَنِدَاءً صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُونَ {171}

और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तेयार किया उन की मिसाल तो उस शख़्स की मिसाल है जो ऐसे जानवर को पुकार के अपना हलक़ फाड़े जो आवाज़ और पुकार के सिवा सुनता न हो ये लोग बहरे गूँगे अन्धे है कि ख़ाक नहीं समझते (१७१)

व्याख्या:- अशीक्षित जिद्दी और कु-संस्कार में डूबे हुए लोग सिर्फ अज्ञानता की तरफ ही रहते है और उन्हें सत्यता और ज्ञान का प्रकाश नजर नहीं आता और वो बहरे, गूँगे और अंधे हो जाते है यानी न वो सत्यता सुन सकते है, न देख सकते है और न बोलने के काबिल रहते है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَاشْكُرُوا لِلَّهِ إِن كُنتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ {172}

ऐ ईमानदारों जो कुछ हम ने तुम्हें दिया है उस में से सुथरी वस्तु खाओं और अगर अल्लाह ही की इबादत करते हो तो उसी का शुक्र करो (१७२)

व्याख्या:- ऐ सभ्य संयमी और अमनसकून चाहने वाले लोगों अल्लाह की प्रकृति से वो प्रकृति अपनाओं और उतनी ही अपनाओ जो तुम्हारी और समाज के लिए फायदेमंद होने के साथ-साथ मस्तिक्ष और शरीर के लिए भी लाभकारी हो।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ بِهِ لِغَيْرِ اللَّهِ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {173}

उसने तो तुम पर बस मुर्दा जानवर और ख़ून और सूअर का गोश्त और वह जानवर जिस पर ज़बह के वक़्त अल्लाह के सिवा और किसी का नाम लिया गया हो हराम किया है पस जो शख़्स मजबूर हो और सरकशी करने वाला और ज़्यादती करने वाला न हो तो उसपर पाप नहीं है बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१७३)

व्याख्या:- मानव को खुराक के तौर पर वो मुर्दा वस्तु जो सड़ गयी हो, खुन, सूवर का गोश्त और हर वो वस्तु जिसको खाने से शैतानियत अपनी तरफ खींच कर गलत कामों मे ढकेल दे वो सारी वस्तुं हराम है और मजबूरी की हालत में कुछ हद तक वस्तुं इस्तेमाल करना कोई पाप नहीं।

पैगाम:- प्राकृति ने हर प्राणी को अपनी-अपनी खुराक चुनना सिखाया। और प्राकृतिक तौर पर हर प्राणी वो वस्तु नहीं खाता जो इसकी इन्द्रियाँ गवारा नहीं करती। इसलिए इस लिहाज से पृथ्वी के हर कोने के मानव समाज की खुराक का तरीका अलग-अलग है। जिस मुल्क में इंड ज्यादा होती है वहां पर प्राकृतिक तौर पर लाल गोश्त का

इस्तेमाल ज्यादा होता है, इंसान कच्चा गोश्त नहीं खा सकता। प्राकृति ने उसे आग का इस्तेमाल सिखाया ताकी वो अपनी खुराक को अच्छी तरह पका कर खाये और ठंड में अपने शरीर को तपीश दे सके। सुअर के गोश्त का ज्यादा इस्तेमाल मानव शरीर मे टेपवर्म पैदा कर सकता है।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْتُمُونَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ الْكِتَابِ وَيَشْتَرُونَ بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ مَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {174}

बेशक जो लोग इन बातों को जो अल्लाह ने किताब में नाज़िल की है छिपाते है और उसके बदले थोड़ी सी कीमत ले लेते है ये लोग बस अँगारों से अपने पेट भरते है और क़यामत के दिन अल्लाह उन से बात तक तो करेगा नहीं और न उन्हें पाक करेगा और उन्हीं के लिए दर्दनाक अज़ाब है (१७४)

व्याख्या:- बेशक जो लोग अल्लाह के बुनियादी असूल (यानी लोगों को हकीकत से गुमराह करना) जो किताब के द्वारा मानव के दरमियान मौजूद है उसे छुपाते है और लोगों की गुमराही को अपनी कमाई का द्वारा बनाते है ऐसे लोग यकीनन अपने लिये बदसकूनी की आग को अपनाते है जो उनके पेट और दिमाग को जलाकर राख कर देती है और आखरत में उनके लिए पीड़ा का दर्दनाक अभिश्राप।

पैगाम:- समाज को गुमराह करने वाले लोग बिलावास्ता अपना ही नुकसान करते है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الضَّلَالَةَ بِالْهُدَىٰ وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ فَمَا أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ {175}

यही लोग वह है जिन्होंने हिदायत के बदले गुमराही मोल ली और बख्शिश के बदले अज़ाब पस वह लोग दोज़ख़ की आग के क्योंकर बरदाश्त करेंगे (१७५)

व्याख्या:- ये वो लोग है जिन्होंने सच्चाई के बदले गुमराही अपनायी और बदसकूनी के अभिश्राप को आराम और सकून के बदले अपनाया ऐसे लोग बदसकूनी के अभिश्राप में जलते हुए आग का अभिश्राप कितनी हद तक बर्दाश्त करेंगे।

पैगाम:- ऐसे लोग जो सत्य ज्ञान को ठुकरा कर असत्य और पाप कर्मों में उलझे हुए रहते है। प्राकृतिक सत्य को किसी भी बहाने लोगों से छुपाने की चेष्टा करते है। ये आयत उन पापियों को संबोधित की गई है जो धर्म के नियमों को अधार्मिक और कु-संस्कार वाले नियमों से गुमराह करते है। विज्ञान भी अल्लाह की एक बेहतरीन प्रकृति है और जो इस प्रकृति का गलत इस्तेमाल करते है वो मानव धर्म का उल्लंघन करते है।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ نَزَّلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِي الْكِتَابِ لَفِي شِقَاقٍ بَعِيدٍ {176}

ये इसलिए कि अल्लाह ने हक के साथ किताब नाज़िल की और बेशक जिन लोगों ने किताबे अल्लाह में रद्दो बदल की वह लोग बड़े परले दरजे की मुख़ालेफत में है (१७६)

व्याख्या:- अल्लाह की सच्चे और प्राकृतिक नियम मानव को सीधा और सकून वाला रास्ता दिखाते है और इस राह पर मतभेद करने वाले लोग यकीनन सीधे, सच्चे और सकून वाले रास्ते से बहुत दूर है।

पैगाम:- मानव का विवेक जो धर्म पुस्तक के आदर्शों पर चलता है वही पवित्र होता है। धर्म पुस्तक और विज्ञान दोनों ही अल्लाह की सच्ची प्राकृति है और इन दोनों का गलत उपयोग मानव सभ्यता और समाज के लिए हानिकारी है। और जो ये कार्य करते है वो काफिर यानी अल्लाह के नियमों के विरूद्ध है।

لَيْسَ الْبِرَّ أَن تُوَلُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ وَآتَى الْمَالَ عَلَىٰ حُبِّهِ ذَوِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينَ وَابْنَ السَّبِيلِ وَالسَّائِلِينَ وَفِي الرِّقَابِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَالْمُوفُونَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عَاهَدُوا وَالصَّابِرِينَ فِي الْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ وَحِينَ الْبَأْسِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ {177}

सभ्य कुछ यही थोड़ी है कि नमाज़ में अपने मुँह पूरब या पश्चिम की तरफ़ कर लो बल्कि सभ्य तो उसकी है जो अल्लाह और रोज़े आख़िरत और फ़रिश्तों और अल्लाह की किताबों और पैग़म्बरों पर ईमान लाए और उसकी उलफ़त में अपना माल क़राबत दारों और यतीमों और मोहताजो और परदेसियों और माँगने वालों और लौन्डी गुलाम

में सर्फ करे और पाबन्दी से नमाज़ पढ़े और ज़कात देता रहे और जब कोई एहद किया तो अपने क़ौल के पूरे हो और फ़क्र व फाक़ा रन्ज और घुटन के वक़्त साबित क़दम रहे यही लोग वह है जो दावए ईमान में सच्चे निकले और यही लोग परहेज़गार है (१७७)

व्याख्या:- मानव की अच्छाई किसी पुरब या पश्चिम की तरफ मुँह करने से या कोई खास रश्म अदा करने से नहीं है (यानी सिर्फ इबादत का तरीका अपनाने से)। हकीकत में अच्छा मानव वो है जो एक अल्लाह पर ईमान रखते है उनके नाम पर मानव और मानवता को नहीं बाटते और कयामत की हकीकत को समझते हुए सभ्य अमाल करते है और फरिश्तों पर ईमान लाते है (यानी व तमाम वस्तुं जो मानव के लिए प्राकृतिक तौर पर लाभकारी है) प्रकृति के वो तमाम पहलू जिसे अल्लाह ने फरिश्तों के नाम से सम्बोधित किया उदाहरण के तौर आग, हवा, जल और मिट्टी - ये सारी वस्तुएं फरिश्तों का चिह्न है। और अल्लाह की दी हुई शान्ति से जीने की सही राह जो नबियों से प्राप्त होती है उस पर यकीन रखते है और अपने प्राकृतिक फितरत के अनुसार वस्तुओं की प्रेम के बावजूद मानव को दु:ख और पीड़ा में मदद करे और तकलीफ देने वाले लोगों से सभ्य मानव को आजाद करायें, जो लोग पाप के गुलाम है उन्हें भी आजाद कराये और जकात यानी सरकारी टैक्स दे और वादा पूरा करे। तकलीफ, दु:ख, मुसीबत के वक्त सब्र करे और पाप का रास्ता ग्रहण न करे, ऐसे लोग ही सच्चाई और शांति की राह पर है।

पैगाम:- इस आयत के अनुसार सच्चे मनुष्य की पहचान:-

१. रीति-रिवाज और प्रार्थना का तरीका, इन सारी वस्तुओं के उपर है सभ्यता, संयम, प्रेम, मानवता, सुख-शान्ति, अहिंसा और ज्ञान प्राप्त करना। मानव चरित्र में अगर ये गुण न हो तो कोई भी संस्कार या कोई भी प्रार्थना पद्धति परिपूर्ण नहीं हो सकती।

२. सृष्टि के हर वस्तु की मृत्यु निश्चित है या बिलावास्ता ये कह सकते है कि हर पहलू का परिवर्तन अवश्य है। इस बात पर विश्वास करते हुए और अपनी मृत्यु की सत्यता को कबूल करते हुए लोभ, मोह-माया, ईर्ष्या जो जरूरत से ज्यादा मानव मस्तिक्ष में हो जाती है उस पर काबू रखे। मृत्यु परमसत्य है इसे जानते हुए भी मानव अपने उत्वाकांक्षा के वश में आकर हिंसा, लोभ और द्वेष में डूबे रहते है, ये मानव का भ्रम है। मानव जब कयामत पर ईमान लाता है और उसे ठीक-ठीक समझते है तब उसके दिमाग से ये सारे कु-चरित्र का प्रभाव कम हो जाता है। (कयामत पर ईमान लाना)।

३. अधर्म के विरूद्ध हर मुमकिन युद्ध करें (जहाद)।

४. अपनी प्रतिज्ञा पुरी करें।

५. अपने जरूरत से ज्यादा वस्तुं का इस्तेमाल न करें (संयम)।

६. किसी जान को अपना गुलाम न समझे।

७. कष्ट और मुसीबत झेलने वालों की मदद करे।

८. प्रकृति का हर पहलू एक-एक फरिश्ता है जिसका गलत प्रयोग करके अल्लाह का अपमान न करे यानी फरिश्तों पर ईमान लाना।

९. सत्य और ज्ञान वाली पुस्तक पर विश्वास रखें। ये सारी पुस्तकें अल्लाह की मर्जी के अनुसार किसी न किसी के दिमाग से उत्पन्न होकर मानव सभ्यता में सम्मिलित है।

१०. पैगम्बर यानी अवतार जो अल्लाह के सीधे-सच्चे रास्ते को जिसके द्वारा मनुष्य को सुख-शान्ति प्राप्त होती है और मानव समाज और सभ्यता में प्रेम और अहिंसा की आदर्शों को प्रतिष्ठित करते है, उस पर विश्वास यानी ईमान रखना।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثَى بِالْأُنْثَى فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ {178}

ऐ मोमिनों जो लोग मार डाले जाएँ उनके बदले में तुम को जान के बदले जान लेने का हुक्म दिया जाता है आज़ाद के बदले आज़ाद और गुलाम के बदले गुलाम और औरत के बदले औरत पस जिस को उसके ईमानी भाई तालिबे क़ेसास की तरफ से कुछ माफ़ कर दिया जाये तो उसे भी उसके क़दम ब क़दम सभ्य करना और खुश मआमलती से अदा कर देना चाहिए ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ आसानी और मेहरबानी है फिर उसके बाद जो ज़्यादती करे तो उस के लिए दर्दनाक अज़ाब है (१७८)

व्याख्या:- सभ्य और पवित्र मानव का ये कर्त्तव्य है कि अगर इसके द्वारा किसी का भी कोई नुकसान हो तो वो उसको पुरा करने की चेष्टा करें। अगर इसके किसी चाहने वाले रिश्तेदार का नुकसान हो यानी किसी का भाई, बहन, बेटी, बेटा या अन्य रिश्तेदार का युद्ध के वक्त या किसी भी कारण से उनकी हत्या हो, इस रिश्ते के अनुसार जो कर्त्तव्य बनता है उसे संयमी और सभ्य मनुष्य पुरा करे। उदाहरण के तौर पर अगर किसी सभ्य मनुष्य से दुर्घटना द्वारा किसी की जान चली गयी हो तो इस मनुष्य के रिश्तेदारों के लिए जो कर्त्तव्य बनता है उसे पुरा करने की चेष्टा करें। हत्या के बदले हत्या का ये मतलब नही कि रक्तपात हो। किसी भी मनुष्य के हाथों अगर किसी की हत्या हो जाये और वह न हक हो और उस बात का उसे अनुभव हो जाये तो इस हत्या की कानूनी सजा जरूर भुक्ते। विचारधारा के मतभेद में रक्तपात बिलकुल हराम यानी वर्जित है। प्रकृति तौर पर हर मनुष्य विभिन्न विचारधारा और पसंद-नापसंद का मालिक है, यह अल्लाह की सृष्टि और इस पर झगड़ना या हत्या जैसा काम करना समस्त मानवता की हत्या है।

पैगाम:- इस लिहाज से गुनहगार मानव के सभ्य रिश्तेदार का कत्ल करना बिलकुल न इंसाफी है और अल्लाह के दरबार में न इंसाफी की कोई गुंजाइश नहीं। मकतुल (कत्ल हो चुका) के बदले कीमत (मुआवजा) इसके परिवार की जरूरत पूरी करना है और ये आयत मानव को कत्ल करना जैसे पाप से डराने की एक तरकीब है, अगर मानव ये सोचे की अगर वो किसी को कत्ल करेगा तो दूसरा भी इसके किसी न किसी चाहने वाले का कत्ल करेगा तो इस डर से मानव कत्ल जैसा घिनौना काम नहीं करेगा।

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ {179}

और ऐ अक़्लमनदों क़सास में तुम्हारी ज़िन्दगी है परहेज़ करो (१७९)

व्याख्या:- अकलमंद लोग इस आयत में छुपे हुए आदेश को पहचान कर न-हक कत्ल करने से रूक जाएंगे। इस आयत में कहा गया है ''कसास में तुम्हारा जीवन है''। इसका मतलब यह है कि अगर हर मानव ये समझे कि अगर वो किसी का नुकसान करेगा तो उसका भी नुकसान होगा तो कोई भी किसी का नुकसान नही करेगा। इसी सोच में ही मानव जीवन और इसका समाज टिका हुआ है और इस आयत के दूसरे हिस्से में ये प्रमाण होता है कि मानव समाज में रक्तपात बिलकुल वर्जित है और सभ्य पवित्र मनुष्य हर मुमकिन चेष्टा करें उससे बचने की।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ {180}

ऐ तुम को हुक्म दिया जाता है कि जब तुम में से किसी के सामने मौत आ खड़ी हो बशर्ते कि वह कुछ माल छोड़ जाएं तो माँ बाप और क़राबतदारों के लिए अच्छी वसीयत करें जो अल्लाह से डरते हैं उन पर ये एक हक है (१८०)

व्याख्या:- मानव अपने होशों हवास और अपने जीते जी अपने माल और दौलत को अपने मां-बाप, औलाद और रिश्तेदारों के लिए इंसाफ के साथ और उनके जरूरत को मुदेनजर रखते हुए वसीहत करे और ये मानव का कर्त्तव्य भी है ताकि उसके मौत के बाद उसकी दौलत फसाद की वजह न बन जाये।

فَمَنْ بَدَّلَهُ بَعْدَ مَا سَمِعَهُ فَإِنَّمَا إِثْمُهُ عَلَى الَّذِينَ يُبَدِّلُونَهُ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {181}

फिर जो सुन चुका उसके बाद उसे कुछ का कुछ कर दे तो उस का पाप उन्ही लोगों की गरदन पर है जो उसे बदल डालें बेशक अल्लाह सब कुछ जानता और सुनता है (१८१)

व्याख्या:- अगर वसीहत जुबानी एहद की द्वारा हो और जो व्यक्ति उसे सुनकर बदल दे तो उसका पाप पूरी तरह बदलने वाले पर होगा और अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

فَمَنْ خَافَ مِن مُّوصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {182}

जो शख़्स वसीयत करने वाले से बेजा तरफ़दारी या बे इन्साफी का ख़ौफ रखता है और उन वारिसों में सुलह करा दे तो उस पर बदलने का कुछ पाप नही है बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१८२)

व्याख्या:- जो व्यक्ति वसीहत करने वाले की पाप या गलती ठीक करा दे कानून के अनुसार और आपस में मेल-मिलाप करा दे उस पर कोई पाप नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ {183}

ऐ ईमानदारों रोज़ा रखना जिस तरह तुम से पहले के लोगों पर कर्तव्य था उसी तरफ तुम पर भी फर्ज़ किया गया ताकि तुम उस की वजह से बहुत से पापों से बचो (१८३)

व्याख्या:- सभ्य और संयमी लोगों पर रोजा फर्ज किया गया है ताकि वो संयम बनें और उन्हें शांति प्राप्त हो।

पैगाम:- रोजा के तीन फायदे है एक आर्थिक, दूसरा समाजी और तीसरा शारीरिक।

आर्थिक लाभ:- सोचा जाए अगर एक मानव सुबह दो रोटी दोपहर को तीन रोटी शाम को १ और रात को २ रोटी खाता है इस लिहाज से उसने ८ रोटियां खाई लेकिन रोजा के दौरान सुबह दो रोटी सैहरी के वक्त और ३ रोटी इफतारी के वक्त खायी और रात के वक्त अगर दो रोटियां खाता है तो ये कुल मिलाकर ७ रोटियां हुई। रोजा के दिनों में एक मानव आम दिनों से अगर एक रोटी कम खाता है तो पृथ्वी के तमाम मानव अगर एक महीने में ३० रोटियां बचाएं तो पृथ्वी के किसी घर और किसी जगह में खुराक की कमी नहीं होगी।

समाजी फायदा:- रोजे के दौरान जो सब्र और संयम का सबक मिलता है इससे मानव का अपना और समाज दोनों का फायदा होता है।

शारीरिक फायदा:- विज्ञान कहता है कि ज्यादा देर तक मानव को अपना पेट खाली नहीं रखना चाहिए और अल्लाहताला ने भी मानव को शारीरिक नुकसान करके रोजा की हिदायत नहीं दी, याद रखे रोजे का खास लक्ष्य है संयमी, शारीरिक फायदा और आर्थिक लाभ और किसी का नुकसान नही। रोजा एक पौराणिक संस्कार है, मनुष्य को लाभ पहुँचाने और पृथ्वी के हर कोने में विभिन्न तरीके से लोग ये रश्म अदा करते आ रहे है।

أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ فَمَن كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ عَلَى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ وَعَلَى الَّذِينَ يُطِيقُونَهُ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِينٍ فَمَن تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُ وَأَن تَصُومُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ {184}

गिनती के चन्द रोज़ इस पर भी जो शख़्स तुम में से बीमार हो या सफर में हो तो और दिनों में जितने क़ज़ा हुए हो गिन के रख ले और जिन्हें रोज़ा रखने की क़ूवत है और न रखें तो उन पर उस का बदला एक मोहताज को खाना खिला देना है और जो शख़्स अपनी खुशी से भलाई करे तो ये उस के लिए ज़्यादा बेहतर है और अगर तुम समझदार हो तो रोज़ा रखना तुम्हारे हक में बहरहाल अच्छा है (१८४)

व्याख्या:- गिनती के ३० दिन सारे मानव को ये परहेज करना है लेकिन जो बिमार हो या सफर में वो ठीक होने या सफर के बाद इसे पूरा करे और गरीबों को खाना खिलाये एक हो या ज्यादा अपनी हैसियत के मुताबिक और जो मानव रोजे से सभ्यता को फायदा दे और खुद रोजे के द्वारा सभ्यता और संयम का एहद करें और वो उसके लिए बेहतर है। मानव और मानवता के हक में रोजा रखना ही बेहतर है।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِي أُنزِلَ فِيهِ الْقُرْآنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْهُدَىٰ وَالْفُرْقَانِ فَمَن شَهِدَ مِنكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ وَمَن كَانَ مَرِيضًا أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ يُرِيدُ اللَّهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللَّهَ عَلَىٰ مَا هَدَاكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ {185}

महीना रमज़ान है जिस में कुरान नाज़िल किया गया जो लोगों का रहनुमा है और उसमें रहनुमाई और तमीज़ की रौशन निशानियाँ है तुम में से जो शख़्स इस महीनें में अपनी जगह पर हो तो उसको चाहिए कि रोज़ा रखे और जो

शख़्स बीमार हो या फिर सफ़र में हो तो और दिनों में रोज़े की गिनती पूरी करे अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी करना चाहता है और तुम्हारे साथ सख़्ती करनी नहीं चाहता और ताकि तुम गिनती पूरी करो और ताकि अल्लाह ने जो तुम को राह पर लगा दिया है उस नेअमत पर उस की बड़ाई करो और ताकि तुम शुक्र गुज़ार बनो (१८५)

व्याख्या:- रमजान परहेज का महीना है और इसी महीने में हजरत मोहम्मद ने कुरान-शरीफ बयान करना शुरू किया था और लोगों को संयम के द्वारा शांति पाने का पैगाम दिया। ये एक परिपूर्ण आदेश वाली पुस्तक है जिसको समझना मनुष्य और मानवता के लिए लाभकारी है। पृथ्वी के हर कोने के मनुष्य के लिए पाक-परवरदिगार ने इस उपदेश को आर्शीवाद स्वरूप रमजान की महीनों में दिया। रमजान का महीना हजरत मोहम्मद से पहले भी था और अल्लाह ताला ने इस महीना का उल्लेख करके मनुष्य को अनाज की सुरक्षा और भूखमरी से बचना सिखाया। इस महीने का सही तरीके से पालन करके मनुष्य अपनी दु:ख और कष्ट दूर कर सकते हैं।

पैगाम:- संयम मानव जीवन का एक मुख्य चरित्र है। रमजान का उद्देश्य है मानव समाज को खाद्य भंडार से परिपूर्ण और सुरक्षा प्रदान करना, पृथ्वी का हर मानव अगर एक महीना खाना कम खाये तो पृथ्वी का कोई भी मनुष्य भूखा नहीं मरेगा।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌ أُجِيبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيبُوا لِي وَلْيُؤْمِنُوا بِي لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُونَ {186}

जब मेरे बन्दे मेरा हाल तुमसे पूछे तो मै उन के पास ही हूँ और जब मुझसे कोई दुआ माँगता है तो मै हर दुआ करने वालों की दुआ कुबूल करता हूँ पस उन्हें चाहिए कि मेरा भी कहना माने और मुझ पर ईमान लाएँ (१८६)

व्याख्या:- जब लोग पाक-परवरदिगार के बारे में सवाल करे तब वो जान ले कि पाक-परवरदिगार मानव के बहुत ही करीब (यानी की मानव के अंदर अल्लाह की ज्याति मौजूद है) है और वो हर पुकारने वाले की पुकार सुनता है इस लिहाज से लोगों को चाहिए अल्लाह के रूहानी नियमों को मान कर चले और यही नियम लोगों को सकून और भलाई बक्षेगा।

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلَى نِسَائِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَهُنَّ عَلِمَ اللَّهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُونَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ فَالْآنَ بَاشِرُوهُنَّ وَابْتَغُوا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ وَلَا تُبَاشِرُوهُنَّ وَأَنْتُمْ عَاكِفُونَ فِي الْمَسَاجِدِ تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ فَلَا تَقْرَبُوهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ {187}

ताकि वह सीधी राह पर आ जाए तुम्हारे वास्ते रोज़ों की रातों में अपनी बीवियों के पास जाना हलाल कर दिया गया औरतें तुम्हारी चोली हैं और तुम अल्लाह ने देखा कि तुम करके अपना नुकसान करते तो उसने तुम्हारी तौबा कुबूल की और तुम्हारी ख़ता से दर गुज़र किया पस तुम अब उनसे हम बिस्तरी करो और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है उसे माँगों और खाओ और पियो यहाँ तक कि सुबह की सफेद धारी काली धारी से आसमान पर पूरब की तरफ़ तक तुम्हें साफ नज़र आने लगे फिर रात तक रोज़ा पूरा करो और हाँ जब तुम मस्जिदों में एतेकाफ़ करने बैठो तो उन से हम बिस्तरी न करो ये अल्लाह की हदे हैं तो तुम उनके पास भी न जाना यूँ खुल्लम खुल्ला अल्लाह अपने नेमत लोगों के सामने बयान करता है ताकि वह लोग बचें (१८७)

व्याख्या:- नारी और पुरुष के मध्य नियमानुसार यौन सम्पर्क अल्लाह की प्राकृतिक सुन्दरता है और अल्लाह की प्रकृति अपवित्र नहीं हो सकती, मानव के पाप चरित्र उसे अपवित्र बना देते है। दो मानव के बीच अगर वैध्य प्रेम हो तो उसमें यौन सम्पर्क प्राकृतिक वर्दान स्वरूप गिना जाएगा। इसलिए रोजे के महीनों में अपनी बीवी से यौन सम्पर्क कायम करने की आज्ञा अल्लाह ने दी। औरत और मर्द एक-दूसरे के लिबास है। एक मुकर्रर वक्त तक भूखा रहकर रोजा पूरा करे। मस्जीदों में एतकाफ के वक्त औरतों से यौन सम्पर्क स्थापित न करे क्योंकि एतकाफ मस्जीदों में बैठकर अल्लाह की नेमत का अनुभव करने के लिए मुकर्रर किया गया है, दूसरे दुनियावी कामों के लिए नहीं। ये एक रश्म है जो सिर्फ आध्यात्मिक आदर्शों से ही प्रभावित होती है। इस तरह लोगों को पाप से बचाने के लिए अल्लाह अपनी हिदायत बयां करते है।

पैगाम:- पृथ्वी में किसी-किसी जगह ६ महीने की रात और ६ महीने का दिन होता है और बहुत सी जगाहों में १२-१४ घंटों से ज्यादा और कही-कही इससे भी ज्यादा देर तक सूरज अस्त नहीं होता, इस आयत में ''सफेद धागा काला धागा से जाहिर हो जाये'' कहकर अल्लाह ताला ने कुछ वक्त तक भूखा रहने की निशानदेही की। इस आयत में नारी को पुरूष का लिबास और पुरूष को नारी का लिबास कहा गया है और ये कहकर अल्लाह ताला ने नारी-पुरूष को एक-सा अधिकार प्रदान किया। इस आयत में एक छुपा हुआ पैगाम भी है जिसमें अल्लाह ताला फरमाता है ''सुबह का सफेद धागा स्याह धागा से जाहिर हो जाए, फिर रात तक रोजा पुरा करो''। अगर देखा जाए कि मनुष्य की जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक दिन-रात की निशानदेही होती है। इस लिहाज से रोजा उनके जीवन की हर पल की निशानदेही करती है। यानी जीवन की आखिरी सांस तक मनुष्य संयमी रहे, ये बात नमुमकिन है किसी विशेष महीने में मनुष्य संयमी रहे और अल्लाह के आदेशों का पालन करे और बाकी दिनों में गलत काम करता रहे। जहां पर छः महीना के दिन और छः महीने की रात होती है वहां पर मनुष्य किसी तरह इस तरीके के रोजे का पालन करेगा। रोजे का लक्ष्य है मानव चरित्र की पवित्रता को बरकरार रखना।

وَلا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوا فَرِيقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالإِثْمِ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ {188}

और आपस में एक दूसरे का माल नाजायज़ न खाओ और न माल को हुक्काम के यहाँ झोंक दो ताकि लोगों के माल में से कुछ हाथ लगे नाहक़ खुद बुर्द कर जाओ हालाकि तुम जानते हो (१८८)

व्याख्या:- अल्लाह हिदायत फरमाता है कि दूसरों का माल हड़पना पूरी तरह नजायज है और रिश्वत देकर या रिश्वत लेकर किसी के कुछ माल की हेरा-फेरी करना बिलकुल नजायज है। हकीकत हर मानव समझता है और जो इसे छुपाने की चेष्टा करते है अपने लक्ष्य से, वो पथभ्रष्ट हो जाते है।

पैगाम:- दूसरों का माल लेना पूरी तरह हराम (वर्जित) है इसमें सत्य और ना सत्य का कोई मतलब नहीं अगर कोई बेइमानी करता है तो यकीनन बेइमान लोगों के साथ बेइमानी करना सभ्य लोगों का असूल नहीं। इस आयत में एक विशेष उपदेश है और वो ये है कि मनुष्य अपनी मोह-माया और लालच के चक्रव्युह में आकर पाप करते है तब उसे दूसरों की मजबूरी या तकलीफों की परवाह नहीं होती और वो सिर्फ अपने बारे में सोचता रहता है और दूसरो का माल ना-हक हड़पने की चेष्टा करता रहता है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الأَهِلَّةِ قُلْ هِيَ مَوَاقِيتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَن تَأْتُوا الْبُيُوتَ مِن ظُهُورِهَا وَلَكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقَى وَأْتُوا الْبُيُوتَ مِنْ أَبْوَابِهَا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ {189}

तुम से लोग चाँद के बारे में पूछते है तुम कह दो कि उससे लोगों के अम्र और हज के अवक़ात मालूम होते है और ये कोई भली बात नही है कि घरो में पिछवाड़े से फाँद के आओ बल्कि नेकी उसकी है जो परहेज़गारी करे और घरों में आना हो तो उनके दरवाज़ों की तरफ से आओ और अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम मुराद को पहुँचो (१८९)

व्याख्या:- पहले जमाने में लोगों के पास घड़ी नहीं होती थी तब मानव चाँद और सूरज को देखकर वक्त का अंदाजा और दिनों की गिनती करते थे। उस वक्त चाँद सूरज की वैज्ञानिक सत्य का गहरा इल्म परवरदिगार ने लोगों को देना मुनासिब नहीं समझा और इस लिहाज से जब लोगों ने चाँद के बारे में सवाल किये (रसूलों से) तब अल्लाह के हुक्म से रसुल ने सिर्फ लोगों को इबादत का वक्त और हज के मौसम के बारे में चाँद के मुतल्लिक बातें की लोग ईमान के घर में सीधे और सच्चे तरीके से दाखिल हो तो ही बेहतर है यानी सच्चाई को घूमाकर पेश करना अच्छी बात नहीं, ईमान वाला वो है जो नेकी और सच्चाई को सीधे तौर पर कबूल करे क्योंकि इसमें ही मानव के लिए फायदा और कामयाबी है।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَكُمْ وَلا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ {190}

और जो लोग तुम से लड़े तुम अल्लाह की राह में उनसे लड़ो और ज़्यादती न करो अल्लाह ज़्यादती करने वालों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता (१९०)

व्याख्या:- शान्ति बिगाड़ने वाले और पापियों के साथ शान्ति चाहने वाले (अल्लाह की राह) और संयमी लोग जदोजहद करे ताकि समाज में शान्ति का संतुलन बरकरार रहे और अल्लाहताला ज्यादती करने वालो को न पसंद करता है। पवित्र लोग धर्म के प्रतिष्ठा के लिए आधर्मियों से युद्ध करते है।

وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأَخْرِجُوهُم مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوكُمْ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا تُقَاتِلُوهُمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتَّى يُقَاتِلُوكُمْ فِيهِ فَإِن قَاتَلُوكُمْ فَاقْتُلُوهُمْ كَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ {191}

और तुम उन को जहाँ पाओ मार ही डालो और उन लोगों ने जहाँ से तुम्हें शहर बदर किया है तुम भी उन्हें निकाल बाहर करो और फितना परदाज़ी खूँरेज़ी से भी बढ़ के है और जब तक वह लोग मस्जिद हराम के पास तुम से न लड़े तुम भी उन से उस जगह न लड़ो पस अगर वह तुम से लड़े तो बेखटके तुम भी उन को क़त्ल करो काफ़िरो की यही सज़ा है (१९१)

व्याख्या:- सकून बिगाड़ने वाले लोगों की सारी शैतानी चेष्टों को कमजोर बनाने के लिए ईमान वाले सभ्य लोग लड़े और अगर जरूरत पड़े तो उन्हें समाज से निकाल कर बाहर कर दे और फसाद कत्ल से भी सख्त पाप है और मजहब के नाम पर फसाद न करो (इस आयत में ''मस्जिद-ए-हराम'' तमाम सभ्य लोगों के मजहब की निशानदेही करती है) अगर कोई मजहब के नाम पर फसाद करे तो यकीनन सभ्य लोग उसे सबक दे उनका यही बदला है।

पैगाम:- कुरान जब हर दौर के लिए परिपूर्ण हिदायत है तो इस लिहाज से इस आयत के साथ जुड़ा हुआ एतिहासिक आधार कोई गहरा मतलब खड़ा नहीं कर सकता। इस्लामिक इतिहास के मुताबिक मुसलमान मक्का में कमजोर और बिखरे हुए होने के वजह से गैर मुसलमान से लड़ाई करना मना था मगर जब मदिने में मुसलमान ताकतवर हो गये तो फिर लड़ाई की इजाजत मिल गई। शुरू-शरू में उन लोगों से लड़ते जो मुसलमानों से लड़ने में पहल करते इसके बाद गैर-मुसलमानों के खिलाफ लड़ाई शुरू कर दी। रसूल ने फरमाया कि ख्यानत, बदएहदी और मकतूल के टूकड़े न करो, बच्चों, औरतों और गिरजा में इबादत करने वालों का भी कत्ल करना मना किया इस एतिहासिक आधार पर देखा जाय तो यह आयत सिर्फ उस वक्त तक ही परिपूर्ण थी इस एतिहासिक आधार से हजरत मोहम्मद की औरतों, बच्चों और गिरजा में इबादत करने वालों की हिफाजत देना का पैगाम भी मिलता है और ईमान वाले लड़ाई सिर्फ अपने असूल के लिए ही करते है चाहे वो कमजोर हो या शक्तिशाली। ये युद्ध पाप-पुण्य के मध्य है, किसी सम्प्रदायिक फसाद का आदेश नहीं, इस आयत में एक विशेष रहस्य भी है, अगर पापी ये बात सोचे कि अगर वो ना-हक किसी की हत्या करेंगे तो उन्हें उसका बदला मिलेगा। इस आयत के द्वारा पापियों को डराया गया है कि वो संयमी लोगो के साथ अत्याचार न करें। फसाद, रक्तपात और हत्या गैर-इस्लामी नियम है। ईमान वाले कभी भी विचारों के आधार या आदर्शों पर फसाद या हत्या नहीं करते। उनका काम है सिर्फ पाप के विरूद्ध लड़ना। इसलिए कुरान-शरीफ में साफ और स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि हर कोई अपने-अपने अमाल और धर्म का उत्तरदायी है। सुरा १०९।

فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {192}

फिर अगर वह लोग बाज़ रहें तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१९२)

व्याख्या:- अगर अशान्ति और दंगा फैलाने वाले लोग अपनी हरकतों से बाज आ जाय तो अल्लाह की तरफ से उन्हें सुख-शान्ति प्राप्त होगी।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ لِلَّهِ فَإِنِ انتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظَّالِمِينَ {193}

और उन से लड़े जाओ यहाँ तक कि फ़साद बाक़ी न रहे और सिर्फ़ अल्लाह ही का दीन रह जाए फिर अगर वह लोग बाज़ रहे तो उन पर ज़्यादती न करो क्योंकि ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती नहीं (१९३)

व्याख्या:- सकून बिगाड़ने वाले लोगों के साथ लड़ाई जारी रखो जबतक समाज में पूरी तरह शांति स्थापित न हो जाय अगर गुनहगार लोग पाप करने से रूक जाय तो ईमान वालों का कर्त्तव्य है कि उन्हें छोड़ दे और उनपर अत्याचार न करे।

पैगाम:- दिन के बारे में कोई जबरदस्ती नही २/१५६

तुम्हारे लिए तुम्हारा दिन और मेरे लिए मेरा १०९/६

इन दोनों आयतों के आधार पर मजहब के नाम पर लड़ाई कतयी जायज नही है इस लिहाज से इन आयतों में लड़ाई सिर्फ और सिर्फ गुनहगार और फसाद करने वालों के खिलाफ ही जायज है। अल्लाह के नियम बनावटी नही है और ये कभी भी वक्त के साथ परिवर्तित नही होते।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمَاتُ قِصَاصٌ فَمَنِ اعْتَدَى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدَى عَلَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ {194}

हुरमत वाला महीना हुरमत वाले महीने के बराबर है सब हुरमत वाली वस्तुं एक दूसरे के बराबर है पस जो शख़्स तुम पर ज़्यादती करे तो जैसी ज़्यादती उसने तुम पर की है वैसी ही ज़्यादती तुम भी उस पर करो और अल्लाह से डरते रहो और खूब समझ लो कि अल्लाह परहेज़गारों का साथी है (१९४)

व्याख्या:- सभ्यता, संयम, प्रेम और शांति चाहने वाले लोग आपस में एक एक-दूसरे का सम्मान और हिफाजत करना अपना कर्त्तव्य समझते है, अपनी हिफाजत के लिए ज्यादती करने वाले लोगों के साथ ज्यादती करो और अल्लाह से डरते रहा करो और जान रखो कि अल्लाह संयमी के साथ है।

पैगाम:- ज्यादती करने वाले के साथ अगर कोई ज्यादती करे तो ईमान वालों और ज्यादती करने वालों में क्या फर्क रह जायेगा।

इस आयत से हमें तीन पैगाम मिलते है:-

१: ज्यादती करने वाला अगर सोचे कि जो वह कर रहा है वही उसे मिलेगा तो वह यकीनन ज्यादती करने से डरेगा।

२: आयत के आखिर में संयम का जिक्र किया ताकि संयमी ज्यादती न करे और सब्र करे।

३: ''संयम'' ही अल्लाह का पसंदीदा असूल है और संयमियों के साथ अल्लाह है। जब सब कुछ अल्लाह के अधिकार में है और वो सब कर सकते है तो ज्यादती करने वालों के साथ अत्याचार करने के हुकुम में जो रहस्य है उस पर विचार करना बहुत जरूरी है। अगर अत्याचार पर अत्याचार होता रहे तो समाज में सुख-शान्ति का कोई अस्तित्व नही रहेगा। ये आयत इन पापियों के लिए अल्लाह की तरफ से एक शिक्षा है। सत्य तो ये है जिसका दिल प्रेम से परिपूर्ण हो और मस्तिक्ष सत्यता और अल्लाह की राह पर हो तो वो किसी पर अत्याचार नहीं कर सकता। ईमान वाले कि इस चरित्र को दुर्बल समझकर पापी अगर अत्याचार करे तो अल्लाह इसका बदला किसी न किसी तरह जरूर लेगा।

وَأَنفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ وَأَحْسِنُوا إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ {195}

और अल्लाह की राह में खर्च करो और अपनी जान हलाकत मे न डालो और एहसान करो बेशक अल्लाह एहसान करने वालों को दोस्त रखता है (१९५)

व्याख्या:- लोगों को चाहिए कि अल्लाह की राह में अपना माल और मेहनत खर्च करे और अपने सभ्य अमाल से अपने आपको और समाज को फायदा दे अल्लाह लोगों को फायदा देने वालों को दोस्त रखता है ।

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّى يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ فَمَنْ كَانَ مِنكُم مَّرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِّن رَّأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِّن صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ فَإِذَا أَمِنتُمْ فَمَن تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ذَٰلِكَ لِمَن لَّمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ {196}

और सिर्फ अल्लाह ही के वास्ते हज और उमरा को पूरा करो अगर तुम बीमारी वग़ैरह की वजह से मजबूर हो जाओ तो फिर जैसी कुरबानी मयस्सर आये और जब तक कुरबानी अपनी जगह पर न पहुँच जाये अपने सर न मुँडवाओ फिर जब तुम मे से कोई बीमार हो या उसके सर में कोई तकलीफ हो तो रोज़े या खैरात या कुरबानी है

पस जब मुतमइन रहों तो जो शख़्स हज तमत्तो का उमरा करे तो उसको जो क़ुरबानी मयस्सर आये करनी होगी और जिस से क़ुरबानी ना मुमकिन हो तो तीन रोज़े ज़ामानए हज में और सात रोज़े जब तुम वापस आओ ये पूरा दहाई है ये हुक्म उस शख़्स के वास्ते है जिस के लड़के बाले मस्जिदुल हराम के बाशिन्दे न हो और अल्लाह से डरो और समझ लो कि अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब वाला है (१९६)

व्याख्या:- सभ्य, संयम, शांति और प्रेम, इस प्रतिज्ञा को हज कहा गया (यानी हज उमराह) और यकीनन लोग उसे पूरा करे और अगर इस रास्ते पर रूकावट आये तो अपने कर्मों के द्वारा उस पर काबू पाए। अपनी उत्वाकांक्षा, लालच, ईर्ष्या और हवस पर जब तक काबू न पाए (यानी सर मूंडाना) तब तक मानव के मिस्तिक्ष की गंदगी साफ नही होगी। यकीनन मानव के दरमियान जो गुनहगार (यानी दिमागी तौर पर बिमार) है और जिनके सर पर अशान्ति का डर छाया हुआ हो तो अपने आपको सुधारने के लिए परहेज करे और खैरात (दान-पुण्य) दे और साथ में अपनी उत्वाकांक्षा, ईर्ष्या, लालच और हवस को क़ूरबान कर दे जब उनको शान्ति प्राप्त हो जाए तो वो अपनी इस हालत को बरकरार रखे।

पैगाम:- इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह के लिए ''हज और उमराह पूरा करो'' -- मतलब अल्लाह हज और उमराह का मोहताज है?नहीं! अल्लाह के लिए मानव जो काम करता है वो बिलावास्ता अपने लिए ही करता है सिर्फ इन पर अल्लाह का नाम होने पर विश्वास, श्रद्धा और सम्मान बढ़ जाता है। हज और उमराह एक चिह्न है सभ्य, संयम, प्रेम और सुख-शान्ति का। कुरान-शरीफ समस्त मानव और हर समय के लिए परिपूर्ण है। इस लिहाज से आज के युग में गरीब है या गैर-मुस्लमान है क्या उन लोगों के लिए ये आयत नहीं है? अल्लाह के दरबार में न इंसाफी नहीं होती और इस आयत का रहस्य और लक्ष्य मानव को सभ्य और संयमी बनने की शिक्षा देती है, **याद रखें कुरान शरीफ दुनिया के हर मानव के लिए परिपूर्ण पुस्तक है।**

الْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَاتٌ فَمَن فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ اللَّهُ وَتَزَوَّدُوا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوَى وَاتَّقُونِ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ {197}

हज के महीने तो मालूम हैं पस जो शख़्स उन महीनों में अपने ऊपर हज लाज़िम करे तो न औरत के पास जाए न कोई और पाप करे और न झगड़े और नेकी का कोई सा काम भी करों तो अल्लाह उस को खूब जानता है और ज़ाद राह मुहिय्या करो और सब मे बेहतर ज़ाद राह परहेज़गारी है और ऐ अक्लमन्दों मुझ से डरते रहो (१९७)

व्याख्या:- प्राकृतिक तोर पर मानव को जितनी इजाजत है वो उस हद से आगे न बढ़े। यानी उसका वक्त और दायरा मुकर्रर किया हुआ है और ये उस वक्त की बेहतरीन फैमली प्लानिंग की हिकमत अमली थी। उस वक्त यानी तीन महीनों में अगर लोग अपनी बीवियों से अलग रहे तो पैदाइश की अनुपादक काफी कम हो जाएगी।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ فَإِذَا أَفَضْتُم مِّنْ عَرَفَاتٍ فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِندَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ وَاذْكُرُوهُ كَمَا هَدَاكُمْ وَإِن كُنتُم مِّن قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّالِّينَ {198}

इस में कोई इल्ज़ाम नहीं है कि तुम अपने परवरदिगार के फज़ल की ख़्वाहिश करो और फिर जब तुम अरफात से चल खड़े हो तो मशअरुल हराम के पास अल्लाह का जिक्र करो और उस की याद भी करो तो जिस तरह तुम्हे बताया है अगरचे तुम इसके पहले तो गुमराहो से थे (१९८)

व्याख्या:- मानव को अल्लाह का फजल तलाश करना पाप नहीं। तहकीकत और तलाश किसी वस्तु की भी हो अल्लाह ने प्राकृतिक तौर पर मानव को दी है और अल्लाह के हिदायत के बदौलत तमाम प्राकृतिक वस्तुओं की हकीकत की मालूमात मानव को नसीब होती है। इससे पहले मानव उन तमाम वस्तुओं से न वाकीफ था जो आज जाहिर है।

पैगाम:- मानव सभ्यता में आज तक जो अविष्कार हुए वो अल्लाह की मर्जी से ही हुए और उन सारे अविष्कारों के लिए मानव को समस्त अनुसंधान और खोज से गुजरना पड़ा। मानव सभ्यता के आरंभ से पहले जंगली जीवन जीते

थे, दूसरे जानवरों की तरह। आज जो तथ्य मानव के पास है वो पहले नहीं था और यही इस आयत का उद्देश्य है।

ثُمَّ أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ {199}

फिर जहाँ से लोग चल खड़े हों वहीं से तुम भी चल खड़े हो और उससे मग़फिरत की दुआ माँगो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१९९)

व्याख्या:- फिर मानव इस बुनियाद को पहचानते है जो मानव सभ्यता की शुरूवात है और यकीनन अल्लाह बक्षने वाला मेहरबान है।

पैगाम:- हर अन्त के बाद एक नया आरंभ होता है। सृष्टि के नियमानुसार परिवर्तन आवश्यक है और जिसे मानव जन्म-मृत्यु कहते है और कुरान-शरीफ में इन नियमों को ''कयामत यानी प्रलय'' कहा गया है।

فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا فَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ {200}

फिर जब तुम अरकाने हज बजा ला चुको तो तुम इस तरह ज़िक्रे अल्लाह करो जिस तरह तुम अपने बाप दादाओं का ज़िक्र करते हो बल्कि उससे बढ़ कर के फिर बाज़ लोग ऐसे है जो कहते है कि ऐ मेरे परवरदिगार हमको जो पृथ्वी ही में दे दे हालाकि आख़िरत में उनका कुछ हिस्सा नहीं (२००)

व्याख्या:- जब कोई वस्तु मानव अविष्कार करे तो उसे अल्लाह की देन समझकर अल्लाह की स्तुति करे। कोई-कोई मनुष्य अपने खुदगर्जी के सबब अपने लिए ही सारे काम करते है यकीनन उसे आखिरी में पीड़ा का अभिश्राप मिलेगा।

وَمِنْهُم مَّن يَقُولُ رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ {201}

और बाज़ बन्दे ऐसे है कि जो दुआ करते है कि ऐ मेरे पालने वाले मुझे पृथ्वी में नेअमत दे और आख़िरत में सवाब दे और दोज़ख़ की बाग से बचा (२०१)

व्याख्या:- और कोई मानव अन्त को सबक के तौर पर लेकर सभ्यता और संयम को अपनाते है वो लोग अशान्ति के प्रकोप से अल्लाह की तरफ से मुक्ति पाते है।

أُولَٰئِكَ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ {202}

यही वह लोग है जिनके लिए अपनी कमाई का हिस्सा चैन है और अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (२०२)

व्याख्या:- इबादत मानव के अमाल की बुनियाद पर मुकम्मिल होती है और सारे हिसाब-किताब का मालिक अल्लाह है और सुख-शान्ति मानव को अपने कर्मफल और अल्लाह की आशीर्वाद से प्राप्त होती है।

وَاذْكُرُوا اللَّهَ فِي أَيَّامٍ مَّعْدُودَاتٍ فَمَن تَعَجَّلَ فِي يَوْمَيْنِ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ وَمَن تَأَخَّرَ فَلَا إِثْمَ عَلَيْهِ لِمَنِ اتَّقَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ {203}

और इन गिनती के चन्द दिनों तक अल्लाह का ज़िक्र करो फिर जो शख़्स जल्दी कर बैठे और दो ही दिन में चल खड़ा हो तो उस पर भी पाप नहीं है और जो ठहरा रहे उस पर भी कुछ पाप नही लेकिन यह रियायत उसके वास्ते है जो परहेज़गार हो, और खुदा से डरते रहो और यक़ीन जानो कि एक दिन तुम सब के सब उसकी तरफ क़ब्रों से उठाए जाओगे (२०३)

व्याख्या:- अल्लाह किसी की इबादत का मोहताज नहीं मानव अपने सुख-शान्ति और इतमीनान के लिए अल्लाह को याद करते है। इसलिए अल्लाह की इबादत में कम या ज्यादा करना कोई पाप नहीं और जिससे जितनी हो सके वो उतनी ही इबादत करे। असली इबादत संयम है और संयमी ही पाप और उसके परिणाम से डरते है। मृत्यु के बाद हर प्राणी को सृष्टि में ही विलीन हो जाना है।

पैगाम:- इस आयत में ''दो दिन'' का उल्लेख किया गया है और इसका मतलब है ''शान्ति या अशान्ति के दिन''। अल्लाह के नियमों पर कायम रहे और यही है सच्ची इबादत।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يُعْجِبُكَ قَوْلُهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللَّهَ عَلَى مَا فِي قَلْبِهِ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ {204}

बाज़ लोग मुनाफिक़ीन से ऐसे भी है जिनकी चिकनी चुपड़ी बातें दुनयावी ज़िन्दगी में तुम्हें बहुत भाती है और वह अपनी दिली प्रेम पर अल्लाह को गवाह मुक़र्रर करते है हालाँकि वह तुम्हारे दुश्मनों में सबसे ज़्यादा झगड़ालू है (२०४)

व्याख्या:- कुछ लोग ऐसे भी होते है जो दुनियावी लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सच्चाई को दिल में छुपाकर और अल्लाह को गवाह बनाकर झुठ बोलते है और यही लोग झगड़ालू है और अपने रहन-सहन से ऐसा दिखाते है कि वो बहुत सुख, शान्ति, और लोगों की सेवा में है, मगर अन्दर से चोर, बेईमान और धोखेबाज होते है।

وَإِذَا تَوَلَّى سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ {205}

और जहाँ तुम्हारी प्रेम से मुँह फेरा तो इधर उधर दौड़ धूप करने लगा ताकि मुल्क में फ़साद फैलाए और ज़राअत और मवेशी का सत्यानास करे और अल्लाह फसाद को अच्छा नहीं समझता (२०५)

व्याख्या:- ऐसे लोग जब सभ्य और सकून वाले समाज में जाते है और फसाद फैलाने की और मानव के अच्छे अमाल यानी ''अच्छी फसल और बच्चों'' को बिगाड़ कर वंश बिगाड़ते है और अल्लाह को फसाद से नफरत है।

पैगाम:- मजहब के नाम पर बच्चों को दुनियावी तालिम न देकर नफरत की तालिम देना नसल को जहरीला बना देती है। बच्चों को नेकी और बदी की शिक्षा देना ही सही रुहानी तालिम है और इसके सही-गलत का फैसला अल्लाह करता है, लोगों पर इसकी कोई जिम्मेदारी नहीं, अल्लाह ही खुद सत्य को पृथ्वी में कायम रखता और फैलाता भी है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ {206}

और जब कहा जाता है कि अल्लाह से डरो तो उसे ग़ुरुर पाप पर उभारता है बस ऐसे कम्बख़्त के लिए जहन्नुम ही काफ़ी है और बहुत ही बुरा ठिकाना है (२०६)

व्याख्या:- जब घमंडी और जिद्दी लोगों को अल्लाह से डरा कर उनकी हिदायत को अपनाने के लिए कहा जाता है तब वो लोग अपनी जिद से इसे इनकार करते है और अपने ख्यालत पर कायम रहते है, और बदसकूनी के जहन्नम जैसी बदतरीन जगह में उनका ठिकाना है।

पैगाम:- अपने आपको और अपने विचारों को चाहे वो जितना भी झुठा क्यों न हो उसे अच्छा और सच्चा साबित करने के लिए कुछ अहंकारी मनुष्य अपनी ही तारीफ खुद से करने लगते है। मगर प्रकृति का नियम ये है कि जो वास्तव में अच्छा और सच्चा होता हैं और सत्यता पर कायम रहता है उसे अपनी तारीफ खुद करने की जरूरत नहीं होती। प्रकृति इसका परिचय और पहचान समाज को दे देती है।

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَاللَّهُ رَؤُوفٌ بِالْعِبَادِ {207}

और लोगों में से अल्लाह के बन्दे कुछ ऐसे हैं जो ख़ुदा की प्राप्त करने की ग़रज़ से अपनी जान तक बेच डालते हैं और अल्लाह ऐसे बन्दों पर बड़ा ही शफ़्क़त वाला है (२०७)

व्याख्या:- और कुछ लोग ऐसे भी है जो अल्लाह के नियमों को कायम (यानी सकून वाला समाज) रखने के लिए अपनी जान तक कुरबान कर देते है ऐसे लोगों पर अल्लाह की रहमत है और उसे अपनी तारीफ की जरूरत नहीं पड़ती।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ {208}

ईमान वालों तुम सबके सब एक बार इस्लाम में दाख़िल हो जाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो वह तुम्हारा यक़ीनी ज़ाहिर ब ज़ाहिर दुश्मन है (२०८)

व्याख्या:- सभ्य और संयमी लोगों को अल्लाह पूरी तरह अपने नियमों को ग्रहण करने की और पाप से बचने की हिदायत फरमाते है और शैतान मानव का खुला दुश्मन है। सभ्य, संयम, प्रेम, मानवता और शान्ति को पूरी तरह से अपनाएं तथा अहंकार और नफरत को पूरी तरह से अपने दिलो-दिमाग से निकाल दें। अहंकार, ईर्ष्या, लालच, घृणा

और हवस मनुष्य का खुला दुश्मन है जो मनुष्य और मानव समाज की शान्ति को बर्बाद कर देता है।

فَإِن زَلَلْتُم مِّن بَعْدِ مَا جَاءتْكُمُ الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {209}

फिर जब तुम्हारे पास रौशन दलीले आ चुकी उसके बाद भी डगमगा गए तो अच्छी तरह समझ लो कि अल्लाह ग़ालिब और तदबीर वाला है (२०९)

व्याख्या:- कुछ लोग अल्लाह की हिदायत को महसूस करने के बाद भी गुनाह करते है। जान लो अल्लाह हर चीज पर कादिर है और हिकमत वाला है।

पैगाम:- अल्लाह के अनुकंपा से उनके आदर्शों और सृष्टि के कुछ नियम वैज्ञानिकों द्वारा प्रमाणित हो चुके है और मनुष्य के सामने अल्लाह का अनंत, अमर और अजय चरित्र प्रमाण हो चुका है। जब अणु-प्रमाणु और उसकी शक्ति के बारे में अल्लाह ने ज्ञान दिया और उसके साथ-साथ मानव सभ्यता और समाज के लिए जो भी आदेश है वो भी समय के साथ-साथ मानव के नजर के सामने आ चुके है। ज्ञानी और पहचानने वाली नजर उसे ठीक पहचान लेती है।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلاَّ أَن يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلآئِكَةُ وَقُضِيَ الأَمْرُ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الأُمُورُ {210}

क्या वह लोग इसी के मुन्तज़िर है कि सफेद बादल के साय बानो की आड़ में अज़ाबे अल्लाह और अज़ाब के फ़रिश्ते उन पर ही आ जाए और सब झगड़े चुक ही जाते हालाँकि आख़िर कुल उमुर ख़ुदा ही की तरफ रुजू किए जाएँगे (२१०)

व्याख्या:- अल्लाह गयब है फिर भी वो सबके दरमियान मौजूद रहकर सारे काम अंजाम देते है, पृथ्वी की तमाम हलचल अल्लाह के बगैर पूरी नही हो सकती और हर काम अल्लाह के तरफ ही लौटते है। अदृश्य शक्ति यानी खुदा को न समझते हुए कुछ नादान मनुष्य ये समझते है कि आकाश के बादलों के सफेद साये में से खुदा मनुष्य के मध्य उपस्थित होगा लेकिन समय ने मनुष्य की इन सारी गलत फहमियों को दूर किया (अल्लाह की मर्जी से)। प्रमाणु के अन्दर की शक्ति और उसकी बनावट अविष्कार होने के बाद या मृत्यु के बाद या ध्वंश होने के बाद हर वस्तु को प्रकृति में विलीन होना पड़ता है। हर पहलू अल्लाह की शक्ति के बगैर न तो बन सकता है और न तो ध्वंश हो सकता है।

سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمْ آتَيْنَاهُم مِّنْ آيَةٍ بَيِّنَةٍ وَمَن يُبَدِّلْ نِعْمَةَ اللَّهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءتْهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ {211}

बनी इसराइल से पूछो कि हम ने उन को कैसी कैसी रौशन निशानियाँ दी और जब किसी शख़्स के पास अल्लाह की नेअमत आ चुकी उस के बाद भी उस को बदल डाले तो बेशक़ अल्लाह सख़्त अज़ाब वाला है (२११)

व्याख्या:- बनी इसराइल को अल्लाह ने रौशन हिदायत बक्षी लेकिन कुछ लोगों ने उनकी सच्चाई को बदल कर लोगों के सामने पेश किया और अल्लाह के अभिश्राप के हकदार बने।

पैगाम:- मानव के अन्दर ही अल्लाह ताला ने अपने अस्तित्व के साथ-साथ शैतानी अस्तित्व को भी बरकरार रखा (आयत)। अल्लाह ने शैतान को कयामत तक मोहलत बक्ष रखी और ये भी अल्लाह की मर्जी से है, इस तरह अल्लाह ने मानव जीवन को भी विरानियत से निजात दी और रंग-बिरंगी जीवन दी।

زُيِّنَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُونَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ اتَّقَوا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَاللَّهُ يَرْزُقُ مَن يَشَاء بِغَيْرِ حِسَابٍ {212}

जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उन के लिये पृथ्वी की ज़रा सी ज़िन्दगी खूब अच्छी दिखायी गयी है और इमानदारों से मसखरापन करते है हालाँकि क़यामत के दिन परहेज़गारों का दरजा उनसे बढ़ चढ़ के होगा और अल्लाह जिस को चाहता है बे हिसाब रोज़ी अता फरमाता है (२१२)

व्याख्या:- अल्लाह के असूलों को न मानने वाले लोग सकून के बजाये ऐशो-आराम चाहने में ही उलझ जाते है और यही लोग सभ्य, परहेगारी और सकून चाहने वाले लोगों की जीवन का मजाक उड़ाते है हाला कि आखिरी खुशी सिर्फ संयमी को ही प्राप्त है।

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً فَبَعَثَ اللَّهُ النَّبِيِّينَ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ وَأَنزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ وَمَا اخْتَلَفَ فِيهِ إِلاَّ الَّذِينَ أُوتُوهُ مِن بَعْدِ مَا جَاءتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ فَهَدَى اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا لِمَا اخْتَلَفُوا فِيهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهِ وَاللَّهُ يَهْدِي مَن يَشَاء إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ {213}

सब लोग एक ही दीन रखते थे अल्लाह ने नजात से ख़ुश ख़बरी देने वाले और अज़ाब से डराने वाले पैग़म्बरों को भेजा और इन पैग़म्बरों के साथ सच्ची किताब भी नाज़िल की ताकि जिन बातों में लोग झगड़ते थे किताबे ख़ुदा फ़ैसला कर दे और फिर अफ़सोस तो ये है कि इस हुक्म से इख़्तेलाफ किया भी तो उन्हीं लोगों ने जिन को किताब दी गयी थी और वह भी जब उन के पास अल्लाह के साफ हक आ चुके उसके बाद और वह भी आपस की शरारत से तब अल्लाह ने अपनी मेहरबानी से ईमानदारों को वह राहे सत्य दिखा दी जिस में उन लोगों ने इख़्तेलाफ डाल रखा था और ख़ुदा जिस को चाहे राहे रास्त की हिदायत करता है (२१३)

व्याख्या:- मानव के दरमियान कोई उम्मति या सम्प्रदाय नहीं है जो लोगों ने मजहब के नाम पर बना रखे है। लोगों ने अपने अलग-अलग विचारधारा को सम्प्रदाय का रूप दिया। अल्लाह ने रसूलों के द्वारा अपनी हिदायत भेज कर पीढ़ी दर पीढ़ी से मानव के दरमियान उम्मत या सम्प्रदाय के विचारधारा को बातिल ठहराया। हर मानव के जीने का तरीका और विचारधारा मुखतलीफ होते है, चाहे वो सगे भाई-बहन ही क्यों न हो, इस लिहाज से अगर उम्मति या सम्प्रदाय का अस्तित्व होने लगे तो हर मानव के साथ एक सम्प्रदाय की उत्पत्ति होगी। हर कोई अपने आपको अफजल साबित करने की चेष्टा में फसाद करेगा। अल्लाह ने किताबों और रसूलों के द्वारा लोगों के इखतिलाफों का फैसला किया और सम्प्रदाय तथा उन्मत्ति वाले विचारधारा बातिल किये। अल्लाह की सच्ची हिदायत आने के बाद भी लोग आपसी इखतिलाफ में उलझ कर रह गये। इसलिए अल्लाह ने सभ्य, संयमी और ईमान वाले लोगों को इखतिलाफ के बावजूद भी सत्य पर कायम रहने की हिदायत दी और अल्लाह जिसे चाहे सीधी राह दिखाये।

पैगाम:- गौर करने वाली बात यह है कि इस आयत में अल्लाह ताला ने खुशखबरी के साथ-साथ डरने की भी बात की है। खुशखबरी से मनुष्य खुश होता है और डर से उसे कष्ट, तो डरने की बात क्यों?क्या अल्लाह मनुष्य को कष्ट में देखना चाहता है?नहीं! ये डर एक चिह्न है पाप के परिणाम का और मनुष्य को इस प्रमाण से डरने के लिए कहा जा रहा है। सारे धार्मिक भेदभाव का निर्णय है कुरान-शरीफ इसलिए कुरान-शरीफ में सिर्फ दो ही सम्प्रदाय का जिक्र है। इसलिए कुरान शरीफ को मानव सभ्यता के लिए फैसला कहा गया है। (६४/२)

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُم مَّثَلُ الَّذِينَ خَلَوْا مِن قَبْلِكُم مَّسَّتْهُمُ الْبَأْسَاء وَالضَّرَّاء وَزُلْزِلُوا حَتَّى يَقُولَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ مَتَى نَصْرُ اللَّهِ أَلا إِنَّ نَصْرَ اللَّهِ قَرِيبٌ {214}

क्या तुम ये ख़्याल करते हो कि बेहश्त में पहुँच ही जाओगे हालांकि अभी तक तुम्हे अगले ज़माने वालों की सी हालत नहीं पेश आयी कि उन्हें तरह तरह की तक़लीफों और बीमारी ने घेर लिया था और ज़लज़ले में इस क़दर झिंझोड़े गए कि आख़िर पैग़म्बर और ईमान वाले जो उन के साथ थे कहने लगे देखिए अल्लाह की मदद कब है देखो ख़ुदा की मदद यक़ीनन बहुत क़रीब है (२१४)

व्याख्या:- कुछ लोग यह समझते है कि कुछ रस्में अदा करके जन्नत प्राप्त कर लेंगे हाला कि ऐसे लोगों के सब्र का इम्तिहान मुकम्मिल नहीं हुआ जो उससे पहले के लोगों को मिशाल के तौर पर अल्लाह ने दिखाया वह बिमारियों और पीड़ा से झिंझोरे गये । कुछ मानव ये समझते है कि प्रार्थना की कुछ पद्धति को मानने से स्वर्ग प्राप्त हो सकता है लेकिन उसे अपने पूरवजों से शिक्षा प्राप्त करने के लिए कहा गया। सभ्य काम का नतीजा ढूँढ़ना और इस नतीजे की ख्वाहिश में अंधे होकर जल्दबाजी में अपने दिमाग को परेशान करना अपनी ही कष्ट को मोल लेना है।

पैगाम:- संयम और सब्र ईमान का एहम स्तम्भ है मगर मानव चरित्र के आधार पर किसी भी मुसीबत में वो डर जाता है। यहां तक कि खुद रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद ने अल्लाह की मदद की बात की थी। दु:ख, कष्ट और सुख-शान्ति मानव जीवन का मुख्य अंग है। इस हिसाब से मानव के चरित्र का आधार मानव की खुद की इच्छा ही है और इस इच्छा को दु:ख कष्ट प्रभावित न करे इस बात की पुष्टि इस आयत में की गयी है और कुरान शरीफ मानव के बीच का हर फैसला कर सकता है।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلْ مَا أَنفَقْتُم مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ {215}

तुमसे लोग पूछते है कि हम अल्लाह की राह में क्या खर्च करें जवाब दो कि तुम अपनी सभ्य कमाई से जो कुछ खर्च करो तो वह तुम्हारे माँ बाप और क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजो और परदेसियों का सत्य है और तुम कोई सभ्य सा काम करो खुदा उसको ज़रुर जानता है (२१५)

व्याख्या:- रसुल से लोग पूछते है क्या खर्च करे?रसूल ने जवाब दिया मानव की मेहनत से कमाई हुई हर चीज जो उसके मां-बाप रिश्तेदारों, यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफिरों के लिए और मानव जो अच्छे काम करता है वो अल्लाह की इल्म में है यानी मानव के सारे अच्छे काम बिलावास्ता उसी की तरफ ही लौट जाते है।

पैगाम:- इस आयत में माल खर्च करने से मुराद, सिर्फ पैसे खर्च करना नही है क्योंकि जो लोग पैसा खर्च करने की हैसियत नही रखते उनके लिए माल खर्च करना मुमकिन नहीं तो क्या ये आयत ऐसे लोगों के लिए बातिल होगी। इस आयत में मां बाप और मुसाफिरों का जिक भी है अगर मां-बाप और मुसाफिर पैसे वाले हो तो उन पर पैसा खर्च करने का क्या मतलब?

इस आयत का पैगाम ये है कि लोगों की जरुरत के अनुसार अपनी मेहनत और सम्पत्ति खर्च करे और मेहनत से मतलब वो तमाम मानव क्रिया जिसके द्वारा मानव अपनी और लोगों की मदद कर सकते है। चाहे वो पैसा से ही क्यूँ न हूँ जो मेहनत से कमाया जाता है और ये काम करते वक्त परिणाम का प्रतिफल न ढूँढ़े और इस काम को अपना कर्त्तव्य समझकर अंजाम दे। इस आयत में एक और पैगाम भी है और वो है कि अपने वंश को ज्ञान और शान्ति के पथ पर लाना या लाने की चेष्टा करना भी अल्लाह की राह में खर्च करने में सम्मलित है।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ وَعَسَىٰ أَن تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسَىٰ أَن تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ {216}

तुम पर जिहाद कर्त्तव्य किया गया अगरचे तुम पर शाक ज़रुर है और अजब नहीं कि तुम किसी वस्तु को नापसन्द करो हालाँकि वह तुम्हारे सत्य में बेहतर हो और अजब नहीं कि तुम किसी वस्तु को पसन्द करो हालाँकि वह तुम्हारे सत्य में बुरी हो और अल्लाह जानता ही है मगर तुम नही जानते हो (२१६)

व्याख्या:- अपनी जरूरत से ज्यादा हवस, लालच, हसद और उत्वाकांक्षा जैसी शैतानी फितरत से ''जहाद'' मानव के लिए कर्त्तव्य किया गया है, जो मेहनत तलब और मुश्किल भी है, मुमकिन है कि लोग इन सारी चीजों को नमुमकिन समझे यानी बुरी, लेकिन इसमें मानव और मानवता के लिए भलाई है और हो सकता है कि कोई मानव इसे अच्छा समझे लेकिन वो बुरी हो, हकीकत का इल्म सिर्फ अल्लाह के पास ही है।

पैगाम:- आयत में कहा गया है कि ''हकीकी इल्म तो सिर्फ अल्लाह के पास है और मानव को अच्छे बुरे की पहचान नहीं है'' तो सवाल ये आता है कि जब अल्लाह के पास ही हकीकी इल्म है तो मानव को मस्तिक्ष क्यों दिया और किताबों के द्वारा हिदायत क्यों दी? हर गहराई अल्लाह के नूर से बनती है और परमाणु शक्ति द्वारा ही सृष्टि की हर क्रिया-प्रक्रिया प्रचालित होती है। मानव को मस्तिक्ष देकर अल्लाह ने मानव को अमृत पुत्र यानी उत्तम यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और मानव के साथ अच्छा-बुरा, पाप-पुण्य को रखकर और धर्म पुस्तक द्वारा अपने आदर्शों को समझाया कि मानव उसे समझे और शान्ति के पथ पर चले। ये लड़ाई सिर्फ नेकी और बदी के मध्य है और इसके रहस्य प्रकृति के हर कोने में मौजूद है। अल्लाह ने अपने रहस्य का थोड़ा सा ज्ञान मानव को दिया। मानव कभी कभी इस थोड़े से ज्ञान में ही अहंकारी हो जाता है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيهِ قُلْ قِتَالٌ فِيهِ كَبِيرٌ وَصَدٌّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَكُفْرٌ بِهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَإِخْرَاجُ أَهْلِهِ مِنْهُ أَكْبَرُ عِندَ اللَّهِ وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ وَلَا يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّىٰ يَرُدُّوكُمْ عَن دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا وَمَن يَرْتَدِدْ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {217}

तुमसे लोग हुरमत वाले महीनों की निस्बत पूछते है कि जिहाद उनमें जायज़ है तो तुम उन्हें जवाब दो कि इन महीनों में जेहाद बड़ा पाप है और ये भी याद रहे कि खुदा की राह से रोकना और अल्लाह से इन्कार और मस्जिदुल हराम

से रोकना और जो उस के एहल है उनका मस्जिद से निकाल बाहर करना अल्लाह के नज़दीक इस से भी बढ़कर पाप है और फ़ितना परदाज़ी कुश्ती ख़ून से भी बढ़ कर है और ये कुफ़्फ़ार हमेशा तुम से लड़ते ही चले जाएँगे यहाँ तक कि अगर उन का बस चले तो तुम को तुम्हारे दीन से फिरा दे और तुम में जो शख़्स अपने दीन से फिरा और कुफ़्र की हालत में मर गया तो ऐसों ही का किया कराया सब कुछ पृथ्वी और आख़ेरत में अकारत है और यही लोग जहन्नुमी हैं वह उसी में हमेशा रहेंगे (२१७)

व्याख्या:- बेवक्त और बेफजुल लोगों से हुज्जत करने के बारे में रसूल से पूछा गया (हुर्मत के महीने) तो रसूल ने फरमाया कि लोगों से हुज्जत और लड़ाई करना शख्त पाप है, जो नेक काम (अल्लाह की राह) करते है उनके खिलाफ (कुफ्र) रुकावट पैदा करना और मस्जिद हराम (सभ्यता और शांति का लक्ष्य) से रोकना और ईमान की बुलंदी तक पहुँचने वालों को वहां से निकालने की चेष्टा करना अल्लाह के नजदीक शख्त पाप है और इस किस्म का फसाद कतल से भी बड़ा पाप है। लड़ने वाले लोगों की फितरत है लड़ाई और उनकी चेष्टा रहती है कि सभ्य लोगों को गुमराह करे और जो सभ्य लोग अपने अमाल से हटकर पाप करेंगे उनके लिए दीन-दुनिया और आखत गारत (धस) हो जाएंगे और बदसकूनी (अशांति) के जहन्नम में हमेशा रहेंगे।

पैगाम:- इस आयत के साथ जुड़े हुए विचारधारा के मुताबिक हुर्मत वाले चार महीने यानी रजब, जिकदा, जिलहज और मुहर्रम जिसमें कत्ल और लूट-मार जैसे अम्ल न पसंदीदा थे तो क्या बाकी महीनों में ये लोगों का पसंदीदा अमल हो जाता था?क्या बाकी महीनों में लूटना जायज था या बाकी महीनों की हुर्मत नहीं थी?अगर ये आयत किसी खास इतिहासिक पटभूमि पर आधारित है तो यकीनन इस आयत को हर दौर के लिए मुकम्मिल आयत नही कहा जा सकता? चार महीना एक चिह्न है। अल्लाह के नियम मनुष्य के हर श्वांस के साथ जुड़े होने चाहिए केवल चार महीनों के लिए नहीं। उस वक्त के लोगों के विचारों के अनुसार चार महीने का जिक एक उदाहरण के तौर पर किया गया है। कुरान शरीफ की हर आयत हर युग के लिए परिपूर्ण है। अल्लाह की प्रकृति में हर वस्तु और हर क्षण आदरणीय है।

ये आयत लोगों को अपने ईमान पर मुकम्मिल कायम रहने का पैगाम देती है और हुज्जत करने वाले लोगों को नतीजा बताती है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ رَحْمَتَ اللَّهِ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {218}

बेशक जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अल्लाह की राह में हिजरत की और जिहाद किया यही लोग रहमते अल्लाह के उम्मीदवार हैं और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (२१८)

व्याख्या:- सभ्य, संयम, प्रेम और मानवता को ग्रहण करने वाले और इस पैगाम को एक जगह से दूसरी जगह फैलाने वाले और अल्लाह की राह पर जहाद करने वाले (अधर्म के खिलाफ) लोगों को ही अल्लाह की रहमत प्राप्त होती है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِن نَّفْعِهِمَا وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا يُنفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ {219}

तुमसे लोग शराब और जुए के बारे में पूछते है तो तुम उन से कह दो कि इन दोनो में बड़ा पाप है और कुछ फायदे भी है और उन के फायदे से उन का पाप बढ़ के है और तुम से लोग पूछते हैं कि अल्लाह की राह में क्या ख़र्च करे तुम उनसे कह दो कि जो तुम्हारे ज़रुरत से बचे यूँ अल्लाह अपने एहकाम तुम से साफ़ साफ़ बयान करता है (२१९)

व्याख्या:- रसूल से लोग शराब यानी नशा और जूए के बारे में सवाल करते है तब अल्लाह के हुक्म से रसूल फरमाते है कि ये दोनों चीजे पाप वाली है लोगों को फायदा के बजाय बदसकूनी प्राप्त होती है। वह रसूल से पूछते है कि वो क्या खर्च करे रसूल ने फरमाया जरुरत के मुताबिक खर्च करो। अल्लाह इस तरह अपने एहकाम रसूलों के द्वारा मानव तक पहुँचाते है।

पैगाम:- उदाहरण के तौर पर एलकोहॉल इस्तेमाल किया जा सकता है जो मानव अपने फायदे के लिए दवा के तौर पर इस्तेमाल करते है, इस एलकोहॉल की ज्यादा मिकदार नशे के तौर पर भी इस्तेमाल होती है। जब एलकोहॉल फायदे के लिए इस्तेमाल किया जाय तो पाप नही लेकिन अगर उसे नशा के तौर पर इस्तेमाल करे तो यकीनन ये पाप होगा इसके अलावा हर तरह का नशा जो मानव को मोह-जाल में फसा देता है वो पाप है। जुए में मनुष्य को पल भर की खुशी प्राप्त होती है और इन दोनों चीजों में खुशी से ज्यादा कष्ट होता है। शराब और जुए के मध्य नशे का जबरदस्त बन्धन है, इसलिए हर तरह का नशा जो मनुष्य को अपने जाल में फासता है और वो मदहोश होकर गलत काम करने लगता है वो हराम यानी वर्जित है। चाहे वो दौलत का हो, संभोग का हो या फिर दुनिया के किसी भी वस्तु का। केवल ज्ञान, अल्लाह और उनकी प्रकृति से प्रेम का नशा ही मनुष्य के लिए हलाल है।

فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْيَتَامَى قُلْ إِصْلاَحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ وَاللّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ وَلَوْ شَاء اللّهُ لأَعْنَتَكُمْ إِنَّ اللّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {220}

ताकि तुम पृथ्वी और आखिरत में गौर करो और तुम से लोग यतीमों के बारे में पूछते है तुम कह दो कि उनकी बेहतर है और अगर तुम उन से मिलजुल कर रहो तो नहीं आखिर वह तुम्हारें भाई ही तो है और अल्लाह फ़सादी को खैर ख़्वाह से जानता है और अगर अल्लाह चाहता तो तुम को मुसीबत में डाल देता बेशक अल्लाह ज़बरदस्त सित्यमत वाला है (२२०)

व्याख्या:- लोगों ने रसूल से यतीमों के बारे में सवाल किया दीनी और दुनियावी तौर पर (दीनी यतिम का मतलब जो खुदा को नही मानता यानी अल्लाह के नियमों को न मानने वाला और पाप कर्म करने वाला और दुनियावी यतिम का मतलब जिनके मां-बाप और रिश्तेदार नहीं होते)। रसूल ने अल्लाह के हुकुम से फरमाया कि यतिमों के बारे में लोग अच्छा सोचे (अगर यतिमों का माल यानी पैसा या अमाल अपनी तरह से और जायज तौर पर सुरक्षा दे) और उनके अमाल को नेक राह दिखाए तब यतिम उनके भाई है नेकी और बदी को अल्लाह जानता है, अल्लाह हर चीज पर कादिर है और दुनिया को चलाने वाला है।

पैगाम:- कोई-कोई कहता है कि इस्लाम में मुँह बोला रिश्ता जायज नहीं है, इस आयत के मुताबिक यतिम को भाई बनाना भी एक हद तक मुँह बोला रिश्ता है, लेकिन हकीकत में मुँह बोला रिश्ता कतई जायज नहीं बल्कि हर रिश्ते को दिल से अपनाना पड़ता है, मुँह से नही। इस आयत का एक रूहानी मतलब भी है अनाथ के साथ ''दुनिया और आखत'' का क्या मतलब जिसका उल्लेख आयत के आरंभ में किया गया है। देखा जाए तो हर मनुष्य का जन्म अकेला होता है और मृत्यु के वक्त भी वो अकेला ही होता है। तो मनुष्य और मनुष्य के दरमिया सिर्फ भाईचारे का रिश्ता है जिसे मानवता कहते है और इस आयत के अन्त में अल्लाह का गालिब और हिकमत वाला कहकर मानवता के कर्त्तव्य को अल्लाह के साथ जोड़ दिया गया है। इसलिए मानव का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है ''मानवता'' यानी मानव की सेवा।

وَلاَ تَنكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّى يُؤْمِنَّ وَلَأَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ وَلاَ تُنكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّى يُؤْمِنُوا وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّن مُّشْرِكٍ وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ أُوْلَئِكَ يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ وَاللّهُ يَدْعُو إِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِإِذْنِهِ وَيُبَيِّنُ آيَاتِهِ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ {221}

और तुम मुशरिक औरतों से जब तक ईमान न लाएँ निकाह न करो क्योंकि मुशरिका औरत तुम्हें अपने हुस्नो जमाल में कैसी ही अच्छी क्यों न मालूम हो मगर फिर भी ईमानदार औरत उस से ज़रुर अच्छी है और मुशरेकीन जब तक ईमान न लाएँ अपनी औरतें उन के निकाह में न दो और मुशरिक तुम्हे कैसा ही अच्छा क्यो न मालूम हो मगर फिर भी ईमानदार औरत उस से ज़रुर अच्छी है और मुशरेकीन जब तक ईमान न लाएँ अपनी औरतें उन के निकाह मे न दो और मुशरिक तुम्हें क्या ही अच्छा क्यों न मालूम हो मगर फिर भी बन्दा मोमिन उनसे ज़रुर अच्छा है ये लोगों को दोज़ख़ की तरफ बुलाते है और अल्लाह अपनी इनायत से बेहिश्त और बख़्शिश की तरफ बुलाता है और अपने आयतें लोगों को साफ साफ बयान करता है ताकि ये लोग नसीहत हासिल करें(२२१)

व्याख्या:- पाप करने वाली औरतों से निकाह न करो जब तक वह नेक न हो जाये और ईमानदेर नेक नौकरानी खुले पाप वाली औरत से बेहतर है चाहे गुनहगार औरत जितनी ही खुबसूरत क्यों न हो ठीक इसी तरह गुनह करने वाले मर्द से निकाह न करे जब तक वह नेक न बन जाए, नेक ईमानदार नौकर खुले पाप करने वाले मर्द से बेहतर है। गुनहगार लोग बदसकूनी के जहन्नम में बुलाते है और अल्लाह के असूल उसे सकून की तरफ। अल्लाह अपनी हिदायत लोगों को देकर उसे सकून और राहत नसीब कराते है।

पैगाम:- सुरा तहरीम की आयत नं १०-११ में पैगम्बर नुह और पैगम्बर लुत की स्त्रियों को काफिर कहा गया और फिरौन जैसे काफिर की पत्नी को ईमान वाली की उपाधि दी। ये बात प्रमाण करती है कि ईमान की बुनियाद है मनुष्य के अमाल। ईमान किसी के नाम, सम्प्रदाय या अंग रूप से कोई तालुक नहीं रखता। किसी उम्मति या सम्प्रदाय में सम्मिलित होने से ही ईमान वाला बन जाएगा इसकी इजाजत कुरान-शरीफ नहीं देता और इसके साथ पैसे वाले खूबसुरत और शक्तिशाली ये सारी इंसानी फितरत भी ईमान की नींव को परिपूर्ण नहीं कर सकती।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الْمَحِيضِ قُلْ هُوَ أَذًى فَاعْتَزِلُوا النِّسَاءَ فِي الْمَحِيضِ وَلَا تَقْرَبُوهُنَّ حَتَّىٰ يَطْهُرْنَ فَإِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ أَمَرَكُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ التَّوَّابِينَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِينَ {222}

तुम से लोग हैज़ के बारे में पूछते है तुम उनसे कह दो कि ये गन्दगी और घिन की बीमारी है तो में तुम औरतों से अलग रहो और जब तक वह पाक न हो जाएँ उनके पास न जाओ पस जब वह पाक हो जाएँ तो जिधर से तुम्हें अल्लाह ने हुक्म दिया है उन के पास जाओ बेशक अल्लाह तौबा करने वालो और सुथरे लोगों को पसन्द करता है (२२२)

व्याख्या:- लोगों ने रसूल से हैज (ऋतु श्राव) के बारे में सवाल किया रसुल अल्लाह ने अल्लाह के हुक्म से फरमाया है कि हैज औरत के जिस्म का गंदा खून है और इन दिनों औरतों से अलग रहो यानी यौन सम्पर्क कायम करना कतयी जायज नहीं और जब तक औरत का हैज बंद न हो जाय उसके साथ यौन सम्पर्क कायम न करे साफ-सूथरा और पाप से दूर रहने वालों को अल्लाह पसंद फरमाता है।

نِسَاؤُكُمْ حَرْثٌ لَكُمْ فَأْتُوا حَرْثَكُمْ أَنَّىٰ شِئْتُمْ وَقَدِّمُوا لِأَنْفُسِكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ مُلَاقُوهُ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ {223}

तुम्हारी बीवियां तुम्हारी खेतियां है तो तुम अपनी खेती में जिस तरह चाहो आओ और अपनी आइन्दा की भलाई के वास्ते पेशगी भेजो और अल्लाह से डरते रहो और ये भी समझ रखो कि एक दिन तुमको उसके सामने जाना है और ऐ रसूल इमानदारों को नजात की खुश खबरी दे दो (२२३)

व्याख्या:- पुरुष के लिए नारी एक खेती समान है इसकी रक्षा और इसका अच्छा पालन-पोषण अच्छा बंक्श और अच्छा घर दे सकता है और ये पुरूष के लिए पुण्य समान है, पुरूष जान ले कि वे नारी के बिना अधूरे है चाहे वो मां, बहन, बीवी या बेटी ही हो।

पैगाम:- अरबी शब्द ''निसा'' का मतलब है औरत और इस आयत के अनुसार वो सारी नारियां जो पुरूष के दायरा अधिकार में है उनकी रक्षा का उत्तरदायी पुरूष है। इस आयत में पुरूष का नारी के साथ यौन सम्पर्क का कोई तालुक नहीं है। जिस तरह खेती की अच्छी देखभाल से अच्छी फसल उगती है ठीक उसी तरह नारी की अच्छी देख-रेख से अच्छा वंश और समाज बन सकता है।

وَلَا تَجْعَلُوا اللَّهَ عُرْضَةً لِأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {224}

और तुम अपनी क़समों से अल्लाह को लोगों के साथ सुलूक करने और अल्लाह से डरने और लोगों के दरमियान सुलह करवा देने का मानेअ न ठहराव और अल्लाह सबकी सुनता और सब को जानता है (२२४)

व्याख्या:- अल्लाह को अपनी कस्मों का निशाना न बनाओ के भलाई और संयमी और लोगों के दरमियान की अच्छाई छूट जाये अल्लाह सब सुनता और जानता है ।

पैगाम:- ऐसे बहुत से लोग है जो सुबह-शाम मुँह से अल्लाह का नाम जपते है और अपने अमल पर कोई एहमियत नही देते और गलत काम करते है। मानवता, संयमी, सत्यता और सभ्य इंसान के अन्तर्आत्मा की बुनियाद होनी चाहिए

और ये आयत उसी का उद्देश्य देती है। जो मनुष्य मुँह से नेकी की बात करता है और पीठ पीछे पाप वो अल्लाह के नियमों के विरूद्ध काम करता है। और उनमें कुछ ऐसे लोग भी है जो अल्लाह के नाम को अपनी कमाई और बुरे कामों से बचने का जरिया बना लेते है, यही लोग काफिर है।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَٰكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ {225}

तुम्हारी लग़ो क़समों पर जो बेइख़्तेयार ज़बान से निकल जाए अल्लाह तुम से गिरफ़्तार नहीं करने का मगर उन कसमों पर ज़रुर तुम्हारी गिरफ़्त करेगा जो तुमने क़सदन दिल से खायीं हो और अल्लाह बख़्शने वाला बुर्दबार है (२२५)

व्याख्या:- मानव अंजाने में जो शपथ लेते है वो पक्की नहीं होती और इसपर पकड़ नहीं है लेकिन जो जान-बूझकर और ढ़ोंग रचाकर लोगों को और समाज को नुकसान पहुँचाने के लक्ष्य से शपथ लेते है ऐसे लोग अल्लाह के अभिश्राप के घेरे में है।

पैगाम:- ये आयत एक विशेष बात का उपदेश देती है। मनुष्य की कोई भी बात जो सिर्फ जुबान तक सीमित रहती है या इस पर अमल न किया जाए वो सरासर पाप है। यानी मनुष्य जो मुँह से कहता है या जिसकी कस्म वो खाता है वो उसे जरूर पुरा करे। उदाहरण के तौर पर कोई किसी के साथ भाई बहन का रिश्ता रखे और बाद में उसे शादी में बदल दे, वो पाप है यानी मुँह बोला रिश्ता जायज नहीं है। हर रिश्ते को दिल से कबुल करें और इसे अमली जीवन में एहतराम के साथ निभाये या मानकर चले। जो क्र्त्तव्य है उसे पूरी तरह से अदा करे और बड़े-बड़े वायदे न करे जो वो पुरा न कर सके। झुठ से लोगों को गुमराह न करें। अपनी हैसियत से बाहर कोई भी काम जो समाज को नुकसान दे वो न करें। इस आयत का एक और विशेष पैगाम है और वो है अंजाने में की गई गलती माफी की हकदार है और जान-बूझकर की गयी गलती की माफी नहीं है।

لِّلَّذِينَ يُؤْلُونَ مِن نِّسَائِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ فَإِن فَاءُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {226}

जो लोग अपनी बीवियों के पास जाने से क़सम खायें उन के लिए चार महीने की मोहलत है पस अगर और उनकी तरफ तवज्जो करें तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (२२६)

व्याख्या:- जो पुरुष अपनी स्त्री से अलग रहने की सोचते है उनके लिए ४ महीने की मोहलत है, अगर ४ महीनों के दरमियान पुरुष-स्त्री के बीच की दूरी खतम न हो जाये तो बदले की भावना छोड़कर आपस में रजामंदी से अलग हो जाना ही बेहतर है। इस आयत के द्वारा अल्लाह ताला ने पुरुष नारी को बराबर का अधिकार प्रदान किया है। शादी के मामले में भी नारी को हक है 'खुला' लेने का।

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {227}

और अगर तलाक़ ही की ठान ले तो बेशक अल्लाह सबकी सुनता और सब कुछ जानता है (२२७)

व्याख्या:- और कानूनी तौर पर एक-दूसरे का हक अदा करते हुए अलग हो जाए और अल्लाह बेहतर जानने वाला है।

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ ثَلَاثَةَ قُرُوءٍ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَن يَكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللَّهُ فِي أَرْحَامِهِنَّ إِن كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَبُعُولَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِي ذَٰلِكَ إِنْ أَرَادُوا إِصْلَاحًا وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِي عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {228}

और जिन औरतों को तलाक़ दी गयी है वह अपने आपको तलाक़ के बाद तीन हैज़ के ख़त्म हो जाने तक निकाह सानी से रोके और अगर वह औरतें अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर इमान लायीं है तो उनके लिए जाएज़ नहीं है कि जो कुछ भी अल्लाह ने उनके रहम में पैदा किया है उसको छिपाएँ और अगर उन के शौहर मेल जोल करना चाहें तो वह में उन के वापस बुला लेने के ज़्यादा हक़दार है और नियमानुसार औरतों का वही सब कुछ हक़ है जो मर्दों का औरतों पर है हाँ अलबत्ता मर्दों को औरतों पर फौक़ियत ज़रुर है और अल्लाह ज़बरदस्त हिक़मत वाला है (२२८)

व्याख्या:- पुरुष से जुदा होने के बाद नारी तीन मास तक दूसरा विवाह न करें ताकि लोगों को पता चल जाए की बच्चा होगा कि नहीं और इसका पिता कौन है। इस दौरान अगर पति उसे वापस लौटाना चाहे तो पति को इसका पूरा अधिकार है और नारी को भी पूरा अधिकार है जैसा पुरुष को है। प्रकृति ने पुरुष को नारी से ज्यादा शारीरिक ताकत दी है।

पैगामः- वर्तमान विज्ञान के अनुसार नारी को एक माह में ही पता चल जाता है कि इसके गर्भ में बच्चा है या नहीं इस लिहाज से तीन माह की मुद्दत नारी और मर्द के दिमाग की परीक्षा है कि वो किस हद तक जुदाई को बर्दाश्त कर सकते है और इस आयत में भी स्पष्ट रूप से नारी को पुरूष के बराबर का अधिकार दिया है।

الطَّلاَقُ مَرَّتَانِ فَإِمْسَاكٌ بِمَعْرُوفٍ أَوْ تَسْرِيحٌ بِإِحْسَانٍ وَلاَ يَحِلُّ لَكُمْ أَن تَأْخُذُوا مِمَّا آتَيْتُمُوهُنَّ شَيْئًا إِلاَّ أَن يَخَافَا أَلاَّ يُقِيمَا حُدُودَ اللّهِ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلاَّ يُقِيمَا حُدُودَ اللّهِ فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيمَا افْتَدَتْ بِهِ تِلْكَ حُدُودُ اللّهِ فَلاَ تَعْتَدُوهَا وَمَن يَتَعَدَّ حُدُودَ اللّهِ فَأُوْلَـئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ {229}

तलाक़ रजअई जिसके बाद रुजू हो सकती है दो ही मरतबा है उसके बाद या तो शरीयत के मवाफिक़ रोक ही लेना चाहिए या हुस्न सुलूक से बिल्कुल रूख़सत और तुम को ये जायज़ नहीं कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो उस में से फिर कुछ वापस लो मगर जब दोनों को इसका ख़ौफ़ हो कि अल्लाह ने जो हदें मुक़र्रर कर दी है उन को दोनो मिया बीवी क़ायम न रख सकेंगे फिर अगर तुम्हे ये ख़ौफ़ हो कि यह दोनो अल्लाह की मुकर्रर की हुयी हदो पर क़ायम न रहेंगे तो अगर औरत मर्द को कुछ देकर अपना पीछा छुड़ाए तो इसमें उन दोनों पर कुछ पाप नही है ये अल्लाह की मुक़र्रर की हुयी हदें है बस उन से आगे न बढ़ो और जो अल्लाह की मुक़र्रर की हुयी हदों से आगे बढ़ते है वह ही लोग तो ज़ालिम हैं (२२९)

व्याख्याः- साथ रहने की हर कोशिश अगर कामियाब न हो तो भलाई, शराफत और नुकसान को त्यागते हुए तलाक इख्तियार कर लो, ये अल्लाह की हदे है और इस हद को पार ने करे।

فَإِن طَلَّقَهَا فَلاَ تَحِلُّ لَهُ مِن بَعْدُ حَتَّى تَنكِحَ زَوْجًا غَيْرَهُ فَإِن طَلَّقَهَا فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَن يَتَرَاجَعَا إِن ظَنَّا أَن يُقِيمَا حُدُودَ اللّهِ وَتِلْكَ حُدُودُ اللّهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ {230}

फिर अगर तीसरी बार भी औरत को तलाक़ दे तो उसके बाद जब तक दूसरे मर्द से निकाह न कर ले उस के लिए हलाल नही हाँ अगर दूसरा शौहर निकाह के बाद उसको तलाक़ दे दे तब अलबत्ता उन मिया बीवी पर बाहम मेल कर लेने में कुछ पाप नही है अगर उन दोनों को यह गुमान हो कि अल्लाह हदों को क़ायम रख सकेंगें और ये अल्लाह की हदें है जो समझदार लोगों के वास्ते साफ साफ बयान करता है (२३०)

व्याख्याः- तलाक के बाद अगर पुरुष और नारी को अपने गलती व जुदाई का एहसास हो तो आपस में मिल जाना कोई गुनाह नहीं।

पैगामः- इस्लाम में नारी और पुरुष के हकुक बराबर है। अगर नारी को हलाला (यानी दूसरे पुरुष से विवाह) करना पड़े तो मर्द के लिए क्या हुकुम है? हकीकत तो ये है कि कोई भी पुरुष अपनी पत्नी को दूसरों की बाहों में देख नहीं सकता। और मर्द की इस फितरत को सामने रखते हुए अल्लाह ताला ने नारी को हलाला का हुकूम दिया ताकि पुरुष तलाक से डरे और तलाक अल्लाह की न पसंद चीज है। रसूल-ए-पाक हजरत मोहम्मद ने अपनी जिन्दगी में हलाला के बगैर ही साथ रहने की इजाजत दी थी। (बुखारी शरीफ पार्ट ३ किताबुल निकाह बॉब ६६ हदीस ११६)। स्त्री-पुरुष के रिश्ते की बुनियाद होती है प्रेम, इज्जत और एक-दूसरे के लिए एहसास। और इस बुनियाद पर मनुष्य का आपसी रिश्ता कायम होता है। अगर नारी-पुरुष के दरमियान प्रेम हो तो हलाला दोनों के मस्तिक्ष को न गवार होगा।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاء فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ أَوْ سَرِّحُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَلاَ تُمْسِكُوهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوا وَمَن يَفْعَلْ ذَلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهُ وَلاَ تَتَّخِذُوا آيَاتِ اللّهِ هُزُوًا وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللّهِ عَلَيْكُمْ وَمَا أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّنَ الْكِتَابِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُم بِهِ وَاتَّقُوا اللّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ {231}

और जब तुम अपनी बीवियों को तलाक़ दो और उनकी मुद्दत पूरी होने को आए तो अच्छे उनवान से उन को रोक लो या हुस्ने सुलूक से बिल्कुल रुख़सत ही कर दो और उन्हें तकलीफ पहुँचाने के लिए न रोको ताकि ज़्यादती करने लगो और जो ऐसा करेगा तो यक़ीनन अपने ही पर जुल्म करेगा और अल्लाह के एसत्याम को कुछ हँसी ठट्टा न समझो और अल्लाह ने जो तुम्हें नेअमतें दी है उन्हें याद करो और जो किताब और अक़्ल की बातें तुम पर नाज़िल की उनसे तुम्हारी नसीहत करता है और अल्लाह से डरते रहो और समझ रखो कि अल्लाह हर वस्तु को ज़रुर जानता है (२३१)

व्याख्याः- पुरुष नारी की इद्दत (चार महीना १० दिन घर में नारी रहती है) के बाद अपना बना ले या पूरी तरह छोड़ दे और उनको तकलीफ या कष्ट में न डाले और जो ऐसा करेगा वो पुरुष अत्याचारी होगा। अल्लाह के हुकूमों का एहतराम करें

ताकि सही राह मिले। अल्लाह की प्रकृति को मनुष्य याद करें और किताबों के जरिए जो उपदेश उन्होंने दिये है और जिसके द्वारा मनुष्य शांति हासिल करता है। अल्लाह हर चीज जानता है।

पैगामः- विधवा हो या तलाक शुदा बच्चे वाली नारी के साथ शादी करना पुण्य का काम है, और इसका उदाहरण रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद ने कायम किया था। पेट में बच्चा हो या न हो उससे शादी में कोई फर्क नहीं पड़ना चाहिए इस बात का विशेष मकसद ये है कि बच्चे की परवरिश और खुराक की जिम्मेदारी उसका बाप उठाये। बच्चे के बाप का पता हो और इसकी जिम्मेदारी कानूनी तौर पर हो इस मकसद से ही इद्दत का कानून बना था और इस कानून को अल्लाह ने शक्ति से मानव समाज में लागू करने के लिए मनुष्य के दरमियान और मनुष्य के मस्तिक्ष में डीएनए टेस्ट द्वारा बच्चे के पिता की पहचान का आधुनिक तरीका दिया या ये समझ सकते है कि उस वक्त का डीएनए का टेस्ट का तरीका यही था।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوهُنَّ أَن يَنكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُم بِالْمَعْرُوفِ ذَٰلِكَ يُوعَظُ بِهِ مَن كَانَ مِنكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَٰلِكُمْ أَزْكَىٰ لَكُمْ وَأَطْهَرُ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ {232}

और जब तुम औरतों को तलाक़ दो और वह अपनी मुद्दत पूरी कर लें तो उन्हें अपने शौहरो के साथ निकाह करने से न रोको जब आपस में दोनों मिया बीवी शरीयत के मुवाफिक़ अच्छी तरह मिल जुल जाएँ ये उसी शख़्स को नसीहत की जाती है जो तुम में से अल्लाह और रोज़े आख़ेरत पर ईमान ला चुका हो यही तुम्हारे सत्य में बड़ी पाकीज़ा और सफ़ाई की बात है और उसकी खूबी अल्लाह खूब जानता है और तुम नहीं जानते हो (२३२)

व्याख्याः- जब पुरुष अपनी पत्नी को तलाक दे और पत्नी ४ महीने की इद्दत पूरी कर ले तो इस नारी को अपने पसंदीदा पुरुष से शादी करने से न रोके अगर पुरुष और नारी आपस में सुलह कर ले तो उसमें कोई गुनाह नहीं, जो लोग अल्लाह और उसके प्रकृति पर ईमान रखते है वो जरूर इस कानून को अपनाएंगे।

पैगामः- इद्दत पूरी करने के बाद जब तक दूसरी शादी न हो उस वक्त ''अपने पति से निकाह करने'' का मतलब उसके पहले पति से ही मिल जाना, फिर उसके बाद कहा जाता है कि आपस में सुलह कर लो ये बात साबित करती है कि तलाक के बाद अगर पति पत्नी को अपनी गलती का एहसास हो तो आपस में सुलह (मिल जाना) कर ले और इस बात की एहमियत को समझ कर इसे मजाक की चीज न बनाए।

وَالْوَالِدَاتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَن يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ وَعَلَى الْمَوْلُودِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا لَا تُضَارَّ وَالِدَةٌ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُودٌ لَّهُ بِوَلَدِهِ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذَٰلِكَ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَن تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا وَإِنْ أَرَدتُّمْ أَن تَسْتَرْضِعُوا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُم مَّا آتَيْتُم بِالْمَعْرُوفِ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ {233}

और जो शख़्स अपनी औलाद को पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे तो उसकी ख़ातिर से माएँ अपनी औलाद को पूरे दो बरस दूध पिलाएँ और जिसका वह लड़का है उस पर माओं का खाना कपड़ा दस्तूर के मुताबिक़ लाज़िम है किसी शख़्स को ज़हमत नहीं दी जाती मगर उसकी गुन्जाइश भर न माँ का उस के बच्चे की वजह से नुक़सान गवारा किया जाए और न जिस का लड़का है उसका और अगर बाप न हो तो दूध पिलाने का सत्य उसी तरह वारिस पर लाज़िम है फिर अगर दो बरस के क़ब्ल माँ बाप दोनों अपनी मरज़ी और मशवरे से दूध बढ़ाई करना चाहें तो उन दोनों पर कोई पाप नहीं और अगर तुम अपनी औलाद को दूध पिलवाना चाहो तो उस में भी तुम पर कुछ पाप नहीं है बशर्ते कि जो तुमने दस्तूर के मुताबिक़ मुक़र्रर किया है उन के हवाले कर दो और अल्लाह से डरते रहो और जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह ज़रुर देखता है (२३३)

,व्याख्याः- बच्चों की सर्वश्रेष्ठ खाद्य है उसकी माँ का दूध जो प्राकृतिक तौर पर औरत के सीने में बनता है और दो साल या जितने भी दिन औरत अपने औलद को पिलाती रहे। बच्चों का पालन-पोषण उनके माँ-बाप पर है। बच्चों को अपनी मर्जी से अगर मां-बाप कुछ दे तो जबर्दस्ती नहीं, और अल्लाह तुम्हारे काम देख रहा है।

पैगामः- बच्चों की परवरिश, शिक्षा और सेहत की जिम्मेदारी पुरी तरह मां-बाप पर होती है और उन नियमों को अपनाते वक्त कोई भी कष्ट नारी-पुरुष को नहीं होना चाहिए। यानी बच्चे की पैदाइश की संख्या में अपनी जिम्मेदारी, कर्त्तव्य, हैसियत और सेहत का जरूर ज्ञान रखें। अल्लाह ने दुनिया में हर किस्म की सहुलत मौजूद रखी है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا يَتَرَبَّصْنَ بِأَنفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوفِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ {234}

और तुममे से जो लोग बीवियाँ छोड़ के मर जाएँ तो ये औरतें चार महीने दस रोज़ अपने को रोके फिर जब पूरी कर

ले तो शरीयत के मुताबिक़ जो कुछ अपने सत्य में करें इस बारे में तुम पर कोई इल्ज़ाम नही है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से ख़बरदार है (२३४)

व्याख्याः- विधवा कुछ वक्त तक इद्दत (यानी ४ महीना १० दिन) में रहे फिर चाहे तो शादी कर ले। विधवा को अपने बेहतर भविष्य के बारे में सोचने का पूरा हक है और अल्लाह तुम्हारे हर काम से खबरदार है।

وَلا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا عَرَّضْتُم بِهِ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَاء أَوْ أَكْنَنتُمْ فِي أَنفُسِكُمْ عَلِمَ اللّهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُونَهُنَّ وَلَكِن لاَّ تُوَاعِدُوهُنَّ سِرًّا إِلاَّ أَن تَقُولُوا قَوْلاً مَّعْرُوفًا وَلاَ تَعْزِمُوا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتَّىَ يَبْلُغَ الْكِتَابُ أَجَلَهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللّهَ يَعْلَمُ مَا فِي أَنفُسِكُمْ فَاحْذَرُوهُ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ {235}

और अगर तुम उन औरतों से इशारतन निकाह की ख़ास्तगारी करो या अपने दिलो में छिपाए रखो तो उसमें भी कुछ तुम पर इल्ज़ाम नही है अल्लाह को मालूम है कि उन औरतों से निकाह करने का ख़्याल आएगा लेकिन चोरी छिपे से निकाह का वायदा न करना मगर ये कि उन से अच्छी बात कह गुज़रों और जब तक मुक़र्रर मियाद गुज़र न जाए निकाह का क़सद भी न करना और समझ रखो कि जो कुछ तुम्हारी दिल में है अल्लाह उस को ज़रुर जानता है तो उस से डरते रहो और जान लो कि अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बुर्दबार है (२३५)

व्याख्याः- पुरुष विधवाओं से झुठा वादा किये बगैर सच्चे दिल से शादी करे और इज्जत के साथ उन्हें पत्नी का दर्जा दे।

पैगामः- हिंदू विधवाओं को बड़ी नीची निगाह से देखते है और उन्हें मनहूस समझा जाता है और उस पर तमाम किसम की कु-संस्कार लागू करके, उन्हें दबोच रखते है और उन्हें भड़का कर अपने पति की चिता में जलकर मरने पर भी मजबूर करते थे। उनसे शादी करने वाला पुरुष हिंदू समाज में बहुत कम मिलता है।

ये आयत खास करके हिंदूओं के लिए है क्योंकि कुरान-शरीफ सारे लोगों के लिए है और दुनिया में हिंदू सम्प्रदाय के अलावा दूसरी कोई सम्प्रदाय नहीं है जो विधवाओं के साथ जुल्म करती हो।

لاَّ جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِن طَلَّقْتُمُ النِّسَاء مَا لَمْ تَمَسُّوهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوا لَهُنَّ فَرِيضَةً وَمَتِّعُوهُنَّ عَلَى الْمُوسِعِ قَدَرُهُ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهُ مَتَاعًا بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِينَ {236}

और अगर तुम ने अपनी बीवियों को हाथ तक न लगाया हो और न महर मुअय्युन किया हो और उसके क़ब्ल ही तुम उनको तलाक़ दे दो तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं है हाँ उन औरतों के साथ मालदार पर अपनी हैसियत के मुआफिक़ और ग़रीब पर अपनी हैसियत के मुवाफिक़ कुछ सुलूक करना लाज़िम है सभ्य करने वालों पर ये भी एक सत्य है (२३६)

व्याख्याः- जिस्मानी तालुकात कायम किए बगैर और हक-मोहर के फैसले से पहले अगर तलाक हो तो उसमें कोई बुराई नहीं और अपनी हैसियत के अनुसार स्त्री को जरूर कुछ फायदा दे ।

पैगामः- अगर स्त्री से शादी करने के बाद जिस्मानी तालुकात कायम न करे और बगैर हक-मोहर के निकाह करे तो ऐसी निकाह की क्या जरूरत? मौजूदा इस्लामी शरीयत के अनुसार शादी के वक्त ही हक मोहर का फैसला हो जाता है, तो ये आयत किस शादी की तरफ इशारा कर रहीं है?

जुल्म की शिकार नारी को जुल्म से आजादी दिलवाने के लिए अगर कोई पुरुष निकाह करके उसे तलाक दे तब इस आयत के अनुसार औरत को बगैर हाथ लगाए और बगैर हक मोहर दिए तलाक दे सकते है और पुरुष अपनी हैसियत के अनुसार उसकी मदद करें। ये आयत उन तमाम नारियों को सम्बोधित करती है जिन्हें जबरदस्ती शादी के लिए राजी किया जाता है और पुरुष अंजाने में उनसे शादी कर लेते है।

وَإِن طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِن قَبْلِ أَن تَمَسُّوهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلاَّ أَن يَعْفُونَ أَوْ يَعْفُوَ الَّذِي بِيَدِهِ عُقْدَةُ النِّكَاحِ وَأَن تَعْفُوا أَقْرَبُ لِلتَّقْوَى وَلاَ تَنسَوُا الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ إِنَّ اللّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ {237}

और अगर तुम उन औरतों का मेहर तो मुअय्यन कर चुके हो मगर हाथ लगाने के क़ब्ल ही तलाक़ दे दो तो उन औरतों को मेहर मुअय्यन का आधा दे दो मगर ये कि ये औरतें खुद माफ कर दें या उन का वली जिसके हाथ में उनके निकाह का एख़्तेयार हो माफ़ कर दे और अगर तुम ही सारा मेहर बख़्शा दो तो परहेज़गारी से बहुत ही क़रीब है और आपस की बुर्जुगी तो मत भूलो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह ज़रुर देख रहा है (२३७)

व्याख्याः- ऐसी शादी में जहां पर हक मोहर का फैसला हो चुका हो लेकिन जिस्मानी तालुकात कायम न हुए हो उस सुरत में नारी को हक मेहर का आधा हिस्सा देना चाहिए, अगर नारी या उसका अभिभावक हक मेहर माफ करना चाहे तो कोई हर्ज नहीं। पुरुष और नारी को चाहिए कि आपस के राज जाहिर न करे, बेशक अल्लाह तुम्हारे अमल देख रहा है।

पैगामः- ऐसे निकाह और तलाक की बहुत से कारण है
१. शादी के फौरन बाद नारी या पुरुष की कमजोरी एक दूसरे पे जाहिर होती है
२. जुल्म से मुक्ति दिलाने की मकसद से जो शादी वक्ती तौर पर होती है
३. अगर जबरदस्ती किसी नारी को उसके मर्जी के खिलाफ शादी पर मजबूर किया जाए और शादी के बाद अगर पुरुष को इस वाक्या का पता चले और तलाक की नौबत आ जाए तो ऐसी सुरत में आयतों के मुताबिक कानून लागू होगा
४. बीमार पुरुष अगर किसी लालच या दबाव में आकर शादी करे और नारी को इसके बारे में पता चल जाए तो नारी कानूनी तौर पर तलाक की हकदार है।
५. हिन्दुस्तान में बहुत-सी जगहों में छोटी उमर में शादी हो जाती है और बड़ा होने पर विदा किया जाता है। ऐसी हालत में अगर विदाई के वक्त कोई अर्चण आये तब ये कानून लागू होगा।

حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى وَقُومُوا لِلَّهِ قَانِتِينَ {238}

और तुम तमाम नमाज़ों की और खुसूसन बीच वाली नमाज़ सुबह या ज़ोहर या अस्र की पाबन्दी करो और ख़ास अल्लाह ही वास्ते नमाज़ में क़ुनूत पढ़ने वाले हो कर खड़े हो (२३८)

व्याख्याः- मनुष्य की जिंदगी एक नमाज है और मनुष्य की "जवानी" उसकी जिंदगी के बीच के हिस्से में आती है और उस समय मनुष्य ज्यादा से ज्यादा पाप कर्म कर बैठता है और इस लिहाज से उस समय अल्लाह के नियमों को सख्ती से अपनाना ही "बीच की नमाज" है। और अल्लाह के नियमों के आगे कामियाब रहने की कोशिश करे।
पैगामः- कुरान-शरीफ दुनिया के हर कोने, हर मनुष्य और हर दौर के लिए परिपूर्ण पुस्तक है, इस लिहाज से मुसलमान नाम के सम्प्रदाय छोड़ कर बाकी कोई भी मानव सम्प्रदाय मुसलमानों के तरीके से नमाज नहीं पढ़ते, जिसे वो नमाज कहते है और इबादत का कोई भी विशेष तरीका कुरान-शरीफ में नहीं है। कुरान-शरीफ एक परिपूर्ण पुस्तक है इस लिहाज से नमाज अल्लाह का वो नियम है जो मनुष्य को मानवता, प्रेम और शांति की तरफ ले जाती है और मनुष्य उसे कबूल करता है यानी नमाज अदा करता है। इस्लामी नियमों के अनुसार पाँच वक्त के नमाज में हर नमाज की एहमियत है। रात और दिन के हिसाब से बीच की नमाज कौन सी होगी इसका कोई विशेषक इस आयत में नहीं है तो बीच की नमाज इंसानी जिन्दगी की "जवानी के वक्त" की निशानदेही करती है।

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا فَإِذَا أَمِنتُمْ فَاذْكُرُوا اللَّهَ كَمَا عَلَّمَكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا تَعْلَمُونَ {239}

फिर अगर तुम ख़ौफ की हालत में हो तो सवार या पैदल जिस तरह बन पड़े पढ़ लो फिर जब तुम्हें इत्मेनान हो तो जिस तरह अल्लाह ने तुम्हें अपने रसूल की मआरफत इन बातों को सिखाया है जो तुम नहीं जानते थे (२३९)

व्याख्याः- अगर मनुष्य गलत काम या गुनाह से डरे तो यकीनन किसी भी तरीके से पैदल या सवारी के जरिए यानी धीरे-धीरे या जल्दी अमन की तरफ आए और अमनोसकून हासिल होने के बाद अल्लाह के नियमों को पक्के तरीके से अपनाए जो बात मनुष्य नहीं समझता। अल्लाह ने उसे सच्चे ज्ञान प्रदान किया।
पैगामः- सवाल ये आता है कि इस्लामी तरीके से नमाज अदा करना यानी चलते वक्त और सवार होकर असंभव है तो इस लिहाज से "बीच की नमाज" एक उदाहरण है मनुष्य के जीवन के बीच वाले हिस्से की, परहेजगारी की, और यही परहेजगारी मनुष्य को शांति प्रदान करती है।

وَالَّذِينَ يُتَوَفَّوْنَ مِنكُمْ وَيَذَرُونَ أَزْوَاجًا وَصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِم مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِي مَا فَعَلْنَ فِي أَنفُسِهِنَّ مِن مَّعْرُوفٍ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {240}

और तुम में से जो लोग अपनी बीवियों को छोड़ कर मर जाएँ उन पर अपनी बीबियों के सत्य में साल भर तक के नान व नुफ्के और न निकलने की वसीयत करनी है पस अगर औरतें खुद निकल खड़ी हो तो जायज़ बातों से कुछ अपने सत्य में करे उसका तुम पर कुछ इल्ज़ाम नही है और अल्लाह हर शै पर ग़ालिब और हिक़मत वाला है (२४०)

व्याख्याः- विधवा की आर्थिक जरूरत अगर उसके पति की सम्पत्ति से मिले तो उसे इस अधिकार से वंचित नहीं करना चाहिए। और मनुष्य का कर्त्तव्य है कि अल्लाह के तरफ से वो नारियों की हर संभव सुरक्षा करने की चेष्टा करें। अगर खुद निकलना चाहे तो भी कोई गुनाह नहीं और जो वो अपने लिए अच्छा समझे अल्लाह सर्वश्रेष्ठ और हिकमत वाला है।
पैगामः- लोगों को अपनी मृत्यु का पता नहीं होता इसलिए मनुष्य को अपने जीते जी ही अपने स्त्री के भविष्य के बारे में उसकी आर्थिक जरूरत का बंदुबस्त कर जाए, अगर स्त्री आर्थिक, शारीरिक और शिक्षा से कमजोर और वंचित हो।

وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ {241}

और जिन औरतों को तलाक़ दे दी जाए उनके साथ अच्छा सुलूक करना लाज़िम है (२४१)

व्याख्याः- नेक और अच्छे मनुष्य तलाक के वक्त नारी को नुकसान दिये बगैर जितना हो सके फायदा के साथ तलाक दे।

नोटः- ये कानून औरतों पर भी लागू होता है।

كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ {242}

उसी तरह ख़ुदा तुम लोगों के वास्ते अपने आयते साफ़ साफ़ बयान फरमाता है ताकि तुम समझो (२४२)

व्याख्याः- अल्लाह अपने नियमों को इसी तरह लोगों को समझाते रहते है ताकि लोग इसे समझे और अपनाए।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ {243}

क्या तुम ने उन लोगों के हाल पर नज़र नही की जो मौत के डर के मारे अपने घरों से निकल भागे और वह हज़ारो आदमी थे तो ख़ुदा ने उन से फरमाया कि सब के सब मर जाओ फिर ख़ुदा न उन्हें जिन्दा किया बेशक अल्लाह लोगों पर बड़ा मेहरबान है मगर अक्सर लोग उसका शुक्र नहीं करते (२४३)

व्याख्याः- लोगों को समझना चाहिए कि जब भूकम्प आता है तो हजारों की तादाद में लोग मौत की डर से बाहर निकल आते है, अल्लाह उनमें से कुछ लोगों को मौत की खान से भी जिंदा निकालते है लोग अल्लाह की इस प्रकृति को नहीं पहचानते हुए न शुकरी करते है।

पैगामः- भूकम्प के वक्त देखा जाता है कि मलबे के नीचे दबे हुए बहुत से मनुष्य जिंदा निकाले जाते है और वो लोग एक चमत्कार द्वारा जिंदा बच जाते है। अल्लाह जिसे चाहे मौत दे और जिसे चाहे जिन्दगी।

وَقَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {244}

और ख़ुदा की राह मे जिहाद करो और जान रखो कि ख़ुदा ज़रुर सब कुछ सुनता जानता है (२४४)

व्याख्याः- और अल्लाह की प्रकृति को याद करते हुए उसके नियमों पर कायम रहते हुए अपनी जरुरत से ज्यादा नफसियानी (इन्द्रियाँ) ख्वाहिशात और पाप कर्मों से जहाद करें।

पैगामः- मनुष्य के दिलो-दिमाग की ख्वाहिशात प्राकृतिक है और जब वो जरूरत से ज्यादा हो जाती है तो मनुष्य को पाप की तरफ ढकेल देती है।

مَّن ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهُ لَهُ أَضْعَافًا كَثِيرَةً وَاللَّهُ يَقْبِضُ وَيَبْسُطُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ {245}

है कोई जो ख़ुदा को क़र्ज़ हुस्ना दे ताकि ख़ुदा उसके माल को इस के लिए कई गुना बढ़ा दे और अल्लाह ही तंगदस्त करता है और वही कशायश देता है और उसकी तरफ सब के सब लौटा दिये जाओगे (२४५)

व्याख्याः- अल्लाह की प्रकृति और नियमों को जो भी एहतराम करे उसे जरूर अल्लाह की तरफ से शांति की जिन्दगी इनाम में मिलेगी और हम सब मनुष्यों को इसके नियमों और प्रकृति के दायरे में रहना ही पड़ेगा।

पैगामः- अल्लाह बेनियाज है और वो मनुष्य से कुछ नहीं चाहता, मनुष्य जो करता है वो बिला वास्ता अपने फायदा के लिए ही करता है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ مِن بَعْدِ مُوسَى إِذْ قَالُوا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِن كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوا قَالُوا وَمَا لَنَا أَلَّا نُقَاتِلَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِن دِيَارِنَا وَأَبْنَائِنَا فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ {246}

क्या तुमने मूसा के बाद बनी इसराइल के सरदारों की हालत पर नज़र नहीं की जब उन्होंने अपने नबी से कहा कि हमारे वास्ते एक बादशाह मुक़र्रर कीजिए ताकि हम राहे ख़ुदा में जिहाद करें फ़रमाया कहीं ऐसा तो न हो कि जब तुम पर जिहाद वाजिब किया जाए तो तुम न लड़ो कहने लगे जब हम अपने घरों और अपने बाल बच्चों से निकाले जा चुके तो फिर हमे कौन सा उज्र बाक़ी है कि हम अल्लाह की राह में जिहाद न करें फिर जब उन पर जिहाद वाजिब किया गया तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा सब के सब ने लड़ने से मुँह फेरा और ख़ुदा तो ज़ालिमों को खूब जानता है (२४६)

व्याख्याः- अल्लाह की प्रकृति से फिरने की एक बेहतरीन मिसाल बनी इसराइल से ली सकती है जब बनी इसराइल ने अपने पैगम्बर से कहां की किसी को उनका पैगम्बर बना दिया जाए ताकि वो अल्लाह की राह में जिहाद करे। पैगम्बर ने

जहाद फर्ज होने पर लोगों को इसे निभाने पर शक जाहिर किया, लोगों ने कहां कि वो अल्लाह की राह में जरूर जहाद करेंगे क्योंकि वो अपने घरों से उजाड़े गए और बच्चों से दूर कर दिए गये सिर्फ थोड़े से लोगों ने उसे कबूल किया और अल्लाह जालिमों को खूब जानता है।

पैगामः- शांति और सच्चाई के लिए जहाद मनुष्य का फर्ज है इसकी वजह से मनुष्य अच्छा शांतिपूर्वक और खूबसुरत समाज हासिल कर सकता है। मनुष्य के मध्य अल्लाह की मर्जी से जो हुकुमत वाले है उनका काम है अल्लाह के नियमों को मानव समाज में ठीक तरह से लागू करना और मानव समाज की बुनियाद है मानव। इस लिहाज से बुराई यानी गुनाह से जहाद करना मानव का कर्त्तव्य और इसे अपने अंदर से शुरू करते हुए कानून के रखवालों तक पहुँचाना है। याद रखें कि हर कानून अल्लाह की मर्जी से ही समाज में लागू होता है उसकी मर्जी के बगैर कोई भी असुल असंभव है।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللَّهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوتَ مَلِكًا قَالُوا أَنَّى يَكُونُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ وَاللَّهُ يُؤْتِي مُلْكَهُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ {247}

और उनके नबी ने उनसे कहा कि बेशक खुदा ने तुम्हारी दरख़्वास्त के मुताबिक़ तालूत को तुम्हारा बादशाह मुक़र्रर किया कहने लगे उस की हुकूमत हम पर क्यों कर हो सकती है हालाकि सल्तनत के सत्यदार उससे ज़्यादा तो हम है क्योंकि उसे तो माल के एतबार से भी फ़ारगुल बाली तक नसीब नहीं कहा अल्लाह ने उसे तुम पर फज़ीलत दी है और माल मे न सही मगर इल्म और जिस्म का फैलाव तो उस का अल्लाह ने ज़्यादा फरमाया हे और अल्लाह अपना मुल्क जिसे चाहें दे और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाला और वाक़िफ़कार है (२४७)

व्याख्याः- काबिल मनुष्य तालुत को अल्लाह ने बनी इसराइल का बादशाह बनाया और लोगों ने इस पर विरोध जाहिर किया क्योंकि तालुत किसी बादशाह की नसल से न था और वो एक आम गरीब खंदान से ताल्लुक रखता था। तब नबी ने लोगों को तालुत की काबिलियत समझायी और अल्लाह जिसे जितना चाहे हिकमत अताः फरमाये।

पैगामः- आज के जमाने में ये आयत एक उदाहरण और सबक है। हूकुमत करने वालों की काबिलियत ही असल है। वंश परिचय कोई माने नहीं रखती। हुकुमत वालों के अंदर ज्ञान, सच्चाई, ईमानदारी और प्रेम भावना होनी चाहिए।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَن يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَى وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {248}

और उन के नबी ने उनसे ये भी कहा इस के बादशाह होने की ये पहचान है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक़ आ जाएगा जिसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तसकीन दे वस्तुें और उन तब्बुरक़ात से बचा खुचा होगा जो मूसा और हारुन की औलाद यादगार छोड़ गयी है और उस सन्दूक को फरिश्ते उठाए होगें अगर तुम ईमान रखते हो तो बेशक उसमें तुम्हारे वास्ते पूरी निशानी है (२४८)

व्याख्याः- नबी ने इसकी बादशाहत की निशानी बयान करते हुए कहां कि लोगों के लिए ऐसा समय आयेगा (संदूक) जिसमें अल्लाह की तरफ से शांति और सच्चा ज्ञान (इतमीनान) है। मूसा और हारून (नबियों) की बतायी हुई नेक हिदायत जो लोगों के लिए लाभदायक थी और फरिश्ते जैसे ज्ञानी और नेक मनुष्यों के जरिए शांति और इतमीनान वाला समाज कायम होगा, अगर लोग अल्लाह के नियमों पर यकीन रखे और उसे अपने और समाज पर लागू करे। धन-दौलत से भरा हुआ संदुक मनुष्य को लालची बना देता है और इस लालच के वश में आकर मनुष्य आपस में लड़ जाते है। अगर कुरान शरीफ जैसी परिपूर्ण और ज्ञान से भरी पुस्तक मनुष्य के मध्य रहे और इसे ठीक तरह से समझकर अपनाए तो समाज में शांति कायम हो जाएगी। ''संदूक'' सच्चा ज्ञान और सुख-शान्ति की निशानदेही करता है।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوتُ بِالْجُنُودِ قَالَ إِنَّ اللَّهَ مُبْتَلِيكُم بِنَهَرٍ فَمَن شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّي وَمَن لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّي إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةً بِيَدِهِ فَشَرِبُوا مِنْهُ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ قَالُوا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالَ الَّذِينَ يَظُنُّونَ أَنَّهُم مُّلَاقُو اللَّهِ كَم مِّن فِئَةٍ قَلِيلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيرَةً بِإِذْنِ اللَّهِ وَاللَّهُ مَعَ الصَّابِرِينَ {249}

फिर जब तालूत लसंदेहर समैत रवाना हुआ तो अपने साथियों से कहा देखो आगे एक नहर मिलेगी इस से यक़ीनन अल्लाह तुम्हारे सब्र की आज़माइश करेगा पस जो शख़्स उस का जल पीयेगा मुझे नही रखता और जो उस को नही चखेगा वह बेशक मुझ से होगा मगर हाँ जो अपने हाथ से एक ले तो कुछ हर्ज नहीं पस उन लोगों ने न माना और चन्द आदमियों के सिवा सब ने उस का जल पिया ख़ैर जब तालूत और जो मोमिनीन उन के साथ थे नहर से पास हो गए तो सब के सब कहने लगे कि हम में तो आज भी जालूत और उसकी फौज से लड़ने की सकत नहीं

मगर वह लोग जिनको यक़ीन है कि एक दिन अल्लाह को मुँह दिखाना है बेधड़क बोल उठे कि ऐसा बहुत हुआ कि अल्लाह के हुक्म से छोटी जमाअत बड़ी जमाअत पर ग़ालिब आ गयी है और अल्लाह सब्र करने वालों का साथी है (२४९)

व्याख्याः- बादशाह तालुत ने जब समाज से गुनाहों को खत्म करने के लिए नेक लोगों को लेकर निकले तब उन्होंने कहां कि अल्लाह ताला लोगों को अजमाएंगे, नेकी और बदी की एक लकीर (नहर) से और जो मनुष्य इस लकीर के दायरे को इख्तियार न करके बदी की इख्तियार करेगा वो यकीनन नेक और परहेजगार सम्प्रदाय में नहीं होगा और न ही शांति वाले गिरोह में और जो इस दायरे को इख्तियार करेगा वही शांति का जीवन जियेगा। ये और बात है कि लोग गलती (थोड़ा सा पानी पीना) करे अंजाने में और सब मनुष्यों से गलतीयां होती है उनमें से चंद को छोड़कर (औलिया-इकराम)। तालुत और उनके नेक लोगों का गिरोह इस दायरे के इकराम में रहे और कामियाब रहे। जालुत और उसके गुनहगार गिरोह का सामना करने की ताकत हासिल की और अल्लाह की मदद से पापियों से निजात पाई और समाज में ज्ञान और शांति का पैगाम पहुँचाया। अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है।

पैगामः- सब्र करने वाले, नेक, परहेजगार, अमनोअमान के पुजारी और सच्चा ज्ञान प्राप्त करने वालों की अल्लाह जरूर मदद करता है।

وَلَمَّا بَرَزُوا لِجَالُوتَ وَجُنُودِهِ قَالُوا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ {250}

जब ये लोग जालूत और उसकी फौज के मुक़ाबले को निकले तो दुआ की ऐ मेरे परवरदिगार हमें कामिल सब्र अता फरमा और मैदाने जंग में हमारे क़दम जमाए रख और हमें काफिरों पर फतेह इनायत कर (२५०)

व्याख्याः- और जब नेकी और शांति कायम करने के मकसद से तालुत और उसके साथी जालुत जैसे पापियों का सामना करने लगे तब तालुत ने अल्लाह से सब्र और कामियाब रहने की और काफिरों (अल्लाह की नियमों को बिगाड़ने वाले) पर जीत हासिल करने की दुआ की।

فَهَزَمُوهُم بِإِذْنِ اللَّهِ وَقَتَلَ دَاوُودُ جَالُوتَ وَآتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهُ مِمَّا يَشَاءُ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلَكِنَّ اللَّهَ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْعَالَمِينَ {251}

फिर तो उन लोगों ने खुदा के हुक्म से दुशमनों को सिंदेहस्त दी और दाऊद ने जालूत को क़त्ल किया और खुदा ने उनको सल्तनत व तदबीर तम्दुन अता की और इल्म व हुनर जो चाहा उन्हें गोया घोल के पिला दिया और अगर अल्लाह बाज़ लोगों के ज़रिए से बाज़ का दफाए न करता तो तमाम रुए ज़मीन पर फ़साद फैल जाता मगर खुदा तो सारे जहाँन के लोगों पर फज़ल व रहम करता है (२५१)

व्याख्याः- तालुत के नेक परहेजगार और ईमान वाले सम्प्रदाय ने जालुत जैसे शांति बिगाड़ने वाले सम्प्रदाय को हरा दिया और दाउद ने जालुत को मार डाला और दाउद को अल्लाह के तरफ से ज्ञान हासिल हुआ और शांति वाला राज्य और अल्लाह की तरफ से बहुत ज्यादा ज्ञान भी हासिल हुआ। अल्लाह मानव समाज में से ही एक सम्प्रदाय से दूसरे सम्प्रदाय को यानी नेकी को बदी से खत्म न करे तो दुनिया में अशांति छा जाएगी। हक तो ये है कि सच्चा ज्ञान ही मनुष्यी समाज में शांति की बुनियाद कायम कर सकता है।

पैगामः- तालुत और जालुत की मिसाल बयांन फरमा कर अल्लाह ने नेक और परहेजगार मनुष्यों को अपनी मदद की मिसाल बयांन की।

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ {252}

ये अल्लाह की सच्ची आयतें हैं जो हम तुम को ठीक ठीक पढ़के सुनाते हैं और बेशक तुम ज़रुर रसूलों में से हो (२५२)

व्याख्याः- जो लोग अल्लाह की हिदायत और असूलों को ठीक-ठीक से पहचानते है वो यकीनन रसुल की हिदायत को पहचान लेंगे और नेक-परहेजगार सम्प्रदाय में शामिल हो जाएंगे और पाप कर्मों से अपने आपको मुक्त रखने की शपथ लेंगे और इसे निभायेंगे भी।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ مِّنْهُم مَّن كَلَّمَ اللَّهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنَاتِ وَأَيَّدْنَاهُ بِرُوحِ الْقُدُسِ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِينَ مِن بَعْدِهِم مِّن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنِ اخْتَلَفُوا فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ وَمِنْهُم مَّن كَفَرَ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا اقْتَتَلُوا وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ {253}

यह सब रसूल उनमें से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं जिनसे खुद अल्लाह ने बात की उनमें से बाज़ के दर्जे बुलन्द किये और मरियम के बेटे ईसा को और रूहुलकुदस के ज़रिये से उनकी मदद की और अगर

अल्लाह चाहता तो लोग इन के बाद हुये वह अपने पास रौशन मौजिज़े आ चुकने पर आपस में न लड़ मरते मगर उनमें फूट पड़ गई पस उनमें से बाज़ तो ईमान लाये और बाज़ काफ़िर हो गये और अगर अल्लाह चाहता तो यह लोग आपस में लड़ते मगर अल्लाह वही करता है जो चाहता है (२५३)

व्याख्याः- हर रसूल किसी न किसी बात पर सर्वश्रेष्ठ है। उनमें कोई ऐसा है जो अल्लाह के नियमों को गहरे तरीके से महसूस करता है (अल्लाह से बात करना) और कोई ऐसा है जिसका रुतबा दुनियां के लिए एक मिसाल कायम करना है और अल्लाह ताला ने ईसा और मरियम को नेकी और परहेजगारी की मिसाल रखी। अल्लाह ने उन लोगों को रुहूल कदस (पवित्र आत्मा) की समझ दी और उनकी मदद की। अगर अल्लाह चाहता तो इसके बाद लोगों के बीच फसाद नहीं होता। सबूत मिलने के बावजूद आपस में लोगों का मतभेद पैदा हुआ और कुछ लोग नेकी परहेजगारी और शांति को अपना कर ईमान वाले बने और कुछ लोगों ने फसाद को अपना कर काफिर बने। अगर अल्लाह चाहता तो सारे मतभेद मिटा देता और अल्लाह अपनी मर्जी से अपनी प्रकृति का नियंत्रण करते है।

पैगामः- प्रकृति ने हर मनुष्य को अलग-अलग चरित्र और रूप प्रदान किया। जिस मानव के अन्दर ज्ञान होता है वो समाज में प्रशंसा के काबिल होता है। समय के साथ-साथ बदलती हुई दुनिया के अनुसार मानव सभ्यता में हर रोज नये-नये अविष्कार होते रहे और सृष्टि के इन आदर्शों के अनुसार रसुलों को भी प्रकृति ने सभ्यता के नये ज्ञान से परिपूर्ण किया। इसलिए इस आयत में कहा गया है ''एक को दूसरे पर श्रेष्ठता प्रदान की''। अल्लाह के नियम एक है जो सृष्टि की शुरुआत से मानव सभ्यता पर लागू है सिर्फ समय के अनुसार इसे पुष्टि दी गई है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِمَّا رَزَقْنَاكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ وَلَا شَفَاعَةٌ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ {254}

ऐ ईमानदारों जो कुछ हमने तुमको दिया है उस दिन के आने से पहले ख़र्च करो जिसमें न तो ख़रीदो फरोख़्त होगी और न यारी और न सिफ़ारिश और कुफ़्र करने वाले ही तो ज़ुल्म ढाते है (२५४)

व्याख्याः- अल्लाह की प्रकृति जो मनुष्य को मिली उसे सही तरीके से इस्तेमाल करे और उसे ऐसा इस्तेमाल न करे जिससे प्रकृति का संतुलन बिगड़ जाए और दुनिया को नष्ट होने के करीब लाए अगर प्रदूषण के कारण दुनिया खत्म होने को आए तब मनुष्य का न कोई मददगार होगा और न कोई सफारशी और इसके जिम्मेदार वो खुद होगा और ऐसा करने वाला जालिम (काफिर) है।

पैगामः- इस आयत की शुरूआत में अल्लाह की दी हुई प्रकृति को बयांन करने के बाद कयामत का जिकर है और ये साफ तरीके से वर्तमान पृथ्वी की बढ़ती हुई प्रदूषण की तरफ इशारा है। जिस रफ्तार से मनुष्य अपनी सहुलत के लिए प्रकृति को बिगाड़ रहे है तो वो दिन दूर नहीं जब मनुष्य के वजह से प्राकृतिक संतुलन बिगड़ जाएगा और कयामत आ जाएगी।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَن ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِندَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا بِمَا شَاءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ {255}

अल्लाह ही वो ज़ाते पाक है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं ज़िन्दा है सारे जहान का संभालने वाला है उसको न ऊँघ आती है न नींद जो कुछ आसमानो में है और जो कुछ ज़मीन में है उसी का है कौन ऐसा है जो बग़ैर उसकी इजाज़त के उसके पास किसी की सिफ़ारिश करे जो कुछ उनके सामने मौजूद है और जो कुछ उनके पीछे है जानता है और लोग उसके इल्म में से किसी वस्तु पर भी अहाता नहीं कर सकते मगर वह जिसे जितना चाहे उसकी कुर्सी सब आसमानों और ज़मीनों को घेरे हुये है और उन दोनों की निगेहदाश्त उसपर कुछ भी मुश्किल नहीं और वह आलीशान बुज़ुर्ग मरतबा है (२५५)

व्याख्याः- वही पाक परवरदिगार जो सर्वशक्तिमान है और जो हर चीज के अंदर उपस्थित रहकर हर चीज को थाम कर रखते है (एटोमिक शक्ति से सृष्टि की सारी वस्तुएं एक शक्ल इख्तियार करती है यानी उपस्थित होती है और इसी शक्ति की वजह से तमाम चीजे बिखर कर चूर-चूर नहीं होती और यही ताकत उन तमाम चीजों को पकड़ कर रखा है और यही ताकत ऐश्वरिक है।) और जो हर वक्त काम करता रहता है उसे आराम की जरूरत नहीं होती और इसी शक्ति से सृष्टि की तमाम चीजे बनती है कोई भी नहीं जो इस ताकत के दायरे से बाहर जा सके बगैर इसकी इजाजत के। हर गहरे राज का मालिक वही है और उसे आगे-पीछे की सारी जानकारी है और वो शक्ति अजय, अमर और अनंत है।

पैगामः- अल्लाह ताला के सामने हर बात जाहिर है सफारिश वहां होती है जहां पर सच्चाई पर शक हो और तरफदारी की

गुंजाइश हो, कुरान-शरीफ में बहुत सी आयतें है जो कहती है कि हर किसी को उसके अमल का बदला मिलेगा, इस लिहाज से और मौजुदा ख्याल के अनुसार सिफारिश बिलकुल जायज नहीं लेकिन ये आयत सिफारिश पर एक गहरा पैगाम देती है और वो है रसुलों के बताये हुए रास्तों के द्वारा मनुष्य के अमाल की अजमाइश। अल्लाह के नियमों को चिह्न है सिफारिश।

لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ قَد تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ فَمَن يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِن بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ لَا انفِصَامَ لَهَا وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {256}

दीन में किसी तरह की जबरदस्ती नहीं क्योंकि हिदायत गुमराही से ज़ाहिर हो चुकी तो जिस शख़्स ने झूठे खुदाओं बुतों से इंकार किया और अल्लाह ही पर ईमान लाया तो उसने वो मज़बूत रस्सी पकड़ी है जो टूट ही नहीं सकती और अल्लाह सब कुछ सुनता और जानता है (२५६)

व्याख्याः- धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं और मूर्खता से सच्चा ज्ञान यकीनन अलग है और जो मनुष्य पाप कर्मों को छोड़कर अल्लाह की नेक राह इख्तियार करते है अपनी मर्जी से वही सच्चे, शांति और इतमीनान वाली राह पर है और अल्लाह की राह जिसका कोई जोड़ नहीं और अल्लाह सब जानता है।

पैगामः- हर मनुष्य का रहन-सहन और विचारधारा अलग-अलग होती है लेकिन अल्लाह और उनके नियम एक है इसमें कोई मतभेद नहीं और वो है प्रेम, मानवता, शिक्षा, पवित्रता, अहिंसा, भाईचारा, ईमानदारी और शांति।

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَوْلِيَاؤُهُمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ إِلَى الظُّلُمَاتِ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {257}

अल्लाह उन लोगों का सरपरस्त है जो ईमान ला चुके कि उन्हें तारीकियों से निकाल कर रौशनी में लाता है और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उनके सरपरस्त शैतान है कि उनको रौशनी से निकाल कर तारीकियों में डाल देते है यही लोग तो जहन्नुमी है यही उसमें हमेशा रहेंगे (२५७)

व्याख्याः- मूर्खता के अंधेरे से रोशन हिदायत के द्वारा ईमान लाने वाले लोगों को ज्ञान की रोशनी देने वाला अल्लाह है और पापी शैतान का साथी काफिर, जो ईमान वालों को ज्ञान और शांति की दुनिया से बाहर लाकर फिर अंधेरे में भटका देते है ऐसे लोग जहन्नम में हमेशा रहेंगे।

पैगामः- अज्ञानता से ज्ञान, झुठ से सत्यता, नफरत से मोहब्बत, पाप से पुण्य, हिंसा से अहिंसा और मोह-माया से परहेजगारी बेहतर है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِي حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ الْمُلْكَ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ قَالَ أَنَا أُحْيِي وَأُمِيتُ قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ {258}

क्या तुम ने उस शख़्स पर नज़र नहीं की जो सिर्फ़ इस बिरते पर कि अल्लाह ने उसे सल्तनत दी थी इब्राहीम से उनके परवरदिगार के बारे में उलझ पड़ा कि जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा परवरदिगार तो वह है जो जिलाता और मारता है तो वो भी आकर कहने लगा मैं भी जिलाता और मारता हूँ इब्राहीम ने कहा अल्लाह तो आफ़ताब को पूरब से निकालता है भला तुम उसको पश्चिम से निकालो इस पर वह काफ़िर सत्यका बक्का हो कर रह गया और अल्लाह ज़ालिमों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (२५८)

व्याख्याः- पैगम्बर इब्राहीम से किसी ने रब के बारे में झगड़ा किया तब इब्राहीम ने अपने रब के एहकाम (जलाना और मारना) और कूदरत की कुछ खुबियां बयान की। मिसाल के तौर पर सूरज को पूरब से निकाल कर पश्चिम में ले जाना और ये साबित किया की प्रकृति को कोई भी मनुष्य बदल नहीं सकता। झगड़ा करने वाला मनुष्य संभोवित यानी आश्चर्य रह गया।

पैगामः- दुनिया अपने आप पर घूमती हुई सूरज के चारों तरफ घूमती है और इस चक्र के कारण सूरज पूरब से निकलकर पश्चिम की तरफ अस्त होता है। लेकिन ये सिर्फ दुनिया की लोगों के लिए है। सूरज अपनी जगह पर कायम रहता है और इसका निकलना या अस्त होना दुनिया के अपने आप पर घमूने की वजह से होता है।

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {259}

मसलन उस बन्दे के हाल पर भी नज़र की जो एक गाँव पर से होकर गुज़रा और वो ऐसा उजड़ा था कि अपनी छतों पर से ढह के गिर पड़ा था ये देखकर वह बन्दा अल्लाह अब इस गाँव को ऐसी वीरानी के बाद क्योंकर आबाद करेगा इस पर अल्लाह ने उसको सौ बरस तक मुर्दा रखा फिर उसको जिला उठाया पूँछा तुम कितनी देर पड़े रहे अर्ज़ की एक दिन पड़ा रहा एक दिन से भी कम फ़रमाया नहीं तुम सौ बरस पड़े रहे अब ज़रा अपने खाने पीने (की वस्तुों) को देखो कि बुसा तक नहीं और ज़रा अपने गधे को तो देखो कि उसकी हड्डियाँ ढेर पड़ी है और सब इस वास्ते किया है ताकि लोगों के लिये तुम्हें क़ुदरत का नमूना बनाये और अच्छा अब हड्डियों की तरफ़ नज़र करो कि हम क्योंकर जोड़ जाड़ कर ढाँचा बनाते है फिर उनपर गोश्त चढ़ाते है पस जब ये उनपर ज़ाहिर हुआ तो बेसाख़्ता बोल उठे कि मै ये यक़ीने कामिल जानता हूँ कि अल्लाह हर वस्तु पर क़ादिर है (२५९)

व्याख्याः- मनुष्य मृत्यु के बाद जमीन में विलीन हो जाता है और इस विलीन के अनुसार मनुष्य के जहन में सवाल आता है कि किस तरह अल्लाह दुबारा उसे जिंदा करेगा, मौत के बाद। अल्लाह मनुष्य को एक हालत से दूसरी हालत में कुछ समय (सौ साल) के बाद ले आया और फिर एक नई जिन्दगी देते हुए नये हालत और नये किरदार से शुरूआत का मौका दिया और नये तरीके से पीने-खाने भी दिया और नई हड्डिया के साथ नया गोस्त और नया चेहरा भी दिया।

पैगामः- चाहे जलाया जाए या दफनाया जाए आखिर कार मनुष्य का जिस्म मिट्टी ही हो जाता है। फिर उस मिट्टी से पेड़-पौधों की खुराक बनती है और उसी खुराक को खाकर प्राणी जीते है। इस एक प्राण से दूसरे प्राण की शुरुआत होती है और ये चक्रव्युह श्रृष्टि के आरंभ से ही चला आ रहा है और इस हालत का बदलाव ब्रह्माण्ड के हर दायरे में मौजूद है। इस आयत का दूसरा मतलब भी है, लाखो सालों तक मनुष्य सभ्यता के दायरे से बाहर था और वो जंगली जिन्दगी जीता था। आधुनिक समाज व्यवस्था के लाभकारी नियमों के बारे में वो लोग नहीं जानते थे। प्राकृति ने समय के परिवर्तन के साथ-साथ मनुष्य को सभ्यता और आधुनिक जीवन प्रदान किया, अगर देखा जाए कि मनुष्य सभ्यता से पहले जंगली जिन्दगी जीते थे यानी मृत्यु की हालत में थे तो ये कहां जा सकता है कि सभ्यता के प्रकाश से उन्हें जीवित किया गया। अल्लाह के नियमों में कोई भी अयौगतिक बातें नहीं है और न ये आयत किसी कहानी के आधार पर है और इस आयत में एक वैज्ञानिक सूत्र है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَى قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن قَالَ بَلَى وَلَكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَى كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {260}

और वह वाक़ेया भी याद करो जब इबराहीम ने दरख़्वास्त की कि ऐ मेरे परवरदिगार तू मुझे भी तो दिखा दे कि तू मुर्दो को क्योंकर ज़िन्दा करता है ख़ुदा ने फ़रमाया क्या तुम्हें यक़ीन नहीं इबराहीम ने अर्ज़ की यक़ीन तो है मगर आँख से देखना इसलिए चाहता हूँ कि मेरे दिल को पूरा इत्मिनान हो जाए फ़रमाया तो चार परिन्दे लो और उनको अपने पास मँगवा लो और टुकड़े टुकड़े कर डालो फिर हर पहाड़ पर उनका एक एक टुकड़ा रख दो उसके बाद उनको बुलाओ फिर देखो तो क्यों कर वह सब के सब तुम्हारे पास दौड़े हुए आते है और समझ रखो कि अल्लाह बेशक ग़ालिब और हिकमत वाला है (२६०)

व्याख्याः- इब्राहीम ने अल्लाह की इस हकीकत की तहकीकात की और उसे उसकी हकीकत का पता चला। हर जान विलीन होने के बाद दूसरी शकल इख्तियार करती है चाहे वो पंक्षी ही क्यों न हो। सृष्टि के नियमानुसार हर वस्तु की मृत्यु निश्चित है और हर चीज पर हालत का बदलाव होता है और ये एक प्राकृतिक नियम है। पैगम्बर इब्राहीम ने तपस्या की इस सत्य को जानने के लिए और अल्लाह ताला ने इन्हें अणु-परमाणु की गठनशैली की पहचान दी। मृत्यु के बाद हर वस्तु के परिवर्तन के नियमों को समझाया। पंक्षियों के चार टुकड़ों का मतलब है चार चालिका शक्तियां।

مَّثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّئَةُ حَبَّةٍ وَاللَّهُ يُضَاعِفُ لِمَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ {261}

जो लोग अपने माल अल्लाह की राह में खर्च करते है उनके की मिसाल उस दाने की सी मिसाल है जिसकी सात बालियाँ निकलें हर बाली में सौ दाने हों और अल्लाह जिसके लिये चाहता है दूना कर देता है और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाला वाक़िफ़ है (२६१)

व्याख्याः- मनुष्य अपनी जरुरत से ज्यादा ख्वाहिसात, लालच और हषद को त्याग दें। अल्लाह का दिया हुआ रिजक को जरूरत के अनुसार अपने इस्तेमाल में लाये और बाकी दूसरों के लिए छोड़ दे और प्रकृति जिसे चाहे ज्यादा दे और जिसे

चाहे कम, जिसका नतीजा नेक, अच्छा और बराबरी का समाज जिसमें न गरीबी होगी और न मुखमरी। जो लोग अपने अमाल और माल अल्लाह की राह में यानी नेकी और शांति के पथ पर नियुक्त करते है उसका उदाहरण उस दाने जैसा है जिसमें से सात बालियां निकली यानी एक मनुष्य और उसके मस्तिक्ष से निकली हुई सात किस्म की सोच को त्याग कर अल्लाह की राह में खर्च करना होता है जैसे की उत्वाकांक्षा, लालच, ईर्ष्या, अहंकार, घृणा, नशा (किसी भी चीज का हो यानी संभोग, सम्पत्ति या शोहरत), जरूरत से ज्यादा मोह - इन सात किस्म की बुरी इंसानी फितरत में सौ तरह की बुराइयां मौजूद होती है और इन्हें त्यागना यानी अल्लाह की राह में खर्च करना है और अल्लाह जिसे चाहे अपने भंडार से बढ़ा कर या घटा कर देते है।

पैगामः- हिन्दी में एक कहावत है ''गंगा जल से गंगा पूजा'' ठीक इसी तरह पृथ्वी की हर वस्तु अल्लाह की है और अल्लाह की वस्तु को अल्लाह की राह में खर्च करने के नियमों में एक गहरा राज छुपा हुआ है। मनुष्य के दायरे में जो कुछ है वो उसे अपना समझने लगता है और उसी के लालसा में रहते हुए अधिक से अधिक मात्रा में दुनिया की चीजों को अपने इख्तियार में रखने की कोशिश करने लगता है। इस इंसानी फितरत को सामने रखते हुए इस आयत में कहा गया है कि ''अल्लाह की राह में खर्च करो'' यानी अपने माल व दौलत के साथ-साथ अपने अमाल को भी अल्लाह की राह में नियुक्त करने का आदेश दिया जाता है। इस आयत के द्वारा अल्लाह ने दो पैगाम दिये है।

الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنفَقُوا مَنًّا وَلَا أَذًى لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {262}

जो लोग अपने माल खुदा की राह में ख़र्च करते हैं और फिर ख़र्च करने के बाद किसी तरह का एहसान नहीं जताते हैं और न जिनपर एहसान किया है उनको सताते हैं उनका अज्र उनके परवरदिगार के पास है और न आख़ेरत में उनपर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे (२६२)

व्याख्याः- जो लोग अल्लाह की राह में खर्च करते है और किसी को तकलीफ नहीं देते उनको न खौफ, न गम यानी शांति वाली जिंदगी।

قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّن صَدَقَةٍ يَتْبَعُهَا أَذًى وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ {263}

नरमी से जवाब दे देना और उससे दरगुज़र करना उस ख़ैरात से कहीं बेहतर है जिसके बाद ईज़ा पहुँचे और अल्लाह हर शै से बेपरवा बुर्दबार है (२६३)

व्याख्याः- लोगों का दिल दुखाने से बेहतर है उनसे अच्छी तरह और नर्मी से बात करें और दरगुजर करे। अल्लाह को किसी भी चीज की आवश्यकता नहीं। मनुष्य के नेक अमाल ही मनुष्य को लाभ देते है और अल्लाह सब देखता-जानता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذَى كَالَّذِي يُنفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا لَّا يَقْدِرُونَ عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ {264}

ऐ इमानदारों आपनी ख़ैरात को एहसान जताने और ईज़ा देने की वजह से उस शख़्स की तरह अकारत मत करो जो अपना माल महज़ लोगों को दिखाने के वास्ते ख़र्च करता है और अल्लाह और रोज़े आख़ेरत पर ईमान नही रखता तो उसकी ख़ैरात की मिसाल उस चिकनी चट्टान की सी है जिसपर कुछ ख़ाक हो फिर उसपर ज़ोर शोर का मेंह बरसे और उसको चिकना चुपड़ा छोड़ जाए रियाकार अपनी उस ख़ैरात या उसके सवाब में से जो उन्होंने की है किसी वस्तु पर क़ब्ज़ा न पाएंगे और अल्लाह काफ़िरों को हिदायत करके मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (२६४)

व्याख्याः- नेक मनुष्य कभी भी अच्छा काम करके एहसान नहीं जताता। कोई-कोई मनुष्य अपने घमंड के सबब और दिखावे के लिए अपनी सम्पत्ति खर्च करते है ऐसे लोगों के किरदार किसी के लिए फायदेमंद नहीं होते और ऐसे लोग पथभ्रष्ट होते है।

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ وَتَثْبِيتًا مِّنْ أَنفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَآتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ {265}

और जो लोग अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिए और अपने दिली एतक़ाद से अपने माल ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल उस बाग़ की सी है जो किसी टीले या टीकरे पर लगा हो और उस पर ज़ोर शोर से जल बरसा तो अपने दुगने फल लाया और अगर उस पर बड़े धड़ल्ले का जल न भी बरसे तो उसके लिये हल्की फुआर है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसकी देखभाल करता रहता है (२६५)

व्याख्याः- जो मनुष्य दिल से नेकी, परहेजगारी और शांति वाली जिंदगी इख्तियार करते है और अपनी कमाई हुई दौलत, शोहरत और इज्जत को समाज और मानवता के लिए इस्तेमाल करते है उनका रुतबा समाज में और अल्लाह के दरबार में ऊँची हैसियत का हकदार है और अल्लाह सारा काम देख रहा है। उदाहरण के तौर पर ऊँची जमीन में अच्छी फसल की पैदावार।

أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَن تَكُونَ لَهُ جَنَّةٌ مِّن نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاء فَأَصَابَهَا إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللّهُ لَكُمُ الآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ {266}

भला तुम में कोई भी इसको पसन्द करेगा कि उसके लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो उसके नीचे नहरें जारी हों और उसके लिए उसमें तरह तरह के मेवे हों और उसको बुढ़ापे ने घेर लिया है और उसके नातवाँ कमज़ोर बच्चे है कि एकबारगी उस बाग़ पर ऐसा बगोला आ पड़ा जिसमें आग थी कि वह बाग़ जल भुन कर रह गया अल्लाह अपने एहकाम को तुम लोगों से साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम ग़ौर करो (२६६)

व्याख्याः- लोग ऐसा कभी भी न चाहेंगे कि उनका बसा-बसाया घर, जमीन या कारोबार उजड़ जाए। जो काम मनुष्य करता है उसे उसी तरह का नतीजा मिलता है, और अल्लाह इस तरह अपनी आयतें बयांन करता है।

पैगामः- पाप कर्मों से कमाई हुई सम्पत्ति से जितना भी ऐशो-आराम और खूबसुरत जिन्दगी बसाने की कोशिश क्यों न करें वो कभी न कभी जरूर अल्लाह की पकड़ में आ जाएगा। पाप कर्मों से कमाई हुई सम्पत्ति का नतीजा उसे बुढ़ापे में भी मिल सकता है और ये भी हो सकता है कि इसके इर्द-गिर्द छोटे-छोटे बच्चे अच्छा घर-बार और अच्छा कारोबार होने के बावजूद उसे गुनाह का नतीजा जरूर मिलता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنفِقُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُم مِّنَ الأَرْضِ وَلاَ تَيَمَّمُوا الْخَبِيثَ مِنْهُ تُنفِقُونَ وَلَسْتُم بِآخِذِيهِ إِلاَّ أَن تُغْمِضُوا فِيهِ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ {267}

ऐ ईमान वालों अपनी पाक कमाई और उन वस्तुों में से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा की है ख़र्च करो और बुरे माल को देने का क़सद भी न करो हालाँकि अगर ऐसा माल कोई तुमको देना चाहे तो तुम अपनी ख़ुशी से उसके लेने वाले नहीं हो मगर ये कि उस में आँख चुराओ और जाने रहो कि अल्लाह बेशक बेनियाज़ सज़ावारे हम्द है (२६७)

व्याख्याः- नेक मनुष्य अपनी कमाई और अल्लाह की दी हुई हालात में खुश रहकर उसी में गुजारा करते है और यही अल्लाह का हुकुम है और जिसे खुद न पसंद हो वो दूसरों के लिए खर्च न करे। दूसरों को या समाज को कुछ देते वक्त अंधे न बनो बल्कि समाज की जरूरत को देखते हुए अपनी हैसियत के अनुसार उनकी मदद करो। अल्लाह किसी का मोहताज नहीं है मनुष्य के दान में मनुष्य को बराबर का प्रतिदान मिलेगा।

الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُم بِالْفَحْشَاء وَاللّهُ يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلاً وَاللّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ {268}

शैतान तमुको तंगदस्ती से डराता है और बुरी बात का तुमको हुक्म करता है और अल्लाह तुमसे अपनी बख़्शिश और फ़ज़्ल का वायदा करता है और अल्लाह बड़ी गुन्जाइश वाला और सब बातों का जानने वाला है (२६८)

व्याख्याः- मनुष्य की अंदर की पाप आत्मा इसे हमेशा तकलीफ और आशीलता से बेहकाता है और अल्लाह वाला विवेक मनुष्य को नेकी, माफी, मोहब्बत, परहेजगारी, मानवता और शांति पर कायम रहने में मदद फरमाता है और ये विवेक अल्लाह का है जो महाज्ञानी है।

يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَن يَشَاء وَمَن يُؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلاَّ أُوْلُوا الأَلْبَابِ {269}

वह जिसको चाहता है हिकमत अता फ़रमाता है और जिसको से हिकमत अता की गई तो इसमें संदेह नहीं कि उसे ख़ूबियों से बड़ी दौलत हाथ लगी और अक़्लमन्दों के सिवा कोई नसीहत मानता ही नहीं (२६९)

व्याख्याः- वो पवित्र विवेक जो मनुष्य को सुझ-बूझ और ज्ञान देकर उसको अच्छाई, तरक्की और शांति बक्षते है और सच्चा ज्ञान पवित्र विवेक वाले ही समझते है और ऐसा विवेक अल्लाह वाला होता है। सच्चा ज्ञान और शांति दुनिया की सब चीजों से उत्तम है।

وَمَا أَنفَقْتُم مِّن نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُم مِّن نَّذْرٍ فَإِنَّ اللّهَ يَعْلَمُهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ {270}

और तुम जो कुछ भी ख़र्च करो या कोई मन्नत मानो अल्लाह उसको ज़रूर जानता है और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा (२७०)

व्याख्याः- मनुष्य के सारे कर्मों का नतीजा उसके सामने आता है और जुल्म का नतीजा आखिर में बुरा ही होता है।

पैगामः- कर्म का दारोमदार नियत पर है यानी मानव चरित्र और कर्म मानव के विचार पर निर्भर करता है। इसलिए जो मनुष्य खर्च करता है उसका तरीका या नियत सही न हो इसका ज्ञान भी प्रकृति के पास है। अत्याचारी और अनाचारी को अल्लाह की सहायता प्राप्त नहीं होती।

إِن تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ وَإِن تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَيُكَفِّرُ عَنكُم مِّن سَيِّئَاتِكُمْ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ {271}

अगर ख़ैरात को ज़ाहिर में दो तो यह भी अच्छा है और अगर उसको छिपाओ और हाजतमन्दों को दो तो ये छिपा कर देना तुम्हारे सत्य में ज़्यादा बेहतर है और ऐसे देने को अल्लाह तुम्हारे पापों का कफ़्फ़ारा कर देगा और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है (२७१)

व्याख्याः- नेक काम खुद-बाखुद जाहिर हो जाता है। मनुष्य अपनी नेकी अगर खुद जाहिर करे तो वो घमंड में शूमार होती है। इसलिए अच्छे काम करो उसका नतीजा खुद-बाखुद सामने आ जायेगा। नतीजे की उम्मीद में ढोल पीटने वाला अहंकारी है। अगर मनुष्य खैरात या दान जाहिर किए बगैर छुपा कर करे तो यकीनन खैरात लेने वाले की इज्जात की हिफाजत होगी और अल्लाह मनुष्य के तमाम अमाल की खबर रखते है। लोगों के अंदर ईमानदारी, सही तरह से जकात अदा करना, रोजे की पाबंदी, समाज में ऊँच-नीच या भेदभाव न रहे तो यकीनन मानव समाज में दौलत की दान की जरूरत नहीं पड़ेगी। इसके साथ-साथ मनुष्य अपनी जरूरत से ज्यादा उत्वाकांक्षा को त्याग दें तो निश्चित रूप से समाज की अर्थव्यवस्था का संतुलन नहीं बिगड़ेगा। कुरान शरीफ लोगों को भींख मांगने पर प्रेरित नहीं करता।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَن يَشَاءُ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنفُسِكُمْ وَمَا تُنفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ اللَّهِ وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ {272}

उनका मंज़िले मक़सूद तक पहुँचाना तुम्हारा काम नही मगर हाँ अल्लाह जिसको चाहे मंज़िले मक़सूद तक पहुँचा दे और तुम जो कुछ सभ्य काम में ख़र्च करोगे तो अपने लिए और तुम अल्लाह की ख़ुशनूदी के सिवा और काम में ख़र्च करते ही नहीं हो तुमको भरपूर वापस मिलेगा और तुम्हारा हक़ न मारा जाएगा (२७२)

व्याख्याः- कोई किसी के अमाल का जिम्मेदारी नहीं और नेकी के रास्ते में किसी को ला खड़ा करना भी किसी की जिम्मेदारी नहीं, ये अल्लाह का काम है। मनुष्य के अच्छे काम का नतीजा उसे खुद मिलता है, मनुष्य को चाहिए की अल्लाह की दी हुई हिदायत के अनुसार अपने अमाल को कायम रखे और ये मनुष्य का हक है जो निष्फल नहीं होता।

पैगामः- मनुष्य के अंदर एक कूदरती फितरत है कि हर मनुष्य अपने ख्यालात और अपनी पसंद को सर्वश्रेष्ठ समझते है यहां तक कि मां-बेटा के ख्यालात भी नहीं मिलते। इन सारे मतभेद के बीच मनुष्य आपस में मिल जुलकर रहते है और यही अल्लाह का दिया हुआ इंसानी समाज है। इसलिए इस आयत में कहा गया है "किसी की काम की जिम्मेदारी किसी पर नहीं रखी गयी" यानी पूरी तरह से जमुहरियत (स्वतंत्रता)। मनुष्य का काम है नेक और सच्चाई को अपने ऊपर लागू करते हुए दूसरों को उसका लाभ समझा देना बाकी अल्लाह की मर्जी।

لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أُحْصِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ تَعْرِفُهُم بِسِيمَاهُمْ لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا وَمَا تُنفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ {273}

ख़ास उन हाजतमन्दों के लिए है जो अल्लाह की राह में घिर गये हो रूए ज़मीन पर चल नही सकते नावाक़िफ़ उनको सवाल न करने की वजह से अमीर समझते है तू तो उनकी सूरत से ताड़ जाये लोगों से चिमट के सवाल नहीं करते और जो कुछ भी तुम सभ्य काम में ख़र्च करते हो अल्लाह उसको ज़रूर जानता है (२७३)

व्याख्याः- वृद्ध और अपाहिज जो मांग नहीं सकते और मजबूर है, नादान ऐसे लोगों की मजबूरी को महसूस नहीं कर सकते लेकिन अच्छे नेक और परहेजगार लोग उनकी हालात को महसूस कर लेते है और जो खर्च करे उसे अल्लाह जानता है।

الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُم بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {274}

जो लोग रात को या दिन को छिपा कर या दिखा कर ख़र्च करते है तो उनके लिए उनका अज्र व सवाब उनके परवरदिगार के पास है और न उन पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वह आजुर्दा ख़ातिर होंगे (२७४)

व्याख्याः- जहां और जिस तरीके से वो खर्च करते है अल्लाह उसे जानता है और उनके लिए बेखौफ और शांति वाली जिन्दगी।

पैगामः- किसी भी दान में दान करने वाले की नियत छुपी रहती है और दान जाहिर हो जाता है। नियत और दान दोनों का मकसद एक होना चाहिए चाहे वो दिन के उजाले में करे या रात के अंधेरे में यानी खुशहाली के वक्त हो या कष्ट के वक्त। सुख हो या दुःख अपनी नियत और नेक असुलों को कभी भी बदलने न दे।

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَن جَاءَهُ مَوْعِظَةٌ مِّن رَّبِّهِ فَانتَهَىٰ فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {275}

जो लोग सूद खाते है वह खड़े न हो सकेंगे मगर उस शख़्स की तरह खड़े होंगे जिस को शैतान ने लिपट कर मख़बूतुल हवास बना दिया है ये इस वजह से कि वह उसके क़ायल हो गए कि जैसा बिक्री का मामला वैसा ही सूद का मामला हालाँकि बिक्री को तो अल्लाह ने हलाल और सूद को हराम कर दिया बस जिस शख़्स के पास उसके परवरदिगार की तरफ़ से नसीहत आये और वह बाज़ आ गया तो इस हुक्म के नाज़िल होने से पहले जो सूद ले चुका वह तो उस का हो चुका और उसका अम्र अल्लाह के हवाले है और जो मनाही के बाद फिर सूद ले तो ऐसे ही लोग जहन्नुम में रहेंगे (२७५)

व्याख्याः- जो कमाई किसी की मजबूरी के अधार पर हो वो सूद है और कारोबार से कमाया हुआ नफा (लाभ) है। किसी की मजबूरी का फायदा उठा कर आर्थिक लाभ कमाने वाले लोग (सूद खाने वाले) पापी है और उन्हें अल्लाह की तरफ से बुरा नतीजा। अल्लाह ने सूद को हराम और कारोबारी लाभ को हलाल किया जो इस बात से बेखबर थे उसे जानने के बाद अगर ये काम करे तो सूद उन पर हराम होगा और वो हमेशा जहन्नम में ही रहेंगे।

يَمْحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُرْبِي الصَّدَقَاتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ {276}

अल्लाह सूद को मिटाता है और ख़ैरात को बढ़ाता है और जितने नाशुक्रे पापगार है अल्लाह उन्हें दोस्त नहीं रखता (२७६)

व्याख्याः- किसी की मजबूरी में मदद करना सदका है और अल्लाह इसकी प्रेरणा देता है। किसी की मजबूरी से फायदा उठाकर सूद कमाने वाले न शूकरे और पापियों को अल्लाह द्वारा दी हुई शांति और आशीर्वाद हासिल नहीं होती।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {277}

जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किए और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ी और ज़कात दिया किये उनके लिए अलबत्ता उनका अज्र व उनके परवरदिगार के पास है और न तो उन पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वह रन्जीदा दिल होंगे (२७७)

व्याख्याः- जो लोग नेकी, परहेजगारी, मोहब्बत, माफी और इंसानियत को अपनाते है यानी नमाज पर कायम रहते है और समाज की तरक्की के लिए जकात अदा करते है उनका अजर (प्रतिफल) उनके रब के पास है और ऐसे लोग हर खौफ और गम से अजाद होते है।

पैगामः- इस आयत में नेकी, ईमान और नमाज इन तीनों किरदार को मनुष्य के लिए फर्ज बनाया। इन तीनों में एक गहरा रिश्ता है। मनुष्य का विवेक जब प्रेम, ज्ञान और भाईचारा से भर जाता है तब वह संयमी होता है इसके बाद अल्लाह के नियमों के आगे जब वो पुरी तरह से झुक जाता है यानी पुरी तरह उसे अपने ऊपर लागू करता है और उन नियमों को कबूल करता है तब उसकी नमाज होती है। अदृश्य शक्ति जिसे लोग अल्लाह या ईश्वर कहते है उसको अनुभव करते हुए उनकी सत्यता को अनुभव करता है तब वो ईमान लाता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {278}

ऐ ईमानदारों अल्लाह से डरो और जो सूद लोगों के ज़िम्मे बाक़ी रह गया है अगर तुम सच्चे मोमिन हो तो छोड़ दो (२७८)

व्याख्याः- अंजाने में अगर कोई किसी की मजबूरी पर मदद करके फायदे की उम्मीद रखता हो तो उसकी हकीकत जानने के बाद उसे छोड़ दे, ऐसे लोग ही ईमान वाले है।

فَإِن لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِن تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُؤُوسُ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ {279}

और अगर तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने के लिये तैयार रहो और अगर तुमने तौबा की है तो तुम्हारे लिए तुम्हारा असल माल है न तुम किसी का ज़बरदस्ती नुकसान करो न तुम पर ज़बरदस्ती की जाएगी (२७९)

व्याख्याः- जो ऐसा न करे और किसी की मजबूरी से लगातार मुआइशी फायदा उठाता रहे वो अल्लाह और ईमान वालों से

लड़ाई के लिए तैयार रहे क्योंकि मजबूर मनुष्य को जुल्म से निजात दिलवाना ईमान वाले का कर्तव्य है चाहे उसके लिए उसे लड़ना ही क्यों न पड़े और जो लोग तौबा करे उनके अच्छे कर्मों का नतीजा अच्छा ही मिलेगा।

पैगामः- इस आयत में अल्लाह और रसूल के साथ लड़ाई का जिक्र किया गया है। आज की दुनिया में रसूल मौजूद नहीं है और कुरान की कोई भी आयत बातिल नहीं हो सकती इस लिहाज से इस आयत में "रसुल" का मतलब वो "लोग" यानी जिन्होंने रसूल के द्वारा अल्लाह की हिदायत पाई और उसे अपनाया।

وَإِن كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَى مَيْسَرَةٍ وَأَن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ {280}

और अगर कोई तंगदस्त तुम्हारा तो उसे खुशहाली तक मोहल्लत और सदका करो और अगर तुम समझो तो तुम्हारे सत्य में ज्यादा बेहतर है कि असल भी बख्श दो (२८०)

व्याख्याः- मजबूर मनुष्य को सहलुत से कर्ज उतारने में मोहलत दो। कर्ज को दान समझ कर छोड़ देना ज्यादा बेहतर है, ज्ञानी और नेक मनुष्य दूसरों की तकलीफ और मजबूरी को महसूस कर सकते है।

وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ {281}

और उस दिन से डरो जिस दिन तुम सब के सब अल्लाह की तरफ लौटाये जाओगे फिर जो कुछ जिस शख्स ने किया है उसका पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उनकी जरा भी सत्य तलफी न होगी (२८१)

व्याख्याः- हर मनुष्य को अपने काम का नतीजा खुद भुगतना होगा। मनुष्य को उसकी कष्टदायक मौत से डरा कर उसके अमाल को नेकी की राह पर चलाना होगा, अल्लाह का अदल और इंसाफ हर मनुष्य के लिए बराबर है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنتُم بِدَيْنٍ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ وَلْيَكْتُب بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ وَ ـيَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا فَإِن كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ ـ يَسْتَطِيعُ أَن يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ ـن رِّجَالِكُمْ فَإِن لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّن تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَن تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى وَ ـيَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا وَ ـتَسْأَمُوا أَن تَكْتُبُوهُ صَغِيرًا أَو كَبِيرًا إِلَى أَجَلِهِ ذَلِكُمْ أَقْسَطُ عِندَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَى أَلَّا تَرْتَابُوا إِلَّ أَن تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ وَإِن تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ {282}

ऐ ईमानदारों जब एक मियादे मुक़र्रा तक के लिए आपस में क़र्ज़ का लेन देन करो तो उसे लिखा पढ़ी कर लिया करो और लिखने वाले को चाहिये कि तुम्हारे दरम्यिान तुम्हारे क़ौल व क़रार को, इन्साफ़ से ठीक ठीक लिखे और लिखने वाले को लिखने से इन्कार न करना चाहिये जिस तरह अल्लाह ने उसे सिखाया है उसी तरह उसको भी वे उज्र लिख देना चाहिये और जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ आयद होता है उसी को चाहिए कि की इबारत बताता जाये और अल्लाह से डरे जो उसका सच्चा पालने वाला है डरता रहे और और क़र्ज़ देने वाले के हुक़ूक़ में कुछ कमी न करे अगर क़र्ज़ लेने वाला कम अक़्ल या माज़ूर या खुद का मतलब लिखवा न सकता हो तो उसका सरपरस्त ठीक ठीक इन्साफ़ से लिखवा दे और अपने लोगों में से जिन लोगों को तुम गवाही लेने के लिये पसन्द करो दो मर्दों की गवाही कर लिया करो फिर अगर दो मर्द न हो तो एक मर्द और दो औरतें उन दोनों में से अगर एक भूल जाएगी तो एक दूसरी को याद दिला देगी, और जब गवाह हुक्काम के सामने बुलाया जाएँ तो हाज़िर होने से इन्कार न करे और क़र्ज़ का मामला ख़्वाह छोटा हो या उसकी मियाद मुअय्युन तक की लिखवाने में काहिली न करो, अल्लाह के नज़दीक ये लिखा पढ़ी बहुत ही मुन्सिफ़ाना कारवाई है और गवाही के लिए भी बहुत मज़बूती है और बहुत क़रीन है कि तुम आईन्दा किसी तरह के संदेह व शुबहा में न पड़ो मगर जब नक़द सौदा हो जो तुम लोग आपस में उलट फेर किया करते हो तो उसकी के न लिखने में तुम पर कुछ इल्ज़ाम नहीं है और जब उसी तरह की ख़रीद हो तो गवाह कर लिया करो और क़ातिब और गवाह को ज़रर न पहुँचाया जाए और अगर तुम ऐसा कर बैठे तो ये ज़रूर तुम्हारी शरारत है और अल्लाह से डरो अल्लाह तुमको मामले की सफ़ाई सिखाता है और वह हर वस्तु को ख़ूब जानता है (२८२)

व्याख्याः- १. कर्ज के लेन-देन में लिखना जरूरी है और ये ईमान की निशानी है। इस लिखने को कर्ज लेने वाला, कर्ज देने वाला और लिखने वाला हक के साथ उसका एहतराम करे।

२. जो लिखने से मजबूर हो वो अपना उत्तरदायी नियुक्त करें और हक के साथ लिखवाये और दो मर्दों को गवाही के लिए नियुक्त करें और अगर दो मर्द न हो तो एक मर्द और दो औरतों को गवाही के लिए नियुक्त करें।
एक मर्द को दो औरतों के बराबर किया गया है वो क्यों? क्या औरतें कम देखती है, कम सुनती है या जहनी तौर पर मर्दों से कमजोर है। नहीं ! बल्कि औरतें प्राकृतिक तौर पर मर्दों से ज्यादा जजबाती और रहम दिल है गवाही के वक्त जजबात में बहकर अगर वो इंसाफ से हट जाए तो हक गुमराह होगा इसलिए एक मर्द के बदले दो औरतों की गवाही का जिक्र किया गया है।
३. गवाह हक पर गवाही देने से इनकार न करें और न डरें ।
४. नकद खरीदनें और बेचने पर भी गवाही मुकर्रर कर लिया करे।
५. लिखने वाले और गवाह को डराना या धमकान सख्त पाप है।
इस तरह अल्लाह अपने अपदेश लोगों को देता है ताकि उनका आपसी मतभेद मिट जाए और किसी से न इंसाफी न हो।
وَإِن كُنتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهَانٌ مَّقْبُوضَةٌ فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ وَمَن يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ آثِمٌ قَلْبُهُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ {283}
और अगर तुम सफ़र में हो और लिखने वाला न पाओ तो रहन कब्ज़ा में रख लिया करो हां अगर आपस में एक दूसरे से संतुष्ट हो तो जिसे अमानत दी गई है वो उसे अदा कर दे और अल्लाह ताला से डरता रहे जो उसका रब है और गवाही न छुपाओ और जो छिपाये वो गुनहगार है और जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह ताला खूब जानता है (२८३)
व्याख्याः- अगर कोई सफर में हो और लिखने वाला न हो तो कोई चीज गिरवी रखकर कर्जा दिया करो। एक-दूसरें पर भरोसा रखो और ईमानदारी के साथ अमानत लौटा दो और अल्लाह से डरते रहा करो जो सबका रब है और अल्लाह सब जानने-सुनने वाला है।
इन सारी आयतों का पैगाम २८०-२८१-२८२-२८३, दो किस्म के मनुष्य कर्ज लेते है एक मजबूर मनुष्य और दूसरा अपनी ख्वाहिसात से मजबूर होकर। जो मजबूरी से कर्ज लेते है अगर उस कर्ज से उनको मजबूरी से निजात हासिल होती है तो यकीनन कर्ज देने वाले को नियुक्त वक्त पर कर्ज अदा कर देना चाहिए और अगर कर्ज लेने वाले की मजबूरी दूर नहीं हुई हो तो कर्ज देने वाले को दान समझकर छोड़ देना चाहिए। मगर मौखिक तौर पर कर्ज देने वालों को याद दिलाता रहे ताकि कर्ज लेने वाला इसको आदत न बना डाले। कर्ज देने वाला कर्ज लेने वाले को याद दिलाते वक्त हद से आगे न बढ़े ताकि ज्यादती न हो।
لِّلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِن تُبْدُوا مَا فِي أَنفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُم بِهِ اللَّهُ فَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {284}
जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब कुछ अल्लाह ही का है और जो कुछ तुम्हारे दिलों में हे ख़्वाह तुम उसको ज़ाहिर करो या उसे छिपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा, फिर जिस को चाहे बख़्श दे और जिस पर चाहे अज़ाब करे, और अल्लाह हर वस्तु पर क़ादिर है (२८४)
व्याख्याः- ब्राह्माण्ड की सारी चीजे अल्लाह के इख्तियार में है वो मनुष्य के दिलों में छिपा हुआ और उपस्थित सब जानता है, राजा और जजा का मालिक है और हर चीज पर कादिर है।
آمَنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِن رَّبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّن رُّسُلِهِ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ {285}
हमारे पैग़म्बर जो कुछ उनपर उनके परवरदिगार की तरफ से नाज़िल किया गया है उस पर ईमान लाए और उनके मोमिनीन भी सब अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाए हम अल्लाह के पैग़म्बरों में से किसी में तफ़रक़ा नहीं करते और कहने लगे ऐ हमारे परवरदिगार हमने सुना और मान लिया परवरदिगार हमें तेरी ही मग़फ़िरत की और तेरी ही तरफ़ लौट कर जाना है (२८५)
व्याख्याः- रसुलों ने अल्लाह के नियमों और उनकी दी हुई प्रकृति को अनुभव किया, पहचाना (यानी अपनाया) और ईमान लाये और लोगों को इस एहसास को बताया और जिन लोगों ने उसे अपनाया वो मोमिन हुए और उन लोगों को अल्लाह उनके तमाम फरिश्ते (कूदरत का हर पहलू) और हिदायत वाली किताबों और इन किताबों को बयांन करने वाले रसुलों पर ईमान लाये और उन तमाम रसुलों (सच्चाई बताने वाले) में कोई फर्क नहीं रखते। रसुलों ने लोगों को समझाया और नेक

ईमान वाले मनुष्यों ने सुना और उसे अपनाया और अपनी अमली जिंदगी में लागू किया। नेक लोग ही अल्लाह के असुलों पर चलते है और उनकी प्रकृति का लुत्फ उठाते है।

पैगामः- सारे रसुलों ने पीढ़ी दर पीढ़ी एक ही हिदायत लोगों के दरमियांन फैलाई और लोगों ने उसे गुमराह करके रसुलों के नाम पर अलग-अलग सम्प्रदाय में बट गये। लोगों के दरमियान इसी फिरका परस्ती (जातिवाद) को मिटाने के लिए कुरान के इस आयत के जरिए तमाम रसुलों पर ईमान लाकर फिरका परस्ती जैसे पाप से मनुष्यी समाज को मुक्त करने का पैगाम लोगों को दिया गया।

لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا إِن نَّسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ وَاعْفُ عَنَّا وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا أَنتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ {286}

अल्लाह किसी को उसकी ताक़त से ज़्यादा तकलीफ़ नहीं देता उसने अच्छा काम किया तो अपने नफ़े के लिए और बुरा काम किया तो उसी पर पड़ेगा ऐ हमारे परवरदिगार अगर हम भूल जाऐं या ग़लती करें तो हमारी गिरफ़्त न कर ऐ हमारे परवरदिगार हम पर वैसा बोझ न डाल जैसा हमसे अगले लोगों पर बोझा डाला था, और ऐ हमारे परवरदिगार इतना बोझ जिसके उठाने की हमें ताक़त न हो हमसे न उठवा और हमारे क़ुसूरों से दरगुज़र कर और हमारे पापों को बख़्श दे और हम पर रहम फ़रमा तू ही हमारा मालिक है तू ही काफ़िरों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर (२८६)

व्याख्याः- अल्लाह ताला किसी भी प्राणी को उसके बर्दास्त से ज्यादा तकलीफ नहीं देते और हर मनुष्य अपनी अच्छाई और बुराई का खुद जिम्मेदार है। मनुष्य ये प्रतिज्ञा और प्रार्थना करें की अंजाने में कोई गलती हो तो हमें माफ किया जाए। हम पर वो अज्ञानता का बोझ न डालें जो गैर तहजीब याफता लोगों पर डाला था, हमारी क्षमता और शक्ति के मुताबिक हमें चलाओ और हमें पापियों पर गालिब रखो और पाप मुक्त समाज बनाने में हमारी सहायता करो।

पैगामः- अंजाने में जो भुल हुई हो उसे गलती कहते है और वो माफी का हक रखती है और जान-बूझकर गलती करने को गुनाह यानी पाप कहते है जिसकी कोई माफी नहीं होती।

सूरा-आले-इमरान

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है
शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्षमाकारी है।

الم {1}

अलिफ़ लाम मीम अल्लाह ही वह अल्लाह है जिसके सिवा कोई क़ाबिले परस्तिश नहीं है (१)

اللهُ لا إلـهَ إلاّ هُوَ الحَيُّ القَيُّومُ {2}

वही ज़िन्दा और सारे जहान का सँभालने वाला है (२)

व्याख्याः- अल्लाह के अलावा कोई भी इबादत का मुकाम नहीं है। वो अजय, अनंत, अमर और सबका निगेबान है।

पैगामः- वैज्ञानिकों ने अल्लाह का अमर, अनंत और अजय (लामहदूद, लाफानी और लाजवाल) अस्तित्व को प्रमाणित कर चुके। एटम की अन्दर की ताकत जो सृष्टि के हर अणु-परमाणु में उपस्थित है और हर परिवर्तन विनाश और सृष्टि का मालिक है। उसकी कोई शक्ल नहीं मगर उसके द्वारा हर शक्ल की श्रृष्टि होती है। तमाम वस्तु का निगेबान है सिर्फ और सिर्फ उन्हीं की इबादत यानी पुजा छोड़ कर किसी की पुजा मानव का व्यहम है।

نَزَّلَ عَلَيْكَ الكِتَابَ بِالحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَاةَ وَالإِنجِيلَ {3}

उसी ने तुम पर बरहक़ किताब नाज़िल की जो उसके सामने मौजूद है उनकी तसदीक़ करती है और उसी ने उससे पहले लोगों की हिदायत के वास्ते तौरेत व इन्जील नाज़िल की (३)

व्याख्याः- सत्य, ज्ञान के प्रकाश के साथ-साथ अल्लाह ने मानव समाज में अपनी वाणी को पुस्तक की शक्ल दी यानी मानव को सुख-शान्ति के साथ जीने की तरकीब और अल्लाह की मर्जी से मानव ने उसे कुरान शरीफ, इंजील और तौरायत का नाम दिया।

पैगामः- मानव को सुख-शान्ति से जीने की तरकीब और ज्ञान हर भाषा और हर जगह में अल्लाह ने मानव को प्रदान किया।

مِن قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الفُرْقَانَ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ {4}

और हक़ व बातिल में तमीज़ देने वाली किताब नाज़िल की बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों को न माना उनके लिए सख़्त अज़ाब है और अल्लाह हर चीज़ पर ग़ालिब बदला लेने वाला है (४)

व्याख्याः- मानव के जरिए ही अल्लाह ताला मानवों को हिदायत करते है (यानी मानव के जरिए अपनी कानून लागू करते है कुरान शरीफ के जरिया) जो मानव अल्लाह के असूलों को इनकार करते है उन्हें यकीनन बदसकूनी की शख्त तकलीफ।

إِنَّ اللهَ لا يَخْفَى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الأَرْضِ وَلا فِي السَّمَاءِ {5}

बेशक अल्लाह पर कोई चीज़ पोशीदा नही है न ज़मीन में न आसमान में (५)

व्याख्याः- जब अल्लाह से ही (यानी एटमिक शक्ति) कायनात की सारी चीजें बनती है तो यकीनन अल्लाह से कोई चीज भी छुपी नहीं रह सकती।

هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ لا إِلـهَ إِلاّ هُوَ العَزِيزُ الحَكِيمُ {6}

वही तो वह अल्लाह है जो माँ के पेट में तुम्हारी सूरत जैसी चाहता है बनाता है उसके सिवा कोई माबूद नहीं (६)

व्याख्याः- औरत के पेट में प्राकृतिक तौर पर बच्चा अपनी शकल इख्तियार करता है और ज्यादा से ज्यादातर बच्चे एक दूसरे से अलग शकल के होते है।

पैगामः- हर शक्ल का मालिक अल्लाह है इसके अलावा कोई भी माबूद नहीं, अल्लाह के द्वारा ही सृष्टि, परिवर्तन और विनाश संघटित होता है और हर क्रिया-प्रक्रिया का मालिक अल्लाह ही है।

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الكِتَابَ مِنْهُ آيَاتٌ مُّحْكَمَاتٌ هُنَّ أُمُّ الكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَابِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ الفِتْنَةِ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلاّ اللهُ وَالرَّاسِخُونَ فِي العِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِندِ رَبِّنَا وَمَا يَذَّكَّرُ إِلاّ أُولُوا الأَلْبَابِ {7}

वही ग़ालिब और दाना है जिसने तुमपर किताब नाज़िल की उसमें की बाज़ आयतें तो मोहकम है वही असल किताब है और कुछ मुतशाबेह पस जिन लोगों के दिलों में कज़ी है वह उन्हीं आयतों के पीछे पड़े रहते है जो मुतशाबेह है ताकि फ़साद बरपा करें और इस ख़्याल से कि उन्हें मतलब पर ढाले लें हालाँकि अल्लाह और उन लोगों के सिवा जो इल्म से बड़े पाए पर फ़ायज़ हैं उनका असली मतलब कोई नहीं जानता वह लोग कहते है कि हम उस पर ईमान लाए सब हमारे परवरदिगार की तरफ़ से है और अक्ल वाले ही समझते है (७)

व्याख्याः- वही अल्लाह जिसने अपने असुलों को किताब की शक्ल में इंसानों के दरमियान मौजूद रखा, और दुनिया में कुछ कूदरत जो इंसान के सामने जाहिर है और कुछ कूदरत ऐसी है जो इंसान के लिए राज है, जिनके दिलों में मैल है वो अल्लाह के कूदरती राजों से इंसान को धोखा देते है, फसाद और अपनी मुआयशी फायदे के लिए। हकीकत तो यह है कि इन सारी बातों की सच्चाई अल्लाह जानता है आलीम (विद्वान) इसपर ईमान लाते है और इससे नसीहत हासिल करके अपनी अमली जिन्दगी में लागू करते है और नेक लोग सत्य ज्ञान को अल्लाह की कूदरत समझते है।

पैगामः- अगर कुरानी आयतें सारे मानवों के लिए है तो फिर साफ मजबूत आयतें और मुतशाबा आयतें कुरान में क्यों है, अगर मुतशाबा आयतें सिर्फ विद्वानों के लिए है तो आम मानव किस तरह उससे फायदा हासिल करेगा और अगर ये आम लोगों के लिए नहीं है तो क्यों कुरान शरीफ में कहा गया है ''मानव के लिए कुरान आसान किया'' और इसे समझ कर पढ़े, ये आयत पूरी तरह से अल्लाह की ''कूदरत'' की तरफ इशारा करती है, जिसका कुछ हिस्सा मानव की जानकारी में है और कुछ यानी ज्यादा से ज्यादा हिस्सा अभी तक राज है।

رَبَّنَا لاَ تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِن لَّدُنكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ {8}

ऐ हमारे पालने वाले हमारे दिल को हिदायत करने के बाद टेढ़े न कर और अपनी बारगाह से हमें रहमत अता फ़रमा इसमें तो शक ही नहीं कि तू बड़ा देने वाला है (८)

व्याख्याः- लोग दुआ करे की हकीकत समझने और महसूस करने के बाद भटक न जाये और अल्लाह अपने पास की हकीकत की जानकारी हमें दे और हमपर कृपा करे।

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لاَّ رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللّهَ لاَ يُخْلِفُ الْمِيعَادَ {9}

ऐ हमारे परवरदिगार बेशक तू एक न एक दिन जिसके आने में शुबह नहीं लोगों को इक्ट्ठा करेगा बेशक अल्लाह अपने वायदे के ख़िलाफ़ नहीं करता (९)

व्याख्याः- ऐ ईश्वर तुम जरूर लोगों को पापियों के खिलाफ इकट्ठा करोगे जिस पर कोई संदेह नहीं और यही अल्लाह का वादा है जो कभी नष्ट नहीं होता।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلاَ أَوْلاَدُهُم مِّنَ اللّهِ شَيْئًا وَأُولَـئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ {10}

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया इख़्तेयार किया उनको अल्लाह से न उनके माल ही कुछ बचाएंगे, न उनकी औलाद और यही लोग जहन्नुम के ईधन होंगे (१०)

व्याख्याः- काफिर यानी अल्लाह के हुकुम को ठुकरा कर पाप करने वालों की दौलत और उनकी औलाद अल्लाह की दी हुई शांति हासिल करने में काम न आयेगी। ये अशांति के जहन्नम का ईंधन है।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَأَخَذَهُمُ اللّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَاللّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ {11}

क़ौमे फ़िरऔन और उनसे पहले वालों की सी हालत है कि उन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों की सज़ा में ले डाला और अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है (११)

व्याख्याः- मिश्र के राजा फिरौन की दौलत और उसका अहंकार उसे शांति नहीं दिला सका और उनसे पहले वाले अहंकारी दौलतमंदों को भी उनकी दौलत उन्हें सकून हासिल करवाने में नाकाम रही, ऐसे लोगों ने अल्लाह की कूदरत (यानी नेकी परहेजगारी, मोहब्बत और शांति) को झुठलाया तो अल्लाह ने इन्हें अशांति के अजाब से घेर लिया।

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا سَتُغْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَى جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمِهَادُ {12}

जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उनसे कह दो कि बहुत जल्द तुम मग़लूब होंगे और जहन्नुम में इकट्ठे किये जाओगे और वह बुरा ठिकाना है (१२)

व्याख्याः- अल्लाह के हुकुम को ठुकराने वाले (काफिर) जान ले उन्हें जरूर अशांति के कष्ट से गुजरना होगा और वो बहुत बुरी जगह है।

قَدْ كَانَ لَكُمْ آيَةٌ فِي فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَى كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُم مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهِ مَن يَشَاءُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ {13}

बेशक तुम्हारे वास्ते उन दो सम्प्रदायों में जो एक दूसरे के साथ गुथ गए बड़ी भारी निशानी है कि एक सम्प्रदाय अल्लाह की राह में जेहाद करता था और दूसरा काफ़िरों का जिनको मुसलमान अपनी आँख से दुगना देख रहे थे और अल्लाह अपनी मदद से जिस की चाहता है ताईद करता है बेशक आँख वालों के वास्ते इस वाक़ये में बड़ी इबरत है (१३)

व्याख्याः- मानव के बीच दो सम्प्रदाय है एक नेक, परहेजगार, मोहब्बत, इंसानियत और शांति चाहने वाले गिरोह जिसने हमेशा समाज में अच्छाई को कायम करने के लिये परिश्रम करते है और दूसरा गिरोह जो हमेशा उसे बिगाड़ने पे लगा हुआ है। नेक गिरोह कभी-कभी काफिरों की शक्ति को अपने से दुगना समझते है। अल्लाह की मदद हमेशा नेकों के साथ है। पवित्र अन्तर्आत्मा वाले मानव इस बात को अनुभव कर सकते है।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ الْمُقَنطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الْمَآبِ {14}

दुनिया में लोगों को उनकी मरग़ूब चीज़े बीवियों और बेटों और सोने चाँदी के बड़े बड़े लगे हुए ढेरों और उम्दा उम्दा घोड़ों और मवेशियों ओर खेती के साथ उलफ़त भली करके दिखा दी गई ये सब दुनयावी ज़िन्दगी के फ़ायदे हैं और अच्छा ठिकाना अल्लाह के यहाँ है (१४)

व्याख्याः- लोगों के लिए पसंदीदा चीजों की मोहब्बत, संभोग (औरत) कमाने वाली औलाद, दौलत, गाड़िया, (घोड़े) और अच्छी आमदनी (चौपाई और खेती)। ये लोगों की दुनियावी चाहत, लेकिन शांति की तरफ लौटने का ठिकाना सिर्फ अल्लाह के पास ही है।

पैगामः- यानी प्रकृति ही मानव को सुख, शान्ति और चैन देती है।

قُلْ أَؤُنَبِّئُكُم بِخَيْرٍ مِّن ذَٰلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ {15}

उन लोगों से कह दो कि क्या मैं तुमको उन सब चीज़ों से बेहतर चीज़ बता दूँ जिन लोगों ने परहेज़गारी इख़्तेयार की उनके लिए उनके परवरदिगार के यहाँ के वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं हमेशा उसमें रहेंगे और उसके अलावा उनके लिए साफ़ सुथरी बीवियाँ हैं और अल्लाह की ख़ुशनूदी है और अल्लाह उन बन्दों को खूब देख रहा हे जो दुआऐं माँगा करते हैं (१५)

व्याख्याः- नेक लोग अच्छी बातें लोगों को बयान करे और परहेजगारी, मोहब्बत करने वाले लोगों के लिए शांति वाली जिन्दगी और आराम वाली मौत के बाद रुह की तसल्ली । जिसके नीचे सुकुन की बुनियाद (नहर) और नेक साथी और कूदरत की रजामंदी और तमाम मखलूक कूदरत की दायरे में है यानी अल्लाह की निगाह में है।

पैगामः- कुरान शरीफ सिर्फ मर्दों के लिए नहीं है इसलिए ''संभोग के लिए औरत और जन्नत में पाकिजा बीवियां'' इन सारी बातों का एक अलग मक्सद है जो आयतों में हम (सिद्धार्थ चटर्जी) बयान कर चुके और ये इसलिए की समाज में मर्दों की हुकुमत को मुद्दे नजर रखते हुए इन शब्दों का प्रयोग किया गया है ताकि दुनियां में मर्द अपनी ताकत का गलत इस्तेमाल न करे।

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا إِنَّنَا آمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ {16}

कि हमारे पालने वाले हम तो इमान लाए हैं पस तू भी हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमको दोज़ख़ के अज़ाब से बचा (१६)

व्याख्याः- कुछ लोग कुछ नेक काम करने के बाद दावा करते है कि वो ईमान ला चुके और नेक बन गये और तकलीफों के आजाब से निजात (मुक्ति) की उम्मीद रखते है।

पैगामः- ऐसे लोग प्रार्थना करते है पाप से मुक्ति और शान्ति वाले जीवन की।

الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْقَانِتِينَ وَالْمُنفِقِينَ وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ {17}

सब्र करने वाले और सच बोलने वाले और फ़रमाबरदार और ख़र्च करने वाले और पिछली रातों में इस्तग़फ़ार करने वाले (१७)

व्याख्याः- सबर करने वाले, सच्चाई की राह पर चलने वाले, अल्लाह के असुलों की फरमा बरदारी करने वाले, समाज के लिए मेहनत और दौलत खर्च करने वाले और सच्चाई जानने से पहले किए गये (पीछली रात) गुनाह की बक्शीश चाहने वाले।

पैगामः- इस आयत में ''पीछली रात के अंधेरे'' के साथ अंजाने में की गई उन गलतियों की तुलना की गई है जिसका उन्हें एहसास हो चुका हो।

شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لا إِلـهَ إِلاَّ هُوَ وَالْمَلائِكَةُ وَأُوْلُوا الْعِلْمِ قَائِمَا بِالْقِسْطِ لا إِلـهَ إِلاَّ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ {18}

ज़रूर अल्लाह और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने गवाही दी कि उसके सिवा कोई माबूद क़ाबिले परसतिश नहीं है और वह अल्लाह अद्ल व इन्साफ़ के साथ सँभालने वाला है उसके सिवा कोई माबूद नही ग़ालिब और दाना है दीन तो अल्लाह के नज़दीक यक़ीनन इस्लाम है (१८)

व्याख्याः- प्रकृति और विद्वान गवाही देते है कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं यानी हर पहलू का मालिक अल्लाह है। तमाम चीजों को कायम रखने वाली शक्ति (एटमिक पॉवर) उसी की है, इसके असुलों के अलावा दूसरा कोई असुल नहीं।

إِنَّ الدِّينَ عِندَ اللَّهِ الإِسْلامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِ لاَّ مِن بَعْدِ مَا جَاءهُمُ الْعِلْمُ بَغْيَا بَيْنَهُمْ وَمَن يَكْفُرْ بِآيَاتِ اللـهِ فَإِنَّ اللَّهِ سَرِيعُ الْحِسَابِ {19}

और अहले किताब ने जो उस दीने हक़ से इख़्तेलाफ़ किया तो महज़ आपस की शरारत और असली मालूम हो जाने के बाद और जिस शख़्स ने अल्लाह की निशानियों से इन्कार किया तो यक़ीनन अल्लाह बहुत जल्दी हिसाब लेने वाला है (१९)

व्याख्याः- बेशक अल्लाह के नजदीक उनके असुलों के आगे गर्दन झुका कर अमनों चैन, मोहब्बत, इंसानियत, नेकी, इल्म, अहिंसा और परहेजगारी अपनाना ही सच्चा दीन यानी ''इस्लाम'' है और अल्लाह की असुल वाली पुस्तक की जानकारी मिलने के बाद लोग आपस के ख्यालात के इख्तिलाफात में उलझ गये। जिस किसी ने अल्लाह की असुलों के साथ न इंसाफी करने की कोशिश की उसके बुरे नतीजे का सामना करना पड़ता है।

पैगामः- जो लोग अल्लाह की रोशन और साफ सच्चाई हासिल करने के बाद भी अपने मकसद और लालच के बस में आकर अल्लाह के असुलों को गलत साबित करने की कोशिश करते है और अपने ख्यालात को कामियाबी देने के लालच में फसाद फैलाते है, वही लोग अशांति की तकलीफ की घेरे में रहते है। अल्लाह अपने असुलों की निशानी इंसानी समाज में साफ और सीधे तौर पर रखते आये है, नासमझ मानव अपनी उत्वाकांक्षा के वश में आकर अपने हाथों अपने सुकुन को बिगाड़ते है।

सवालः- वर्तमान तर्जूमा के मुताबिक सवाल आता है कि अगर किसी को सच्ची हिदायत मिलती है तो वो फसाद क्यों करेगा, ये आयत उन मानवों के लिए है जो अपनी लालच और गलत ख्वाहिशात के बस में है।

فَإِنْ حَآجُّوكَ فَقُلْ أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ وَقُل لِّلَّذِيـــنَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالأُمِّيِّـــنَ أَأَسْلَمْتُمْ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوا وَّإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلاغُ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ {20}

पस अगर ये लोग तुमसे हुज्जत करे तो कह दो मैंने अल्लाह के आगे अपना सरे तस्लीम ख़म कर दिया है और जो मेरे ताबे है और ऐ रसूल तुम एहले किताब और जाहिलों से पूँछो कि क्या तुम भी इस्लाम लाए हो पस अगर इस्लाम लाए है तो बेख़टके राहे रास्त पर आ गए और अगर मुँह फेरे ता तुम पर सिर्फ़ पैग़ाम पहुँचा देना फ़र्ज़ है और अल्लाह देख रहा है (२०)

व्याख्याः- फिर भी कुछ लोग अगर शांति, अहिंसा, प्रेम और ज्ञान के रास्ते पर चलने वाले लोगों के साथ झगड़े तो शांति चाहने वाले लोग और उनके साथी (जो अल्लाह के असुलों पर चलते है) कहते है इन लोगों ने अल्लाह के आदर्श के आगे पूरी तरह से गर्दन झुकायी, यानी इसे पूरे दिलोंदिमाग से अपनाया और अपनी जिन्दगी में लागू किया। जुबान से पुस्तक की ताबेदारी करने वाले लोग और अनपढ़ लोग सच्चे दिल से अगर अल्लाह के असुलों को समझे और अपनी जिन्दगी में इस्तेमाल करे तो यकीनन वो हिदायत पाने वाले खुशकिसमत होंगे। अगर इस बात से इनकार करें तो नेक लोगों का काम है सिर्फ सच्चाई और ज्ञान की बातें पहुँचाना और अल्लाह उनके अमाल से खुब वाकीफ है।

إِنَّ الَّذِيـنَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللـهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيِّـنَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِيـنَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِـيمٍ {21}

बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों से इन्कार करते है और नाहक़ पैग़म्बरों को क़त्ल करते है और उन लोगों को

क़त्ल करते हैं जो इन्साफ़ करने का हुक्म करते हैं तो तुम उन लोगों को दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो (२१)

व्याख्याः- जो लोग अल्लाह के असुलों को इनकार करते है और नबियों के ख्यालात को कत्ल (बिगाड़ते और मिटाते) करते है और जो लोग नेकी, परहेजगारी, सच्चाई, अहिंसा, ज्ञान और न्याय की बात करने वालों को कत्ल करते है, ऐसे लोगों को अल्लाह की तरफ से अशांति के दर्दनाक अजाब की खबर दे दो।

أُولَـئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ {22}

यही वह लोग हैं जिनका सारा किया कराया दुनिया और आख़ेरत में आखेरत गया और कोई उनका मददगार नहीं (२२)

व्याख्याः- ऐसे लोगों के अमाल दुनिया और आखेरत में बेकार होंगे और उनका कोई मददगार नहीं।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَى كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّى فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُم مُّعْرِضُونَ {23}

क्या तुमने के हाल पर नज़र नहीं की जिनको किताब का एक हिस्सा दिया गया था उनको किताबे अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि वही उनके झगड़े का फैसला कर दे इस पर भी उनमें का एक सम्प्रदाय मुँह फेर लेता है और यही लोगमुँह फेरने करने वाले हैं (२३)

व्याख्याः- क्या लोग नहीं समझते है कि कूदरत के बारे में सिर्फ कुछ जानकारी ही उन्हें हासिल हुई (पुस्तक का कुछ हिस्सा) और इस हकीकत को साबित करने के लिये जब लोग बुलाये जाते है फिर भी कुछ लोग इस हकीकत को इनकार करते है, मिसाल के तौर पर पहले के लोग समझते थे कि सूरज दुनिया के ईद-गिद घूमती है लेकिन जब गलेलू ने कहां कि सूरज के बजाये दुनिया घूमती है तो लोगों ने उस हकीकत को नहीं समझा और इनकार किया, लेकिन बाद में अल्लाह ने विज्ञान के जरिया इस हकीकत को जाहिर किया और लोगों के सामने साबित किया। वक्त के साथ-साथ मानव का ज्ञान भी अल्लाह की मर्जी से पुर्वरौनक होता गया।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلاَّ أَيَّامًا مَّعْدُودَاتٍ وَغَرَّهُمْ فِي دِينِهِم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ {24}

ये इस वजह से है कि वह लोग कहते है कि हमें गिनती के चन्द दिनों के सिवा जहन्नुम की आग हरगिज़ छुएगी भी तो नहीं जो इफ़तेरा परदाज़ी ये लोग बराबर करते आए है उसी ने उन्हें उनके दीन में भी धोखा दिया है (२४)

व्याख्याः- ऐसे लोग गलत फैमि में है कि इन्हें गिनती के चंद दिन ही जहालात के अंधेरे में रहना पड़ेगा (अपने आपको विद्वान समझने वाले लोग जिन्हें सच्चाई का ज्ञान नहीं) उनकी इस गलत फैमि ने उन्हें सच्चाई से दूर कर दिया और बनावटी धोखे में रखा है।

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَاهُمْ لِيَوْمٍ لاَّ رَيْبَ فِيهِ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لاَ يُظْلَمُونَ {25}

फ़िर उनकी क्या गत होगी जब हम उनको एक दिन जिसके आने में कोई शुबहा नहीं इक्ट्ठा करेंगे और हर शख़्स को उसके किए का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा और उनकी हक़तल्फ़ी नहीं की जाएगी (२५)

व्याख्याः- हर मानव को अपने किये की सजा और जजा खुद भुगतनी पड़ती है। खुदगर्जों की तरह मानव अपने ऐशों आराम के वश में आकर कूदरत का गलत इस्तेमाल करते आ रहे है और नतीजतन कूदरत में आलूदगी (प्रदूषण) की बढ़ोतरी। एक न एक दिन ऐसा जरूर आयेगा जब दुनिया फना हो जाएगी और इसका जिम्मेदार मानव खुद होगा और उस वक्त मानव की क्या हालात होगी वो खुद महसूस करेगा।

पैगामः- ओजन लेयर के फटने की मुख्य वजह है आलूदगी और जो लोग इस बात को नहीं समझते वही लोग खास जिम्मेदार होंगे इस कयामत और प्रलय की और भुगतना पड़ेगा सारे प्राणियों को। इस आयत में कहा गया है "हर किसी को अपने किये की सजा व जजा मिलेगी"। इस हिसाब से ऐशों आराम में डूबे हुए लोगों को जहनी तकलीफ होगी अपनी मौत पर और परहेजगारों को शांति की मौत मिलेगी।

قُلِ اللَّهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاء وَتَنزِعُ الْمُلْكَ مِمَّن تَشَاء وَتُعِزُّ مَن تَشَاء وَتُذِلُّ مَن تَشَاء بِيَدِكَ الْخَيْرُ إِنَّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {26}

तुम तो यह दुआ माँगो कि ऐ अल्लाह तमाम आलम के मालिक तू ही जिसको चाहे सल्तनत दे और जिससे चाहे सल्तनत छीन ले और तू ही जिसको चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे हर तरह की भलाई तेरे ही हाथ में है बेशक तू ही हर चीज़ पर क़ादिर है (२६)

व्याख्याः- अल्लाह की कूदरत जिसे चाहे जिल्लत दे, जिसे चाहे इज्जत दे, किसी को राजा बना दे और किसी को फकीर। अल्लाह के बस में सब अच्छाईयां है और वो हर चीज पर कादिर है।

تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ {27}

तू ही रात को दिन में दाख़िल कर देता है रात बढ़ जाती है और तू ही दिन को रात में दाख़िल करता है तू ही बेजान से जानदार को पैदा करता है और तू ही जानदार से बेजान निकालता है और तू ही जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है (२७)

व्याख्याः- वो अल्लाह है जिसने बदी के साथ नेकी मुकर्रर कर रखी है, यानी रात को दिन में दाखिल करता है, नेकी को बदी से खत्म करते है और कभी-कभी बदी को नेकी पर हावी कर देते है और वो ही अल्लाह है जो बेजान (elements) से जानदार पैदा करता है और जानदार की मौत के बाद इसके जिस्म को बेजान (atom) करते है और उसी एटम को दूसरी इस्तेमाल में लाते है और जिसे चाहता है अनंत शांति प्रदान करते है।

पैगामः- परमाणविक शक्ति द्वारा अल्लाह सृष्टि, परिवर्तन और विनाश यानी हर क्रिया-प्रक्रिया को अंजाम देते है और ज्ञान के प्रकाश से अज्ञानता को दूर करते है।।

لَّا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَن تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ {28}

मोमिनीन मोमिनीन को छोड़ के काफ़िरों को अपना सरपरस्त न बनाऐं और जो ऐसा करेगा तो उससे अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं मगर किसी तरह उन से बचना चाहो तो और अल्लाह तुमको अपने ही से डराता है और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है (२८)

व्याख्याः- नेक, परहेजगार और सकून चाहने वाले लोग अपने असुलों को छोड़ कर गुनाह और फसाद के असुल से सिंधि न करें और जो ऐसा करते है वो अल्लाह के किसी भी अच्छाई के लायक नहीं है। अल्लाह ताला खुद मानवों को अपने असुल बयांन करते है और फना के बाद आखिर कार उसे जर्रा ही बन जाना है।

पैगामः- आयत ३/२६ में अल्लाह ने फरमाया कि वो जिल्लत और इज्जत का मालिक है इसका मतलब ये हुआ कि इज्जत नेक लोगों को दी जाती है और जिल्लत गुनाहगार लोगों को। जब अल्लाह की तरफ से ही है तो फिर मानव के बस में क्या है। दोस्ती अल्लाह के पसंदीदा किरदारों में से एक किरदार है लेकिन गुनहगारों को दोस्त बनाकर अपनी अच्छाई से इन्हें प्रभावित किया जाए तो निश्चित रूप से ये समाज और इंसानियत के लिए फायदेमंद होगा। मोमिन और काफिर शब्द मानव के चरित्र को बयान करता है और ये किसी सम्प्रदायक सोच के दायरे में नहीं है। इस लिहाज से ये आयत पाप और पुण्य के बीच की लकीर को साबित करती है। आज की दुनिया में अगर कोई किसी से दोस्ती करता है तो सिर्फ उसके चरित्र के आधार पर।

قُلْ إِن تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمْهُ اللَّهُ وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {29}

तुम उन से कह दो कि जो कुछ तुम्हारे दिलों में है तो ख़्वाह उसे छिपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह तो उसे जानता है और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में वह सब जानता है और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (२९)

व्याख्याः- जुबान से नेकी की बात करना और दिल में नफरत रखने वाले लोगों के दिलों का हाल, जमीन और आसमान की सारी बातें अल्लाह जानता है और अल्लाह हर चीज पर कादिर है।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا وَمَا عَمِلَتْ مِن سُوءٍ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ {30}

जिस दिन हर शख़्स जो कुछ उसने नेकी की है और जो कुछ बुराई की है उसको मौजूद पाएगा आरज़ू करेगा कि काश उस की बदी और उसके दरमियान में ज़मानए दराज़ हो जाता और अल्लाह तुमकोअपने ही से डराता है और अल्लाह अपने बन्दों पर बड़ा शफ़ीक़ और है (३०)

व्याख्याः- जब मानव का विवेक अपने नफ्स के जरिया की गई नेकियों और बुराईयों को अपने सामने पायेगा और उसे महसूस करेगा तो उसका विवेक एहसास दिलायेगा कि काश उसके और बुराईयों के दरमियांन दूरी होती। अल्लाह ताला मानव को अपनी हकीकत की जानकारी देते है और अल्लाह बंदों पर मेहरबान है।

पैगामः- इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह अपनी जात से डरा रहा है और डराने वाली बात अल्लाह की फितरत के खिलाफ है और वो इसलिए कि जब अल्लाह के पलक झपकाते ही सारे काम हो जाते है तो अल्लाह को क्या जरूरत है किसी को डराने की? मेरे (सिद्धार्थ चटर्जी) ख्याल से कुरान शरीफ में मानव को डराने वाली बात इस बात की प्रतीक करती है कि जब मानव पर कोई मुसीबत आती है तो वो डर जाता है और इस डर को सामने रखते हुए डराने की बात की गई है।

قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {31}

उन लोगों से कह दो कि अगर तुम अल्लाह को दोस्त रखते हो तो मेरी पैरवी करो अल्लाह तुमको दोस्त रखेगा और तुमको तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (३१)

व्याख्याः- लोग ये जान ले कि जो कोई अल्लाह से मोहब्बत करेगा तो वे जरूर रसुलों के ख्यालात की ताबेदारी भी करेगा और उन्हें अल्लाह की मोहब्बत हासिल होगी और गुनाहों से मुक्ति भी प्राप्त होगी क्योंकि अल्लाह बक्षने वाला मेहरबान है।

पैगामः- अल्लाह का असुल है कि हर किसी को अपने कर्मों का फल मिलेगा। इस लिहाज से गुनाहों की माफी का मतलब गुनाहों से मुक्ति हासिल होगी।

قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ {32}

कह दो कि अल्लाह और रसूल की फ़रमाबरदारी करो फिर अगर यह लोग सरताबी करें तो अल्लाह काफ़िरों को हरगिज़ दोस्त नहीं रखता (३२)

व्याख्याः- अल्लाह के कूदरती असुल और मानव के जीने के तरीके जो रसुलों के जरिया लोगों को मिले है, लोग उनका पालन करें यानी उसके साथ जिये और जो उनसे मुँह फेरे वो काफिर है और अल्लाह काफिरों से मोहब्बत नहीं रखता।

إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ عَلَى الْعَالَمِينَ {33}

बेशक अल्लाह ने आदम और नूह और ख़ानदाने इबराहीम और खानदाने इमरान को सारे जहान से बरगुज़ीदा किया है (३३)

व्याख्याः- कुरान शरीफ की ये आयत एक पहेली है, जब तमाम श्रृष्टि अल्लाह की है और तमाम मानव आदम की औलाद है तो इन चार वर्गों की विशेषता बयान करना समाज के लिए एक उदाहरण है, वर्तमान ख्याल के मुताबिक। लेकिन इंसानों के दरमियान तमाम किस्म का वंश मौजूद है और वैज्ञानिक भी उसे साबित कर चुके। दुनिया में पुरानी से पुरानी सभ्यता पायी जाती है और देखा जाये तो सभ्यता किसी न किसी जरिये से एक-दूसरे के साथ जुड़ी हुई है और ये आयत सिर्फ उसी सभ्यता के तरफ इशारा करती है। आज के दुनिया में इंसानों के बीच का फर्क कम होता जा रहा है और इसमें वंश की मिलावट विभिन्न किस्मों की नस्लों की बुनियाद पैदा करती है। कुरान शरीफ की बहुत सारी आयतों से ये भी पता चलता है कि अल्लाह के दरबार में तमाम श्रृष्टि के लिए इंसाफ एक-सा है और इसमें किसी खास वंश को ज्यादा एहमियत नहीं दी गई।

ذُرِّيَّةً بَعْضُهَا مِن بَعْضٍ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {34}

बाज़ की औलाद को बाज़ से और अल्लाह सुनता जानता है (३४)

व्याख्याः- पुरानी नसलें जिन्होंने सभ्यता की नींव रखी थी, आज वो एक दूसरे के साथ मिलकर दुनिया में एक मिली-जुली सभ्यता की रचना कर रहे है और हर कोई एक-दूसरे की संस्कृति को अपना रहे है और आपस में एक-दूसरे का हिमायत करते है। अल्लाह सब सुनता जानता है।

إِذْ قَالَتِ امْرَأَةُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ {35}

जब इमरान की बीवी ने अर्ज़ की कि ऐ मेरे पालने वाले मेरे पेट में जो बच्चा है उसको मैं दुनिया के काम से आज़ाद करके तेरी नज़्र करती हूँ तू मेरी तरफ़ से ये नज़्र क़ुबूल फ़रमा तू बेशक बड़ा सुनने वाला और जानने वाला है (३५)

व्याख्याः- इमरान की बीवी ने अपनी औलाद को इंसानियत और समाज के लिए समर्पित करके माताओं के लिए एक मिसाल कायम की थी, अल्लाह ही सुनने और जानने वाला है।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنثَىٰ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنثَىٰ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ {36}

फिर जब वह बेटी जन चुकी तो कहने लगी ऐ मेरे परवरदिगार मै तो ये लड़की जनी हूँ और लड़का लड़की के ऐसा नहीं होता हालाँकि उसे कहने की ज़रूरत क्या थी जो वे जनी थी अल्लाह उस से खूब वाकिफ़ था और मैंने उसका नाम मरियम रखा है और मै उसको और उसकी औलाद को शैतान मरदूद से तेरी पनाह में देती हूँ (३६)

व्याख्याः- जब लड़के के बजाये लड़की पैदा हुई तब इमरान की बीवी ने उसका नाम मरियम रखा, अल्लाह ने इसको और उसकी औलाद को जालिमों से बचाकर हिफाजत दी।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِندَهَا رِزْقًا قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّى لَكِ هَذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَن يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ {37}

तो उसके परवरदिगार ने मरियम को खुशी से कुबूल फ़रमाया और उसकी परवरिश अच्छी तरह की और ज़करिया को उनका कफ़ील बनाया जब किसी वक़्त जकरिया उनके पास इबादत के हुजरे में जाते तो मरियम के पास कुछ न कुछ खाने को मौजूद पाते तो पूँछते कि ऐ मरियम ये खाना तुम्हारे पास कहाँ से आया है तो मरियम ये कह देती थी कि यह अल्लाह के यहाँ से है बेशक अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब रोज़ी देता है (३७)

व्याख्याः- पाक-परवरदिगार की मर्जी से मरियम को बेहतरीन परवरिश मिली और मरियम के रिश्तेदार जकरियां उसकी खैर खबर रखते, जब जकरियां मरियम के पास जाते तो हमेशा उसके पास खाना तैयार पाते थे। जब जकरियां पूछते की खाना कहां से आया तो मरियम ने जवाब दिया की अल्लाह की मर्जी से । बेशक अल्लाह जिसे चाहे बेशुमार रोजी दे।

पैगामः- मरियम की नेकी और अच्छाई लोगों के लिए उधारण की तौर पर पेश की गई है।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ {38}

उसी वक़्त ज़करिया ने अपने परवरदिगार से दुआ कि और अर्ज़ की ऐ मेरे पालने वाले तू मुझको अपनी बारगाह से पाकीज़ा औलाद अता फ़रमा बेशक तू ही दुआ का सुनने वाला है (३८)

व्याख्याः- जकरियां ने अल्लाह से नेक और अच्छी औलाद की (मरियम की पवित्रता को महसूस करने के बाद) दुआ मांगी और नेकों की दुआ खाली नहीं जाती।

فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ {39}

अभी ज़करिया हुजरे में खड़े दुआ कर ही रहे थे कि फ़रिश्तों ने उनको आवाज़ दी कि अल्लाह तुमको यहया की खुशख़बरी देता है जो जो कलेमतुल्लाह की तस्दीक़ करेगा और सरदार होगा और औरतों की तरफ़ रग़बत न करेगा और सभ्यो कार नबी होगा (३९)

व्याख्याः- जब जकरियां अपनी विशेष जगह में ध्यान लगाकर इबादत कर रहे थे तो उसे जहनी तौर पर नेक औलाद, याहाईयां की खुशखबरी महसूस हुई। अल्लाह की कूदरत की हकीकत महसूस करने वाला मानवों के बीच का कोई खास मानव (सरदार), अल्लाह के असुलों के जरिया नफ्स को काबू में रखने वाले और नेक विद्वान लोगों के बीच नबी होता है।

पैगामः- अल्लाह की कूदरत यानी फरिश्तों के जरिया कुछ खास लोगों को ही अल्लाह की कूदरत की अविष्कार का शर्फ हासिल होता है। मिसाल के तौर पर तमाम अविष्कार किसी न किसी खास मानव के द्वारा ही इंसानी समाज को मिला और मिलता रहेगा। दुनियां में नजर दौड़ाने से पता चलता है कि प्राकृतिक रहस्य मानव की जरूरत के आधार पर उनमोचित हुआ। उदाहरण के तौर न्यूटन का अविष्यकार यानी प्रकृति का एक गहरा रहस्य तौफा के सुरत में अल्लाह की मर्जी से उनको मिला।

قَالَ رَبِّ أَنَّىٰ يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ قَالَ كَذَٰلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ {40}

ज़करिया ने अर्ज़ की परवरदिगार मुझे लड़का क्योंकर हो सकता है हालाँकि मेरा बुढ़ापा आ पहुँचा और मेरी बीवी बाँझ है फ़रमाया इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है (४०)

व्याख्याः- जकरियां बुढ़े हो चुके थे और इनकी स्त्री बांझ थी, संतान की चाहत और ख्वाहिसात मर चुके थे। अल्लाह जो चाहे कर सकता है।

पैगामः- प्राकृतिक अचंबा कभी भी और किसी भी सुरत में मानव के सामने आ सकता है यानी शादी के बहुत साल बाद भी औलाद हो सकती है।

قَالَ رَبِّ اجْعَل لِّيَ آيَةً قَالَ آيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلَاثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا وَاذْكُر رَّبَّكَ كَثِيرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ {41}

ज़करिया ने अर्ज़ की परवरदिगार मेरे इत्मेनान के लिए कोई निशानी मुक़र्रर फ़रमा इरशाद हुआ तुम्हारी निशानी ये है तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे मगर इशारे से और अपने परवरदिगार की अक्सर याद करो रात को और सुबह तड़के तसबीह किया करो (४१)

व्याख्याः- जकरिया ने तीन दिन तक मौन व्रत रखा और पूजा की।
पैगामः- ये आयत साबित करती है कि हिन्दुस्तान के ऋषि मुनि जो इबादत का तरीका (मौन व्रत) इस्तेमाल करते थे वही तरीका इबादत जकरियां को भी दिया गया था। इस तरह अल्लाह ताला ने दुनिया के हर कोने में मुखतलिफ इबादत के तरीके का असुल रखा।

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَاكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفَاكِ عَلَى نِسَاءِ الْعَالَمِينَ {42}

और वह वाकिया भी याद करो जब फ़रिश्तों ने मरियम से कहा, ऐ मरियम तुमको अल्लाह ने पवित्र किया और गुनाहों और बुराइयों से पाक साफ़ रखा और सारे दुनिया जहाँन की औरतों में से तुमको मुन्तखिब किया है (४२)
व्याख्याः- प्रकृति ने मरयिम को गुनाहों से पाक रखा और तमाम औरतों में से मरियम को नेकी की मिसाल के लिए चुन लिये।

يَا مَرْيَمُ اقْنُتِي لِرَبِّكِ وَاسْجُدِي وَارْكَعِي مَعَ الرَّاكِعِينَ {43}

ऐ मरियम इसके शुक्र से मै अपने परवरदिगार की फ़रमाबदारी करूँ सजदा और रूकूउ करने वालों के साथ रूकूउ करती रहूँ (४३)
व्याख्याः- मरियम ने अपने रब की आज्ञाकारी की और उसके नियमों के आगे कायम (रकू) रही और उनके आदर्शों के आगे आत्म समर्पण (सजदा) किया।
पैगामः- मरियम ने अल्लाह के आगे पुरी तरह आत्मसमर्पण किया था यानी सजदा किया और अल्लाह के असुलों के आगे झुक गयी यानी रकू किया। मौजूदा ख्याल के अनुसार रकू, सजदा ये सारे अलफाज मुसलमानों के नमाज का एक हिस्सा है, ये सारे असुल मरियम के साथ जोड़कर अल्लाह ने ये साबित किया कि ये सारे अल्फाज इंसानी चरित्र के द्वारा नमाज अदा करने का बयान है। सारे नबी और नेक इंसान (हजरत मोहम्मद से पहले) जिस तरीके से इबादत करते थे वो आज के तरीके से अलग है जो मुसलमान कोम इस्तेमाल करती है।

ذَلِكَ مِنْ أَنبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُونَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ وَمَا كُنتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُونَ {44}

ये ख़बर ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम्हारे पास 'वही' के ज़रिए से भेजते हैं तुम तो उन सरपरस्ताने मरियम के पास मौजूद न थे जब वह लोग अपना अपना क़लम दरिया में बतौर क़ुरआ के डाल रहे थे कौन मरियम का कफ़ील बनता है और न तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद थे जब वह लोग आपस में झगड़ रहे थे (४४)
व्याख्याः- अल्लाह अपने प्रकृति के राज मानव के मस्तिष्क में पहुँचाते है जिसे वहीं (खुदा का हुकुम या आकाशवाणी) कहते है। लोगों को सच्चाई की जानकारी न थी और मरियम की नेकी पर शक जाहिर किया और उसे अपने पास रखने में संकोच था, और मरियम इस बात से अंजान थी (मरियम के पेट में पलने वाली संतान के बारे में उस वक्त के लोगों ने शक जाहिर किया)।

إِذْ قَالَتِ الْمَلَائِكَةُ يَا مَرْيَمُ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ اسْمُهُ الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيهًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ {45}

जब फ़रिश्तों ने मरियम से कहा ऐ मरियम अल्लाह तुमको सिर्फ़ अपने हुक्म से एक लड़के के पैदा होने की खुशख़बरी देता है जिसका नाम ईसा मसीह इब्ने मरियम होगा दुनिया और आख़ेरत में बाइज़्ज़त और अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों में होगा (४५)
व्याख्याः- मरियम को प्राकृतिक तौर पर अपने पेट में संतान का एहसास हुआ और उस बच्चा का नाम हुआ ईर्षा जिसने दुनिया में अल्लाह के प्राकृतिक नियमों को यानी नेकी, मोहब्बत और इंसानियत का संदेश फैलाया।
पैगामः- वर्तमान तर्जुमा के अनुसार इस आयत में कहा गया है कि फरिश्ते ने मरियम को पैगाम दिया। अगर फरिश्ते प्रकृति के अलावा कुछ और चीज है तो यकीनन मरियम के साथ फरिश्तों की बाते होती थी। मरियम को कौन सा दर्जा हासिल हुआ ऋषि (वली) का या अवतार (नबी) का? कुछ लोग मानते है कि औरत पर वहीं नाजिल नहीं हो सकती।

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصَّالِحِينَ {46}

और जब झूले में पड़ा होगा और बड़ी उम्र का होकर लोगों से बाते करेगा और सभ्यो कारों में से होगा (४६)
व्याख्याः- ईर्षा ने अपने बचपन से लेकर आखिर दम तक नेकी और माफी की बातें की।
पैगामः- इस आयत में पूरी तरह भविष्य को मुखातिब किया गया है। यहां पर कहा गया है कि "ईर्षा बचपन और बुढ़ापे में नेकी की बाते करेगा और वो नेक लोगों में से होगा" । हजरत मोहम्मद से तकरीबन ५०० साल पहले ईर्षा की पैदाइश हुई

थी और कम उम्र में ही उनकी हत्या हुई। ईर्षा की मृत्यु एक रहस्य है और दुबारा उनका अभिभाप हुआ था और ये इतिहास है?

قَالَتْ رَبِّ أَنَّى يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمْسَسْنِي بَشَرٌ قَالَ كَذَلِكِ اللَّهُ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ إِذَا قَضَى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ {47}

कहने लगी परवरदिगार मुझे लड़का क्योंकर होगा हालाँकि मुझे किसी मर्द ने छुआ तक नहीं इरशाद हुआ इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस कह देता है 'हो जा' तो वह हो जाता है (४७)

व्याख्याः- मरियम को संदेह हुआ कि उसे बच्चा कैसे होगा क्योंकि उसका किसी के साथ भी यौन संबंध नहीं हुआ था। प्राकृतिक तौर पर अल्लाह जिसे चाहे पैदा करता है और हर काम अल्लाह की मर्जी से होता है।

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ {48}

और अल्लाह उसको किताबे और अक्ल की बातें और तौरेत व इन्जील सिखा देगा (४८)

व्याख्याः- अल्लाह की मर्जी से ईर्षा ने तौरात और इंजील की द्वारा अल्लाह के नियम बयांन किये थे।

وَرَسُولًا إِلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ أَنِّي أَخْلُقُ لَكُم مِّنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللَّهِ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَى بِإِذْنِ اللَّهِ وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ فِي بُيُوتِكُمْ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {49}

और बनी इसराइल का रसूल मैं तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से यह निशानी लेकर आया हूँ कि मैं गुँधी हुई मिट्टी से एक परिन्दे की सूरत बनाऊँगा फिर उस पर दम करूँगा तो वो अल्लाह के हुक्म से उड़ने लगेगा और मैं अल्लाह ही के हुक्म से मादरज़ाद पैदायशी अँधे और कोढ़ी को अच्छा करूँगा और मुर्दो को ज़िन्दा करूँगा और जो कुछ तुम खाते हो और अपने घरों में जमा करते हो मैं तुमको बता दूँगा अगर तुम ईमानदार हो तो बेशक तुम्हारे लिये इन बातों में बड़ी निशानी है (४९)

व्याख्याः- और वह बनी इसराइल को सुख-शंति से रहने की तरकीब बताने वाले रसुल थे। उन्होंने ने बनी इसराइल को अल्लाह के नियमों की हकीकत बयांन की थी। उन्होंने मुर्दा जहन (मिट्टी की पंक्षी) को मोहब्बत और इंसानियत के फूंक से जिंदा किया था। पूरी तरह शैतानी जहन (पूरी तरह अंधा) वाले लोगों को नेकी के रास्ते पर लाये और कोढ़ का इलाज भी बताते थे। मुर्दा जमीर (मुर्दे को जिन्दा करना) लोगों को अल्लाह के नूर से रोशन करते थे और ईर्षा के छट्टी हस इतनी तेज थी क वो लोगों की छिपी हुई बातें भी जान लेते थे। लोगों के लिए ये एक निशानी है अगर लोग इसे मान ले (सनातन धर्म में इसे योगमायाबल कहते है)।

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَاةِ وَلِأُحِلَّ لَكُم بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُم بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ {50}

और तौरेत जो मेरे सामने मौजूद है मैं उसकी तसदीक़ करता हूँ और एक ग़रज़ यह है कि जो चीज़े तुम पर हराम है उनमें से बाज़ को हलाल कर दूँ और मैं तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से निशानी लेकर तुम्हारे पास आया हूँ पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअत करो (५०)

व्याख्याः- ईर्षा ने तौरात की बातें दोहराई और लोगों को बूरे (हराम/वर्जित) और अच्छे (हलाल) कामों के साथ-साथ प्रकृति के नियम (रब की निशानी) के बारे में पहचान दी ताकि लोग अल्लाह और उसकी हकीकत को पहचाने और इस पर यकीन लाते हुए उनकी बात माने।

إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ هَٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ {51}

बेशक अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा परवरदिगार है पस उसकी इबादत करो यही नजात का सीधा रास्ता है (५१)

व्याख्याः- उन्होंने लोगों को यकीन दिलाया की सबका रब एक है और उसकी राह ही सीधी राह है और वो राह है प्रेम, मानवता, शिक्षा, पवित्रता, अहिंसा, भाईचारा, ईमानदारी और शांति तथा इन आदर्शों के साथ जीना और मरना ही मानवता है।

पैगामः- आयत नं० ४६ से लेकर ५१ तक की सारी आयतें वर्तमान और भविष्य की आधार पर लिखी गई है और ये सारी घटनायें कुरान शरीफ आने से ५००-६०० साले पहले हुई थी। तो इस लिहाज से इन आयतों की लिखावट का आधार अतीत काल होना चाहिए था, ऐसा क्यों?

जब हर पैगम्बर ने हक-ए-इलाही (ईश्वरिक शक्ति) दुनिया में फैलाया तो अतीत, वर्तमान और भविष्य कोई भी काल कुछ माने नहीं रखता।

नोटः- ४६ से लेकर ५१ तक की सारी आयतें Future or Present Tense में है और बहुत सी आयतें रसुल की (Direct Speech) जुबान में भी है।

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَاشْهَدْ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ {52}

फिर जब ईसा ने उनका कुफ़्र देखा तो कहने लगे कौन ऐसा है जो अल्लाह की तरफ़ होकर मेरा मददगार बने हवारियों ने कहा हम अल्लाह के तरफ़दार हैं और हम अल्लाह पर ईमान लाए और आप गवाह रहिए कि हम फ़रमाबरदार हैं (५२)

व्याख्याः- आरंभ में लोगों ने हकीकत को इनकार किया और इस बात को महसूस करते हुए ईर्षा ने उनसे अल्लाह की राह में चलने वालों के लिए मदद मांगी और जब उन लोगों ने मंजुर कर लिया तो साथ में ये भी कह दिया कि ईर्षा उनकी आज्ञाकारी की पुष्टि करेंगे।

पैगामः- मदद तब मांगी जाती है जब कोई मजबूर होता है। पैगम्बरों को अपनी मजबूरी से ज्यादा समाज और लोगों की मजबूरी की फिकर थी। इस लिहाज से पैगम्बर ने समाज और लोगों की शांति के लिए ही मदद मांगी। इस आयत के आखिर में ''मुस्लिम'' शब्द का उल्लेख और इस आयत से ये साबित होता है कि मुस्लिम शब्द किसी विशेष सम्प्रदायिक सोच से प्रभावित नहीं होता और ये इसलिए की इस्लाम सम्प्रदाय के आने के ६०० वर्ष पहले के वाक्यात को व्याख्या करने के लिए इस शब्द का इस्तेमाल किया गया है और ये शब्द मानव के पवित्र चरित्र की व्याख्या करता है।

رَبَّنَا آمَنَّا بِمَا أَنزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ {53}

अर्ज़ की कि ऐ हमारे पालने वाले जो कुछ तूने नाज़िल किया हम उसपर ईमान लाए और हमने तेरे पैरवी इख़्तेयार की पस तू हमें गवाहों के दफ़्तर में लिख ले (५३)

व्याख्याः- लोगों ने कहा! प्रकृति के रखवाले ने जो प्रकृति के नियमों और जीने के तरीके रसुल के द्वारा भेजे, नेक लोग उसपर यकीन रखते है और उसे अपनाते है।

وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ {54}

काफिरों ने मक्कारी की और अल्लाह ने उसके दफ़ईया की तदबीर की और अल्लाह सब से बेहतर तदबीर करने वाला है (५४)

व्याख्याः- जो अल्लाह की प्रकृति और नियमों को नहीं मानता (काफिर) और मानव को धोखा देते है वो खुद भी धोखे में रहते है और अल्लाह उन्हें इस धोखे से बाहर नहीं निकालता।

पैगामः- इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह ने भी छल किया। अल्लाह कपटी नहीं है इस लिहाज से काफिरों के छल में काफिर ही जकड़े जाते है। इस आयत का अर्थ यही है।

إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ {55}

जब ईसा से अल्लाह ने फ़रमाया ऐ ईसा मै ज़रूर तुम्हारी ज़िन्दगी की मुद्दत पूरी करके तुमको अपनी तरफ़ उठा लूँगा और काफ़िरों से तुमको पाक व पाकीज़ा रखूँगा और जिन लोगों ने तुम्हारी पैरवी की उनको क़यामत तक काफ़िरों पर ग़ालिब रखूँगा फिर तुम सबको मेरी तरफ़ लौटकर आना है तब जिन बातों में तुम झगड़े करते थे तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर दूँगा (५५)

व्याख्याः- अल्लाह की तरफ से ईर्षा को वर्दान मिला की ईर्षा को अल्लाह की मदद हासिल होगी। और ईर्षा को मानने वाले यानी इंसानियत, मोहब्बत और शांति को अपनाने वाले कयामत तक इसको बिगाड़ने वालों पर हावी रहेंगे। और प्रकृति तमाम मतभेद का फैसला कर देती है।

पैगामः- इस आयत के वर्तमान अनुवाद के अनुसार ईर्षा के मानने वाले लोगों को उनके न मानने वाले लोगों पर विजयी रहेंगे। क्या ईर्षा को मानने वाले christian दूसरें लोगों पर विजय रहेंगे कयामत तक? हकीकत में ईर्षा और तमाम रसुलों ने एक ही बात को अलग-अलग तरीकों से दुनिया में फैलाया और जो इस हकीकत को समझेगा, उसके लिये कुरान की ये आयत समझना बहुत आसान है।

فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ {56}

पस जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उनपर दुनिया और आख़िरत सख़्त अज़ाब करूँगा और उनका कोई मददगार न होगा (५६)

व्याख्याः- अल्लाह और उसकी प्रकृति पर यकीन न रखने वाले लोगों को जीते-जी और मौत के वक्त सख्त तकलीफ देगा (अशांति के परकोप से घेर लेगा) ।
पैगामः- अशान्ति और बेचैनी मानव को सबसे ज्यादा कष्ट देती है।

وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ {57}

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे काम किए तो अल्लाह उनको उनका पूरा अज्र व सवाब देगा और अल्लाह ज़ालिमों को दोस्त नहीं रखता (५७)

व्याख्याः- जो मानव अच्छा काम करे नेक हो, मोहब्बत, इंसानियत, अमनोचैन और अहिंसा के असुलों को अपनाते हो, तहजीब और ज्ञान की रोशनी से अपनी अन्तात्मा को प्रभावित करते है उन्हें जरूर उसका नतीजा मिलेगा। हकीकत तो ये है कि बदतमीज और बेगैरत को अल्लाह बिल्कुल पसंद नहीं करता।

ذَلِكَ نَتْلُوهُ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ {58}

ये जो हम तुम्हारे सामने बयान कर रहे है कुदरते अल्लाह की निशानियाँ और हिकमत से भरे हुये तज़किरे हैं (५८)

व्याख्याः- पैगम्बर ने लोगों का ज्ञान और सच्चाई की बातें सिखाई।
पैगामः- ये भी अल्लाह का कथन नहीं है।

إِنَّ مَثَلَ عِيسَى عِندَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ مِن تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُن فَيَكُونُ {59}

अल्लाह के नज़दीक तो जैसे ईसा की हालत वैसी ही आदम की हालत कि उनको को मिट्टी का पुतला बनाकर कहा कि 'हो जा' पस वह हो गया (५९)

व्याख्याः- अल्लाह के हक पर शक न करो। समय और सभ्यता की धारा की बुनियाद है आदम और ईर्षा। अल्लाह ताला के स्पर्श और आर्शीवाद से आदम और ईर्षा को ज्ञान की रोशनी दी गई और इस रोशनी से मुर्दार या मुर्दा अन्तात्मा वाले मानवी समाज को जिन्दा किया।

الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُن مِّنَ الْمُمْتَرِينَ {60}

हक़ बात तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तो तुम शक करने वालों में से न हो जाना (६०)

व्याख्याः- ईर्षा भी मिट्टी से बना हुआ मानव था जिसकी बुनियाद थी आदम।
पैगामः- सूरज से दुनिया पैदा हुई और धीरे-धीरे दुनिया का तापमान कम होता गया और विभिन्न प्रकार की गैसों की सृष्टि हुई और इन गैसों में से हाइड्रोजन की सृष्टि पहले हुई और उसके बाद ऑक्सीजन और २:१ अनुपात में ये दोनों मिलकर जल की सृष्टि हुई और जल से पृथ्वी की सबसे पहले एक कोशी प्राणी (single cell animal) की सृष्टि हुई। अगर हम ये समझ लें कि हाइड्रोजन का कदीम नामकरण आदम के नाम से हुआ था और ऑक्सीजन का हव्वा तो वैज्ञानिक अविष्कार के आधार पर ये बात साबित होती है कि इन दोनों के मिलन से ही प्राण की संचार हुआ था। हर प्राणी की सृष्टि का इतिहास, ये एक काल्पिनक नाम है मानव को वैज्ञानिक तथ्य समझाने का। मानव क्लोन के आविष्कार के बाद ये बात मानव के सामने और भी स्पष्ट हुआ। वही एक कोशी प्राणी हजारों रूप परिवर्तन और प्राकृतिक उतार-चढ़ाव के बाद और लाखों सालों के समय अतिक्रम करके मानव को आज का रूप मिला। (२१/३०, २४/४५, ८०/१९-२०, ३५/११, ६/२, १५/२६ - इसकी विस्तारीत व्याख्या ऐश्वरिक सत्य में मिलेगा)

فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِن بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنفُسَنَا وَأَنفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَل لَّعْنَتَ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ {61}

फिर जब तुम्हारे पास इल्म आ चुका उसके बाद भी अगर तुम से कोई ईसा के बारे में हुज्जत करें तो कहो कि आओ हम अपने बेटों को बुलाएँ तुम अपने बेटों को और हम अपनी औरतों को और तुम अपनी औरतों को और हम अपनी जानों को बुलाएँ ओर तुम अपनी जानों को उसके बाद हम सब मिलकर गिड़गिड़ाएं और झूठों पर अल्लाह की लानत करें (६१)

व्याख्याः- अल्लाह की प्राकृतिक हकीकत को समझने के बाद जो इसे इनकार करता है वो अपनी संतान, स्त्रियों और अपने जमीर को तलाशे और झुठ बांधने वाले पर अशांति और तकलीफों का प्रकोप।

إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا مِنْ إِلَٰهٍ إِلَّا اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ {62}

ये सब यक़ीनी सच्चे वाक़यात है और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है और बेशक अल्लाह ही सब पर ग़ालिब और हिकमत वाला है (६२)

व्याख्याः- यकीनन सिर्फ यही सच्चा बयान है और कोई माबूद बरहक नहीं अल्लाह के सिवा, अल्लाह बलवान और हिकमत वाला है।

فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ {63}

फिर अगर इससे भी मुँह फेरें तो परवाह नहीं अल्लाह फ़सादी लोगों को खूब जानता है (६३)

व्याख्याः- अगर लोग शांति, नेकी, परहेजगारी, अहिंसा, शिक्षा और मोहब्बत के नियमों को समर्थन न करे तो यकीनन अल्लाह फसादियों को जानता है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلاَّ نَعْبُدَ إِلاَّ اللَّهَ وَلاَ نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلاَ يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ فَإِن تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ {64}

तुम कहो कि ऐ एहले किताब तुम ऐसी बात पर आओ जो हमारे और तुम्हारे दरम्यिान यकसाँ है कि अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और किसी चीज़ को उसका शरीक न बनाएँ और अल्लाह के सिवा हममें से कोई किसी को अपना परवरदिगार न बनाए अगर इससे भी मुँह मोड़ें तो तुम गवाह रहना हम फ़रमाबरदार है (६४)

व्याख्याः- फरमाया- कूदरत के नियमों को पहचानने वाले लोग एक-दूसरे की अच्छाई को पहचान ले और जो अच्छी संरकृति है उसे हर कोई अपनायें। अल्लाह की प्रकृति और नियमों के सिवा किसी की भी इबादत न करे और न ही अल्लाह की जगह किसी को बैठाये, अगर इस बात से कोई इनकार करे तो वो जान ले नेक लोग सच्चाई को जरूर ग्रहण करेंगे।

पैगामः- कोई भी सम्प्रदाय या किसी किस्म का मानव क्यों न हो हर किस्म के लोगों के दरमियान एक चीज एक-सा होती है और वो है सुख शान्ति से जिन्दगी बसर करना। कोई रश्मों रिवाज या इबादत का तरीका सुख शांति का रास्ता नहीं हो सकता। सुख शांति का रास्ता है कि मानव नेक और परहेजगार बने। कूदरत के भंडार से जो उसे मिले उसपर संतुष्ट रहे और अपनी जरूरत से ज्यादा उत्वाकांक्षा, लोभ, मोह-माया को पाप से प्रभावित न करें। पाप कर्मों से दूर रहें, मानव के आपसी रिश्ते और भाईचारे का एहतराम करें, शिक्षा प्राप्त करे और ज्ञान से अपने दिमाग को पवित्र करें और अहिंसा के मार्ग पर चले। दुनिया का हर मानव अगर इस मार्ग पर चले तो आपस की रंजिशे और नफरत की कोई गुंजाइश न रहे यही मानव के बीच "एक-सा" कूदरती नियम है और ये आयत इन्हीं बातों का व्याख्या करती है।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَآجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنزِلَتِ التَّوْرَاةُ وَالإِنجِيلُ إِلاَّ مِن بَعْدِهِ أَفَلاَ تَعْقِلُونَ {65}

ऐ एहले किताब तुम इबराहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो कि कोई उनको नसरानी कहता है कोई यहूदी हालाँकि तौरेत व इन्जील तो उनके बाद ही नाज़िल हुई (६५)

व्याख्याः- पुस्तक के जरिया सच्चाई जानने वाले लोग समझे। तौरायत और इंजील के द्वारा लोगों को सच्चा इल्म इब्राहीम के बाद ही मिला फिर भी इब्राहीम को लेकर लोग क्यों झगड़ते है।

पैगामः- जब हर रसुल ने एक ही पैगाम पहुँचाया तो लोगों को इब्राहीम की हकीकत को लेकर झगड़ा नहीं करना चाहिए। रसुल जात-पात की सोच से बहुत ऊपर होते है और उनके असुल भी सम्प्रदाय की सोच को समर्थन नहीं करते। ये आयत इसकी जीती-जागती मिशाल है।

هَاأَنتُمْ هَؤُلاء حَاجَجْتُمْ فِيمَا لَكُم بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُم بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنتُمْ لاَ تَعْلَمُونَ {66}

तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते?तुम वही एहमक़ लोग हो कि जिस का तुम्हें कुछ इल्म था उसमें तो झगड़ा कर चुके फिर तब उसमें क्या झगड़ने बैठे हो जिसकी तुम्हें कुछ ख़बर नहीं और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते (६६)

व्याख्याः- अल्लाह और उसकी कूदरत की हकीकत को जानते हुए भी अपने आपको बड़ा प्रमाण करने के लिए, पुण्य पर विवाद श्रृष्टि करने वाले और जो कुछ वो नहीं जानते, उस पर जानकार होने का ढोग रचाने वाले समाज में जो गलतफैमी पैदा करते है, ऐसे लोगों के चरित्र का हर पहलू अल्लाह जानता है।

पैगामः- अल्लाह के बारे में लोग कितना जानते है जो अल्लाह के इबादत के तरीकात और उसके वजूद के बारे में लड़ते रहते है।

مَا كَانَ إِبْرَاهِيمُ يَهُودِيًّا وَلاَ نَصْرَانِيًّا وَلَكِن كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ {67}

इबराहीम न तो यहूदी थे और न नसरानी बल्कि निरे खरे हक़ पर थे और फ़रमाबरदार बन्दे थे और मुशरिकों से भी न थे (६७)

व्याख्याः- नेक, परहेजगार, सबसे मोहब्बत करने वाले, अहिंसा चाहने वाले, एक खुदा पर यकीन रखने वाले, इंसानियत और शांति के पुजारी थे इब्राहीम। हर किस्म के सम्प्रदायिकता से बाहर थे और वो अल्लाह की सीधे और सच्ची कूदरत पर

ईमान रखने वाले मुसलमान थे। सम्प्रदायक के नाम पर मानवों में तफरका पैदा करने वालों में से न थे (यहूदी, नुसरानी) ।
पैगामः- मुसलमान शब्द किसी सम्प्रदायिकता की असुलों से प्रभावित नहीं और ये आयत इस असुल की एक बेहतरीन मिशाल है। मुसलमान शब्द सिर्फ और सिर्फ मानवों के अमाल की बुनियाद पर आधारित है और गौर करने वाली बात ये है कि इब्राहीम से लेकर हजरत मोहम्मद तक काबा में ''मूर्ति पुजा'' होती आई है। कभी अल्लाह ताला ने अबाबील के लश्करों से इसकी सुरक्षा फरमायी और कभी अल्लाह ने इब्राहीम की नसल से काबा की सेवा करवाई। ''मूर्ति'' लेकर जो ख्यालात के मतभेद काबा में थे रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद ने उसे मिटा दिया और ये साबित किया की मानव के नेक अमाल ही सच्ची इबादत का तरीका है और ईश्वर प्राप्ति की राह भी है।

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ {68}

इबराहीम से ज़्यादा खुसूसियत तो उन लोगों को थी जो खास उनकी पैरवी करते थे और उस पैगम्बर और ईमानदारों को भी है और मोमिनीन का अल्लाह मालिक है (६८)

व्याख्याः- जिन लोगों ने इब्राहीम के बताये हुए रास्ते को इख्तियार किया था वो इब्राहीम के नजदीक के लोग थे और वही लोग मोमिन (पवित्र) थे और उनका सहारा अल्लाह ही है।
पैगामः- नेक, परहेजगार और अमनो सुकुन चाहने वालों का मार्ग दर्शक थे इब्राहीम।

وَدَّت طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّونَكُمْ وَمَا يُضِلُّونَ إِلاَّ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ {69}

एहले किताब से एक सम्प्रदाय ने बहुत चाहा कि किसी तरह तुमको राहेरास्त से भटका दे हालाँकि वह अपने ही को भटकाते है और उसको समझते नहीं (६९)

व्याख्याः- पुस्तकों के द्वारा हिदायत पाने के बावजूद कुछ लोग अपने मकसद से संयमी लोगों को गुमराह करने की कोशिश करते है। खुद बेवकुफी कर रहे है और अपने-आपको को भी पथभ्रष्ट कर रहे है।
पैगामः- शिक्षित और ज्ञानी मानव अगर शैतान के कबजे में चले जाये या अपने ज्ञान को शैतानी कामों में इस्तेमाल करने लगे तो अवश्य उसकी शक्ति आम मानवों से दुगनी होती है।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللّهِ وَأَنتُمْ تَشْهَدُونَ {70}

ऐ एहले किताब तुम अल्लाह की आयतों से क्यों इन्कार करते हो, हालाँकि तुम खुद गवाह बन सकते हो (७०)

व्याख्याः- पुस्तक समझने के बावजूद क्यों लोग अल्लाह के नियमों को इनकार करते है।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ {71}

ऐ एहले किताब तुम क्यो हक् व बातिल को गड्बड् करते और हक् को छुपाते हो हालाँकि तुम जानते हो (७१)

व्याख्याः- पुस्तक समझने के बावजूद क्यों लोग हक छुपाते है और क्यों बातिल (कुसंस्कार) के साथ हक को मिलाते है।

وَقَالَت طَّائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمِنُوا بِالَّذِيَ أُنزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوا آخِرَهُ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ {72}

और एहले किताब से एक सम्प्रदाय ने कहा कि मुसलमानों पर जो किताब नाज़िल हुयी है उसपर सुबह सवेरे ईमान लाओ और आखिर वक्त इन्कार कर दिया करो शायद मुसलमान फिर जाए (७२)

व्याख्याः- मतलब परस्थ लोग कुछ कमाने के मकसद से दिन में हक को कबूल करते है और रात को इनकार करते है और नेक लोगों को पथभ्रष्ट करने की कोशिश करते है।

وَلاَ تُؤْمِنُوا إِلاَّ لِمَن تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَى هُدَى اللّهِ أَن يُؤْتَى أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيتُمْ أَوْ يُحَآجُّوكُمْ عِندَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاء وَاللّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ {73}

और तुम्हारे दीन की पैरवरी करे उसके सिवा किसी दूसरे की बात का ऐतबार न करो तुम कह दो कि बस अल्लाह ही की हिदायत तो हिदायत है उसको भी न मानना कि जैसा तुमको दिया गया है, वैसा किसी और को दिया जाय या तुमसे कोई शख़्स अल्लाह के यहाँ झगड़ा करे कह दो कि फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है वह जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ी गुन्जाईश वाला है जानता है (७३)

व्याख्याः- संयमी, सकून चाहने वाले, सच बोलने वाले और मोहब्बत करने वाले लोगों के सिवा पापियों का यकीन न करो (यही ईमान वालों का धर्म है) । लोग समझ ले कि हिदायत तो सिर्फ अल्लाह के तरफ से है जो मानव को नसीब होती है फिर भी मानव को अकल और जहन दिया गया है कि वो इसको इस्तेमाल में लाये। लोग जितना भी बहकाने की कोशिश करे, नतीजे का मालिक तो सिर्फ अल्लाह ही है।

पैगामः- अल्लाह की मर्जी कहकर मानव अपनी मेहनत और अमाल से मूंह नहीं फेर सकता और ये इसलिए कि मानव को जहन देकर उसे उत्तम का दर्जा दिया गया और मानव का फर्ज है कि उसे वक्त, हालात और सच्चाई के साथ इस्तेमाल करें। शिक्षा प्राप्त करना ही इस रास्ते की बुनियाद है।

يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَن يَشَاء وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ {74}

जिसको चाहे अपनी रहमत के लिये ख़ास कर लेता है और अल्लाह बड़ा फ़ज़्लों करम वाला है (७४)

व्याख्याः- और अल्लाह अपनी कृपा से जिसे चाहे नवाजे और अल्लाह फजल वाला है।

وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِن تَأْمَنْهُ بِقِنطَارٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُم مَّنْ إِن تَأْمَنْهُ بِدِينَارٍ لاَّ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلاَّ مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الأُمِّيِّينَ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ {75}

और एहले किताब कुछ ऐसे भी हैं कि अगर उनके पास रूपए की ढेर अमानत रख दो तो उसे वैसे ही तुम्हारे हवाले कर दें और बाज़ ऐसे हैं कि अगर एक अशर्फ़ी भी अमानत रखो तो जब तक तुम उनके सर पर खड़े न रहोगे तुम्हें वापस न देंगे ये इस वजह से है कि उन का तो ये क़ौल है कि जाहिलो में हम पर कोई इल्ज़ाम की राह ही नहीं और जान बूझ कर अल्लाह पर झूठ जोड़ते हैं (७५)

व्याख्याः- हिदायत याफता ज्ञानी ऐसे लोग भी है अगर उन्हें ढेर सारी दौलत का रखवाला बना दो वो उसे सही सलामत वापस कर देंगे और कुछ लोग ऐसे भी है जो एक पैसे में भी बेइमानी कर जाये और कुछ लोग समझते है कि किसी की गुनाह से कमायी हुई दौलत लुटना जायज है। और उसे अल्लाह का नाम देकर उसे सही ठहराने की कोशिश करते है जब कि ये किसी भी सूरत में (जाहिल, पापी या मुशरीक को लुटना) जायज नहीं।

पैगामः- यहूदी दावा करते थे कि जाहिलों को लूटना पाप नहीं लेकिन रसुल के द्वारा जो नियम लोगों को मिले उसपर मुसलमान दावा करते है कि यहूदी झुठ बोलते है और किसी तरह किसी का भी माल हड़प करना जायज नहीं है लेकिन ताजुब की बात यह है कि कुरान शरीफ की सुरा अंफाल की आयत नं० १ गनीमत का माल मुसलमानों के लिए जायज रखा और उसके साथ बहुत सारी हदीसें जोड़कर ''गनीमत के माल'' के इस्तेमाल की तोहमत रसुल पर भी लगायी गई। इन सारी बातों की विस्तार जानकारी सुरा अंफाल में मिलेगी? (अगर इस आयत की हदीस की बुनियाद उस जमाने की है तो क्या आज के दौर में ये हदीस बातिल है) गनीमत का माल (जंग के दौरान लुटा हुआ माल) या मेरे (सिद्धार्थ चटर्जी) विचार से पापियों की पाप से कमाई हुई सम्पत्ति को समाज कल्याण में इस्तेमाल करने के लिए कुरान शरीफ में इसका विशेष हिस्सा और बांटना का तरीका मौजूद है। ''गनीमत का माल'' किसी विशेष सम्प्रदाय को लुटकर कमाई हुई दौलत की तरफ इशारा नहीं करती।

بَلَى مَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ وَاتَّقَى فَإِنَّ اللّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ {76}

हाँ जो शख़्स अपने एहद को पूरा करे और परहेज़गारी इख़्तेयार करे तो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है (७६)

व्याख्याः- जो शख्स अपना वादा पूरा करे और परहेजगारी करे तो अल्लाह परहेजगारों के साथ है ।

पैगामः- ईमान के साथ परहेजगारी और अल्लाह के असुलों को मानने वालों का गहरा तालूक है और यही सत्य है, यही अल्लाह का असुल है और यही सुख और शांति से जीने का तरीका भी।

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً أُوْلَـئِكَ لاَ خَلاَقَ لَهُمْ فِي الآخِرَةِ وَلاَ يُكَلِّمُهُمُ اللّهُ وَلاَ يَنظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلاَ يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {77}

बेशक जो लोग अपने एहद और जो अल्लाह से किया था उसके बदले थोड़ा मुआवेज़ा ले लेते है उन ही लोगों के वास्ते आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं और क़यामत के दिन अल्लाह उनसे बात तक तो करेगा नहीं ओर उनकी तरफ़ नज़र करेगा और न उनको पाक करेगा और उनके लिये दर्दनाम अज़ाब है (७७)

व्याख्याः- जो लोग अल्लाह के नियमों और अपने विवेक को थोड़ी सी कीमत पर बेच डालते है उनके जीवन के किसी भी हिस्से में शांति नहीं। ऐसे लोगों का सुख शांति के साथ कोई वास्ता नहीं और न ही उन्हें अल्लाह की मदद हासिल होगी और उनके लिए दर्दनाक अजाब है।

पैगामः- इस आयत में कहा गया ''कि अल्लाह लोगों से बात करेगा'' वो कैसे? मानव जब बुरा सोचता है तो उसका विवेक उसे रोकता है और इस तरह मानवी समाज को अल्लाह ताला पाप और पापियों से बचाये रखता है और यही ''उसकी बातचीत है''। इस आयत में कहा गया है ''अल्लाह बात भी नहीं करेगा और न उनकी तरफ देखेगा'' ये सारे मानवी फितरत की बातें मानव को समझाने के लिए मानवी तरीके से बयान की गई है और अल्लाह सब पर मेहरबान है।

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلْوُونَ أَلْسِنَتَهُم بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ مِنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِندِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُونَ {78}

और एहले किताब से बाज़ ऐसे ज़रूर है कि किताब में अपनी ज़बाने मरोड़ मरोड़ के पढ़ जाते है ताकि तुम ये समझो कि ये किताब का जुज़ है हालाँकि वह किताब का जुज़ नहीं और कहते है कि ये अल्लाह के यहाँ से है हालाँकि वह अल्लाह के यहाँ से नहीं और जानबूझ कर अल्लाह पर झूठ जोड़ते है (७८)

व्याख्याः- कुछ लोग ऐसे भी है जो पुस्तक के असली पैगाम को न समझ कर या जान-बूझकर पुस्तक के असुलों को गुमराह करते है और कभी-कभी लोगों को समझाने के लिए अपनी मनगढ़त पुस्तकों के साथ अल्लाह के असुलों को जोड़ देते है और कहते है कि ये अल्लाह की तरफ से है लेकिन हकीकत में ऐसा कुछ भी नहीं है। ये लोग अपने मकसद से अल्लाह के असुलों पर झुठ बांधते है।

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَن يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولَ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي مِن دُونِ اللَّهِ وَلَكِن كُونُوا رَبَّانِيِّينَ بِمَا كُنتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ وَبِمَا كُنتُمْ تَدْرُسُونَ {79}

किसी आदमी को ये ज़ेबा न था कि अल्लाह तो उसे किताब और हिकमत और नबूवत अता फ़रमाए और वह लोगों से कहता फिरे कि अल्लाह को छोड़कर मेरे बन्दे बन जाओ बल्कि तुम अल्लाह वाले बन जाओ क्योंकि तुम तो किताबे अल्लाह को पढ़ाते रहते हो और तुम ख़ुद भी सदा पढ़ते रहे हो (७९)

व्याख्याः- रसुलों को या जिसे अल्लाह की हिकमत (बुद्धि) और कूदरत हासिल हो और वो सच्चाई की रोशनी से रोशन हो तो वो जरूर समझेगा कि अल्लाह के सिवा किसी की भी कोई हैसियत नहीं यानी हर चीज की बुनियाद है अल्लाह और इसलिए वो लोगों को सिर्फ अल्लाह की इबादत के लिए कहेंगे अपनी नहीं।

पैगामः- अविष्कार करने वाले ज्ञानी या मानवी समाज को सुधारने वाली शक्ति सिर्फ अल्लाह के तरफ से ही मिल सकती है यानी कूदरत ही ये बात तय करती है कि मानवी समाज में किस मानव की क्या हैसियत होगी। कोई वैज्ञानिक है तो कोई पैगम्बर लेकिन कर्मक्षेत्र और कर्मफल सबका अलग-अलग होता है लेकिन मकसद एक और वो है मानव कल्याण'

وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَن تَتَّخِذُوا الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّينَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُم بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنتُم مُّسْلِمُونَ {80}

और वह तुमसे ये तो न कहेगा कि फ़रिश्तों और पैग़म्बरों को अल्लाह बना लो भला तुम्हारे मुसलमान हो जाने के बाद तुम्हें कुफ़्र का हुक्म करेगा (८०)

व्याख्याः- समझदार लोग कभी भी नबी या फरिश्तों की इबादत की इजाजत नहीं देंगे और वो इसलिए कि नबी और फरिश्तें सभी अल्लाह की ही श्रृष्टि है।

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّينَ لَمَا آتَيْتُكُم مِّن كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلَى ذَلِكُمْ إِصْرِي قَالُوا أَقْرَرْنَا قَالَ فَاشْهَدُوا وَأَنَا مَعَكُم مِّنَ الشَّاهِدِينَ {81}

जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से इक़रार लिया कि हम तुमको जो कुछ किताब और हिकमत दे उसके बाद तुम्हारे पास कोई रसूल आए और जो किताब तुम्हारे पास उसकी तसदीक़ करे तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना, और ज़रूर उसकी मदद करना अल्लाह ने फ़रमाया क्या तुमने इक़रार लिया तुमने मेरे बोझ उठा लिया सबने अर्ज़ की हमने इक़रार किया इरशाद हुआ तो आज के क़ौल व क़रार के आपस में एक दूसरे के गवाह रहना और तुम्हारे साथ मै भी एक गवाह हूँ (८१)

व्याख्याः- जब नबियों ने अल्लाह के नियम पहचाने और जो हकीकत उन्हें हासिल हुई उसे लोगों के दरमियान रखा, लोगों को चाहिए की रसुलों की सच्चाई को समाज में कामयाबी से लागू करने में मदद करे। मानवी फितरत के अनुसार हमेशा मानव अपनी बेहतरी की तरफ झुकते है और रसुल की बताई हुई सच्चाई को हमेशा समर्थन किया और कबूल किया।

पैगामः- कूदरत का सच्चा ज्ञान प्रदान करके अल्लाह ताला ने अपने और मानव के दरमियान एक संकल्प किया। पुस्तक और सच्चा ज्ञान ये दोनों ही इंसानी समाज में कुछ विशेष लोगों के पास होती है मगर इसका फायदा तमाम इंसानों को मिलता है। रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद की जिन्दगी में कुरान शरीफ पुस्तक की शक्ल में मौजूद नहीं था। इस आयत में ''किताब'' का मतलब ''तमाम सच्ची ज्ञान की किताबें और ज्ञानी इंसान'' यानी रसुल।

فَمَن تَوَلَّى بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ {82}

फिर उसके बाद जो शख़्स मुँह फेरे तो वही लोग बदचलन है (८२)

व्याख्याः- सच्चाई समझने के बाद जो उसे कबूल न करे वो मूर्ख है और खुद अपने शांति को बिगाड़ रहा है।
पैगामः- इस आयत में बताए गए फासिक का चरित्र है मूर्ख, जिद्दी और अहंकारी मानव।

أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَهُ أَسْلَمَ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ {83}

तो क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा कोई और दीन ढूँढते हैं हालाँकि जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है सबने ख़ुशी ख़ुशी या ज़बरदस्ती उसके सामने अपनी गर्दन डाल दी है और उसकी तरफ़ लौट कर जाएंगे (८३)

व्याख्याः- लोग प्रकृति की हकीकत (अल्लाह का दिन) के अलावा बनावटी और झुठी जिन्दगी की तलाश करते है। आसमान, जमीन और सारी प्रकृति अल्लाह की श्रृष्टि है और हर चीज को इसी प्रकृति में मिल जाना है।
पैगामः- दुनिया की हर चीज नश्वर है जिस एटम से वो बनती है वही एटम बिखर कर प्रकृति में मिल जाता है जैसे कि मानव का जिस्म मौत के बाद जमीन में मिल जाता है।

قُلْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَالنَّبِيُّونَ مِن رَّبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ {84}

कह दो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाए और जो किताब हम पर नाज़िल हुयी और जो इबराहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और औलादे याक़ूब पर नाज़िल हुये और मूसा और ईसा और दूसरे पैग़म्बरों को जो उनके परवरदिगार की तरफ़ से इनायत हुयी सब पर इमान लाए हम तो उनमें से किसी एक में भी फ़र्क़ नहीं करते और हम तो उसी के फ़रमाबरदार है (८४)

व्याख्याः- लोग इस हकीकत को समझे और कह दे कि जो प्रकृति और सच्चा ज्ञान उन्हें और उनके पहले लोगों को अल्लाह के तरफ से मिली और जो हकीकत इब्राहीम, इस्माइल, याकूब और उनकी संतान को मिली थी और जो हकीकत की पहचान मुसा, ईर्षा और दूसरे नबियों को अल्लाह ताला की तरफ से मिली थी, उन सब पर लोग ईमान लाये (हर नबियों को एक ही नियम और सच्चा ज्ञान मिला था जो अलग-अलग समय, भाषा और जगहों में उन्होंने लोगों को बताया) और नेक लोग इस हकीकत को समझ कर नबियों में भेदभाव न करे।
पैगामः- ये आयत और सुरा बकर की आयत १३६ एक ही है लेकिन दोनों आयतों का आधार थोड़ा सा अलग है।

وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ {85}

और जो शख़्स इस्लाम के सिवा किसी और दीन की ख़्वाहिश करे तो उसका वह दीन हरगिज़ क़ुबूल ही न किया जाएगा और वह आख़िरत में सख़्त घाटे में रहेगा (८५)

व्याख्याः- जो मानव इस्लाम (भाईचारा, संयम, शांति, मानवता, अहिंसा, नेकी, परहेजगारी और प्रेम) के सिवा दूसरा धर्म तलाश करे वो कबूल न होगा (समाज और प्रकृति दोनों के ही विरूद्ध) और उसकी रूह को तकलीफों और बदसुकुनी का अजाब।

كَيْفَ يَهْدِي اللَّهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ {86}

अल्लाह ऐसे लोगों की क्योंकर हिदायत करेगा जो इमाने लाने के बाद फिर काफ़िर हो गए हालाँकि वह इक़रार कर चुके थे कि पैग़म्बर बरहक़ है और उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े भी आ चुके थे और अल्लाह ऐसी हठधर्मी करने वाले लोगों की हिदायत नहीं करता (८६)

व्याख्याः- अल्लाह ताला ऐसे लोगों को सुकुन और सच्चाई के रास्ता पर कैसे नियुक्त करेंगे जो लोग रसुल के द्वारा मिले हुए हक और सच्चाई को समझने के बावजूद भी कबूल नहीं करते अल्लाह ऐसे लोगों को शांति और खुशी नहीं देता और न ही इसका रास्ता उन्हें नजर आता है और इनका दिमाग पुरी तरह पाप के आदर्शों से भर जाता है और वो मानवों पर अत्याचार करने लगते है।

أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ {87}

ऐसे लोगों की सज़ा यह है कि उनपर अल्लाह और फ़रिश्तों और सब लोगों की फिटकार है (८७)

व्याख्याः- ऐसे लोगों की सजा है अल्लाह और उनकी प्रकृति का अभिशाप और तमाम इंसानों की नफरत, फिटकार, लानत और अशांति वाली जिंदगी।

خَالِدِينَ فِيهَا لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنظَرُونَ {88}

और वह हमेशा उसी फिटकार में रहेंगे न तो उनके अज़ाब ही में तख़्फ़ीफ़ की जाएगी और न उनको मोहलत दी जाएगी (८८)

व्याख्याः- ऐसे लोग समाज की नफरत और अपने अपराध से कभी आजाद न होंगे।

إِلاَّ الَّذِينَ تَابُوا مِن بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {89}

मगर जिन लोगों ने इसके बाद तौबा कर ली और अपनी इस्लाह कर ली तो अलबत्ता अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (८९)

व्याख्याः- और जो लोग पाप से तौबा करे उन्हें अल्लाह की बखशीश और मेहरबानी हासिल होगी।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّن تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولَـئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ {90}

जो अपने ईमान के बाद काफ़िर हो बैठे फ़िर कुफ़्र बढ़ाते चले गये तो उनकी तौबा हरगिज़ न कुबूल की जाएगी और यही लोग गुमराह हैं (९०)

व्याख्याः- और जो लोग अल्लाह के नियमों को समझने के बाद उसे इनकार करते है और उनके नियमों के खिलाफ काम करने लगे ऐसे लोगों की तौबा अल्लाह और उसके दिये हुए समाज को हर्गीस कबूल न होगी।

पैगामः- जो गुनहगार मानव गुनाह की सारी हदें पार कर चुका हो उसे समाज की तरफ से कठिन से कठिन सजा मिलनी चाहिए और अल्लाह मानवों के द्वारा ऐसे लोगों की सजा नियुक्त कर देते है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يُقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِم مِّلْءُ الأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوِ افْتَدَى بِهِ أُولَـئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ وَمَا لَهُم مِّن نَّاصِرِينَ {91}

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया और कुफ़्र की हालत में मर गये तो अगरचे इतना सोना भी किसी की छुटकारा पाने में दिया जाए कि ज़मीन भर जाए तो भी हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा यही लोग है जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब होगा और उनका कोई मददगार भी न होगा (९१)

व्याख्याः- काफिर यानी गुनहगार मानव मरते दम तक पाप करता रहे तो किसी भी कीमत (यानी सोना) पर उनकी तौबा कबूल न होगी और उनके लिए तकलीफ देने वाला अजाब और उनका कोई मददगार नहीं।

لَن تَنَالُوا الْبِرَّ حَتَّى تُنفِقُوا مِمَّا تُحِبُّونَ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فَإِنَّ اللهَ بِهِ عَلِيمٌ {92}

जब तक तुम अपनी पसन्दीदा चीज़ों में से कुछ राहे अल्लाह मे ख़र्च न करोगे हरगिज़ सभ्यी के दरजे पर फ़ायज़ नहीं हो सकते और तुम कोई सी चीज़ भी ख़र्च करो अल्लाह तो उसको ज़रूर जानता है (९२)

व्याख्याः- जब तक लोग अपनी पसंदीदा (यानी जरूरत से ज्यादा लोभ, क्रोध, अकांक्षा, ईर्ष्या, धन और वो वस्तु जो उसे बहुत ज्यादा पसंद हो) वस्तु अल्लाह की राह में खर्च न करेंगे हर्गीस भलाई न मिलेगी और लोग जो वस्तु खर्च करते है अल्लाह को उसका इल्म है।

पैगामः- अल्लाह की राह पर खर्च करना अल्लाह इसका मोहताज नहीं है जब सब कुछ अल्लाह का है तो उनकी चीज को उनके नाम पर खर्च करने का क्या मकसद है? ये आयत किसी "चीज" पर निर्भर नहीं करती। जिन चीजों से मानव के दिमाग में लालच, हषद, मोह-माया, हिंसा और नफरत पैदा होती इस आयत में उसे त्यागने की बात की जा रही है। इंसान सबसे ज्यादा अपने आपसे प्यार करता है और उसके साथ-साथ अपनी सोच और अपने तरीकों को बेहतरीन समझते है, इस आयत में अल्लाह ताला इंसान को उसकी इस फितरत को कूरबान करने का हुकुम दे रहा है ताकि इंसान जिद्दी और अहंकारी न बने।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلاًّ لِّبَنِي إِسْرَائِيلَ إِلاَّ مَا حَرَّمَ إِسْرَائِيلُ عَلَى نَفْسِهِ مِن قَبْلِ أَن تُنَزَّلَ التَّوْرَاةُ قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {93}

तौरैत के नाज़िल होने के क़ब्ल याकूब ने जो जो चीज़े अपने ऊपर हराम कर ली थी उनके सिवा बनी इसराइल के लिए सब खाने हलाल थे कह दो कि अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो तो तौरेत ले आओ (९३)

व्याख्याः- पहले के लोगों को आहार की पहचान नहीं थी और न वो जानते थे कि कौन सा आहार लाभदायक है और कौन-सा हानिकारक। तौरात आने से पहले याकूब ने जिस चीज को अपने ऊपर वर्जित कर लिया था इसके अलावा बहुत सारे आहार बनी इसराइल पर हलाल थे रसुलों ने मानव को आहार की पहचान दी और तौरात में इसका जिक्र किया।

पैगामः- आहार के मामले में लोगों को मौसम, समय अपनी हैसियत और सेहत का ख्याल रखना चाहिए और आज के जमाने में रसुलों की गैर मौजूदगी में लोगों को चाहिए की जरुरत के अनुसार डॉक्टर से मशवरा करे किसी धार्मिक मार्ग-दर्शक से नहीं जिसको इसके बारे में कोई ज्ञान ही न हो।

فَمَنِ افْتَرَى عَلَى اللهِ الْكَذِبَ مِن بَعْدِ ذَلِكَ فَأُولَـئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ {94}

और उसको पढ़ो फिर उसके बाद भी जो कोई अल्लाह पर झूठ तूफ़ान जोड़े तो कि यही लोग ज़ालिम हैं (९४)

व्याख्याः- और जिसके पास आहार का ज्ञान नहीं फिर भी वो मशवरा देते है यानी अल्लाह पर झुठ बांधते है और यही पापी गुनहगार है। (लोगों को झूठ बोलकर उनकी सेहत बिगाड़ने का काम कर रहे है।)

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ فَاتَّبِعُوا مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ {95}

कह दो कि अल्लाह ने सच फ़रमाया तो अब तुम मिल्लते इबराहीम की पैरवी करो जो बातिल से कतरा के चलते थे और मुशरेकीन से न थे (९५)

व्याख्याः- अल्लाह ताला लोगों में से ही कुछ लोगों को सच्चा ज्ञान देते है और लोगों को चाहिए की इब्राहीम के सीधे और सच्चे धर्म को अपनाये जिसमें जरा सा भी अवगुण नहीं है।

पैगामः- सवाल ये उठता है कि जब कुरान शरीफ में फरमाया की इब्राहीम के धर्म का पथ अनुसरण करो तो हजरत मोहम्मद कौन सा धर्म लाये? क्या हजरत मोहम्मद और इब्राहीम दोनों का धर्म एक था। इब्राहीम के जमाने में धर्म के नाम पर किसी ने किसी का कत्ल नहीं किया। इब्राहीम से लेकर हजरत मोहम्मद के समय तक काबा में बुत-परस्थी का सिलसिला जारी था। और हदीसों के विचार के अनुसार अबराहा के लश्कर पर अबाबील का झुंड भेजकर काबा की रक्षा की। उस वक्त काबा में बुत-परस्थी होती थी, तो क्या काबा में अल्लाह ताला ने बूतों की रक्षा की? अगर हजरत मोहम्मद और इब्राहीम का धर्म अलग-अलग है तो मानव किस धर्म का पथ अनुसरण करे? हदीस और कुरान शरीफ के वर्तमान अनुवाद के अनुसार इन सारे सवालों को सामने रखते हुए ये प्रमाणित होता है कि तमाम रसुलों ने एक ही धर्म का प्रचार किया जिसका पैगाम है प्रेम, मानवता, शिक्षा, पवित्रता, अहिंसा, भाईचारा, ईमानदारी और शांति।

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ {96}

लोगों के वास्ते जो घर सबसे पहले बनाया गया वह तो यक़ीनन यही है जो मक्के में है बड़ी रहमत वाला और सारे जहॉन के लोगों का रहनुमा (९६)

व्याख्याः- मानव और मानव सभ्यता का लक्ष्य है शांति, प्रेम, मानवता, अहिंसा, शिक्षा और इसका चिह्न काबा को बनाया और इन सारे असुलों में ही अल्लाह विराजते है। अल्लाह का लामहदूद (अनंत) अस्तितव होने के कारण अल्लाह का कोई विशेष घर नहीं हो सकता। मानवों के लिए काबा को चिह्न बनाया और नेकी, परहेजगारी, शांति, अहिंसा, मानवता और मोहब्बत को इस चिह्न तक पहुंचने की राह बतायी गयी।

पैगामः- अल्लाह ताला अनादि और अनंत है इसलिए इसका कोई विशेष घर नहीं हो सकता और काबा में हजरत मोहम्मद के आने से पहले तक बूत-परस्ती होती थी। अगर काबा को अल्लाह का घर समझा जाये तो क्या काबा के अंदर रखे हुए बूत अल्लाह थे? क्या अल्लाह ने मानवों के लिए अपने बूतों को अपनी चिह्न बनाकर पेश किया? अल्लाह ने मानव की ''अर्न्तात्मा'' को ''अल्लाह का घर'' कहा और इसमें ही अल्लाह रहता है और इस घर में से ही लोगों के लिए नेक विचार जाहिर होते है यही अल्लाह का पहला घर है और सारे मानवों का मार्ग-दर्शक भी। इस आयत में काबा को ''बक्का'' कहा गया है। अल्लाह ताला ने साफ और सीधे तौर पर काबा को सारे दुनिया के लिए रहमत बनाया तो इस लिहाज से सउदी अरब की सरकार को कोई हक नहीं बनता के काबा के नाम पर सम्प्रदायिक सोच की श्रृष्टि करे या इस्लाम के नाम पर अरबी तहजीब का प्रचार करें। कौन काफिर है और कौन मुसलमान उसका फैसला अल्लाह ताला ने सउदी सरकार के जिम्मे नहीं छोड़ा। कुरान शरीफ के मुताबिक इसका फैसला तो सिर्फ अल्लाह ही कर सकता है।

فِيهِ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ مَقَامُ إِبْرَاهِيمَ وَمَنْ دَخَلَهُ كَانَ آمِنًا وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلًا وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ {97}

इसमें बहुत सी वाज़े और रौशन निशानियॉ हैं मुक़ाम इबराहीम है और जो इस घर में दाख़िल हुआ अमन में आ गया और लोगों पर वाजिब है कि महज़ अल्लाह के लिए ख़ानाए काबा का हज करें जिन्हे वहां तक पहुँचने की इस्तेताअत है और जिसने बावजूद क़ुदरत हज से इन्कार किया तो कि अल्लाह सारे जहॉन से बेपरवा है (९७)

व्याख्याः- और इस धर्म को जो कबुल करता है वो शांति वाला हो जाता है और यही धर्म इब्राहीम का मुकाम था । अल्लाह ताला ने हज को फर्ज किया शांति चाहने वालों के लिए और जिसे इस बात से इनकार है वो काफिर है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ شَهِيدٌ عَلَى مَا تَعْمَلُونَ {98}

कह दो कि ऐ एहले किताब अल्लाह की आयतो से क्यो मुन्किर हुए जाते हो हालाँकि जो काम काज तुम करते हो ख़ुदा को उसकी पूरी इततिला है (९८)

व्याख्याः- रसुल ने लोगों से कहा (अल्लाह के हुकुम से) पुस्तक (अल्लाह के नियम) समझने के बाद क्यों सच्चाई से कुफ्र (इनकार) करते हो। और जो कुफ्र लोग करते है अल्लाह उन पर गवाह है (अल्लाह सब देखता जानता है)

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللهِ مَنْ آمَنَ تَبْغُونَهَا عِوَجًا وَأَنتُمْ شُهَدَاء وَمَا اللهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ {99}
कह दो कि ऐ एहले किताब दीदए दानिस्ता अल्लाह की राह में कजी ढूँढो के ईमान लाने वालों को उससे क्यों रोकते हो ओर जो कुछ तुम करते हो खुदा उससे बेखबर नहीं है (९९)

व्याख्याः- पुस्तक मानने वाले लोग जब दूसरी पुस्तक मानने वाले लोगों को सच्चाई जानने के बाद बहकाते है और दूसरों के अमाल पर नुकताचीनी करते है तो यकीनन अल्लाह ऐसे लोगों के अमाल से वाकिफ है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تُطِيعُوا فَرِيقًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كَافِرِينَ {100}
ऐ ईमान वालों अगर तुमने एहले किताब के किसी फिरके का भी कहना माना तो वह तुमको ईमान लाने के बाद फिर दुबारा काफिर बना छोड़ेंगे (१००)

व्याख्याः- ईमान वाले लोग अगर पुस्तक समझने के बाद गुमराह लोगों की बात मानते है तो जरूर उनकी बातों से कुफरियत हासिल करेंगे।

وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَأَنتُمْ تُتْلَى عَلَيْكُمْ آيَاتُ اللهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهُ وَمَن يَعْتَصِم بِاللهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ {101}
और तुम क्योंकर काफिर बन जाओगे हालाँकि तुम्हारे सामने अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं और उसके रसूल भी तुममें है और जो शख़्स अल्लाह से वाबस्ता हो वह जरूर सीधी राह पर लगा दिया गया (१०१)

व्याख्याः- और सब कुछ समझने के बाद लोग कैसे कुफ्र करते है। अल्लाह के सारे नियम सुनने और देखने के बाद लोग के दरमियान अल्लाह के रसुल अपने ख्यालात के जरिया मौजूद है और जो मानव इन नियमों को सख्ती से अपनाते है यकीनन वो सही रास्ते पर है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلَا تَمُوتُنَّ إِلَّا وَأَنتُم مُّسْلِمُونَ {102}
ऐ इमान वालों अल्लाह से डरो जितना उससे डरने का हक़ है और तुम इस्लाम के सिवा किसी और दीन पर हरगिज़ न मरना (१०२)

व्याख्याः- ईमान वाले लोग अल्लाह से डरे और उनके नियमों पर सख्ती से कायम रहे ताकि अल्लाह उन्हें कुफ्र (अधर्म) की मृत्यु से बचाये।

पैगामः- अल्लाह लोगों को डरा कर या धमका कर अपने नियमों पर कायम रहने के लिए नहीं कह सकता क्या अल्लाह अपने बनाये हुए मानव को डरा कर अपने नियमों पर कायम रहने के लिये कहेगा? जबकि उनकी मर्जी के बगैर कोई भी काम नहीं हो सकता। अगर मानव कुफ्रियत (अल्लाह के नियमों को न मानना) करता है तो यकीनन वो अल्लाह से नहीं डरेगा। इस बात से कि अल्लाह "सर्वशक्तिमान और श्रृष्टिकर्ता है", इस लिहाज से कुरान की जरिया अल्लाह ने लोगों को कुफ्रियत के अजाब से डरने को कहा और साथ में नेकी पर कायम रहने की हिदायत भी दी।

وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللهِ جَمِيعًا وَلَا تَفَرَّقُوا وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنتُمْ أَعْدَاء فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِكُمْ فَأَصْبَحْتُم بِنِعْمَتِهِ إِخْوَانًا وَكُنتُمْ عَلَى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنقَذَكُم مِّنْهَا كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ {103}
और तुम सब के सब अल्लाह की रस्सी मज़बूती से थामे रहो और आपस में के फूट न डालो और अपने हाल पर अल्लाह के एहसान को तो याद करो जब तुम आपस में दुश्मन थे तो अल्लाह ने तुम्हारे दिलों में उलफ़त पैदा कर दी तो तुम उसके फ़ज़ल से आपस में भाई भाई हो गए और तुम गोया सुलगती हुयी आग की भट्टी के लब पर थे गिरना ही चाहते थे कि अल्लाह ने तुमको उससे बचा लिया तो अल्लाह अपने एहकाम यूँ वाज़ेए करके बयान करता है ताकि तुम राहे रास्त पर आ जाओ (१०३)

व्याख्याः- अल्लाह के नियमों को मजबूती से थाम ले ताकि मानवों के दरमियान मोहब्बत, भाईचारा और अम्नसकून बना रहे और अल्लाह की प्रकृति को याद करे। विभिन्न विचार के बावजूद अल्लाह ने मानवों को समाज देकर मोहब्बत से जीना सीखाया और फसाद से बचाता रहा। अल्लाह ने लोगों को अपने नियम साफ बता दिये ताकि लोग शांति की राह यानी सही रास्ते पर कायम रहे।

وَلْتَكُن مِّنكُمْ أُمَّةٌ يَدْعُونَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ {104}
और तुमसे एक सम्प्रदाय ऐसे लोगों को होना चाहिये जो लोगों को सभ्यी की तरफ़ बुलाए अच्छे काम का हुक्म दे और बुरे कामों से रोके और ऐसे ही लोग अपनी दिली मुरादें पायेंगे (१०४)

व्याख्याः- और लोगों के बीच ऐसे लोगों का रहना भी जरूरी है जो मानव को भलाई और नेक कामों का हुकुम करे और बुरे कामों से रोके और भला काम करने वाले ही कल्याणकारी और मुक्ति के योग्य है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ {105}

और तुम उन लोगों के ऐसे न हो जाना जो आपस में फूट डाल कर बैठ रहे और रौशन दलील आने के बाद भी एक मुँह एक ज़बान न रहे और ऐसे ही लोगों के वास्ते बड़ा अज़ाब है (१०५)

व्याख्याः- सब कुछ समझने के बाद जिन लोगों न आपस में फूट डाली और विचारों के मतभेद में उलझ गये ऐसे लोगों के लिये अशांति का प्रकोप है।

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوهٌ وَتَسْوَدُّ وُجُوهٌ فَأَمَّا الَّذِينَ اسْوَدَّتْ وُجُوهُهُمْ أَكَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ {106}

उस दिन से डरो जिस दिन कुछ लोगों के चेहरे तो सफ़ैद नूरानी होंगे और कुछ लोगो के चेहरे सियाह जिन लोगों के मुहँ में कालिक होगी उनसे कहा जायेगा हाए क्यों तुम तो इमान लाने के बाद काफ़िर हो गए थे अच्छा तो अपने कुफ़्र की सज़ा में अज़ाब चखो (१०६)

व्याख्याः- पापियों का चेहरा बेरौनक होता है और पवित्र लोगों का रौनकदार। इसका मतलब ये है कि जिसके जिंदगी में सुख-शान्ति और पवित्रता विराजमान है उनके चारों तरफ एक पवित्र वातावरण विराजमान होता है और पापियों को इसके विपरीत जीवन मिलता है यानी अशांति की जिन्दगी और यही इनकी सजा है।

पैगामः- मानव की शक्ल सुरत और रंगरूप के साथ इस आयत का कोई तालुक नहीं।

وَأَمَّا الَّذِينَ ابْيَضَّتْ وُجُوهُهُمْ فَفِي رَحْمَةِ اللَّهِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {107}

और जिनके चेहरे पर नूर बरसता होगा वह तो अल्लाह की रहमत में होंगे और उसी में सदा रहेंगे (१०७)

व्याख्याः- और नेक साफ सुथरी और परहेज (सफेद चेहरा) संयमी वाली जिन्दगी जीने वाले लोगों के लिये अल्लाह की तरफ से अनंत काल तक सुख-शांति का जीवन है।

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ ظُلْمًا لِّلْعَالَمِينَ {108}

ये अल्लाह की आयतें है जो हम तुमको ठीक ठीक पढ़ के सुनाते हैं और अल्लाह सारे जहाँन के लोगों पर जुल्म करना नहीं चाहता (१०८)

व्याख्याः- और रसूलों ने अल्लाह के नियमों को ठीक-ठीक लोगों तक पहुँचाया और अल्लाह अपनी श्रृष्टि को नहीं बिगाड़ते।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ {109}

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और सब कामों की रूजू अल्लाह ही की तरफ़ है (१०९)

व्याख्याः- सारी पृथ्वी और आकाश पर अल्लाह का अधिकार है और उसकी तरफ ही सारी चीजों को लौटना पड़ता है।

पैगामः- ये आयत एटम की थ्योरी को साबित करती है।

كُنتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَتُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَوْ آمَنَ أَهْلُ الْكِتَابِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُم مِّنْهُمُ الْمُؤْمِنُونَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفَاسِقُونَ {110}

तुम क्या अच्छे सम्प्रदाय हो कि हिदायत के वास्ते पैदा किये गए हो तुम अच्छे काम का हुक्म करते हो और बुरे कामों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो और अगर एहले किताब भी ईमान लाते तो उनके हक़ में बहुत अच्छा होता उनमें से कुछ ही तो इमानदार हैं और अक्सर बदकार (११०)

व्याख्याः- नेकी, परहेजगारी, मोहब्बत, अहिंसा, शिक्षा, ज्ञान, शांति और मानवता चाहने वाले लोग ही बेहतरीन सम्प्रदाय (कौम) है और ऐसे लोगों को ही मानवता के लिए नियुक्त किया गया और इन लोगों के द्वारा ही समाज में अच्छे कामों का निर्देश पहुँचता है। ऐसे लोगों को देखकर मानव बुरे कामों से दूर रहने की कोशिश करते है और सच्चाई को समझने के बाद अगर पापी पूरी तरह नेक काम करते तो इनके लिये अच्छाई थी और इन लोगों के बीच कुछ लोग ऐसे है जो ईमान रखते है और ज्यादा लोग काफिर है।

पैगामः- इस आयत से ये बात भी साबित होती है कि नेकी, परहेजगारी, इंसानियत, अहिंसा, मोहब्बत, शांति, ज्ञान ही मानव का मजहब है और इस काम के लिए इस आयत में मानव को प्रोत्साहित किया गया है।

لَن يَضُرُّوكُمْ إِلَّا أَذًى وَإِن يُقَاتِلُوكُمْ يُوَلُّوكُمُ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ {111}

ये लोग मामूली अज़ीयत के सिवा तुम्हें हरगिज़ ज़रर नहीं पहुँचा सकते और अगर तुमसे लड़ेंगे तो उन्हें तुम्हारी तरफ़ पीठ ही करनी होगी और फिर उनकी कहीं से मदद भी नहीं पहुँचेगी (१११)

व्याख्याः- काफिर नेक लोगों को नुकसान नहीं पहुँचा सकता, सिर्फ कुछ हद तक तकलीफ देते है। अगर काफिर नेक लोगों से विवाद करना चाहे तब नेक लोगों की अमनो चैन वाली जिन्दगी देखकर काफिर यकीनन पीट घुमा कर भाग जायेगा और उसे कोई मदद हासिल न होगी।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثُقِفُوا إِلاَّ بِحَبْلٍ مِّنَ اللّهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآؤُوا بِغَضَبٍ مِّنَ اللّهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوا يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللّهِ وَيَقْتُلُونَ الأَنبِيَاء بِغَيْرِ حَقٍّ ذَلِكَ بِمَا عَصَوا وَّكَانُوا يَعْتَدُونَ {112}

और जहाँ कहीं हत्ते चढ़े उनपर रूसवाई की मार पड़ी मगर अल्लाह के एहद और लोगों के एहद के ज़रिये से और फिर हेरफेर के अल्लाह के गज़ब में पड़ गए और उनपर मोहताजी की मार पड़ी ये इस सबब से कि वह अल्लाह की आयतों से इन्कार करते थे और पैग़म्बरों को नाहक़ क़त्ल करते थे ये सज़ा उसकी है कि उन्होंने नाफ़रमानी की और हद से गुज़र गए थे (११२)

व्याख्याः- शांति बिगाड़ने वालों को हर जगह अपमानित होना पड़ा। उन लोगों के लिये अल्लाह से पनाह हासिल करने का तरीका है ईमान इसके अलावा ये लोग अल्लाह के प्रकोप को झेलते है और उनके किसमत में है बेइजती का आजाब क्योंकि ऐसे लोग अल्लाह के नियमों को इनकार करते है और रसुलों के उपदेश को ठुकरा कर उनका कत्ल करते है और ये लोग किसी भी पवित्र नियम की फरमाबरदारी करना नहीं जानते और न ही अपने भले-बुरे को पहचानते हैं। जिनका जीवन अशांत होता है उनकी अंर्तात्मा पत्थर की तरह कठोर हो जाती है जिसमें दया, ममता बिल्कुल नहीं होती, वो सबसे बड़ा फकीर है।

पैगामः- आज दुनिया के तरफ नजर दौड़ाने से पता चल जायेगा कि ये आयत किस सम्प्रदाय की प्रतीक कर रही है।

لَيْسُوا سَوَاء مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ أُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَتْلُونَ آيَاتِ اللّهِ آنَاء اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُونَ {113}

और ये लोग भी सबके सब यकसाँ नही है एहले किताब से कुछ लोग तो ऐसे है कि इस तरह साबित क़दम है कि रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ा करते है और सजदे किया करते है (११३)

व्याख्याः- ऐसा नहीं है कि पुस्तक को समझने वाले सारे लोग एक जैसे है, उनमें कुछ लोग ऐसे भी है जो धर्म की सच्चाई को पहचानते है और अल्लाह के नियमों पर कष्ट के वक्त भी (यानी रात के वक्त अल्लाह की आयत पाठ करना) कायम रहते है और अल्लाह के असुलों को पुरी तरह अपने जीवन में लागू कर लेते है यानी सजदा करते है।

يُؤْمِنُونَ بِاللّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ وَيَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَأُوْلَـئِكَ مِنَ الصَّالِحِينَ {114}

अल्लाह और रोज़े आख़ेरत पर ईमान रखते है और अच्छे काम का तो हुक्म करते है और बुरे कामों से रोकते है और सभ्य कामों में दौड़ पड़ते है और यही लोग तो सभ्य बन्दों से है (११४)

व्याख्याः- ऐसे लोग अल्लाह इसकी श्रृष्टि और नश्वर संसार पर यकीन रखते है, अच्छे कामों का आदेश देते है और बुरे कामों से रोकते है और भलाई पर कायम रहते है। ऐसे लोग ही सौभाग्यशाली है।

पैगामः- पवित्र, पुण्यवान और निष्ठावान मानव किसी विशेष सम्प्रदाय के दायरे में सीमाबद्ध नहीं होता और इन लोगों का खुद एक सम्प्रदाय होता है विचारधारा के आधार पर और उसको ही कुरान में ईमान वालों का सम्प्रदाय कहा गया।

وَمَا يَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَلَن يُكْفَرُوهُ وَاللّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ {115}

और वह जो कुछ सभ्यी करेंगे उसकी हरगिज़ नाक़द्री न की जाएगी और अल्लाह परहेज़गारों से ख़ूब वाक़िफ़ है (११५)

व्याख्याः- और ऐसे लोग संयमी और पुण्य कामों के बदले शांति वाली जिन्दगी और समाज प्राप्त करते है और प्रकृति संयमी लोगों को शांति देती है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَن تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلا أَوْلادُهُم مِّنَ اللّهِ شَيْئًا وَأُوْلَـئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {116}

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया अल्लाह से बचाने में हरगिज़ न उनके माल ही कुछ काम आएंगे न उनकी औलाद और यही लोग जहन्नुमी है और हमेशा उसी में रहेंगे (११६)

व्याख्याः- और यकीनन जो लोग अल्लाह और उसकी प्रकृति को इनकार (कुफ्र) करते है उन्हें उनकी दौलत और औलाद उनकी अशांति के प्रकोप को जरा सा भी कम नहीं कर सकती और ये लोग जीते-जी नर्क की कष्ट में वास करेंगे और तमाम जिन्दगी उसी में रहेंगे।

مَثَلُ مَا يُنفِقُونَ فِي هَـٰذِهِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيحٍ فِيهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَـٰكِنْ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ {117}

दुनिया की चन्द रोज़ा ज़िन्दगी में ये लोग जो कुछ ख़र्च करते है उसकी मिसाल अन्धड़ की मिसाल है जिसमें बहुत पाला हो और वह उन लोगों के खेत पर जा पड़े जिन्होंने अपनी जानों पर सितम ढाया हो और फिर पाला उसे मार के और अल्लाह ने उनपर जुल्म कुछ नहीं किया बल्कि उन्होंने आप अपने ऊपर जुल्म किया (११७)

व्याख्याः- गुनाह से कमाई हुई दौलत से जितना भी दान-पुण्य करे वो किसी काम नहीं आती। पापियों का कष्ट उनकी अपनी कमाई है अल्लाह की तरफ से नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا بِطَانَةً مِّن دُونِكُمْ لَا يَأْلُونَكُمْ خَبَالًا وَدُّوا مَا عَنِتُّمْ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَاءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ وَمَا تُخْفِي صُدُورُهُمْ أَكْبَرُ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ إِن كُنتُمْ تَعْقِلُونَ {118}

ऐ ईमानदारों अपने मोमिनीन के सिवा अपना राज़दार न बनाओ ये ग़ैर लोग तुम्हारी बरबादी में कुछ उठा नहीं रखेंगे बल्कि जितना ज़्यादा तकलीफ़ में पड़ोगे उतना ही ये लोग ख़ुश होंगे दुश्मनी तो उनके मुँह से टपकती है और जो उनके दिलों में भरा है वह कहीं उससे बढ़कर है हमने तुमसे एहकाम साफ़ साफ़ बयान कर दिये अगर तुम समझ रखते हो (११८)

व्याख्याः- और नेक, ईमान वाले लोग ऐसों को दोस्त न बनाये जो समाज की शांति को बिगाड़ने में कोई कसर न छोड़े और हमेशा नेकों के विरुद्ध बुराई और दिल में दुश्मनी की सोच रखे। नेक और अमन सकून चाहने वाले लोग अपनी समझदारी के बदौलत ऐसे लोगों को पहचान लेंगे।

पैगामः- दुश्मनी की भावना रखना पाप है।

هَاأَنتُمْ أُولَاءِ تُحِبُّونَهُمْ وَلَا يُحِبُّونَكُمْ وَتُؤْمِنُونَ بِالْكِتَابِ كُلِّهِ وَإِذَا لَقُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ {119}

ऐ लोगों तुम ऐसे हो कि तुम उनसे उलफ़त रखतो हो और वह तुम्हें नहीं चाहते और तुम तो पूरी किताब पर ईमान रखते हो और वह ऐसे नहीं है मगर जब तुमसे मिलते हैं तो कहने लगते है कि हम भी ईमान लाए और जब अकेले में होते हैं तो तुम पर गुस्से के मारे उँगलियाँ काटते है तुम कह दो कि तुम अपने गुस्से में जल मरो जो बातें तुम्हारे दिलों में है बेशक अल्लाह ज़रूर जानता है (११९)

व्याख्याः- नेक लोग ऐसे लोगों से भी प्यार करते है मगर पापी हरगिस नेकों से प्यार नहीं करते। नेक लोग अल्लाह के सारे नियमों पर ईमान रखते है और बहरूपिये के जिन्दगी जीने वाले नेक लोगों के सामने नेकी की बात करते है लेकिन दिल में घुस्सा और दुश्मनी और अल्लाह अर्न्तयामी है।

إِن تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا بِهَا وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ {120}

अगर तुमको भलाई छू भी गयी तो उनको बुरा मालूम होता है और जब तुमपर कोई भी मुसीबत पड़ती है तो वह ख़ुश हो जाते है और अगर तुम सब्र करो और परहेज़गारी इख़्तेयार करो तो उनका फ़रेब तुम्हें कुछ भी ज़रर नहीं पहुँचाएगा क्योंकि अल्लाह तो उनकी कारस्तानियों पर हावी है (१२०)

व्याख्याः- काफिर लोग नेकों की अमनो शांति वाली जिन्दगी से न खूश होते है और उनकी तकलीफ उनकों खुशी देती है अगर नेक लोग अपने नियमों पर अटल रहे तो काफिर उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह ने उनके कामों को घेर रखा है।

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {121}

और एक वक़्त वो भी था जब तुम अपने बाल बच्चों से तड़के ही निकल खड़े हुए और मोमिनीन को लड़ाई के मोर्चों पर बिठा रहे थे और अल्लाह सब कुछ जानता और सुनता है (१२१)

व्याख्याः- रसुलों को अल्लाह के नियम समझाने के लिये शुरू से आखिर तक बहुत कठनाईयां आई और नेक लोगों का दल खड़ा करने में उन्हें वर्षों के वक्त का इंतजार करना पड़ा। ये आयत उन नेक लोगों के लिये एक उदाहरण है जिसमें नेक लोगों के लिये साहस और बुलंदी का उपदेश। इस आयत में नबी को मुखातिब किया गया है और आखिर में अल्लाह

सुनता-जानता है कहकर ''नबी का किरदार भी अल्लाह के नियमों के दायरे में होता है''। ये पैगाम भी दिया और सब्र की हिदायत भी दी गयी।

إِذْ هَمَّت طَّائِفَتَانِ مِنكُمْ أَن تَفْشَلا وَاللَّهُ وَلِيُّهُمَا وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ {122}

ये उस वक़्त का वाक़या है जब तुममें से दो सम्प्रदायों ने ठान लिया था कि पसपाई करें और फिर सँभल गए क्योंकि अल्लाह तो उनका सरपरस्त था और मोमिनीन को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिये (१२२)

व्याख्याः- ईमान वाले लोग मुसीबत के वक्त भी अल्लाह पर विश्वास रखते है।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِبَدْرٍ وَأَنتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ {123}

यक़ीनन अल्लाह ने जंगे बदर में तुम्हारी मदद की तुम बिल्कुल बे हक़ीक़त थे अल्लाह ने फतेह दी (१२३)

व्याख्याः- और उदाहरण के तौर पर बदर के युद्ध में अल्लाह कमजोरों का मददगार साबित हुआ। इसलिए उसकी कूदरत से मोहब्बत करो और शुकर अदा करो।

إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَن يَكْفِيَكُمْ أَن يُمِدَّكُمْ رَبُّكُم بِثَلَاثَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُنزَلِينَ {124}

पस तुम अल्लाह से डरते रहो ताकि शुक्रगुज़ार बनो उस वक़्त तुम मोमिनीन से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा परवरदिगार तीन हज़ार फ़रिश्ते आसमान से भेजकर तुम्हारी मदद करे (१२४)

व्याख्याः- और नबियों ने कष्ट के वक्त भी हौसला बुलंद रखने की तालिम लोगों को दी और अल्लाह के फरिश्ते जो प्रकृति बनकर मानवों को लाभ पहुँचाते है इसके बारे में भी बताया।

بَلَىٰ إِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَيَأْتُوكُم مِّن فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُم بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُسَوِّمِينَ {125}

बल्कि अगर तुम साबित क़दम रहो और बचो और कुफ़्फ़ार अपने तुमपर चढ़ भी आये तो तुम्हारा परवरदिगार ऐसे पाँच हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा जो निशाने जंग लगाए हुए डटे होंगे और अल्लाह ने ये मदद सिर्फ़ तुम्हारी ख़ुशी के लिए की है (१२५)

व्याख्याः- यकीनन इस तरह अल्लाह हजारों फरिश्तों से नेक और सब्र करने वालों को मदद पहुँचाते है।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُم بِهِ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ {126}

और ताकि इससे तुम्हारे दिल की ढारस हो और मदद जब होती है तो अल्लाह ही की तरफ़ से जो सब पर ग़ालिब हिकमत वाला है (१२६)

व्याख्याः- और अल्लाह मानव द्वारा ही मानव की मदद करते है और मानव को अमनोसकून की जिन्दगी हासिल होती है।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنقَلِبُوا خَائِبِينَ {127}

इसलिए कि काफ़िरों के एक सम्प्रदाय को कम कर दे या ऐसा चौपट कर दे कि मुँह लेकर नामुराद अपने घर वापस चले जायें (१२७)

व्याख्याः- अल्लाह के रहमो करम से काफिरों की हर बुरी कोशिश हमेशा न कामियाब रहती है और काफिर हमेशा असफल रहेंगे।

पैगामः- पापियों की पराजय ही उनका सर्वनाश है।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ {128}

तुम्हारा तो इसमें कुछ बस नहीं चाहे अल्लाह उनकी तौबा क़ुबूल करे या उनको सज़ा दे क्योंकि वह ज़ालिम तो ज़रूर है (१२८)

व्याख्याः- रसुलों ने हमेशा अल्लाह के सीखाये हुए नियम ही लोगों तक पहुँचाये। लोग माने या न माने इसकी जिम्मेदारी रसुलों पर या पैगाम पहुँचाने वालों पर नहीं है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {129}

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब अल्लाह ही का है जिसको चाहे बख़्शे और जिसको चाहे सज़ा करे और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबार है (१२९)

व्याख्याः- तमाम ब्रह्माण्ड का मालिक सिर्फ अल्लाह ही है, सजा और क्षमा इसके इख्तियार में है और अल्लाह बड़ा दयालु है।

पैगामः- जब सारे इख्तियार अल्लाह के है तो पुस्तकें, रसुल और तमाम कानून के दरमियान मानव का क्या अधिकार है? ये सच है की सारे क्रिया जो भी दुनिया में संघटित होते है, चाहे वो बुरा हो या अच्छा, सब अल्लाह के वश में है और इसकी शक्ति से ही तमाम क्रिया संघटित होती है, इस लिहाज से जिस तरह अल्लाह ने अच्छाई के साथ बुराई नियुक्त करके मानवों को रंग-बिरंगी जिन्दगी दी ठीक इसी तरह मानव को बुद्धि देकर अच्छे बुरे का ज्ञान सीखा कर मानव को तमाम जीव-जंतुओं के बीच एक अलग दर्जा भी दिया। मानव को गौर करना चाहिए की अल्लाह ने मानव के अंदर अच्छा-बुरा विवेक नियुक्त करके उसे विवेक के द्वारा ही अच्छे-बुरे की पहचान दी। अच्छे गुणों के साथ-साथ बुरा गुण डालकर मानव से ही अच्छा या बुरा काम करवाया और रसुलों को अल्लाह ने लगाम (नियंत्रक) की तरह मानवी समाज में बुराई को कम करने के लिये इस्तेमाल किया।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا الرِّبَا أَضْعَافًا مُضَاعَفَةً وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ {130}

ऐ ईमानदारों सूद दूनादून खाते न चले जाओ और अल्लाह से डरो कि तुम छुटकारा पाओ (१३०)

व्याख्याः- नेक और अच्छा मानव किसी की मजबूरी से लाभ नहीं उठाता और इस आयत में मजबूरी से लाभ उठाने को ही ''सुद'' कहा गया है।

पैगामः- इस आयत में ''सुद बढ़ा-चढ़ा कर न खाओ'' तो क्या सुद कम खाना जायज है? हकीकत में किसी की मजबूरी से लाभ उठाकर नफा कमाना ही सुद कहलाता है बाकी सब लाभ है। इस आयत में ''बढ़ा-चढ़ा कर'' का मतलब यानी कुछ लोग मजबूरी का फायदा उठाकर उसे लाभ की शकल दी इसी ''बढ़ा-चढ़ा कर सुद खाना'' को ही सुद कहा गया है यानी किसी की मजबूरी से नजायज लाभ मत उठाओ।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِي أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِينَ {131}

और जहन्नुम की उस आग से डरो जो काफ़िरों के लिए तैयार की गयी है (१३१)

व्याख्याः- अल्लाह के नियमों के विरुद्ध चलने वाले काफिरों के लिये अशांति की आग रखी गई है और नेक, ईमान वाले मानव इस अशांति की आग को महसूस करे यानी डरे और इससे दूर रहे।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ {132}

और अल्लाह और रसूल की फ़रमाबरदारी करो ताकि तुम पर रहम किया जाए (१३२)

व्याख्याः- और खुशी-खुशी अल्लाह के नियम जो रसुलों के द्वारा लोगों को मिले उसे इख्तियार करे इसी में अमन व चैन है।

وَسَارِعُوا إِلَى مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمَاوَاتُ وَالْأَرْضُ أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِينَ {133}

और अपने परवरदिगार के बख़्शिश और जन्नत की तरफ़ दौड़ पड़ो जिसकी वुसअत आसमान और ज़मीन के बराबर है और जो परहेज़गारों के लिये मुहय्या की गयी है (१३३)

व्याख्याः- परहेजगार लोग जो शांति हासिल करते है उसकी लंबाई और चौड़ाई आकाश और पृथ्वी के बराबर है यानी वो अनंत शांति में विराजमान हो जाते है।

الَّذِينَ يُنفِقُونَ فِي السَّرَّاءِ وَالضَّرَّاءِ وَالْكَاظِمِينَ الْغَيْظَ وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ {134}

जो ख़ुशहाली और कठिन वक़्त में भी ख़र्च करते है और गुस्से को रोकते हैं और लोगों से दरगुज़र करते है और सभ्यी करने वालों से अल्लाह उलफ़त रखता है (१३४)

व्याख्याः- जो लोग खुशी या गम में अच्छे काम करते है और घुस्से के वक्त किसी का दिल नहीं दुखाते और दिल में क्षमा की भावना रखते है उन्हें अल्लाह की दया और प्यार प्राप्त होता है।

पैगामः- लोग इस गलतफैमी में न रहे कि गुनाह करते रहे और अल्लाह से माफी मांगते रहे तो माफी हो जाएगी। ऐसे लोग ये समझ लें कि गुनाह किसे कहते है - गुनाह मानव के वो अमाल है जिसके कारण दूसरे मानव को तकलीफ पहुंचे या मानव समाज को नुकसान हो या कूदरत का, या मानवी समाज में गंदगी फैले या प्राणी समाज में कष्ट और तकलीफों का इजाफा हो या अपने ख्यालात से लोगों को तकलीफ देना है और अपने कर्त्तव्य का पालन न करना। ये सब गुनाह है और इनकी कोई माफी नहीं इसलिए कुरान शरीफ में साफ और स्पष्ट तौर पर लिखा है कि हर किसी को उसके पाप कर्मों पर सजा जरूर मिलेगी। धर्म हमारी अन्तर्आत्मा को अनुशासित करती है और बुरे कामों से बचाती है।

وَالَّذِينَ إِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللَّهَ فَاسْتَغْفَرُوا لِذُنُوبِهِمْ وَمَن يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا اللَّهُ وَلَمْ يُصِرُّوا عَلَى مَا فَعَلُوا وَهُمْ يَعْلَمُونَ {135}

और लोग इत्तिफ़ाक़ से कोई बदकारी कर बैठते है या आप अपने ऊपर जुल्म करते है तो अल्लाह को याद करते है और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते है और अल्लाह के सिवा गुनाहों का बख़्शने वाला और कौन है और जो वह कर बैठे तो जानबूझ कर उसपर हट नहीं करते (१३५)

व्याख्याः- ऐसे लोग अंजाने में किये गये गलत कामों की माफी मांगते है और भुल चुक की वजह से जो नुकसान होता है उसे पुरा करने की कोशिश करते है ताकि उनकी भुल-चुक या गलती से किया हुआ नुकसान कम हो या घट जाये। और यकीनन नेक और समझदार लोग पाप कर्मों के निकट नहीं जाते।

أُولَٰئِكَ جَزَاؤُهُم مَّغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَجَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ {136}

ऐसे ही लोगों की जज़ा उनके परवरदिगार की तरफ़ से बख़्शिश है और वह बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं कि वह उनमें हमेशा रहेंगे और चलन वालों की ख़ूब खरी मज़दूरी है (१३६)

व्याख्याः- ऐसे लोगों का बदला अल्लाह का माफ करना और शांति वाली जन्नत साफ-सुथरी जिंदगी की नहर के साथ-साथ सुख और चैन की ठंडक और तमाम जिंदगी खुशिया और अल्लाह की रहमत।

قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِكُمْ سُنَنٌ فَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ {137}

तुमसे पहले बहुत से वाक़यात गुज़र चुके हैं पस ज़रा रूए ज़मीन पर चल फिर कर देखो तो कि झुठलाने वालों का अन्जाम क्या हुआ (१३७)

व्याख्याः- बुरे काम का नतीजा हमेशा बुरा रहा है और अल्लाह के नियमों को ठुकराने वाले पापियों का नतीजा दुनियां की हर जगह में मौजूद है। सिर्फ नजर दौड़ाने से ही लोगों के सामने जाहिर हो जाता है।

पैगामः- अल्लाह के रहमों करम से मानवों ने विज्ञान के द्वारा इतनी तरक्की कर ली है कि इसे दुनियां की हर कोने की खबर वो घर बैठे हासिल कर सकता है और हर अच्छे-बुरे की तहकीकात और नजारा भी कर सकता है। इसलिए अल्लाहताला अपने मिशाले खोल-खोल कर बयान कर रहे है ताकि लोग समझ लें कि कौन सच्चा और कौन झुठा, कौन अच्छा और कौन बुरा, कौन खुशहाली की जिन्दगी जी रहा है और कौन बदहाली की, और जो झुठी कोम है उसका नतीजा भी लोगों के आंखों के सामने मौजूद है। जो समझदार है वो इस बात को देखकर समझे और पाप से पुण्य की तरफ आये यानी झुठ और बातिल से बचकर सच्चाई, शांति, परहेजगारी, मानवता, प्रेम, शिक्षा और अहिंसा के मार्ग पर चले।

هَٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِينَ {138}

आम लोगों के लिए तो सिर्फ़ बयान है मगर और परहेज़गारों के लिए हिदायत व नसीहत है (१३८)

व्याख्याः- समस्त मानव के लिये अच्छे-बुरे का नतीजा ढूँढना आसान है और अल्लाह ने जो उदाहरण मौजूद रखी है वो लोगों के लिये काफी है। नेक और परहेजगार लोगों के लिये ये सारे उदाहरण एक नसीहत है।

وَلَا تَهِنُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَنتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {139}

और काहिली न करो और इत्तफ़ाक़ी शिकस्त से कुढ़ो नहीं गर तुम सच्चे मोमिन हो तो तुम ही ग़ालिब और वर रहोगे (१३९)

व्याख्याः- अमन और शांति चाहने वाले लोग धैर्य रखे और मायूस न हो यकीनन जीत उन्हीं की है।

पैगामः- इस सुरा की आयत नं १३६ से लेकर १३९ तक की आयतों पर गौर फरमाने से साफ तौर पर ये प्रमाण होता है कि नेक, परहेजगार, प्रेम, शांति, अहिंसा चाहने वाले, हक पर कायम रहने वाले, प्राणियों की खिदमत करने वाले और शिक्षा की तरफ चलने वाले लोग आज की दुनिया पर राज कर रहे है और यही इस दुनिया का नियम है जो ज्यादा से ज्यादा लोगों ने अपना रखा है और यही लोग ईमान वाला है और आपस में भाई-भाई।

إِن يَمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهُ وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَتَّخِذَ مِنكُمْ شُهَدَاءَ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ {140}

अगर तुमको ज़ख़्म लगा है तो उसी तरह तुम्हारे फ़रीक़ भी ज़ख़्म लग चुका है ये इत्तफ़ाक़ा ते ज़माना है जो हम लोगों के दरमियान बारी बारी उलट फेर किया करते है और ये ताकि अल्लाह सच्चे ईमानदारों को मुसलमानों से अलग देख लें और तुममें से बाज़ को दरजाए शहादत पर फ़ायज़ करें और अल्लाह सरताबी करने वालों को दोस्त नहीं रखता (१४०)

व्याख्याः- अगर शांति चाहने वालों को तकलीफ (जख्मी) होती है तो यकीनन शांति न चाहने वालों को भी तकलीफ होती है और अल्लाह लोगों की शांति और अशांति में परिवर्तन करते रहते है और ऐसे भी कुछ लोग है जो समाज में शांति और अमनो चैन स्थापित करने की जिदोजहद में अपने-आप को भी बलिदान (शहीद) कर देते है और अल्लाह जालिमों से मोहब्बत नहीं करता।

وَلِيُمَحِّصَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَيَمْحَقَ الْكَافِرِينَ {141}

और ये कि सच्चे ईमानदारों को निरा खरा अलग कर ले और नाफ़रमानों का मटियामेट कर दे (१४१)

व्याख्याः- दुनियां में पापियों (काफिर) की मौजूदगी की एहम वजह है कि लोगों को रंग-बिरंगी जीवन मिले, अल्लाह चाहे तो काफिरों को मिटा दे और निष्ठा वालों की दुनियां कायम करे।

पैगामः- अगर सिर्फ निष्ठावानों की दुनिया होती हो तो मानव स्वभाव के अनुसार कुछ दिनों के बाद ये दुनियां एक-सा लगने लगेगी और जीवन जीने का वो आनंद नहीं उठा पाते। अल्लाह के किसी काम में जरा सा भी ऐब नहीं इनका हर फैसला परिपूर्ण होता है और मानव के लिए बेहतरीन। अल्लाह के मर्जी के बगैर कुछ भी संभव नहीं।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَيَعْلَمَ الصَّابِرِينَ {142}

क्या तुम ये समझते हो कि सब के सब बहिश्त में चले ही जाओगे और क्या अल्लाह ने अभी तक तुममें से उन लोगों को भी नहीं पहचाना जिन्होंने जेहाद किया और न साबित क़दम रहने वालों को ही पहचाना (१४२)

व्याख्याः- कुछ लोग थोड़ी सी नेकी की कारण जन्नत का दावा करते है लेकिन अपने अंदर की अपवित्र आत्मा के साथ जहाद करने वाला कौन है, ये नहीं जानते और अपनी परहेजगारी में कौन सम्पूर्ण है ये भी नहीं जानते।

وَلَقَدْ كُنتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِن قَبْلِ أَن تَلْقَوْهُ فَقَدْ رَأَيْتُمُوهُ وَأَنتُمْ تَنظُرُونَ {143}

तुम तो मौत के आने से पहले मरने की तमन्ना करते थे अब तुमने उसको अपनी आँख से देख लिया और तुम अब भी देख रहे हो (१४३)

व्याख्याः- जिन्दगी की युद्ध से पहले लोग नेकी के लिये कुरबान यानी शहीद होने का दावा करते है और जब वास्तव में ये सामने आती है तो उसे अनुभव करने का मौका मिलता है'

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِن مَّاتَ أَوْ قُتِلَ انقَلَبْتُمْ عَلَىٰ أَعْقَابِكُمْ وَمَن يَنقَلِبْ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ فَلَن يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ {144}

और मोहम्मद तो सिर्फ रसूल है इनसे पहले बहुतेरे पैग़म्बर गुज़र चुके है फिर क्या अगर मोहम्मद अपनी मौत से मर जाँए या मार डाले जाएँ तो तुम उलटे पाँव पलट जाओगे और जो उलटे पाँव फिरेगा तो हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगड़ेगा और अनक़रीब अल्लाह का शुक्र करने वालों को अच्छा बदला देगा (१४४)

व्याख्याः- हजरत मोहम्मद से पहले जितने रसुल आये उनके निधन के बाद उन लोगों ने उनके आदर्शों को भुला दिया और जो ऐसा करते है वो अल्लाह के आदर्श यानी प्रेम, परहेजगारी, मानवता, नेकी, अहिंसा और सुख-शांति को नहीं बिगाड़ सकते और अल्लाह सुख शांति चाहने वालों को अच्छा फल देंगे।

पैगामः- वर्तमान हदीसों के अनुसार रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद की निधन की खबर सुनकर उमर गमजदा और तैश में तलवार हाथ में लेकर निकल खड़े हुए और रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद के निधन का इनकार करने लगे तब अबु बकर कुरान शरीफ की इस आयत को पढ़ने लगे। सवाल ये आता है कि क्या उमर को ये मालुम नहीं कि कुरान शरीफ में ये आयत मौजूद है? और मौत जैसी अल्लाह की प्रकृति को इनकार करना क्या किसी ज्ञानी का काम है? तलवार के जोर पर सच्चाई को दबा कर रखना क्या रसुल की शिक्षा थी? मुसलमानों की तलवार अगर उठती तो सिर्फ सच्चाई को कायम रखने के लिए और अत्याचार के विरूद्ध न की सच्चाई को दबाने के लिए। अपने जजबात को घुस्से की शक्ल देना रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद की तालीम नहीं है। पहले के रसुलों की उम्मति अपने रसुलों के आदर्शों से फिर गये थे इसलिए अल्लाह ताला ने इस आयत के द्वारा हजरत मोहम्मद के मानने वालों को चेतावनी दी कि क्या वो भी हजरत मोहम्मद के आदर्शों से फिर जाएंगे।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَن تَمُوتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ كِتَابًا مُّؤَجَّلًا ۗ وَمَن يُرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَن يُرِدْ ثَوَابَ الْآخِرَةِ نُؤْتِهِ مِنْهَا وَسَنَجْزِي الشَّاكِرِينَ {145}

और बग़ैर हुक्मे अल्लाह के तो कोई शख़्स मर ही नहीं सकता वक़्ते मुअय्यन तक हर एक की मौत लिखी हुयी है और जो शख़्स बदला दुनिया में चाहे तो हम उसको इसमें से दे देते है और जो शख़्स आख़ेरत का बदला चाहे उसे उसी में से देंगे और शुक्र करने वालों को बहुत जल्द हम जज़ाए ख़ैर देंगे (१४५)

व्याख्याः- किसी भी प्राणी की मृत्यु संभव नहीं बगैर अल्लाह की अनुमति के। हर चीज के अंत होने का एक विशेष समय नियुक्त होता है दिन और दुनिया दोनों का मालिक अल्लाह है।

وَكَأَيِّن مِّن نَّبِيٍّ قَاتَلَ مَعَهُ رِبِّيُّونَ كَثِيرٌ فَمَا وَهَنُوا لِمَا أَصَابَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَمَا ضَعُفُوا وَمَا اسْتَكَانُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الصَّابِرِينَ {146}

और ऐसे पैग़म्बर बहुत से गुज़र चुके है जिनके साथ बहुतेरे अल्लाह वालों ने जेहाद किया और फिर उनको

अल्लाह की राह में जो मुसीबत पड़ी है न तो उन्होंने हिम्मत हारी न बोदापन किया गिड़गिड़ाने लगे और साबित क़दम रहने वालों से अल्लाह उलफ़त रखता है (१४६)

व्याख्याः- नबियों के आदर्श को समाज में स्थापित करने के लिये बहुत सारे लोग कष्ट झेलने के बावजूद जदोजहद करते रहे लेकिन ऐसे लोगों ने न हिम्मत हारी न सुस्त हुए और न कमजोर पड़े। शक्तिशाली से नेक आदर्शों पर कायम रहने वालों का साथी अल्लाह है।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ إِلاَّ أَن قَالُوا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِي أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ {147}

और लुत्फ़ ये है कि उनका क़ौल इसके सिवा कुछ न था कि दुआएँ माँगने लगें कि ऐ हमारे पालने वाले हमारे गुनाह और अपने कामों में हमारी ज़्यादतियाँ माफ़ कर और दुश्मनों के मुक़ाबले में हमको साबित क़दम रख और काफ़िरों के सम्प्रदाय पर हमको फ़तेह दे (१४७)

व्याख्याः- रसुलों के आदर्शों पर चलने वाले लोग प्रार्थना करे कि अंजाने में किये गए पाप को अल्लाह माफ कर दे और सच्चाई जानने से पहले जो ज्यादती हुई हो उसे भी क्षमा कर दे और सच्चाई के रास्ते पर स्थिर रखे और पाप से दूर रहने पर मदद दें।

فَآتَاهُمُ اللّهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الآخِرَةِ وَاللّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ {148}

तो अल्लाह ने उनको दुनिया में बदला और आख़िरत में अच्छा बदला ईनायत फ़रमाया और अल्लाह सभ्यी करने वालों को दोस्त रखता है (१४८)

व्याख्याः- ऐसे लोगों को अल्लाह नेकी की राह पर कायम रहने में मदद करते है और अल्लाह नेक लोगों से मोहब्बत करता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تُطِيعُوا الَّذِينَ كَفَرُوا يَرُدُّوكُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ فَتَنقَلِبُوا خَاسِرِينَ {149}

ऐ ईमानदारों अगर तुम लोगों ने काफ़िरों की पैरवी कर ली तो वह तुमको उलटे पाँव फेर कर ले जाऐंगे फिर उलटे तुम ही घाटे में आ जाओगे (१४९)

व्याख्याः- काफिर के गुण यानी पाप कर्म मानव अपनाने से अपनी शांति और अमनोचैन बिगाड़ते है।

بَلِ اللّهُ مَوْلاَكُمْ وَهُوَ خَيْرُ النَّاصِرِينَ {150}

बल्कि अल्लाह तुम्हारा सरपरस्त है और वह सब मददगारों से बेहतर है (१५०)

व्याख्याः- अल्लाह के आदर्श ही मानव का लक्ष्य होना चाहिए और इसमें ही सुख-शांति है।

سَنُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَا أَشْرَكُوا بِاللّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَمَأْوَاهُمُ النَّارُ وَبِئْسَ مَثْوَى الظَّالِمِينَ {151}

हम अनक़रीब तुम्हारा रोब काफ़िरों के दिलों में जमा देंगे इसलिए कि उन लोगों ने अल्लाह का शरीक बनाया इस चीज़ बुत को जिसे अल्लाह ने किसी क़िस्म की हुकूमत नहीं दी और उनका ठिकाना दौज़ख़ है और ज़ालिमों का बुरा ठिकाना है (१५१)

व्याख्याः- अल्लाह के आदर्शों को बिगाड़ने वाले काफिरों के दिल अशांति के कष्ट से भर जाते है। गुनाह (पाप) को ग्रहण करके काफिर अल्लाह के आदर्शों के बजाये दूसरे के आदर्श इख्तियार करते है यानी अल्लाह का साजीदार (शरीक) ठहराते है। ऐसे लोगों का ठिकाना अशांति का नर्क और बेचैनी का प्रकोप है।

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّهُ وَعْدَهُ إِذْ تَحُسُّونَهُم بِإِذْنِهِ حَتَّى إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الأَمْرِ وَعَصَيْتُم مِّن بَعْدِ مَا أَرَاكُم مَّا تُحِبُّونَ مِنكُم مَّن يُرِيدُ الدُّنْيَا وَمِنكُم مَّن يُرِيدُ الآخِرَةَ ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ وَلَقَدْ عَفَا عَنكُمْ وَاللّهُ ذُو فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ {152}

बेशक अल्लाह ने अपना वायदा सच्चा कर दिखाया था जब तुम उसके हुक्म से उन को खूब क़त्ल कर रहे थे यहाँ तक की तुम्हारे पसन्द की चीज़ तुम्हें दिखा दी उसके बाद भी तुमने बुज़दिलापन किया और हुक्मे रसूल झगड़ा किया और रसूल की नाफ़रमानी की तुममें से कुछ तो तालिबे दुनिया हैं कि झुक पड़े और कुछ तालिबे आख़िरत फिर तुम्हें उन की तरफ से फेर दिया उससे अल्लाह को तुम्हारा आज़माना मंजूर था और अल्लाह ने तुमसे दरगुज़र की और अल्लाह मोमिनीन पर बड़ा फ़ज़ल करने वाला है (१५२)

व्याख्याः- अल्लाह की सारी प्रकृति मानव के लिये हकीकत है और इस तरह अल्लाह ने मानव को खुशहाली देने का वायदा निभाया। जब गुनहगारों और उनके जरिये किये गये गुनाह को खत्म किया जाता है और नेक मानव जब ये काम करते-

करते कमजोर हो जाते है और हताश होकर आपस में ही मत विरोध करने लगते है तब यकीनन अल्लाह उन्हें सही रास्ता दिखा देते है। कुछ मानव ऐसे भी है जो दुनियावी ऐशो-आराम की मोह में गुनाह (पाप) करते है और ऐसे मानव भी है जो नेक काम और मोहब्बत से मोह रखते है और अल्लाह ताला काफिरों (गुनहगारों) को कमजोर कर देते है।

पैगामः- जब-जब दुनियां में पाप बढ़ते है तब-तब अल्लाह नेक और ईमान वाले लोगों से या प्राकृतिक तौर पर गुनहगारों को खत्म करते है।

إِذْ تُصْعِدُونَ وَلَا تَلْوُونَ عَلَىٰ أَحَدٍ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ فِي أُخْرَاكُمْ فَأَثَابَكُمْ غَمًّا بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَا أَصَابَكُمْ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ {153}

उस वक्त को याद करके शर्माओ जब तुम भागे पहाड़ पर चले जाते थे पस रसूल को तुमने आज़ारदा किया अल्लाह ने भी तुमको रंज की सज़ा में रंज दिया ताकि जब कभी तुम्हारी कोई चीज़ हाथ से जाती रहे या कोई मुसीबत पड़े तो तुम रंज न करो और सब्र करना सीखो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है (१५३)

व्याख्याः- मानव को हताशा मुक्ति का रास्ता बताते है रसुल जब मानव अपने दुःख तकलीफ से हताश होकर अपनी जिन्दगी का आनंद उठाना छोड़ देता है तब रसुल उन्हें समझाते हैं कि ये प्राकृतिक नियम है अगर तकलीफ नहीं होगी तो खुशी का एहसास नहीं होगा। तकलीफ के वक्त जो मानव अपने सच्चे और शांति वाले नियमों पर कायम रहते हैं उनकी हर तकलीफ और दुःख की बात अल्लाह जानता है।

ثُمَّ أَنزَلَ عَلَيْكُم مِّن بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَغْشَىٰ طَائِفَةً مِّنكُمْ وَطَائِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنفُسُهُمْ يَظُنُّونَ بِاللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ يَقُولُونَ هَل لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِن شَيْءٍ قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهُ لِلَّهِ يُخْفُونَ فِي أَنفُسِهِم مَّا لَا يُبْدُونَ لَكَ يَقُولُونَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هَاهُنَا قُل لَّوْ كُنتُمْ فِي بُيُوتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِينَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلَىٰ مَضَاجِعِهِمْ وَلِيَبْتَلِيَ اللَّهُ مَا فِي صُدُورِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِي قُلُوبِكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ {154}

फिर अल्लाह ने इस रंज के बाद तुमपर इत्मिनान की हालत तारी की कि तुममें से एक सम्प्रदाय का ख़ूब गहरी नींद आ गयी और एक सम्प्रदाय जिनको उस वक्त भी जान के लाले पड़े थे अल्लाह के साथ ज़मानाए जिहालत की ऐसी बदगुमानियाँ करने लगे और कहने लगे भला क्या ये अम्र कुछ भी हमारे इख़्तियार में है कह दो कि हर अम्र का इख़्तियार अल्लाह ही को है ये अपने दिलों में ऐसी बातें छिपाए हुए हैं जो तुमसे ज़ाहिर नहीं करते हते है कि इस अम्र में हमारा कुछ इख़्तायार होता तो हम यहाँ मारे न जाते कह दो कि तुम अपने घरों में रहते तो जिन जिन की तकदीर में लड़के मर जाना लिखा था वह अपने घरो से निकल निकल के अपने मरने की जगह ज़रूर आ जाते ताकि जो कुछ तुम्हारे दिल में है उसका इम्तिहान कर दे और अल्लाह तो दिलों के राज़ ख़ूब जानता है (१५४)

व्याख्याः- कष्ट के बाद अल्लाह मानव को जब सुख और शांति देते है उसमें कुछ लोग जो इस सुख-शांति का गलत इस्तेमाल करने लगते है और अल्लाह के आदर्शों के साथ न-फरमानी करें और अपने अधिकार साबित करने की कोशिश करते है। मानव ये जान ले कि रसुलों ने लोगों को ये एक सबक दिया कि तमाम अधिकार सिर्फ अल्लाह का ही है। जिसके भाग्य में मृत्यु हो वो प्रकृति द्वारा नियुक्त किये हुए समय और तरीके की तरफ खीचें चले जाते है। अल्लाह ताला मानव के आपसी मतभेद से परीचित है।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَلَّوْا مِنكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطَانُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ حَلِيمٌ {155}

बेशक जिस दिन दो जमाअतें आपस में गुथ गयीं उस दिन जो लोग तुम में से भाग खड़े हुए उनके बाज़ गुनाहों की वजह से शैतान ने बहका के उनके पाँव उखाड़ दिए और अल्लाह ने ज़रूर उनसे दरगुज़र की बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बुर्दवार है (१५५)

व्याख्याः- नेकी और बदी की लड़ाई के वक्त जो मानव अपने कर्त्तव्य से मुँह फेरते है यकीनन उन्होंने बदी को अपनाया और बिलावास्ता अपना ही बुरा किया।

पैगामः- इस आयत में कहा गया है कि अल्लाह ताला ऐसे (कर्त्तव्य को पालन न करने वाले) मानव को माफ कर देते है ! आखिर क्यों? कर्त्तव्य का पालन न करना खुदगर्जी है स्वार्थी है और खुदगर्ज मानव कभी भी क्षमा के पात्र नहीं होते। लेकिन

अगर खुदगर्ज मानव को अपने गलतियों का एहसास हो और दुबारा ऐसी गलती न दोहराये तो यकीनन अल्लाह की तरफ से उन्हें क्षमा है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ كَفَرُوا وَقَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوا غُزًّى لَوْ كَانُوا عِنْدَنَا مَا مَاتُوا وَمَا قُتِلُوا لِيَجْعَلَ اللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ {156}

ऐ ईमानदारों उन लोगों के ऐसे न बनो जो काफ़िर हो गए भाई बन्द उनके परदेस में निकले है या जेहाद करने गए है मर गए तो उनके बारे में कहने लगे कि वह हमारे पास रहते तो न मरते ओर न मारे जाते ताकि अल्लाह उनके दिलों में हसरत बना दे और अल्लाह ही जिलाता और मारता है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे देख रहा है (१५६)

व्याख्याः- पाप के विरुद्ध (सफर और जहाद) लड़ते हुए मृत्यु इख्तियार करने वाले मानव के बारे में स्वार्थी कहते है कि अगर ये पाप के खिलाफ न लड़ते तो उनकी जान बच जाती। मृत्यु कुदरत की वश में है और उसके डर से कर्त्तव्य से मुँह फेरने वाले मानव को अल्लाह अशंति की अग्नि से जलाते है। सारे अधिकार अल्लाह के है ।

وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِنَ اللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ {157}

और अगर तुम अल्लाह की राह में मारे जाओ या मर जाओ तो बे"शक अल्लाह की बख़्शिश और रहमत इस से जिसको तुम जमा करते हो ज़रूर बेहतर है (१५७)

व्याख्याः- लोग वादा करे अगर नेकी और अमन कायम (प्रतिष्ठित) करने में मौत भी आ जाये या जिन्दगी की आखिरी सांस शांति के लिये लड़ते हुए कुदरती मौत हो तो ऐसी मौत स्वार्थी और ऐशो-आराम के मोह में भटकने वालों से बेहतर है।

पैगामः- शांति, अहिंसा, सत्यता और शिक्षा के रास्ते में अगर मृत्यु भी आये तो वो निश्चित रूप से इज्जत की मृत्यु होगी।

وَلَئِنْ مُتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللَّهِ تُحْشَرُونَ {158}

और अगर तुम मरो या मारे जाओ अल्लाह ही की तरफ़ उठाए जाओगे (१५८)

व्याख्याः- नेक समाज कायम करने की जदो जहद में अगर मृत्यु आये या मार दिये जाओ अंत में सबको प्रकृति में ही समा जाना है।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِنَ اللَّهِ لِنْتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لَانْفَضُّوا مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ {159}

अल्लाह की एक मेहरबानी है कि तुम सा नरमदिल उनको मिला और तुम अगर बदमिज़ाज और सख़्त दिल होते तब तो ये लोग तुम्हारे गिर्द से तितर बितर हो गए होते पस तुम उनसे दरगुज़र करो और उनके लिए मग़फ़ेरत की दुआ माँगो और उनसे काम काज में मशवरा कर लिया करो इस पर भी जब किसी काम को ठान लो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो क्योंकि जो लोग अल्लाह पर भरोसा रखते है अल्लाह उनको ज़रूर दोस्त रखता है (१५९)

व्याख्याः- सबर और नेकी चाहने वाले मानव को अल्लाह और मानवों की मुहब्बत हासिल होती है। बदजबान और पत्थर दिल मानव को मुहब्बत और सुकून हासिल नहीं होता। नेक लोग ऐसे लोगों से दर गुजर करे और दुआ करे। समाज का हर काम नेक लोगों के मशवरे से करे और नतीजे की आशा सिर्फ अल्लाह पर, जो अल्लाह पर भरोसा करते है अल्लाह भी उनसे मोहब्बत करता है।

إِنْ يَنْصُرْكُمُ اللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ وَإِنْ يَخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِي يَنْصُرُكُمْ مِنْ بَعْدِهِ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ {160}

अगर अल्लाह ने तुम्हारी मदद की तो फिर कोई तुमपर ग़ालिब नहीं आ सकता और अगर अल्लाह तुमको छोड़ दे तो फिर कौन ऐसा है जो उसके बाद तुम्हारी मदद को खड़ा हो और मोमिनीन को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रखें (१६०)

व्याख्याः- ईमान वाले को अल्लाह की मदद पर विश्वास रखना चाहिए।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَغُلَّ وَمَنْ يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ {161}

और किसी नबी की ये शान नहीं कि ख़्यानत करे और ख़्यानत करेगा तो जो चीज़ ख़्यानत की है क़यामत के दिन वही चीज़ अल्लाह के सामने लाना होगा फिर हर शख़्स अपने किए का पूरा पूरा बदला पाएगा और उनकी किसी तरह हक़तल्फ़ी नहीं की जाएगी (१६१)

व्याख्याः- रसुल कभी भी विश्वास घात नहीं करते और किसी भी फैसले में पक्षपात नहीं किया और न किसी की अमानात में ख्यानात की । रसुलों का यही किरदार लोगों के लिये एक मिशाल है।

أفمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللَّهِ كَمَن بَاءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ {162}

भला जो शख़्स अल्लाह की ख़ुशनूदी का पाबन्द हो क्या वह उस शख़्स के बराबर हो सकता है जो अल्लाह के गज़ब में गिरफ़्तार हो और जिसका ठिकाना जहन्नुम है और वह क्या बुरा ठिकाना है (१६२)

व्याख्याः- हर किसी को अपने अमाल का पुरा-पुरा बदला मिलेगा और किसे के साथ न इंसाफी नहीं होगी। इसलिये जो मानव अल्लाह के आदर्शों का पाबंध है उसे शांति हासिल होगी और जो उसे ठुकराते है उनके लिये अशांति का प्रकोप और नर्क वाली जिन्दगी।

पैगामः- हर किसी को अपने-अपने अमाल का बदला पुरा-पुरा मिलता है। मानव के अमाल ही मुख्य है नेक अमाल यानी मोहब्बत, मानवता, भाईचारा, नेकी और परहेजगारी के अलावा कोई भी अमल अल्लाह के असुलों को साबित (प्रमाणित) नहीं करता है। मानव के अमाल ही उसका लिवाज है और इस लिवाज के अलावा मानव की कोई हैसियत नहीं। इसलिए कुरान शरीफ में नेक काम और परहेजगारी को ज्यादा एहमियत दिया गया है।

هُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ {163}

वह लोग अल्लाह के यहाँ मुख़्तलिफ़ दरजों के हैं और जो कुछ वह करते हैं अल्लाह देख रहा है (१६३)

व्याख्याः- हर मानव की प्रतिष्ठा समाज में अलग-अलग है, किसी भी मानव के ख्यालात एक-दूसरे से पूरी तरह नहीं मिलते। भाई-भाई, मां-बेटा, मियां-बीवी और दोस्त-दोस्त इन सबों की विचार धाराएं अलग-अलग है और इस लिहाज से हर किसी का दर्जा भी प्राकृतिक तौर पर अलग-अलग है। फिर भी अपने अमाल के जरिया हर कोई एक दूसरे के साथ जुड़ा हुआ है। अलग-अलग सोच, जीने का तरीका या रहन-सहन होने के बावजूद मानवी अमाल ही मानवी समाज का वो धागा है जिसके जरिए मानव आपस में रिश्तों में जुड़ते है।

لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولاً مِّنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِن كَانُوا مِن قَبْلُ لَفِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ {164}

अल्लाह ने तो ईमानदारों पर बड़ा एहसान किया कि उनके वास्ते उन्हीं की क़ौम का एक रसूल भेजा जो उन्हें अल्लाह की आयतें पढ़ पढ़ के सुनाता है और उनकी तबीयत को पाकीज़ा करता है और उन्हें किताबे और अक़्ल की बातें सिखाता है अगरचे वह पहले खुली हुयी गुमराही में पड़े थे (१६४)

व्याख्याः- जब-जब दुनियां में गुनाह बढ़ जाते है तब-तब दुनिया में रसुल आते है। रसुलों के भाव आदर्श और नेक लोगों के भाव आदर्श समान होते है और रसुल लोगों को अमनो चैन हासिल करने की विधि सीखाते है और अल्लाह के असुल समझाने के अलावा नेक राह पर चलने की प्रेरणा भी देते है।

पैगामः- आयत के मौजूदा अनुवाद के अनुसार ''मुसलमानों में से ही एक रसुल भेजा'' तो इस लिहाज से वहां पर जितने लोग बसते थे वो पहले से ही मुसलमान थे और उस वक्त काबा के अन्दर और बाहर मूर्ति की ही पूजा होती थी। तो क्या वो बुतपरस्त मुसलमान थे? जब पुखता ईमान वाले मौजूद थे तो हजरत मोहम्मद ने किस नये इस्लाम की नींव रखी थी? मानव के नेक अमाल ही ''मुसलमान'' शब्द की बुनियाद है और मानवी दौर के शुरुआत से लेकर आखिर तक रहेगी।

أَوَلَمَّا أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَدْ أَصَبْتُم مِّثْلَيْهَا قُلْتُمْ أَنَّى هَذَا قُلْ هُوَ مِنْ عِندِ أَنفُسِكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {165}

क्या जब तुमपर वह मुसीबत पड़ी जिसकी दूनी मुसीबत तुम पर डाल चुके थे तो कहने लगे ये कहाँ से आ गयी तुम कह दो कि ये तो खुद तुम्हारी ही तरफ़ से है बेशक अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (१६५)

व्याख्याः- लोगों को जब तकलीफ और दुःख पहुँचता है तब मानव पीछली खुशी के वक्त को भुला कर तकलीफों और दुःखों की शिकायत करने लगते है । अल्लाह हर राज का मालिक है ।

पैगामः- मानव की जिन्दगी में सुख का आनंद तब मिलता है जब उसे दुःख का एहसास हुआ हो, दुःख के बगैर सुख अधूरा है।

وَمَا أَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِينَ {166}

और जिस दिन दो जमाअतें आपस में गुंथ गयीं उस दिन तुम पर जो मुसीबत पड़ी वह तुम्हारी शरारत की वजह से और ताकि अल्लाह सच्चे ईमान वालों को देख ले (१६६)

व्याख्याः- अल्लाह की मर्जी से ही ईमान वालों और बेईमानों की मुतभेड़ होती है और अल्लाह ईमान वालों का साथी है।

पैगामः- इस आयत में पाप और पुण्य की लड़ाई का बयान किया जा रहा है।

وَلْيَعْلَمَ الَّذِينَ نَافَقُوا وَقِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَوِ ادْفَعُوا قَالُوا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَاتَّبَعْنَاكُمْ هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيمَانِ يَقُولُونَ بِأَفْوَاهِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُونَ {167}

और मुनाफ़िक़ों को देख ले और मुनाफ़िक़ों से कहा गया कि आओ अल्लाह की राह में जेहाद करो या हटा दो तो कहने लगे अगर हम लड़ना जानते तो ज़रूर तुम्हारा साथ देते ये लोग उस दिन बनिस्बते ईमान के कुफ़्र के ज़्यादा क़रीब थे अपने मुँह से वह बातें कह देते हैं जो उनके दिल में नहीं होती और जिसे वह छिपाते हैं अल्लाह उसे ख़ूब जानता है (१६७)

व्याख्याः- दुनियां में ऐसे लोग भी है जो गुनाह के खिलाफ जदोजहद करने वालों का साथ नहीं देते और मुखतलीफ बहाने बनाते है। ऐसे लोग यकीनन गुनाह (यानी कुफ्र) के करीब होते है।

الَّذِينَ قَالُوا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوا لَوْ أَطَاعُونَا مَا قُتِلُوا قُلْ فَادْرَؤُوا عَنْ أَنفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {168}

जो अपने भाईयों के बारे में कहने लगे काश हमारी पैरवी करते तो न मारे जाते उनसे कहो अगर तुम सच्चे हो तो ज़रा अपनी जान से मौत को टाल दो (१६८)

व्याख्याः- इस किस्म के लोग घर बैठकर गीबत (निंदा) करना ज्यादा पसंद करते है। और पाप के विरुद्ध लड़ने वाले को कहते है "अगर ये लोग हमारी बात मानते तो मृत्यु नहीं होती" क्या ये लोग खुद मृत्यु से बच सकते है।

पैगामः- मृत्यु स्वभाविक है हर मानव के जीवन में और वो मृत्यु ज्यादा सम्मानीय होती है जो कर्त्तव्य का पालन करने में हो।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاء عِندَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ {169}

और जो लोग अल्लाह की राह में शहीद किए गए उन्हें हरगिज़ मुर्दा न समझना बल्कि वह लोग जीते जागते मौजूद हैं अपने परवरदिगार की तरफ़ से वह रोज़ी पाते हैं (१६९)

व्याख्याः- जो मानव अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए पाप के विरुद्ध लड़ते हुए मृत्यु प्राप्त करते है वास्तविकता में उनकी मृत्यु नहीं होती। मानव की स्मृति और इतिहास के पन्नों में वो जिन्दा रहते है।

فَرِحِينَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَيَسْتَبْشِرُونَ بِالَّذِينَ لَمْ يَلْحَقُوا بِهِم مِّنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {170}

और अल्लाह ने जो फ़ज़ल व करम उन पर किया है फूले नहीं समाते और जो लोग उनसे पीछे रह गए और उनमें आकर शामिल नहीं हुए उनकी निस्बत ये ख़ुशियाँ मनाते हैं कि उनपर न किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न आजुर्दा ख़ातिर होंगे (१७०)

व्याख्याः- ऐसे लोग भी है जो अल्लाह की दी हुई हालात पे खुश रहते है और ऐसे लोगों को अल्लाह की दी हुई हर प्राकृतिक उतार-चढ़ाव स्वाभाविक लगते हैं चाहे खुशी हो या गम।

يَسْتَبْشِرُونَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِينَ {171}

अल्लाह की नेअमत और उसके फ़ज़ल की ख़ुशख़बरी पाकर अल्लाह मोमिनीन के सवाब को बरबाद नहीं करता (१७१)

व्याख्याः- ये लोग खुश होते है अल्लाह की दया और अनुग्रह के लिये और प्रकृति कभी भी अच्छे कामों का बदला रद्द नहीं करता।

الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِن بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ {172}

निहाल हो रहे हैं जिन लोगों ने जख़्म खाने के बाद भी अल्लाह और रसूल का कहना माना उनमें से जिन लोगों ने सभ्यी और परहेज़गारी की उनके लिये बड़ा सवाब है (१७२)

व्याख्याः- हजारों तकलीफों के बावजूद भी जो लोग अल्लाह और उनके रसुलों के बताये हुए आदर्शों पर चलते है उनके लिये अमन और चैन की जिन्दगी।

الَّذِينَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ وَنِعْمَ الْوَكِيلُ {173}

यह वह हैं कि जब उनसे लोगों ने आकर कहना शुरू किया कि लोगों ने तुम्हारे वास्ते जमा किया है पस उनसे डरते उनका ईमान और ज़्यादा हो गया और कहने लगे अल्लाह हमारे वास्ते काफ़ी है (१७३)

व्याख्याः- ऐसे लोग गुनहगारों की शक्ति से नहीं डरते और अपने कर्त्तव्य का पालन बड़ी शक्ति से करते है।

فَانقَلَبُوا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوءٌ وَاتَّبَعُوا رِضْوَانَ اللَّهِ وَاللَّهُ ذُو فَضْلٍ عَظِيمٍ {174}

और वह क्या अच्छा कारसाज़ है फिर ये लोग अल्लाह की नेअमत और फ़ज़ल के साथ वापस आए और उन्हें कोई

बुराई छू भी नहीं गयी और अल्लाह की खुशनूदी के पाबन्द रहे और अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल करने वाला है (१७४)

व्याख्याः- अल्लाह के आदर्शों का शक्ति से पालन करने वाले लोगों को कभी भी बुराई नहीं पहुँचती और ऐसे लोगों को अल्लाह की नेमत और अनुग्रह हासिल होती है।

إِنَّمَا ذَٰلِكُمُ الشَّيْطَانُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَاءَهُ فَلَا تَخَافُوهُمْ وَخَافُونِ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {175}

यह बस शैतान था जो सिर्फ़ अपने दोस्तों को डराता है पस तुम उनसे तो डरो नहीं अगर सच्चे मोमिन हो तो मुझ ही से डरते रहो (१७५)

व्याख्याः- पापियों की शक्ति के बारे में नेक लोगों को डराने वाले पापी है और नेक लोग कभी भी इन बातों से नहीं डरते।

وَلَا يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا يُرِيدُ اللَّهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ {176}

और जो लोग कुफ़्र की में पेश क़दमी कर जाते हैं उनकी वजह से तुम रन्ज न करो क्योंकि ये लोग अल्लाह को कुछ ज़रर नहीं पहुँचा सकते अल्लाह तो ये चाहता है कि आख़ेरत में उनका हिस्सा न क़रार दे और उनके लिए बड़ा अज़ाब है (१७६)

व्याख्याः- पापी कभी भी अल्लाह के आदर्शों को नहीं बिगाड़ सकते, नेक और ईमान वाले लोगों को इस बात का पूरा विश्वास है।

पैगामः- ईमान वाले अल्लाह की मदद और उनके आदर्शों पर पूरा विश्वास रखते है।

إِنَّ الَّذِينَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيمَانِ لَن يَضُرُّوا اللَّهَ شَيْئًا وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {177}

बेशक जिन लोगों ने इमान के एवज़ कुफ़्र ख़रीदा वह हरगिज़ अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (१७७)

व्याख्याः- पाप करते वक्त लोगों को उसके परिणाम का ख्याल नहीं रहता और पाप के द्वारा कुछ समय का आनंद उसे पीड़ा और अशांति से मुक्ति नहीं दिलवा सकता।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ خَيْرٌ لِّأَنفُسِهِمْ إِنَّمَا نُمْلِي لَهُمْ لِيَزْدَادُوا إِثْمًا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ {178}

और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वह हरगिज़ ये न ख़्याल करें कि हमने जो उनको मोहलत व बेफिक्री दे रखी है वह उनके हक़ में बेहतर है हमने मोहल्लत व बेफिक्री सिर्फ इस वजह से दी है ताकि वह और ख़ूब गुनाह कर लें और उनके लिए रूसवा करने वाला अज़ाब है (१७८)

व्याख्याः- और जो लोग पाप करते है उन्हें कुछ मोहलत मिलती है पाप के लिये और उसके बाद दर्दनाक प्रकोप।

مَّا كَانَ اللَّهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلَىٰ مَا أَنتُمْ عَلَيْهِ حَتَّىٰ يَمِيزَ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ يَجْتَبِي مِن رُّسُلِهِ مَن يَشَاءُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَإِن تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيمٌ {179}

अल्लाह ऐसा नहीं कि बुरे भले की तमीज़ किए बग़ैर जिस हालत पर तुम हो उसी हालत पर मोमिनों को भी छोड़ दे और अल्लाह ऐसा भी नहीं है कि तुम्हें ग़ैब की बातें बता दे मगर अल्लाह अपने रसूलों में जिसे चाहता है चुन लेता है पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और अगर तुम ईमान लाओगे और परहेज़गारी करोगे तो तुम्हारे वास्ते बड़ी जज़ाए ख़ैर है (१७९)

व्याख्याः- प्रकृति अपवित्र को पवित्र करती है और नेक लोगों को कभी भी पाप में नहीं फँसाती और यह कार्य प्रकृति अपनी अदृश्य शक्ति से पुरा करती है और अल्लाह जिसे चाहे अपना आशीर्वाद देते है। जो लोग गुनाहों से तौबा करके परहेजगार बन जाते है उन्हें शांति प्राप्त होती है।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَبْخَلُونَ بِمَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ هُوَ خَيْرًا لَّهُم بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ سَيُطَوَّقُونَ مَا بَخِلُوا بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلِلَّهِ مِيرَاثُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ {180}

और जिन लोगों को अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से कुछ दिया है बुख़्ल करते हैं वह हरगिज़ इस ख़्याल में न रहें कि ये उनके लिए बेहतर होगा बल्कि ये उनके हक़ में बदतर है क्योंकि जिस का बुख़्ल करते है अनक़रीब ही क़यामत के दिन उसका तौक़ बनाकर उनके गले में पहनाया जाएगा और सारे आसमान व ज़मीन की मीरास अल्लाह ही की है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ख़बरदार है (१८०)

व्याख्याः- लोग याद रखें कि तमाम प्रकृति अल्लाह की है और उन कुदरती चीजों को जरूरत से ज्यादा अपनी हवस पुरी करने के लिये उसे इकट्ठा करके अपने पास रखना सरासर न इंसाफी और कंजूसी है, यकीनन मानव की मृत्यु के बाद उसका जमा किया हुआ धन-सम्पत्ति साथ नहीं जाती। परवरदिगार ने उसे खाली हाथ और अकेला पैदा किया और जाता भी है वो खाली हाथ और अकेला।

لَقَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ فَقِيرٌ وَنَحْنُ أَغْنِيَاءُ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوا وَقَتْلَهُمُ الْأَنبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَنَقُولُ ذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ {181}

जो लोग ये कहते है कि अल्लाह तो कंगाल है और हम बड़े मालदार है अल्लाह ने उनकी ये बकवास सुनी उन लोगों ने जो कुछ किया उसको और उनका पैगम्बरों को नाहक़ क़त्ल करना हम अभी से लिख लेते है और हम कहेंगे कि अच्छा तो लो जलाने वाले अज़ाब का मज़ा चखो ((१८१)

व्याख्याः- कुछ पैसे वाले मानव अपने आपको ईश्वर से भी बढ़कर समझते है और अल्लाह इन सारी बातों से परिचित है। ऐसे लोग अपने अहंकार में अंधे होकर नबियों के आदेश को कत्ल (धन के द्वारा सत्य को खत्म करने की कोशिश) करते हैं और ऐसे करके उन्हें अशांति की अग्नि में जलना पड़ता है।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ {182}

ये उन्हीं कामों का बदला है जिनको तुम्हारे हाथों ने पहले से भेजा है वरना अल्लाह तो कभी अपने बन्दों पर जुल्म करने वाला नहीं (१८२)

व्याख्याः- मानव जैसे करेगा वैसा पायेगा और अल्लाह किसी पर जुल्म नहीं करता।

الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ عَهِدَ إِلَيْنَا أَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتَّىٰ يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِي بِالْبَيِّنَاتِ وَبِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {183}

जो कहते हैं कि अल्लाह ने तो हमसे वायदा किया है कि जब तक कोई रसूल हमें ये न दिखा दे कि वह कुरबानी करे और उसको आग आकर चट कर जाए उस वक़्त तक हम ईमान न लाएंगें तुम कह दो कि ये तो बताओ बहुतेरे पैगम्बर मुझसे क़ब्ल तुम्हारे पास वाज़े व रौशन मौजिज़ात और जिस चीज़ की तुमने फ़रमाइश की है लेकर आए फिर तुम अगर सच्चे तो तुमने क्यों क़त्ल किया (१८३)

व्याख्याः- कुछ मानव ऐसे है जो नबियों के आदेश को नहीं मानते और उनके बारे में प्रमाण मांगते है। नबियों के पास समस्त प्रमाण होने के बावजूद लोगों ने उनके ख्यालात का कत्ल किया (नहीं माना)।

पैगामः- अपने इन्द्रियां के आगे बेवस होकर कुछ लोगों ने नबियों की नेक बातों को दुकाराया।

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ جَاءُوا بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ {184}

अगर वह इस पर भी तुम्हें झुठलाएं तो तुमसे पहले भी बहुत से पैगम्बर रौशन मौजिज़े और सहीफ़े और नूरानी किताब लेकर आ चुके है फिर भी लोगों ने आख़िर झुठला ही छोड़ा (१८४)

व्याख्याः- इतिहास साक्षी है की हर रसुल को लोगों ने झुठा साबित करने की कोशिश की लेकिन रसुलों ने हमेशा हकीकत बयान की और अल्लाह के आदर्शों पर चलने की हिदायत दी। रसुलों को उन आदर्शों की जानकारी प्रकृति तौर पर हासिल होती थी, जो आम लोग समझ नहीं पाये।

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُورَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَمَن زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ {185}

हर जान एक न एक दिन मौत का मज़ा चखेगी और तुम लोग क़यामत के दिन पूरा पूरा बदला भर पाओगे पस जो शख़्स जहन्नुम से हटा दिया गया और बहिश्त में पहुँचा दिया गया पस वही कामयाब हुआ और दुनिया की ज़िन्दगी धोखे की टट्टी के सिवा कुछ नहीं (१८५)

व्याख्याः- हर प्राणी की मृत्यु निश्चित है और मानव को उसकी कामों का फल आखिर में जरूर मिलेगा। जो अशांति की दोजख से अजाद हो और जिसे शांति की जन्नत हासिल हो उसी को सफलता प्राप्त होती है। दुनियां की तमाम चीजें मानव के लिये एक कल्पना के सिवा कुछ नहीं। वो खाली हाथ आता है और खाली हाथ जाता है। दुनियां की चीजें सिर्फ उसकी वक्त की जरूरत है और इसके सिवा कुछ नहीं।

لَتُبْلَوُنَّ فِي أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا أَذًى كَثِيرًا وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ {186}

तुम्हारे मालों और जानों का तुमसे ज़रूर इम्तेहान लिया जाएगा और जिन लोगो को तुम से पहले किताबे अल्लाह दी जा चुकी है उनसे और मुशरेकीन से बहुत ही दुख दर्द की बातें तुम्हें ज़रूर सुननी पड़ेंगी और अगर तुम झेल जाओगे और परहेज़गारी करते रहोगे तो बेशक ये बड़ी हिम्मत का काम है (१८६)

व्याख्याः- मानव के विवेक को दौलत देकर, दौलत लेकर, और मुश्किल के वक्त अजमाया जाता है। इस पुस्तक से पहले दुनियां में मौजूद हर पुस्तक के मानने वालों (यानी अल्लाह के आदर्श) को पुस्तक के द्वारा मिले हुए उपदेश की अजमाइश होगी और हिम्मत वाले लोग परहेजगारी के जरिए अपने इन्द्रियां को काबू में रख सकते है।

وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ فَنَبَذُوهُ وَرَاءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ۖ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ {187}

और इनको वह वक्त तो याद दिलाओ जब अल्लाह ने एहले किताब से एहद व पैमान लिया था कि तुम किताबे अल्लाह को साफ़ साफ़ बयान कर देना और उसकी कोई बात छुपाना नहीं मगर इन लोगों ने उनको पसे पुश्त फेंक दिया और उसके बदले में थोड़ी सी क़ीमत हासिल कर ली पस ये क्या ही बुरा सौदा है जो ख़रीद रहे है (१८७)

व्याख्याः- सच्चाई और हकीकत समझने वालों का ये हक बनता है कि उसे न छिपा कर उसकी जानकारी (ज्ञान) मानवता के लिए लोगों तक पहुँचाये । कुछ लोग अपने निजी फायदे के लिए इसे छुपा कर लोगों को गुमराह करके अपने मक्सद में कामयाबी पाने की कोशिश करते है। ऐसे लोगों ने समाज और अपने लिये बुरा किया।

पैगामः- सनातन धर्म में ब्राह्मणों ने अपना दबदबा कायम करने के लिये आम लोगों तक वेद को पहुँचने नहीं दिया उसका नतीजा ये हुआ कि सनातन धर्म जात-पात और बुत परस्ती के कु-संस्कार में बह गये। ठीक इसी तरह मुसलमानों में एक बात प्रचालित है जिसमें कहा जाता है कि कुरान को अरबी भाषा में पढ़ने से पुण्य मिलता है लेकिन बगैर समझे कोई भी पुस्तक पढने से मानव को पुण्य हासिल नहीं हो सकता। ये सारी साजिशें मौलानाओं और ब्राह्मणों की है कि लोग उनके पास धर्म समझने के लिये आये और अपने आपको लुटा कर जाये। आयतों को समझने के लिए ज्ञान प्राप्त करना बहुत जरूरी है और नेकी का पहला कदम है ज्ञान प्राप्त करना।

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَا أَتَوا وَّيُحِبُّونَ أَن يُحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {188}

तुम उन्हें ख़्याल में भी न लाना जो अपनी कारस्तानी पर इतराए जाते हैं और किया कराया ख़ाक नहीं तारीफ़ के ख़ास्तगार है पस तुम हरगिज़ ये ख़्याल न करना कि इनको अज़ाब से छुटकारा है बल्कि उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (१८८)

व्याख्याः- ऐसे लोगों (धर्म की सत्यता को छुपाने वाले फरेबी) अपनी तारीफ सुनने के लिये बेचैन रहते है लेकिन जब लोगों के सामने सच्चाई जाहिर होती है तब उन लोगों को अजाब का सामना करना पड़ता है।

पैगामः- ऐसे लोग हताश हो जाते है क्योंकि मानव सच्चाई जानने के बाद इन फरेबी लोगों की बातों पर अमल नहीं करते और हताश ही उनका अजाब है और हताश होकर ऐसे लोग फसादी बन जाते है और दूसरों को मारने-काटने के लिए दौड़ पड़ते है।

وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {189}

और आसमान व ज़मीन सब अल्लाह ही का मुल्क है और अल्लाह ही हर चीज़ पर क़ादिर है (१८९)

व्याख्याः- आसमान और जमीन का मालिक अल्लाह है और वो सारी चीजों पर कादिर है (सच्चाई हमेशा अल्लाह की मदद से लोगों के सामने आ जाती है)।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَآيَاتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ {190}

इसमें तो शक ही नहीं कि आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और रात दिन के फेर बदल में अक़्लमन्दों के लिए बहुत सी निशानियाँ हैं(१९०)

व्याख्याः- सृष्टि और सच-झूठ की हकीकत अकलमंद लोग ठीक समझ लेते है ।

पैगामः- सृष्टि की सारी चीजें ईश्वर की शक्ति से बनती है । इस लिहाज से दुनियां में सच-झूठ की उपस्थिति भी ईश्वर की मर्जी से है और ये सिर्फ इसलिये की मानवों को रंग-बिरंगी जिन्दगी हासिल हो। बुद्धिमान इस हकीकत को समझते हुए सच्चाई कबूल करते है और शांति हासिल करते है।

الَّذِينَ يَذْكُرُونَ اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُونَ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هَٰذَا بَاطِلًا سُبْحَانَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ {191}

जो लोग उठते बैठते करवट लेते अल्लाह का ज़िक्र करते है और आसमानों और ज़मीन की बनावट में ग़ौर व फ़िक्र करते है और कह उठते है कि अल्लाह तूने इसको बेकार पैदा नहीं किया तू पाक व पाकीज़ा है बस हमको दोज़क के अज़ाब से बचा (१९१)

व्याख्याः- जो अपने जीवन की क्रिया-प्रक्रिया को अल्लाह के आदर्शों के अनुसार चलाते है और सृष्टि के हर पहलू पर गौर करते है और समझते है कि इस संसार की कोई भी वस्तु अर्थहीन नहीं है। प्रकृति की सारी वस्तुएं पवित्र है ईश्वर हम मानवों को अशांति की आग से बचाये।

رَبَّنَا إِنَّكَ مَن تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ {192}

ऐ हमारे पालने वाले जिसको तूने दोज़ख़ में डाला तो यक़ीनन उसे रूसवा कर डाला और ज़ुल्म करने वाले का कोई मददगार नहीं (१९२)

व्याख्याः- ऐ मानव को पालने वाले! तू जिसे चाहे अशांति के नर्क में डाले अत्याचारों को कभी भी कोई मदद हासिल नहीं होती।

رَبَّنَا إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِلْإِيمَانِ أَنْ آمِنُوا بِرَبِّكُمْ فَآمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّئَاتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ {193}

ऐ हमारे पालने वाले हमने एक आवाज़ लगाने वाले को सुना कि वह कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ तो हम ईमान लाए पस ऐ हमारे पालने वाले हमें हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराईयों को हमसे दूर करे दे और हमें सभ्यों के साथ उठा ले (१९३)

व्याख्याः- ऐ परवरदिगार (ईमान वाले प्रार्थना करे) सच्चाई की तरफ बुलाने वाले की आवाज को हम अनुभव करे और सच्चाई ये है कि लोग अल्लाह के नियमों (नेकी, परहेजगारी, मोहब्बत, अमनोसुकून, शिक्षा, अहिंसा और मानवता) पर ईमान लाये। ऐ परवरदिगार आप हमारे अंजाने में की गई गलतियों को माफ करें। अशांति और बुराई से हमें बचाये, सम्मान और शांति की मृत्यु प्रदान करे।

رَبَّنَا وَآتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ {194}

और ऐ पालने वाले अपने रसूलों की मार्फ़त जो कुछ हमसे वायदा किया है हमें दे और हमें क़यामत के दिन रूसवा न कर तू तो वायदा ख़िलाफ़ी करता ही नहीं (१९४)

व्याख्याः- ऐ पालनहार (ईमान वाले प्रार्थना करे) हमें शांति अताः फर्मा और जिसका वादा आपने रसुलों के द्वारा नेक लोगों को दिया और अंतिम दिवस में हमें लज्जित न करे और आपका वादा विफल नहीं होता।

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّي لَا أُضِيعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنكُم مِّن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَىٰ بَعْضُكُم مِّن بَعْضٍ فَالَّذِينَ هَاجَرُوا وَأُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَأُوذُوا فِي سَبِيلِي وَقَاتَلُوا وَقُتِلُوا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ثَوَابًا مِّن عِندِ اللَّهِ وَاللَّهُ عِندَهُ حُسْنُ الثَّوَابِ {195}

तो उनके परवरदिगार ने दुआ क़ुबूल कर ली और फ़रमाया कि हम तुममें से किसी काम करने वाले के काम को अकारत नहीं करते मर्द हो या औरत तुम एक दूसर से हो जो लोग शहर बदर किए गए और उन्होंने हमारी राह में अज़ीयतें उठायीं और जंग की और शहीद हुए मै उनकी बुराईयों से ज़रूर दरगुज़र करूँगा और उन्हें बेहिश्त के उन बाग़ों में ले जाऊँगा जिनके नीचे नहरें जारी है अल्लाह के यहाँ ये उनके किये का बदला है और अल्लाह के यहाँ तो अच्छा ही बदला है(१९५)

व्याख्याः- संयमी और अच्छे लोगों की प्रार्थना विफल नहीं होती। मर्द हो या औरत उनके अच्छे-बुरे कर्मों का बदला परवरदिगार नष्ट नहीं करता। नारी और पुरुष एक दूसरे के अंश है इस लिये जो लोग नेक (हिजरत) काम करे और अपने घरों से निकाल दिये जाये और जिनको नेकी की रास्ते पर तकलीफ दी जाएं और जो पाप के विरुद्ध लड़ते हुए शहीद हो जाए तो जरूर अल्लाह ऐसे लोगों को सच्चाई जानने से पहले की गई गलतियां माफ होंगी और परवरदिगार के रहमों करम से उसे शांति की जिन्दगी प्राप्त होगी। इस जिन्दगी में ठंडी नहर की तरह अमनोशांति का बहाव होगा और ये प्राकृतिक तौर पर होगा।

पैगामः- दुनियां में मर्द और औरत बराबर है और सारे कानून जो मर्दों पर लागू होते है वो औरतों पर भी लागू होंगे। और जो सहूलत मर्द को मिलती है वो औरतों को भी मिलेगी।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي الْبِلَادِ {196}

काफ़िरों का शहरो*शहरो चैन करते फिरना तुम्हे धोखे में न डाले (१९६)

व्याख्याः- ऐ सच्चाई ढूँढ़ने वाले आपलोगों की दुनियां काफिरों (पापियों) से प्रभावित न हो।

مَتَاعٌ قَلِيلٌ ثُمَّ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمِهَادُ {197}

ये चन्द रोज़ा फ़ायदा है फिर तो उनका ठिकाना जहन्नुम ही है और क्या ही बुरा ठिकाना है (१९७)

व्याख्याः- पापियों की मौज-मस्ती सिर्फ चन्द रोजा है, पाप से कमाई हुई मौज-मस्ती आखिर में उसे अशांति का घर ही दे सकती है।

لَكِنِ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نُزُلًا مِّنْ عِندِ اللَّهِ وَمَا عِندَ اللَّهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ {198}

मगर जिन लोगों ने अपने परवरदिगार की परहेज़गारी वह बाग़ात है जिनके नीचे नहरें जारी हैं और वह हमेशा उसी में रहेंगे ये अल्लाह की तरफ़ से उनकी दावत है और जो अल्लाह के यहाँ है वह सभ्यो कारों के वास्ते दुनिया से कहीं बेहतर है (१९८)

व्याख्याः- जो मानव उस अशांति के डर से अल्लाह के नियमों को अपनाते है उनके लिये शांति की जिन्दगी जिसमें ठंडे नहर की तरह अमनो सकून का बहाव होगा और ये ठंडक उन्हें अनंत काल तक मिलेगी और ये प्रकृति की तरफ से उन्हें पुरुषकार। नेक लोगों के लिए अल्लाह के नियम ही अंतिम नियम है।

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَمَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِمْ خَاشِعِينَ لِلَّهِ لَا يَشْتَرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ {199}

और एहले किताब में से कुछ लोग तो ऐसे ज़रूर हैं जो अल्लाह पर और जो तुम पर नाज़िल हुयी और जो उनपर नाज़िल हुयी ईमान रखते है अल्लाह के आगे सर झुकाए हुए है और अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ी सी क़ीमत नहीं लेते ऐसे ही लोगों के वास्ते उनके परवरदिगार के यहाँ अच्छा बदला है बेशक अल्लाह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है (१९९)

व्याख्याः- यकीनन ऐसे लोगा भी है जो हर रसुल के द्वारा मिले हुए अल्लाह के नियमों पर विश्वास रखते है, जो उसके चहेते रसुल और तमाम रसुलों के तरफ से मिले और अशांति से डरते है और रसुलों में अन्तर नहीं करते और अल्लाह के नियमों को बिगाड़ने की कोशिश नहीं करते। ऐसे लोगों को पालनहार की तरफ से शांति मिलेगी। सारे हिसाब-किताब का मालिक अल्लाह है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اصْبِرُوا وَصَابِرُوا وَرَابِطُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ {200}

ऐ ईमानदारों और दूसरों को बर्दाश्त की तालीम दो और कमरें कस लो और अल्लाह ही से डरो ताकि तुम अपनी दिली मुराद पाओ (२००)

व्याख्याः- ईमानदार जान ले ! सबर करें और पापियों के विरुद्ध लड़ते हुए भी सब्र से मदद ले अपनी नियमों पर कायम रहें और हर वक्त पाप के विरुद्ध लड़ने के लिये तैयार रहे, अशांति से डरें। जरुर नेक लोग ही सफल होते है।

पैगामः- अल्लाह या ईश्वर कोई भूत या डरने वाली चीज नहीं है और जो पालनहार होता है वो कभी भी डराता नहीं। अल्लाह मानव से मोहब्बत करता है और मानव को भी अल्लाह और उसके नियमों से मोहब्बत करनी चाहिये। इस आयत में अल्लाह से डरने की बात की गई है और इस बात का गहरा मतलब है। और वो है शांति और अशांति। मानव को शांति मिले या अशांति दोनों अल्लाह के तरफ से ही मिलती है, इस आयत में अल्लाह ने अशांति के अजाब से डरने और उससे दूर रहने के लिये कहा गया।

सूरा: अन-निसा

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

व्याख्या:- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्षमाकरी है ।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي تَسَاءَلُونَ بِهِ وَالْأَرْحَامَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبًا {1}

ऐ लोगों अपने पालने वाले से डरो जिसने तुम सबको एक शख़्स से पैदा किया और उनकी बाकी मिट्टी से उनकी बीवी को पैदा किया और उन्ही दो से बहुत से मर्द और औरतें दुनिया में फैला दिये और उस अल्लाह से डरो जिसके वसीले से आपस में एक दूसरे से सवाल करते हो और क़तए रहम से भी डरो बेशक अल्लाह तुम्हारी देखभाल करने वाला है (१)

व्याख्या:- मानव उस पाप के नतीजे से डरे जिससे मानव के रिश्तों और जजबातों का अपमान हो। प्राणी श्रृष्टि का वैज्ञानिक तथ्य ये है - हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के मिलन से पानी की श्रृष्टि हुई और पानी से ही एक कोशिका वाली प्राणी यानी (one cell animal e.g. hydra, amoeba) और वही एक कोशी प्राणी लाखों-करोड़ों सालों का समय अतिवाहित करने के बाद विभिन्न आकार की प्राणियों की श्रृष्टि हुई और इस नियम के अनुसार मानव शरीर की भी रचना हुई। इस तथ्य को वैज्ञानिक सबूत के साथ प्रमाण कर चुके, अल्लाह कभी भी अवैज्ञानिक तथ्य प्रदान नहीं करते, इस लिहाज से ऑक्सीजन और हाइड्रोजन की पौराणिक नाम है आदम और हव्वा, इसके अलावा अफ्रीका के एक जनजाति के बीच आदम नाम का एक व्यक्ति हुआ करता था जिसने वहां के मानव को सभ्यता और प्रगति का रास्ता दिखाया था, हालांकि, इसका कोई एतिहासिक प्रमाण नहीं है।

पैगाम:- मानव हमेशा अपनो से उम्मीदें लगाता है और जब उसकी उम्मीदें पुरी नहीं होती तो उसका दिल टूट जाता है। देना वाला तो अल्लाह है और दिल टूटने के कारण रिश्तों में दरार पैदा हो सकती है, इससे मानव को बचना चाहिये। प्रकृति तौर पर मानव उम्मीदों से आजाद नहीं है। दुनियां में सबसे पहले एक कोशी वाली जान वजूद में आई एमोइबा हाइड्रा और इसके बाद कोश विभाजन के द्वारा बहू कोशी प्राणों की सृष्टि हुई। ये एक कोशी वाली जान ही तमाम प्राणों की बुनियाद है। इस तरह मानवों के दरमियान मर्द, औरत और नपंसूक बने। लाखों सालों के विवर्तन के बाद आज मानव ने ये सकल इख्तियार की। मर्द और औरत के मिलन के बाद मातृजठर में वही एक कोशी (one cell) वाली जान एक मानव की शुरूआत है। इसलिए इस आयत की पहली लाइन में डर की बात की गयी है। मुसा से पहले किसी भी धार्मिक पुस्तक में आदम नाम के किसी भी शख्स का जिक्र नहीं था और हम दावे के साथ कह सकते है कि हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का कदीम नाम है आदम और हव्वा है।

وَآتُوا الْيَتَامَىٰ أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيثَ بِالطَّيِّبِ وَلَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَهُمْ إِلَىٰ أَمْوَالِكُمْ إِنَّهُ كَانَ حُوبًا كَبِيرًا {2}

और यतीमों को उनके माल दे दो और बुरी चीज़ को भली चीज़ के बदले में न लो और उनके माल अपने मालों में मिलाकर न चख जाओ क्योंकि ये बहुत बड़ा गुनाह है (२)

व्याख्या:- जिस मानव के मां-बाप की मृत्यु हो चुकी हो या वो बुढ़ा मानव जिसकी देखभाल करने वाला कोई न हो और ऐसा मजबूर मानव जिसका कोई मददगार न हो। इस तरह के अनाथों की सम्पत्ति या हक उसे सही सलामात लौटाना मानवी फर्ज है और ऐसे सम्पत्ति से व्यक्तिगत लाभ उठाना पवित्र मानव के लिये अपवित्र और वर्जित (हराम) है। और जो लोग ऐसा करते है वो पापी है।

पैगाम:- इस सुरा की आयत नं १ और आयत नं २ एक विशेष गहरा पैगाम देती है । मानव को जब अपनी पैदाइश की हकीकत का पता चल जाता है और वो ये भी जान लेता है कि इसकी मृत्यु निश्चित है और प्रकृति तौर पर दुनियां के सारे मानवों के अधिकार बराबर है। इसलिए किसी भी मानव का वजूद गलत नहीं है। चाहे इसकी पैदाइश किसी तरह ही क्यों न हो। इसलिए किसी का हक छिन कर अपना फायदा करना सरासर नजायज है । किसी भी मानव के अस्तित्व को छोटा या बड़ा की हैसियत का तगमा देना नइंसाफी है। हर मानव प्रकृति तौर पर अपना किरदार अलग-अलग अदा करते हैं। इस लिहाज से समाज की इस प्रकृति चरित्र को विभाजित करके मानव को अलग-अलग हैसियत में बांटना पाप है। इन आयतों के द्वारा मानव को यही पैगाम मिलता है किसी भी मानव के मजबूरी से फायदा उठाना महा पाप है।

وَإِنْ خِفْتُمْ أَلاَّ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانكِحُوا مَا طَابَ لَكُم مِّنَ النِّسَاء مَثْنَى وَثُلاَثَ وَرُبَاعَ فَإِنْ خِفْتُمْ أَلاَّ تَعْدِلُوا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ذَلِكَ أَدْنَى أَلاَّ تَعُولُوا {3}

और अगर तुमको अन्देशा हो कि तुम यतीम लड़कियों में इन्साफ न कर सकोगे तो और औरतों में अपनी मर्ज़ी के मवाफ़िक दो दो और तीन तीन और चार चार निकाह करो अन्देशा हो कि बीवियों में इन्साफ न कर सकोगे तो एक ही पर इक्तेफ़ा करो या जो तुम्हारी ज़र ख़रीद होये तदबीर बेइन्साफ़ी न करने की बहुत क़रीने क़यास है (३)

व्याख्याः- अगर किसी मानव को डर हो कि अनात से शादी करके उनके साथ इंसाफ न कर सकेगा तो यकीकन वो ऐसा रिश्ता न करे और अपने लिये दूसरा रिश्ता ढूँढ़े। मर्दों की ख्वाहिश के मुताबिक और इनकी जिनसी लालच को बांधने के लिये अल्लाह ताला ने इस आयत में मर्दों की ज्यादा अधिक शादियों की ख्वाहिसात को इंसाफ की हतकड़ी पहनायी और कहा ''दो-दो, तीन-तीन, चार-चार'' जितनी भी शादियां कर लो सबों के साथ इंसाफ बराबर होना चाहिए। जो एक मानव के लिये असंभव है और फिर मर्दों को कहा गया है ''उसके लिये एक ही औरत काफी है'' (४/१२९)। और इस तरह अल्लाह ने मर्दों की जिनसी लालच को काबू में रखा।

पैगामः- इस सुरा की आयत १२९ में पाक-परवरदिगार ने साफ और सीधे तौर पर एक नारी के साथ जिन्दगी गुजारने का उपदेश दिया और मौजूदा कानून (जिसे दुनियां के ज्यादा से ज्यादा लोगों ने अपनाया) भी एक शादी की इजाजत देता है जिसके जरिए इनसानी आबादी और प्रकृति का संतुलन बरकरार रहेगा। गरीब और अनाथ औरत (लौंडी/दासी) से निकाह करना और उसे इज्जत के साथ रखना पुण्य का काम है ।

وَآتُوا النِّسَاء صَدُقَاتِهِنَّ نِحْلَةً فَإِن طِبْنَ لَكُمْ عَن شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوهُ هَنِيئًا مَّرِيئًا {4}

और औरतों को उनके मेहर राजी खुशी दे दो, हां अगर वो खुद अपनी खुशी से कुछ मेहर छोड़ दे तो उसे शौक से खुश होकर खाओ-पीयो।(४)

व्याख्याः- पुरुष नारी से उसका अधिकार छिनने की कोशिश न करे और नारी के हिस्से की सम्पत्ति उसे खुशी-खुशी दे दें।

पैगामः- पुरुषों ने दुनियां में अपनी हुकुमत कायम की और ये इसलिए की पुरुष नारी से शारीरिक तौर पर शक्तिशाली है। शादी के वक्त नारी की सुरक्षा के तहत पुरुषों को कुछ धन देना चाहिए जिसका नाम है ''दीनमोहर'' या ''हकमोहर''। नारी के साथ अगर कोई न इंसाफी हो तो उसमें उसके मुआवजा (क्षतिपूर्ति) में कमी न हो और ये औरत का हक भी है। मर्दों से कम ताकतवर होने की वजह से उसे जुल्म का शिकार न होना पड़े। मैं (सिद्धार्थ चटर्जी) समझते हूं नारी के सारे आर्थिक अधिकार चाहे वो पति हो, बाप हो, बेटा हो या भाई हो उसका चिह्न है, हकमोहर या दीनमोहर और ये औरत का हक है।

وَلاَ تُؤْتُوا السُّفَهَاء أَمْوَالَكُمُ الَّتِي جَعَلَ اللّهُ لَكُمْ قِيَامًا وَارْزُقُوهُمْ فِيهَا وَاكْسُوهُمْ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلاً مَّعْرُوفًا {5}

और अपने वह माल जिनपर अल्लाह ने तुम्हारी गुज़र न क़रार दी है बेवक़ूफ़ों को न दे बैठो हाँ उसमें से उन्हें खिलाओ और उनको पहनाओ और उनसे अच्छी तरह बात करो (५)

व्याख्याः- बुद्धिहीन के हाथ में सम्पत्ति न देकर ईमान वाले उनकी परवरिश की जिम्मेदारी निभाये। मानसिक प्रतिबन्धि के इलाज के बाद अगर वो बुद्धिमान हो जाये तो उनके हिस्से की सम्पत्ति ईमान वाले उसे लौटा दे। और उनकी सम्पत्ति न हक इस्तेमाल न करें और न गलत तरीके से उसे खर्च करें।

وَابْتَلُوا الْيَتَامَى حَتَّى إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ فَإِنْ آنَسْتُم مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ وَلاَ تَأْكُلُوهَا إِسْرَافًا وَبِدَارًا أَن يَكْبَرُوا وَمَن كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَن كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ فَإِذَا دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوا عَلَيْهِمْ وَكَفَى بِاللّهِ حَسِيبًا {6}

और यतीमों को कारोबार में लगाए रहो यहाँ तक के ब्याहने के क़ाबिल हों फिर उस वक़्त तुम उन्हे उनके हाथ से कराके अगर होशियार पाओ तो उनका माल उनके हवाले कर दो औरऐसा न करना कि इस ख़ौफ़ से कि कहीं ये बड़े हो जाएंगे फ़ुज़ूल ख़र्ची करके झटपट उनका माल चट कर जाओ और जो दौलतमन्द हो तो वह बचता रहे और जो मोहताज हो वह अलबत्ता दस्तूर के मुताबिक़ खा सकता है पस जब उनके माल उनके हवाले करने लगो तो लोगों को उनका गवाह बना लो और हिसाब लेने को अल्लाह काफ़ी ही है (६)

व्याख्याः- अनाथ बच्चे जब शादी के काबिल हो जाये और दिमागी तौर पर पुख्ता हो जाये तो उन्हें उनकी सम्पत्ति सौंप दी जाए। इनकी सम्पत्ति हड़पना, गलत तरीके से खर्च करना, जल्दी-जल्दी उसे अपने इस्तेमाल में ये सोच कर लाना कि उनके बालिग होने के बाद सुरक्षा करने वाले को कुछ फायदा न देगा, ये सारी बातें पाप है। अनाथ बच्चे का रखवाला अगर गरीब हो तो उसके बड़े होने तक उसे इतना ही इस्तेमाल में लाये जितनी उसे गुजारे की जरूरत हो। अनाथ की सम्पत्ति

उसे बड़े होने पर जब लौटाये तो गवाह जरूर रखे। सारे इंसाफ का मालिक अल्लाह है। मानव समाज में उपस्थित सारे कानून मानव के अंर्तात्मा की परछाई है।

पैगामः- इस आयत के कानून के अनुसार मानवी समाज को एक विशेष पैगाम मिलता है और वो ये है कि मानव के बालिक होने का पैगाम जिसे आज हमारे समाज ने अपनाया और १४०० साल पहले कुरान शरीफ में इसका बयान आ चुका है।

لِّلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا {7}

माँ बाप और क़राबतदारों के तर्के में कुछ हिस्सा ख़ास मर्दों का है और उसी तरह माँ बाप और क़राबतदारो के तरके में कुछ हिस्सा ख़ास औरतों का भी है ख़्वाह तर्क कम हो या ज़्यादा हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ है (७)

व्याख्याः- पिता की सम्पत्ति और करीबी रिश्तेदारों की छोड़ी हुई सम्पत्ति कम हो या ज्यादा, पुरुष हो या नारी, छोटा हो या बड़ा सबका अधिकार है।

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينُ فَارْزُقُوهُم مِّنْهُ وَقُولُوا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوفًا {8}

और जब तक़सीम के वक़्त क़राबतदार और यतीम बच्चे और मोहताज लोग आ जाएं तो उन्हे भी कुछ उसमें से दे दो और उसे अच्छी तरह बात करो (८)

व्याख्याः- सम्पत्ति बांटते समय अनाथ और निर्धन लोगों को उसमें से कुछ दिया जाए और उन लोगों के लिये अच्छा व्यवहार रखें।

पैगामः- जिसके पास सम्पत्ति होती है या जिसे प्राकृतिक तौर पर आर्थिक सुरक्षा प्राप्त होती है ऐसे मानव में एक विशेष स्वभाव पाया जाता है जब वो किसी को किसी मतलब के बगैर कुछ देता है तब दया या नफरत की भावना नहीं होती। अर्थनेटिक अवस्था मानव को एक-दूसरे से ऊँचा या नीचा नहीं कर सकती। जितनी भी दौलत सम्पत्ति किसी के पास क्यों न हो मृत्यु के समय सब कुछ छोड़ कर जाना पड़ता है चाहे वो गरीब हो या दौलतमंद, सबको खाली हाथ जाना पड़ता है और यही क़ुदरत है। मानव का व्यहम है कि दौलतमंदों को बड़ा और गरीबों को छोटा समझना और ये व्यहम मानव को उसके मानवी कर्त्तव्य से दूर कर देता है। इस आयत के द्वारा अल्लाह ताला ने मानव को अपने इस स्वभाव पर काबू पाने का हुकुम बक्षा।

وَلْيَخْشَ الَّذِينَ لَوْ تَرَكُوا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعَافًا خَافُوا عَلَيْهِمْ فَلْيَتَّقُوا اللَّهَ وَلْيَقُولُوا قَوْلًا سَدِيدًا {9}

और उन लोगों को डरना कि अगर वह लोग खुद अपने बाद नातवाँ बच्चे छोड़ जाते तो उन पर तरस आता पस उनको अल्लाह से डरना चाहिये और उनसे सीधी तरह बात करना चाहिए (९)

व्याख्याः- इस मामले में इंसाफ करने वाले लोग जरूर सोचे, अगर उनकी मृत्यु के वक्त उनकी औलाद न बालिक हो और उनके साथ न इंसाफी हो तो उन बच्चों का क्या हाल होगा। इसलिये बांटने वालों को अल्लाह के अजाब से डर कर इंसाफ की बात करनी चाहिये।

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَى ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُونَ فِي بُطُونِهِمْ نَارًا وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيرًا {10}

जो यतीमों के माल नाहक़ चट कर जाया करते हैं वह अपने पेट में बस अंगारे भरते हैं और अनक़रीब जहन्नुम वासिल होंगे (१०)

व्याख्याः- यकीनन जो लोग अनाथ की सम्पत्ति अशुद्ध तरीके से भोग करते है वो लोग अपने पेट में अशांति की आग भर रहे है और उनकी जिन्दगी अशांति की तकलीफों की आग में घिरी हुई रहेगी।

يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ فَإِن كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَإِن كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِن كَانَ لَهُ وَلَدٌ فَإِن لَّمْ يَكُن لَّهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ فَإِن كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا {11}

अल्लाह तुम्हारी औलाद के हक़ में तुमसे वसीयत करता है कि लड़के का हिस्सा दो लड़कियों के बराबर है और अगर औलाद में सिर्फ लड़कियाँ ही होंया से ज़्यादा तो उनका कुल तर्के का दो तिहाई है और अगर एक लड़की हो तो उसका आधा है और मय्यत के बाप माँ हर एक का अगर मय्यत की कोई औलाद मौजूद न हो तो माल मुस्तरद का में से मुअय्यन छटा हिस्सा है और अगर मय्यत के कोई औलाद न हो और उसके सिर्फ माँ बाप ही वारिस हों तो माँ का मुअय्यनएक तिहाई हिस्सा तय है और बाक़ी बाप का लेकिन अगर मय्यत के भाई भी मौजूद हों तो उस

वक्त माँ का हिस्सा छठा ही होगा मय्यत नें जिसके बारे में वसीयत की है उसकी तालीम और क़र्ज़ के बाद तुम्हारे बाप हों या बेटे तुम तो यह नहीं जानते हों कि उसमें कौन तुम्हारी नाफ़रमानी में ज़्यादा क़रीब है हिस्सा तो सिर्फ अल्लाह की तरफ़ से मुअय्यन होता है क्योंकि अल्लाह तो ज़रूर हर चीज़ को जानता और तदबीर वाला है (११)

व्याख्याः- अल्लाह ताला मानव को अपने सनतान के बारे में हुक्म करता है कि सम्पत्ति में लड़कियों को लड़को से आधा हिस्सा मिलेगा और अगर किसी की सिर्फ लड़कियां ही हो और दो से ज्यादा हो तो उन्हें माल का दो तिहाई हिस्सा मिलेगा और अगर एक ही लड़की हो तो उसके लिये आधा है। मरने वालों के मां-बाप में से हर एक के छोड़े हुए माल का छटा हिस्सा है अगर उसकी औलाद है और अगर औलाद न हो और मां-बाप वारिश हो तो उसकी मां के लिए तीसरा हिस्सा है। अगर मय्यत के कई भाई हो तो फिर उसकी मां का छटा हिस्सा है ये हिस्से उस वसीयत के बाद है जो मरने वाला कर गया हो, या कर्ज अदा करने के बाद। बाप हो या बेटा लोगों को नहीं मालूम की उनमें से कौन ज्यादा उसे लाभ पहुँचायेगा। ये अल्लाह की तरफ से नियुक्त है। बेशक अल्लाह पुरे इल्म और हिकमत वाला है।

पैगामः- कुरान-शरीफ से पहले किसी भी धार्मिक पुस्तक में विशेष तौर पर औरत के लिये हिस्सा मुकर्रर नहीं किया गया था। समाज की बाग दौड़ हमेशा से आज तक मर्दों की हाथों में ही रही। एक ही वक्त अगर मर्दों के बराबर औरतों को हिस्सा मिलता तो जरूर मर्द बगावत करते और ये कानून लागू नहीं होता। औरत के अधिकार की नींव कुरान-शरीफ ने ही डाली और अल्लाह के मर्जी से आज कानून के द्वारा ज्यादा से ज्यादा औरतों को मर्दों के बराबरी का अधिकार प्रदान किया, चाहे वो मां हो, बहन हो, बेटी हो या बीवी। इस आयत में "कर्ज" की भी एक एहम भूमिका है । जिसमें साफ कहा गया है कि मरने वाले की सम्पत्ति बांटने से पहले अगर उनका कोई "कर्ज" हो तो सबसे पहले उसकी अदायगी होगी। और कर्ज देने वालों के बारे में भी कुरान में एक आयत है जिसमें हुकूम दिया गया है कि अगर कर्जदार कर्जा चुकाने की हालात में न हो और मुआयने से साबित हो जाये तो उसे माफ कर दे और उस पर ज्यादती न करे।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّهُنَّ وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِن لَّمْ يَكُن لَّكُمْ وَلَدٌ فَإِن كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُم مِّن بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَإِن كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ فَإِن كَانُوا أَكْثَرَ مِن ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِن بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ {12}

और जो कुछ तुम्हारी बीवियां छोड़ कर जाएँ पस अगर उनके कोई औलाद न हो तो तुम्हारा आधा है और अगर उनके कोई औलाद हो तो जो कुछ वह तरका छोड़े उसमें से बाज़ चीज़ों में चौथाई तुम्हारा है औरत ने जिसकी वसीयत की हो और क़र्ज़ के बाद अगर तुम्हारे कोई औलाद न हो तो तुम्हारे तरके में से तुम्हारी बीवियों का बाज़ चीज़ों में चौथाई है और अगर तुम्हारी कोई औलाद हो तो तुम्हारे तर्के में से उनका ख़ास चीज़ों में आठवाँ हिस्सा है तुमने जिसके बारे में वसीयत की है उसकी तामील और क़र्ज़ के बाद और अगर कोई मर्द या औरत अपनी मादरजिलों भाई या बहन को वारिस छोड़े तो उनमें से हर एक का ख़ास चीजों में छठा हिस्सा है और अगर उससे ज़्यादा हो तो सबके सब एक ख़ास तिहाई में शरीक़ रहेंगे और मय्यत ने जिसके बारे में वसीयत की है उसकी तामील और क़र्ज़ के बाद मगर हाँ वह वसीयत नुक़्सान पहुँचाने वाली न हो ये वसीयत अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह तो हर चीज़ का जानने वाला और बुर्दबार है (१२)

व्याख्याः- किसी निसंतान नारी की मृत्यु पर उसकी सम्पत्ति के आधे हिस्से का मालिक उसका पति होगा और अगर उसकी संतान हो तो उसकी छोड़ी हुई सम्पत्ति का एक चौथाई हिस्से का हकदार उसका पति होगा बाकी उसकी संतान हकदार होगी। और ये उस वक्त लागू होगा जब उसका सारा कर्ज अदा हो जाये।

निसंतान नारी की आधी सम्पत्ति उसके पति को मिलेगी और बाकी आधी सम्पत्ति उसके भाई-बहन, मां-बाप, करीबी मिश्कीन रिश्तेदारों में बांटी जायेगी, अगर पति न हो तो उसकी सम्पत्ति उसकी वसीहत के मुताबिक बाटी जायेगी। और अगर उसका कोई न हो तो उसकी सम्पत्ति की हकदार सरकार होगी। इसी तरह पुरुष की मृत्यु के बाद इसकी पत्नी को उसकी छोड़ी हुई सम्पत्ति का एक चौथा हिस्सा मिलेगा अगर वो निसंतान होगी। लेकिन अगर संतान हो तो पुरुष की छोड़ी हुई सम्पत्ति उसकी स्त्री को १/८ मिलेगा और सारे हिस्सों का बटवारा कर्ज अदा करने के बाद ही होगा। ऐसी व्यक्ति नारी हो या पुरुष जिसकी वसीहत दूसरी हो उसकी जड़ और शाखाएं नहीं होती, अगर भाई-बहन मौजूद हो तो उसे १/६ सम्पत्ति का अधिकार है और एक से ज्यादा भाई-बहन होने से सबको १/३ का अधिकार होगा। और इस कानून को मानते हुए कोई भी किसी का नुकसान न करे। अल्लाह ज्ञानी और सहनशील है।

पैगामः- आज समाज में पुरुष या नारी के मृत्यु के बाद एक दूसरे के सम्पत्ति का पहला अधिकार सम्पूर्ण मर्द या औरत का है । लेकिन हम (सिद्धार्थ चटर्जी) समझते है कि कुरान के इस आयत के द्वारा सम्पत्ति के अधिकार के कानून में बहुत ही सुख विचारधारा का निर्देश दिया गया है। आज के समाज में एक बात अक्सर देखी जाती है कि पति के मृत्यु के बाद चाहे उसे संतान हो या न हो उसे रिश्तेदारों से जिल्लत और जुल्म का शिकार होना पड़ता है । इस बात को सामने रखते कुए आज का कानून सम्पत्ति के मामले में इस आयत से भी ज्यादा नारी को अधिकार दे रखा है।

تِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ {13}

यह अल्लाह की हदें है और अल्लाह और रसूल की इताअत करे उसको अल्लाह आख़ेरत में ऐसे बागों में पहुँचा देगा जिसके नीचे नहरें जारी होंगी और वह उनमें हमेशा रहेंगे और यही तो बड़ी कामयाबी है (१३)

व्याख्याः- पुरुष और नारी के अधिकार की सीमा अल्लाह ने मुकर्रर कर रखी है और इन सारी बातों की जानकारी मानव को रसुल द्वारा मिली । इस लिहाज से जो मानव अल्लाह के नियम जो रसुलों के द्वारा लोगों को मिले उसकी फरमाबरदारी करेंगे उसे अल्लाह अपने कूदरत की जरिए शांति का स्वर्ग देगा। जिसमें ठंडे पानी की नहर जैसा सुख-शांति मिलेगी और यही मानव की असल कामयाबी है यानी सम्पूर्ण शांति की जिन्दगी।

وَمَن يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَتَعَدَّ حُدُودَهُ يُدْخِلْهُ نَارًا خَالِدًا فِيهَا وَلَهُ عَذَابٌ مُّهِينٌ {14}

और जिस शख़्स से अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी की और उसकी हदों से गुज़र गया तो बस अल्लाह उसको जहन्नुम में दाख़िल करेगा और वह उसमें हमेशा अपना किया भुगतता रहेगा और उसके लिए बड़ी रूसवाई का अज़ाब है (१४)

व्याख्याः- और ऐसा करने वाला जो किसी के अधिकार को इनकार करें उसे अशांति का अजाब मिलेगा और वो इसमें रहेगा।

पैगामः- दूसरों के अधिकार हड़प करने वाले लोगों के दिलों में प्रकृति तौर पर इतनी ज्यादा हवस, लालच और मोह आ जाता है जिसकी वजह से उसकी शांति और सुख चैन बिगड़ जाता है और यही इनका अजाब है।

وَاللَّاتِي يَأْتِينَ الْفَاحِشَةَ مِن نِّسَائِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِّنكُمْ فَإِن شَهِدُوا فَأَمْسِكُوهُنَّ فِي الْبُيُوتِ حَتَّىٰ يَتَوَفَّاهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا {15}

और तुम्हारी औरतों में से जो औरतें बदकारी करें तो उनकी बदकारी पर अपने लोगों में से चार गवाही लो और फिर अगर चारों गवाह उसकी तसदीक़ करें तो उनको घरों में बन्द रखो यहाँ तक कि मौत आ जाए या अल्लाह उनकी कोई राह निकाले (१५)

व्याख्याः- बैविचार मानव के लिये चार गवह रखकर उसके दोष का विचार करे और उसे नजरबंद रखे। जब तक उसके जहन और दिल से अल्लाह के रहम से खराब विचार मिट न जाये ।

पैगामः- अल्लाह की नजर में पुरुष और नारी के लिए कानून एक सा है इस लिहाज से इस आयत में सिर्फ नारी का जिक्र करना एक उदारहण है। ये कानून पुरुष नारी या नपुंसक पर भी लागू है और कुरान के विभिन्न आयतों में मानव के लिए सजा और जजा का जिक्र है। चार गवाहों का मतलब है कि जबतक मानव का गुनाह, पाप साबित नहीं होता तब तक किसी को सजा देने का कोई हक नहीं है।

وَاللَّذَانِ يَأْتِيَانِهَا مِنكُمْ فَآذُوهُمَا فَإِن تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوا عَنْهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيمًا {16}

और तुम लोगों में से जिनसे बदकारी सरज़द हुयी हो उनको मारो पीटो फिर अगर वह दोनों तौबा करें और इस्लाह कर लें तो उनको छोड़ दो बेशक अल्लाह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है (१६)

व्याख्याः- जो मानव (पुरुष नारी या नपुंसक) गलत कामों में सम्मलित हो तो साबित होने पर उसे सजा दी जाये। यदि ये लोग तोबा कर ले और अपने आपको सुधार ले तो समाज उसे परेशान न करे। यकीनन अल्लाह तौबा कबूल करने वाला मेहरबान है।

पैगामः- आयत नं १५ में सिर्फ नारी को सजा देना का उल्लेख है मगर ये आयत साबित करती है कि मर्द-औरत दोनों के पाप की सजा एक है। इस आयत में बैविचार में लिप्त दो मनुष्य का उल्लेख किया गया है।

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللَّهِ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السُّوءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوبُونَ مِن قَرِيبٍ فَأُولَٰئِكَ يَتُوبُ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا {17}

मगर अल्लाह की बारगाह में तौबा तो सिर्फ उन्हीं लोगों की है जो नादानिस्ता बुरी हरकत कर बैठे फिर जल्दी से

तौबा कर ले तो अल्लाह भी ऐसे लोगों की तौबा कुबूल कर लेता है और अल्लाह तो बड़ा जानने वाला हकीम है (१७)

व्याख्याः- गलती और गुनाह में बहुत फर्क है गलती से अगर कोई गलत काम हो और इस गलती को समझने के बाद अगर कोई मानव इस गलती को दुबारा न दौहराने की कसम खाये तो उनके लिए कानूनी तौर पर माफी है और अल्लाह भी उसे माफ कर देता है लेकिन गुनाह जो जान-बुझकर किया गया हो वो काम है जो मानव और मानवी समाज को नुकसान पहुँचाता है उसकी कोई माफी नहीं। अल्लाह ज्ञानी और सब जानने वाला है।

पैगामः- इस आयत के आखिर में अल्लाह को "ज्ञानी और जानने वाला" बताया गया है और इसकी वजह ये है कि हर गुनहगार अपना गुनाह छुपाना चाहता है और गुनाह को अपनी तरह से और अलग-अलग बहानों से सही ठहराने की कोशिश करता है लेकिन अल्लाह सब जानता है और वो महाज्ञानी है।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِينَ يَعْمَلُونَ السَّيِّئَاتِ حَتَّى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّي تُبْتُ الْآنَ وَلَا الَّذِينَ يَمُوتُونَ وَهُمْ كُفَّارٌ أُولَٰئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا {18}

और तौबा उन लोगों के लिये नहीं है जो तो बुरे काम करते रहे यहाँ तक कि जब उनमें से किसी के सर पर मौत आ खड़ी हुयी तो कहने लगे अब मैंने तौबा की और उन लोगों के लिए मुफ़ीद नहीं है जो कुफ़्र ही की हालत में मर गये ऐसे ही लोगों के वास्ते हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (१८)

व्याख्याः- ऐसे मानव की तौबा कबूल नहीं होती जो जान-बूझकर पाप करे और मृत्यु तक पाप करता रहे। इन लोगों की मौत कुफ्र के हालात में होती है और ऐसे लोगों के लिए कष्ट और अशांति वाला अजाब है।

पैगामः- अनजाने में किया गया पाप गलती है जिसकी माफी है और जान-बूझकर या समझ कर किया गया पाप गुनाह है और उसकी कोई माफी नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا وَلَا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ إِلَّا أَنْ يَأْتِينَ بِفَاحِشَةٍ مُبَيِّنَةٍ وَعَاشِرُوهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ فَإِنْ كَرِهْتُمُوهُنَّ فَعَسَىٰ أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَيَجْعَلَ اللَّهُ فِيهِ خَيْرًا كَثِيرًا {19}

ऐ ईमानदारों तुमको ये जायज़ नहीं कि औरतों से के ज़बरदस्ती वारिस बन जाओ और जो कुछ तुमने उन्हें दिया है उसमें से कुछ उन्हें दूसरे के साथ न रोको हाँ जब वह खुल्लम खुल्ला कोई बदकारी करें तो अलबत्ता रोकने में और बीवियों के साथ अच्छा सुलूक करते रहो और अगर तुम किसी वजह से उन्हें नापसन्द करो अजब नहीं कि किसी चीज़ को तुम नापसन्द करते हो और अल्लाह तुम्हारे लिए उसमें बहुत बेहतरी कर दे (१९)

व्याख्याः- ईमान वाले कभी भी नारी को अपनी सम्पत्ति नहीं समझते (हर जान अल्लाह की सृष्टि है) और कभी भी नारी को दी हुई सम्पत्ति को जबरदस्ती नहीं छिनते। अगर ये पता चले कि नारी को दी हुई सम्पत्ति बुरे कामों में इस्तेमाल हो रही है तब यकीनन नारी को दी हुई सम्पत्ति पर रोक लगाने का हक पुरुषों को है । पुरुष नारी के साथ अच्छा सलुक करे कोई खास नारी किसी खास पुरुष को कितनी ही न पसंद क्यों न हो और अल्लाह मानव के बेहतरी के लिए उसको खास दायरे में सुरक्षित रखता है और इस लिए पुरुष के लिए कौन सी नारी बेहतर या नारी के लिए कौन सा पुरुष अच्छा है इसका ज्ञान सिर्फ अल्लाह को है। मानव जितना भी चाहे पाक-परवरदिगार की दी हुई अवस्था से बाहार नहीं जा सकता'

وَإِنْ أَرَدْتُمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَكَانَ زَوْجٍ وَآتَيْتُمْ إِحْدَاهُنَّ قِنطَارًا فَلَا تَأْخُذُوا مِنْهُ شَيْئًا أَتَأْخُذُونَهُ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُبِينًا {20}

और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी तबदील करना चाहो तो अगरचे तुम उनमें से एक को बहुत सा माल दे चुके हो तो तुम उनमें से कुछ क्या तुम्हारी यही ग़ैरत है कि बोहतान बाँधकर या सरीही जुर्म लगाकर वापस ले लो (२०)

व्याख्याः- पुरुष ने अगर नारी को बहुत सारी सम्पत्ति दे रखी हो और तलाक के वक्त उस पर दोष लगा कर या किसी भी बहाने से उसकी सम्पत्ति लेने की कोशिश करें तो ये सरासर बेईमानी होगी। पापी मानव चाहे वो नारी हो या पुरुष जब गुनाह के लिए अपनी सम्पत्ति इस्तेमाल करते है तब ईमान वाला का कर्त्तव्य है कि वो इसका विरोध करे, सारी सम्पत्ति का मालिक अल्लाह है । सम्पत्ति को अपना समझने की गलतफैमी में न इंसाफी करने वाले लोग गुनहगार है।

وَكَيْفَ تَأْخُذُونَهُ وَقَدْ أَفْضَىٰ بَعْضُكُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ وَأَخَذْنَ مِنكُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا {21}

और क्या तुम उसकोएक दूसरे के साथ खिलवत कर चुका है और बीवियाँ तुमसे पक्का क़रार ले चुकी है (२१)

व्याख्याः- शादी एक वादा है जिसके तहत दो मानव विश्वास, इज्जत, मोहब्बत के एहद से बंध जाते है।

وَلَا تَنكِحُوا مَا نَكَحَ آبَاؤُكُم مِّنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَمَقْتًا وَسَاءَ سَبِيلًا {22}

और जिन औरतों से तुम्हारे बाप दादाओं से जमाअ किया हो तुम उनसे निकाह न करो मगर जो हो चुका वह बदकारी और अल्लाह की नाखुशी की बात ज़रूर थी और बहुत बुरा तरीक़ा था (२२)

व्याख्याः- समाज के सारे रिश्ते सम्मान और मानवता के बुनियाद पर टिके हुए है। इस लिहाज से एक नारी से बाप-बेटा शादी नहीं कर सकता, इसका मतलब अपनी मां की उमर की नारियों को मां की नजर से देखना और उसका सम्मान करना ही समाज के लिए लाभकारी है '

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهَاتُكُمْ وَبَنَاتُكُمْ وَأَخَوَاتُكُمْ وَعَمَّاتُكُمْ وَخَالَاتُكُمْ وَبَنَاتُ الْأَخِ وَبَنَاتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهَاتُكُمُ اللَّاتِي أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوَاتُكُم مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهَاتُ نِسَائِكُمْ وَرَبَائِبُكُمُ اللَّاتِي فِي حُجُورِكُم مِّن نِّسَائِكُمُ اللَّاتِي دَخَلْتُم بِهِنَّ فَإِن لَّمْ تَكُونُوا دَخَلْتُم بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ وَحَلَائِلُ أَبْنَائِكُمُ الَّذِينَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ وَأَن تَجْمَعُوا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا {23}

औरतें तुम पर हराम की गयी हैं तुम्हारी माएँ और तुम्हारी बेटियाँ नवासियाँ और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी फुफियाँ और तुम्हारी ख़ालाएँ और भतीजियाँ और भंजियाँ और तुम्हारी वह माएँ जिन्होंने तुमको दूध पिलाया है और तुम्हारी रज़ाई बहनें और तुम्हारी बीवीयों की माँए और वह लड़कियां जो तुम्हारी गोद में परवरिश पा चुकी हो और उन औरतों से है जिनसे तुम हमबिस्तरी कर चुके हो हाँ अगर तुमने उन बीवियों से हमबिस्तरी न की तो अलबत्ता उन मादरज़िलों निकाह तुम पर कुछ गुनाह नही है और तुम्हारे सुलबी लड़को की बीवियाँ और दो बहनों से एक साथ निकाह करना मगर जो हो चुका बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (२३)

व्याख्याः- समाज को बेहतर बनाने के लिए कुरान शरीफ ने कुछ रिश्तों के एहतराम का आदेश दिया है और इन रिश्तों के दरमियान शादी करना जायज नहीं है। शादी के मामले में कुरान-शरीफ मानव को एक ही शादी करने का आदेश देते है (४/१२९)। तो इस लिहाज से इस आयत में मानव के शादी के लिए उनकी मांआएं हराम है इसका मतलब उसके पिता की तलाकसुदा और वो सारी नारियां जो उमर और रुतबे की वजह से समाज में मां का दर्जा रखती हो पुरुष के लिए अपनी बेटी और उसकी उमर की तमाम कन्याएं हराम है और भाई-बहनों के दरमियान भी शादी जायज नहीं (किसी भी रिश्ते से वो भाई-बहन क्यों न हो) और पुरुष के लिए चाची, मामी, खाला और फुफी, भांजी, भतीजी और नारी के लिए चाच, मामू, खालू और फुफा, भांजा, भतीजा और बहनाई के दरमियांन शादी नहीं हो सकती और मानव जिसे औलाद की तरह पाले चाहे वो नर हो या नारी उससे भी शादी नहीं कर सकता (३३/३७) । यहां तक कि पुरुष जिस नारी से संभोग कर चुका हो और उस नारी से अगर कोई संतान नर या नारी हो तो वो पुरुष उससे भी शादी नहीं कर सकता और एक पुरुष दो बहनों से शादी नहीं कर सकता।

पैगामः- मुसलमानों में चचाजाद, मामूजाद, फुफीजाद और खालाजाद भाई-बहनों के दरमियांन शादियां होती आ रही है जो कि सरासर गलत और नजायज है। इस आयत में सिर्फ बहनों का अधूरा जिक्र फरमाया और सगी, सौतेली, फुफीजाद, मामूजाद, चचाजाद और खलाजाद बहनों की कुछ भी प्रतीक नहीं की लेकिन इसी कुरान की सुरा ३३ के आयत ५० में साफ और सीधे तौर पर इस बात को समझाया गया है कि सगे चाचा, मामू, खाला और फुफी के बच्चों के दरमियान शादी सरासर हराम और नजायज है और ये रिश्ते सिर्फ रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद के लिए ही जायज है।

وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ النِّسَاءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ كِتَابَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَأُحِلَّ لَكُم مَّا وَرَاءَ ذَٰلِكُمْ أَن تَبْتَغُوا بِأَمْوَالِكُم مُّحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ فَمَا اسْتَمْتَعْتُم بِهِ مِنْهُنَّ فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ فَرِيضَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيمَا تَرَاضَيْتُم بِهِ مِن بَعْدِ الْفَرِيضَةِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا {24}

और शौहरदार औरतें मगर वह औरतें जो तुम्हारे कब्ज़े में आ जाएँ हराम नहीं अल्लाह का तहरीरी हुक्म तुमपर है और उन औरतों के सिवा तुम्हारे लिए जायज़ है बशर्ते कि बदकारी व ज़िना नहीं बल्कि तुम इफ़्फ़त या पाकदामिनी की ग़रज़ से अपने माल के बदले चाहो हाँ जिन औरतों से तुमने मुताअ किया हो तो उन्हें जो मेहर मुअय्यन किया है दे दो और मेहर के मुक़र्रर होने के बाद अगर आपस में राज़ी हो जाओ तो उसमें तुमपर कुछ गुनाह नहीं है बेशक अल्लाह वाक़िफ़ और मसलेहतों का पहचानने वाला है (२४)

व्याख्याः- शादी सुदा नारी और इससे पहले बताए गये तमाम रिश्तों के अलावा बाकी नारियों से शादी कर सकते है।

पैगामः- मानव को बेचना, खरीदना और लुटना सरासर हराम है। इस आयत में वर्तमान मुसलमानी अनुवाद के अनुसार

लुटी हुई शादी-सुदा नारी मुसलमानों के लिए जायज करार दी गयी है। सवाल ये आता है कि जब इस्लाम में लुटना हराम है और मुसलमानों को ये भी मालूम है कि जान का मालिक अल्लाह है तो मानव को लुटना और उसे अपनी मलकियत बनाना बिल्कुल गलत और नजायज है जिसकी इजाजत अल्लाह का कोई भी कानून नहीं देता। आज के जमाने में दासी वो नारी है जो अर्थनेटिक रूप से बेवश है और साथ-साथ शादी सुदा नारी जिसके मर्जी के बगैर शादी की गई हो या उसके साथ जोर जबरदस्ती या अत्याचार हो रहा हो ऐसी औरत को उसकी बेवशी और तकलीफों से निकाल कर कानूनी मदद के द्वारा उससे शादी करना पुण्य है। अगर उसकी संतान हो तो उसे अपनाना महापुण्य है। ये आयत सिर्फ पुरूष के लिए नहीं जहा पर मर्द औरत दोनों के अधिकार बराबर है और कही-कही मर्द पर जुल्म हो रहा हो या किसी मर्द को बंदी बनाकर उसके साथ जबरदस्ती की जा रही हो तो नारी का भी ये फर्ज बनता है कि उसकी कानूनी मदद करें और पसंद आने पर उससे शादी कर लें।

وَمَن لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنكُمْ طَوْلًا أَن يَنكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِن مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُم مِّن فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُم بَعْضُكُم مِّن بَعْضٍ فَانكِحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسَافِحَاتٍ وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ فَإِذَا أُحْصِنَّ فَإِنْ أَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنكُمْ وَأَن تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَّكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {25}

और तुममें से जो शख़्स आज़ाद इफ़्फ़तदार औरतों से निकाह करने की माली हैसियत से क़ुदरत न रखता हो तो वह तुम्हारी उन मोमिना लौन्डियों से जो तुम्हारे कब्ज़े में है निकाह कर सकता है और अल्लाह तुम्हारे ईमान से खूब वाकिफ़ है तुममें एक दूसरे का हमजिन्स है पस उनके मालिकों की इजाज़त से लौन्डियों से निकाह करो और उनका मेहर हुस्ने सुलूक से दे दो मगर उन्हीं से निकाह करो जो इफ़्फ़त के साथ तुम्हारी पाबन्द रहें न तो खुले आम ज़िना करना चाहें और न चोरी छिपे से आशनाई फिर जब तुम्हारी पाबन्द हो चुकी उसके बाद कोई बदकारी करे तो जो सज़ा आज़ाद बीवियों को दी जाती है उसकी आधी लौन्डियों को दी जाएगी से निकाह कर भी सकता है तो वह शख़्स जिसको ज़िना में मुब्तिला हो जाने का ख़ौफ़ हो और सब्र करे तो तुम्हारे हक़ में ज़्यादा बेहतर है और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (२५)

व्याख्याः- अच्छा मानव अपनी हैसियत के अनुसार नारी से शादी करे यानी अपनी आर्थिक हैसियत को मुद्दे नजर रखते हुए शादी का रिश्ता करे। ताकि उसको पैसों की तंगी रिश्तों में दरार न डाले और हर नारी को शादी के वक्त हकमोहर दिया जाए। वो लौंडी हो या आजाद औरत। लौंडी की मजबूरी का फायदा उठा कर मानव उससे गलत काम न करवाये और न इसे मनोरंजन के लिए इस्तेमाल करे।

पैगामः- हर मानव का मालिक अल्लाह है लौंडी हो या गुलाम उसको पालने वाला कभी भी उसकी जान का मालिक नहीं हो सकता। इस लिहाज से इस आयत में बताये हुए लौंडी या गुलाम से रिश्ता कायम करना यानी शादी करना पुण्य का काम है। जो उस वक्त के लोग नहीं समझते थे। इसलिए इस आयत में आजाद और ईमान वाली औरतों के साथ-साथ लौंडियों और गुलामों के साथ शादियों का जिक्र भी किया गया है। अल्लाह के दरबार में हर मानव के लिए सजा और जजा बराबर है। इस आयत में लौंडियों पर सजा आजाद औरतों से आधी कहकर अल्लाह ताला ने मजबूर औरतों को हिफाजत बक्षी और ये इसलिए कि हर युग में औरतों के जिस्म का सौदा होता रहा है कही जबरदस्ती और कही मजबूरी का फायदा उठाकर। जिस्म के सौदे में औरत की रजामंदी कभी भी नहीं रही और इस बात से अल्लाह ताला बखूबी वाकिफ है और इसलिए उनकी सजा आधी रखी गयी है।

يُرِيدُ اللَّهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ وَيَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ {26}

अल्लाह तो ये चाहता है कि एहकाम तुम लोगों से साफ़ साफ़ बयान कर दे और जो लोग तुमसे पहले गुज़र चुके है उनके तरीक़े पर चला दे और तुम्हारी तौबा क़ुबूल करे और अल्लाह तो वाकिफ़ और हिकमत वाला है (२६)

व्याख्याः- अल्लाह की मर्जी से सच्चाई खुद बखुद लोगों के सामना जाहिर हो जाती है। और अतीत की सच्चाई मानव के सामने उदाहरण और सबक के तौर पर बयांन फरमाते है। जब मानव का विवेक सच्चाई को महसूस और कबूल करे तब ही उसे अल्लाह की रहमत और क्षमा हासिल होती है और अल्लाह दयालु और क्षमाकारी है।

पैगामः- अल्लाह ताला दयालु, क्षमाकारी, ज्ञानी सब जानने वाला और हिकमत वाला ये सारी बातें हर आयत के आखिर में क्यों जोड़ी गई है? क्या अल्लाह ताला खुद अपनी तारीफ कर रहा है? और क्या ये सारे अलफाज मानवों के जोड़ों हुए है - नहीं अल्लाह का चरित्र अगर अल्लाह ताला खुद बयान करें या वो खुद अपनी तारीफ करें तो जरूर मानव के जहन में शक

पैदा होगा इसलिए अल्लाह ताला ने मानवी जुबान से अपनी क्षमता, चरित्र और काम की व्याख्या की। हकीकत तो ये है कि प्रकृति ही इंसान के ऊपर दयावान, क्षमाकारी, शक्तिशाली और सारे विज्ञान इसमें ही समायें हुए है और प्रकृति ही सब जानती और सुनती है और जो अल्लाह की शक्ति द्वारा प्रचालित और नियंत्रित होती है'

وَاللَّهُ يُرِيدُ أَن يَتُوبَ عَلَيْكُمْ وَيُرِيدُ الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الشَّهَوَاتِ أَن تَمِيلُوا مَيْلًا عَظِيمًا {27}

और ख़ुदा तो चाहता है कि तुम्हारी तौबा कुबूल करे और जो लोग नफ़सियानी ख़्वाहिश के पीछे पड़े है वह ये चाहते है कि तुम लोग बहुत दूर हट जाओ (२७)

व्याख्याः- पापी मानव को पापमुक्त करके उन्हें उनके पापी साथियों से दूर रहने में अल्लाह मदद फरमाते है। उनके पापी साथी पाप और अशांति के रास्ते में उलझ कर रह जाते है।

يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُخَفِّفَ عَنكُمْ وَخُلِقَ الْإِنسَانُ ضَعِيفًا {28}

और अल्लाह चाहता है कि तुमसे बार में तख़फ़ीफ़ कर दें क्योंकि आदमी तो बहुत कमज़ोर पैदा किया गया है (२८)

व्याख्याः- मानव की अर्न्तात्मा पाप-पुण्य से भरी हुई है और इस अर्न्तात्मा में लोभ, मोह-माया, ईर्ष्या और अहंकार रख कर मानव को दुर्बल किया गया। इसलिए पुण्य के साथ अगर पाप नहीं होता तो निश्चित रूप से मानव का जीवन एक काल्पिनक जीवन बनकर रह जाता जिसमें कोई रंग नहीं रहता। मानव को अल्लाह ताला ने ज्ञान का भंडार दिया और तरह-तरह की चीजें सीखाई और विज्ञान के द्वारा उसे उत्तम जीवन प्रदान किया। अल्लाह बड़ा ही दयालु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَأْكُلُوا أَمْوَالَكُم بَيْنَكُم بِالْبَاطِلِ إِلَّا أَن تَكُونَ تِجَارَةً عَن تَرَاضٍ مِّنكُمْ وَلَا تَقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا {29}

ए ईमानवालों आपस में एक दूसरे का माल नाहक़ न खा जाया करो लेकिन तुम लोगों की बाहमी रज़ामन्दी से तिजारत हो और अपना गला आप घूँट के अपनी जान न दो अल्लाह तो ज़रूर तुम्हारे हाल पर मेहरबान है (२९)

व्याख्याः- ईमान वाले किसी के माल या दौलत में न इंसाफी जैसा घिनौना काम नहीं करते। आपस की रजामंदी से अगर लेन-देन हो तो उसमें कोई बुराई नहीं, दौलत की लालच में अपना विवेक मुर्दा न बनाये। अल्लाह की कूदरत सब पर मेहरबान है।

وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ عُدْوَانًا وَظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيهِ نَارًا وَكَانَ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا {30}

और जो शख़्स जोरो जुल्म से नाहक़ ऐसा करेगा तो हम बहुत जल्द उसको जहन्नुम की आग में झोंक देंगे यह अल्लाह के लिये आसान है (३०)

व्याख्याः- जो मानव अपने मक्सद या मतलब के लिए किसी पर जुल्म करेगा तो जरूर अशांति की आग नसीब होगी जो अल्लाह का कूदरती असुल है।

पैगामः- जुल्म किसी भी मक्सद से क्यों न हो वो पाप है।

إِن تَجْتَنِبُوا كَبَائِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَنُدْخِلْكُم مُّدْخَلًا كَرِيمًا {31}

जिन कामों की तुम्हें मनाही की जाती है अगर उनमें से तुम गुनाहे कबीरा से बचते रहे तो हम तुम्हारे गुनाहों से भी दरगुज़र करेंगे और तुमको बहुत अच्छी इज़्ज़त की जगह पहुँचा देंगे (३१)

व्याख्याः- जो गुनहगार मानव अपने गुनाहों पर कायम रहने पर गर्व महसूस करता है जिससे अल्लाह ने सख्ती से मना फरमाया है। अगर मानव उनसे बचे तो जरूर उनकी गलतियां माफ होगी।

पैगामः- सबसे बड़े गुनाह है

१. किसी का दिल दुखाना
२. प्राणियों से नफरत करना
३. मानव को मजहब जात-पात और दौलत के नाम पर बांटना
४. अल्लाह को बाटना और उसको सीमित समझना
५. अल्लाह की प्रकृति को गिबाड़ना
६. जान-बूझकर गलती करना गुनाह है और महा पाप में शूमार होता है अंजान में की गई गलती को अल्लाह माफ कर देते है।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ وَاسْأَلُوا اللّٰهَ مِن فَضْلِهٖ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا {32}

और अल्लाह ने जो तुममें से एक दूसरे पर तरजीह दी है उसकी हवस न करो मर्दों को अपने किए का हिस्सा है और औरतों को अपने किए का हिस्सा और ये और बात है कि तुम अल्लाह से उसके फज़्ल व करम की ख़्वाहिश करो अल्लाह तो हर चीज़े से वाक़िफ़ है (३२)

व्याख्याः- दुनियां में हर कोई अपनी-अपनी जगह माहिर है और अल्लाह ने हर मानव की एक हैसियत मुकर्रर की है जो कूदरती है और इस कूदरत को इनकार करके कोई भी मानव दूसरे मानव की हैसियत की आशा न करे यानी दूसरे की हैसियत को अपनी दुआ का मकसद न बनाएं । इसी प्रकृति ने मानव पर मानव को श्रेष्ठता प्रदान की जो काम प्रकृति ने पुरुष के लिए रखा वो उसकी जिम्मेदारी है और नारी के लिए भी प्रकृति ने समाज के लिए जिम्मेदारियां रखी है। मानव अल्लाह से दुआ करे की अपनी-अपनी जिम्मेदारियां ठीक तरह से निभाये। अल्लाह सब जानने वाला है।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُونَ وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَآتُوهُمْ نَصِيبَهُمْ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا {33}

और माँ बाप और क़राबतदार तो शख़्स जो तरका छोड़ जाए हमने हर एक का वारिस मुक़र्रर कर दिया है और जिन लोगों से तुमने मुस्तहकम एहद किया है उनका मुक़र्रर हिस्सा भी तुम दे दो बेशक अल्लाह तो हर चीज़ पर गवाह है (३३)

व्याख्याः- अल्लाह ने हर सम्पत्ति का उत्तराधिकारी दिया यानी जो सम्पत्ति मां-बाप या करीबी रिश्तेदार छोड़ जाते है । जिस तरह सम्पत्ति के अधिकार का कानून मुकर्रर है ठीक उसी तरह उस कानून को ईमानदारी से लागू करे और अल्लाह सब जानता-देखता है।

الرِّجَالُ قَوَّامُونَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَبِمَا أَنفَقُوا مِنْ أَمْوَالِهِمْ فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ وَاللَّاتِي تَخَافُونَ نُشُوزَهُنَّ فَعِظُوهُنَّ وَاهْجُرُوهُنَّ فِي الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوهُنَّ فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوا عَلَيْهِنَّ سَبِيلًا إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيرًا {34}

मर्दो का औरतों पर क़ाबू है क्योंकि अल्लाह ने बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दी है और चूँकि मर्दो ने औरतों पर अपना माल ख़र्च किया है पस सभ्य बख़्त बीवियाँ तो शौहरों की ताबेदारी करती हैं उनके पीठ पीछे जिस तरह अल्लाह ने हिफ़ाज़त की वह भी हिफ़ाज़त करती है और वह औरतें जिनके नाफरमान सरकश होने का तुम्हें अन्देशा हो तो पहले उन्हें समझाओ और तुम उनके साथ सोना छोड़ दो और मारो मगर इतना कि खून न निकले और कोई अज़ो न पस अगर वह तुम्हारी मुतीइ हो जाएँ तो तुम भी उनके नुक़सान की राह न ढूँढो अल्लाह तो ज़रूर सबसे बरतर बुज़ुर्ग है (३४)

व्याख्याः- पुरुष शारीरिक तौर पर नारी से शक्तिशाली है इसलिए नारी के सम्मान और अधिकार की रक्षा की जिम्मेदारी पुरुष पर है और इसके साथ-साथ नारी को भी समाज के गठन और पुरुष के सच्चे विवेक को बरकरार रखने की जिम्मेदारी दी गई है। पुरुष नारी की रक्षा में अपनी दौलत और मेहनत खर्च करते है और उसके बदले में नारी को चाहिए कि वो अपने संतान को सच्चे ज्ञान और पवित्रता की शिक्ष दे, भाई हो या शौहर हो उसके नेक कामों में उनकी मदद करे और पवित्रता बरकरार रखे और जो मानव चाहे वो नर हो या नारी अपनी पवित्रता को कलंकित करता है उसे समझाया जाए और अगर वो न समझे तो हर तरह से सख्ती होनी चाहिए ताकि समाज में उसके बुरे प्रभाव न पहुँचे लेकिन अगर वो मानव सुधर जाए तो उसके साथ अत्याचार न किया जाए। बेशक अल्लाह बुलंदी और बड़ाई वाला है।

पैगामः- कुरान-शरीफ में बहुत सारी आयतें है जिसमें कहा गया है कि हर कोई "अपने-अपने अमाल का जिम्मेदार है और अमल की सजा और जजा उसे खुद भुगतनी होगी और साथ में ये भी फरमाया कि हर मानव का दिन उसके साथ है और किसी को किसी पर जिम्मेदारी नहीं सौंपी"। तो इस सुरत में और कुरान के आयतों के अनुसार इस आयत में पुरुष को नारी को मारने या पीटने की अनुमति नहीं है।

इस आयत में "नारी" एक उदाहरण है और इसलिए जब हर किसी की नारी, पुरुष या मुखन्नीस की सजा और जजा एक-सा है और अल्लाह के दरबार में भी कोई फर्क नहीं है तो फिर जब पुरुष पाप काम में लुप्त रहे तो क्या नारी को उसे मारने पीटने का अधिकार होगा? इस लिहाज से अगर नारी या पुरुष गुनाह करे और बाज न आये तो समाजिक कानून के अनुसार उनके गुनाहों को रोका जाए। मार-पीट कर और जोर-जबरदस्ती से किसी के विवेक को पवित्र नहीं किया जा सकता। पुरूष नारी का अधिकार बराबर है जो इस सूरा की आयत ३२ में लिखा हुआ है।

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا إِن يُرِيدَا إِصْلَاحًا يُوَفِّقِ اللَّهُ بَيْنَهُمَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا خَبِيرًا {35}

और ऐ हुक्काम अगर तुम्हें मियाँ बीवी की पूरी नाइत्तेफ़ाक़ी का तरफ़ैन से अन्देशा हो तो एक सालिस मर्द के कुनबे में से एक और सालिस औरत के कुनबे में मुक़र्रर करो अगर ये दोनों सालिस दोनों में मेल करा देना चाहें तो अल्लाह उन दोनों के दरमियान उसका अच्छा बन्दोबस्त कर देगा अल्लाह तो बेशक वाक़िफ़ व ख़बरदार है (३५)

व्याख्याः- पति-पत्नी के आपसी मतभेद अगर न सुलझे तो कुछ तर्जुबाकर, नेक ज्ञानी मानवों को बैठाकर मतभेद का फैसला करवाये।

وَاعْبُدُوا اللَّهَ وَلَا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَبِذِي الْقُرْبَى وَالْيَتَامَى وَالْمَسَاكِينِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبَى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنبِ وَابْنِ السَّبِيلِ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ مُخْتَالًا فَخُورًا {36}

और अल्लाह ही की इबादत करो और किसी को उसका शरीक न बनाओ और माँ बाप और क़राबतदारों और यतीमों और मोहताजों और रिश्तेदार पड़ोसियों और अजनबी पड़ोसियों और पहलू में बैठने वाले मुसाहिबों और पड़ोसियों और ज़र ख़रीद लौन्डी और गुलाम के साथ एहसान करो बेशक अल्लाह अकड़ के चलने वालों और शेख़ीबाज़ों को दोस्त नहीं रखता (३६)

व्याख्याः- अल्लाह और उसके नियमों (नेकी, मोहब्बत, परहेजगारी, अंहिसा, ज्ञान, मानवता और अमनो शांति) को अपनाना ही अल्लाह की इबादत है। मानव को चाहिए कि इन नियमों के अलावा दूसरे नियमों का न अपनाये यानी अल्लाह का शरीक न बनाए। अल्लाह ने मानव को जिस समाजिक दायरे में नियुक्त किया और इसके ईद-गिद जिन मानवों को रिश्तेदारों या जानने वाला ठहराया उन सभों के साथ अच्छा सलुक करे । अहंकारी मानव अल्लाह को न पसंद है।

पैगामः- पीढ़ी दर पीढ़ी से मानवी समाज को अल्लाह के प्राकृतिक रद्दोबदल का सामना करना पड़ा और रद्दोबदल अल्लाह की एक एहम कूदरत है और जो मानव इस रद्दोबदल को इनकार करता है यकीनन वो अल्लाह की प्रकृति को इनकार करता है। दुनियां की हर चीज अल्लाह की मर्जी से है मानव का काम है अल्लाह की तमाम सृष्टि और उसकी प्रकृति से मोहब्बत और एहतराम करना।

الَّذِينَ يَبْخَلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُونَ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا {37}

ये वह लोग है जो ख़ुद तो बुख़्ल करते ही है और लोगों को भी बुख़्ल का हुक्म देते है और जो माल अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल व से उन्हें दिया है उसे छिपाते है और हमने तो कुफ़राने नेअमत करने वालों के वास्ते सख़्त ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (३७)

व्याख्याः- ऐसे मानव भी समाज में है जिन का विवेक लोगों के लिए खर्च करना नहीं चाहता, चाहे वो दौलत हो या मेहनत। यानी खुदगर्ज मानव जो दूसरों को भी खुदगर्जी का सबक देते है और अपने दौलत छुपाकर दूसरों की दौलत पर नजर लगा कर बैठे रहते है। ऐसे लोगों को समाज में अल्लाह की तरफ से अपमान हासिल होता है।

وَالَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَن يَكُنِ الشَّيْطَانُ لَهُ قَرِينًا فَسَاءَ قَرِينًا {38}

और जो लोग महज़ लोगों को दिखाने के वास्ते अपने माल ख़र्च करते हैं और न अल्लाह ही पर ईमान रखते हैं और न रोज़े आख़ेरत पर अल्लाह भी उनके साथ नही क्योंकि उनका साथी तो शैतान है और जिसका साथी शैतान हो तो क्या ही बुरा साथी है (३८)

व्याख्याः- और ऐसे लोग भी समाज में मौजूद है जो अपना धन-दौलत खर्च तो करते है लेकिन सिर्फ दिखावे के लिए। और दिल में अल्लाह की प्रकृति और अपने आखिरी दिनों पर यकीन नहीं रखते, ऐसे लोग पापी है।

पैगामः- मुंह से नेकी की बात करने वाला और दिखावट की जिन्दगी जीने वाला जो अपने अमाल पर ध्यान नहीं देते मगर दूसरों के अमाल पर और उनकी धन-दौलत पर नजर जमा कर बैठने वाले भी काफिर है।

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ آمَنُوا بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللَّهُ وَكَانَ اللَّهُ بِهِمْ عَلِيمًا {39}

अगर ये लोग अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाते और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया है उसमें से राहे अल्लाह में ख़र्च करते तो उन पर क्या आफ़त आ जाती और अल्लाह तो उनसे ख़ूब वाक़िफ़ है (३९)

व्याख्याः- ऐसे लोगों को कोई नुकसान नहीं होता अगर वो सच्चे दिल से अल्लाह की कूदरत को मानते और उसकी राह में खर्च करते लेकिन कुछ लोग न समझ है।

पैगामः- मानव खाली हाथ आता है और खाली हाथ जाता है जो इस बात को नहीं समझता वही मोहमाया और उत्वकांक्षा के जाल में फंसे हुए है और गुनाह के कीचड़ से अपने अन्तर्ात्मा को अपवित्र करते है और उनके सारे कर्मों को अल्लाह खुब जानता है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ وَإِن تَكُ حَسَنَةً يُضَاعِفْهَا وَيُؤْتِ مِن لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيمًا {40}

अल्लाह तो हरगिज़ ज़र्रा बराबर भी जुल्म नहीं करता बल्कि अगर ज़र्रा बराबर भी किसी की कोई सभ्यी हो तो उसको दूना करता है और अपनी तरफ़ से बड़ा सवाब अता फ़रमाता है (४०)

व्याख्याः- अल्लाह का इंसाफ जरा भर भी किसी पर जुल्म नहीं करता हर किसी को अपने कर्मों का फल खुद भुगतना पड़ता है।

पैगामः- इस सुरा की ३४ नं आयत में नारी पर प्रहार करने का हुकुम दिया गया और इस आयत में अल्लाह ने किसी पर जुल्म न करते हुए, सजा-जजा एक-सा रखी है तो इस लिहाज से इस आयत में नारी को उदाहरण के तौर पर पेश किया गया।

فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِن كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيدٍ وَجِئْنَا بِكَ عَلَىٰ هَٰؤُلَاءِ شَهِيدًا {41}

भला उस वक़्त क्या हाल होगा जब हम हर सम्प्रदाय के गवाह तलब करेंगे और तुमको उन सब पर गवाह की हैसियत में तलब करेंगे (४१)

व्याख्याः- रसुलों ने मानव को शांति से जीने का सबक दिया जब मानव पाप कर्मों में लुप्त हो जाते है तब रसुलों के ख्यालात उन पर गवाही बनकर खड़े हो जाते है यानी रसुलों के असुल एक तराजु जो मानव के चरित्र का माप-तौल है।

पैगामः- कुरान-शरीफ में हर जगह कयामत में उठाये जाने या दुबारा जिन्दा कये जाने की बात की है और हर मुसलमान का इस बात पर ईमान भी है कि सब कयामत के दिन जिन्दा किये जायेंगे। मगर न जाने कहां से पुरी उम्मत की आस्था बन गयी है कि मुर्दा को कबर में डालने के बाद उसमें दुबारा जिन्दगी वापस कर दी जाती है। मुनकर नकीर आते है, सवाल व जवाब होता है जो सही जवाब देता है उसके लिए कबर में जन्नत की खिड़की खोल दी जाती है और जो लोग जवाब नहीं दे पाते उनकी कबरों की दिवारों दोनों तरफ से आपस में मिल जाती है और उनकी हड्डियां पसलियां पीस जाती है। कयामत तक बदकार लोगों को अजाब होता रहता है, लोगों को ये बात समझ में नहीं आती कि जो कयामत के दस हजार साल पहले मर गया हो वो दस हजर वर्ष तक अजाब झेलता रहा और जो कयामत के एक दिन पहले मरेगा वो बस एक दिन में ही अजाब-ए-कबर से छुटकारा पा गया ये खुली न इंसाफी है और अल्लाह के अदल व इंसाफ पर हुर्फ आता है मगर अल्लाह तो आदिल और मुनसीफ है। दूसरी बात यह है कि अल्लाह ने फैसले का दिन नियुक्त कर रखा है और वो है योमेजजा । फिर बगैर फैसला जजा और सजा का क्या मायने रखती है? और रोजे जजा का क्या मतलब है? अगर जजा और सजा शुरू हो गयी तो रोजे जजा बे मायने ठहरती है, यानी रोजे जजा में सिर्फ खाना पुरी होगी मामलात तो पहले ही बन चुके होंगे।

दूसरे मौजू शफाअत के मुतालिक है। उम्मत के अकसिरयत इस बात को मानती है कि कयामत के दिन हजरत मोहम्मद गुनहगार मुसलमानों की सिफारिश करेंगे। सारे नबी सिफारिश नहीं करेंगे सिर्फ आखिरी नबी हजरत मोहम्मद ही सिफारिश फरमायेंगे। लोगों को कौन समझाये सिफारिश या शफाअत वहा होती है जहां अदल व इंसाफ का दोहरा पहलू हो । सिफारिश इंसाफ पर हुर्फ लाती है, सिफारिश तो दुनियावी दफ्तर और अदालतों में हुआ करती है जो न इंसाफी की मिसाल है। जिस जगह पर अदलों-ए-इंसाफ से काम होता है वहां किसी की सिफारिश नहीं सुनी जाती। अल्लाह का दरबार हाकिम आला जो दिलों का हाल भी जानने वाला है और जो तमाम हाल को जानता है फिर उसके आगे किसी की सिफारिश की क्या जरूरत? साफ तौर पर अल्लाह ने सिफारिश का इनकार किया है (कुरान २/४८-१२३)। कहां जाता है कि कयामात के दिन पुलसरात पर से गुजरना होगा, पुलसरात बारीक और तलवार से तेज होगा, नेक लोग आराम से गुजर जायेंगे। बदकार लोग जहन्नम में गिरते चले जायेंगे। जरा गौर किया उन अकलमंदों ने? पुल अरबी जुबान में कहां से आया? "पे" अरबी जुबान में है ही नहीं। पुल सरात कहां से गढ़ लिया गया, इस कदर मन घड़त बातें जो बयान से बाहर है। कु-संस्कार ने मानव को जहालात के अंधेरे में ढकेल दिया है। कुरान शरीफ एक रोशन हिदायत नामा है और इसकी हर आयत में एक वैज्ञानिक आधार है कोई कहानियों का ढेर नहीं। अल्लाह सब देखता-सुनता है उनका इंसाफ किसी की सिफारिश से प्रभावित नहीं होता और न इन्हें इनकी आवश्यकता है। इसलिए मेरी (सिद्धार्थ चटर्जी) व्याख्या अल्लाह के हुकुम और उनके असुलों से प्रभावित है। रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद के निधन के बाद उनके नाम पर जिस सम्प्रदाय की श्रृष्टि हुई उन लोगों के साथ जबरदस्त साजिश की गई। आज की दुनिया में सबसे ज्यादा शोषण मुसलमानों का ही किया जाता है और उन्हें इस बात की समझ नहीं। यहां तक कि कुछ मुसलमान पवित्र कुरान को मायने के साथ पढ़ने को भी

गुनाह समझते है। एक इंसान होने के नाते मुसलमानों को मेरा (सिद्धार्थ चटर्जी) मशवरा है कि अपने हाल पर नजर दौड़ाये और अपने आपको इस काबिल बनाये कि नेकी, परहेजगारी और ज्ञान में सबसे आगे निकल जाए।

يَوْمَئِذٍ يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَعَصَوُا الرَّسُولَ لَوْ تُسَوَّى بِهِمُ الْأَرْضُ وَلَا يَكْتُمُونَ اللَّهَ حَدِيثًا {42}

उस दिन जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया और रसूल की नाफ़रमानी की ये आरज़ू करेंगे कि काश और उनके ऊपर से ज़मीन बराबर कर दी जाती और अफ़सोस ये लोग अल्लाह से कोई बात उस दिन छुपा भी न सकेंगे (४२)

व्याख्याः- पापी मानव यानी काफिर जब सोचेंगे कि अल्लाह और उसके रसुल के नियमों को इनकार करके अपने ही हाथों अपने घर को जलाया यानी अपना और समाज का सुकून बिगाड़ा तब वो शर्म के मारे अपने आपको जमीन में समा जाने का सोचेंगे और प्रकृति के सामने सच्चाई कभी नहीं छुपती और अल्लाह सब कुछ जानता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْرَبُوا الصَّلَاةَ وَأَنْتُمْ سُكَارَى حَتَّى تَعْلَمُوا مَا تَقُولُونَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِي سَبِيلٍ حَتَّى تَغْتَسِلُوا وَإِنْ كُنْتُمْ مَرْضَى أَوْ عَلَى سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُمْ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُورًا {43}

ऐ ईमानदारों तुम नशे की हालत में नमाज़ के क़रीब न जाओ ताकि तुम जो कुछ मुँह से कहो समझो भी तो और न जिनाबत की हालत में यहाँ तक कि गुस्ल कर लो मगर राह गुज़र में हो बल्कि अगर तुम मरीज़ हो और पानी नुक़सान करे या सफ़र में हो तुममें से किसी का पैख़ाना निकल आए या औरतों से सोहबत की हो और तुमको पानी न मयस्सर हो तो पाक मिट्टी पर तैमूम कर लो और अपने मुँह और हाथों पर मिट्टी भरा हाथ फेरो तो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला है बख़्श ने वाला है (४३)

व्याख्याः- नशे की हालात में यानी मानव जब अपने होशों हवास में नहीं रहता तब उसे अल्लाह के नियम (नमाज) समझ में नहीं आते और अपनी कही हुई बात भी नहीं समझता। इसलिए किसी किस्म का भी नशा गुनाह है जो मानव के होशों हवास छिन ले मजहब को साफ और सच्चे दिल से समझकर दूसरों को समझाना नेक और सत्य मानवों का फर्ज है। मोह माया में उलझे हुए लोग इसका रुहानी और सच्चा मतलब समझ नहीं पाते। कोई भी ऐसा काम जिससे मानव अपने आपको साफ सुथरा न कर सके और जब तक उसकी साफ-सफाई न करें (जिस्मानी और जहनी) तब तक धर्म की उपदेश न दे।

पैगामः- (१) इस आयत में कहा गया ''नशे की हालात में नमाज के पास न जा'' यानी नमाज न पढ़ने वाले लोग कहेंगे कि जो नमाज नहीं पढ़ता वो नशा कर सकता है। तो इस लिहाज से इस आयात का ये मतलब होना चाहिए कि किसी भी किस्म का नशा उदाहरण के तौर पर औरत, दौलत, शोहरत जो मानव के होशों हवास खत्म कर देता है या उसका विवेक उसके वश में नहीं रहता और जो वो कहता है उसकी समझ के बाहार होता है।

(२) मानव की जिस्म में अगर गन्दगी लगी हुई हो तो यकीनन उसका जहन बार बार उस गंदगी को महसूस करेगा और नेक कामों से उसका ध्यान हट जायेगा इसलिए जिस्मानी पाकीजगी भी जरूरी है।

(३) मिट्टी से साफ करने का मकसद उसको ''जहनी पाकीजगी उपलब्धि करवानी है''। सच्चाई तो यह है कि मिट्टी से मानव की गंदगी साफ नहीं होती और तयम्म से मानव को सिर्फ जहनी तसल्ली मिलती है और अल्लाह का कलाम पढ़ते हुए या सुनाते हुए उसका जहन नहीं भटकता।

इस आयत में एक बात और भी साफ होती है कि मानव जो भी कुछ कहे उसे उसकी समझ होनी चाहिए यानी नमाज में जो कुछ भी पढ़ा जाता है उसे खुब समझ कर पढ़े और उसके साथ-साथ कुरान शरीफ को भी।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِنَ الْكِتَابِ يَشْتَرُونَ الضَّلَالَةَ وَيُرِيدُونَ أَنْ تَضِلُّوا السَّبِيلَ {44}

क्या तूमने उन लोगों के हाल पर नज़र नही की जिन्हें किताबे अल्लाह का कुछ हिस्सा दिया गया था वह लोग गुमराही ख़रीदने लगे उनकी ऐन मुराद यह है कि तुम भी राहे रास्त से बहक जाओ (४४)

व्याख्याः- कुछ मानवों को अल्लाह के नियमों (पुस्तक) का एक बड़ा हिस्सा समझ में आता है फिर भी वो गुमराही को इख्तियार करते है यानी अल्लाह के नियमों का गलत मतलब समझकर लोगों को अपनी तरह गुमराह और गलत राह पर चलाने को कोशिश करते है।

पैगामः- कुछ मानव ऐसे भी दुनिया में है जो अल्लाह के कलाम का गहरा मतलब समझते हुए भी जान-बूझकर दूसरे लोगों को अपने ख्यालात कबूल करने की दावत देते है ये सरासर गुनाह यानी पाप है और ये कु-संस्कार है।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَائِكُمْ وَكَفَى بِاللَّهِ وَلِيًّا وَكَفَى بِاللَّهِ نَصِيرًا {45}

और अल्लाह तुम्हारे दुशमनों से ख़ूब वाक़िफ़ है और दोस्ती के लिए बस अल्लाह काफ़ी है और हिमायत के वास्ते भी अल्लाह ही काफ़ी है (४५)

व्याख्याः- ऐसे लोग नेक लोगों के दुश्मन है और अल्लाह इन्हें खूब जानता है। समाज में नेकी का संतुलन बर्करार रखने में अल्लाह मददगार होते है।

مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ وَيَقُولُونَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّينِ وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ وَلَكِن لَّعَنَهُمُ اللَّهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا {46}

यहूद से कुछ लोग ऐसे भी है जो बातों में उनके महल व मौके से हेर फेर डाल देते है और अपनी ज़बानों को मरोड़कर और दीन पर तानाज़नी की राह से तुमसे समेअना व असैना और वसमअ गैरा मुसमइन राअना मेरा ख़्याल करो मेरे चरवाहे कहा करते है और अगर वह इसके बदले समेअना व अताअना और इसमाआ और के एवज़ उनजुरना कहते तो उनके हक़ में कहीं बेहतर होता और बिल्कुल सीधी बात थी मगर उनपर तो उनके कुफ़्र की वजह से अल्लाह की फ़िटकार है (४६)

व्याख्याः- इतिहास गवाह है यहूदियों के दरमियान के कुछ यहूदी ऐसी हेरा-फेरा का काम करते थे और जुबान की हेरा-फेरी से अल्लाह के नियमों को बिगाड़ते थे। ऐसे लोगों को अल्लाह की तरफ से अशांति आ अजाब।

पैगामः- केवल यहूदी क्यों? हर कोम में और हर समय में इस तरह के लोग थे, है और रहेंगे और सच्चाई को बिगाड़ने की कोशिश करते रहेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ آمِنُوا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُم مِّن قَبْلِ أَن نَّطْمِسَ وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلَىٰ أَدْبَارِهَا أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّا أَصْحَابَ السَّبْتِ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا {47}

पस उनमें से चन्द लोगों के सिवा और लोग ईमान ही न लाएंगे ऐ एहले किताब जो हमने नाज़िल की है और उस की भी तस्दीक़ करती है जो तुम्हारे पास है उस पर इमान लाओ मगर क़ब्ल इसके कि हम कुछ लोगों के चेहरे बिगाड़कर उनके पुश्त की तरफ़ फेर दें या जिस तरह हमने असहाबे सबत पर फिटकार बरसायी वैसी ही फिटकार उनपर भी करें (४७)

व्याख्याः- मानव को अल्लाह के असूल जितने भी समझ में आये उस पर और दूसरे लोगों के पास नेक (पुस्तक) समझ है उस पर विश्वास करना और उसे अपनाना संयमी मानवों का कर्त्तव्य है और उसे अपनाने से आपसी मतभेद दूर होता है। दूसरी नेक और हिदायत वाली पुस्तक की सच्चाई पर एहतराज नहीं करना चाहिए और उनकी सच्चाई और अच्छाई को अपनाना चाहिए और जो लोग ऐसा नहीं करते उन्हें घृण और अशांति का अजाब घेर लेता है और यही प्रकृति का नियम है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدِ افْتَرَىٰ إِثْمًا عَظِيمًا {48}

अल्लाह उस जुर्म को तो अलबत्ता नहीं माफ़ करता कि उसके साथ शिर्क किया जाए हाँ उसके सिवा जो गुनाह हो जिसको चाहे माफ़ कर दे और जिसने अल्लाह का शरीक बनाया तो उसने बड़े गुनाह का तूफान बाँधा (४८)

व्याख्याः- अल्लाह के नियम (यानी शांति) को छोड़कर ईर्ष्या, अहंकार और घृणा के असूलों को अपनाने (यानी अल्लाह का शरीक ठहराना) वालों को कभी माफी नहीं मिलती और इसके अलावा मानव की छोटी गलतियां अल्लाह माफ कर देता है और जो मानव अल्लाह के नियम यानी प्रेम और भाई चारा को त्याग कर नफरत और फसाद की नियमों को अल्लाह के नियमों के बराबर ठहराते है वो लोग महापापी है यानी अल्लाह को और उनके तमाम इंसानों को मजहब के नाम पर बांटना और सम्प्रदाय की श्रृष्टि करना महापाप है। अल्लाह एक है, उसके असुल एक है और तमाम मानव प्राणियों के मध्य एक प्रजाति है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنفُسَهُم بَلِ اللَّهُ يُزَكِّي مَن يَشَاءُ وَلَا يُظْلَمُونَ فَتِيلًا {49}

क्या तुमने उन लोगों के हाल पर नज़र नहीं की जो आप बड़े मुक़द्दस बनते हैं बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है मुक़द्दस बनाता है और जुल्म तो किसी पर धागे के बराबर हो ही गा नहीं (४९)

व्याख्याः- और इस तरह के लोग कभी भी छुप नहीं सकते। जो अपने आपको पवित्र साबित करने की कोशिश करते है, हकीकत में वो अपवित्र है और अल्लाह, प्रकृति जिसे चाहे पवित्रता प्रदान करती है और अल्लाह किसी पर जुल्म नहीं करता।

انظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَكَفَىٰ بِهِ إِثْمًا مُّبِينًا {50}

ज़रा देखो तो ये लोग अल्लाह पर कैसे कैसे झूठ तूफ़ान जोड़ते हैं और खुल्लम खुल्ला गुनाह के वास्ते तो यही काफ़ी है (५०)

व्याख्याः- कुछ मानव ऐसे भी है जो अपनी पवित्रता को साबित करने के लिए अल्लाह के नाम पर तरह-तरह के झूठे मजहबी रश्मों रिवाज की कहानियां सुनाते है जिनकी कोई हकीकत नहीं होती और इससे मानव और समाज को कोई लाभ नहीं होता। ऐसे लोग पापी है।

पैगामः- जमाने का हर पहलू अल्लाह द्वारा नियुक्त है और इस गति में अल्लाह के नियमों के साथ अपने आपको लगाये रखना नेक और संयमी मानव का काम है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هَٰؤُلَاءِ أَهْدَىٰ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا سَبِيلًا {51}

क्या तुमने उन लोगों के नज़र नही की जिन्हें किताबे अल्लाह का कुछ हिस्सा दिया गया था और शैतान और बुतों का कलमा पढ़ने लगे और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया है उनकी निस्बत कहने लगे कि ये तो इमान लाने वालों से ज़्यादा राहे रास्त पर है (५१)

व्याख्याः- समाज में कुछ मानव ऐसे भी है जो पुस्तक के कुछ नियमों को समझने के बाद भी अल्लाह के नियमों के बजाये शैतान के नियमों को अपना माबूद बना लेते है और अपनी इस कुफरियत को सही साबित करने की कोशिश करते है और कहते है कि हमलोग ही सीधे रास्ते पर है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ وَمَن يَلْعَنِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ نَصِيرًا {52}

यही वह लोग हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की है और जिस पर अल्लाह ने लानत की है तुम उनका मददगार हरगिज़ किसी को न पाओगे (५२)

व्याख्याः- और ऐसे लोगों को अल्लाह की तरफ से अशांति और कष्ट द्वारा लानत (अभिश्राप) और जिस पर अल्लाह लानत करे उसका कोई मददगार नहीं।

أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا {53}

क्या की सल्तनत में कुछ उनका भी हिस्सा है कि इस वजह से लोगों को भूसी भर भी न देंगे (५३)

व्याख्याः- ऐसे लोगों के पास अल्लाह बादशाह के दरबार से जरा बराबर भी सुख और शांति का हिस्सा नहीं मिलता।

أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلَىٰ مَا آتَاهُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ فَقَدْ آتَيْنَا آلَ إِبْرَاهِيمَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَآتَيْنَاهُم مُّلْكًا عَظِيمًا {54}

या अल्लाह ने जो अपने फ़ज़्ल से लोगों को अता फ़रमाया है इसके रश्क पर चले जाते है हमने तो इबराहीम की औलाद को किताब और अक़्ल की बातें अता फ़रमायी है और उनको बहुत बड़ी सल्तनत भी दी (५४)

व्याख्याः- अल्लाह ने अपनी प्रकृति के जरिए संयमी लोगों को जो सुख शांति दे रखी है उस पर ऐसे न समझ और ईर्ष्या जनक लोग हस्ते है। इब्राहीम के खंदान को अल्लाह ने सच्चा ज्ञान, शांति का जीवन और अच्छा रहने का ठिकाना दिया।

पैगामः- इब्राहीम को एक उदाहरण के तौर पर इस आयत में पेश किया गया है और आज दुनियां के तमाम विद्वानों को इब्राहीम का खंदान कहा जायेगा। याद रखें इब्राहीम का खंदान काबा में बूथपररथी करते थे फिर भी उनके खंदान को किताब और हिकमत मिली इस लिहाज से ये आयत इस बात को साबित करती है कि अल्लाह के नियमों के खिलाफ करना ही अल्लाह का शरीक करना है।

فَمِنْهُم مَّنْ آمَنَ بِهِ وَمِنْهُم مَّن صَدَّ عَنْهُ وَكَفَىٰ بِجَهَنَّمَ سَعِيرًا {55}

फिर कुछ लोग तो इस पर ईमान लाए और कुछ लोगों ने उससे इन्कार किया और इसकी सज़ा के लिए जहन्नुम की दहकती हुयी आग काफ़ी है (५५)

व्याख्याः- समाज के कुछ लोगों ने विद्वानों से ज्ञान हासिल किया और कुछ लोगों ने अज्ञानता के अंधेरे में रहकर तकलीफों की जलती हुई आग को अपनाया।

पैगामः- इस आयत के तर्जुमा के अनुसार अगर इब्राहीम की आल औलाद को हुकुमत का अधिकार दिया गया था तो आज के जमाने में ये अनुवाद पूरी तरह बातील है। वर्तमान दुनियां के कुछ थोड़े से हिस्से में ही इब्राहीम की आल औलाद हुकुमत कर रही है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا سَوْفَ نُصْلِيهِمْ نَارًا كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُودُهُم بَدَّلْنَاهُمْ جُلُودًا غَيْرَهَا لِيَذُوقُوا الْعَذَابَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَزِيزًا حَكِيمًا {56}

कि जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया उन्हें ज़रूर अनक़रीब जहन्नुम की आग में झोंक देंगे जल जाएंगी तो हम उनके लिए दूसरी खालें बदल कर पैदा करे देंगे ताकि वह अच्छी तरह अज़ाब का मज़ा चखें बेशक अल्लाह हरचीज़ पर ग़ालिब और हिकमत वाला है (५६)

व्याख्याः- अल्लाह के नियमों को जिसने इनकार किया अल्लाह उसकी खाल को अशांति की आग से जलाते है यानी उसके जिस्म का हर हिस्सा अशांति की तकलीफ भुगतेगा यकीनन अल्लाह सर्वशक्तिमान है।

पैगामः- जिनके जीवन और अन्तर्आत्मा में सुख शांति नहीं रहती वही मानव हिंसा, जरूरत से ज्यादा उत्वकांक्षा और अहंकार के आग से जलते रहते है यानी इन सब बातों से इनकी अन्तर्आत्मा परेशान रहती है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا لَّهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا {57}

और जो लोग ईमान लाए और अच्छे अच्छे काम किए हम उनको अनक़रीब ही ऐसे ऐसे बाग़ों में जा पहुँचाएंगे जिन के नीचे नहरें जारी होंगी और उनमें हमेशा रहेंगे वहां उनकी साफ़ सुथरी बीवियाँ होंगी और उन्हे घनी छाँव में ले जाकर रखेंगे (५७)

व्याख्याः- और जो अल्लाह के नियमों पर ईमान लाये और उसे अपनाये और उसके तहत नेक कामों में अपने आपको व्यस्त रखें तो यकीनन अल्लाह शांति के बाग (जिसके नीचे नहर के पानी की तरह ठंडक जैसे सुकून और शांति) में सच्चे और संयमी लोगों को अनंत काल तक रखेंगे और उन्हें पवित्र साथी हासिल होंगे और ऐसे लोग अल्लाह के आशीर्वाद के साये में रहेंगे।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُكُمْ أَن تُؤَدُّوا الْأَمَانَاتِ إِلَىٰ أَهْلِهَا وَإِذَا حَكَمْتُم بَيْنَ النَّاسِ أَن تَحْكُمُوا بِالْعَدْلِ إِنَّ اللَّهَ نِعِمَّا يَعِظُكُم بِهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ سَمِيعًا بَصِيرًا {58}

ऐ ईमानदारों अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि लोगों की अमानतें अमानत रखने वालों के हवाले कर दो और जब लोगों के बाहमी झगड़ों का फ़ैसला करने लगो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो इसकी क्या ही अच्छी नसीहत करता है इसमें तो शक नहीं कि अल्लाह सबकी सुनता है देखता है (५८)

व्याख्याः- अल्लाह के नियमों में ये भी शामिल है कि नेक मानव हमेशा दूसरों के अधिकार के बारे में महसूस करे और हर किसी को अधिकार प्रदान करने में हर मुमकिन मदद करे और लोगों के बीच में मतभेद का ईमानदारी से फैसला करें। और यकीनन अल्लाह के आदेश मानव और समाज के लिये लाभकारी है।

पैगामः- अल्लाह ताला ने अपनी प्रकृति के द्वारा मानवी समाज में मानव से ही कानून की सृष्टि की ताकि मानव आपस का मतभेद या गीले सिकवे का फैसला कर सके। अल्लाह ताला अपनी आदृश्य शक्ति के द्वारा मानवी कानून को नियंत्रण करता रहता है। हर देश या हर जाति का समाज और कानून एक सा नहीं होता मगर उनकी बुनियाद एक होती है। पाक परवरदिगार हर समाज के कानून कुछ अलग-अलग रखे और ये नियम भाषा, प्राकृति और सामाजिक तौर तरीकों पर आधारित है। हमारे देश का भी एक संविधान है जैसे की सारे देशों में होता है। अल्लाह ताला ने इस आयत के द्वारा मानवी समाज में मौजूद उन तमाम कानूनों की मानयता दी जिसकी बुनियाद कूदरत है यानी इंसानियत, भाईचारा, अहिंसा, शिक्षा, सत्य और शांति। कानून मानव की अंर्तात्मा को अनुशासित करती है और मानव की पवित्र अंर्तात्मा की परछाई है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنكُمْ فَإِن تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللَّهِ وَالرَّسُولِ إِن كُنتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا {59}

ऐ ईमानदारों अल्लाह की इताअत करो और रसूल की और जो तुममें से साहेबाने हुकूमत हों उनकी इताअत करो और अगर तुम किसी बात में झगड़ा करो पस अगर तुम अल्लाह और रोज़े आख़िरत पर इमान रखते हो तो इस अम्र में अल्लाह और रसूल की तरफ़ रूजू करो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अन्जाम की राह से बहुत अच्छा है (५९)

व्याख्याः- ईमान वाले लोग अल्लाह के नियम जो रसुलों के द्वारा पहुँचे उसकी फरमाबरदारी करे और मानवी फितरत के अनुसार अपने नियमों के मतभेद को अल्लाह या रसुल के नियम से जाँच ले और उसके साथ-साथ दुनियां के हाकमों की यानी सरकारी कानून पर भी ईमान रखे, ताकि समाज में शांति बरकरार रहे क्योंकि ये सारे कानून अल्लाह ने दुनियां में नियुक्त किये और इसका नतीजा बहुत ही अच्छा होता है ।

पैगामः- इस आयात के वर्तमान अनुवाद के अनुसार ढेर सारे सवाल हैं

१. अगर अल्लाह और रसुल का आदेश एक ही है तब लोगों के दरमियान मतभेद का सवाल कहां से आता है?
२. क्या अल्लाह का आदेश रसुल ने लोगों को ठीक-ठीक से नहीं पहुँचाया था?

३. ये आयात न रसुल की जुबानी और न अल्लाह की जुबानी, तो ये किसकी जुबानी है? जो अल्लाह और रसुल की फरमोबदारी का हुकूम दे रही है।

४. अगर ये आयात जिबरील के जुबानी है तो क्या जिबरील को ये अधिकार है कि वो लोगों से बात करे? अगर जिबरील लोगों से बात कर सकता था तो रसुल की फरमोबदारी या जरूरत क्यों थी? ऐसी सूरत में ये आयात किसकी जुबानी है? और इस आयत में मुसलमानों को संबोधित किया गया है।

५. इस आयत में कहा गया है कि 'फैसला रसुल पर छोड़ दे' तो आज रसुल नहीं है तो फैसला कौन करेगा? रसुल की जगह किसे दी जाये। उलमा क्या रसुल की बराबरी कर सकती है। क्या उन्हें अपनी लड़ाई से फुरसत है? मैं ये दावा से कहता हूँ कि इन सारे सवालों का जवाब मेरी व्याख्या में मौजूद है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَحَاكَمُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَن يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا {60}

क्या तुमने उन लोगों की पर नज़र नहीं की जो ये ख़्याली पुलाओ पकाते है कि जो किताब तुझ पर नाज़िल की गयी और जो किताबें तुम से पहले नाज़िल की गयी लाए और दिली तमन्ना ये है कि सरकशों को अपना हाकिम बनाएँ हालाँकि उनको हुक्म दिया गया कि उसकी बात न माने और शैतान तो यह चाहता है कि उन्हें बहका के बहुत दूर ले जाए (६०)

व्याख्याः- कुछ लोग ऐसे भी होते है जो पुस्तक के नियमों को समझने के बावजूद अपने फैसले ऐसे लोगों से करवाते है जो शैतान के बंदे है (यानी पापी मानव) और पापी मानव कभी भी सही फैसला नहीं देता और ऐसा करने से लोगों को इंसाफ नहीं मिलता।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَى مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ رَأَيْتَ الْمُنَافِقِينَ يَصُدُّونَ عَنكَ صُدُودًا {61}

और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो किताब नाज़िल की है उसकी तरफ़ और रसूल की तरफ़ रूजू करो तो तुम मुनाफ़िक़ीन को देखते हो कि तुमसे किस तरह मुँह फेर लेते है (६१)

व्याख्याः- लोगों को हमेशा अल्लाह के नियम जो रसुल के द्वारा मिले उन पर अमल करना चाहिए लेकिन मुनाफिक लोग नेक और परहेजगारी की राह, जो रसुलों ने बताई उसपर चलने से इनकार करते है और बदकारी और अय्याशी की राह चुनते है।

فَكَيْفَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَاؤُوكَ يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا إِحْسَانًا وَتَوْفِيقًا {62}

कि जब उनपर उनके करतूत की वजह से कोई मुसीबत पड़ती है तो क्योंकर तुम्हारे पास अल्लाह की क़समें खाते है कि हमारा मतलब सभ्यी और मेल मिलाप के सिवा कुछ न था ये वह लोग है कि कुछ अल्लाह ही उनके दिल की हालत ख़ूब जानता है (६२)

व्याख्याः- और मुनाफिक अय्याश लोगों पर कोई मुसीबत आने पर वो नेकी का रास्ता इख्तियार करने की शपथ लेते है तब ऐसे लोगों के पास नेकी और बदी के दरमियान का कोई रास्ता नहीं बचता।

पैगामः- उदाहरण के तौर पर सिग्रेट पीने से कैंसर होता है और कैंसर होने के बाद सिग्रेट छोड़ने की कसम खाते है और छोड़ भी देते है तो उन्हें कैंसर से बचने की उम्मीद बहुत कम होती है, इस तरह गलत यौन संबंध इख्तियार करने के कारण एड्स जैसी बीमारी से बचने की उम्मीद नहीं रहती। ड्रग द्वारा हुई बीमारी से मानव को कम ही मुक्ति मिलती है।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللَّهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُل لَّهُمْ فِي أَنفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيغًا {63}

पस तुम उनसे दरगुज़र करो और उनको नसीहत करो और उनसे उनके दिल में असर करने वाली बात कहो और (६३)

व्याख्याः- ऐसे लोगों की किस्मत अल्लाह जानता है और नेक लोग उनके पाप कि तरफ ध्यान न देकर उपदेश द्वारा उन्हें सुधारते रहे और अपनी खुशहाल जिन्दगी के बारे में उन्हें बताये ताकि उनके विवेक को पाप का एहसास हो ।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِن رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللَّهِ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذ ظَّلَمُوا أَنفُسَهُمْ جَاؤُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا {64}

हमने कोई रसूल नहीं भेजा मगर इस वास्ते कि अल्लाह के हुक्म से लोग उसकी इताअत करें और जब उन लोगों ने अपनी जानों पर जुल्म किया था अगर तुम्हारे पास चले आते और अल्लाह से माफ़ी माँगते और रसूल भी उनकी मग़फ़िरत चाहते तो बेशक वह लोग अल्लाह को बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान पाते (६४)

व्याख्याः- दुनियां में रसुलों की उपस्थिति सिर्फ अल्लाह के नियमों को लोगों को समझाना है और पापियों को पाप छोड़कर अल्लाह के नियमों को अपनाने से ही मुक्ति मिलती है।

فَلا وَرَبِّكَ لا يُؤْمِنُونَ حَتَّىٰ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لا يَجِدُوا فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا {65}

पस तुम्हारे परवरदिगार की क़सम ये लोग सच्चे मोमिन न होंगे तावक़्ते कि अपने बाहमी झगड़ों में तुमको अपना हाकिम बनाएँ फिर जो कुछ तुम फ़ैसला करो उससे किसी तरह दिलतंग भी न हों बल्कि खुशी खुशी उसको मान लें (६५)

व्याख्याः- ऐसे पापी मानव कभी भी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक वो अपने जहन की नफरत और फसाद को छोड़कर ईमान वाली जिन्दगी को (शांति) हाकीम न समझ ले और अपने अंदर की तंग जहनी छोड़कर जब तक ये न मान ले कि शांति की जिन्दगी ही खुशी ला सकती है।

पैगामः- इस आयात की शुरुआत में ''शपथ ली गई है पाक-परवरदिगार की

१. अगर ये अल्लाह का कलाम है तो क्या रसुल का अल्लाह कोई दूसरा था जिसकी शपथ अल्लाह ने ली?
२. अगर ये जिबरील की जुबानी है और रसुल को सम्बोधित किया गया है तो क्या जिब्रील और रसुल का परवरदिगार अलग-अलग है?
३. अगर ये रसुल की जुबानी है और लोगों को सम्बोधित किया गया है तो क्या लोगों का परवरदिगार और रसुल का परवरदिगार अलग-अलग है?

इन प्रश्नों के उत्तर.....

हर किसी ने अल्लाह को अलग-अलग नाम से पुकारा यहां तक कि इस्लाम में भी अल्लाह के बहुत सारे नाम है दुनियां में मौजूद तमाम अल्लाह के नामों को मंजूरी देते हुए इस आयात की बनावट इस तरह रखी गयी है। समझदार मानव इस आयत की गहराई को समझकर अल्लाह के नामों पर जो मतभेद है वो उससे दूर रहेंगे।

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوا أَنفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوا مِن دِيَارِكُم مَّا فَعَلُوهُ إِلَّا قَلِيلٌ مِّنْهُمْ وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوا مَا يُوعَظُونَ بِهِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيتًا {66}

और अगर हम बनी इसराइल की तरह उनपर ये हुक्म जारी कर देते कि तुम अपने आपको क़त्ल कर डालो या शहर बदर हो जाओ तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा ये लोग तो उसको न करते और अगर ये लोग इस बात पर अमल करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके हक़ में बहुत बेहतर होता (६६)

व्याख्याः- आत्महत्या करना या लोगों को अपने वतन से बेघर करना अल्लाह का नियम नहीं । अल्लाह के नियम और उनकी प्रकृति इतनी सच्ची और सीधी है कि जब लोग उसे समझेंगे या महसूस करेंगे तो इनकी विश्वास और भी मजबूत होगा और उन्हें शांति हासिल होगी।

وَإِذًا لَّآتَيْنَاهُم مِّن لَّدُنَّا أَجْرًا عَظِيمًا {67}

और बहुत साबित क़दमी से जमे रहते और इस सूरत में हम भी अपनी तरफ़ से ज़रूर बड़ा अच्छा बदला देते (६७)

व्याख्याः- ऐसे लोगों को अल्लाह और प्रकृति की तरफ से शांति वाली जिन्दगी हासिल होगी।

وَلَهَدَيْنَاهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا {68}

और उनको राहे रास्त की भी ज़रूर हिदायत करते (६८)

व्याख्याः- और यकीनन ऐसे लोगों को अल्लाह की मर्जी से सही रास्ता हासिल होता है ।

وَمَن يُطِعِ اللَّهَ وَالرَّسُولَ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّنَ النَّبِيِّينَ وَالصِّدِّيقِينَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِينَ وَحَسُنَ أُولَٰئِكَ رَفِيقًا {69}

और जिसशख़्स ने अल्लाह और रसूल की इताअत की तो ऐसे लोग उन बन्दों के साथ होंगे जिन्हें अल्लाह ने अपनी नेअमतें दी है यानि अम्बिया और सिद्दीक़ीन और शोहदा और सालेहीन और ये लोग क्या ही अच्छे रफ़ीक़ है (६९)

व्याख्याः- जो मानव अल्लाह के नियमों पर चलते है उन्हें जरूर संयमी, सच्चे और विद्वानों का साथ मिलेगा। महापुरुष मानव ही समाज के सच्चे साथी है।

पैगामः- प्रेम, शांति, भाईचारा, अहिंसा, शिक्षा और संयम इन सारे आदर्शों पर चलने वाले सारे आपस में साथी है।

ذَٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللَّهِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ عَلِيمًا {70}

ये अल्लाह का फ़ज़्ल है और अल्लाह तो वाक़िफ़कारी में बस है (७०)

व्याख्याः- पुण्य फल अल्लाह की तरफ से ही मिलता है और अल्लाह काफी है जानने वाला।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا خُذُوا حِذْرَكُمْ فَانفِرُوا ثُبَاتٍ أَوِ انفِرُوا جَمِيعًا {71}

ऐ ईमानवालों अपनी हिफ़ाज़त के अच्छी तरह देखभाल लो फिर तुम्हें इख़्तेयार है ख़्वाह दस्ता दस्ता निकलो या सबके सब इकट्ठे होकर निकल खड़े हो (७१)

व्याख्याः- नेक मानव यानी मुसलमान पापियों की साजिश से सतर्क रहे जब वो अकेले हो या जब सब मिलकर पवित्र या समाज कल्याण का काम कर रहे हो।

وَإِنَّ مِنكُمْ لَمَن لَّيُبَطِّئَنَّ فَإِنْ أَصَابَتْكُم مُّصِيبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُن مَّعَهُمْ شَهِيدًا {72}

और तुममें से बाज़ ऐसे भी है जो ज़रूर पीछे रहेंगे फिर अगर इत्तेफ़ाक़न तुमपर कोई मुसीबत आ पड़ी तो कहने लगे अल्लाह ने हमपर बड़ा फ़ज़ल किया कि उनमें के साथ मौजूद न हुआ (७२)

व्याख्याः- अल्लाह ताला ने अपने प्रकृति के द्वारा मानव को सभ्यता और आधुनिक समाज प्रदान किया और ये उसे एक बार में नहीं मिला। समय के साथ-साथ अल्लाह ताला ने मानव को आधुनिक से आधुनिक ज्ञान, विज्ञान से परिपूर्ण किया। इस मानवी सफर में जो मानव आधुनिक और वैज्ञानिक सोच को छोड़कर कु-संस्कार, अंध विश्वास और गैर तहजीबी कामों में जीते रहते है, वो निश्चित रूप से मुसीबत में है। हर वैज्ञानिक आधार का अच्छा-बुरा होता है अगर कभी आधुनिकता और सभ्यता के प्रकाश में वक्ती तौर पर कुछ भी बुराई नजर आती है तो कुछ लोग कहते है कि अच्छा हुआ इस सोच को नहीं अपनाया ये इनका व्यहम है। अल्लाह ने जो सभ्यता (तहजीब) मानवों को दी है उसे वक्त के साथ उसे अपना कर चलना ही बुद्धिमानी है।

पैगामः- ये आयत किसी जंग का बयान नहीं और ये इसलिए की आज के युग में हर देश में अपनी-अपनी फौजे तैयार कर रखी है और न ही देशवासियों को जंग में जाने की जरूरत पड़ती है। क्या ऐसी सुरत में ये आयत बातिल है या ये आयत हर मानव के लिए नहीं है। कुरान शरीफ की हर आयत, हर मानव और हर युग के लिए परिपूर्ण है इस लिहाज से ये आयत ज्ञान और मूर्खता के बीच में फासले की प्रतीक करती है।

وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللَّهِ لَيَقُولَنَّ كَأَن لَّمْ تَكُنۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يَا لَيْتَنِي كُنتُ مَعَهُمْ فَأَفُوزَ فَوْزًا عَظِيمًا {73}

और अगर तुमपर अल्लाह ने फ़ज़ल किया तो इस तरह अजनबी बनके कि गोया तुममें उसमें कभी प्रेम ही न थी यूँ कहने लगा कि ऐ काश उनके साथ होता तो मै भी बड़ी कामयाबी हासिल करता (७३)

व्याख्याः- और अगर नेक काम करते वक्त नेक लोगों को सफलता मिलती है तो टांग खिचने वाले लोग कहते है कि उनके साथ कोई भी रिश्ता नहीं है। कितना अच्छा होता अगर वो भी उनका साथ देते तो उन्हें और भी असानी होती।

فَلْيُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ الَّذِينَ يَشْرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا بِالْآخِرَةِ وَمَن يُقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا {74}

पस जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी आख़ेरत के वास्ते दे डालने को मौजूद है उनको अल्लाह की राह में जेहाद करना चाहिए और जिसने अल्लाह की राह में जेहाद किया फिर शहीद हुआ तो गोया ग़ालिब आया तो हम तो अनक़रीब ही उसको बड़ा अज्र अता फ़रमायेंगे (७४)

व्याख्याः- जो मानव पुण्य और ज्ञान के बदले पाप, कु-संस्कार, मूर्खता और अय्याशी की जिन्दगी को ग्रहण करते है उनके विरुद्ध नेक और संयमी मानव (जो अल्लाह के रास्ते पर चलते है) को जरूर जहाद करना चाहिए और मानव को चाहिए कि अपने अंदर के अपवित्र विवेक के विरुद्ध भी जहाद करें। इस जहाद का नतीजा कुछ भी हो मानव को अल्लाह की तरफ से इसका फल जरूर मिलेगा।

पैगामः- संयमी, शीक्षित और शांतिकामी मानव को अपनी अंतर्रात्मा से लेकर समाज के वो तमाम पाप कर्मों के विरुद्ध जहाद करना चाहिए । फलस्वरूप मानव को अच्छा और शांति वाला समाज प्राप्त होगा।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا أَخْرِجْنَا مِنْ هَٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ وَلِيًّا وَاجْعَل لَّنَا مِن لَّدُنكَ نَصِيرًا {75}

तुमको क्या हो गया है कि अल्लाह की राह मे उन कमज़ोर और बेबस मर्दो और औरतों और बच्चों के वास्ते जेहाद नही करते जो अल्लाह से दुआएँ माँग रहे है कि ऐ हमारे पालने वाले किसी तरह इस बस्ती से जिसके बाशिन्दे बड़े ज़ालिम है हमें निकाल और अपनी तरफ़ से किसी को हमारा सरपरस्त बना और तू ख़ुद ही किसी को अपनी तरफ़ से हमारा मददगार बना (७५)

व्याख्याः- मानव के सामने कोई वजह नहीं की वो पाप के विरुद्ध जहाद न करे अपने कमजोर विवेक की वजह से औरत, मर्द और बच्चे जो जुल्म का शिकार हो उनको उद्धार देने के लिए आगे बढ़े और जो लोग दुआ कर रहे है कि उन्हें अत्याचारों की नगरी से बाहर निकाले और जिस पाप की नगरी के लोग जुल्म कर रहे हो और जुल्म सहने वाले लोगों के लिए कोई ऐसा मानव आ खड़ा हो जिसके द्वारा जुल्म सहने वालों को तकलीफों से मुक्ति दिलाये। उलमाओं के अनुवाद के अनुसार ये अल्लाह की शान में गुस्ताकी है। जब मदद सिर्फ अल्लाह से मांगी जाती है तो ये आयत कहने वाला लोगों को जहाद के लिए किस हक से उकसा रहा है। अल्लाह का कलाम होने के नाते अल्लाह कभी भी लोगों से इस तरह की बातें नहीं करेंगे। इस लिहाज से ये सवाल मानव की अंर्तात्मा द्वारा किया गया है, जो अल्लाह के द्वारा ही मनुष्य के दिमाग में उत्पन्न होता है, ताकि मानव पाप के विरूद्ध युद्ध करें और समाज की पवित्रता को बरकरार रखें।

الَّذِينَ آمَنُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ فَقَاتِلُوا أَوْلِيَاءَ الشَّيْطَانِ إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطَانِ كَانَ ضَعِيفًا {76}

ईमानवाले तो अल्लाह की राह में लड़ते है और कुफ्फ़ार शैतान की राह में लड़ते मरते है पस तुम शैतान के हवा ख़ाहों से लड़ो और क्योंकि शैतान का दाओ तो बहुत ही बोदा है (७६)

व्याख्याः- ईमानदार मानव अल्लाह की राह पर जालिम लोगों से कमजोर लोगों को मुक्ति दिलवाने के लिए जहाद करते है और जो काफिर है वो शैतान की राह पर जुल्म करते है और जुल्म के खिलाफ आवाज नहीं उठाते। इसलिए नेक, अमन सकून चाहने वाले मोमिन मानव हमेशा शैतान के बंदे यानी जुल्म करने वालों के खिलाफ जहाद करते है और इस वजह से हमेशा से ही पाप शक्ति दुर्बल होती रहती है।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ قِيلَ لَهُمْ كُفُّوا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللَّهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً وَقَالُوا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ لَوْلَا أَخَّرْتَنَا إِلَى أَجَلٍ قَرِيبٍ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِمَنِ اتَّقَى وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا {77}

क्या तुमने उन लोगों पर नज़र नहीं की जिनको और उनको हुक्म दिया गया था कि अपने हाथ रोके रहो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और ज़कात दिए जाओ मगर जब जिहाद उनमें से कुछ लोग लोगों से इस तरह डरने लगे जैसे कोई अल्लाह से डरे बल्कि उससे कहीं ज़्यादा और कहने लगे अल्लाहया तूने हमपर जेहाद क्यों वाजिब कर दिया हमको कुछ दिनों की और मोहलत क्यों न दी उनसे कह दो कि दुनिया की आसाइश बहुत थोड़ा सा है और जो डरता है उसकी आख़ेरत उससे कहीं बेहतर है और वहां तो रेशा बराबर भी तुम लोगों पर जुल्म नहीं किया जाएगा (७७)

व्याख्याः- कुछ डरपोक मानव पाप के विरुद्ध लड़ते वक्त सवाल उठाते है कि ये उनका काम नहीं है, ऐसे लोग जाने ले कि मानव को दुनिया की मोह-माया ही डरपोक बना देती है और उसे पाप चक्र में उलझा देती है। मानव के लिए जो सबसे बेहतर नतीजा है उसे न अपनाकर अपना ही नुकसान करते है, वो अल्लाह और प्राकृति के आदर्शों के विरुद्ध काम करते है। जो लोग पाप के विरुद्ध लड़ते है और अपने आपको और समाज को जुल्म से मुक्ति दिलवाते है उन्हें उनका विवेक कभी भी परेशान नहीं करता और उन्हें प्राकृति की तरफ से पूरा-पूरा फल मिलेगा।

أَيْنَمَا تَكُونُوا يُدْرِكْكُمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِي بُرُوجٍ مُشَيَّدَةٍ وَإِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَقُولُوا هَذِهِ مِنْ عِنْدِكَ قُلْ كُلٌّ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ فَمَالِ هَؤُلَاءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ حَدِيثًا {78}

तुम चाहे जहाँ हो मौत तो तुमको ले डालेगी अगरचे तुम कैसे ही मज़बूत पक्के गुम्बदों में जा छुपो और उनको अगर कोई भलाई पहुँचती है तो कहने लगते है कि ये अल्लाह की तरफ़ से है और अगर उनको कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो कहने लगते है कि ये तुम्हारी बदौलत है तुम कह दो कि सब अल्लाह की तरफ़ से है पस उन लोगों को क्या हो गया है कि कोई बात ही नहीं समझते (७८)

व्याख्याः- मृत्यु अवश्य स्वंभावकि है और मानव उससे बच नहीं सकता। मानव को अच्छे-बुरे का नतीजा सिर्फ प्राकृति से मिलता है । प्राकृति ने मानव को विवेक प्रदान करके और रसुलों की सहायता से उन्हें अच्छे-बुरे की पहचान भी दी।

مَا أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللَّهِ وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكَ وَأَرْسَلْنَاكَ لِلنَّاسِ رَسُولًا وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا {79}

हालाँकि जब तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे तो अल्लाह की तरफ़ से है और जब तुमको कोई फ़ायदा पहुँचे तो ख़ुद तुम्हारी बदौलत है और हमने तुमको लोगों के पास पैग़म्बर बनाकर भेजा है और अल्लाह की गवाही काफ़ी है (७९)

व्याख्याः- और इसलिए मानव को जब सुख-शांति वाली जिन्दगी मिलती है तो वह अल्लाह और प्राकृति का वरदान है और अशांति मानव के अपने कर्मों का फल है। अल्लाह ने रसुलों को तमाम मानव सभ्यता के लिए प्रेरित किया और गवाही के लिए अल्लाह काफी है।

पैगामः- मानव को मस्तिक्ष देकर अल्लाह ताला ने अच्छा और बुरा रास्ता चुनने के काबिल बनाया लेकिन सारे कामों को अल्लाह ताला ही चलाता है और साबित भी करता है'

مَّنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ وَمَن تَوَلَّى فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا {80}

जिसने रसूल की इताअत की तो उसने अल्लाह की इताअत की और जिसने रूगरदानी की तो तुम कुछ ख़्याल न करो हमने तुम को पासबान करके तो भेजा नहीं है (८०)

व्याख्याः- और जो मानव रसुलों के आदर्शों पर चलता है वो यकीनन अल्लाह के आदर्शों पर चल रहे है और जो उसके विरुद्ध करते है तो रसुल उनको अशांति से नहीं बचा सकता और न ही उसका जिम्मेदार है।

पैगामः- जब अल्लाह ताला ने रसुलों को किसी भी मानव पर निगेबान नहीं किया तो यकीनन मानव को भी हक नहीं कि एक-दूसरे के मजहब की निगेबानी या तनकीद करें। मजहब मानव का नीजी फैसला है।

وَيَقُولُونَ طَاعَةٌ فَإِذَا بَرَزُوا مِنْ عِندِكَ بَيَّتَ طَائِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِي تَقُولُ وَاللَّهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُونَ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا {81}

तो कह देते हैं कि हम फ़रमाबरदार है लेकिन जब तुम्हारे पास से बाहर निकले तो उनमें से कुछ लोग जो कुछ तुमसे कह चुके थे उसके ख़िलाफ़ रातों को मशवरा करते है हालाँकिये लोग रातों को जो कुछ भी मशवरा करते है उसे अल्लाह लिखता जाता है पास तुम उन लोगों की कुछ परवाह न करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह कारसाज़ी के लिए काफ़ी है (८१)

व्याख्याः- कुछ लोग मुंह से नेकी की बात करते है और कहते है कि वो अल्लाह के नियमों के फरमाबरदार है और नेक बात सुनने के बाद चले जाते है। उनमें से कुछ लोग पीठ-पीछे यानी छुपकर नेकी और परहेजगारी की बातें करने वालों के विरुद्ध साजिश रखते है और अल्लाह उनकी साजिशों से वाकिफ है। नेक लोग उनकी साजिशों को दर-गुजर करे और अल्लाह सब देखता-जानता है।

पैगामः- इस आयत में ''रात'' का उल्लेख गुनाह की प्रतीक करती है यानी पुण्य के विपरीत साजिश रचना पापियों का काम है।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُونَ الْقُرْآنَ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِندِ غَيْرِ اللَّهِ لَوَجَدُوا فِيهِ اخْتِلَافًا كَثِيرًا {82}

तो क्या ये लोग कुरान में भी ग़ौर नहीं करते और अगर अल्लाह के सिवा किसी और की तरफ़ से होता तो ज़रूर उसमें बड़ा इख़्तेलाफ़ पाते (८२)

व्याख्याः- कुरान-शरीफ में गौर करने से और उसका गहरा मतलब समझने के बाद इसमें कोई भी मतभेद नजर नहीं आयेगा।

पैगामः- कुरान-शरीफ के वर्तमान अनुवाद के अनुसार उनमें बहुत से मतभेद पाये जाते है । कहीं-कहीं पे कुरान रसुल की जुबानी है और कहीं-कहीं ये जिब्रील की जुबानी और कही-कही ये अल्लाह की जुबानी और कही-कही ये किसी चौथे मानव की तर्जुबानी करता नजर आता है। उदाहरण के तौर पर सुरा मैयदा की आयत ५१ में कहा गया है ''यहूदियों और नसरानियों से दोस्ती न करो'' और इसी सुराह की आयत नम्बर ८२ में कहा गया है कि ''मुसलमानों की दोस्ती में सबसे ज्यादा करीब उनको पाओगे जो कहते थे हम नुसारा है'' । इन आयतों की पक्ष में वर्तमान अनुवादित लोग तारीखी घटनाओं का उदाहरण पेश करते है लेकिन हैरत की बात यह है कि यही लोग कुरान-शरीफ को हर दौर के लिए परिपूर्ण भी कहते है । ये बात यकीनन सच है कि कुरान हर दौर के लिए परिपूर्ण है लेकिन कुरान-शरीफ मुसलमानी अनुवाद के अनुसार कुरान-शरीफ की ये आयत ये साबित नहीं करती की कुरान-शरीफ हर युग के लिए परिपूर्ण है । सुरा माइदा की आयतों के समय के अनुसार और सच्चाई को सामने रखते हुए जो अनुवाद मैंने (सिद्धार्थ चटर्जी) किया उसे आप सुरा माइदा में देख ले। कुरान की इस आयत की सच्चाई पर गौर करते हुए ये साबित हो चुका है कि मुसलमानों वर्ग और इन वर्गों के साथ जुड़े हुए कुरान-शरीफ का अलग-अलग अनुवाद सरासर अकीदत पर टिका हुआ है और अल्लाह के फजल-व-करम से मेरा (सिद्धार्थ चटर्जी) अनुवाद सच्चा, वक्त और कूदरत पर निर्भर है।

وَإِذَا جَاءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوا بِهِ وَلَوْ رَدُّوهُ إِلَى الرَّسُولِ وَإِلَىٰ أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِينَ يَسْتَنبِطُونَهُ مِنْهُمْ وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيلًا {83}

और जब उनके पास अमन या ख़ौफ़ की ख़बर आयी तो उसे फ़ौरन मशहूर कर देते हैं हालाँकि अगर वह उसकी ख़बर को रसूल और ईमानदारों में से जो साहबाने हुकूमत तक पहुँचाते तो बेशक जो लोग उनमें से उसकी तहक़ीक़ करने वाले है उसको समझ लेते कि और अगर तुमपर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी मेहरबानी न होती तो चन्द आदमियों के सिवा तुम सबके सब शैतान की पैरवी करने लगते (८३)

व्याख्याः- कुछ लोग ऐसे भी होते है जिन्हें कोई भी खबर मिलती है (अमन व खौफ) तो उसे जल्द ही फैला देते हे उसकी सच्चाई और नतीजा जाने बगैर। ऐसे लोग रसुल, या पुस्तक या विद्वानों द्वारा गलत बातों की तहकीकात कर लेते तो यकीनन उन्हें हकीकत का पता चल जाता और वो लोग उस बात की तह तक पहुँच जाते। मानव और उसके समाज पर अगर अल्लाह की रहमत न होती तो जरूर ज्यादा से ज्यादा लोग पाप में उलझकर शैतान के बंदे हो जाते।

فَقَاتِلْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَسَى اللَّهُ أَن يَكُفَّ بَأْسَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاللَّهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَأَشَدُّ تَنكِيلًا {84}

पस तुम अल्लाह की राह में जिहाद करो और तुम अपनी ज़ात के सिवा किसी और के ज़िम्मेदार नहीं हो और ईमानदारों को तरग़ीब दो और अनक़रीब अल्लाह काफ़िरों की हैबत रोक देगा और अल्लाह की हैबत सबसे ज़्यादा है और उसकी सज़ा बहुत सख़्त है (८४)

व्याख्याः- मानव को अल्लाह ने नेक और पवित्र राह पर रहते हुए शांति के लिए जद्दोजहद करने का संदेश दिये और ये जद्दोजहद मानव अपने अंदर के पाप विवेक से शुरू करते हुए समाज तक पहुँचाये। नेक और परहेजगार यानी मोमिन एक-दूसरे की रक्षा करें और पापियों के साथ लड़ाई में आखिर कार उन्हें पराजित होना पड़ता है और अल्लाह की शक्ति द्वारा काफिरों की पराजित निश्चित है।

पैगामः- इस आयत का वर्तमान अनुवाद जो विद्वानों ने किया उसके अनुसार इस आयत में मोहम्मद को संबोधित किया गया है तो क्या आज के दौर में आयत बातिल है? कहते है कि कुरान की हर आयत हर दौर के लिए परिपूर्ण है तो इस लिहाज से इस आयत का वर्तमान पसरमंजर की बुनियाद पर जो तर्जुमा मेरे (सिद्धार्थ चटर्जी) छोटे से जहन में अल्लाह की कूदरत से जिस तरह डाला गया है मैंने इसे उसी तरह बयान किया।

مَّن يَشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَكُن لَّهُ نَصِيبٌ مِّنْهَا وَمَن يَشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَكُن لَّهُ كِفْلٌ مِّنْهَا وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيتًا {85}

जो शख़्स अच्छे काम की सिफ़ारिश करे तो उसको भी उस काम के सवाब से कुछ हिस्सा मिलेगा और जो बुरे काम की सिफ़ारिश करे तो उसको भी उसी काम की सज़ा का कुछ हिस्सा मिलेगा और अल्लाह तो हर चीज़ पर निगेहबान है (८५)

व्याख्याः- जो मानव नेक और शांति वाली बातों का साथ दे तो यकीनन शांति की जिन्दगी का हिस्सा उसे प्राप्त होगा और जो लोग पाप के साथ दे तो यकीनन उन्हें अशांति की जिन्दगी मिलेगी और अल्लाह हर चीज पर कादिर है।

وَإِذَا حُيِّيتُم بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوا بِأَحْسَنَ مِنْهَا أَوْ رُدُّوهَا إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَسِيبًا {86}

और जब कोई शख़्स सलाम करे तो तुम भी उसके जवाब में उससे बेहतर तरीक़े से सलाम करो या वही लफ़्ज़ जवाब में कह दो बेशक अल्लाह हर चीज़ का हिसाब करने वाला है (८६)

व्याख्याः- नेक और परहेजगार मानव प्राकृति या समाज से जो अच्छाई हासिल होती है उसे वो बेहतर तौर पर या उससे ज्यादा लौटाये।

पैगामः- मौखिक तौर पर सलाम करना एक इखलाकी बात है और इस इखलाक में सच्चाई, मोहब्बत और मानवता होनी चाहिए तब जाकर सलाम परिपूर्ण होता है। जुबान के चंद अलफाज मानव के बीच तब इखलाक पैदा करते है जब उनके दिल में सच्चाई और प्रेम की भावना है।

اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ حَدِيثًا {87}

अल्लाह तो वही परवरदिगार है जिसके सिवा कोई क़ाबिले परस्तिश नहीं वह तुमको क़यामत के दिन जिसमें ज़रा भी शक नहीं ज़रूर इकट्ठा करेगा और अल्लाह से बढ़कर बात में सच्चा कौन होगा (८७)

व्याख्याः- खुदा वो सच्चा माबूद है जिसके सिवा किसी की भी इबादत हक के काबिल नहीं है और एक ऐसा वक्त आयेगा

जब सारे लोगों को अपने किये की जवाबदेही देनी होगी और वो लोग पूरे सच्चे होंगे जिनकी जवाबदेही सच्चाई की रोशनी से रोशन होगी।

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنَافِقِينَ فِئَتَيْنِ وَاللَّهُ أَرْكَسَهُم بِمَا كَسَبُوا أَتُرِيدُونَ أَن تَهْدُوا مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا {88}

फिर तुमको क्या हो गया है कि तुम मुनाफ़िक़ों के बारे में दो फ़रीक़ हो गए हो हालाँकि ख़ुद अल्लाह ने उनके करतूतों की बदौलत उनकी अक़्लों को उलट पुलट दिया है क्या तुम ये चाहते हो कि जिसको अल्लाह ने गुमराही में छोड़ दिया है तुम उसे राहे रास्त पर ले आओ हालाँकि अल्लाह ने जिसको गुमराही में छोड़ दिया है उसके लिए तुममें से कोई शख़्स रास्ता निकाल ही नहीं सकता (८८)

व्याख्याः- मानवी समाज में ऐसे मानव भी है जिनका चरित्र लोगों के सामने एक होता है और अंदर से वो गुनेहगर। ऐसे लोगों को देखकर सीधे-साधे मासुम और अल्लाह की राह पर चलने वाले धोखे में पड़ जाते है और आपस में कभी-कभी इख्तिलाफ कर लेते है। मुनाफिक के अमाल और उसका नतीजा मानवी समाज के लिए और उनके खुद के लिए अच्छा नहीं होता मगर अपने ख्यालात में इतने अंधे होते है कि उन्हें उनके अमाल का नतीजा दिखाई नहीं देता और ये अल्लाह की मर्जी से है। ईमान वाले जितना भी चाहे इन्हें सही राह पर नहीं ला सकते मगर ईमान वालों की कोशिश जारी रहनी चाहिए।

पैगामः- जब मुनाफिक अल्लाह की मर्जी से पाप की राह पर चलते है तो ईमान वालों की वश की बात नहीं की उन्हें समझाये। तब हिदायत वाली पुस्तके, ईमान वाले की कोशिश- इन सब बातों की क्या जरूरत है? मानव को अपने आप कुछ नहीं मिलता। जरूरत की सारी चीजे और ज्ञान सब किसी न किसी के मदद से मिलती है ये आयत इस बात को साबित करती है कि अल्लाह की मर्जी के बगैर कुछ भी मुमकिन नहीं। सच्चाई, ईमान और ज्ञान का रास्ता भी किसी न किसी के मदद से मानव को मिलता है और अल्लाह जिसे चाहे ईमान वाला बनाते है और जिसे चाहे मुनाफिक।

وَدُّوا لَوْ تَكْفُرُونَ كَمَا كَفَرُوا فَتَكُونُونَ سَوَاءً فَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ أَوْلِيَاءَ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَإِن تَوَلَّوْا فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ وَلَا تَتَّخِذُوا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا {89}

उन लोगों की ख़्वाहिश तो ये है कि जिस तरह वह काफ़िर हो गए तुम भी काफ़िर हो जाओ ताकि तुम उनके बराबर हो जाओ पस जब तक वह अल्लाह की राह में हिजरत न करें तो उनमें से किसी को दोस्त न बनाओ फिर अगर वह उससे भी मुँह मोड़ें तो उन्हें गिरफ़्तार करो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो और उनमें से किसी को न अपना दोस्त बनाओ न मददगार (८९)

व्याख्याः- गुनहगार मानव हमेशा चाहता है कि नेक मानव उनके गिरोह में शामिल हो जाये और इस हालात पर ईमान वाले नेक लोग अपनी एकता कायम रखें जब तक गुनहगार मानव गुनाह को छोड़कर नेकी को इख्तियार न करे (यानी घर-बार न छोड़े) और फिर वो गुनाहों से बाज न आये और समाज को नुकसान पहुँचाये तो ऐसे लोगों को पकड़-पकड़कर मौत की सजा (यानी कत्ल करना) दी जाये। और पापियों में किसी को अपना दोस्त न बनाये और न उनसे किसी किस्म की मदद कबूल करे।

पैगामः- कुरान-शरीफ की सुरा बकर की आयत नम्बर १३६ और सुरा-इमरान ८४ में "हर नबी पर ईमान लाने के लिये कहा गया है" और सुरा-अलहज की आयत नम्बर ६७ में कहा गया है कि "हर उम्मत के लिए अलग-अलग इबादत का तरीका नियुक्त किया गया है"। इन आयतों के मुताबिक "काफिर" किसी गिरोह या किसी खास नबी के मानने वाले लोगों को नहीं कहा गया है । "काफिर" वो होता है जो अल्लाह के नियमों को नहीं मानता और अल्लाह के नियम है (पवित्रता, प्रेम, मानवता, अहिंसा, शिक्षा, सच्चा ज्ञान, कर्त्तव्य, शांति)। जो लोग इन नियमों के विरुद्ध रहते है और उसे बिगाड़ते है वही "काफिर" है। और अल्लाह ने काफिरों को मौत की सजा ईमान वालों के द्वारा नियुक्त की है।

إِلَّا الَّذِينَ يَصِلُونَ إِلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ أَوْ جَاءُوكُمْ حَصِرَتْ صُدُورُهُمْ أَن يُقَاتِلُوكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوا قَوْمَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقَاتَلُوكُمْ فَإِنِ اعْتَزَلُوكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ فَمَا جَعَلَ اللَّهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيلًا {90}

मगर जो लोग किसी ऐसी क़ौम से जा मिलें कि तुममें और उनमें एहद व पैमान हो चुका है या तुमसे जंग करने या अपनी क़ौम के साथ लड़ने से दिलतंग होकर तुम्हारे पास आए हों और अगर अल्लाह चाहता तो उनको तुमपर ग़लबा देता तो वह तुमसे ज़रूर लड़ पड़ते पस अगर वह तुमसे किनारा कशी करे और तुमसे न लड़े और तुम्हारे पास सुलाह का पैग़ाम दे तो तुम्हारे लिए उन लोगों पर आज़ार पहुँचाने की अल्लाह ने कोई सबील नहीं निकाली (९०)

व्याख्याः- अगर गुनहगार गुनाह न करने का एहद करें और ईमान वालों के पास अपनी पवित्रता को साबित करते हुए आये और वो फसाद की राह छोड़ दे तो ईमान वाले उन्हें अपना ले और उनसे घृणा न करें।

पैगामः- इन आयतों का पसमंजर जो वर्तमान अनुवाद में है वो "जंग" है। जंग के दौरान दुश्मनों को और दूसरे धर्म के लोगों को काफिर करार देते हुए उन्हें कत्ल करने को कहा गया तो क्या कुरान-शरीफ की ये दोनों आयते (८९, ९०) हर दौर के लिए परिपूर्ण नहीं है। मौजूदा दुनियां में ऐसी बहुत सारी जगह है जहां सालों-साल जंग नहीं होती और मौजूदा दुनियां के कानून के अनुसार जंग के दौरान पकड़े गये लोगों को कत्ल करना गैर कानूनी है। और इस कानून पर दुनियां के सारे मुसलमान मुल्क एकमत है । जो कुरान-शरीफ फरमाता है कि हर किसी को अपने किये की सजा व जजा खुद भुगतनी होगी और ये भी कहा जाता है कि सारे काम अल्लाह की मर्जी से ही होते है तो इस सुरत में "काफिर" का मतलब गैर कौम के लोग नहीं । आज दुनियां की आबादी का एक चौथाई हिस्सा मुसलमान है । मुसलमानों की नजर में अगर दूसरे कौम के लोग "काफिर" है तो दूसरे कौम के लोगों के नजर में भी मुसलमान "काफिर" है। अगर दूसरे कोम के लोग मुसलमान को काफिर समझ कर कत्ल करने लगे तो क्या होगा? कुरान-शरीफ कभी भी मजहब के नाम पर एक-दूसरे को कत्ल करने की इजाजत नहीं देता और यही "सत्य" है।

سَتَجِدُونَ آخَرِينَ يُرِيدُونَ أَن يَأْمَنُوكُمْ وَيَأْمَنُوا قَوْمَهُمْ كُلَّ مَا رُدُّوا إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوا فِيهَا فَإِن لَّمْ يَعْتَزِلُوكُمْ وَيُلْقُوا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوا أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوهُمْ وَاقْتُلُوهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوهُمْ وَأُولَٰئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا {91}

अनक़रीब तुम कुछ ऐसे और लोगों को भी पाओगे जो चाहते हैं कि तुमसे भी अमन में रहें और अपनी क़ौम से भी अमन में रहें जब कभी झगड़े की तरफ़ बुलाए गए तो उसमें औंधे मुँह के बल गिर पड़े पस अगर वह तुमसे न किनारा कशी करें और न तुम्हें सुलह का पैग़ाम दें और न लड़ाई से अपने हाथ रोकें पस उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनको क़त्ल करो और यही वह लोग हैं जिनपर हमने तुम्हें सरीही ग़लबा अता फ़रमाया (९१)

व्याख्याः- अमन और शांति चाहने वाले लोग हर जगह अमन ही चाहते है इसके बावजूद पापी मानव हर मुमकिन कोशिश के बाद अगर गुनाह से रुक न जाये और फसाद से बाज न आये तो उन्हें कतल की सजा देना ईमान वालों के इख्तियार में है।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَن يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَأً وَمَن قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ إِلَّا أَن يَصَّدَّقُوا فَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَإِن كَانَ مِن قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلَىٰ أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةً فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِّنَ اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا {92}

और किसी ईमानदार को ये जायज़ नहीं कि किसी मोमिन को जान से मार डाले मगर धोखे से और जो शख़्स किसी मोमिन को धोखे से मार डाले तो एक ईमानदार गुलाम का आज़ाद करना और मक़तूल के क़राबतदारों को ख़ूंन बहा देना है मगर जब वह लोग माफ़ करें फिर अगर मक़तूल उन लोगों में से हो वह जो तुम्हारे दुशमन है और ख़ुद क़ातिल मोमिन है तो एक मुसलमान गुलाम का आज़ाद करना और अगर मक़तूल उन लोगों में का हो जिनसे तुम से एहद व पैमान हो चुका है तो वारिसे मक़तूल को ख़ून बहा देना और एक बन्दए मोमिन का आज़ाद करना है फ़िर जो शख़्स न पाये तो उसका कुफ़्फ़ारा अल्लाह की तरफ़ से लगातार दो महीने के रोज़े हैं और अल्लाह ख़ूब वाकिफ़कार हिकमत वाला है (९२)

व्याख्याः- नेक और परहेजगार मानव अपने जैसे लोगों का कत्ल नहीं करते और अगर गलती से किसी के हाथ किसी नेक और परहेजगार मानव का नुकसान या कत्ल हो जाये तो वो किसी भी गरीब मर्द या औरत की शिक्षा और तमाम किस्म की सुरक्षा की जिम्मेदारी ले, अगर उसे माफी न मिले तो । और अगर मृत व्यक्ति जो ईमान वालों या नेकों का दुश्मन हो मगर मृत नेक मानव हो तो वो नेक मानव, एक नेक मजबूर गरीब मानव की जिम्मेदारी उठाये।

पैगामः- इस आयत में हत्या की सजा के तौर पर कहा गया है कि कृतिदास या कृतिदासी को आजाद करे, आज की दुनियां में दास प्रथा खत्म हो चुकी और कानूनी तौर पर भी मानव की खरीदो फरोक्त (खरीदना-बेचना) बंद है। किसी को कत्ल करने के बाद कृतिदास को आजाद करने की बात बिलकुल जायज नहीं क्योंकि हर जान का मालिक अल्लाह है और किसी मानव को किसी दूसरे मानव को दास बनाने की इजाजत अल्लाह ने नहीं दी और इस सुरत में उस जमाने के लोगों के लिए हत्यारे के हत्या के बदले में कृतिदास को आजाद करने का कानून उचित था। कुरान-शरीफ की हर आयत हर दौर के लिए मुकम्मल होने की वजह से आज के जमाने में मृत व्यक्ति के मजबूर परिवार की तमाम सुरक्षा की जिम्मेदारी का मतलब "गुलाम आजाद करना" के बराबर है । हत्या के बाद पैसे देकर गुलाम को आजाद करने से अगर माफी हो जाती है तो पैसे वाले लोग कत्ल करते रहेंगे लेकिन गरीब की माफी कैसे होगी?

وَمَن يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا {93}

और जो शख़्स किसी मोमिन को जानबूझ के मार डाले उसकी सज़ा दोज़क है और वह उसमें हमेशा रहेगा उसपर अल्लाह ने ग़ज़ब ढाया है और उसपर लानत की है और उसके लिए बड़ा सख़्त अज़ाब तैयार कर रखा है (९३)

व्याख्याः- जो मानव जान-बूझकर अपना मकसद हासिल करने के लिए किसी नेक या परहेजगार मानव की हत्या करे उसके लिए अल्लाह और समाज की तरफ से सख्त से सख्त सजा है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَتَبَيَّنُوا وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَعِندَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ كَذَٰلِكَ كُنتُم مِّن قَبْلُ فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوا إِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا {94}

ऐ ईमानदारों जब तुम अल्लाह की राह में सफ़र करो तो अच्छी तरह जाँच कर लिया करो और जो शख़्स तुम्हे सलाम करे तो तुम बे सोचे समझे न कह दिया करो कि तू ईमानदार नही है कि तुम दुनियावी आसाइश की तमन्ना रखते हो मगर इसी बहाने क़त्ल करके लूट लो और ये नहीं समझते कि तो अल्लाह के यहाँ बहुत से ग़नीमतें है पहले तुम ख़ुद भी तो ऐसे ही थे फिर अल्लाह ने तुमपर एहसान किया ग़रज़ ख़ूब छानबीन कर लिया करो बेशक अल्लाह तुम्हारे हर काम से ख़बरदार है (९४)

व्याख्याः- लोग दुनियां में खजाना तलाश करते है (गनीमत का माल) लेकिन अल्लाह के पास बेशुमार खजने है। अल्लाह की राह पर चलने वाले लोग सच्चाई को अनुभव कर ले और पापियों से जहाद यानी लडाई से संकोच न करें। अल्लाह और उसकी प्राकृति के सामने हर मानव बेनकाब है और प्रकृति से जितना चाहे आनंद और शांति लूटे अपनी पवित्रता और शिक्षा के द्वारा। इस आयत के शुरूआत में अल्लाह की प्रकृति में ''संपत्ति'' रहने का उल्लेख है।

لَّا يَسْتَوِي الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِينَ دَرَجَةً وَكُلًّا وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ وَفَضَّلَ اللَّهُ الْمُجَاهِدِينَ عَلَى الْقَاعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا {95}

माज़ूर लोगों के सिवा जेहाद से मुँह छिपा के घर में बैठने वाले और अल्लाह की राह में अपने जान व माल से जिहाद करने वाले हरगिज़ बराबर नहीं हो सकते अपने जान व माल से जिहाद करने वालों को घर बैठे रहने वालें पर अल्लाह ने दरजे के एतबार से बड़ी फ़ज़ीलत दी है अल्लाह ने सब इमानदारों से भलाई का वायदा कर लिया है मगर ग़ाज़ियों को खाना नशीनों पर अज़ीम सवाब के एतबार से अल्लाह ने बड़ी फ़ज़ीलत दी है (९५)

व्याख्याः- जो मानव अपनी दौलत, अपनी सम्पत्ति और जीवन की परवाह न करते हुए अल्लाह की राह पर पाप को खत्म करने के लिए काम करते है ऐसे लोगों के लिए शांति का घर अल्लाह की तरफ से।

دَرَجَاتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا {96}

अपनी तरफ़ से बड़े बड़े दरजे और बख़्शिश और रहमत और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (९६)

व्याख्याः- ऐसे लोगों को शांति जो प्राकृति की तरफ से मिली है ये अल्लाह की है क्षमा और करूणा का नतीजा है और अल्लाह क्षमाकारी और करुणामयी है।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلَائِكَةُ ظَالِمِي أَنفُسِهِمْ قَالُوا فِيمَ كُنتُمْ قَالُوا كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ قَالُوا أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوا فِيهَا فَأُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَسَاءَتْ مَصِيرًا {97}

बेशक जिन लोगों की क़ब्ज़े रूह फ़रिश्ते ने उस वक़त की है कि अपनी जानों पर जुल्म कर रहे थे और फ़रिश्ते कब्ज़े रूह के बाद हैरत से कहते है तुम किस ग़फ़लत में थे तो वह कहते है कि हम तो रूए ज़मीन में बेकस थे तो फ़रिश्ते कहते है कि अल्लाह की ज़मीन में इतनी सी गुन्जाइश न थी कि तुम हिजरत करके चले जाते पस ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नुम है और वह बुरा ठिकाना है (९७)

व्याख्याः- पापियों की अन्तर्आत्मा प्राकृतिक तौर पर उनके द्वारा किए गए पापों पर सवाल करती है और इन सवालों के घेरे से उनका दिमाग अशांति के कबजे में आ जाता है और ये पापियों के लिए एक नरक जंतना है और उनका कर्मफल भी।

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا {98}

मगर जो मर्द और औरतें और बच्चे इस क़दर बेबस है कि न तो काई तदबीर कर सकते है और उनको रिहाई की कोई राह दिखाई देती है (९८)

व्याख्याः- मजबूर मानव जो पाप के विरुद्ध नहीं लड़ सकता अल्लाह उसकी मजबूरी समझता है।

पैगामः- इस आयत में मजबूर मानव का मतलब है जिसे अल्लाह की राह और ज्ञान का प्रकाश नहीं मिला हो।

فَأُولَـٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَن يَعْفُوَ عَنْهُمْ وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا {99}

तो उम्मीद है कि अल्लाह ऐसे लोगों से दरगुज़रे और अल्लाह तो बड़ा माफ़ करने वाला और बख्शने वाला है (९९)

व्याख्याः- और अल्लाह ऐसे लोगों को माफ फरमाते है।

وَمَن يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً وَمَن يَخْرُجْ مِن بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا {100}

और जो शख़्स अल्लाह की राह में हिजरत करेगा तो वह रूए ज़मीन में बा फ़रागत बहुत से कुशादा मक़ाम पाएगा और जो शख़्स अपने घर से जिलावतन होके अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ निकल ख़ड़ा हुआ फिर उस तक पहुँचने से पहले मौत आ जाए तो अल्लाह पर उसका सवाब लाज़िम हो गया और अल्लाह तो बड़ा बख़्श ने वाला मेहरबान है ही (१००)

व्याख्याः- और जो अल्लाह की राह पर लड़े यानी पाप के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करें, ऐसे लोगों को अपने ख्यालात बयान करने का हर मुमकिन मौका मिलता है और साथ में अल्लाह की मदद भी मिलती है।

पैगामः- इस आयत में अल्लाह की राह में देश छोड़ने की बात कही गयी है तो क्या अल्लाह को इसकी जरूरत है? क्या अल्लाह कमजोर है जो अपना प्रचार खुद नहीं कर सकता? अल्लाह को अपने प्रचार की क्या आवश्यकता है? जब कि वो सर्व शक्तिमान है? अल्लाह की कूदरत से जब लोग एक सेकण्ड में देश के एक कोने से दूसरे कोने तक अपने विचार पहुँचा सकते है तो देश छोड़ने की बात कहा तक उचित है? इस आयत में ''देश छोड़ने'' का मतलब अपनी जरूरत से ज्यादा उत्वकांक्षा और मोह-माया को त्यागकर नेकी और सच्चाई को कायम करने की कोशिश, जिसका मतलब ये है कि जरूरत से ज्यादा मोह-माया और उत्वकांक्षा का घर छोड़कर प्रेम, शांति, शिक्षा और अहिंसा के घर में जाना। बीच के रास्ते को ही जहाद का रास्ता कहा गया है और ये अपने अन्तात्मा से शुरू होकर मानवी समाज के हर कोने में मौजूद है। यहां पर घर एक काल्पिनक शब्द है जो मानव की मोह-माया उत्वकांक्षा और लालच को त्यागने की प्रतीक करता है।

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ إِنْ خِفْتُمْ أَن يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِينًا {101}

और तुमको इस अम्र का ख़ौफ़ हो कि कुफ़्फ़ार तुमसे फ़साद करेंगे तो उसमें तुम्हारे वास्ते कुछ मुज़ाएक़ा नहीं कि नमाज़ में कुछ कम कर दिया करो बेशक कुफ़्फ़ार तो तुम्हारे खुल्लम खुल्ला दुश्मन हैं (१०१)

व्याख्याः- और जब नेक मानव सफर में जाये या दूसरी किसी जगह में जाकर रह जाये उसमें कोई गुनाह नहीं कि वो अपने कर्त्तव्य में कमी करें। नयी जगह में अंजान होने की वजह से गुनहगार यानी पापियों यानी काफिरों से हाशियार रहे और काफिर यानी पापी यानी गुनहगार मानव (चोर, बेईमान और डाकू) नेक और अमन चाहने वाले लोगों का खुला दुश्मन है।

पैगामः- इस आयत में इतिहासकि पृष्ठभूमि अगर हटा दी जाये तो सवाल ये आ सकता है कि नमाज के साथ काफिर का क्या तालूक? कुरान-शरीफ की हर आयत हर दौर के लिए परिपूर्ण है तो ऐसी सूरत में ''नमाज'' का मतलब मानव का ज्ञान, पवित्रता, अहिंसा, शिक्षा और शांति का पैगाम देना जो समाज के लिए मानवी कर्त्तव्य है।

وَإِذَا كُنتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِّنْهُم مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوا أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِن وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُم مَّيْلَةً وَاحِدَةً وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِن كَانَ بِكُمْ أَذًى مِّن مَّطَرٍ أَوْ كُنتُم مَّرْضَىٰ أَن تَضَعُوا أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا {102}

और तुम मुसलमानों में मौजूद हो और कि तुम उनको नमाज़ पढ़ाने लगो तो एक को लड़ाई के वास्ते छोड़ दो उनमें से एक जमाअत तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े और अपने हरबे तैयार अपने साथ लिए रहे फिर जब सजदे कर ले तो तुम्हारे पीछे पुश्त पनाह बनें और दूसरी जमाअत जो जब तक नमाज़ नहीं पढ़ने पायी है और तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े और अपनी हिफ़ाज़त की चीज़े और अपने हथियार लिए रहे कुफ़्फ़ार तो ये चाहते ही है कि काश अपने हथियारों और अपने साज़ व सामान से ज़रा भी ग़फ़लत करो तो एक बारगी सबके सब तुम पर टूट पड़ें हाँ अलबत्ता उसमें कुछ मुज़ाएक़ा नहीं कि तुमको बारिश के सबब से कुछ तकलीफ़ पहुँचे या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार के

रख दो और अपनी हिफ़ाज़त करते रहो और अल्लाह ने तो काफ़िरों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है (१०२)

व्याख्याः- और ईमान वाले सच्चाई और नेकी की लड़ाई में जो उनके साथी है (सिपाही) उन्हें अल्लाह की इबादत (नमाज) का रास्ता बताये यानी शांति, अंहिसा, प्रेम, शिक्षा और पवित्रता और जो इन लोगों के साथ चले वो, और जो इनके ख्यालात का समर्थन करें वो भी अल्लाह के नियमों की सुरक्षा के लिए बारी-बारी कदम उठाये। अल्लाह के नियमों के आगे लोग सजदा करे यानी पुरी तरह से अमन, शिक्षा, प्रेम, अहिंसा, शांति और भाईचारा को अपनी जिन्दगी में लागू कर चुके हो (नेक और पवित्र मानव) तब दूसरी जमात जैसे साधु, सनत, दुर्वेश, पीर, फकीर और वलियो की और उनके ख्यालात की सुरक्षा करने की हर मुमकिन कोशिश करें, ऐसे लोग अहिंसा, प्रेम और शांति को ही अपने जीने का तरीका बना चुके है। पापी, गुनहगार यानी काफिर ये उम्मीद करते है कि थोड़ा सा समय मिलने से ही पवित्र विचारों की हत्या कर देंगे। आसमान से उतरे हुए बारिश की तरह जो ज्ञान मानव को मिलता है उसे भी कुचल देंगे। अल्लाह और उनकी कूदरत तमाम मानवी अमाल की निगेबान है। गुनहगारों के लिए सबसे गंदा अजाब है अशांति का अजाब।

पैगामः- समाज में दो किस्म के मानव होते है

१. नेक, परहेजगार और अमनोशांति चाहने वाले
२. लालची और पापी मानव ।

नेक, अमनोशांति चाहने वाले लोगों में से कुछ लोगों पर समाज को सच्चाई और गुनाह के खिलाफ लड़ने की हिदायत और ज्ञान बांटने की जिम्मेदारी है और वो लोग है शिक्षिक, धार्मिक गुरू, सरकारी कर्मचारी और नेक लोगों में से कुछ लोगों को पापियों के विरुद्ध जिसमानी लड़ाई की जिम्मेदारी सौंपी गई है । उदाहरण के तौर पर पुलिस, फौजी, नेक वर्ग के सारे लोगों को पहले खुद ज्ञान हासिल करके नेक बनना पड़ता है इसलिए नेक मानव सबसे पहले खुद अल्लाह के नियम जान ले और उसे अपने ऊपर लागू करे और फिर समाज में इसको लागू करने की कोशिश करें। रक्षक कभी भी भक्षक न बने और यही समाज का असुल है। कुरान की हर आयत हर समय के लिए परिपूर्ण है वर्तमान अनुवाद जंग की तरफ इशारा करती है जब जंग नहीं होगी तब इस आयत का कोई मतलब नहीं होगा। क्या ये संभव है? ये जंग है नेकी और बदी या सच और झुठ की।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلَاةَ فَاذْكُرُوا اللَّهَ قِيَامًا وَقُعُودًا وَعَلَىٰ جُنُوبِكُمْ فَإِذَا اطْمَأْنَنتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ إِنَّ الصَّلَاةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتَابًا مَّوْقُوتًا {103}

फिर जब तुम नमाज़ अदा कर चुको तो उठते बैठते लेटते अल्लाह को याद करो फिर जब तुम मुतमईन हो जाओ तो के मुताबिक़ नमाज़ पढ़ा करो क्योंकि नमाज़ तो इमानदारों पर वक़्त मुय्यन करके फ़र्ज़ की गयी है (१०३)

व्याख्याः- आदेश पहुँचाने की हर मुमकिन कोशिश करने के बावजूद और इस कोशिश को कामयाब करने के लिए खड़े-बैठे और लेटे, हर मुमकिन कोशिश करें। और जब पापियों के आक्रमण का डर खत्म हो जाये तो फिर लोगों को नेकी की तरफ बुलाये और बेशक नेकी के लिए जहाद करना मोमिनों के लिए फर्ज है।

पैगामः- मानव का पहला कर्त्तव्य है खुद को पवित्रता, शांति, शिक्षा, प्रेम और अहिंसा के पथ पर कायम रखना। सोते-जगते करवट बदलते यानी जीवन के हर पल में शांति, पवित्रता और शिक्षा के नियमों को बांध ले यही मानव की असल नमाज है और इसपर जो कायम रहते है वही मुसलमान है।

وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ إِن تَكُونُوا تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ وَتَرْجُونَ مِنَ اللَّهِ مَا لَا يَرْجُونَ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا {104}

और दुशमनों के पीछा करने में सुस्ती न करो अगर लड़ाई में तुमको तकलीफ़ पहुँचती है तो जैसी तुमको तकलीफ़ पहुँचती है उनको भी वैसी ही अज़ीयत होती है और ये भी तुम अल्लाह से वह वह उम्मीदें रखते हो जो नसीब नहीं और अल्लाह तो सबसे वाक़िफ़ हिकमत वाला है (१०४)

व्याख्याः- नेक लोग पापियों के विरुद्ध लड़ने में सुस्ती न करे, उनकी मेहनत पापियों को बे-आराम कर देती है । सच्चाई के लिए लड़ते हुए नेक लोगों को खुदा की मदद जरूर मिलती है, जो काफिरों को नहीं मिलती।

إِنَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرَاكَ اللَّهُ وَلَا تَكُن لِّلْخَائِنِينَ خَصِيمًا {105}

हमने तुमपर बरहक़ किताब इसलिए नाज़िल की है कि अल्लाह ने तुम्हारी हिदायत की है उसी तरह लोगों के दरमियान फ़ैसला करो और ख़्यानत करने वालों के तरफ़दार न बनो (१०५)

व्याख्याः- अल्लाह की प्राकृति से आज लोगों के पास अल्लाह के कानून और ज्ञान की परछाईयां जो समाज का कानून बनकर लोगों के पास मौजूद है और इस कानून के द्वारा मानव ही मानव का निर्णय करते है और नेक मानव कभी भी दगाबाजों का पक्षपात नहीं करते।

وَاسْتَغْفِرِ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا {106}

और अल्लाह से मग़फ़िरत की दुआ माँगो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१०६)

व्याख्याः- हर मानव प्रार्थना करें अल्लाह से अपनी सुरक्षा की और निश्चय अल्लाह बहुत ही क्षमाकारी और करुणामयी है।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنفُسَهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ مَن كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا {107}

और तुम की तरफ़ होकर न लड़ो जो अपने ही से दग़ाबाज़ी करते है बेशक अल्लाह ऐसे शख़्स को दोस्त नहीं रखता जो दग़ाबाज़ गुनाहगार हो (१०७)

व्याख्याः- अल्लाह विश्वासघात और नमक हरामों को पसंद नहीं करता और नेक लोग ऐसे लोगों के उत्तरदायी नहीं है। जो मानव गुनाह को अपनाते है वो अपना ही नुकसान करते है।

يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ مِنَ اللَّهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ مَا لَا يَرْضَىٰ مِنَ الْقَوْلِ وَكَانَ اللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا {108}

लोगों से तो अपनी शरारत छुपाते हैं और हालाँकि वह तो उस वक़्त भी उनके साथ साथ है जब वह लोग रातों को उन बातों के मशवरे करते हैं जिनसे अल्लाह राज़ी नहीं और अल्लाह तो उनकी सब करतूतों को घेरे हुए है (१०८)

व्याख्याः- कुछ लोग पाप करते है और उसे छिपाने की चेष्टा करते है, पाप मानव के शर्म की चीज है यानी छुप-छुपकर पाप करते है लेकिन अल्लाह के सामने कोई भी बात नहीं छुपती। और अल्लाह हमेशा लोगों के शै-रग के करीब है और उन्होंने तमाम गुनाहों पर घेराबंदी की हुई है।

هَاأَنتُمْ هَٰؤُلَاءِ جَادَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فَمَن يُجَادِلُ اللَّهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَم مَّن يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا {109}

ख़बरदार हो जाओ भला दुनिया की ज़िन्दगी में तो तुम उनकी तरफ़ होकर लड़ने खड़े हो गए फिर क़यामत के दिन उनका तरफ़दार बनकर अल्लाह से कौन लड़ेगा या कौन उनका वकील होगा (१०९)

व्याख्याः- मोह माया में उलझे हुए लोगों के पाप दुनियां में तो जरूर छुप सकते है और कुछ लोग ऐसी जिन्दगी का समर्थना भी करते है, लेकिन उन लोगों के कष्ट में उनका कोई साथ देना वाला नहीं होता।

पैगामः- अल्लाह सब देखता-सुनता है तो उन्हें न कोई सिफारिश और न किसी वकील की आवश्यकता है इस लिहाज से मानव को उसके गुनाह के नतीजे पर जो भी आजाब मिलता है उसे भुगतने के लिए उसको कोई मददगार नहीं मिलता।

وَمَن يَعْمَلْ سُوءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللَّهَ يَجِدِ اللَّهَ غَفُورًا رَّحِيمًا {110}

और जो शख़्स कोई बुरा काम करे या अपने नफ़्स पर जुल्म करे उसके बाद अल्लाह से अपनी मग़फ़िरत की दुआ माँगे तो अल्लाह को बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान पाएगा (११०)

व्याख्याः- जो मानव समय रहते हुए अपने पाप कर्मों को अनुभव करके अल्लाह से क्षमा मांगते हुए पाप को छोड़ देते है तो वो यकीनन क्षमा पाने के पात्र है और अल्लाह क्षमाकारी है।

पैगामः- जब किसी मानव का विवेक पाप से परिपूर्ण हो जाए तब उसे क्षमा नहीं मिलती यानी पाप कर्मों का अनुभव उसे नहीं होता यानी पत्थर दिल मानव। क्षमा उसे मिलती है जिसे अपने पाप कर्मों का अनुभव होता है और वो उसे दुबारा नहीं करता।

وَمَن يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلَىٰ نَفْسِهِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا {111}

और जो शख़्स कोई गुनाह करता है तो उससे कुछ अपना ही नुक़सान करता है और अल्लाह तो वाक़िफ़ बड़ी तदबीर वाला है (१११)

व्याख्याः- और जो मानव पाप कर्मों में लुप्त रहते है वो क्षमा के योग्य नहीं है।

وَمَن يَكْسِبْ خَطِيئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهِ بَرِيئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا {112}

और जो शख़्स कोई ख़ता या गुनाह करे फिर उसे किसी बेक़सूर के सर थोपे तो उसने एक बड़े और सरीही गुनाह को अपने ऊपर लाद लिया (११२)

व्याख्याः- अपना पाप छोटा हो या बड़ा उसे दूसरे बेगुनाह पर थोपना महा पाप है और उसकी कोई माफी नहीं ।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهُ لَهَمَّتْ طَّائِفَةٌ مِّنْهُمْ أَن يُضِلُّوكَ وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّونَكَ مِن شَيْءٍ وَأَنزَلَ اللَّهُ عَلَيْكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُن تَعْلَمُ وَكَانَ فَضْلُ اللَّهِ عَلَيْكَ عَظِيمًا {113}

और अगर तुमपर अल्लाह का फ़ज़ल और उसकी मेहरबानी न होती तो उन में से एक सम्प्रदाय तुमको गुमराह करने का ज़रूर क़सद करता हालाँकि वह लोग बस अपने आप को गुमराह कर रहे है और यह लोग तुम्हें कुछ भी ज़रर नही पहुँचा सकते और अल्लाह ही ने तो तुमपर अपनी किताब और हिकमत नाज़िल की और जो बातें तुम नही जानते थे तुम्हें सिखा दी और तुम पर तो अल्लाह का बड़ा फ़ज़ल है (११३)

व्याख्याः- मानव पर अगर अल्लाह की दया नहीं होती तो समाज में पाप का पलड़ा पुण्य से भारी होता। और इसलिए प्राकृतिक तौर पर और अल्लाह की दया से मानव ज्ञान और शिक्षा द्वारा पाप-पुण्य का ज्ञान तथा अल्लाह की दया और अनुग्रह प्राप्त करते है।

لَّا خَيْرَ فِي كَثِيرٍ مِّن نَّجْوَاهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا {114}

उनके राज़ की बातों में अक्सर में भलाई नहीं मगर जो शख़्स किसी को सदक़ा देने या अच्छे काम करे या लोगों के दरमियान मेल मिलाप कराने का हुक्म दे और जो शख़्स अल्लाह की ख़ुशनूदी की ख़्वाहिश में ऐसे काम करेगा तो हम अनक़रीब ही उसे बड़ा अच्छा बदला अता फरमाएंगे (११४)

व्याख्याः- नेक बात करने वाला या लोगों में मेल-मिलाप करवाने वाला अल्लाह के नियमों को मानकर ये काम करे तो यकीनन अल्लाह और उसकी प्राकृति की तरफ से पुरुषकार है।

وَمَن يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا {115}

और जो शख़्स राहे रास्त के ज़ाहिर होने के बाद रसूल से सरकशी करे और मोमिनीन के तरीक़े के सिवा किसी और राह पर चले तो जिधर वह फिर गया है हम भी उधर ही फेर देंगे और उसे जहन्नुम में झोंक देंगे और वह तो बहुत ही बुरा ठिकाना (११५)

व्याख्याः- रसुलों की सच्चाई महसूस करने के बाद जो मानव रसुलों के आदर्शों का उल्लंघन करें और लोगों को पुण्य का रास्ता त्याग करके पाप का रास्ता इख्तियार करने का मशवरा देते है तथा खुद भी पाप का रास्ता इख्तियार करते है उनके लिए अशांति के नर्क का आजाब।

पैगामः- रसुलों के आदर्श है प्रेम, मानवता, शांति, अहिंसा, ज्ञान और सत्य।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَن يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَٰلِكَ لِمَن يَشَاءُ وَمَن يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا {116}

अल्लाह बेशक उसको तो नहीं बख़्शता कि उसका कोई और शरीक बनाया जाए हाँ उसके सिवा जो गुनाह हो जिसको चाहे बख़्श दे और जिसने किसी को अल्लाह का शरीक बनाया तो वह बस भटक के बहुत दूर जा पड़ा (११६)

व्याख्याः- अल्लाह या उसके नियमों के साथ शैतान या उसके नियमों को सम्मलित करना महा पाप और उसकी क्षमा नहीं और जो मानव ये काम करते है वो जान ले कि वो जरूर पथभ्रष्ट हो जायेगा।

पैगामः- अल्लाह का शरीक ठहराना यानी अल्लाह के नियमों के साथ उन नियमों को सम्मिलित करना जिससे अल्लाह ने शख्ती से मना फरमाया यानी पाप। जुबानी और रश्मी तौर पर अल्लाह के आगे सजदा करने के बाद कोई मानव उनके नियमों के विरूद्ध काम करते है तो यकीनन वो शिर्क करते है। अल्लाह ताला का वजूद मानवों के बीच उनके नियमों के द्वारा ही है और इन नियमों के आगे सारे रश्मों रिवाज या कोई भी बात का तरीका काबिले कबुल नहीं। सबसे पहले अल्लाह के नियम उसके बाद बाकी सारे रश्मों रिवाज या इबादत के तरीके।

إِن يَدْعُونَ مِن دُونِهِ إِلَّا إِنَاثًا وَإِن يَدْعُونَ إِلَّا شَيْطَانًا مَّرِيدًا {117}

अल्लाह को छोड़कर बस औरतों ही की परसतिश करते है ख़्याल में औरतें है ये लोग सरकश शैतान की परसतिश करते है (११७)

व्याख्याः- पुरुष के लिए सिर्फ नारी के मोह में उलझ कर रह जाना शैतानी फितरत है, ऐसे मर्द बिलावास्ता शैतान को ही पूजते है और ये अल्लाह के नियमों के विरूद्ध है।

पैगामः- अधिक मात्रा में हवस का शिकार मानव का विवेक पवित्र राह पर चल नहीं सकता। संभोग का नशा चाहे वो मर्द के अंदर हो या औरत के अंदर वो इंसान के हर कर्त्तव्य को भुला देता है।

لَّعَنَهُ اللَّهُ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيبًا مَّفْرُوضًا {118}

जिसपर अल्लाह ने लानत की है और जिसने कहा था कि मैं तेरे बन्दों में से कुछ ख़ास लोगों को ज़रूर ले लूंगा (११८)

व्याख्याः- अल्लाह के अभिशाप से ऐसे लोगों की अन्तर्आत्मा अशांत होती है और वो सिर्फ एक ही चीज को पाने की ख्वाहिश में उलझ कर रह जाते है और ऐसे लोग अधिक हवस को प्राकृतिक अधिकार समझते है।

وَلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ آذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَآمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللَّهِ وَمَن يَتَّخِذِ الشَّيْطَانَ وَلِيًّا مِّن دُونِ اللَّهِ فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِينًا {119}

और फिर उन्हें ज़रूर गुमराह करूँगा और उन्हें बड़ी बड़ी उम्मीदें भी ज़रूर दिलाऊँगा और यक़ीनन उन्हें सिखा दूंगा फिर वो जानवरों के कान ज़रूर चीर फाड़ करेंगे और अलबत्ता उनसे कह दूंगा बस फिर वो अल्लाह की बनाई हुयी सूरत को ज़रूर बदल डालेंगे और जिसने अल्लाह को छोड़कर शैतान को अपना सरपरस्त बनाया तो उसने खुल्लम खुल्ला सख़्त घाटा उठाया (११९)

व्याख्याः- ऐसा मानव का पाप-विवेक हमेशा इसे पथभ्रष्ट करता है और उसे झूठी बाते सीखाते और झूठी उम्मीदें दिलाते है तथा वे अल्लाह के प्राकृतिक नियमों को बिगाड़ते रहेंगे, वो जानवरों की तरह बुद्धिहीन बनकर दूसरों को अपनी बातों से उलझाते रहेंगे और अल्लाह के आदर्शों को बिगाड़ने की कोशिश करेंगे।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيهِمْ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا {120}

शैतान उनसे अच्छे अच्छे वायदे भी करता है उम्मीदें भी दिलाता है और शैतान उनसे जो कुछ वायदे भी करता है वह बस निरा धोखा है (१२०)

व्याख्याः- ऐसे मानव अल्लाह को छोड़कर शैतान को दोस्त बनाते है और अपना नुकसान करते है।

पैगामः- अपवित्र विवेक मानव को झूठी तसल्ली और धोखा ही सीखा सकता है।

أُولَٰئِكَ مَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَلَا يَجِدُونَ عَنْهَا مَحِيصًا {121}

यही तो वह लोग है जिनका ठिकाना बस जहन्नुम है और वहाँ से भागने की जगह भी न पाएंगे (१२१)

व्याख्याः- ऐसे मानव हमेशा नर्क की आग में जलते रहेंगे और उससे बच नहीं सकते।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللَّهِ قِيلًا {122}

और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन्हें हम अनक़रीब ही उन बाग़ों में जा पहुँचाएगें जिनके नीचे नहरें जारी होंगी और ये लोग उसमें हमेशा आबादुल आबाद तक रहेंगे अल्लाह का पक्का वायदा है और अल्लाह से ज़्यादा बात में सच्चा कौन होगा (१२२)

व्याख्याः- जो मानव पाप कर्मों को छोड़कर पवित्रता को अपनाते है यकीनन उनकी जीवन में शीतल जल की नहर की तरह शांति प्रवाहित होगी और वो जीवन भर उसका आनंद उठायेंगे। और ये अल्लाह का वादा है'

لَّيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَا أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتَابِ مَن يَعْمَلْ سُوءًا يُجْزَ بِهِ وَلَا يَجِدْ لَهُ مِن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا {123}

न तुम लोगों की आरज़ू से न एहले किताब की तमन्ना से कुछ हासिल हो सकता है बल्कि जो बुरा काम करेगा उसे उसका बदला दिया जाएगा और फिर अल्लाह के सिवा किसी को न तो अपना सरपरस्त पाएगा और न मददगार (१२३)

व्याख्याः- होनी को कोई नहीं टाल सकता और ये किसी की आरज़ू या पुस्तक वाले की हिमायत नहीं खोजती। जो बुरा काम करेगा उसे जरूर उसकी सजा मिलेगी, कोई भी उसकी मदद नहीं करेगा।

पैगामः- इसी सुरा निसा की आयत नं० ११० में अल्लाह ताला फरमाते है "गलत काम करने पर अगर अल्लाह से माफी मांगी जाये तो वो माफ कर देते है" और इस आयत में अल्लाह ताला फरमाता है "जो बुरा काम करेगा उसकी सजा पायेगा"। इन दो आयतों के अनुसार हमें ये समझना चाहिए कि गुनाह और गलती में क्या अंतर है। अंजाने में की गई भुल को गलती कहा जा सकता है और गलती समझने के बाद अगर इसे दुबारा दोहराया जाए तो इसे गुनाह कहा जाता है। गलती की माफी का जिक्र आयत नं० ११० में है मगर गुनाह की कोई माफी नहीं जो इस आयत के द्वारा कहा जा रहा है।

وَمَن يَعْمَلْ مِنَ الصَّالِحَاتِ مِن ذَكَرٍ أَوْ أُنثَى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَـئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ وَلاَ يُظْلَمُونَ نَقِيرًا {124}

और जो शख़्स अच्छे अच्छे काम करेगा मर्द हो या औरत और ईमानदार हो तो ऐसे लोग बेहिश्त में जा पहुँचेंगे और उनपर तिल भी जुल्म न किया जाएगा (१२४)

व्याख्याः- नर या नारी कोई भी हो पवित्र काम करने वाले का स्थान स्वर्ग है यानी शांति का जीवन और ऐसे लोगों के साथ किसी किस्म की भी न इंसाफी नहीं होगी।

وَمَنْ أَحْسَنُ دِينًا مِّمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهُ لله وَهُوَ مُحْسِنٌ وَاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَاتَّخَذَ اللّهُ إِبْرَاهِيمَ خَلِيلاً {125}

और उस शख़्स से दीन में बेहतर कौन होगा जिसने अल्लाह के सामने अपना सरे तसलीम झुका दिया और सभ्यो कार भी है और इबराहीम के तरीके पर चलता है जो बातिल से कतरा कर चलते थे और अल्लाह ने इब्राहिम को तो अपना ख़लिस दोस्त बना लिया (१२५)

व्याख्याः- ऐसा धर्म सबसे अधिक अच्छा है जिन्होंने अल्लाह के नियमों को अपने जीने का तरीका बनाया और अल्लाह के आदर्शों के आगे सिर झुकाते है यानी पूरी तरह से आत्म समर्पण। और इन आदर्शों के प्रति निष्ठावान रहते है । प्रेम, शांति, अहिंसा, मानवता (इब्राहीम का धर्म) को अनुसरण करते है जिसमें कठोरता नहीं है।

وَلِلّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ وَكَانَ اللّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطًا {126}

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और अल्लाह ही सब चीज़ को क़ुदरत से घेरे हुए है (१२६)

व्याख्याः- तमाम प्राकृति अल्लाह की है और प्राकृतिक तौर पर हर वस्तु ऐश्वर्य शक्ति (परमाणिवक शक्ति) द्वारा घिरी हुई है।

وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاء قُلِ اللّهُ يُفْتِيكُمْ فِيهِنَّ وَمَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ فِي يَتَامَى النِّسَاء اللاَّتِي لاَ تُؤْتُونَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُونَ أَن تَنكِحُوهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْوِلْدَانِ وَأَن تَقُومُوا لِلْيَتَامَى بِالْقِسْطِ وَمَا تَفْعَلُوا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللّهَ كَانَ بِهِ عَلِيمًا {127}

ये लोग तुमसे से औरत के बारे में फ़तवा तलब करते है तुम उनसे कह दो कि अल्लाह तुम्हें उनसे की इजाज़त देता है और जो हुक्म मनाही का क़ुरान में तुम्हें सुनाया जा चुका है वह हक़ीक़तन उन यतीम लड़कियों के वास्ते था जिन्हें तुम उनका मुअय्यन किया हुआ हक़ नही देते और चाहते हो उनसे निकाह कर लो और उन कमज़ोर नातवाँ बच्चों के बारे में हुक्म फ़रमाता है और ये है कि तुम यतीमों के हुक़ूक़ के बारे में इन्साफ पर क़ायम रहो और जो कुछ तुम सभ्यी करोगे तो अल्लाह ज़रूर वाक़िफ़कार है (१२७)

व्याख्याः- नारी नर से शारीरिक तौर पर कमजोर होती है और इसी कारण नारी हमेशा से वंचित और जुल्म का शिकार रही है। इसलिए अल्लाह ने नारियों की सुरक्षा के लिए कुछ विशेष कानून को समाज में मंजूरी दी है। अगर अनाथ नारी हो तो पुरुष तांत्रिक समाज उससे शादी करने के लिए घृणा करते है और उसे अधिकार प्रदान करने में हिच-किचाते है। अनाथ शिशु भी समाज की हर सुविधा से वर्जित रहता है और ईश्वर के आदेशानुसार मानवता निष्ठा के साथ अनाथ शिशु या नारी को अधिकार प्रदान किया जाये।

पैगामः- पुरूष तांत्रिक समाज में बदसुरत नारी की चाहत कम होती है मानव की पहचान उसके अमाल और पवित्रता से होनी चाहिए उसके रंगरूप को घृणा का पात्र बनाना पाप है।

وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِن بَعْلِهَا نُشُوزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلاَ جُنَاحَ عَلَيْهِمَا أَن يُصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا وَالصُّلْحُ خَيْرٌ وَأُحْضِرَتِ الأَنفُسُ الشُّحَّ وَإِن تُحْسِنُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا {128}

और अगर कोई औरत अपने शौहर की ज़्यादती व बेतवज्जोही से ख़ौफ़ रखती हो तो मियाँ बीवी के बाहम किसी तरह मिलाप कर लेने में दोनों कुछ गुनाह नही है और सुलह तो बेहतर है और बुख़्ल से तो क़रीब क़रीब हर तबियत के हम पहलू है और अगर तुम सभ्यी करो और परहेजदारी करो तो अल्लाह तुम्हारे हर काम से ख़बरदार है (१२८)

व्याख्याः- कोई भी नारी अपने पति से दुर्व्यवहार या अपेक्षा पाये तो आपस में बैठकर या मशवरा करके उस समस्या को दूर करे ये बेहतर है। विवाह विच्छेद (तालाक) से संयमी जीवन के द्वारा अपने जीवन को सुख-शांति प्रदान करे यही अल्लाह की तरफ से मानव के लिए पुरुषकार है।

पैगामः- इस आयत में एक महत्वपूर्ण बात है और ये है ''लालच मानव के स्वाभाविक चरित्र में से एक चरित्र है। जब लालच जरूरत से ज्यादा मानव के मस्तिक्ष को प्रभावित करने लगती है तब मानव अशांत हो जाता है और पाप कर्मों में उलझ जाता है। मानव का ये स्वाभाविक चरित्र पति-पत्नी के रिश्तों को प्रभावित कर सकता है।

وَلَن تَسْتَطِيعُوا أَن تَعْدِلُوا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيلُوا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوهَا كَالْمُعَلَّقَةِ وَإِن تُصْلِحُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا {129}

और अगरचे तुम बहुतेरा चाहो तुममें इतनी सकत तो हरगिज़ नहीं है कि अपनी कई बीवियों में इन्साफ़ कर सको ऐसा भी तो न करो कि हमातन माएल हो जाओ कि लटकी हुयी छोड़ दो और अगर बाहम मेल कर लो और बचे रहो तो अल्लाह यक़ीनन बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१२९)

व्याख्याः- अधिक पत्नियां रखना और उनके साथ समानता रखना पुरुष के लिए असंभव है। पुरुष जितना चाहे किसी न किसी की तरफ जरूर झूक जायेगा। इसलिए पुरुष बहुविवाह (ज्यादा औरतें) त्याग दें और संयमी जीवन व्यतीत करें।

وَإِن يَتَفَرَّقَا يُغْنِ اللَّهُ كُلًّا مِّن سَعَتِهِ وَكَانَ اللَّهُ وَاسِعًا حَكِيمًا {130}

और अगर दोनों मियाँ बीवी एक दूसरे से बाज़रिए तलाक़ जुदा हो जाएँ तो अल्लाह अपने वसी ख़ज़ाने से दोनों को बेनियाज़ कर देगा और अल्लाह तो बड़ी गुन्जाइश और तदबीर वाला है (१३०)

व्याख्याः- पति-पत्नी के आपसी विच्छेद के बाद एक दूसरे पर किसी की कोई जिम्मेदारी नहीं है।

पैगामः- समाज में नारी या पुरुष का अधिकार एकसमान है फिर भी पुरुष तांत्रिक समाज में नारी के अधिकार को हमेशा अस्वीकार किया जाता है। इसलिए नारियों के सुरक्षा के लिए कुछ समाजिक कानून लागू है जो सही है, तलाकशुदा औरत का विवाह मुश्किल होने के वजह से ये सारे कानून है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللَّهَ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ غَنِيًّا حَمِيدًا {131}

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और जिन लोगों को तुमसे पहले किताबे अल्लाह अता की गयी है उनको और तुमको भी उसकी हमने वसीयत की थी कि से डरते रहो और अगर तुमने कुफ़्र इख़्तेयार किया तो जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह ही का है और अल्लाह तो सबसे बेपरवा और मौसूफ़ हर हम्द वाला है (१३१)

व्याख्याः- परमाणिवक शक्ति द्वारा महाकाश और पृथ्वी की हर क्रिया-प्रक्रिया संघठित होती है और यही अल्लाह की शक्ति है।

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَى بِاللَّهِ وَكِيلًا {132}

जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है ख़ास अल्लाह ही का है और अल्लाह तो कारसाज़ी के लिये काफ़ी है (१३२)

व्याख्याः- आसामन और जमीन में जो कुछ भी है वो अल्लाह का है और इसे वैज्ञानिक प्रमाण कर चुके है और अल्लाह हर काम कर सकता है।

إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِآخَرِينَ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ قَدِيرًا {133}

ऐ लोगों अगर अल्लाह चाहे तो तुमको बिल्कुल उठा ले और दूसरों को ला और अल्लाह तो इसपर क़ादिर व तवाना है (१३३)

व्याख्याः- कूदरत के नियमों के अनुसार यानी अल्लाह की अनुमति के अनुसार दुनियां में "जान" की पैदाइश होती है और हर जान की मृत्यु भी निश्चित है।

مَّن كَانَ يُرِيدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِندَ اللَّهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا بَصِيرًا {134}

और जो शख़्स बदला दुनिया ही में चाहता है तो अल्लाह के पास दुनिया व आख़िरत दोनों का अज्र मौजूद है और अल्लाह तो हर शख़्स की सुनता और सबको देखता है (१३४)

व्याख्याः- जो मानव सुख-शांति अमनोचेन की जिन्दगी चाहते है तो उनके कामों के बदौलत अल्लाह उन्हें जीवन में सुख-शांति प्रदान करते है और अल्लाह सुनता-देखता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ بِالْقِسْطِ شُهَدَاءَ لِلَّهِ وَلَوْ عَلَىٰ أَنفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ إِن يَكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيرًا فَاللَّهُ أَوْلَىٰ بِهِمَا فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوَىٰ أَن تَعْدِلُوا وَإِن تَلْوُوا أَوْ تُعْرِضُوا فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا {135}

ऐ ईमानवालों मज़बूती के साथ इन्साफ़ पर क़ायम रहो और अल्लाह के लिये गवाही दो अगरचे ख़ुद तुम्हारे या तुम्हारे माँ बाप या क़राबतदारों के लिए ख़िलाफ़ न हो ख़्वाह मालदार हो या मोहताज अल्लाह तो उनपर ज़्यादा

मेहरबान है तो तुम कतराने में ख़्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो और अगर घुमा फिरा के गवाही दोगे या बिल्कुल इन्कार करोगे तो जो कुछ तुम करते हो खुद उससे खूब वाकिफ़ है (१३५)

व्याख्याः- संयमी मानव इंसाफ पर कायम रहते हुए सच्चाई के लिए अपनी रजामंदी पेश करते है और सच्चाई की तरफदारी करते हुए ईमान वालों के करीब के रिश्तेदारों को अगर नुकसान पहुँचे तो वो भयभीत न हो । अमीर हो या गरीब सच्चाई के रास्ते पर खुदा उनके साथ होता है । अपनी इन्द्रियों की चाहत में सच्चाई को मत त्यागो, मानव सच्चाई का साथ दे या न दे सच्चाई की बुलंदी कभी बिगड़ती नहीं और अल्लाह हर बातों से परीचित है।

पैगामः- मानव को सच्चाई का साथ देना एक परीक्षा है और इस सच्चाई को जिस तरह अल्लाह ने मेरे (सिद्धार्थ चटर्जी) मस्तिष्क द्वारा लोगों तक पहुँचाया यानी तमाम मानव जाती के लिए उसका साथ देना फर्ज है। सच्चाई तो यह है कि कोई भी ख्यालात या भावना जो हकीकत का दावा करते है लेकिन हक वो होता है जिसे ज्यादा से ज्यादा लोगों की अर्न्तात्मा कबूल करे ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَى رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي أَنزَلَ مِن قَبْلُ وَمَن يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا {136}

ऐ ईमानवालों अल्लाह और उसके रसूल पर और उसकी किताब पर जो उसने अपने रसूल पर नाज़िल की है और उस किताब पर जो उसने पहले नाज़िल की ईमान लाओ और जो शख़्स अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों और उसके रसूलों और रोज़े आख़िरत का मुन्किर हुआ तो वह राहे रास्त से भटक के जूर जा पड़ा (१३६)

व्याख्याः- मोमिन हमेशा अल्लाह और उनके रसुलों, जिनके द्वारा प्रेम, शांति, अहिंसा, ज्ञान, सत्य, भाईचारा और मानवता की वाणी, पुस्तक द्वारा लोगों तक पहुँची और जो पुस्तकें इस कुरान-शरीफ से भी पहले दुनियां में आयी, सब पर और फरिश्तों द्वारा जो प्राकृति अल्लाह ने दुनियां में कायम कर रखी है उस पर और हर नफ्स (प्राणी) की मृत्यु निश्चित है। जो इस बात पर यकीन रखते है वही सच्चे है और जिसे इस बात से इनकार है वह बड़ी गुमराही में है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلًا {137}

बेशक जो लोग ईमान लाए उसके बाद फ़िर काफ़िर हो गए फिर ईमान लाए और फिर उसके बाद काफ़िर हो गये और कुफ़्र में बढ़ते चले गए तो अल्लाह उनकी मग़फ़िरत करेगा और न उन्हें राहे रास्त की हिदायत ही करेगा (१३७)

व्याख्याः- जो लोग बार-बार अपने फायदे के लिए प्रेम और भाईचारा (यानी ईमान लाने) की बात करें और दिल में शैतान की रास्ता पर चले तो उसे कभी भी सुख और शांति प्राप्त नहीं होगी और न ही अल्लाह की मदद हासिल होगी।

بَشِّرِ الْمُنَافِقِينَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا {138}

मुनाफ़िक़ों को खुशख़बरी दे दो कि उनके लिए ज़रूर दर्दनाक अज़ाब है (१३८)

व्याख्याः- अपवित्र पापी जान ले कि प्राकृतिक तौर पर उनके कर्मफल की शास्ती है अशांति और इसमें बड़ा ही कष्ट है।

الَّذِينَ يَتَّخِذُونَ الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أَيَبْتَغُونَ عِندَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا {139}

जो लोग मोमिनों को छोड़कर काफ़िरों को अपना सरपरस्त बनाते है क्या उनके पास इज़्ज़त की तलाश करते है इज़्ज़त सारी बस अल्लाह ही के लिए ख़ास है (१३९)

व्याख्याः- ऐसे लोग भी है जो संयमी और पवित्रता को छोड़कर या अपवित्र लोगों को खुश करने के लिए पापियों से दोस्ती करते है और इज्जत और शौहरत की उम्मीद रखते है उन्हें कभी भी इज्जत हासिल नहीं होगी। इज्जत बक्षने वाला सिर्फ अल्लाह ही है।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتَابِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوا مَعَهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ إِنَّكُمْ إِذًا مِّثْلُهُمْ إِنَّ اللَّهَ جَامِعُ الْمُنَافِقِينَ وَالْكَافِرِينَ فِي جَهَنَّمَ جَمِيعًا {140}

हालाँकि अल्लाह तुम पर अपनी किताब कुरान में ये हुक्म नाज़िल कर चुका है कि जब तुम सुन लो कि अल्लाह की आयतों से ईन्कार किया जाता है और उससे मसख़रापन किया जाता है तो तुम उन के साथ मत बैठो यहाँ तक कि वह किसी दूसरी बात में ग़ौर करने लगें वरना तुम भी उस वक़्त उनके बराबर हो जाओगे उसमें तो शक ही नही कि अल्लाह तमाम मुनाफ़िक़ों और काफ़िरों को जहन्नुम में जमा ही करेगा (१४०)

व्याख्याः- प्राकृति बिगाड़ने वाले यानी पाप करने वालों के साथ बैठने से भी मानव का अस्तित्व विवेक उन्हीं की तरह बन

सकता है और इस बात पर कोई संदेह नहीं की मुनाफिक (लड़ाई करवाने वाला) और काफिर मानव को अशांति की आग में जलना पड़ता है।

الَّذِينَ يَتَرَبَّصُونَ بِكُمْ فَإِن كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللَّهِ قَالُوا أَلَمْ نَكُن مَّعَكُمْ وَإِن كَانَ لِلْكَافِرِينَ نَصِيبٌ قَالُوا أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُم مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ فَاللَّهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلَن يَجْعَلَ اللَّهُ لِلْكَافِرِينَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ سَبِيلًا {141}

जो तुम्हारे मुन्तज़िर है तो अगर अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें फ़तेह हुयी तो कहने लगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे और अगर हिस्सा काफ़िरों को मिला तो कहते है क्या हम तुमपर ग़ालिब न आ गए थे और तुमको मोमिनीन से हमने बचाया नही था क़यामत के दिन तो अल्लाह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करेगा और अल्लाह ने काफ़िरों को मोमिनीन पर वर रहने की हरगिज़ कोई राह नही क़रार दी है (१४१)

व्याख्याः- दोहरी चाल चलने वाले मानव हमेशा शैतान पर अल्लाह की विजय पर संदेह करते है और हमेशा अपनी मतलब की बातें करते है और यकीनन अपवित्र शक्ति कभी भी पवित्र शक्ति को पराजित नहीं कर सकती'

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ وَإِذَا قَامُوا إِلَى الصَّلَاةِ قَامُوا كُسَالَى يُرَاءُونَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُونَ اللَّهَ إِلَّا قَلِيلًا {142}

बेशक मुनाफ़िक़ीन अल्लाह को फरेब देते हैं हालाँकि अल्लाह खुद उन्हें धोखा देता है और ये लोग जब नमाज़ पढ़ने खड़े होते है तो अलकसाए हुए खड़े होते है और सिर्फ लोगों को दिखाते है और दिल से तो अल्लाह को कुछ यूँ ही सा याद करते है (१४२)

व्याख्याः- ऐसे मुनाफिक मानव समझते है कि वो अल्लाह और ईमान वालों को धोखे में रक सकते है जो कि उनका भ्रम है। ये बेदिली से सुस्त और काहेल होकर संयमी लोगों के साथ खड़े होते है सिर्फ दिखावे के लिए (आखिरकार इन लोगों का नकाब उतर जाता है और सच्चाई सामने आ जाता है)

مُّذَبْذَبِينَ بَيْنَ ذَٰلِكَ لَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَلَا إِلَىٰ هَٰؤُلَاءِ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَن تَجِدَ لَهُ سَبِيلًا {143}

इस कुफ़्र व इमान के बीच अधड़ में पड़े झूल रहे हैं न उन की तरफ़ न उन काफ़िरों की तरफ़ और जिसे अल्लाह गुमराही में छोड़ दे उसकी तुम हरगिज़ सबील नहीं कर सकते (१४३)

व्याख्याः- इस तरह के लोग (दोगले) किसी की तरफ नहीं होते और न ही उन्हें सही राह मिलती है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ أَتُرِيدُونَ أَن تَجْعَلُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا مُّبِينًا {144}

ऐ ईमान वालों मोमिनीन को छोड़कर काफ़िरों को सरपरस्त न बनाओ क्या ये तुम चाहते हो कि अल्लाह का सरीही इल्ज़ाम अपने सर क़ायम कर लो (१४४)

व्याख्याः- नेक परहेजगार और प्रेम चाहने वाला मानव पापियों को दोस्त नहीं बनाते ।

पैगामः- दोस्ती एक पवित्र रिश्ता और अल्लाह की पसंदीदा फितरत में से एक है । दोस्ती करने से पहले किसी को ये पता नहीं चलता कि वो किस किरदार का है यानी अच्छा या बुरा । इस आयत में काफिरों से दोस्ती न करने के मतलब पाप से दोस्ती या समझौता न करना।

إِنَّ الْمُنَافِقِينَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ وَلَن تَجِدَ لَهُمْ نَصِيرًا {145}

इसमें तो शक ही नहीं कि मुनाफ़िक जहन्नुम के सबसे नीचे तबक़े में होंगे और तुम वहाँ किसी को उनका हिमायती भी न पाओगे (१४५)

व्याख्याः- कोई संदेह नहीं कि अल्लाह के दरबार में निचले दर्जे में अपवित्र पापी घिनौने मानव होंगे।

पैगामः- मानव समाज में सबसे ज्यादा नफरत के काबिल और असम्मनित चरित्र पापियों का होता है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا وَأَصْلَحُوا وَاعْتَصَمُوا بِاللَّهِ وَأَخْلَصُوا دِينَهُمْ لِلَّهِ فَأُولَٰئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ أَجْرًا عَظِيمًا {146}

मगर जिन लोगों ने तौबा कर ली और अपनी हालत दुरूस्त कर ली और अल्लाह से लगे लिपटे रहे और अपने दीन को महज़ अल्लाह के वास्ते निरा खरा कर लिया तो ये लोग मोमिनीन के साथ होंगे और मोमिनीन को अल्लाह अनक़रीब ही बड़ा बदला अता फ़रमाएगा (१४६)

व्याख्याः- अगर पाप से तौबा करके नेकी और परहेजगारी को अपनाये और अपने आपको सुधार कर अल्लाह के पवित्र रास्ते को मजबूती से थाम लें तो ऐसे मानव को शांति के स्वर्ग और ईमान वालों का साथ मिलेगा।

مَّا يَفْعَلُ اللَّهُ بِعَذَابِكُمْ إِن شَكَرْتُمْ وَآمَنتُمْ وَكَانَ اللَّهُ شَاكِرًا عَلِيمًا {147}

अगर तुमने अल्लाह का शुक्र किया और उसपर ईमान लाए तो अल्लाह तुम पर अज़ाब करके क्या करेगा बल्कि अल्लाह तो क़दरदाँ और वाक़िफ़कार है (१४७)

व्याख्याः- जो नेक और शुक्रगुजार होते है उन लोगों को अल्लाह का अजाब नहीं होता।

لَّا يُحِبُّ اللَّهُ الْجَهْرَ بِالسُّوءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَن ظُلِمَ وَكَانَ اللَّهُ سَمِيعًا عَلِيمًا {148}

अल्लाह हाँक पुकार कर बुरा कहने को पसन्द नही करता मगर मज़लूम और अल्लाह तो सुनता है जानता है (१४८)

व्याख्याः- बगैर प्रमाण के किसी भी मानव को बुरा न कहे और अल्लाह सुनता-देखता है।

إِن تُبْدُوا خَيْرًا أَوْ تُخْفُوهُ أَوْ تَعْفُوا عَن سُوءٍ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيرًا {149}

अगर खुल्लम खुल्ला सभ्य करते हो या छिपा कर या किसी की बुराई से दरगुज़र करते हो तो तो अल्लाह भी बड़ा दरगुज़र करने वाला क़ादिर है (१४९)

व्याख्याः- अच्छे कामों का परिणाम कभी विफल नहीं होता चाहे वो खुलकर करें या छुपाकर।

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَيُرِيدُونَ أَن يُفَرِّقُوا بَيْنَ اللَّهِ وَرُسُلِهِ وَنَقُولُ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَنَكْفُرُ بِبَعْضٍ وَيُرِيدُونَ أَن يَتَّخِذُوا بَيْنَ ذَٰلِكَ سَبِيلًا {150}

बेशक जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों से इन्कार करते है और अल्लाह और उसके रसूलों में तफ़रक़ा डालना चाहते है और कहते है कि हम बाज़ पर ईमान लाए है और बाज़ का इन्कार करते है और चाहते है कि इस के दरमियान एक दूसरी राह निकलें (१५०)

व्याख्याः- कुछ मानव ऐसे भी है जो अल्लाह और उसके रसुलों को अलग-अलग सम्प्रदाय में बांटकर समाज में घृणा का बीज बोते है और अपने आपको अच्छा कहते हुए कहते है ''कि हम तो किसी खास रसुल के सम्प्रदाय से है'' ईमान और कुफ्र के बीच का रास्ता इख्तियार करते है।

पैगामः- सारे रसुलों ने एक ही पैगाम लोगों तक पहुँचाया मगर हर किसी का समय, जगह और भाषा अलग-अलग थी और ये बात इस आयत से साबित होती है, इस लिहाज से मानवों के दरमियान सिर्फ दो ही सम्प्रदाय है यानी पाप और पुण्य जो इस बात को इनकार करता है वही काफिर है (६४/२) और इसके साथ-साथ कुछ लोग ये भी कहते है कि उनके अपने रसुल के अलावा सारे बाकी रसुल बातिल है, इस आयत का पैगाम ऐसे लोगों को खास तौर पर अनुभव करना चाहिए।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ حَقًّا وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُّهِينًا {151}

यही लोग हक़ीक़तन काफ़िर हैं और हमने काफ़िरों के वास्ते ज़िल्लत देने वाला अज़ाब तैयार कर रखा है (१५१)

व्याख्याः- ऐसे लोग पूरी तरह काफिर है और उनके लिये जिल्लत का अजाब।

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَمْ يُفَرِّقُوا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولَٰئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيهِمْ أُجُورَهُمْ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا {152}

और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए और उनमें से किसी में तफ़रक़ा नही करते तो ऐसे ही लोगों को अल्लाह बहुत जल्द उनका अज्र अता फ़रमाएगा और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१५२)

व्याख्याः- और जो मानव अल्लाह और उसके तमाम रसुलों पर यकीन रखते है और उनके असुलों को सम्प्रादायिक भावना में नहीं बांटते, यही लोग संयमी है और ऐसे लोगों के लिए अल्लाह की तरफ से पुरुषकार है।

يَسْأَلُكَ أَهْلُ الْكِتَابِ أَن تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَقَدْ سَأَلُوا مُوسَىٰ أَكْبَرَ مِن ذَٰلِكَ فَقَالُوا أَرِنَا اللَّهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِن بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ فَعَفَوْنَا عَن ذَٰلِكَ وَآتَيْنَا مُوسَىٰ سُلْطَانًا مُّبِينًا {153}

एहले किताब जो तुमसे दरख़्वास्त करते हैं कि तुम उनपर एक किताब आसमान से उतरवा दो ये लोग मूसा से तो इससे कहीं बढ़ के दरख़्वास्त कर चुके हैं चुनान्चे कहने लगे कि हमें अल्लाह को खुल्लम खुल्ला दिखा दो तब उनकी शरारत की वजह से बिजली ने ले डाला फिर उन लोगों के पास तौहीद की वाज़ेए और रौशन आ चुकी थी उसके बाद भी उन लोगों ने बछड़े को बना लिया फिर हमने उससे भी दरगुज़र किया और मूसा को हमने सरीही ग़लबा अता किया (१५३)

व्याख्याः- पुस्तक और रसुलों की हिदायतों को सम्प्रदायक में बांटने वाले लोग हजरत मोहम्मद और मुसा जैसे पैगम्बरों से भी पुस्तक की शक्ल में प्रमाण मांगा और अल्लाह को लोगों के सामने उपस्थित करने की जिद भी की । ऐसे पापी लोगों ने

नेक बातों को इनकार किया और घृणा की आग बिजली बनकर उन्हीं की तरफ लौट आयी। जब शांति का समाज कायम हुआ तो ऐसे लोगों ने अपनी ख्वाहिशात (बछड़ा) को अपना माबूद बना लिया। ऐसे लोगों को अल्लाह और समाज में दर गुजर किया और मुसा और हजरत मुहम्मद के ख्यालात को मान्यता दी'

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّورَ بِمِيثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا {154}

और हमने उनके एहद व पैमान की वजह से उनके पर तूर को लटका दिया और हमने उनसे कहा कि दरवाज़े में सजदा करते हुए दाख़िल हो और हमने कहा कि तुम हफ़्ते के दिन तजावुज़ न करना और हमने उनसे बहुत मज़बूत एहदो पैमान ले लिया (१५४)

व्याख्याः- पाप शक्ति को तुर (पहाड़) नाम के पहाड़ के साथ तुलना करते हुए मानव के अस्तित्व के साथ पहाड़ की तरह बड़ी शैतानी शक्ति के अस्तित्व का एलान अल्लाह ने किया और कहा कि ईमान के दरवाजे में सजदा करते हुए (यानी नेकी, शांति, शिक्षा, अहिंसा, परहेजगारी, मोहब्बत तथा इंसानियत को पूरी तरह आत्मसमर्पण करते हुए) शैतानी शक्ति से बचों और शैतान के घर का दरवाजा न अपनाओं। ये अल्लाह का एहद है जिसके द्वारा मानव पापों से आजाद रह सकते है। जिन्दगी के किसी भी समय इस एहद को कमजोर मत होने देना।

فَبِمَا نَقْضِهِم مِّيثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِم بِآيَاتِ اللَّهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنبِيَاءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَقَوْلِهِمْ قُلُوبُنَا غُلْفٌ بَل طَبَعَ اللَّهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا {155}

फिर उनके अपने एहद तोड़ डालने और एहकामे अल्लाह से इन्कार करने और नाहक़ अम्बिया को क़त्ल करने और इतरा कर ये कहने की वजह से कि हमारे दिलों पर ग़िलाफ़ चढ़े हुए है बल्कि अल्लाह ने उनके कुफ़्र की वजह से उनके दिलों पर मोहर कर दी है तो चन्द आदमियों के सिवा ये लोग ईमान नहीं लाते (१५५)

व्याख्याः- पाप कामों से अपने आपको आजाद रखने का एहद तोड़ कर अल्लाह के नियमों का इनकार (कुफ्र) करके और नबियों के आदर्शों का कत्ल (न मानना) करके कुछ लोग अपने ख्यालात को सही ठहराने की कोशिश करते है। हकीकत में उनकी इस सोच के कारण अल्लाह उनके मुर्दा विवेक को अशांति की आग में जलाते रहते है।

पैगामः- हकीकत से दूर होकर कुछ लोग अपने मन गढत रश्मो रिवाज और ख्यालात को मजहब का नाम देते है जैसे कि कुछ लोग कहते है कि "सारे नबियों की पुस्तकें बातिल है" सिर्फ उनके नबी की पुस्तक छोड़कर। लेकिन कुरान की सुरा निसा की आयत १५०, १५१ और १५२ के अनुसार ऐसे लोगों को ही काफिर कहा गया है क्योंकि ऐसे सोच रखने वाले समाज में नफरत और फसाद की बुनियाद डालते है जो ये लोग नहीं समझते।

وَبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلَى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيمًا {156}

और उनके काफ़िर होने और मरियम पर बहुत बड़ा बोहतान बाँधने कि वजह से (१५६)

व्याख्याः- ऐसे पापी मानव मरयिम जैसी पाक और पवित्र नारी पर भी दोष देने से नहीं रुके थे।

وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِن شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا {157}

और उनके यह कहने की वजह से कि हमने मरियम के बेटे ईसा अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर डाला हालाँकि न तो उन लोगों ने उसे क़त्ल ही किया न सूली ही दी उनके लिए से मुशाबेह कर दिया गया और जो लोग इस बारे में इख़्तेलाफ़ करते है यक़ीनन वह लोग की तरफ़ से धोखे में है उनको उस की ख़बर ही नहीं मगर फ़क़्त अटकल के पीछे है और ईसा को उन लोगों ने यक़ीनन क़त्ल नही किया (१५७)

व्याख्याः- पैगम्बर ईशा को सूली पर चढ़ाकर उसके कत्ल का इलजाम मरियम तक पहुँचा कर उसे तकलीफ दी गई लेकिन ईशा के ख्यालात की मृत्यु नहीं हुई और ईशा ने अल्लाह की राह पर अपना बलिदान दिया।

पैगामः- ईशा लोगों के दरमियान अपने ख्यालात के द्वारा जिन्दा है और इतिहास साक्षी है कि नेक बातें बताने वाले लोगों के घरवालों को हमेशा तकलीफें दी गई है लेकिन आखिरकार सत्य प्रमाणित होने पर लोग उसे मानने पर मजबूर होते है।

بَل رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا {158}

बल्कि अल्लाह ने उन्हें अपनी तरफ़ उठा लिया और अल्लाह तो बड़ा ज़बरदस्त तदबीर वाला है (१५८)

व्याख्याः- अल्लाह ने ईशा की जिस्मानी मृत्यु नियुक्त करके उसे दुनियावी तकलीफों से मुक्ति दी और उनके ख्यालात को दुनियां में जिन्दा रखा।

وَإِن مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا {159}

और एहले किताब में से कोई शख़्स ऐसा न होगा जो उनपर उनके मरने के क़ब्ल ईमान न लाए और ख़ुद ईसा क़यामत के दिन उनके ख़िलाफ़ गवाही देंगे (१५९)

व्याख्याः- ईशा की मृत्यु के बाद उनके ख्यालात पर लोग ईमान लाये और ये सच्चाई कयामत के दिन तक लोगों पर गवाही बनकर रह जाएगी।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبَاتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ كَثِيرًا {160}

ग़रज़ यहूदयों की शरारतों और गुनाह की वजह से हमने उनपर वह साफ़ सुथरी चीज़ें जो उनके लिए हलाल की गयी थी हराम कर दी और उनके अल्लाह की राह से बहुत से लोगों को रोकने कि वजह से भी (१६०)

व्याख्याः- कुछ पापियों के लिये जिन लोगों ने अल्लाह की पवित्र चीजों को गलत इस्तेमाल किया उनके लिये वो सारी चीजें हराम कर दी गई।

पैगामः- कुरान शरीफ के अनुसार अल्लाह का कानून कभी नहीं बदलता तो कोई एक चीज पहले हराम फिर बाद में हलाल क्यों कर हो सकती है? हकीकत तो यह है कि हर चीज मानव के इस्तेमाल पर उसे हलाल और हराम का दर्जा दिया जाता है। एक पत्थर जो घर बनाने में इस्तेमाल होता है उसके जरिया मानव ने आग का इस्तेमाल सीखा और उसी पत्थर को मानव के सिर तोड़ने के लिये भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

وَأَخْذِهِمُ الرِّبَا وَقَدْ نُهُوا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَأَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا {161}

और बावजूद मुमानिअत सूद खा लेने और नाहक़ ज़बरदस्ती लोगों के माल खाने की वजह से उनमें से जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उनके वास्ते हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है (१६१)

व्याख्याः- किसी की मजबूरी से फायदा उठाकर कमाना सूद है और किसी के माल के साथ न इंसाफी करना भी हराम है और ऐसे किरदार वाला मानव काफिर होता है और काफिरों के लिए अल्लाह का अजाब।

لَٰكِنِ الرَّاسِخُونَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ وَالْمُقِيمِينَ الصَّلَاةَ وَالْمُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالْمُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أُولَٰئِكَ سَنُؤْتِيهِمْ أَجْرًا عَظِيمًا {162}

लेकिन उनमें से जो लोग इल्म में बड़े मज़बूत पाए पर फ़ायज़ हैं वह और ईमान वाले तो जो तुमपर नाज़िल हुयी है और से नमाज़ पढ़ते हैं और ज़कात अदा करते हैं और अल्लाह और रोज़े आख़ेरत का यक़ीन रखते हैं ऐसे ही लोगों को हम अनक़रीब बहुत बड़ा अज्र अता फ़रमाएँगे (१६२)

व्याख्याः- और जो लोग हकीकत को समझते हैं वो मोमिन है, ऐसे लोग अल्लाह के असुल जो उन पर या उनसे पहले वाले लोगों को मिले उस पर ईमान रखे और नेकी, शांति, शिक्षा, अहिंसा, मोहबबत, परहेजगारी और मानवता को अपना कर नमाज पढ़ते है। अल्लाह और इसके असुलों को सही मानकर चलते है इन्हें अल्लाह की तरफ से जरूर शांति हासिल होती है ।

إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَىٰ نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِن بَعْدِهِ وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيسَىٰ وَأَيُّوبَ وَيُونُسَ وَهَارُونَ وَسُلَيْمَانَ وَآتَيْنَا دَاوُودَ زَبُورًا {163}

हमने तुम्हारे पास तो इसी तरह 'वही' भेजी जिस तरह नूह और उसके बाद वाले पैग़म्बरों पर भेजी थी और जिस तरह इबराहीम और इस्माइल और इसहाक़ और याक़ूब और औलादे याक़ूब व ईसा व अय्यूब व युनुस व हारून व सुलेमान के पास 'वही' भेजी थी और हमने दाऊद को ज़ुबूर अता की (१६३)

व्याख्याः- सारे पैगम्बरों के मस्तिक्ष को अल्लाह ने अपनी सच्चाई की रोशनी से प्रज्जवलित किया। इसको 'वही' कहते है।

وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنَاهُمْ عَلَيْكَ مِن قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ وَكَلَّمَ اللَّهُ مُوسَىٰ تَكْلِيمًا {164}

जिनका हाल हमने तुमसे पहले ही बयान कर दिया और बहुत से ऐसे रसूल जिनका हाल तुमसे बयान नहीं किया और अल्लाह ने मूसा से बातें भी की (१६४)

व्याख्याः- कुरान-शरीफ में कुछ पैगम्बरों का नाम लिया गया और बहुत सारे पैगम्बरों का नाम नहीं लिया गया और मुसा अल्लाह के नियमों का चश्मदीद गवाह।

पैगामः- कुछ लोग सोचते है कि कुरान शरीफ में जिन रसुलों का नाम है सिर्फ उन्हीं पर ईमान लाना चाहिए, ये आयत ऐसी सोच को गलत प्रमाण करती है।

رُسُلاً مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلاَّ يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا {165}

और हमने सभ्य लोगों को बेहिश्त की खुशख़बरी देने वाले और बुरे लोगों को अज़ाब से डराने वाले पैग़म्बरों के आने के बाद लोगों की अल्लाह पर कोई हुज्जत बाक़ी न रह जाए और अल्लाह तो बड़ा ज़बरदस्त हकीम है (१६५)

व्याख्याः- समस्त पैगम्बरों ने मानवी समाज को सच्चाई की रोशनी से रोशन करने की कोशिश की ताकि लोग अल्लाह के रहस्य को समझ सके।

لَّكِنِ اللَّهُ يَشْهَدُ بِمَا أَنزَلَ إِلَيْكَ أَنزَلَهُ بِعِلْمِهِ وَالْمَلآئِكَةُ يَشْهَدُونَ وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا {166}

मगर अल्लाह तो इस पर गवाही देता है जो कुछ तुम पर नाज़िल किया है ख़ूब समझ बूझ कर नाज़िल किया है उसकी गवाही तो फ़रिश्ते तक देते है हालाँकि अल्लाह गवाही के लिए काफ़ी है (१६६)

व्याख्याः- अल्लाह ने जो नियम मानव को पुस्तकों के जरिया दिये, वो तमाम असुल अल्लाह की हकीकत है और ये सारी पुस्तकें अलग-अलग जुबाने और अलग-अलग जगहों अलग-अलग रसुलों के द्वारा लोगों को मिली। इस लिहाज से लोगों के दिलों में ''अपनी जुबान'' और ''अपना रसुल'' वाले पुस्तक के अलावा दूसरे रसुल या उसकी पुस्तक को कबूल करने को गवारा नहीं करते और इसलिए कुरान-शरीफ की ये आयत हर किसी के पास ''की पुस्तक'' की गवाही देती है और इससे पहले की दो आयतें भी इस बात की साक्षी है ।

पैगामः- १. कुरान-शरीफ एक मुक्मिमल पुस्तक है और तमाम मानवता के लिए एक राह-ए-नुमा है।

२. अल्लाह ने हर युग में और हर जगह और हर जुबान में अलग-अलग रसुलों के द्वारा अपने आदेश भेजे (१४/४-१६/३६)।

३. कुरान की इस आयत से हमें ये आदेश मिलता है कि हर कोई अपनी पुस्तक और अपने रसुल को मानकर चले, दूसरों की पुस्तक और उनके रसुलों को इज्जत दे और उन्हें छोटा या बड़ा साबित करने की कोशिश न करें।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا ضَلالاً بَعِيدًا {167}

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया और अल्लाह की राह से रोका वह राहे रास्त से भटक के बहुत दूर जा पड़े (१६७)

व्याख्याः- जिन लोगों ने अल्लाह के नियमों से इनकार किया और दूसरों को भी उनके नियमों पर चलने से रुकावट डाली, ऐसे लोग सच्चाई से भटक कर दूर जा पड़े।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَظَلَمُوا لَمْ يَكُنِ اللَّهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيقًا {168}

बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया और जुल्म करते रहे न तो अल्लाह उनको बख़्शेगा ही और न ही उन्हें किसी तरीक़े की हिदायत करेगा (१६८)

व्याख्याः- ऐसे लोग जो अल्लाह के नियमों का इनकार करे और जुल्म करते रहे, उन्हें कभी भी अल्लाह की दया हासिल न होगी और न ही उन्हें शांति का रास्ता नजर आयेगा।

إِلاَّ طَرِيقَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا {169}

मगर जहन्नुम का रास्ता जिसमें ये लोग हमेशा रहेंगे और ये तो अल्लाह के वास्ते बहुत ही आसान बात है (१६९)

व्याख्याः- यकीनन निश्चित रूप से ऐसे मानव अशांति के नर्क में हमेशा रहेंगे '

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءكُمُ الرَّسُولُ بِالْحَقِّ مِن رَّبِّكُمْ فَآمِنُوا خَيْرًا لَّكُمْ وَإِن تَكْفُرُوا فَإِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا {170}

ऐ लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से रसूल दीने हक़ के साथ आ चुके है ईमान लाओ तुम्हारे हक़ में बेहतर है और अगर इन्कार करोगे तो जो कुछ ज़मीन और आसमानों में है सब अल्लाह ही का है और अल्लाह बड़ा वाक़िफ़कार हकीम है (१७०)

व्याख्याः- अल्लाह के आदेश पहुँचाने वाले लोग समाज में हक बात को स्थापित करने की कोशिश की। लोग इस पर विश्वास करे और यकीनन पैगम्बरों का बताया हुआ हक न समझ, स्वार्थी लोगों के बताये हुए हक से बेहतर है और वो हक है आसमान और जमीन। जो कुछ भी है सब अल्लाह का ही है यानी खुदा के नूर से बनता है (परमाणिवक शक्ति) और अल्लाह हिकमत वाला है।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَا تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلَا تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ إِنَّمَا الْمَسِيحُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُولُ اللَّهِ وَكَلِمَتُهُ أَلْقَاهَا إِلَى مَرْيَمَ وَرُوحٌ مِّنْهُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ وَلَا تَقُولُوا ثَلَاثَةٌ انتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ إِنَّمَا اللَّهُ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ سُبْحَانَهُ أَن يَكُونَ لَهُ وَلَدٌ لَّهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا {171}

ऐ एहले किताब अपने दीन में हद से तजावुज़ न करो और अल्लाह की शान में सच के सिवा न कहो मरियम के बेटे ईसा मसीह पस अल्लाह के एक रसूल और उसके कलमे थे जिसे अल्लाह ने मरियम के पास भेज दिया था और अल्लाह की तरफ़ से एक जान थे पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और तीन के क़ायल न बनो बाज़ रहो अपनी भलाई का क़सद करो अल्लाह तो बस यक्ता माबूद है वह उस से पाक व पाकीज़ा है उसका कोई लड़का हो जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है सब तो उसी का है और अल्लाह तो कारसाज़ी में काफ़ी है (१७१)

व्याख्याः- अल्लाह की पुस्तक (एहले पुस्तक) समझने वाले लोग अपने आपको हाकिम न समझे और अल्लाह के बारे में हक के सिवा कुछ न कहे। मरियम का बेटा ईशा भी खुदा का पैगम्बर था और उसने भी हक की पैरवी की थी। इसलिए खुदा और उसके रसुलों पर ईमान लाना हक है और मानवता के बेहतरी। अल्लाह एक है और उसके अस्तित्व से तमाम ब्रह्माण्ड की सृष्टि हुई। आकाश और पृथ्वी की तमाम चीजें खुदा की है।

لَن يَسْتَنكِفَ الْمَسِيحُ أَن يَكُونَ عَبْدًا لِّلَّهِ وَلَا الْمَلَائِكَةُ الْمُقَرَّبُونَ وَمَن يَسْتَنكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيعًا {172}

न तो मसीह ही अल्लाह का बन्दा होने से हरगिज़ इन्कार कर सकते है और न मुक़र्रर फ़रिश्ते और जो शख़्स उसके बन्दा होने से इन्कार करेगा और शेख़ी करेगा तो अनक़रीब ही अल्लाह उन सबको अपनी तरफ़ उठा लेगा (१७२)

व्याख्याः- खुदा के नियमों को अपनाने में जो मानव इनकार करे और शर्मीदगी अनुभव करे उसकी जिम्मेदारी खुदा पर है।

पैगामः- परहेजगारी और सच्चाई को कबुल करने में जो शर्माते है वो सरासर बेवकुफ होता है।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ وَأَمَّا الَّذِينَ اسْتَنكَفُوا وَاسْتَكْبَرُوا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَلَا يَجِدُونَ لَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا وَلَا نَصِيرًا {173}

पस जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया है और अच्छे काम किए हैं उनका उन्हें सवाब पूरा पूरा भर देगा बल्कि अपने फ़ज़्ल से कुछ और ज़्यादा ही देगा और लोग उसका बन्दा होने से इन्कार करते थे और शेख़ी करते थे उन्हें तो दर्दनाक अज़ाब में मुब्तिला करेगा और लुत्फ़ ये है कि वह लोग अल्लाह के सिवा न अपना सरपरस्त ही पाएँगे और न मददगार (१७३)

व्याख्याः- जो लोग ईमान लाये यानी नेकी, परहेजगारी, इंसानियत, शिक्षा, मोहब्बत और अहिंसा को अपनाया तो उन्हें जरूर शांति हासिल होगी।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُم بُرْهَانٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَأَنزَلْنَا إِلَيْكُمْ نُورًا مُّبِينًا {174}

ऐ लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ से सनद और दलील आ पहुँची और हमने तुम्हारी तरफ साफ साफ नूर उतार दिया है। (१७४)

व्याख्याः- खुदा की कूदरत ही सबसे बड़ा मददगार है।

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَاعْتَصَمُوا بِهِ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِي رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ وَيَهْدِيهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا {175}

पस जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए और उसी से लगे लिपटे रहे तो अल्लाह भी उन्हें अनक़रीब ही अपनी रहमत व फ़ज़्ल के सादाब बाग़ों में पहुँचा देगा और उन्हे अपने हुज़ूरी का सीधा रास्ता दिखा देगा (१७५)

व्याख्याः- मानव समाज को अल्लाह ने बारी-बारी सच्चाई की रोशनी से रोशन किया और इस सच्चाई को समझकर उसे अपनाने वाला सीधे रास्ते पर है।

يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللَّهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا إِن لَّمْ يَكُن لَّهَا وَلَدٌ فَإِن كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ وَإِن كَانُوا إِخْوَةً رِّجَالًا وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنثَيَيْنِ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ أَن تَضِلُّوا وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ {176}

तुमसे लोग फ़तवा तलब करते है तुम कह दो कि कलाला के बारे में अल्लाह तो ख़ुद तुम्हे फ़तवा देता है कि अगर कोई ऐसा शख़्स मर जाए कि उसके न कोई लड़का बाला हो और उसके एक बहन हो तो उसका तर्के से आधा

होगा और उसके कोई औलाद न हो तो उसका वारिस बस यही भाई होगा और अगर दो बहनें हों तो उनको तर्के से दो तिहाई मिलेगा और अगर किसी के वारिस भाई बहन दोनों हों तो मर्द को औरत के हिस्से का दुगना मिलेगा तुम लोगों के भटकने के ख़्याल से अल्लाह अपने एहकाम वाज़ेए करके बयान फ़रमाता है और अल्लाह तो हर चीज़ से वाक़िफ़ है (१७६)

व्याख्याः- जो लोग अल्लाह के नियमों को पूरी तरह ग्रहण करे, अल्लाह उनको शांति के स्वर्ग में दाखिल करेगा क्योंकि यही सीधा रास्ता है। लोगों के जहन में अनाथों के बारे में हमेशा सवाल रहता है वो जान ले कि अनाथों का हक बराबर अदा किये बगैर लोगों को चैन हासिल न होगा। मर्द हो या औरत जरूरत के अनुसार हक को अदा करना ईमान वाले का कर्त्तव्य है।

सूरा: अल-माइदा

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

व्याख्या:- शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्षमाकरी है ।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَوْفُوا بِالْعُقُودِ أُحِلَّتْ لَكُم بَهِيمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلَى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنتُمْ حُرُمٌ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيدُ {1}

ऐ ईमानदारों अपने इक़रारों को पूरा करो तुम्हारे वास्ते चौपाए जानवर हलाल कर दिये गये उनके सिवा जो तुमको पढ़ कर सुनाए जाएँगे हलाल कर दिए गए मगर जब तुम हालते एहराम में हो तो शिकार को हलाल न समझना बेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है (१)

व्याख्या:- ईमान वाले का मुख्य चरित्र होता है एहद को पूरा करना। प्रकृति ने मानव के इस्तेमाल के लिए कुछ चतुशपद प्राणी दिये, उनमें से कुछ को मानव खुराक के तौर पर इस्तेमाल करते है और कुछ उन प्राणियों की शक्तियों को इस्तेमाल करके अपने काम को अंजाम देते है और इस इस्तेमाल के दौरान मानव ध्यान रखे कि उन प्राणियों और उनकी नसल के साथ नइंसाफी न हो।

पैगाम:- मानव के एहराम की हालात का मतलब है ..... उसकी सीधी-साधी परहेज वाली जिन्दगी जो सबक के तोर पर अल्लाह ने विशेष समय पर उसे इख्तियार करने का हुकूम दिया है। मानव की लालची फितरत को देखते हुए अल्लाह ने जानवर का इस्तेमाल या उसके शिकार पर पाबंदी लगायी है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحِلُّوا شَعَائِرَ اللَّهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَائِدَ وَلَا آمِّينَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِّن رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوا وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ أَن صَدُّوكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَن تَعْتَدُوا وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَى وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ {2}

ऐ ईमानदारों अल्लाह की निशानियों की बेतौक़ीरी करो और न हुरमत वाले महिने की और न क़ुरबानी की और न पट्टे वाले जानवरों की और न ख़ानाए काबा की तवाफ़ का क़स्द करने वालों की जो अपने परवरदिगार की ख़ुशनूदी और फ़ज़्ल व करम के जोयाँ है और जब तुम एहराम खोल दो तो शिकार कर सकते हो और किसी क़बीले की यह अदावत कि तुम्हें उन लोगों ने ख़ानाए काबा में जाने से रोका था इस जुर्म में न फँसवा दे कि तुम उनपर ज़्यादती करने लगो और सभ्यी और परहेज़गारी में एक दूसरे की मदद किया करो और गुनाह और ज़्यादती में बाहम किसी की मदद न करो और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तो यक़ीनन बड़ा सख़्त अज़ाब वाला है (२)

व्याख्या:- नेक, परहेजगार और मोहब्बत (ईमान वाले) करने वाले लोग अल्लाह की क़ूदरत की बे-हुंमती नहीं करते है यानी उनके क़ूदरत को बिगाड़ते नहीं। प्राकृतिक तौर पर मानव को अलग-अलग महीनों में अलग-अलग मौसम का अनुभव करवाया । प्रेम और भाईचारा की चिह्न "काबा" की तरफ जाने वाले ईमानदारों की बे-हुंमती गुनाह है यानी हर जान अल्लाह की है, ये समझकर उससे मोहब्बत करना और उसका एहतराम करना ईमान वाले का कर्त्तव्य है। अल्लाह ने आलोचना की जब लोगों ने परहेजगारी का एहराम उतार डाला और न हक जानवरों का कत्ल करते है बगैर किसी जरूरत के और आपस में दुश्मनी की भावना रखते है उन लोगों से जो लोग प्रेम, मानवता और शांति के दुश्मन है । प्रेम, अहिंसा, शांति, मानवता, नेकी और परहेजगारी पर कायम रहते हुए ईमान वाले एक दूसरे की मदद करे और पाप और ज्यादती में मदद न करे और अल्लाह से डरते रहे, अल्लाह सख्त सजा देने वाला और यही अल्लाह का आदेश और संदेश है।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنزِيرِ وَمَا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيحَةُ وَمَا أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَن تَسْتَقْسِمُوا بِالْأَزْلَامِ ذَلِكُمْ فِسْقٌ الْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن دِينِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا فَمَنِ اضْطُرَّ فِي مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّإِثْمٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {3}

मरा हुआ जानवर और खून और सुअर का गोष्त और जिस पर के वक़्त अल्लाह के सिवा किसी दूसरे का नाम लिया जाए और गर्दन मरोड़ा हुआ और चोट खाकर मरा हुआ और जो कुएँ में गिरकर मर जाए और जो सींग से

मार डाला गया हो और जिसको दरिन्दे ने फाड़ खाया हो मगर जिसे तुमने मरने के क़ब्ल ज़िबाह कर लो और बुतों पर चढ़ा कर ज़िबाह किया जाए और जिसे तुम के तीरों से बाहम हिस्सा बॉटो तुम पर हराम की गयी है ये गुनाह की बात है अब तो कुफ़्फ़ार तुम्हारे दीन से मायूस हो गए तो तुम उनसे तो डरो ही नहीं बल्कि सिर्फ मुझी से डरो आज मैंने तुम्हारे दीन को कामिल कर दिया और तुमपर अपनी नेअमत पूरी कर दी और तुम्हारे दीने इस्लाम को पसन्द किया पस जो शख़्स भूख़ में मजबूर हो जाए और गुनाह की तरफ़ माएल भी न हो तो अल्लाह बेशक बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (३)

व्याख्याः- मानव अपने सेहत के अनुसार खुराक ले जैसे कि कुछ विशेष चौपाये का मास । सुअर जिसका मास मानव को हानि पहुँचाते है उसका इस्तेमाल न करें। जिन्दा और तन्दुरुस्त पशु ही मानव के (खुराक) खाद्य के लायक है। सफाई के साथ मास को खुराक के तौर पर इस्तेमाल करना मानवी सेहत के लिए अच्छा है। रक्त, जानवर का मगज खाना मानव की सेहत के लिए हानिकारक है क्योंकि ज्यादा तर पशुओं की बीमारियां उन्हीं सब जगहों में पाई जाती है। पाक परवरदिगार ने मानव को विभिन्न सुस्वादु खाद्य से परिपूर्ण किया और मानव को पूरी तरह से उनके दिये हुए आशीर्वाद का मजा उठाने का हक है और इसके तहत पाक परवरदिगार के दिये हुए रिज्क को नष्ट किये बगैर इस्तेमाल करना भी जरूरी है, उनके दिए हुए रिस्क को इस्तेमाल करते वक्त मौसम और अपने शारीरिक अवस्था का विशेष ध्यान रखना चाहिए। ऐसे चीजों का सेवन न करें जिससे मानव को शारीरिक क्षति पहुँचे अथवा मानसिक विकास को। ऐसा कोई भी वस्तु का सेवन न करें जिससे मानव की होशों हवास गुम हो जाए। प्राकृतिक परिवेश और मौसम पृथ्वी के हर कोने के मानव की रहन सहन और खुराक का आधार है। ज्ञानी व्यक्ति इस बात को समझते है और जो नहीं समझते उसे ज्ञानी व्यक्ति की मशवरा लेकर अपने सेहत का ख्याल रखना चाहिए और अल्लाह मानव को सेहतमंद देखना पसंद करते है।

पैगामः कुरान-शरीफ के नियमों के अनुसार हर चीज अल्लाह की है और ये जरूरी नहीं कि किसी विशेष चीज पर अल्लाह का नाम लिखा जाये जब सब अल्लाह का है तो इस बात की कोई एहमियत नहीं कि कुछ चीजों पर उनका नाम लिया जाये या न लिया जाये । वक्त और हालात के अनुसार मानव की सोच बदलती रहती है और इस बदलती हुई सोच को सामने रखते हुए समयानुसार अल्लाह हर वक्त के लिए कुछ विशेष कायदे कानून नियुक्त करते है। धर्म कभी भी मानव से अलग नहीं है इस लिहाज से वक्त और हालात के अनुसार अल्लाह ने हर मानव को धार्मिक विचारों से पवित्र किया है। धार्मिक विचार मानव को पवित्रता, प्रेम, मानवता, शिक्षा और अहिंसा के तरफ ले जाते है और इसी को "इस्लाम" कहते है और यही परिपूर्ण "धर्म" है।

يَسْأَلُونَكَ مَاذَا أُحِلَّ لَهُمْ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَمَا عَلَّمْتُم مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِينَ تُعَلِّمُونَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللَّهُ فَكُلُوا مِمَّا أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ {4}

तुमसे लोग पूँछते है कि कौन चीज़ हलाल की गयी है तुम कह दो कि तुम्हारे लिए पाकीज़ा चीजें हलाल की गयीं और शिकारी जानवर जो तुमने शिकार के लिए सधा रखें है और जो अल्लाह ने तुम्हें बताये है उनमें के कुछ तुमने उन जानवरों को भी सिखाया हो तो ये शिकारी जानवर जिस शिकार को तुम्हारे लिए पकड़ रखें उसको खाओ और अल्लाह का नाम ले लिया करो और अल्लाह से डरते रहो इसमें तो शक ही नहीं कि अल्लाह बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (४)

व्याख्याः- मानव के लिए कौन सी चीज पवित्र है वो अल्लाह की कूदरत से वैज्ञानिकों ने कुछ हद तक बता दिया है और इस हिसाब से मौसम और हालात के अनुसार खुराक चुनना अल्लाह की मर्जी से मानव सीख चुका है। अंजान मानव जिसको इसकी जानकारी नहीं है वो अगर किसी जानकार से इसके बारे में पुछे तो उस जानकार मानव को चाहिये कि वो तमाम फायदेमंद चीजे उस अंजान सख्स को बता दे और पालतु जानवरों के द्वारा जो खुराक मानव को मिलती है उसकी भी जांच पड़ताल कर ले। जानवार पालने में हर तरीके की सावधानी बरतें जिसकी शिक्षा वैज्ञानिकों के द्वारा प्राप्त हुई और उस पर संतुष्टि भी रखे। जानवरों के साथ ज्यादती न करे यकीनन अल्लाह हिसाब लेने वाला है।

الْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبَاتُ وَطَعَامُ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حِلٌّ لَّكُمْ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُحْصَنَاتُ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ مُحْصِنِينَ غَيْرَ مُسَافِحِينَ وَلَا مُتَّخِذِي أَخْدَانٍ وَمَن يَكْفُرْ بِالْإِيمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ {5}

आज तमाम पाकीज़ा चीजें तुम्हारे लिए हलाल कर दी गयी है और एहले किताब की खुश्क चीजें गेहूँ तुम्हारे लिए हलाल है और तुम्हारी खुश्क चीजें गेहूँ उनके लिए हलाल है और आज़ाद पाक दामन औरतें और उन लोगों में की

आज़ाद पाक दामन औरतें जिनको तुमसे पहले किताब दी जा चुकी है जब तुम उनको उनके मेहर दे दो पाक दामिनी का इरादा करो न तो खुल्लम खुल्ला ज़िनाकारी का और न चोरी छिपे से आशनाई का और जिस शख़्स ने ईमान से इन्कार किया तो उसका सब किया अकारत हो गया और आख़ेरत में भी वही घाटे में रहेगा (५)

व्याख्याः- मानव के लिये वो तमाम लाभदायक चीजें अल्लाह ने प्राकृति में मौजूद रखी और वैज्ञानिकों ने उसकी विशेषता लोगों तक पहुँचाई, चाहे धार्मिक पुस्तकें द्वारा या वैज्ञानिकों के द्वारा लोगों को मिले वो सब खुराक के तौर पर जायज है। गैर सम्प्रदायिक औरत या मर्द को विवाह के लिए हलाल रखा गया ताकि एक-दूसरे की तहजीब का अदल-बदल हो। विवाह के बगैर यौन सम्बन्ध या छुप कर अपने गंदे और अपवित्र विचार को बढ़ावा देना गुनाह है।

पैगामः- इस आयत में किताबियों की खुराक को हलाल कहा गया है तो ऐसी सूरत में क्रिस्चन मजहब में शराब और सुअर का गोस्त खाया जाता है, क्या ये हर मजहब के लोगों के लिए हलाल होगा? इस आयत में पुस्तक ''वैज्ञानिक पुस्तक'' की तरफ इशारा है, धार्मिक पुस्तकें नहीं।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ فَاغْسِلُوا وُجُوهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوا بِرُؤُوسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ وَإِن كُنتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوا وَإِن كُنتُم مَّرْضَىٰ أَوْ عَلَىٰ سَفَرٍ أَوْ جَاءَ أَحَدٌ مِّنكُم مِّنَ الْغَائِطِ أَوْ لَامَسْتُمُ النِّسَاءَ فَلَمْ تَجِدُوا مَاءً فَتَيَمَّمُوا صَعِيدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوا بِوُجُوهِكُمْ وَأَيْدِيكُم مِّنْهُ مَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُم مِّنْ حَرَجٍ وَلَٰكِن يُرِيدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ {6}

ऐ इमानदारों जब तुम नमाज़ के लिये आमादा हो तो अपने मुँह और कोहनियों तक हाथ धो लिया करो और अपने सरों का और टखनों तक पाँवों का मसाह कर लिया करो और अगर तुम हालते जनाबत में हो तो तुम गुस्ल कर लो और अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से किसी को पैख़ाना निकल आए या औरतों से हमबिस्तरी की हो और तुमको पानी न मिल सके तो पाक ख़ाक से तैमूम कर लो यानि उससे अपने मुँह और अपने हाथों का मसा कर लो अल्लाह तो ये चाहता ही नहीं कि तुम पर किसी तरह की तंगी करे बल्कि वो ये चाहता है कि पाक व पाकीज़ा कर दे और तुमपर अपनी नेअमते पूरी कर दे ताकि तुम शुक्रगुज़ार बन जाओ (६)

व्याख्याः- हर मानव अपने शरीर को साफ-सुथरा रखे और इसके साथ-साथ अपनी रुहानी पाकीजगी को भी बरकरार रखें। अल्लाह मानव को पवित्र और परिछन्न देखना ही पसंद करते है।

पैगामः- इस आयत में ''तयमम'' नाम की एक रश्म का उल्लेख किया गया है और वो यह है कि जब लोगों को पानी न मिले तो मिट्टी से अपने हाथ और मुँह की सफाई करें। इस बात को ''तयमम'' कहा गया है। सवाल यह है कि क्या मिट्टी से हाथ और मुँह की सफाई हो जाती है? ये एक रुहानी बात है जो सिर्फ मानव को जहनी तसल्ली देती है, सफाई नहीं। गांव-देहात में आज भी लोग अपने निजी काम के बाद मिट्टी से हाथ धोते है लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि जमीन की मिट्टी को मुँह पर मल कर सफाई की जाये। कहीं-कहीं की मिट्टी को अपने चेहरे पर मल कर साफ-सुथरा हुआ जा सकता है जैसे कि ''मुलतानी मिट्टी'' लेकिन हर जगह की मिट्टी में ये विशेषता नहीं पाई जाती। इसलिए इस आयत में ''पवित्र मिट्टी'' का जिक्र किया गया है।

وَاذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ وَمِيثَاقَهُ الَّذِي وَاثَقَكُم بِهِ إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ {7}

और जो एहसानात अल्लाह ने तुमपर किए है उनको और उस को याद करो जिसका तुमसे पक्का इक़रार ले चुका है जब तुमने कहा था कि हमने सुना और दिल से मान लिया और अल्लाह से डरते रहो क्योंकि इसमें ज़रा भी शक नहीं कि अल्लाह दिलों के राज़ से भी बाख़बर है (७)

व्याख्याः- प्रकृति की हर बात पर ईमान वाले गहरा ध्यान दें और उसे बिगाड़ने की कोशिश न करें। मानव और प्राकृति के दरमियान जो एहद है इससे बढ़कर मानव प्राकृति को इस्तेमाल न करे यानी प्रकृति को अपनी हवस का निशाना न बनाये । सुनकर और समझमकर प्रकृति का इस्तेमाल करें और प्रकृति बिगड़ने पर जो तकलीफें मानव को होंगी उससे डरे और अल्लाह अन्तर्यामी है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا قَوَّامِينَ لِلَّهِ شُهَدَاءَ بِالْقِسْطِ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَآنُ قَوْمٍ عَلَىٰ أَلَّا تَعْدِلُوا اعْدِلُوا هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوَىٰ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ {8}

ऐ ईमानदारों अल्लाह के लिए इन्साफ़ के साथ गवाही देने के लिए तैयार रहो और तुम्हें किसी क़बीले की अदावत इस जुर्म में न फँसवा दे कि तुम नाइन्साफी करने लगो तुम इन्साफ़ करो यही परहेज़गारी से बहुत क़रीब है और अल्लाह से डरो क्योंकि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे ज़रूर जानता है (८)

व्याख्याः- ईमान वाले लोग अपने खातिर प्रकृति की हिफाजत में यानी प्रकृति बिगाड़ने वाले लोगों के विरुद्ध खड़े हो जाये और यही हक है कि अल्लाह को किसी की मदद की आवश्यकता नहीं है। मानव जितनी जल्दी हक को समझेगा और इसकी सुरक्षा में लगा रहेगा इसमें इसकी खुद की भलाई है। प्रकृति बिगाड़ने वाली सम्प्रदाय (पापी) का नजायज ऐशो-आराम से ईमान वाले प्रभावित न हो और परहजेगारी पर यकीन रखें और अल्लाह मानवों के कामों से बाखबर है।

وَعَدَ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُم مَّغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ {9}

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए अल्लाह ने वायदा किया है कि उनके लिए मग़फ़ेरत और बड़ा सवाब है (९)

व्याख्याः- पुण्य और पवित्र काम करने वालों का फल पवित्र होता है । प्रकृति के नियमानुसार हर काम का बदला उसके बराबरी का होता है और यही अल्लाह का वादा है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ {10}

और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह जहन्नुमी है ((१०)

व्याख्याः- प्राकृति के नियमों को ठुकराने और बिगाड़ने वाले लोग (पापी) अशांति के नर्क में रहते है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَن يَبْسُطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ {11}

ऐ इमानदारों अल्लाह ने जो एहसानात तुमपर किए हैं उनको याद करो और ख़ूसूसन जब एक क़बीले ने तुम पर दस्त दराज़ी का इरादा किया था तो अल्लाह ने उनके हाथों को तुम तक पहुँचने से रोक दिया और अल्लाह से डरते रहो और मोमिनीन को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए (११)

व्याख्याः- अल्लाह ने प्रकृतिक तौर पर मानव को हर तरीके से आराम उपलब्ध करवाया। मानव को याद रखना चाहिये कि पापी यानी गुनहगार लोगों ने जब-जब समाज को नुकसान पहुँचाना चाहा तो अल्लाह की मदद से समाज में पापियों के हाथ शान्ति चाहने वाले लोगों तक न पहुँचाने दिये। यानी कुछ वक्त तक पापियों को मोहलत देने के बाद उनके पापों पर काबू किया और समाज में नेक असुलों का संतुलन बरकरार रखा। ईमान वाले हमेशा अल्लाह के असुलों पर भरोसा रखते है।

पैगामः- जब-जब समाज में पाप बढ़ जाते हैं प्रेम और शांति चाहने वाले लोगों की तकलीफें बढ़ जाती है तब-तब अल्लाह अपने नियमों को रसुलों के द्वारा दुनियां में कायम करते है और समाज में पाप की संख्या को कम करते है।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيبًا وَقَالَ اللَّهُ إِنِّي مَعَكُمْ لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلَاةَ وَآتَيْتُمُ الزَّكَاةَ وَآمَنتُم بِرُسُلِي وَعَزَّرْتُمُوهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّأُكَفِّرَنَّ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ فَمَن كَفَرَ بَعْدَ ذَٰلِكَ مِنكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ {12}

और इसमें भी शक नहीं कि अल्लाह ने बनी इसराईल से एहद लिया था और हम ने इनमें के बारह सरदार उनपर मुक़र्रर किए और अल्लाह ने बनी इसराईल से फ़रमाया था कि मैं तो यक़ीनन तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम भी पाबन्दी से नमाज़ पढ़ते और ज़कात देते रहो और हमारे पैग़म्बरों पर ईमान लाओ और उनकी मदद करते रहो और अल्लाह क़र्जे हसना देते रहो तो मैं भी तुम्हारे गुनाह तुमसे ज़रूर दूर करूंगा और तुमको बेहिश्त के उन बाग़ों में जा पहुँचाऊँगा जिनके नीचे नहरें जारी है फिर तुममें से जो शख़्स इसके बाद भी इन्कार करे तो यक़ीनन वह राहे रास्त से भटक गया (१२)

व्याख्याः- बनी ईसरायिल के लोग अल्लाह के नियमों के मुताबिक चलते थे, बाद में उनमें मतभेद पैदा हुआ और १२ किस्म के ख्यालात पैदा हुए। फिर अल्लाह की मर्जी से उन्होंने सच्चाई को महसूस किया और मोहब्बत, इंसानियत (नमाज और जकात, दान) को इख्तियार किया और रसुलों के सच्चे असुलों पर जो अल्लाह ने रसुलों द्वारा लोगों को दिये उस पर कायम रहने की प्रतिज्ञा की और इस तरह नेकियों के बदले उन्होंने सकुन की जिन्दगी हासिल की। उस सकुन की जन्नत में नहर की पानी तरह ठंडक और जिसने इन नियमों का विरुद्ध किया वो पापी गुनहगार हुए।

पैगामः- वर्तमान तजुर्मों के अनुसार इस आयत पर बहुत से सवालात हो सकते है!

१. बनी इसरायिल एक सम्प्रदाय है और तमाम सम्प्रदायों से अगर वादा किया जाए तो क्या अल्लाह तमाम सम्प्रदाय के सामने उपस्थित थे? और क्या ये किसी विशेष मानव का एहद है? ये ध्यान रहे कि आयत कि इस लाइन में किसी दूसरे मानव ने अल्लाह की तरफ से कहा है और वो वादा क्या था?
२. जब कोई सम्प्रदाय का सरदार नियुक्त होता है, तो क्या अल्लाह सामने रहकर यानी उपस्थित होकर सरदार को चुनता है? यानी सम्प्रदाय की अंदुनी सियासत में अल्लाह की दखलअंदाजी।

३. फिर अल्लाह ने इस सियासत में साथ देने का वादा भी फरमाया है?

४. इसके बाद बनी इसरायिल को नमाज और जकात देने का एलान किया मतलब ये कि बनी इसरायिल में भी नमाज और जकात देने का चलन था तो मुसलमानों को नया क्या हासिल हुआ। मुसलमानों का और बनी इसरायिल के नमाज का तरीका क्या एक-सा है?

५. और लोगों से कहा गया कि पैगम्बरों की मदद करे क्या अल्लाह की मदद पैगम्बरों के पास नहीं थी? कि अल्लाह लोगों से पैगम्बरों की मदद के लिए अनुरोध कर रहा है? और क्या ये अल्लाह के सम्मान को गिराने की कोशिश नहीं है?

६. इसके बाद अल्लाह को कर्ज देने की बात कही गयी ताकि मानव को बेहतर जिन्दगी मिले, क्या खुदा रिश्वत खोर है? कुरान कहता है कि हर किसी को उसके अमाल का बदला मिलेगा? तो क्या जो जकात दे सकता हो उसको हर खून माफ और पैसे वाले अपने दौलत के बल पर अपने गुनाह माफ करवाते रहेंगे और जो नहीं दे सकते उनका क्या होगा? इन सवालों के आधार पर मैं समझता हूँ कि मेरी व्याख्या सबसे उत्तम और वैज्ञानिक है और समझदार इसे मानेंगे। जहालत प्रसन्न और कुसंस्कार में डूबा हुआ मानव जरूर इसका विरोध करेगा।

فَبِمَا نَقْضِهِم مِّيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسِيَةً يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ عَن مَّوَاضِعِهِ وَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهِ وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلَىٰ خَائِنَةٍ مِّنْهُمْ إِلَّا قَلِيلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ {13}

पस हमने उनकी एहद शिकनी की वजह से उनपर लानत की और उनके दिलों को हमने सख़्त बना दिया कि कलमात को उनके असली मायनों से बदल कर दूसरे मायनो में इस्तेमाल करते है और जिन जिन बातों की उन्हें नसीहत की गयी थी उनमें से एक बड़ा हिस्सा भुला बैठे और अब तो उनमें से चन्द आदमियों के सिवा एक न एक की ख़्यानत पर बराबर मुत्तेला होते रहते हो तो तुम उन को माफ़ कर दो और दरगुज़र करो अल्लाह एहसान करने वालों को ज़रूर दोस्त रखता है (१३)

व्याख्याः- जो लोग अल्लाह के नियमों को तोड़े यानी अपने गुनाहों के जरिया समाज की शान्ति को बिगाड़े ऐसे लोगों पर अल्लाह का अजाब और उनके दिल में सख्त गलतफैमी और ऐसे लोग ही अल्लाह के नियमों को अपने मकसद से बदल देते है। और जिन बातों से उनको मना किया जाये या जिन नियमों को अल्लाह के रहम से समाज में लागू किया जाये ऐसे लोग उसके कुछ हिस्सों को बिगाड़ने की कोशिश करते है और ईमान वाले लोगों को इन लोगों की करतूतों की खबर होने के बाद मुमकिन हद तक दर-गुजर करे और माफ करें ताकि गलत करतूतों की वजह से ईमान वालों का सकून न बिगड़े और अल्लाह सब्र करने वालों का दोस्त है।

وَمِنَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ أَخَذْنَا مِيثَاقَهُمْ فَنَسُوا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوا بِهِ فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللَّهُ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ {14}

और जो लोग कहते है कि हम नसरानी है उनसे हमने इमान का एहद लिया था मगर जब जिन जिन बातों की उन्हें नसीहत की गयी थी उनमें से एक बड़ा हिस्सा भुला बैठे तो हमने भी क़यामत तक उनमें बाहम अदावत व दुशमनी की बुनियाद डाल दी और अल्लाह उन्हें बहुत जल्द बता देगा कि वह क्या क्या करते थे (१४)

व्याख्याः- किस्चन ने अपने समाज को रिश्तों के बंधन से आजाद रखा । रिश्तों का बंधन अल्लाह का एहद है। क्रिस्चन ने रिश्तों की एहमियत को छोटी नजर से देखा यानी अल्लाह की असुलों का एक हिस्सा भुला दिया और इस वजह से हमेशा के लिया आपस में समाजिक मतभेद को जिन्दा रखा ।

पैगामः- १. इस आयत में नुसरानियों (christian) से अल्लाह के एहद की बात की गयी है फिर नुसरानियों ने अल्लाह के एक हिस्से को भुला दिया..... । कुरान शरीफ का फरमान है कि अल्लाह का कानून कभी नहीं बदलता । क्या अल्लाह की नसिहत इतनी कमजोर थी कि नुसरानी उसे बदल सके?

२. जब अल्लाह ने एलान कर दिया कि कयामत तक उनके दरमियान दुश्मनी और नफरत डाल रखी है तो इस एलान या चुनौती का क्या मतलब?

३. हदीसी तजुर्मों के अनुसार अगर ये आयत क्रिस्चन के दो सम्प्रदाय कैथलिक और प्रोटेस्टेन की तरफ इशारा है तो आज के दौर में इन दोनों सम्प्रदायों के सारे मतभेद मिट चुके है तो कयामत तक दुश्मनी और नफरत की बात किस तरह साबित हुई?

४. क्या इस तरह की फिरका परस्ती मुसलमानों में नहीं है? अगर मुसलमान इस आयत की बुनियाद पर नुसरानियों पर इलजाम लगाये कि इनकी पुस्तक बदल चुकी है तो सवाल ये आता है कि मुसलमानों को ये कहने का हक किसने दिया कि अल्लाह का कलाम बदल गया..... क्या वाकई अल्लाह का कलाम बदल सकता है?

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيرًا مِمَّا كُنتُمْ تُخْفُونَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَعْفُو عَن كَثِيرٍ قَدْ جَاءَكُم مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ {15}

ऐ एहले किताब तुम्हारे पास हमारा पैगम्बर आ चुका जो किताबे अल्लाह की उन बातों में से जिन्हें तुम छुपाया करते थे बहुतेरी तो साफ़ साफ़ बयान कर देगा और बहुतेरी से दरगुज़र करेगा तुम्हरे पास तो अल्लाह की तरफ़ से एक नूर और साफ़ साफ़ बयान करने वाली किताब आ चुकी है (१५)

व्याख्याः- अल्लाह की पुस्तक के साथ सम्प्रदाय के सोच रखने वाले लोग जान ले कि जो बाते अल्लाह के नियमों से बाहर है वो समाज में प्रकृति तौर पर प्रकट होती है चाहे वो पैगम्बरों के द्वारा हो या वैज्ञानिकों के द्वारा। ये सच्चाई की रोशनी अल्लाह की तरफ से है और इस रोशनी के द्वारा शान्ति चाहने वाले लोगों की अंजाने में की गई बेवकुफी की माफी होती है।

يَهْدِي بِهِ اللَّهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهُ سُبُلَ السَّلَامِ وَيُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ بِإِذْنِهِ وَيَهْدِيهِمْ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ {16}

जो लोग अल्लाह की खुशनूदी के पाबन्द हैं उनको तो उसके ज़रिए से राहे निजात की हिदायत करता है और अपने हुक्म से तारीकी से निकालकर रौशनी में लाता है और राहे रास्त पर पहुँचा देता है (१६)

व्याख्याः- जिससे अल्लाह अपने असुलों पर चलने वाले लोगों को मुक्ति का रास्ता दिखाता है और उसे अंधेरे (कुसंस्कार) से निकाल कर रोशनी में ले जाता है और यही सीधा रास्ता है।

पैगामः- सच्चाई की रोशनी हर कुसंस्कार को गलत साबित करती है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ قُلْ فَمَن يَمْلِكُ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ أَن يُهْلِكَ الْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهُ وَمَن فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {17}

जो लोग उसके क़ायल हैं कि मरियम के बेटे मसीह बस अल्लाह हैं वह ज़रूर काफ़िर हो गए उनसे पूँछो तो कि भला अगर अल्लाह मरियम के बेटे मसीह और उनकी माँ को और जितने लोग ज़मीन में हैं सबको मार डालना चाहे तो कौन ऐसा है जिसका अल्लाह से भी ज़ोर चले और सारे आसमान और ज़मीन में और जो कुछ भी उनके दरम्यिान में है सब अल्लाह ही की सल्तनत है जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है (१७)

व्याख्याः- कुछ लोग रसुलों को खुदा समझते है जैसे की मरियम का बेटा ईसा! लेकिन ये एक तरह का कुसंस्कार है और इसकी वजह अल्लाह की लामहदुद ताकत को इनकार करना है। सारे रसुल चाहे वो ईसा हो या कोई और हर किसी की मृत्यु प्रकृति तौर पर हुई । आकाश और पृथ्वी की तमाम वस्तुएं एटम की शक्ति से बनती है और ये शक्ति जिस तरह चाहे उसको वजूद में लाती है और इस शक्ति की बादशाही से ही दुनियां कायम है और हर चीज पर यही शक्ति शासन करती है।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَىٰ نَحْنُ أَبْنَاءُ اللَّهِ وَأَحِبَّاؤُهُ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُم بِذُنُوبِكُم بَلْ أَنتُم بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ يَغْفِرُ لِمَن يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَلِلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ {18}

और नसरानी और यहूदी तो कहते है कि हम ही अल्लाह के बेटे और उसके चहेते है उनसे तुम कह दो तो फिर तुम्हें तुम्हारे गुनाहों की सज़ा क्यों देता है बल्कि तुम भी उसकी मख़लूक़ात से एक बशर हो अल्लाह जिसे चाहेगा बख़ देगा और जिसको चाहेगा सज़ा देगा आसमान और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों के दरम्यिान में है सब अल्लाह ही का मुल्क है और सबको उसी की तरफ़ लौट कर जाना है (१८)

व्याख्याः- कुछ यहूदी और क्रिस्चन दावा करते है कि वही लोग अल्लाह के औलाद है और वही लोग अल्लाह के प्रिय है लेकिन सवाल ये आता है कि अगर वो अल्लाह के प्रिय है तो उन्हें क्यों शारीरीक कष्ट मिलता है। सच्चाई तो यह है कि सारे मानव प्रकृति की सृष्टि है दूसरों प्राणियों की तरह । इस तरह प्रकृति तौर पर हर मानव को दुःख-सुख भुगतना पड़ता है। आकाश और पृथ्वी सारे अल्लाह द्वारा रचित है और हर प्राणी प्रकृति से ही उत्पन्न होकर प्रकृति में ही विलीन हो जाता है।

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ جَاءَكُمْ رَسُولُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلَى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَن تَقُولُوا مَا جَاءَنَا مِن بَشِيرٍ وَلَا نَذِيرٍ فَقَدْ جَاءَكُم بَشِيرٌ وَنَذِيرٌ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {19}

ऐ एहले किताब जब पैग़म्बरों की आमद में बहुत रूकावट हुयी तो हमारा रसूल तुम्हारे पास आया जो एहकामे अल्लाह को साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम कहीं ये न कह बैठो कि हमारे पास तो न कोई खुशख़बरी देने वाला आया न डराने वाला अब तो यक़ीनन तुम्हारे पास खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला पैग़म्बर आ गया और अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है (१९)

व्याख्याः- रसुलों के द्वारा लोगों को रूहानी तौर पर सही गलत की शिक्षा मिलती है और सही-गलत पहचान देने वाले रसुलों के आगमन कालचक्र में लगी रहती है।

पैगामः- मानव की अन्तात्मा को समय चक्र के साथ-साथ पवित्र करना ही रसुलों का काम है।

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيكُمْ أَنبِيَاءَ وَجَعَلَكُم مُّلُوكًا وَآتَاكُم مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ {20}

ऐ रसूल उनको वह वक्त याद दिलाओ जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा था कि ऐ मेरी क़ौम जो नेअमते अल्लाह ने तुमको दी है उसको याद करो इसलिए कि उसने तुम्हीं लोगों से बहुतेरे पैग़म्बर बनाए और तुम ही लोगों को बादशाह बनाया और तुम्हें वह नेअमतें दी है जो सारी अल्लाहयी में किसी एक को न दीं (२०)

व्याख्याः- मुसा ने अपने सम्प्रदाय को वो याद करने के लिये कहा जो अल्लाह की प्रकृति द्वारा केवल इस सम्प्रदायिक को प्राप्त थी और वो है ज्ञान। और ये ज्ञान पृथ्वी के और किसी मानव के पास न था।

पैगामः- कोई भी वैज्ञानिक अविष्कार कुछ विशेष लोगों के दिमाग में ही बनता है और ये वैज्ञानिक आश्चर्य हर मानव के पास नहीं होती । बाद में मानव को उससे फायदा जरूर मिलता है लेकिन सृष्टि किसी विशेष चुने हुए मानव के द्वारा ही होती है। मिश्र के लोगों के पास कुछ ऐसे वैज्ञानिक तथ्य थे जिसका उदाहरण हमें पिरामिड और मम्मी से मिलती है।

يَا قَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِي كَتَبَ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَى أَدْبَارِكُمْ فَتَنقَلِبُوا خَاسِرِينَ {21}

ऐ मेरी क़ौम की उस मुक़द्दस ज़मीन में जाओ जहाँ अल्लाह ने तुम्हारी तक़दीर में लिख दी है और दुशमन के मुक़ाबले पीठ न फेरो इसमें तो तुम खुद उलटा घाटा उठाओगे (२१)

व्याख्याः- तो इस लिये मानव सम्प्रदाय को अल्लाह की करुणा याद करते हुए उनके आदर्शों पर चलना मानव का कर्त्तव्य है और उनके आदर्श पालन करते हुए जो मानव पीछे हटते है वो खुद क्षतिग्रस्त हो जाते हैं।

पैगामः- प्रेम, शिक्षा, भाईचारा, अहिंसा, पवित्रता, शांति और सच्चाई इन सारें आदर्शों को अपनाना ही अल्लाह की "पवित्र भूमि" में प्रवेश करना है।

قَالُوا يَا مُوسَى إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ وَإِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا حَتَّىٰ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِن يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دَاخِلُونَ {22}

वह लोग कहने लगे कि ऐ मूसा इस मुल्क में तो बड़े ज़बरदस्त लोग रहते है और जब तक वह लोग इसमें से निकल न जाएँ हम तो उसमें कभी पाँव भी न रखेंगे हाँ अगर वह लोग खुद इसमें से निकल जाएँ तो अलबत्ता हम ज़रूर जाएँगे (२२)

व्याख्याः- मुसा को लोगों ने पापी लोगों का शक्तिशाली होने के बारे में कहा और मुसा के सम्प्रदायक पापी लोगों से भयभीत हो गये और उनके खिलाफ जाने से डरे।

قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غَالِبُونَ وَعَلَى اللَّهِ فَتَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {23}

वह आदमी जो अल्लाह का ख़ौफ़ रखते थे और जिनपर अल्लाह ने ख़ास अपना फ़ज़ल किया था बेधड़क बोल उठे कि उनपर हमला करके इधर तुम फाटक में घुसे और तुम्हारी जीत हो गयी और अगर सच्चे ईमानदार हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रखो (२३)

व्याख्याः- और अल्लाह के अनुकम्पा से पापी लोगों के दायरे में कदम रखते ही ईमान वालों को जीत हासिल होगी और जो लोगा अल्लाह के करुणा पर निर्भरशील है उनकी जीत निश्चित है।

قَالُوا يَا مُوسَى إِنَّا لَن نَّدْخُلَهَا أَبَدًا مَّا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ أَنتَ وَرَبُّكَ فَقَاتِلَا إِنَّا هَاهُنَا قَاعِدُونَ {24}

वह कहने लगे ए मूसा जब तक वह लोग इसमें है हम तो उसमें हरगिज़ पाँव न रखेंगे हाँ तुम जाओ और तुम्हारा अल्लाह जाए ओर दोनों लड़ो हम तो यहीं जमे बैठे है (२४)

व्याख्याः- लोगों ने मुसा के साथ पाप कर्मों के विरुद्ध युद्ध करने से इनकार किया और मुसा से कहा की अपने खुदा के साथ मिलकर पापियों के खिलाफ युद्ध करें '

قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ {25}

तब मूसा ने अर्ज़ की अल्लाह तू खूब वाकिफ़ है कि अपनी ज़ाते ख़ास और अपने भाई के सिवा किसी पर मेरा क़ाबू नहीं बस अब हमारे और उन नाफ़रमान लोगों के दरमियान जुदाई डाल दे (२५)

व्याख्याः- मुसा ने प्रार्थनी की और कहा की वो और उसके भाई के अलावा किसी पर उनका अधिकार नहीं है।

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ {26}

हमारा उनका साथ नहीं हो सकता तो उनकी सज़ा यह है कि उनको चालीस बरस तक की हुकूमत नसीब न होगा यह लोग जंगल मे सरगरदाँ रहेंगे तो फिर तुम इन बदचलन बन्दों पर अफ़सोस न करना (२६)

व्याख्याः- और पाप के खिलाफ युद्ध करने से इनकार करने वाले लोगों को ४० साल तक भी शान्ति प्राप्त नहीं हुई।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ {27}

तुम इन लोगों से आदम के दो बेटों का सच्चा क़िस्सा बयान कर दो कि जब उन दोनों ने अल्लाह की दरगाह में नियाज़ें चढ़ाई तो एक की क़ुबूल हुयी और दूसरे की नज़र न क़ुबूल हुयी तो हाबील से कहने लगा मै तो तुझे ज़रूर मार डालूंगा उसने जवाब दिया कि अल्लाह तो सिर्फ़ परहेज़गारों की नज़र क़ुबूल करता है (२७)

व्याख्याः- हाइड्रोजन और आक्सीजन से जब मानव की पैदाइश हुई तो मानव के अन्दर दो किस्म की विवेक की श्रृष्टि हुई और मानव को सही गलत की पहचान दी गई। सही काम करने वालों की हर प्रार्थना कबूल की गई और गलत काम करने वालों की प्रार्थना कबूल नहीं की जाती।

لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ {28}

अगर तुम मेरे क़त्ल के इरादे से मेरी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाओगे मै तो तुम्हारे क़त्ल के ख़्याल से अपना हाथ बढ़ाने वाला नही मै तोउस अल्लाह से जो सारे जहाँन का पालने वाला है डरता हूँ (२८)

व्याख्याः- पाप कर्म करने वाले लोग हमेशा पुण्य काम करने वाले लोगों की हत्या करने के लिये अपने हाथ प्रसारित करते है लेकिन पुण्य काम करने वाले लोग कभी भी मानव की हत्या नहीं कर सकते क्योंकि वो अल्लाह और उसके आदर्शों से प्रेम करते है और प्रेम करने वाले मानव अपने प्रेमी को नाराज करना नहीं चाहता।

إِنِّي أُرِيدُ أَنْ تَبُوءَ بِإِثْمِي وَإِثْمِكَ فَتَكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ {29}

मै तो ज़रूर ये चाहता हूँ कि मेरे गुनाह और तेरे गुनाह दोनों तेरे सर हो जाँए तो तू जहन्नुमी बन जाए और ज़ालिमों की तो यही सज़ा है (२९)

व्याख्याः- पाप करने वाले लोगों को अपने कर्मों का फल और समाज की दुःख तकलीफ का बोझ भी उठाना पड़ता है और वो अपने आपको नर्क जनतना से बचा नहीं सकते।

पैगामः- नेक मानव कभी भी अभिश्राप नहीं देता और अपने पाप का फल खुद भुगतने पर तैयार रहते है। स्वर्ग और नर्क में जाना मानव के अधिकार में नहीं है और इसलिए पवित्र विवेक वाले मानव कभी भी दूसरों के साथ अपनी तुलना नहीं करते'

فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ {30}

फिर तो उसके नफ़्स ने अपने भाई के क़त्ल पर उसे भड़का ही दिया आख़िर उस उसको मार ही डाला तो घाटा उठाने वालों में से हो गया (३०)

व्याख्याः- हर मानव भाईचारा के रिश्तों में बंधे हुए है और एक-दूसरों का कत्ल करना अपने समाज की ही क्षति करना है।

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِي سَوْءَةَ أَخِيهِ قَالَ يَا وَيْلَتَا أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِي فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ {31}

तो अल्लाह ने एक कौवे को भेजा कि वह ज़मीन को कुरेदने लगा ताकि उसे को दिखा दे कि उसे अपने भाई की लाश क्योंकर छुपानी चाहिए वह कहने लगा हाए अफ़सोस क्या मै उस से भी आजिज़ हूँ कि उस कौवे की बराबरी कर सकूँ कि अपने भाई की लाश छुपा देता अलगरज़ वह बहुत पछताया (३१)

व्याख्याः- शैतान हमेशा काले कौओ की तरह होते है और मानव को पाप और अपवित्र करतूत सिखाता रहता है और इस तरह शैतान लोगों को अपने पाप कर्मों को छिपाने की कोशिश करना भी सीखाते है लेकिन मानव उसे छिपा नहीं सकता।

पैगामः- पाप मानव की सबसे ज्यादा लज्जाजनक, अपवित्र चरित्र है और इस आयत में काले कउआ की उदाहरण देकर इन चरित्रों का व्याख्या किया गया।

مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ كَتَبْنَا عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ أَنَّهُ مَن قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًا وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا وَلَقَدْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنَاتِ ثُمَّ إِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم بَعْدَ ذَٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُونَ {32}

इसी सबब से तो हमने बनी इसराईल पर वाजिब कर दिया था कि जो शख़्स किसी को न जान के बदले में और न मुल्क में फ़साद फैलाने की सज़ा में क़त्ल कर डालेगा तो गोया उसने सब लोगों को क़त्ल कर डाला और जिसने एक आदमी को जिला दिया तो गोया उसने सब लोगों को जिला लिया और उन के पास तो हमारे पैग़म्बर रौशन मौजिज़े लेकर आ चुके हैं फिर उसके बाद भी यक़ीनन उसमें से बहुतेरे ज़मीन पर ज़्यादतियाँ करते रहे (३२)

व्याख्याः- यदि कोई मानव निर्दोष व्यक्ति अथवा पवित्र विवेक वाले लोगों की हत्या करे तो निश्चित रूप से मानवता की हत्याकारी है। और अगर कोई व्यक्ति किसी मानव की रक्षा करता है तो वो पूरी मानवता की रक्षा करता है। और ये नियम रसुलों द्वारा समझाने के बावजूद भी उसका उल्लंघन करने वाले लोगों का अस्तित्व समाज में रहता है।

पैगामः- पाप, हत्या और फसाद करने वाला मानव जब समाज की नजर में सजा के काबिल बनते है तब कानून द्वारा उसकी हत्या करना सही है क्योंकि उसकी हत्या से ही मानवता और शान्ति को सुरक्षा दी जाती है और हर कानून जो मानवी समाज में मौजूद है वो बिलावास्ता अल्लाह की ही मंजूरी से मानवी समाज में है और जिस कानून को अल्लाह नहीं चाहता और प्राकृतिक तौर पर उसे बातिल कर देते है।

إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَن يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُم مِّنْ خِلَافٍ أَوْ يُنفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ذَٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ {33}

जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते भिड़ते हैं और फ़साद फैलाने की ग़रज़ से मुल्को दौड़ते फिरते हैं उनकी सज़ा बस यही है कि या तो मार डाले जाएँ या उन्हें सूली दे दी जाए या उनके हाथ पाँव हेर फेर कर एक तरफ़ का हाथ दूसरी तरफ़ का पाँव काट डाले जाएँ या उन्हें सरज़मीन से शहर बदर कर दिया जाए यह रूसवाई तो उनकी दुनिया में हुयी और फिर आख़ेरत में तो उनके लिए बहुत बड़ा अज़ाब ही है (३३)

व्याख्याः- जो मानव अल्लाह और उसकी प्रकृति की सच्चाई बताने वाले रसुलों के विरुद्ध काम करें और अल्लाह के आदर्शों को बिगाड़े और समाज में अशांति और घृणा सृष्टि करें उसकी कानून द्वारा हत्या करें नहीं तो उसे तब तक कैद करें जब तक उसकी अशांत सोच उसके अपवित्र विचार को त्याग न दें और उसके तमाम काम काज को बंद करके उसे विकलांग बना दिया जाये।

पैगामः- इस आयत में पाप करने वाले लोगों के हाथ-पैर काटने का उपदेश दिया गया है । मानव के हाथ-पैर काटने से उसकी सोच-विचार नहीं बदलती और इसके हाथ पांव कटवाने के बाद उसको भीख मंगवाने से क्या फायदा। भीख मांगना भी गुनाह है। इस आयत में हाथ-पैर काटने का मतलब पापी मानव के तमाम कर्मकाण्ड को बंद करना है और अगर इस पर भी वो अपने पाप कर्मों से निवृत न हो तो उसकी हत्या करना ही समाज के लिये लाभदायक है।

إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِن قَبْلِ أَن تَقْدِرُوا عَلَيْهِمْ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {34}

मगर जिन लोगों ने इससे पहले कि तुम इनपर क़ाबू पाओ तौबा कर ली तो उनका गुनाह बख़्श दिया जाएगा क्योंकि समझ लो कि अल्लाह बेशक बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (३४)

व्याख्याः- पापी व्यक्ति गिरफ्तार होने से पहले अपने पाप कर्मों को न करने की प्रतिज्ञा करे और उसका पालन करें तो उसकी माफी के बारे में समाज को जरूर विचार करना चाहिये क्योंकि अल्लाह क्षमाकारी और दयालु है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَابْتَغُوا إِلَيْهِ الْوَسِيلَةَ وَجَاهِدُوا فِي سَبِيلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ {35}

ऐ ईमानदारों अल्लाह से डरते रहो और उसके ज़रिये की जुस्तजू में रहो और उसकी राह में जेहाद करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ (३५)

व्याख्याः- अच्छे काम करने वाले और संयमी मानव अल्लाह से प्रेम करते है । प्रेमी के रुठने का डर उसे सताता है और वो अल्लाह के करीब रहने की कोशिश करते है और उसके आदर्शों को ठीक-ठीक मानकर सच्चाई के रास्ते पर रहते हुए पापियों से जहाद करते है। ऐसे लोगों को ही सफलता प्राप्त होती है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنَّ لَهُم مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {36}

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया अगर उनके पास ज़मीन में जो कुछ है सब बल्कि उतना और भी उसके साथ हो कि रोज़े क़यामत के अज़ाब का मुआवेज़ा दे दे तब भी क़ुबूल न किया जाएगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (३६)

व्याख्याः- निश्चित जो मानव अल्लाह और उसके आदर्शों को नहीं मानते यानी काफिर उनके पास जितना भी फायदे या दौलत हो उन्हें इसके बदले में अशान्ति की अभिश्राप से मुक्ति नहीं मिल सकती।

पैगामः- ऐसे मानव की लालच, अहंकार और ईर्ष्या इतनी ज्यादा होती है कि इन्हें जितना दिया जाये या उन्हें समझाया जाए उनकी चाहत पुरी नहीं होती और वो सच्चाई समझ नहीं सकते।

يُرِيدُونَ أَن يَخْرُجُوا مِنَ النَّارِ وَمَا هُم بِخَارِجِينَ مِنْهَا وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ {37}

वह लोग तो चाहेंगे कि किसी तरह जहन्नुम की आग से निकल भागे मगर वहाँ से तो वह निकल ही नहीं सकते और उनके लिए तो दाएमी अज़ाब है (३७)

व्याख्याः- मानव जितना भी चाहे कि वो अशन्ति के नर्क से निकल जाये लेकिन ये असंभव है।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا جَزَاء بِمَا كَسَبَا نَكَالاً مِّنَ اللّهِ وَاللّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {38}

और चोर ख़्वाह मर्द हो या औरत तुम उनके करतूत की सज़ा में उनका हाथ काट डालो ये अल्लाह की तरफ़ से है और अल्लाह बड़ा ज़बरदस्त हिकमत वाला है (३८)

व्याख्याः- चोर नारी हो या पुरुष उनके हाथ काट दिये जाये यही उनकी सजा है।

पैगामः- हाथ काटकर किसी भी मानव को भीखारी बनाना अल्लाह का मकसद नहीं है, इस आयत में हाथ काटने का मतलब उस चोर मानव के सारे कर्मकाण्ड को खत्म करना।

فَمَن تَابَ مِن بَعْدِ ظُلْمِهِ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللّهَ يَتُوبُ عَلَيْهِ إِنَّ اللّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {39}

हाँ जो अपने गुनाह के बाद तौबा कर ले और अपने चाल चलन दुरूस्त कर लें तो बेशक अल्लाह भी तौबा कुबूल कर लेता है क्योंकि अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (३९)

व्याख्याः- जो मानव अपनी सीमा का उल्लंघन करने के बाद उसे न करने की प्रतिज्ञा करें और अपने चरित्र दोष का संघशोधन करे उसे अल्लाह की तरफ से जरूर माफी प्रदान होगी और अल्लाह दयालु है।

पैगामः- कुरान-शरीफ की बहुत सारी आयतें है जिसमें कहा गया है कि हर मानव को उसके किये की सजा और जजा भुगतनी होगी और समाज में भी यही नियम देखने को मिलते है। सवाल ये आता है कि जिन्दगी भर गुनाह करने के बाद मृत्यु से कुछ दिन पहले कोई पापी अगर तौबा करें तो क्या इसे माफी हासिल होगी? ये आयत उस बात को पुष्टि करती है कि मानव को उसके किये की सजा कुछ हद तक उसकी जिन्दगी में ही उसे प्राप्त होती है और तौबा करने यानी गुनाह न करने की प्रतिज्ञा करने के बाद उसे उसकी अन्तात्मा की तकलीफ से मुक्ति मिलती है।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ يُعَذِّبُ مَن يَشَاء وَيَغْفِرُ لِمَن يَشَاء وَاللّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {40}

ऐ शख़्स क्या तू नहीं जानता कि सारे आसमान व ज़मीन में ख़ास अल्लाह की हुकूमत है जिसे चाहे अज़ाब करे और जिसे चाहे माफ़ कर दे और अल्लाह तो हर चीज़ पर क़ादिर है (४०)

व्याख्याः- आकाश और पृथ्वी की हर वस्तु अल्लाह की अधिकार में है। शास्ती और क्षमा अल्लाह का अधिकार है जिसे चाहे क्षमा दे और जिसे चाहे शास्ती दे।

पैगामः- अणु परमाणु से बनी हुई ये दुनिया और आकाश की सारी वस्तुएं अल्लाह की अधिपत्तित्य प्रमाण करती है और विज्ञान इस बात का प्रमाण दे चुका है कि परमाणु के अन्दर की शक्ति ही सारे वस्तुओं को रुप और प्राण प्रदान करती है।

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ لاَ يَحْزُنكَ الَّذِينَ يُسَارِعُونَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِينَ قَالُوا آمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِن قُلُوبُهُمْ وَمِنَ الَّذِينَ هَادُوا سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ سَمَّاعُونَ لِقَوْمٍ آخَرِينَ لَمْ يَأْتُوكَ يُحَرِّفُونَ الْكَلِمَ مِن بَعْدِ مَوَاضِعِهِ يَقُولُونَ إِنْ أُوتِيتُمْ هَذَا فَخُذُوهُ وَإِن لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوا وَمَن يُرِدِ اللّهُ فِتْنَتَهُ فَلَن تَمْلِكَ لَهُ مِنَ اللّهِ شَيْئًا أُولَئِكَ الَّذِينَ لَمْ يُرِدِ اللّهُ أَن يُطَهِّرَ قُلُوبَهُمْ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَلَهُمْ فِي الآخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ {41}

ऐ रसूल जो लोग कुफ़्र की तरफ़ चले जाते है तुम उनका ग़म न खाओ उनमें बाज़ तो ऐसे है कि अपने मुँह कह देते है कि हम ईमान लाए हालाँकि उनके दिल बेईमान है और बाज़ ऐसे है कि झूठी बातें बहुत सुनते है ताकि कुफ़्फ़ार के दूसरे सम्प्रदाय को जो तुम्हारे पास नहीं आए है सुनाएँ ये लोग अल्फ़ाज़ की उनके असली मायने के बाद भी तहरीफ़ करते है कहते है कि उनकी तरफ़ से तुम्हें यही हुक्म दिया जाय तो उसे मान लेना और अगर यह हुक्म तुमको न दिया जाए तो उससे अलग ही रहना और जिसको अल्लाह ख़राब करना चाहता है तो उसके वास्ते अल्लाह से तुम्हारा कुछ ज़ोर नहीं चल सकता यह लोग तो वही है जिनके दिलों को अल्लाह ने पाक करने का इरादा ही नहीं किया उनके लिए तो दुनिया में भी रूसवाई है और आख़ेरत में भी बड़ा अज़ाब होगा (४१)

व्याख्याः- अवतार, पवित्र और पुण्य कामी मानव की "बुरे लोगों" के सबक देने का प्रयास विफल होने पर चिन्ताग्रस्त न हो । मौखिक तौर पर पवित्रता और पुण्य करने का दावा करने वाले और अन्दर से अपवित्र मानव का विवेक सर्वदा अपवित्र होता है। कुछ मानव ऐसे होते है जिनका काम सिर्फ जासूसी करना और यहूदियों में भी ऐसे कुछ लोग थे जो सत्य को बदल देते है। अल्लाह जिसे खराब करना चाहे सिर्फ वही खराब होता है। कोई भी बुरी चेष्टा अल्लाह के आगे विफल है।
पैगामः- मानव का काम सर्वदा खोज में लगे रहना, फल अल्लाह के अधिकार में होता है।

سَمَّاعُونَ لِلْكَذِبِ أَكَّالُونَ لِلسُّحْتِ فَإِن جَاؤُوكَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ وَإِن تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَن يَضُرُّوكَ شَيْئًا وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُم بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ {42}

ये झूठी बातों को बड़े शौक़ से सुनने वाले और बड़े ही हरामख़ोर है अगर ये लोग तुम्हारे पास आए तो तुमको इख़्तेयार है ख़्वाह उनके दरम्यिान फ़ैसला कर दो या उनसे किनाराकशी करो और अगर तुम किनाराकश रहोगे तो ये लोग तुम्हारा हरगिज़ कुछ बिगाड़ नहीं सकते और अगर उनमें फ़ैसला करो तो इन्साफ़ से फ़ैसला करो अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को दोस्त रखता है (४२)

व्याख्याः- झुठ को अंधविश्वास की तरह सुनकर अपने दिलोंदिमाग में बैठाने वाले लोग जो पाप को अपनी खुराक के तौर पर इस्तेमाल करते है ऐसे लोग अगर अपने फैसले के लिये या किसी मतभेद का हाल पुछने के लिये नेक लोगों के पास आये तो नेक लोग उनका फैसला जरूर करे। अगर फैसले में फसाद का डर हो तो उससे दूर रहे। यकीनन गुनाह करने वाले नेक लोगों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते और ईमान वालों को चाहिये की न्याय और हक के साथ फैसला करें, अच्छा फैसला करने वालों को अल्लाह दोस्त रखता है।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُونَكَ وَعِندَهُمُ التَّوْرَاةُ فِيهَا حُكْمُ اللَّهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ وَمَا أُولَٰئِكَ بِالْمُؤْمِنِينَ {43}

और जब ख़ुद उनके पास तौरेत है और उसमें अल्लाह का हुक्म है तो फिर तुम्हारे पास फैसला कराने को क्यों आते है और इसके बाद फिर जाते है ओर सच तो यह है कि यह लोग ईमानदार ही नहीं है (४३)

व्याख्याः- तौरैत जैसी धर्म पुस्तक होने के बावजूद यहूदी अपना फैसला हजरत मोहम्मद से पुछते थे उनको अजमाने की नियत से। और यहूदी फिर अपने पुराने कु-संस्कार में लौट जाते।

إِنَّا أَنزَلْنَا التَّوْرَاةَ فِيهَا هُدًى وَنُورٌ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِن كِتَابِ اللَّهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلًا وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ {44}

बेशक हम ने तौरेत नाज़िल की जिसमें हिदायत और नूर है उसी के मुताबिक़ अल्लाह के फ़रमाबरदार बन्दे यहूदियों को हुक्म देते रहे और अल्लाह वाले और उलेमाए भी किताबे अल्लाह से जिसके वह मुहाफ़िज़ बनाए गए थे और वह उसके गवाह भी थे पस तुम लोगों से न डरो मुझ ही से डरो और मेरी आयतों के बदले में थोड़ी क़ीमत न लो और जो शख़्स अल्लाह की नाज़िल की हुयी के मुताबिक़ हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं (४४)

व्याख्याः- तौरायत में सच्चाई की रोशनी और लोगों को सच्चाई से जीने का तरीका अल्लाह की तरफ से मौजूद था। और नबी तौरायत मानने वाले लोगों को उसी रास्ते पर चलने की हिदायत देते थे और उसके साथ-साथ समाज के ज्ञानी और ऋषिमुनि इस आदेश को परिपूर्णता से लोगों में प्रचार किया और ये कहा की गुनाह के नतीजे से डरे (जो अल्लाह की तरफ से होता है) और अल्लाह का विधान विकृत करके उसकी कीमत हासिल न करे और जो मानव अल्लाह के विधान को विकृत करके अपने मनगढ़त कु-संस्कार को अल्लाह का विधान कहकर लोगों में प्रचार करते है वही काफिर है।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيهَا أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنفَ بِالْأَنفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ فَمَن تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهُ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ {45}

और हम ने तौरेत में यहूदियों पर यह हुक्म फर्ज़ कर दिया था कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और जख़्म के बदले बराबर का बदला है फिर जो ख़ता माफ़ कर दे तो ये उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा और जो शख़्स अल्लाह की नाज़िल की हुयी के मुवाफ़िक़ हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं (४५)

व्याख्याः- बदले की भावने मानव को दहशत की तरफ ढकेल देती है और निश्चित रूप से कोई धर्म पुस्तक बदले की भावना लोगों पर थोप नहीं देती। इस लिहाज से इस आयत में प्राण के बदले में प्राण, आंख के बदले में आंख, नाक के बदले में

नाक, कान के बदले में कान, दांत के बदले में दांत और विशेष जख्म के बदले में भी बदला है कहकर मानव को हिंसा से दूर रखा क्योंकि कोई मानव अगर किसी की जान लेता है या उसे जिसमानी नुकसान पहुँचाते तो उसे भी बराबरी की तकलीफ से गुजरना पड़ेगा। इस डर से लोग किसी की जान लेना या उसे जिसमानी नुकसान पहुँचाना पसंद नहीं करेंगे। और आखिर में क्षमा करना महा उत्तम है। और जो क्षमा करना नहीं जानते वो जालिम है।

وَقَفَّيْنَا عَلَى آثَارِهِم بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَاةِ وَآتَيْنَاهُ الْإِنجِيلَ فِيهِ هُدًى وَنُورٌ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرَاةِ وَهُدًى وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ {46}

और हम ने उन्हीं पैग़म्बरों के क़दम ब क़दम मरियम के बेटे ईसा को चलाया और वह इस किताब तौरैत की भी तस्दीक़ करते थे जो उनके सामने मौजूद थी और हमने उनको इन्जील अता की जिसमें हिदायत थी और नूर और वह इस किताब तौरेत की जो वक़्ते नुजूले इन्जील मौजूद थी तसदीक़ करने वाली और परहेज़गारों की हिदायत व नसीहत थी (४६)

व्याख्याः- मरियम के पुत्र ईसा ने अपने से पहले वाले धर्म पुस्तक तौरायत को समर्थन किया और अल्लाह की तरफ से इन्हें बाइबल का उपदेश और रोशनी प्राप्त हुई और तौरायत की सत्यता को एक और समर्थन प्राप्त हुआ । और ये लोगों के लिये उपदेश और पथ प्रदर्शक था।

पैगामः- उलमा कहते है कि सारी पुस्तकें कुरान-शरीफ आने के बाद बातिल हो गई और इसके समर्थन में सुरा बकर की आयत ६२ का उदाहरण पेश करते है लेकिन ये आयत प्रमाण करती है की पवित्रता और एक ईश्वर किसी खास लोगों की सम्पत्ति नहीं है और किसी भी समय न बातिल था, न है, और न रहेगा।

وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ الْإِنجِيلِ بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فِيهِ وَمَن لَّمْ يَحْكُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ {47}

और इन्जील वालों को जो कुछ अल्लाह ने नाज़िल किया है उसके मुताबिक़ हुक्म करना चाहिए और जो शख़्स अल्लाह की नाज़िल की हुयी हुक्म न दे तो ऐसे ही लोग बदकार है (४७)

व्याख्याः- और बाइबल के द्वारा क्रिस्चन को शांति के पथ पर चलना चाहिए और जो मानव अल्लाह के बताये हुए शांति के पथ पर नहीं चलते ऐसे लोग पूरी तरह अधार्मिक है।

पैगामः- कुछ मुसलमान ये सोचते है कि कुरान से पहले की सारी धर्म पुस्तकें बातिल हो चुकी है लेकिन कुरान-शरीफ की इस आयत के अनुसार ये स्पष्ट हो जाता है कि क्रिस्चन को अपनी धर्म पुस्तक के अनुसार ही चलना चाहिये और इसके समर्थन में सुरा बकर की आयत १३६ और सुरा इमरान की आयत ८४ को उदहरण के तौर पर पेश कर रहे है जिसमें लिखा गया है कि "हर नबी, उनकी धर्म पुस्तक" और हर धर्म के द्वारा पुकारे गए ईश्वर के अलग-अलग नामों पर ईमान लाने के लिये कहा है। हर नबी और हर धर्म पुस्तक एक ही उपदेश युग-युग से लोगों को देती आ रही है। कोई भी नबी या उनके उपदेश या उनकी धर्म पुस्तक छोटी, बड़ी, या बातिल नहीं चाहे कोई किसी को भी माने। हर नबी और उसकी धर्म पुस्तक का संदेश एक है और वो है अहिंसा, शिक्षा, मानवता, प्रेम, संयम, भाईचारा और शान्ति। कुछ लोग ये कहते है कि कुरान-शरीफ के अलावा बाकी सारी धर्म पुस्तकों को लोगों ने बदल दिया है। लोगों के अन्दर अगर इतनी हैसियत और ताकत है कि वो अल्लाह के कलाम को बदल दे तो मुसलमानों के पास भी कुरान-शरीफ के न बदलने का कोई प्रमाण नहीं है। रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद के मृत्यु के बहुत दिनों बाद कुरान शरीफ लिखा गया और उसके बहुत सालों बाद कुरान पर मात्राएं दी गई। रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद के जीते जी कुरान-शरीफ को पुस्तक की शक्ल क्यों नहीं दी गई इसलिए कोई भी किसी की पुस्तक पर बातिल या बदलने का इलजाम न लगाये।

وَأَنزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتَابِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ عَمَّا جَاءَكَ مِنَ الْحَقِّ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنكُمْ شِرْعَةً وَمِنْهَاجًا وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن لِّيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرَاتِ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ {48}

और हमने तुम पर भी बरहक़ किताब नाज़िल की जो किताब उसके वक़्त में मौजूद है उसकी तसदीक़ करती है और उसकी निगेहबान है जो कुछ तुम पर अल्लाह ने नाज़िल किया है उसी के मुताबिक़ तुम भी हुक्म दो और जो हक़ बात अल्लाह की तरफ़ से आ चुकी है उससे कतरा के उन लोगों की ख़्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो और हमने तुम में हर एक के वास्ते एक एक शरीयत और ख़ास तरीक़े पर मुक़र्रर कर दिया और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सब के सब को एक ही उम्मत बना देता मगर अल्लाह का मतलब यह था कि जो कुछ तुम्हें दिया है

उसमें तुम्हारा इमतेहान करे बस तुम सभ्यी में लपक कर आगे बढ़ जाओ और तुम सब को अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है (४८)

व्याख्याः- और कुरान शरीफ अल्लाह के रहम से लोगों के बीच आया जो खुद सच्चा है और अपने से पहले वाली पुस्तकों की सच्चाई को प्रमाणित करता है। हर ईमान वाले को चाहिए कि निर्णय के वक्त जो जिस धर्म पुस्तक को माने उसी धर्म पुस्तक के आदर्शों के दायरें में रहकर निर्णय करें। हर धर्म पुस्तक के आदेश एक है मगर मानव के रहन-सहन का दस्तुर अलग-अलग बनाया गया है और ये इसलिए कि दुनियां के हर जगह का मौसम, जुबान और संस्कृति अलग-अलग है। अगर अल्लाह की मर्जी होती तो दुनियां की हर कोने की संस्कृति, जुबान और मौसम एक कर देते लेकिन उसकी मर्जी से मानव के लिए एक अजमाइश है कि उसे जिस मौसम, संस्कृति और जुबान के दायरे में रखा वो किस कदर वफादार है। मानव को चाहिये कि नेक कामों पर ध्यान दें। हर कानून और तहजीब अल्लाह की देन है और मानव के आपस का झगड़ा सच्चाई को गुमराह नहीं कर सकता क्योंकि सच्चाई अल्लाह की परछाई है।

وَأَنِ احْكُم بَيْنَهُم بِمَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَن يَفْتِنُوكَ عَن بَعْضِ مَا أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكَ فَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ أَنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُصِيبَهُم بِبَعْضِ ذُنُوبِهِمْ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ لَفَاسِقُونَ {49}

तब जिन बातों में तुम इख़्तेलाफ़ करते वह तुम्हें बता देगा और हम फिर कहते है कि जो एहकाम अल्लाह नाज़िल किए है तुम उसके मुताबिक़ फ़ैसला करो और उनकी ख़्वाहिशे नफ़सियानी की पैरवी न करो तुम उनसे बचे रहो कि किसी हुक्म से जो अल्लाह ने तुम पर नाज़िल किया है तुमको ये लोग भटका दें फिर अगर ये लोग तुम्हारे हुक्म से मुँह मोड़ें तो समझ लो कि अल्लाह ही की मरज़ी है कि उनके बाज़ गुनाहों की वजह से उन्हें मुसीबत में फँसा दे और इसमें तो शक ही नहीं कि बहुतेरे लोग बदचलन है (४९)

व्याख्याः- और अल्लाह के आदर्शों के अनुसार मानव के बीच के मतभेद का निर्णय और इस निर्णय के अनुसार अपने आपको चलाना नेक या पवित्र लोगों का कर्त्तव्य है । पवित्र मानव सतर्क रहे कि बुरे लोग उनके निर्णय से उसे पथभ्रष्ट न कर पाये। अल्लाह और उनके आदर्शों की सत्यता पर विश्वास रखते हुए पवित्र लोग जान ले कि पापी मानव अपने पापों का भुगतान जरूर करेंगे यदि ये लोग अल्लाह के आदर्शों की सत्यता पर संदेह करे।

أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُونَ وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللَّهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ {50}

क्या ये लोग जाहिलीयत के हुक्म की तमन्ना रखते हैं हालाँकि यक़ीन करने वाले लोगों के वास्ते हुक्मे अल्लाह से बेहतर कौन होगा (५०)

व्याख्याः- पापी लोग असभ्य तरीका से या अपनी इन्द्रियों की चाहत के अनुसार निर्णय की अपेक्षा रखते है लेकिन अल्लाह निर्णय बेहतर तरीके से कर सकता है और यही पवित्र लोगों का विश्वास है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُودَ وَالنَّصَارَىٰ أَوْلِيَاءَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ {51}

ऐ ईमानदारों यहूदियों और नसरानियों को अपना सरपरस्त न बनाओ ये लोग बाहम एक दूसरे के दोस्त है और तुममें से जिसने उनको अपना सरपरस्त बनाया पस फिर वह भी उन्हीं लोगों में से हो गया बेशक अल्लाह ज़ालिम लोगों को राहे रास्त पर नहीं लाता (५१)

व्याख्याः- पवित्र और शान्ति चाहने वाले मानव यहूदी और क्रिस्चन के बीच में होने वाली बुरी बातों से दोस्ती न करें। उनमें के कुछ लोग बुरी हरकतों की वजह से आपस में दोस्त है। नेक और अच्छे लोग अगर उनकी हरकतों को अपनाये तो वो उन्हीं में से हो जाएंगे और यकीनन अल्लाह ऐसे लोगों को पवित्र ज्ञान प्रदान नहीं करता जो अपने पवित्रता को विनिष्ट करते है।

पैगामः- दोस्ती अल्लाह की पसंदीदा मानव सम्पर्क है और दोस्ती भाईचारा की बुनियाद भी है। हर धर्म में अच्छे बुरे लोग होते है चाहे वो मुसलमान, हिन्दु, क्रिस्चन, यहूदी या बुद्धिस्ट ही क्यों न हो। सम्प्रदाय को धर्म के साथ जोड़कर बुरा कहना मानव धर्म का उल्लंघन है। इस सुरा की आयत नम्बर ८२ में क्रिस्चन यानी नुसारा को मुसलमानों का सबसे ज्यादा करीबी दोस्त बताया गया है। एक ही सुराह की दो आयतों में दो किस्म की बातें एक ही विषय में मुमकिन है? नहीं ! क्योंकि हम (सिद्धार्थ चटर्जी) विश्वास के साथ कह सकते है कि कुरान शरीफ का वर्तमान तर्जुमा गलत है और ये इसलिए कि कुरान शरीफ का हर तर्जुमा कहानियों के आधार पर किया गया है। लेकिन कुरान की हर आयत हर समय के लिये परिपूर्ण होने के कारण एक ही आदर्श पर दो किस्म की व्याख्या नहीं हो सकती।

فَتَرَى الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ يُسَارِعُونَ فِيهِمْ يَقُولُونَ نَخْشَى أَن تُصِيبَنَا دَائِرَةٌ فَعَسَى اللَّهُ أَن يَأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ عِندِهِ فَيُصْبِحُوا عَلَى مَا أَسَرُّوا فِي أَنفُسِهِمْ نَادِمِينَ {52}

तो जिन लोगों के दिलों में बीमारी है तुम उन्हें देखोगे कि उनमें दौड़ दौड़ के मिले जाते हैं और तुमसे उसकी वजह यह बयान करते है कि हम तो इससे डरते है कि कहीं ऐसा न हो उनके न ज़माने की गर्दिश में न मुब्तिला हो जाएँ तो अनक़रीब ही अल्लाह फ़तेह या कोई और बात अपनी तरफ़ से ज़ाहिर कर देगा तब यह लोग इस बदगुमानी पर जो अपने जी में छिपाते थे शर्माएंगे ((५२)

व्याख्याः- ऐसे बहुत सारे मानव है जो अपने दिलों में मैल रखते है और लोगों के सामने अपने पवित्रता का झुठा ढोंग रचाते है और भाग-भाग कर अपवित्र लोगों के बीच जाने का प्रयास करते है यानी अपवित्र कामों को हजार किस्म का बहाना देकर पवित्र बनाने की चेष्टा करते है। लेकिन पूण्य पर पाप कभी भी विजय हासिल नहीं कर सकता। पुण्य सर्वदा विजयी होता है और इसकी जीत पर पाप को लज्जित होना पड़ता है।

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا أَهَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوا خَاسِرِينَ {53}

और मोमिनीन कहेंगे क्या ये वही लोग है जो सख़्त से सख़्त क़समें खाकर कहते थे कि हम ज़रूर तुम्हारे साथ हैं उनका सारा किया धरा अकारत हुआ और सख़्त घाटे में आ गए (५३)

व्याख्याः- पवित्र मानव पुण्य की विजय के उप्रान्त कहेंगे कि वो लोग अल्लाह के नाम पर शपथ करते थे और कहते हैं कि हम लोग पुण्य और पवित्र कामों के साथ है। मगर उनके छुपी हुई इच्छा व्यक्त होने के बाद ऐसे लोगों के काम बेकार प्रमाणित हो जाता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَن يَرْتَدَّ مِنكُمْ عَن دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ {54}

ऐ ईमानदारों तुममें से जो कोई अपने दीन से फिर जाएगा तो अनक़रीब ही अल्लाह ऐसे लोगों को ज़ाहिर कर देगा जिन्हें अल्लाह दोस्त रखता होगा और वह उसको दोस्त रखते होंगे ईमानदारों के साथ नर्म और मुन्किर काफ़िरों के साथ सख़्त अल्लाह की राह में जेहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत की कुछ परवाह न करेंगे ये अल्लाह का फ़ज़्ल है वह जिसे चाहता हे देता है और अल्लाह तो बड़ी गुन्जाइश वाला वाक़िफ़कार है (५४)

व्याख्याः- पवित्र और पुण्य कामी लोगों के बीच जो मानव अपनी पवित्रता यानी धर्म को त्यागकर अपवित्र कर्मों को अपनाते है वो पवित्रता और सच्चाई का नुकसान नहीं कर सकते। लेकिन अल्लाह पवित्र और शान्तिकामी सम्प्रदायी की रक्षा करते है और ऐसे लोगों को अल्लाह की करुणा प्राप्त होती है और उन्हें भी अल्लाह के आदर्शों से प्यार होगा। पवित्र मानव पुण्य और शान्ति चाहने वाले आपस में दोस्त होंगे और पापी यानी काफिर यानी अल्लाह के आदर्शों को बिगाड़ने वाले लोगों के विरुद्ध लड़ेंगे (जहाद) और अपने कर्त्तव्य में निंदा करने वालों की परवाह नहीं करेंगे । ऐसे लोग ही महाज्ञानी होते है।

पैगामः- इस आयत में कहा गया है कि ''अल्लाह ऐसी कोम लायेगा जिसे अल्लाह प्यार करेगा और वो कोम भी अल्लाह से प्यार करेगी'', इसका मतलब ये होता है कि जब ये आयत उतरी उस वक्त मुसलमानों के अलावा अल्लाह का प्यारा कोई दूसरी कोम नहीं थी, अल्लाह ऐसी कोम लाने वाले थे जो ''अल्लाह और मुसलमान'' दोनों से प्यार करेगा, तो इस्लाम के बाद कौन ऐसी सम्प्रदाय है जिसे अल्लाह प्यार करता है और इस सम्प्रदाय को ''अल्लाह और मुसलमान'' दोनों से प्यार है? कुछ मुसलमान कहते है कि इस्लाम आने के बाद सारे धर्म खारिज हो गये हैं तो इस आयत के द्वारा जो भविष्यवाणी हुई है वो किस सम्प्रदाय की प्रतीक करती है? या मुसलमानों का दावा झुठा है जो कुरान शरीफ से नहीं मिलता? क्या ये भविष्यवाणी सिख, कादियानी, भाई फिरका, ब्रह्म समाज, आर्य समाज या कौन सी सम्प्रदाय की तरफ इशारा करती है?

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ رَاكِعُونَ {55}

तुम्हारे मालिक सरपरस्त तो बस यही हैं अल्लाह और उसका रसूल और वह मोमिनीन जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते है और हालत रूकूउ में ज़कात देते है (५५)

व्याख्याः- और पवित्र लोगों का दोस्त अल्लाह उसका रसुल और शान्ति चाहने वाले मानव है। जो लोग प्रेम, पवित्रता, भाईचारा और मानवता के द्वारा नमाज अदा करते है और साथ-साथ अपने परिश्रम और धन से मानव समाज की सेवा और सहायता करते है यानी जकात देते है और अल्लाह के आदर्शों के आगे अपने तन और मन को झुकाते है यानी रकू करते है यानी अल्लाह के आदर्शों के साथ जीते है।

وَمَن يَتَوَلَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذِينَ آمَنُوا فَإِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْغَالِبُونَ {56}

और जिस शख़्स ने अल्लाह और रसूल और ईमानदारों को अपना सरपरस्त बनाया तो इसमें तो शक नहीं कि अल्लाह ही का लशकर ग़ालिबरहता है (५६)

व्याख्याः- जो मानव अल्लाह, रसुल और पवित्र मानव के आदर्शों के साथ अपने आदर्शों को मिलाते है वो जरूर शान्तिकामी पवित्र सम्प्रदाय के साथ होंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَكُمْ هُزُوًا وَلَعِبًا مِّنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِن قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَاءَ وَاتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {57}

ऐ ईमानदारों जिन लोगों को तुम से पहले किताबे दी जा चुकी है उनमें से जिन लोगों ने तुम्हारे दीन को हँसी खेल बना रखा है उनको और कुफ़्फ़ार को अपना सरपरस्त न बनाओ और अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो अल्लाह ही से डरते रहो (५७)

व्याख्याः-पवित्र मानव अधार्मिक मानव गोरठी के साथ दोस्ती नहीं करता है जो उनकी पवित्रता और संयमी जीवन को मजाक की जिन्दगी कहते है । पवित्र मानव अपवित्र मानव से डरते है और अपनी पवित्रता को अपवित्रता से दूर रखते है।

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلَاةِ اتَّخَذُوهَا هُزُوًا وَلَعِبًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُونَ {58}

और जब तुम नमाज़ के वास्ते बुलाते हो ये लोग नमाज़ को हँसी खेल बनाते हैं ये इस वजह से कि य लोग कुछ नही समझते (५८)

व्याख्याः- और जब पवित्र मानव प्रेम, शिक्षा, शान्ति, अहिंसा और भाईचारा की तरफ लोगों को बुलाते है तब अपवित्र पापी मानव उनका मजाक उड़ाते है। ऐसे लोग अज्ञानी होते है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ هَلْ تَنقِمُونَ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ مِن قَبْلُ وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فَاسِقُونَ {59}

ऐ एहले किताब आख़िर तुम हमसे इसके सिवा और क्या ऐब लगा सकते हो कि हम अल्लाह पर और जो हमारे पास भेजी गयी है और जो हमसे पहले भेजी गयी ईमान लाए है और ये तुममें के अक्सर बदकार है (५९)

व्याख्याः- अल्लाह के आदर्शों पर चलने वाले पवित्र और पुण्य कामी (पुस्तकी) मानव और जिन्होंनें पवित्रता, पुण्य, प्रेम और शान्ति को अपना पथ बनाया वो कभी भी ईमान वाले यानी पवित्र, पुण्य कामी मानव के कर्मों का परिहास नहीं करते और परिहास करने वाले मानव पवित्रता से वर्जित होता है।

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُم بِشَرٍّ مِّن ذَٰلِكَ مَثُوبَةً عِندَ اللَّهِ مَن لَّعَنَهُ اللَّهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوتَ أُولَٰئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَأَضَلُّ عَن سَوَاءِ السَّبِيلِ {60}

तुम कह दो कि मैं तुम्हें अल्लाह के नज़दीक सज़ा में इससे कहीं बदतर ऐब बता दूँ जिसपर अल्लाह ने लानत की हो और उस पर ग़ज़ब ढाया हो और उनमें से किसी को बन्दर और सूअर बना दिया हो और शैतान की परस्तिश की हो पस ये लोग दरजे में कहीं बदतर और राहे रास्त से भटक के सबसे ज़्यादा दूर जा पहुँचे हैं (६०)

व्याख्याः- अल्लाह के अभिश्राप से अपवित्र पापी मानव पाप को यानी शैतान को अपनी पूजा का लक्ष्य बना लेते है और अल्लाह का अभिश्राप उसे अशांत बन्दर और सुअर की तरह जीवन बिताने पर मजबूर करता है और वो सच्चे और सीधे रास्ते से भटक जाते है। पाप वाली सोच ही बातिल होती है, इसके अलावा अल्लाह की प्रकृति में कुछ भी बातिल नहीं।

وَإِذَا جَاءُوكُمْ قَالُوا آمَنَّا وَقَد دَّخَلُوا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوا بِهِ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا يَكْتُمُونَ {61}

और जब ये लोग तुम्हारे पास आ जाते है तो कहते है कि हम तो ईमान लाए है हालाँकि वह कुफ़्र ही को साथ लेकर आए और फिर निकले भी तो साथ लिए हुए और जो नेफ़ाक़ वह छुपाए हुए थे अल्लाह उसे ख़ूब जानता है (६१)

व्याख्याः- शान्ति कामी मानव के पास शान्ति बिगाड़ने वाले मानव अगर छल से कहते है कि उन्होंने शान्ति और पवित्रता की शपथ ग्रहण की मगर अपने कपटी चरित्र की वजह से उनके आने और जाने के दौरान सिर्फ छल ही छल रहा। इनका छल-कपट अल्लाह के नजदीक नहीं छुपता।

وَتَرَىٰ كَثِيرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُونَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {62}

तुम उनमें से बहुतेरों को देखोगे कि गुनाह और सरकशी और हरामख़ोरी की तरफ़ दौड़ पड़ते है जो काम ये लोग करते थे वह यक़ीनन बहुत बुरा है (६२)

व्याख्याः- पवित्र और शान्ति कामी मानव समझ जायेंगे कि कपटी और छल करने वाले मानव पाप कर्मों की तरफ और अत्याचार की तरफ और लोगों की सम्पत्ति को लूट, चोरी और धोखा बाजी और जाल साजी में उलझे रहते है और जो कुछ ये लोग करते है वो सरासर पाप, नफरत और अशांति की बुनियाद है।

पैगामः- इस आयत में काफिरों की कुछ निशानी पाई जाती है और वो है हरामखोरी, अत्याचार और पाप।

لَوْلَا يَنْهَاهُمُ الرَّبَّانِيُّونَ وَالْأَحْبَارُ عَن قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ لَبِئْسَ مَا كَانُوا يَصْنَعُونَ {63}

उनको अल्लाह वाले और उलेमा झूठ बोलने और हरामख़ोरी से क्यों नहीं रोकते जो ये लोग करते है यक़ीनन बहुत ही बुरी है (६३)

व्याख्याः- छल और कपटी लोगों के आस-पास रहने वाले ज्ञानी और पवित्र मानव उन्हें क्यों नहीं रोकते। ज्ञानी, पवित्र और शान्तिकामी मानव हमेशा इन लोगों से डरते है और इनकी तरह पाप कर्मों में अपने आपको गिरा नहीं देते। छल और कपटी लोगों के अत्याचार को न रोकना और उनके पाप कर्मों को चुप चाप बर्दास्त करना भी पाप है।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ يَدُ اللَّهِ مَغْلُولَةٌ غُلَّتْ أَيْدِيهِمْ وَلُعِنُوا بِمَا قَالُوا بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوطَتَانِ يُنفِقُ كَيْفَ يَشَاءُ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ كُلَّمَا أَوْقَدُوا نَارًا لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللَّهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِينَ {64}

और यहूदी कहने लगे कि अल्लाह का हाथ बँधा हुआ है उन्हीं के हाथ बाँध दिए जाएँ और उनके कहने पर फिटकार बरसे बल्कि उसके दोनों हाथ कुशादा है जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है और जो तुम्हारे पास नाज़िल की गयी है उनमें से बहुतेरों को कुफ़्र व सरकशी को और बढ़ा देगा और हमने ख़ुद उनके आपस में रोज़े क़यामत तक अदावत और कीने की बुनियाद डाल दी जब ये लोग लड़ाई की आग भड़काते है तो अल्लाह उसको बुझा देता है और रूए ज़मीन में फ़साद फैलाने के लिए दौड़ते फिरते है और अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता (६४)

व्याख्याः- यहूदियों के कुछ लोग अल्लाह पर संदेह के बस में आकर कहते है कि अल्लाह कुछ कर नहीं सकता कि उसके हाथ बन्धें हुए है लेकिन सच्चाई तो ये है कि ऐसी बात सोचने वाले मानव के हाथ ही बंधे हुए होते है और ऐसी बातें सोचने वाले मानव के ऊपर प्रकोप। अल्लाह की शक्ति अपरमपार है जो कुछ मानव को मिली है और वो अल्लाह की इच्छानुसार ही है। शैतान और पापी मानव के जीवन में अशान्ति का प्रकोप बढ़ जाता है और वो मरते दम तक आपसी झगड़े में उलझ कर रह जाते है और आपसी झगड़े की बुनियाद को दूसरों पर डालने की चेष्टा करते है तो अल्लाह इस बुनियाद को बुझा देते है और अल्लाह झगड़ा करने वाले फसादी लोगों से प्रेम नहीं करते।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ آمَنُوا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنَاهُمْ جَنَّاتِ النَّعِيمِ {65}

और अगर एहले किताब ईमान लाते और डरते तो हम ज़रूर उनके गुनाहों से दरगुज़र करते और उनको नेअमत व आराम पहुँचा देते (६५)

व्याख्याः- पुस्तक समझने वाले पापी मानव यानी अल्लाह के सारे नियमों को समझने के बाद पाप कर्म करने वाले मानव यानी एहले पुस्तक अगर शान्ति और पवित्रता की शपथ ले यानी ईमान लाये तो अल्लाह उनकी तमाम गलतियों को माफ कर देते है जो न समझी में की गई हो और जरूर उन्हें शान्ति का स्वर्ग प्राप्त होता है।

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِم مِّن رَّبِّهِمْ لَأَكَلُوا مِن فَوْقِهِمْ وَمِن تَحْتِ أَرْجُلِهِم مِّنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ وَكَثِيرٌ مِّنْهُمْ سَاءَ مَا يَعْمَلُونَ {66}

और अगर यह लोग तौरैत और इन्जील और उनके पास उनके परवरदिगार की तरफ़ से नाज़िल किये गए थे क़ायम रखते तो ज़रूर ऊपर से भी और पाँवों के नीचे से भी उबल आता और खाते उनमें से कुछ लोग तो एतदाल पर है उनमें से बहुतेरे जो कुछ करते है बुरा ही करते है (६६)

व्याख्याः- अगर अल्लाह के आदर्श और नियम वाली सारी पुस्तकें जैसे तौरायत, इंजील को पूरी तरह से लोग मानते तो जरूर उन्हें शान्ति का स्वर्ग प्राप्त होता।

पैगामः- आज की दुनियां में उन्हीं लोगों को अल्लाह ने भरपूर रोजी और बेशुमार दौलत से नवाजा जो अपने आपको यहूदी और नुसरानी कहते है और उन्हीं लोगों के दान-पुण्य पर वो लोग ज्यादा तर जीते है जो लोग अपने आपको मुसलमान कहते है। इस आयत में कहा गया है कि जो अल्लाह के आदर्शों को सही तरीके से मानेगा उसे भरपूर रोजी मिलेगी। आयत के अनुसार दुनियां में कौन ज्यादा दौलत और रोजी का हकदार है वो अल्लाह ने लोगों के सामने रख दिया और कितने लोगों ने अल्लाह के आदर्शों को सही तरीके से पालन किया वो भी आज लोगों के सामने है। सही-गलत का फैसला करने वाला अल्लाह है नुसरानी, यहूदी, मुसलमान या हिन्दू जैसी कोम के लोग नहीं।

يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ وَإِن لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ وَاللَّهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ {67}

ऐ रसूल जो हुक्म तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल किया गया है पहुँचा दो और अगर तुमने ऐसा न किया तो तुमने उसका कोई पैग़ाम ही नहीं पहुँचाया और अल्लाह तुमको लोगों के शर से महफ़ूज़ रखेगा अल्लाह हरगिज़ काफ़िरों की क़ौम को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाता (६७)

व्याख्याः- रसुलों का काम था अल्लाह के आदर्श लोगों को समझाना और अगर सही से न समझा पाये तो जरूर उन्होंने अपने कर्म को पूरा न कर पाया और ये इसलिए कि रसुल भी मानव है और उनकी क्षमता भी सीमित थी। अल्लाह अत्याचारों से रसुलों को बचाता आया है।

पैगामः- इस आयत में कहा गया है ''अगर रसुल अल्लाह का पैगाम नहीं पहुंचाते है तो उन्होंने अल्लाह की रसालत का हक अदा नहीं किया''। किया रसुल, अल्लाह की रसालत का हक अदा नहीं कर सकते है। नहीं! इस आयत में रसुलों की मानवी मजबूरी को समझाया गया है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لَسْتُمْ عَلَى شَيْءٍ حَتَّى تُقِيمُوا التَّوْرَاةَ وَالإِنجِيلَ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَيَزِيدَنَّ كَثِيرًا مِّنْهُم مَّا أُنزِلَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَكُفْرًا فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ {68}

तुम कह दो कि ऐ एहले किताब जब तक तुम तौरेत और इन्जील और जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से तुम पर नाज़िल हुए है उन को क़ायम न रखोगे उस वक़्त तक तुम्हारा मज़बह कुछ भी नहीं और जो तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से भेजी गयी है रश्क उनमें से बहुतेरों की सरकशी व कुफ़्र को और बढ़ा देगा तुम काफ़िरों के सम्प्रदाय पर अफ़सोस न करना (६८)

व्याख्याः- अल्लाह के आदर्श जो पुस्तक के रूप में मानव समाज में उपस्थित है उसे समझने वाले मानव (एहले पुस्तक) समझ ले कि समाज में शान्ति की स्थापना करने के लिए अल्लाह के आदर्शों को कायम करना जरूरी है जैसे कि तोरायत, इंजील, कुरान-शरीफ और तमाम वो पुस्तकें जिसमें अल्लाह के आदर्श बयान किये गए है। उसकी मान्यता और स्थापना सभ्यता की तरक्की पर एहम भूमिका निभाते आ रहे हैं और पापी, गुनहगार मानव सर्वदा इस भूमिका को बिगाड़ते और नकारते आ रहे है और यही इनका चरित्र है! शान्ति की स्थापना जरूरी है चाहे वो कुरान शरीफ, बाइबल या इंजील के द्वारा ही क्यों न हो।

पैगामः- मुसलमानों के कहने के अनुसार इस्लाम आने के बाद तोरायत, इंजील, जबुर और सारी धार्मिक पुस्तकें और उनके आदर्श बातिल है। लेकिन इस आयत के अनुसार तोरायत और इंजील को कायम करने का आदेश मिलता है।

मुसलमान ये भी कहते है कि इस्लाम के पहले जो भी धार्मिक पुस्तकें आई उन सबों में बदलाव हो चुका है। अगर मुसलमानों का विश्वास है कि सारी पुस्तकें अल्लाह की है तो क्या मानव के अन्दर इतनी शक्ति है कि वो अल्लाह के आदर्शों को बदल दे? अगर ये शक्ति मानव के अंदर है तो तोरायत और इंजील के मानने वाले भी मुसलमानों की तरह कह सकते है, लेकिन सच्चाई तो ये है कि अल्लाह के आदर्श कभी भी नहीं बदल सकते। इस आयत में ''तुम्हारा रब'' और ''मेरा रब'' ये सब अलफाज कहकर सर्वशक्तिमान ने अपने अलग-अलग नामों की मंजूरी दी है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَادُوا وَالصَّابِئُونَ وَالنَّصَارَى مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {69}

इसमें तो शक ही नहीं कि मुसलमान हो या यहूदी हकीमाना ख़्याल के पाबन्द हों ख़्वाह नसरानी जो अल्लाह और रोज़े क़यामत पर ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा उन पर अलबत्ता न तो कोई ख़ौफ़ होगा न वह लोग आज़ुर्दा ख़ातिर होंगे (६९)

व्याख्याः- किसी भी पुस्तक के मानने वाले चाहे वो मुसलमान हो, यहूदी, नुसरानी, हिन्दू, बुद्धिस्ट या सीख जो भी पवित्रता और शान्ति की शपथ ले और प्रेम, मानवता, भाईचारा और पवित्र कामों को अपना परिधान बनाये और एक ईश्वर को बांटकर मानव के बीच सम्प्रदाय की सृष्टि करके हिंसा और नफरत का भेद न बोय, उसे न कोई अंदेशा होगा और न कोई गम।

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيثَاقَ بَنِي إِسْرَائِيلَ وَأَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ رُسُلًا كُلَّمَا جَاءَهُمْ رَسُولٌ بِمَا لَا تَهْوَى أَنفُسُهُمْ فَرِيقًا كَذَّبُوا وَفَرِيقًا يَقْتُلُونَ {70}

हमने बनी इसराईल से एहद व पैमान ले लिया था और उनके पास बहुत रसूल भी भेजे थे जब उनके पास कोई

रसूल उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हुक्म लेकर आया तो इन लोगों ने किसी को झुठला दिया और किसी को क़त्ल ही कर डाला (७०)

व्याख्याः- बनी इसराइल के वंश ने रसुलों के उपदेश को ठुकराया और पाप कर्मों को अपना पथ बनाया और उनमें से जो मानव नेकी के पथ पर चलने वाले थे उनके साथ फसाद किया और पवित्र शान्ति कामी मानव की हत्या की।

وَحَسِبُوا أَلاَّ تَكُونَ فِتْنَةٌ فَعَمُوا وَصَمُّوا ثُمَّ تَابَ اللّهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوا وَصَمُّوا كَثِيرٌ مِّنْهُمْ وَاللّهُ بَصِيرٌ بِمَا يَعْمَلُونَ {71}

और समझ लिया कि कोई ख़राबी न होगी पस वह लोग अंधे और बहरे बन गए जब इन लोगों ने तौबा की तो फिर अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली फिर उनमें से बहुतेरे अंधे और बहरे बन गए और जो कुछ ये लोग कर रहे है अल्लाह तो देखता है (७१)

व्याख्याः- ऐसे लोग समझते है कि इनके बुरे कर्मों की सजा नहीं होगी और अपने पाप कर्मों में अंधे और बहरों की तरह उलझें हुए रहते है। जब उन लोगों को अपने गलतियों का एहसास हुआ तब अल्लाह ने उस एहसास के बदले उनकी तौबा कबूल की लेकिन उनमें से भी कुछ लोग अपनी अन्तर्आत्मा को परिशोधन नहीं कर पाये और अल्लाह हर मानव के चरित्र पर नजर रखते है।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللّهَ هُوَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَقَالَ الْمَسِيحُ يَا بَنِي إِسْرَائِيلَ اعْبُدُوا اللّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ إِنَّهُ مَن يُشْرِكْ بِاللّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ {72}

जो लोग उसके क़ायल है कि मरियम के बेटे ईसा मसीह अल्लाह है वह सब काफ़िर है हालाँकि मसीह ने ख़ुद यूँ कह दिया था कि ऐ बनी इसराईल सिर्फ़ उसी अल्लाह की इबादत करो जो हमारा और तुम्हारा पालने वाला है क्योंकि जिसने अल्लाह का शरीक बनाया उस पर अल्लाह ने बेहिश्त को हराम कर दिया है और उसका ठिकाना जहन्नुम है और ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं (७२)

व्याख्याः- ईशा के समय वो लोग काफिर हुए जिन्होंने उनके आदर्शों को ठुकराकर या उनके बनाये हुए पथ को इनकार करके ईशा को स्मारक के तौर पर पूजने लगे। ईशा ने खुद कहा था कि उनको और तमाम और जहान का पालनहार अल्लाह ही है और लोगों को चाहिये कि उनके बताये हुए पथ के द्वारा या उनके बताये हुए पथ को अपना कर उनकी इबादत करे और जो लोग अल्लाह के आदर्शों को ठुकराते है और हिंसा, घृणा और द्वेष को अपना कर पाप को अपना आदर्श बनाते है उनका ठिकाना होगा अशांति का नर्क। ऐसे अपवित्र मानव के अशांत जीवन को किसी की भी मदद प्राप्त नहीं होगी।

لَّقَدْ كَفَرَ الَّذِينَ قَالُوا إِنَّ اللّهَ ثَالِثُ ثَلاَثَةٍ وَمَا مِنْ إِلَـهٍ إِلاَّ إِلَـهٌ وَاحِدٌ وَإِن لَّمْ يَنتَهُوا عَمَّا يَقُولُونَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {73}

जो लोग इसके क़ायल है कि अल्लाह तीन में का है वह यक़ीनन काफ़िर हो गए अल्लाहए यक्ता के सिवा कोई माबूद नहीं और ये लोग जो कुछ बका करते हैं अगर उससे बाज़ न आए तो जो लोग उसमें से काफ़िर रह गए उन पर ज़रूर दर्दनाक अज़ाब नाज़िल होगा (७३)

व्याख्याः- जो मानव अल्लाह को तीन हिस्सों में बाटते है और मानवी समाज को धार्मिक सम्प्रदाय, मानव के रंग-रूप और आर्थिक अवस्था के द्वारा बाटते है वही लोग इस तरह अल्लाह को बांट कर काफिर हो जाते है। अल्लाह एक है और उनसे बनी हुई सारी सृष्टि का तथ्य भी एक ही सूत्र से बना हुआ है। और इस नियम को जो समझ नहीं पाते या समझकर भी नहीं मानते वो हमेशा ही काफिर रहेंगे और उनके ऊपर तकलीफों का अजाब।

पैगामः- सृष्टि के नियमानुसार तमाम वस्तुएं अणु-प्रमाणु (atom) द्वारा बनती है। अन्वायिक शक्ति ही सारी सृष्टि की शुरुआत है और जब एक शक्ति से तमाम वस्तुएं रूप धारण करती है तब वो कभी भी एक से अधिक नहीं हो सकती। और इसलिए सारे रसुल और सारे धर्म पुस्तकें एक ईश्वर पर यकीन रखने के लिए कहती है जो सर्वव्यापी है और हर वस्तु में उपस्थिति है। हर सकल उनसे सृष्टि होती है और जो लोग इस शक्ति को एक से अधिक समझते है, ये उनका व्यहम है, सच्चाई नहीं और इस व्यहम के द्वारा मानव समाज में अगर कोई क्षति होती है तो वो महापाप है। मानव समाज में इस सोच के द्वारा ही सम्प्रदाय की श्रृष्टि हुई और विचार के आधार पर मानव आपस में बट गये।

أَفَلاَ يَتُوبُونَ إِلَى اللّهِ وَيَسْتَغْفِرُونَهُ وَاللّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {74}

तो ये लोग अल्लाह की बारगाह में तौबा क्यों नहीं करते और माफ़ी क्यों नहीं माँगते हालाँकि अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (७४)

व्याख्याः- और महा पापी मानव ये क्यों नहीं समझते और अपने पापों से मुक्त होने की शपथ क्यों नहीं लेते। अल्लाह क्षमाकारी और दयालु है।

مَّا الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلاَّ رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِ الرُّسُلُ وَأُمُّهُ صِدِّيقَةٌ كَانَا يَأْكُلاَنِ الطَّعَامَ انظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الآيَاتِ ثُمَّ انظُرْ أَنَّى يُؤْفَكُونَ {75}

मरियम के बेटे मसीह तो बस एक रसूल है और उनके क़ब्ल बहुतेरे रसूल गुज़र चुके है और उनकी माँ भी एक सच्ची बन्दी थी ये दोनों खाना खाते थे ग़ौर तो करो हम अपने एहकाम इनसे कैसा साफ़ साफ़ बयान करते है (७५)

व्याख्याः- मसीह और उसकी मां मरियम अल्लाह के आदर्शों को समझने के बाद उसी पर चलने के लिये अपने आपको समर्पण किया था और इस समर्पण को लोगों ने गलत समझ कर इन्हीं लोगों का पुतला बनाकर उन्हें ही पुजना शुरू कर दिया। उनके आदर्शों को न समझकर और अल्लाह के आदेश का उल्टा रास्ता इख्तियार किया।

पैगामः- रसुलों की मानवी उपस्थिति हर मानवी जरूरत की आवश्यकता रखती थी।

قُلْ أَتَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللّهِ مَا لاَ يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلاَ نَفْعًا وَاللّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ {76}

फिर देखो तो कि ये लोग कहाँ भटके जा रहे है तुम कह दो कि क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ की इबादत करते हो जिसको न तो नुक़सान ही इख़्तेयार है और न नफ़े का और अल्लाह तो सुनता जानता है (७६)

व्याख्याः- अल्लाह के आदर्शों के सिवा दूसरा कोई भी आदर्श मानव को शांति प्रदान नहीं कर सकता और इसी अल्लाह के आदर्शों के अलावा दूसरा आदर्श मानव को सिर्फ क्षति ही पहुँचा सकता है लाभ नहीं। और जो मानव रसुलों के आदर्शों को छोड़कर उनकी मूर्ति स्थापना करते है या उनकी नकल उतारने की कोशिश करते है ये सारी हरकतें न उन्हें कुछ लाभ पहुँचा सकते है और न ही क्षति । ये सिर्फ समय का नष्ट करना है।

पैगामः- पृथ्वी में ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जिसमें अल्लाह का कोई भी उपदेश नहीं होता। हर वस्तु का कोई न कोई लाभ या नुकसान होता है और जिस वस्तु का दुनियां में कोई काम नहीं होता कूदरत उसे मिटा देती है।

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لاَ تَغْلُواْ فِي دِينِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلاَ تَتَّبِعُواْ أَهْوَاء قَوْمٍ قَدْ ضَلُّواْ مِن قَبْلُ وَأَضَلُّواْ كَثِيرًا وَضَلُّواْ عَن سَوَاء السَّبِيلِ {77}

कह दो कि ऐ एहले किताब तुम अपने दीन में नाहक़ ज़्यादती न करो और न उन लोगों की नफ़्सियानी ख़्वाहिशों पर चलो जो पहले खुद ही गुमराह हो चुके और बहुतेरों को गुमराह कर छोड़ा और राहे रास्त से भटक गए (७७)

व्याख्याः- पुस्तक जो लोगों को अल्लाह के आदर्शों के बारे में बताती है और जो लोग इन आदर्शों को समझते है वो अन्याय और अपनी इन्द्रियों की चाहत में सीमा का उल्लंघन न करे और पापी मानव के रास्ते पर न चले। जो लोग खुद भ्रान्त आदर्शों को अपना चुके है और अपनी भ्रान्ति दूसरे लोगों पर थोपने की चेष्टा करते है तथापि ऐसे मानव सीधे और सच्चे मार्ग से बहुत दूर है।

لُعِنَ الَّذِينَ كَفَرُواْ مِن بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى لِسَانِ دَاوُودَ وَعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ ذَلِكَ بِمَا عَصَواْ وَّكَانُواْ يَعْتَدُونَ {78}

बनी इसराईल में से जो लोग काफ़िर थे उन पर दाऊद और मरियम के बेटे ईसा की ज़बानी लानत की गयी ये इस वजह से कि उन लोगों ने नाफ़रमानी की और हद से बढ़ जाते थे (७८)

व्याख्याः- इसरायिल की सम्प्रदाय में जो लोग ऐसे भ्रान्त आदर्शों को अपनाये हुए थे और सत्य मार्ग से भटक गये थे उन्हें अशांति का अभिश्राप प्राप्त हुआ था और ये इसलिये हुआ था क्योंकि इन लोगों ने ईशा, दाउद और मरयिम के आदर्शों का उल्लंघन किया और ये पाप की सीमा पार कर चुके थे।

كَانُواْ لاَ يَتَنَاهَوْنَ عَن مُّنكَرٍ فَعَلُوهُ لَبِئْسَ مَا كَانُواْ يَفْعَلُونَ {79}

और किसी बुरे काम से जिसको उन लोगों ने किया बाज़ न आते थे जो काम ये लोग करते थे क्या ही बुरा था (७९)

व्याख्याः- जो पाप काम इन लोगों ने किये थे और लगातार करते जा रहे थे निश्चित रूप से ये बुरे काम थे।

تَرَى كَثِيرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِينَ كَفَرُواْ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنفُسُهُمْ أَن سَخِطَ اللّهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خَالِدُونَ {80}

तुम उन में से बहुतेरों को देखोगे कि कुफ़्फ़ार से दोस्ती रखते हैं जो सामान पहले से उन लोगों ने खुद अपने वास्ते दुरूस्त किया है किस क़दर बुरा है कि अल्लाह उन पर गज़बनाक हुआ और हमेशा अज़ाब ही में रहेंगे (८०)

व्याख्याः- और ये भी देखा जाता है कि इनमें से बहुत लोगों ने पापी लोगों के साथ दोस्ती करते है और ये काम निश्चित तौर पर बुरा काम है और अल्लाह के अभिश्राप में ये लोग हमेशा रहेंगे।

وَلَوْ كَانُوا يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَالنَّبِيِّ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوهُمْ أَوْلِيَاءَ وَلَكِنَّ كَثِيرًا مِّنْهُمْ فَاسِقُونَ {81}

और अगर ये लोग अल्लाह और रसूल पर और जो कुछ उनपर नाज़िल किया गया है इमान रखते है तो हरगिज़ दोस्त न बनाते मगर उनमें के बहुतेरे तो बदचलन है (८१)

व्याख्याः- पापी लोगों को अगर अल्लाह और उनके नबी पर विश्वास होता और वो पुस्तक जिस पर अल्लाह के आदर्श लिखित रूप में लोगों के सामने मौजूद है उस पर भी विश्वास होता तो वो कभी पाप को अपना कर शैतान से दोस्ती नहीं करते और ऐसे पापी सर्वदा ही विश्वासघाती होते है।

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً لِّلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصَارَىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيسِينَ وَرُهْبَانًا وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ {82}

ईमान लाने वालों का दुशमन सबसे बढ़के यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ईमानदारों का दोस्ती में सबसे बढ़के क़रीब उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा कहते है क्योंकि इन में से बहुत से आमिल और आबिद है और इस सबब से कि ये लोग हरगिज़ शेख़ी नहीं करते (८२)

व्याख्याः- मानव समाज के बीच पवित्र मानव के साथ दुश्मनी में यहूदियों के बीच के पापी मानव और अल्लाह के आदर्शों को नहीं मानने वाले गुनहगार लोग पाये जाते है । पवित्र मानव के दोस्त वो होंगे जिन्होंने पवित्रता और शांति को अपनी पूजा समझ कर ग्रहण किया और क्रिस्चन मानव के बीच शांति और पवित्रता चाहने वाले लोग आपस में दोस्ती रखेंगे और ये इसलिए कि क्रिस्चन लोगों के बीच ज्ञानी और समाज सेवक कि संख्या ज्यादा है और ज्ञानी कभी अहंकारी नहीं होते।

وَإِذَا سَمِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَى الرَّسُولِ تَرَىٰ أَعْيُنَهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوا مِنَ الْحَقِّ يَقُولُونَ رَبَّنَا آمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ {83}

और तू देखता है कि जब यह लोगे जो हमारे रसूल पर नाज़िल किया गया है तो उनकी आँखों से बेसाख़्ता आँसू जारी हो जाते है क्योंकि उन्होंने हक़ को पहचान लिया है अर्ज़ करते है कि ऐ मेरे पालने वाले हम तो ईमान ला चुके तो तसदीक़ करने वालों के साथ हमें भी लिख रख (८३)

व्याख्याः- अल्लाह के आदर्श समझने के बाद ऐसे लोगों की आंखों में श्रद्धा की आंसू देखे जाते है और ये इसलिये कि ये लोग सच्चाई को उपलब्धि कर सकते है और कहते हैं कि ऐ ईश्वर हम पवित्रता और शांति को अपनाये और हमें ऐसे लोगों के साथ जोड़ लो जो लोग पवित्रता और शांति के पथ को सच्चा मानते है और हृदय से उसे स्वीकार करते है।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَمَا جَاءَنَا مِنَ الْحَقِّ وَنَطْمَعُ أَن يُدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصَّالِحِينَ {84}

और हमको क्या हो गया है कि हम अल्लाह और जो हक़ बात हमारे पास आ चुकी है उस पर तो ईमान न लाएँ और अल्लाह से उम्मीद रखें कि वह अपने सभ्य बन्दों के साथ हमें पहुँचा ही देगा (८४)

व्याख्याः- हमारे पास यानी पवित्र मानव के प्रेम, भाईचारा, मानवता और शांति के लिये ईमान लाने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है और यही शांति का सीधा और सच्चा मार्ग है। ईश्वर की कृपा से हम सब प्रेम और शांति चाहने वाले लोग एक ही सम्प्रदाय बन जायेंगे।

فَأَثَابَهُمُ اللَّهُ بِمَا قَالُوا جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ {85}

तो अल्लाह ने उन्हें उनके अर्ज़ करने के सिले में उन्हें वह बाग़ात अता फरमाए जिनके नीचे नहरें जारी है वह उसमें हमेशा रहेंगे और सभ्यी करने वालों का यही ऐवज़ है (८५)

व्याख्याः- पवित्रता और शांति कामी मानव को सुख-शांति का बाग मिलेगा। जिसमें ठंडे नहर की पानी की तरह शांति और ज्ञान की प्रवाह बहेगी और अंतिम क्षण तक वो इसी अवस्था में रहेंगे। और ये पवित्र मानव को अपने पूर्ण कर्मों का बदला प्राप्त होगा।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ {86}

और जिन लोगों ने कुफ़्र एख़्तेयार किया और हमारी आयतों को झुठलाया यही लोग जहन्नुमी हैं (८६)

व्याख्याः- अब जो मानव पाप को ग्रहण करके अल्लाह के आदर्शों को जो पुस्तक द्वारा लोगों के बीच मौजूद है उसे झुठा बोलता है वो लोग अशांति के नर्क में रहेंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ {87}

ऐ ईमानदार जो पाक चीज़े अल्लाह ने तुम्हारे वास्ते हलाल कर दी है उनको अपने ऊपर हराम न करो और हद से न बढ़ो अल्लाह हद से बढ़ जाने वालों को हरगिज़ दोस्त नही रखता (८७)

व्याख्याः- पवित्र मानव प्रकृति की वो सारी वस्तुएं जो उनकी जरूरत में आती है उसे इस्तेमाल करके और उसे खराब करना या जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करना अल्लाह के आदर्शों के उल्लंघन के बराबर है। अल्लाह या प्राकृति को ये बात बिलकुल न पसंद है।

وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالاً طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنتُم بِهِ مُؤْمِنُونَ {88}

और जो हलाल साफ सुथरी चीजें अल्लाह ने तुम्हें दी है उनको खाओ और जिस अल्लाह पर तुम ईमान लाए हो उससे डरते रहो (८८)

व्याख्याः- अल्लाह ने मानव को हर तरह की मजेदार खाने दुनियां में रखे उनमें से जो मानव शरीर के लिये लाभकारी है उसे खायें और जो ईमान रखते है और अशांति का प्रकोप और तकलीफों से डरते है वो ईश्वर के आदर्शों को जरूर मानेंगे।

لَّا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِن يُؤَاخِذُكُم بِمَا عَقَّدتُّمُ الْأَيْمَانَ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ ذَٰلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ كَذَٰلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ {89}

अल्लाह तुम्हारे बेकार क़समों पर तो ख़ैर गिरफ्तार न करेगा मगर पक्की क़सम खाने और उसके ख़िलाफ करने पर तो ज़रुर तुम्हारी ले दे करेगा उसका जुर्माना जैसा तुम खुद अपने एहलोअयाल को खिलाते हो उसी क़िस्म का औसत दर्जे का दस मोहताजों को खाना खिलाना या उनको कपड़े पहनाना या एक गुलाम आज़ाद करना है फिर जिससे यह सब न हो सके तो मै तीन दिन के रोज़े ये तुम्हारी क़समों का जुर्माना है जब तुम क़सम खाओ और अपनी क़समों का ख़्याल रखो अल्लाह अपने एहकाम को तुम्हारे वास्ते यूँ साफ़ साफ़ बयान करता है ताकि तुम शुक्र करो (८९)

व्याख्याः- शपथ लेकर निभाना ईमान वाले का कर्तव्य है और झुठी शपथ से लोगों को गुमराह करना या समाज को किसी किस्म का नुकसान पहुँचाना गुनाह यानी पाप है।

पैगामः- झुठी शपथ से अगर लोगों को नुकसान पहुंचे तो क्या कृतिदासी आजाद करना या रोजा रखने से इस नुकसान की भरपाई हो सकेगी? ये असंभव है। इस आयत में इन सारे आदेशों का एक विशेष उद्देश्य है और वो ये है कि ये सारे विचारों के द्वारा (रोजा, कृतिदासी आजाद करना) लोगों को झुठी शपथ लेने से रोकेगी।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطَانِ فَاجْتَنِبُوهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ {90}

ऐ ईमानदारों शराब, जुआ और बुत और पाँसे तो बस नापाक शैतानी काम है तो तुम लोग इससे बचे रहो ताकि तुम फलाह पाओ (९०)

व्याख्याः- पवित्र मानव के लिये शराब, जुआ और ऐसी जगह जहां पर ईश्वर के बजाये शैतान की पुजा (थान) की जाती है और मानव के भाग्य का विचार किया जाता है ये सारे कर्म अपवित्र है। पवित्र मानव अपने कल्याण के लिये इन सारे कर्मों से दूर रहेंगे।

पैगामः- १. शराब - ऐसी वो सारी चीजें या उनका नशा जो मानव के होशों-हवास को बिगाड़ देते है जैसे कि औरत का नशा, दौलत का नशा, शराब का नशा इत्यादि और ऐसी वो चीजें जो हद से बाहर हो।

२. जुआ - नशा और किस्मत को दाव पर रखकर जो दौलत कमाई जाती है या जिस दौलत में पाप सम्मलित हो यानी किसी को लूट कर या धोखे से किसी का पैसा लेना, झुठ बोलकर पैसा लेना, धर्म के नाम पर पैसा लेना सब जुएं में शुमार है और सबसे बड़ा जुआ दूसरों की अमानत को उनकी इजाजत के बगैर अपने इस्तेमाल में लाना। दूसरों की अमानत से दान-पुण्य करना। ये सब जुआ है और जुआ सख्त गुनाह है।

३. थान - ऊपर में लिखे हुए सारे पाप जिस जगह में संगठित होते है वो सारे स्थान अल्लाह के आदर्शों के बाहर है यानी वो शैतान के स्थान है और उनकी पुजा करना शैतान के चेले का काम है। पवित्र मानव इस काम से दूर रहते है।

إِنَّمَا يُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَن يُوقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَاءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَن ذِكْرِ اللَّهِ وَعَنِ الصَّلَاةِ فَهَلْ أَنتُم مُّنتَهُونَ {91}

शैतान की तो बस यही तमन्ना है कि शराब और जुए की बदौलत तुममें बाहम अदावत व दुशमनी डलवा दे और अल्लाह की याद और नमाज़ से बाज़ रखे तो क्या तुम उससे बाज़ आने वाले हो (९१)

व्याख्याः- मानव की अपवित्र अंर्तात्मा चाहती है कि वो हमेशा पाप कर्मों में लुप्त रहे और समाज में हिंसा और दुश्मनी की सृष्टि हो और मानव ईश्वर के आदर्शों से दूर रहे। यही शैतान की कामना है इस बात को समझने के बाद अपवित्र मानव को चाहिये कि अपवित्र कामों से अपने आपको दूर रखें।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَاحْذَرُوا فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا عَلَى رَسُولِنَا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ {92}

और अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और बचे रहो इस पर भी अगर तुमने मुँह फेरा तो समझ रखो कि हमारे रसूल पर बस साफ़ साफ़ पैग़ाम पहुँचा देना फर्ज़ है (९२)

व्याख्याः- लोगों को चाहिये कि अल्लाह के आदर्शों का पालन करते रहे और रसुल की वाणी जो अल्लाह के तरफ से मिले उस पर विश्वास रखें। अपने चरित्र को पाप कर्मों से मुक्त रखें और अगर इस बात पर सहमत न हो तो जान ले कि रसुल इनका उत्तरदायी नहीं है। रसुल का काम सिर्फ लोगों को समझाना और ईश्वर का संदेश पहुँचाना है।

لَيْسَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جُنَاحٌ فِيمَا طَعِمُوا إِذَا مَا اتَّقَوا وَآمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ثُمَّ اتَّقَوا وَآمَنُوا ثُمَّ اتَّقَوا وَأَحْسَنُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِينَ {93}

जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अच्छे काम किए है उन पर जो कुछ खा चुके उसमें कुछ गुनाह नहीं जब उन्होंने परहेज़गारी की और ईमान ले आए और अच्छे काम किए फिर परहेज़गारी की और नेकियाँ की और अल्लाह नेकी करने वालों को दोस्त रखता है (९३)

व्याख्याः- प्रेम, मानवता, शांति, अहिंसा, शिक्षा और पवित्रता इन सारे आदर्शों के साथ जो लोग जीते है (ईमान रखना) समाज और सभ्यता की तरक्की के लिए अपने मेहनत और पैसे खर्च करते है (नेक काम करना) इन्हें अल्लाह ताला की तरफ से प्रेम और आशीर्वाद प्राप्त होता है। पवित्रता के साथ अपने जीवन बिताने वाले अल्लाह की करूणा प्राप्त करते है और साथ साथ विचार धाराओं की मतभेद पर जो मानव झगड़ा नहीं करते है वही पवित्र और शांतिकामी होता है।

पैगामः- मानव का स्वाभाविक चरित्र कुछ हद तक मानव के निजी खाना-पीना, पसंद-न पसंद पर प्रभाव विस्तार करते है लेकिन मानव की सोच और बुद्धि उसको सही मार्ग दर्शन करने में सहायता करती है। इस आयत से ये प्रमाणित होता है कि मानव की पवित्र चरित्र ही मुख्य है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللَّهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهُ أَيْدِيكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللَّهُ مَن يَخَافُهُ بِالْغَيْبِ فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَٰلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ {94}

ऐ ईमानदारों कुछ शिकार से जिन तक तुम्हारे हाथ और नैज़े पहुँच सकते है अल्लाह ज़रुर इम्तेहान करेगा ताकि अल्लाह देख ले कि उससे बे देखे भाले कौन डरता है फिर उसके बाद भी जो ज़्यादती करेगा तो उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है (९४)

व्याख्याः- मानव को अपने जीवन में कुछ परीक्षा से गुजरना पड़ता है। मानव जब अपनी सीमा का उल्लंघन करता है तब उसको अशांति की जनतना भुगतनी पड़ती है।

पैगामः- बेवस मानव कभी-कभी पाप को अपनाकर अपनी बेवसी को दूर करने की कोशिश करते है। इसमें उसकी बेवसी कभी भी दूर नहीं होती बल्कि उसको चारों तरफ से घेर लेती है। इस आयत में शिकार एक उदाहरण है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنتُمْ حُرُمٌ وَمَن قَتَلَهُ مِنكُم مُّتَعَمِّدًا فَجَزَاءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ هَدْيًا بَالِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسَاكِينَ أَوْ عَدْلُ ذَٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوقَ وَبَالَ أَمْرِهِ عَفَا اللَّهُ عَمَّا سَلَفَ وَمَنْ عَادَ فَيَنتَقِمُ اللَّهُ مِنْهُ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ {95}

ऐ ईमानदारों जब तुम हालते एहराम में हो तो शिकार न मारो और तुममें से जो कोई जान बूझ कर शिकार मारेगा तो जिस को मारा है चौपायों में से उसका मसल तुममें से जो दो मुन्सिफ आदमी तजवीज़ कर दें उसका बदला होगा काबा तक पहुँचा कर कुर्बानी की जाए या जुर्माना मोहताजों को खाना खिलाना या उसके बराबर रोज़े रखना ताकि अपने किए की सज़ा का मज़ा चखो जो हो चुका उससे तो अल्लाह ने दरगुज़र की और जो फिर ऐसी हरकत करेगा तो अल्लाह उसकी सज़ा देगा और अल्लाह ज़बरदस्त बदला लेने वाला है (९५)

व्याख्याः- अपनी जरूरत से ज्यादा प्राणियों की हत्या या अपनी लालसा पूर्ति के उपदेश से प्राणियों की हत्या करना महापाप है।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهُ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ {96}

तुम्हारे और काफ़िले के वास्ते दरियाई शिकार और उसका खाना तुम्हारे वास्ते जायज़ कर दिया है मगर खुश्की का शिकार जब तक तुम हालते एहराम में रहो तुम पर हराम है और उस अल्लाह से डरते रहो जिसकी तरफ उठाए जाओगे (९६)

व्याख्याः- समुद्र के प्राणी का शिकार मानव के लिये हलाल (अनुज्ञेय) है।
पैगामः- इस मामले में हर देश का सरकारी कानून और वैज्ञानिक तथ्य को मानना ही मानव के लिये शुभ है।

جَعَلَ اللهُ الكَعْبَةَ البَيْتَ الحَرَامَ قِيَامًا لِّـلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الحَرَامَ وَالهَدْيَ وَالقَـلَائِدَ ذَلِكَ لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّـهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الأَرْضِ وَأَنَّ اللهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ {97}

अल्लाह ने काबा को जो मोहतरम घर है और हुरमत दार महीनों को और कुरबानी को और उस जानवर को जिसके गले में पट्टे डाल दिए गए हों लोगों के अमन क़ायम रखने का सबब क़रार दिया यह इसलिए कि तुम जान लो कि अल्लाह जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है यक़ीनन जानता है और ये भी कि बेशक अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है (९७)

व्याख्याः- प्रेम, भाईचारा, मानवता, दया, बलिदान (इन्द्रियां) इन सबों का स्मार्क है काबा। और इसे मानव कल्याण के लिये उपयोग करना लाभदायक है। अल्लाह मानव जाती के बीच एकता देखना पसंद करते है। आकाश और पृथ्वी का अधिकर्ता अल्लाह है और अल्लाह सर्वज्ञानी है।

اعْلَمُوا أَنَّ اللهَ شَدِيدُ العِقَابِ وَأَنَّ اللهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {98}

जान लो कि यक़ीनन अल्लाह बड़ा अज़ाब वाला है और ये कि बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (९८)

व्याख्याः- अल्लाह और उनकी प्रकृति मानव के लिए कठोर भी है और दयावान भी।
पैगामः- इस आयत में एक तरफ अल्लाह को कठोर और दूसरी तरफ क्षमाशील और करुणामयी बताया गया है । ये इसलिये कि प्रकृति में जिस तरह कष्ट होता है और प्रकृति के द्वारा ही मानव को कष्ट से मुक्ति मिलती है। मानव के पाप का परिणाम और पुण्य का परिणाम दोनों ही प्रकृति में समाहित है इसलिये इस आयत में कभी कठोर और कभी करुणामयी कहा गया है।

مَّا عَلَى الرَّسُولِ إِلاَّ البَلَاغُ وَاللهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ {99}

रसूल पर पैग़ाम पहुँचा देने के सिवा कुछ नहीं और जो कुछ तुम ज़ाहिर बा ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपा कर करते हो अल्लाह सब जानता है (९९)

व्याख्याः- रसुल का काम है अल्लाह के आदर्शों को मानव कल्याण के लिये मानव समाज में पहुंचाना और अल्लाह यानी प्रकृति को हर छुपा और जाहिर मालूम है।

قُل لاَّ يَسْتَوِي الخَبِيثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الخَبِيثِ فَاتَّقُوا اللهَ يَا أُولِي الأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ {100}

कह दो कि नापाक और पाक बराबर नहीं हो सकता अगरचे नापाक की कसरत तुम्हें भला क्यों न मालूम हो तो ऐसे अक़्लमन्दों अल्लाह से डरते रहो ताकि तुम कामयाब रहो (१००)

व्याख्याः- नेक मानव कह दे पवित्र और अपवित्र कभी भी एक नहीं हो सकते तथापि अपवित्रता कि बढ़ौतरी नेक लोगों को आश्चर्य करते है वो अल्लाह के आदर्शों का पालन करें और उसके द्वारा ही मानव अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेगा।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِن تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ وَإِن تَسْأَلُوا عَنْهَا حِـينَ يُنَزَّلُ القُرْآنُ تُبْدَ لَكُمْ عَفَا اللَّـهُ عَنْهَا وَاللَّـهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ {101}

ऐ ईमान वालों ऐसी चीज़ों के बारे में न पूछा करो कि अगर तुमको मालूम हो जाए तो तुम्हें बुरी मालूम हो और अगर उनके बारे में क़ुरान नाज़िल होने के वक़्त पूछ बैठोगे तो तुम पर ज़ाहिर कर दी जाएगी अल्लाह ने उनसे दरगुज़र की और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला बुर्दबार है (१०१)

व्याख्याः- नेक, पवित्र और अच्छे मानव ऐसे बात पर कभी भी सवाल नहीं उठाते जिसमें प्रगति और तरक्की में रुकावट पैदा हो या समाज के फायदे के लिये न हो। इस सवाल के जवाब के लिये समय की अपेक्षा करे अल्लाह क्षमाकरी और दयालु है।

مَا جَعَلَ اللهُ مِن بَحِيرَةٍ وَلاَ سَائِبَةٍ وَلاَ وَصِيلَةٍ وَلَـحَامٍ وَلَـكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّـهِ الكَذِبَ وَأَكْثَرُهُمْ لَـيَعْقِلُونَ {102}

तुमसे पहले भी लोगों ने इस किस्म की बातें पूछी थीं फिर उसके मुन्किर हो गए (१०२)

व्याख्याः- हर युग में कुछ अपवित्र मानव समाज के हित, विज्ञान, सच्चाई और तरक्की पर सवाल उठाते आये है ये उनकी मानवता के नियमों का उल्लंघन करना है और ये उनके अधिकार के बाहर है, ऐसे लोग सच्चाई से मुंह फेर लेते है।

مَا جَعَلَ اللَّهُ مِن بَحِيرَةٍ وَلَا سَائِبَةٍ وَلَا وَصِيلَةٍ وَلَـٰكِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ {103}

अल्लाह ने न तो कोई बहीरा मुक़र्रर किया है न सायबा न वसीला न हाम मुक़र्रर किया है मगर कुफ्फ़ार अल्लाह पर ख़्वाह मा ख़्वाह झूठ बोहतान बाँधते है और उनमें के अक्सर नहीं समझते (१०३)

व्याख्याः- कम बुद्धि मानव जानवरों को अपने मूर्तियों के नाम सुपुर्ध करते है किसी भी बहाने से और ये बिलकुल कु-संस्कार और निंबुद्धि की बात है। अज्ञानी मानव ही ऐसा काम कर सकता है।

पैगामः- हर जान का मालिक अल्लाह ताला है लेकिन आदमी आकांक्षा की पूर्ति के लिए यह अपने बुरे चरित्र और जरूरत से ज्यादा उत्कांक्षा का बलिदान देने के बजाये, अबला प्राणियों का बलिदान देकर एक रश्म अदा करते है और ये बलिदान की सच्चाई और सफलता पाक परवरदिगार की अधिकार में है।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلَىٰ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَإِلَى الرَّسُولِ قَالُوا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا أَوَلَوْ كَانَ آبَاؤُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ شَيْئًا وَلَا يَهْتَدُونَ {104}

और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने नाज़िल फरमाया है उसकी तरफ और रसूल जो कुछ कहे उसे मानों तो कहते है कि हमने जिस में अपने बाप दादा को पाया वही हमारे लिए काफी है क्या उनके बाप दादा न कुछ जानते ही हों न हिदायत ही पायी हो (१०४)

व्याख्याः- जब ऐसे लोगों को कहा जाता है कि अल्लाह के आदर्शों को सही तरीके से समझो जो रसुलों ने बताया तब ऐसे लोग कहते है कि हमें पुरवजों से जो मिला वो काफी है । पुरवजों से उन लोगों को कु-संस्कार ही मिले थे।

पैगामः- ऐसे लोग अपने पुरवजों से मिले हुए कु-संस्कार को छोड़ना नहीं चाहते और सच्चाई की रोशनी उन लोगों तक नहीं पहुँचती।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَيْكُمْ أَنفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُم مَّن ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ إِلَى اللَّهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ {105}

ऐ ईमान वालों तुम अपनी ख़बर लो जब तुम राहे रास्त पर हो तो कोई गुमराह हुआ करे तुम्हें नुक़सान नही पहुँचा सकता तुम सबके अल्लाह ही की तरफ लौट कर जाना है तब जो कुछ करते थे तुम्हें बता देगा (१०५)

व्याख्याः- ईमान वाले पवित्र मानव हमेशा अपने चरित्र के संशोधन के बारे में सोचते है। सच्चे और शांति के पथ पर चलते है और जो मानव गलत पथ पर यानी पाप के रास्ते को अपनाते है उसमें पवित्र मानव का कोई नुकसान नहीं होता। हर किसी को अल्लाह के सामने हाजिर होना होगा और उसके कर्मफल उसके सामने होंगे।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِينَ الْوَصِيَّةِ اثْنَانِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنكُمْ أَوْ آخَرَانِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُم مُّصِيبَةُ الْمَوْتِ تَحْبِسُونَهُمَا مِن بَعْدِ الصَّلَاةِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِي بِهِ ثَمَنًا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ اللَّهِ إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الْآثِمِينَ {106}

ऐ ईमान वालों जब तुममें से किसी पर मौत खड़ी हो तो वसीयत के वक़्त तुम में से दो आदिलों की गवाही होनी ज़रुरी है और जब तुम इत्तेफाक़न कहीं का सफर करो और तुमको मौत की मुसीबत का सामना हो तो दो गवाह ग़ैर सही अगर तुम्हें शक हो तो उन दोनों को नमाज़ के बाद रोक लो फिर वह दोनों अल्लाह की क़सम खाएँ कि हम इस गवाही के ऐवज़ कुछ दाम नहीं लेंगे अगरचे हम जिसकी गवाही देते है हमारा अज़ीज़ ही क्यों न हो और हम अल्लाह लगती गवाही न छुपाएँगे अगर ऐसा करें तो हम बेशक गुनाहगार है (१०६)

व्याख्याः- मानव की मृत्यु के समय उसकी अंतिम इच्छा दो पवित्र मानव के द्वारा ही व्यक्त होनी चाहिये। चाहे वो किसी भी सम्प्रदाय का क्यों न हो। मगर वो लोग पवित्र और ज्ञानी होने चाहिये। और वो दोनों ईश्वर के नाम पर शपथ ग्रहण करेंगे कि अंतिम इच्छा व्यक्त करते वक्त कोई भी निजी स्वार्थ का उपयोग नहीं करेंगे। चाहे उनके अपने करीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो और सच्ची बात को नहीं छुपायेंगे।

فَإِنْ عُثِرَ عَلَىٰ أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّا إِثْمًا فَآخَرَانِ يَقُومَانِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِينَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيَانِ فَيُقْسِمَانِ بِاللَّهِ لَشَهَادَتُنَا أَحَقُّ مِن شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَا إِنَّا إِذًا لَّمِنَ الظَّالِمِينَ {107}

अगर इस पर मालूम हो जाए कि वह दोनों गुनाह के मुस्तहक़ हो गए तो दूसरे दो आदमी उन लोगों में से जिनका हक़ दबाया गया है और के ज़्यादा क़राबतदार है उनकी जगह खड़े हो जाएँ फिर दो नए गवाह अल्लाह की क़सम खाएँ कि पहले दो गवाहों की निस्बत हमारी गवाही ज़्यादा सच्ची है और हमने नहीं छुपाया और अगर ऐसा किया हो तो उस वक़्त बेशक हम ज़ालिम है (१०७)

व्याख्याः- अंतिम इच्छा बयान करने वालों का कोई भी पाप कर्म लोगों के सामने प्रकट हो जाये तो उसके लिये उनको अपनी सत्यता प्रमाणित करना जरूरी है और सत्यता प्रमाणित होने के बाद ही ऐसे लोगों का बयान माना जाना चाहिये।

ذَلِكَ أَدْنَى أَن يَأْتُوا بِالشَّهَادَةِ عَلَى وَجْهِهَا أَوْ يَخَافُوا أَن تُرَدَّ أَيْمَانٌ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاسْمَعُوا وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ {108}

ये ज़्यादा क़रीन क़यास है कि इस तरह पर ठीक ठीक गवाही दें या अन्देशा हो कि कहीं हमारी क़समें दूसरे फरीक़ की क़समों के बाद रद न कर दी जाएँ अल्लाह से डरो और सुन लो और अल्लाह बदचलन लोगों को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाता (१०८)

व्याख्याः- यही उचित है कि सच्ची और सीधी बात को सही तरीके से लोगों के सामने प्रकट किया जाये और इसी हालात में अल्लाह के आदर्शों को सुनना और सामने रखकर कार्य सम्पन्न करना चाहिये। अल्लाह पापी लोगों को रास्ता नहीं दिखाता।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ قَالُوا لَا عِلْمَ لَنَا إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ {109}

जिस दिन अल्लाह अपने पैग़म्बरों को जमा करके पूछेगा कि क्या जवाब दिया गया तो अर्ज़ करेगें कि हम तो कुछ नहीं जानते तू तो खुद बड़ा ग़ैब वाँ है (१०९)

व्याख्याः- सारे रसुलों के आदर्शों को जब सामने रखा जायेगा तब उनकी जवाबदेही नहीं होगी और अल्लाह सब जानता है। पैगामः- सारे रसुलों के बताये हुए पथ एक है लेकिन मानवों ने रसुलों के नाम पर सम्प्रदाय की सृष्टि की। विभाजन मानव का चारित्रिक अभियास है और इसी चरित्र के कारण मानव आपस में ही अपने समाज को टुकड़े-टुकड़े किया।

إِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِي عَلَيْكَ وَعَلَى وَالِدَتِكَ إِذْ أَيَّدتُّكَ بِرُوحِ الْقُدُسِ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَاةَ وَالْإِنجِيلَ وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّينِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِي فَتَنفُخُ فِيهَا فَتَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِي وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِي وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتَى بِإِذْنِي وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنكَ إِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ {110}

जब अल्लाह फरमाएगा कि ये मरियम के बेटे ईसा हमने जो एहसानात तुम पर और तुम्हारी माँ पर किये उन्हे याद करो जब हमने रूहुलकुदूस से तुम्हारी ताईद की कि तुम झूले में और अधेड़ होकर बातें करने लगे और जब हमने तुम्हें लिखना और अक़ल व दानाई की बातें और तौरेत व इन्जील सिखायी और जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी से चिड़िया की मूरत बनाते फिर उस पर कुछ दम कर देते तो वह मेरे हुक्म से चिड़िया बन जाती थी और मेरे हुक्म से मादरज़ाद अँधे और कोढ़ी को अच्छा कर देते थे और जब तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा निकाल खड़ा करते थे और जिस वक़्त तुम बनी इसराईल के पास मौजिज़े लेकर आए और उस वक़्त मैंने उनको तुम से रोका तो उनमें से बाज़ कुफ़्फ़ार कहने लगे ये तो बस खुला हुआ जादू है (११०)

व्याख्याः- मरियम के पुत्र ईशा को अल्लाह की करुणा से ज्ञान और सच्चाई की रोशनी प्राप्त हुई थी। पापी और जालिम लोगों को ईशा ने प्रेम और भाईचारा की शिक्षा दी जैसे कि मिट्टी के बने हुए पंक्षियों को फूंक मारकर जिन्दा कर देना ये एक उदाहरण है कठोर और विवेकहीन मानव की अन्तर्आत्मा को जगाने की। उन्होंने सच्चाई को न देखने वाले अंधों की आंखों में सच्चाई की रोशनी डाली अच्छी और पवित्र बातों को नहीं सुंनने वाले और शारीरिक तौर पर बीमार लोगों की सेवा की। लोगों ने उनके इस कार्य को जादू कहा।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ آمِنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُونَ {111}

और जब मैंने हवारियों से इलहाम किया कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ तो अर्ज़ करने लगे हम ईमान लाए और तू गवाह रहना कि हम तेरे फरमाबरदार बन्दे हैं (१११)

व्याख्याः- अल्लाह के आशीर्वाद से मानव ने ईशा की बातों को समझा और अपनाया और ईमान लाये।

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَن يُنَزِّلَ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {112}

जब हवारियों ने ईसा से अर्ज़ की कि ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या आप का अल्लाह उस पर क़ादिर है कि हम पर आसमान से एक ख़्वान नाज़िल फरमाए ईसा ने कहा अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो अल्लाह से डरो (११२)

व्याख्याः- ईशा के बताये हुए रास्तों पर चलने वाले मानव ने ईशा से कहा कि आकाश से उनके लिये कुछ खाना ले आये ईशा ने उन लोगों को ईश्वर से डरने के लिये कहा।

पैगामः- प्रकृति ने मानव को अपनी मेहनत से अपनी खुराक प्राप्त करना सीखाया। मेहनत की कमायी के अलावा, आश्चर्य के द्वारा कुछ चाहने की ख्वाहिश मानव को पाप कर्मों की तरफ ढकेल देती है और पाप कर्मों में उलझे हुए लोग ईश्वर की सच्चाई से डरते है।

قَالُوا نُرِيدُ أَن نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَن قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ {113}

वह अर्ज़ करने लगे हम तो फक़त ये चाहते है कि इसमें से कुछ खाएँ और हमारे दिल को इत्मेनान हो जाए और यक़ीन कर लें कि आपने हमसे सच फरमाया था और हम लोग इस पर गवाह रहें (११३)

व्याख्याः- और लोग बोले की वो ये चाहते है कि आश्चर्य के द्वारा (यानी बग़ैर मेहनत के) से कुछ मिले ताकि ईशा पर विश्वास मजबूत हो और ईशा की सच्चाई प्रमाणित हो और ये लोग उस पर गवाही दे।

قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِّنكَ وَارْزُقْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الرَّازِقِينَ {114}

मरियम के बेटे ईसा ने अर्ज़ की अल्लाह बन्दा ऐ हमारे पालने वाले हम पर आसमान से एक ख्वान नाज़िल फरमा कि वह दिन हम लोगों के लिए हमारे अगलों के लिए और हमारे पिछलों के लिए ईद का करार पाए तेरी तरफ से एक बड़ी निशानी हो और तू हमें रोज़ी दे और तू सब रोज़ी देने वालो से बेहतर है (११४)

व्याख्याः- मानव कल्याण के लिये सच्चा और सीधा मार्ग मानव को ईशा की प्रार्थना से मिला।

قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَن يَكْفُرْ بَعْدُ مِنكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَّا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ {115}

खुदा ने फरमाया मैं ख्वान तो तुम पर ज़रुर नाज़िल करुगाँ फिर तुममें से जो भी शख़्स उसके बाद काफ़िर हुआ तो मैं उसको यक़ीन ऐसे सख़्त अज़ाब की सज़ा दूँगा कि सारी अल्लाहयी में किसी एक पर भी वैसा अज़ाब न करुगाँ (११५)

व्याख्याः- अल्लाह की तरफ से ऐसा उपदेश आये और उन्हें नहीं मानने वाले लोगों को अशांति की तकलीफे भुगतनी पड़ी।

وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ أَأَنتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيْنِ مِن دُونِ اللَّهِ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ إِن كُنتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ إِنَّكَ أَنتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ {116}

और ऐ मरियम के बेटे ईसा क्या तुमने लोगों से ये कह दिया था कि अल्लाह को छोड़कर मुझ को और मेरी माँ को अल्लाह बना लो ईसा अर्ज़ करेगें सुबहान अल्लाह मेरी तो ये मजाल न थी कि मैं ऐसी बात मुँह से निकालूँ जिसका मुझे कोई हक़ न हो अगर मैंने कहा होगा तो तुझको ज़रुर मालूम ही होगा क्योंकि तू मेरे दिल की बात जानता है हाँ अलबत्ता मैं तेरे जी की बात नहीं जानता इसमें तो शक ही नहीं कि तू ही ग़ैब की बातें खूब जानता है (११६)

व्याख्याः- ईशा ने कभी भी नहीं कहा की अल्लाह की अलावा उसकी पुजा की जाये। ईशा ने कहा था कि उनके पास जो भी ज्ञान है वो अल्लाह का दिया हुआ है और अल्लाह सब सुनता-जानता है।

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ وَكُنتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنتَ أَنتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنتَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ {117}

तूने मुझे जो कुछ हुक्म दिया उसके सिवा तो मैंने उनसे कुछ भी नहीं कहा यही कि अल्लाह ही की इबादत करो जो मेरा और तुम्हारा सबका पालने वाला है और जब तक मैं उनमें रहा उन की देखभाल करता रहा फिर जब तूने मुझे उठा लिया तो तू ही उनका निगेहबान था और तू तो खुद हर चीज़ का गवाह है (११७)

व्याख्याः- और ईशा ने लोगों को अल्लाह का सच्चा मार्ग दर्शन करवाया और लोगों को इस मार्ग पर चलाने की चेष्टा की। अल्लाह परमज्ञानी है।

إِن تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ وَإِن تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ {118}

तू अगर उन पर अज़ाब करेगा तो ये तेरे बन्दे है और अगर उन्हें बख़्श देगा तो बेशक तू ज़बरदस्त हिकमत वाला है (११८)

व्याख्याः- ईश्वर की सजा या माफी मानव जाती के मंगल के लिये ही होती है और अल्लाह सर्वशक्तिमान है।

قَالَ اللَّهُ هَٰذَا يَوْمُ يَنفَعُ الصَّادِقِينَ صِدْقُهُمْ لَهُمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ {119}

अल्लाह फरमाएगा कि ये वह दिन है कि सच्चे बन्दों को उनकी सच्चाई काम आएगी उनके लिए वह बाग़ात है

जिनके नीचे नहरे जारी हैं वह उसमें अबादुल आबाद तक रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी और वह अल्लाह से खुश यही बहुत बड़ी कामयाबी है (११९)

व्याख्याः- अल्लाह की सच्ची और सीधी राह ही मानव कल्याण के काम आती है।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيهِنَّ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {120}

सारे आसमान व ज़मीन और जो कुछ उनमें है सब अल्लाह ही की सल्तनत है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है (१२०)

व्याख्याः- अल्लाह ही आकाश और पृथ्वी का मालिक है और सारी चीजें जो दृश्यमान है उनकी क्षमता की अधीन है।

पैगामः- सारी चीजें एटम से बनी हुई है और एटम की शक्ति ही अल्लाह की शक्ति है।

सूराः अल-अनआम

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

व्याख्याः- शुरू करता हुँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और करुणामयी है।

الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمَاتِ وَالنُّورَ ثُمَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِم يَعْدِلُونَ {1}

सब तारीफ अल्लाह ही को है जिसने आसमान और ज़मीन को पैदा किया और उसमें मुख़्तलिफ क़िस्मों की तारीकी रोशनी बनाई फिर कुफ्फार अपने परवरदिगार के बराबर करते हैं (१)

व्याख्याः- सारी प्रशंसा सिर्फ अल्लाह के लिये ही हो सकती है क्योंकि वही सृष्टि की अधिकर्ता है जो आकाश, पृथ्वी, अंधकार, और उजाला (अच्छा-बुरा) सारी वस्तुओं की सृष्टिकर्ता है फिर भी उनके आदर्शों का उल्लंघन करने वाले पापी यानी काफिर लोग उनके सम्मान को ठेस पहुंचाते हुए उनकी समानता में दूसरे को बराबर ठहराने की कोशिश करते है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن طِينٍ ثُمَّ قَضَى أَجَلاً وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِندَهُ ثُمَّ أَنتُمْ تَمْتَرُونَ {2}

वह तो वही अल्लाह है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर एक वक़्त मुक़र्रर कर दिया और उसके नज़दीक क़यामत का वक़्त मुक़र्रर है (२)

व्याख्याः- अल्लाह सृष्टि करता है मानव को उन्हेंने मिट्टी से सृष्टि किया और उन्हें पृथ्वी पर एक समय तक रहने की उपलब्धि करवाई फिर उसकी मृत्यु का समय निर्धारित किया।

पैगामः- एक जवान मानव के जिसमानी वजन में तकरीबन १८ प्रतिशत प्रोटीन, ७ प्रतिशत मिनरल, १५ प्रतिशत फैट और बाकी ६० प्रतिशत पानी होता है। हर प्राणी का जिस्म प्रोटीन, चर्बी, कार्बोहाइड्राइड, पानी और मिनरल्स से बनते है और ये सारी चीजे विभिन्न चीजों से बनती है जो प्रकृति से प्राणियों को हासिल होती है। ये सारी चीजें विभिन्न प्रतिशत में मानव के जिस्म में पाये जाते है।

१. कार्बन - ५० प्रतिशत
२. ऑक्सीजन- २० प्रतिशत
३. हाइड्रोजन - १० प्रतिशत
४. कैल्सियम- ४ प्रतिशत
५. फोसफोरस- २.५ प्रतिशत
६. पोटैसियम- १ प्रतिशत
७. सल्फर - ०.८ प्रतिशत
८. सोडियम- ०.४ प्रतिशत
९. क्लोरिन - ०.४ प्रतिशत
१०. मैगनीसियम- ०.१ प्रतिशत
११. आइरन- ०.०१ प्रतिशत
१२. मैंगनिस - ०.००१ प्रतिशत
१३. आयोडिन - ०.०००५ प्रतिशत

From Harper's Biochemistry by Robort K Murray (re-produce with permission from west. F.S.Todd WR text book Bio-chemistry third G.D. Macmillan 1961)

कुरान-शरीफ में इन सारी चीजों को खनखनाती मिट्टी कहकर पुकारा गया और वाकयी ये सूखी और खनखनाती हालात में प्रकृति में पाई जाती है। और इन सारी चीजों में एक किस्म की बू भी पाई जाती है और यही बू किसी को अच्छी और किसी को न गवार लगती है। ये सारी चीजें खुराक के द्वारा मानव के जिस्म में एक खास अंदाज और तरीकों से पहुँचती है।

दुनियां की शुरुआत में पानी की पैदाइश हुई और इस पानी से एक खुलिये वाली प्राणी (single cell and multi cell) और उसके बाद मसलसल खुलिये वाले प्राणी की पैदाइश जारी रही और मुख्तलिक विभिन्न किस्म की प्राणी एक नियुक्त समय तक दुनिया में रही।

और इन अलफाजों (पानी की बूंद, खून की फटक और खनखनाती मिट्टी) के साथ जुड़ी हुई कहानियों को वैज्ञानिकों की तहकीकात गलत साबित कर चुकी।

وَهُوَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الْأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ {3}

फिर तुम शक करते हो और वही तो आसमानों में और ज़मीन में अल्लाह है वही तुम्हारे ज़ाहिर व बातिन से ख़बरदार है और वही जो कुछ भी तुम करते हो जानता है (३)

व्याख्याः- अल्लाह ही मालिक है आकाश और पृथ्वी का और वो हर छुपे हुए रहस्य जानता है क्योंकि उनका अस्तित्व हर अणु-परमाणु में उपस्थित है और वो सब प्रकट कर सकते है। सारे चरित्र उनके सामने प्रकाशित है।

وَمَا تَأْتِيهِم مِّنْ آيَةٍ مِّنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ {4}

और उन लोगों का अजब हाल है कि उनके पास अल्लाह की आयत में से जब कोई आयत आती तो बस ये लोग ज़रुर उससे मुँह फेर लेते थे (४)

व्याख्याः- और पापी मानव अपने प्रतिपालक का हर निर्देष ठुकराते है।

فَقَدْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَسَوْفَ يَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ {5}

जब उनके पास बरहक़ आया तो उसको भी झुठलाया तो ये लोग जिसके साथ मसख़रापन कर रहे है उनकी हक़ीक़त उन्हें अनक़रीब ही मालूम हो जाएगी (५)

व्याख्याः- कुसंस्कार में डूबे हुए पापी मानव सच्चाई (पुस्तक) का सामना करते हुए डरते है और उसे कबूल करने में भी अपनी घिनौनी सोच और चरित्र छोड़ना नहीं चाहते। सच्चाई और फायदे को अनुभव करने के बाद भी गुनाह की किचड़ में अपनी इमारत खड़ी करने की चेष्टा करते है यानी अल्लाह की हर सच्चाई को झुठा साबित करते है।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِن قَبْلِهِم مِّن قَرْنٍ مَّكَّنَّاهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّن لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَاءَ عَلَيْهِم مِّدْرَارًا وَجَعَلْنَا الْأَنْهَارَ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَنشَأْنَا مِن بَعْدِهِمْ قَرْنًا آخَرِينَ {6}

क्या उन्हें सूझता नहीं कि हमने उनसे पहले कितने सम्प्रदाय हलाक कर डाले जिनको हमने रुए ज़मीन मे वह क़ुदरत अता की थी जो अभी तक तुमको नहीं दी और हमने आसमान तो उन पर मूसलाधार पानी बरसता छोड़ दिया था और उनके नीचे बहती हुयी नहरें बना दी थी फिर भी उनके गुनाहों की वजह से उनको मार डाला और उनके बाद एक दूसरे सम्प्रदाय को पैदा कर दिया (६)

व्याख्याः- अल्लाह ऐसी सोच रखने वाले बहुत सारे सम्प्रदाय को विनिष्ट कर चुके है। क्या ये लोग नहीं समझते ? कि वो पृथ्वी पर शक्तिशाली थे फिर भी विनिष्ट हो गये ? ऐसी शक्ति शायद अल्लाह के आदर्शों पर विश्वास रखने वाले के पास नहीं थी। अल्लाह ने अपने उपदेशों की वर्षा हर किसी पर बरसाई और नदी की तरह ठंडी सुख-शान्ति जीवन का मार्ग दर्शन करवाया। और जिसने उसे नहीं अपनाया और अपने पाप को अपना जीवन साथी बनाया, ऐसे सम्प्रदाय के पापी मानव विनिष्ट होने के बाद पवित्रता और शान्ति की स्थापना हुई।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتَابًا فِي قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوهُ بِأَيْدِيهِمْ لَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَٰذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ {7}

और अगर हम कागज़ पर किताब तुम पर नाज़िल करते और ये लोग उसे अपने हाथों से छू भी लेते फिर भी कुफ्फार कहते कि ये तो बस खुला हुआ जादू है (७)

व्याख्याः- लोगों की संदेह की नींव इतनी गहरी होती है कि उनके पास सच्चे प्रमाणपत्र होने पर भी वो उस पर विश्वास नहीं करता और उसे धोखा समझते है।

पैगामः- मानव अपना फायदा भुल कर धोखा खाते है यानी फायदेमंद चीजों को भी संदेह के रूप में देखकर ठुकरा देते है।

وَقَالُوا لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ وَلَوْ أَنزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنظَرُونَ {8}

और कहते कि उस पर कोई फरिश्ता क्यों नहीं नाज़िल किया गया हालाँकि अगर हम फरिश्ता भेज देते तो काम ही तमाम हो जाता फिर उन्हें मोहलत भी न दी जाती (८)

व्याख्याः- गुनहगार मानव कहते है कि क्यों नहीं अल्लाह के फरिश्ते उनके सामने आकर सच-झुठ का फैसला कर देते। वो ये नहीं समझते कि अल्लाह ताला ने मानव के मस्तिक्ष में ही सच झूठ बताने वाली अन्तर्आत्मा रखकर न मानने वालों (काफिरों) के इस सवाल का जवाब दे दिया।

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنَاهُ رَجُلًا وَلَلَبَسْنَا عَلَيْهِم مَّا يَلْبِسُونَ {9}

और अगर हम फरिश्ते को नबी बनाते तो उसको भी मर्द बनाते और जो शुबहे ये लोग कर रहे है वही शुबहे हम खुद उन पर उठा देते (९)

व्याख्याः- अल्लाह ताला मानवी शक्ल में और मानव से ही मानव की तमाम क्रिया-प्रक्रिया को अंजाम देते है यदि किसी फरिश्ते को मानव की शक्ल में भेजा जाता तब भी लोगों के दिल में संदेह रह जाता (जो आज भी है)।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِينَ سَخِرُوا مِنْهُم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ {10}

तुम से पहले पैग़म्बरों के साथ मसख़रापन किया गया है पस जो लोग मसख़रापन करते थे उनको उस अज़ाब ने जिसके ये लोग हँसी उड़ाते थे घेर लिया (१०)

व्याख्याः- हजरत मोहम्मद से पहले जितने भी नबी या अवतार पृथ्वी पर आये सबके साथ मजाक किया गया और मजाक करने वाले लोगों को अशान्ति के अभिश्राप ने घेर लिया था। उन्होंने नबियों की पवित्र वाणी को और शान्ति के पवित्र रास्ते को ठुकराया था।

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ {11}

कहो कि ज़रुर रुए ज़मीन पर चल फिर कर देखो तो कि झुठलाने वालो का क्या अन्जाम हुआ (११)

व्याख्याः- मानव समाज का अध्यान करने से ये पता चल जाता है कि अल्लाह के नियमों को ठुकराने वालों का क्या हाल हुआ यानी प्रकृति को बिगाड़ने वाले लोगों का हाल ।

قُل لِّمَن مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ قُل لِّلَّهِ كَتَبَ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ {12}

पूछो तो कि जो कुछ आसमान और ज़मीन में है किसका है तुम खुद कह दो कि ख़ास अल्लाह का है उसने अपनी ज़ात पर मेहरबानी लाज़िम कर ली है वह तुम सब के सब को क़यामत के दिन जिसके आने मे कुछ शक नहीं ज़रुर जमा करेगा जिन लोगों ने अपना आप नुक़सान किया वह तो ईमान न लाएँगे (१२)

व्याख्याः- हर मानव अपनी अर्न्तात्मा से पुछे और विज्ञान के द्वारा समझे कि आकाश, जमीन सारी अल्लाह की है यानी दुनिया की हर चीज एटम से बनती है और इस एटम के अन्दर की ताकत अल्लाह का नूर है और अल्लाह ने अपने कर्त्तव्य का पालन पूरी तरह करता है और जिस दिन दुनिया खत्म हो जायेगी उस दिन तमाम वस्तुएं एटम की शक्ल में उपस्थित होगी और ये सब जानने के उपरान्त अपवित्र मानव पवित्रता को नहीं अपनाएगा।

وَلَهُ مَا سَكَنَ فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ {13}

हालाँकि जो कुछ रात को और दिन को रहता है ख़ास उसी का है और वही सुनता जानता है (१३)

व्याख्याः- रात-दिन के साथ-साथ अच्छा-बुरा, बदबू-खुशबू, काला-गोरा सबका मालिक अल्लाह है और वो महाज्ञानी है।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ {14}

तुम कह दो कि क्या अल्लाह को जो सारे आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला है छोड़ कर दूसरे को सरपरस्त बनाओ और वही रोज़ी देता है और उसको कोई रोज़ी नहीं देता तुम कह दो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि सब से पहले इस्लाम लाने वाला मै हूँ और मुशरेकीन से न होना (१४)

व्याख्याः- अपनी अर्न्तात्मा से समझे अल्लाह के सिवा और किसी के आदर्शों की फरमाबरदारी न करे यानी अल्लाह की जगह पर किसी को न बैठाएं जिसने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की और वही अल्लाह है जो सबको आहार प्रदान करते है। सबसे पहले मानने वाले, समझने वाले और अपनाने वाले मानव की अपनी अर्न्तात्मा होती है और इन आदर्शों के साथ चले और वो आदर्श है प्रेम, भाईचारा, मानवता, अहिंसा, पवित्रता, शिक्षा और शांति और कभी भी अल्लाह के आदर्शों के विरुद्ध (मुर्शिक) न जाये और अल्लाह के आदर्शों के आगे आत्मसमर्पण करें।

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ {15}

तुम कहो कि अगर मै नाफरमानी करुँ तो बेशक एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ (१५)

व्याख्याः- मानव अगर इन आदर्शों का उल्लंघन करें तो उनके लिये जरूर अशांति का अभिश्राप है।

مَّن يُصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهُ وَذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ {16}

उस दिन जिस से अज़ाब टल गया तो अल्लाह ने उस पर रहम किया और यही तो सरीही कामयाबी है (१६)

व्याख्याः- जिस मानव से अशांति का बोझ हटा दिया जाये तो वो समझ ले कि उसे अल्लाह की करुणा प्राप्त हुई और यही उसकी सफलता है।

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِن يَمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {17}

और अगर अल्लाह तुम को किसी क़िस्म की तकलीफ पहुचाए तो उसके सिवा कोई उसका दफा करने वाला नहीं है और अगर तुम्हें कुछ फायदा पहुँचाए तो भी कोई रोक नहीं सकता वह हर चीज़ पर क़ादिर है (१७)

व्याख्याः- और यदि अल्लाह मानव को कष्ट प्रदान करते है तो अल्लाह के अलावा कोई भी मानव का कष्ट दूर नहीं कर सकता । अगर मानव को अल्लाह की तरफ से आशीर्वाद पहुँचे तो अल्लाह क्षमाकारी और सर्वशक्तिमान है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ {18}

वही अपने तमाम बन्दों पर ग़ालिब है और वह वाक़िफकार हकीम है (१८)

व्याख्याः- वो अल्लाह ही है जो मानव के हर काम को प्रचालित करने की क्षमता रखते है। वो कभी हारता नहीं, वो सर्वज्ञानी है।

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللَّهُ شَهِيدٌ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَٰذَا الْقُرْآنُ لِأُنذِرَكُم بِهِ وَمَن بَلَغَ أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُونَ أَنَّ مَعَ اللَّهِ آلِهَةً أُخْرَىٰ قُل لَّا أَشْهَدُ قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلَٰهٌ وَاحِدٌ وَإِنَّنِي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ {19}

तुम पूछो कि गवाही में सबसे बढ़के कौन चीज़ है तुम खुद ही कह दो कि मेरे और तुम्हारे दरम्यिान अल्लाह गवाह है और मेरे पास ये क़ुरान वही के तौर पर इसलिए नाज़िल किया गया ताकि मै तुम्हें और जिसे ख़बर पहुँचे उसके ज़रिए से डराओ क्या तुम यक़ीनन यह गवाही दे सकते हो कि अल्लाह के साथ और दूसरे माबूद भी है तुम कह दो कि मै तो उसकी गवाही नहीं देता तुम कहो कि वह तो बस एक ही अल्लाह है और जिन चीज़ों को तुम शरीक बनाते हो (१९)

व्याख्याः- मानव का मस्तिक्ष प्राकृतिक तौर पर संदेह प्रबन है और कभी-कभी गवाही और शपथ के द्वारा मानव को अदृश्य के बारे में यकीन दिलवाया जा सकता है और ''अल्लाह अदृश्य है'' कुरान-शरीफ की सच्चाई को शपथ द्वारा लोगों को यकीन दिलावाने की कोशिश की गई है।

पैगामः- अल्लाह को किसी की गवाही की जरूरत नहीं पड़ती और अपने अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिये और मानव के संदेह प्रबन चरित्र को समाने रखते हुए इस आयत में संदेह की बात की गई है।

الَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمُ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ {20}

मै तो उनसे बे ज़ार हूँ जिन लोगों को हमने किताब अता फरमाई है वह तो जिस तरह अपने बाल बच्चों को पहचानते है उसी तरह उस नबी को भी पहचानते ह जिन लोगों ने अपना आप नुक़सान किया वह तो इमान न लाएँगें (२०)

व्याख्याः- जो मानव पुस्तक की सत्यता को जानता है वो जरूर रसुल को पहचानेगा। जिस तरह अपनी औलाद को पहचानता है और जिन लोगों ने अपने जीवन के पापों से नष्ट किया वो कभी भी अल्लाह के आदर्शों को नहीं मानेंगे।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ {21}

और जो शख़्स अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए उससे बढ़के ज़ालिम कौन होगा और ज़ालिमों को हरगिज़ नजात न होगी (२१)

व्याख्याः- और जो मानव अल्लाह के नाम पर झुठ बांधते है और अल्लाह के आदर्शों को झुठा साबित करने की कोशिश करते है, उन्हें कभी मुक्ति नहीं मिलती।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا أَيْنَ شُرَكَاؤُكُمُ الَّذِينَ كُنتُمْ تَزْعُمُونَ {22}

और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर जिन लोगों ने शिर्क किया उनसे पूछेगें कि जिनको तुम शरीक ख़्याल करते थे कहाँ है (२२)

व्याख्याः- जब मानव के समस्त कर्मफल का या पाप-पुण्य का हिसाब-किताब होगा तब मानव की सत्यता की असली परीक्षा होगी और मानव जो करता था या जिसके कहने पर करता था वो सब उसका साथ नहीं देंगे।

पैगामः- मुसलमानों में कहा जाता है कि ''कयामत'' नाम का एक दिन होगा जिसमें सारी मानव जाति को इकट्ठा किया जाएगा और उनके पाप-पुण्य का हिसाब-किताब होगा। एक मैदान होगा जिसके सामने अल्लाह बैठा होगा, जन्नत वालों को दाहिने रखा जायेगा और नर्क वाले को बायें। स्वर्गवासी दायें में होंगे और नर्कवासी बायें में। इस तथ्य के अनुसार जिस मानव की मृत्यु कयामत के दिन से एक हजार साल पहले हुई थी चाहे वो अच्छा मानव हो या बुरा उसे विचार के लिये

हजार साल तक इंतजार करना होगा? और जो मानव कयामत से सिर्फ एक दिन पहले मृत्यु प्राप्त करेगा उसे सिर्फ एक दिन इंतजार करना होगा। याद रखें अल्लाह का इंसाफ हर किसी के लिये एक-सा है तो किसी को हजार साल तक का इंतजार और किसी का पल भर में इंसाफ! क्या ये न इंसाफी नहीं है? अल्लाह नूर है जिसकी कोई शक्ल नहीं तो हम अल्लाह को किस तरह इंसाफ की कुर्सी पर बैठायेंगे? ऐसी सूरत में इस आयत में ये कहा जा सकता है कि अल्लाह का इंसाफ हर किसी के लिए एक-सा होता है और मानव अपनी जिन्दगी में ही अल्लाह के इंसाफ का नजारा कर सकता है यानी सीधे शब्दों में ये कहा जा सकता है कि सारी सजा और जजा इस दुनिया में ही मौजूद है। (कुरान शरीफ में ये सारी कहानियाँ मौजूद नहीं है)

ثُمَّ لَمْ تَكُن فِتْنَتُهُمْ إِلاَّ أَن قَالُوا وَاللّهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِينَ {23}

फिर उनकी कोई शरारत न रहेगी बल्कि वह तो ये कहेगें क़सम है उस अल्लाह की जो हमारा पालने वाला है हम किसी को उसका शरीक नही बनाते थे (२३)

व्याख्याः- अल्लाह के आदर्शों को नहीं मानने वाले लोग कहेंगे कि हम लोग पापी नहीं थे और ईश्वर की कसम खाकर कहेंगे कि हम लोगों ने अल्लाह के आदर्शों के विरुद्ध कुछ भी नहीं किया था। (ये इनका झुठा दावा था)

انظُرْ كَيْفَ كَذَبُوا عَلَى أَنفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ {24}

देखो तो ये लोग अपने ही ऊपर आप किस तरह झूठ बोलने लगे और ये लोग जो कुछ झूठी बातें करते थे (२४)

व्याख्याः- ऐसे लोगों का झुठ पकड़ा जायेगा और जो पाप काम वो करते थे और जिसे मिलकर करते थे, वो सब गुम हो जायेगा।

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَن يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا وَإِن يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لاَّ يُؤْمِنُوا بِهَا حَتَّى إِذَا جَاؤُوكَ يُجَادِلُونَكَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلاَّ أَسَاطِيرُ الأَوَّلِينَ {25}

वह सब ग़ायब हो गयी और बाज़ उनमें के ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाए रहते हैं और उनकी हठ धर्मी इस हद को पहुँची है कि गोया हमने खुद उनके दिलों पर परदे डाल दिए है और उनके कानों में बहरापन पैदा कर दिया है कि उसे समझ न सकें और अगर वह सारी मौजिज़े भी देखे लें तब भी ईमान न लाएँगें यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास तुम से उलझे हुए आ निकलते हैं तो कुफ्फ़ार कह बैठे है ये तो अगलों की कहानियों के सिवा कुछ भी नहीं (२५)

व्याख्याः- पाप के अंधकार में डूबे हुए लोगों की आंख, कान, नाक जैसे सारी इन्द्रियां बंद हो चुकी है और सच्चाई की रोशनी उनके दिमाग तक नहीं पहुँच पाती। सारी सच्चाई देखने के बावजूद वो सच्चाई पर यकीन नहीं करते और कहते है कि ये सब बेकार की बातें है जो हर कोई कहता है।

सवालः- ''जब अन्तर्आत्मा पर अल्लाह पर्दा डाल देता है'' तो फिर यकीन दिलाने का क्या मतलब? क्यों मानव को ये जिम्मेदारी दी गई है क्या ये फसाद की शुरुआत नहीं है? अल्लाह ने मानव को ऐसा कोई हुकुम नहीं दिया जिससे फसाद हो और ये साबित हो कि एक मानव पर दूसरे की रूहानी जिम्मेदारी है। वो एक हद तक सच्चाई को गुनहगारों के सामने रख सकता है इसके बाद नहीं।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْأَوْنَ عَنْهُ وَإِن يُهْلِكُونَ إِلاَّ أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ {26}

और ये लोग उस के से रोकते है और खुद तो अलग थलग रहते ही है और बस आप ही अपने को हलाक करते है और समझते नहीं (२६)

व्याख्याः- पापी मानव अपने पाप से दूसरों को प्रभावित करने की कोशिश करते है, ऐसा करके वो खुद अपना ही नुकसान करते है।

وَلَوْ تَرَى إِذْ وُقِفُوا عَلَى النَّارِ فَقَالُوا يَا لَيْتَنَا نُرَدُّ وَلاَ نُكَذِّبَ بِآيَاتِ رَبِّنَا وَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ {27}

अगर तुम उन लोगों को उस वक़्त देखते जब जहन्नुम पर लाकर खड़े किए जाओगे तो कहेगें ऐ काश फिर लौटा दिए जाते और अपने परवरदिगार की आयतों को न झुठलाते और मोमिनीन से होते (२७)

व्याख्याः- ऐसे लोगों को जब नर्क की आग में यानी अशान्ति की आग में जलना पड़ता है तब उन्हें अपने किये पर अफसोस होता है और वो उम्मीद करते है कि उन्हें अशान्ति की जलन से मुक्ति मिले। तकलीफों से मुक्ति पाने के बाद वो ईश्वर के आदर्शों का पालन करने का झूठा वादा करते है।

بَلْ بَدَا لَهُم مَّا كَانُوا يُخْفُونَ مِن قَبْلُ وَلَوْ رُدُّوا لَعَادُوا لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ {28}

बल्कि जो पहले से छिपाते थे आज उन पर खुल गयी और अगर ये लोग लौटा भी दिए जाएँ तो भी जिस चीज़ की मनाही की गयी है उसे करें और ज़रुर करें और इसमें शक नहीं कि ये लोग ज़रुर झूठे हैं (२८)

व्याख्याः- उनके किये का नतीजा उनके सामने आ जाता है फिर भी वो नहीं सुधरते।

وَقَالُوا إِنْ هِيَ إِلاَّ حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوثِينَ {29}

और ये भी तो कहते हैं कि हमारी इस दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा कुछ भी नहीं और हम भी उठाए ही न जायेंगे (२९)

व्याख्याः- और ऐसे पापी मानव अपने पाप कर्मों की यानी अय्याशी की जिन्दगी को असल जिन्दगी समझते है और ये भी कहते है कि उन्हें दुबारा जिन्दा नहीं किया जाएगा।

पैगामः- कुछ मानव पुर्नजन्म पर यकीन नहीं रखते लेकिन ये आयत पुर्नजन्म का सबूत है । मानव के जिस्म की मौत होती है आत्मा की नहीं। दुबारा जिन्दा होने का मतलब आत्मा को दुबारा मानवी जिस्म में डाला जायेगा। जिस्म आत्मा का लिबास है और आत्मा अपने अमाल के साथ लिबास बदलती रहती है। इस आयत के अनुसार पापी मानव दूसरी जिन्दगी पर विश्वास नहीं रखता यानी अपने अमाल पर पूछताछ नहीं होती। पुर्नजन्म होता या नहीं होता इसका कोई वैज्ञानिक सबूत नहीं है मगर इसपर विश्वास रखकर अगर कोई मानव अच्छा कार्य करता है तो समाज के लिए भला होगा और साथ-साथ अच्छे काम के फलस्वरूप मानव को शांति प्राप्त होगी।

وَلَوْ تَرَى إِذْ وُقِفُوا عَلَى رَبِّهِمْ قَالَ أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ قَالُوا بَلَى وَرَبِّنَا قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ {30}

और अगर तुम उनको उस वक्त देखते जब वे लोग अल्लाह के सामने खड़े किए जाएँगे और अल्लाह उनसे पूछेगा कि क्या ये अब भी सही नहीं है वह कहेगें कि दुनिया में इससे इन्कार करते थे (३०)

व्याख्याः- अल्लाह के इंसाफ के सामने जब ऐसे लोग खड़े होंगे तब उन लोगों के साथ सिर्फ इंसाफ ही होगा यानी गुनाहों पर सजा।

पैगामः- अल्लाह अदृश्य है और किसी अदृश्य अस्तित्व का सामना या पीछा नहीं हो सकता। मानव के अन्दर अर्न्तात्मा डालकर अल्लाह ने अपनी उपस्थिति मानव के अंदर ही रखी। ये सामना इसकी अर्न्तात्मा या जमीर के सामने की बात को प्रमाणित करता है।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللّهِ حَتَّى إِذَا جَاءتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَا حَسْرَتَنَا عَلَى مَا فَرَّطْنَا فِيهَا وَهُمْ يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَى ظُهُورِهِمْ أَلا سَاء مَا يَزِرُونَ {31}

उसकी सज़ा में अज़ाब चखो बेशक जिन लोगों ने क़यामत के दिन ख़ुदा की हुज़ूरी को झुठलाया वह बड़े घाटे में है यहाँ तक कि जब उनके सर पर क़यामत आ पहुँचेगी तो कहने लगेंगे ऐ है अफसोस हम ने तो इसमें बड़ी कोताही की और अपने गुनाहों का पुश्तारा अपनी अपनी पीठ पर लादते जाएँगे देखो तो क्या बुरा बोझ है जिसको ये लादे हैं (३१)

व्याख्याः- अल्लाह के अस्तित्व का यकीन नहीं करते हुए जब ऐसे लोग अल्लाह को साक्षी और हाजिर-नाजिर प्रमाण करने की इल्तजा करते है ऐसे ख्यालात वाले लोग बेशक धोखे में है और उनका ये व्यवहम है जो वो अल्लाह पर शक जाहिर करते है जो बिलावास्ता उन्हीं को नुकसान पहुँचाता है, यानी वो अपने अर्न्तात्मा के पुकार भी नहीं सुन सकते ।

وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلاَّ لَعِبٌ وَلَهْوٌ وَلَلدَّارُ الآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلا تَعْقِلُونَ {32}

और दुनियावी ज़िन्दगी तो खेल तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं और ये तो ज़ाहिर है कि आख़िरत का घर परहेज़गारो के लिए बेहतर है तो क्या तुम नहीं समझते (३२)

व्याख्याः- अय्याश और लालच भरी जिन्दगी में कुछ नहीं रखा है सिवाये दिमागी अशान्ति के । संयमी के लिये संयम उनकी शान्ति का रास्ता है (विज्ञान और प्राकृतिक सौन्दर्य अल्लाह ने मानव को तौफे के तौर पर दी है और अल्लाह के असुलों के मुताबिक इसको इस्तेमाल करना मानव के लिए कोई पाप नहीं)।

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهُ لَيَحْزُنُكَ الَّذِي يَقُولُونَ فَإِنَّهُمْ لاَ يُكَذِّبُونَكَ وَلَكِنَّ الظَّالِمِينَ بِآيَاتِ اللّهِ يَجْحَدُونَ {33}

हम खूब जानते है कि उन लोगों की बकबक तुम को सदमा पहुँचाती है तो ये लोग तुम को नही झुठलाते बल्कि ज़ालिम अल्लाह की आयतों से इन्कार करते है (३३)

व्याख्याः- ऐसे लोग कभी-कभी मुँह से कहते है कि वो अल्लाह को नहीं झुठलाते मगर अल्लाह के असुलों को झुठला कर या नहीं मानकर जुल्म करते है समाज और प्राकृति पर।

पैगामः- ''सजदा'' का मतलब है अल्लाह के प्रेम में अपने-आपको समर्पित करना और प्रेम करने वाले को प्रेमी की हर बात अच्छी लगती है। जो अल्लाह को प्रेम करते है उसे अल्लाह की हर प्रकृति नियमों को अपनाने में तकलीफ नहीं होती। झुठमुठ सजदा करने वाले यानी समर्पण करने वाले जो दिखावे का सजदा करते है उनके कहने और करने में बड़ा अन्तर होता है।

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّن قَبْلِكَ فَصَبَرُوا عَلَى مَا كُذِّبُوا وَأُوذُوا حَتَّى أَتَاهُمْ نَصْرُنَا وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ وَلَقَدْ جَاءَكَ مِن نَّبَإِ الْمُرْسَلِينَ {34}

और तुमसे पहले भी बहुतेरे रसूल झुठलाए जा चुके है तो उन्होने अपने झुठलाए जाने और अज़ीयत पर सब्र किया यहाँ तक कि हमारी मदद उनके पास आयी औरअल्लाह की बातों का कोई बदलने वाला नही है और पैगम्बर के हालात तो तुम्हारे पास पहुँच ही चुके है (३४)

व्याख्याः- अल्लाह से प्रेम करने वाले या प्रेम का पैगाम पहुँचाने वाले यानी अल्लाह के नियमों को लोगों में फैलाने वाले पैगम्बरो को भी तकलीफ पहुँचाई गई है। अल्लाह से प्रेम करने वाले इसे भी अल्लाह का दिया हुआ हाल समझ कर सब्र करते है जिस तरह प्रेमी की दी हुई तकलीफ भी प्रेम करने वाले को अच्छी लगती है। अल्लाह के नियमों पर पक्के रहने वाले कभी नहीं भटकते।

وَإِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَن تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَأْتِيَهُم بِآيَةٍ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدَىٰ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ {35}

अगरचे उन लोगों का मुँह फेरना तुम पर शाक ज़रुर है लेकिन अगर तुम्हारा बस चले तो ज़मीन के अन्दर कोई सुरगं ढूँढ निकालो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उन्हें कोई मौजिज़ा ला दिखाओ अगर अल्लाह चाहता तो उन सब को राहे रास्त पर इकट्ठा कर देता बस तुम हरगिज़ जाहिलों में न होना (३५)

व्याख्याः- झुठे मक्कार और बेरहम मानव ही अल्लाह की प्रकृति से बेखबर होते है और अच्छे मानव बेखबर होने वालों की तरह नहीं होते।

إِنَّمَا يَسْتَجِيبُ الَّذِينَ يَسْمَعُونَ وَالْمَوْتَىٰ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُونَ {36}

सिर्फ वही लोग मानते है जो सुनते है और मुर्दो को तो अल्लाह क़यामत ही में उठाएगा फिर उसी की तरफ लौटाए जाएँगे (३६)

व्याख्याः- सुनने वाले और उसे महसूस करने वाले अल्लाह की हकीकत को समझते है और मुर्दा विवेक वाले लोगों का जिम्मेदार सिर्फ अल्लाह ही है और अल्लाह ही उसके विवेक को पाक साफ करके समाज में वापस रखने की हैसियत रखते है।

पैगामः- धर्म और अर्धम की पहचान देना अल्लाह के इख्तियार में है । मानव अगर अल्लाह का काम खुद करने की चेष्टा करते है तो वो गुनाह करता है ।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَن يُنَزِّلَ آيَةً وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ {37}

और कुफ्फ़ार कहते है कि उस नबी पर उसके परवरदिगार की तरफ से कोई मौजिज़ा क्यों नहीं नाज़िल होता तो तुम कह दो कि अल्लाह मौजिज़े के नाज़िल करने पर ज़रुर क़ादिर है मगर उनमें के अक्सर लोग नहीं जानते (३७)

व्याख्याः- अल्लाह अदृश्य है, कुछ लोग अल्लाह को अपनी नजर से देखने के बाद ईमान लाने की बात करते है और अल्लाह की तरफ से आश्चर्य की उम्मीद रखते है। अललाह की हर प्रकृति अपने आप पर एक आश्चर्य है और इसकी हर क्रिया-प्रक्रिया अल्लाह के इख्तियार में है लेकिन लोग उसे नहीं समझते।

पैगामः- मानव के वश में कुछ नहीं है । न वो मौत को रोक पाये और न ही वो सूर्य की रोशनी-हवा को।

وَمَا مِن دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طَائِرٍ يَطِيرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّا أُمَمٌ أَمْثَالُكُم مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِن شَيْءٍ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يُحْشَرُونَ {38}

ज़मीन में जो चलने फिरने वाला या अपने दोनों परों से उड़ने वाला परिन्दा है उनकी भी तुम्हारी तरह जमाअतें हैं और सब के सब लौह महफूज़ मे मौजूद हमने किताब में कोई बात नहीं छोड़ी है फिर सब के सब अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लाए जायेंगे। (३८)

व्याख्याः- सारे प्राणी जो प्रकृति में मौजूद है वो अपने-अपने प्राकृतिक नियमों के दायरे में घिरे हुए है, और हर कोई अपनी-अपनी प्रकृति और फितरत के बीच है और अपने-अपने दायरे में अपने-अपने नियमों के अनुसार चलता है। कोई भी अपने नियम और दायरें को तोड़ नहीं सकता और ये सारे नियम प्रकृति के बनाये हुए है। अल्लाह ने प्रकृति में कोई भी चीज नहीं छोड़ी और हर दायरे के नियम अल्लाह के पास सुरक्षित है, मानव को हर सुख-सुविधा प्रकृति से ही मिलती है।

पैगामः- हर प्राणी के रहन-सहन का तरीका अलग-अलग है और वो उसी दायरे में रहता है और वो उस नियम से निकल नहीं सकता और जो कोई ऐसा करता है वो नकाम रहता है।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا صُمٌّ وَبُكْمٌ فِي الظُّلُمَاتِ مَن يَشَإِ اللَّهُ يُضْلِلْهُ وَمَن يَشَأْ يَجْعَلْهُ عَلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ {39}

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया गोया वह अँधेरों में गूँगे बहरे खुदा जिसे चाहे उसे गुमराही में छोड़ दे और जिसे चाहे उसे सीधे ढर्रे पर लगा दे (३९)

व्याख्याः- अल्लाह की प्रकृति को बिगाड़ने वाले लोग बिलावास्ता अपना ही नुकसान उठा रह है और बहरे-गूंगे होकर हकीकत को नहीं समझ रहे है।

पैगामः- मानव अपने ऐशो-आराम और लालच के वश में आकर प्रकृति को बिगाड़ते चले आ रहे है और अपना ही नुकसान कर रहे है उदाहरण के तौर पर ओजन लेयर का फटना जिसका जिम्मेदार है मानव की ऐशो-आराम की जिन्दगी की ख्वाहिश ।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُ اللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {40}

पूछो तो कि क्या तुम यह समझते हो कि अगर तुम्हारे सामने अल्लाह का अज़ाब आ जाए या तुम्हारे सामने क़यामत ही आ खड़ी मौजूद हो तो तुम अगर सच्चे हो तो क्या खुदा को छोड़कर दूसरे को पुकारोगे (४०)

व्याख्याः- रसुल का पैगाम ये होता है कि मानव अपना हाल प्रकृति के अनुसार रखे यानी अपनी लालच और ख्वाहिसात पर काबू रखे और अपनी मौजूदा हालात को पहचाने वो अगर ऐसा नहीं करता तो यकीनन उसे बर्बादी का सामना करना पड़ेगा और इसका जिम्मेदार वो खुद होगा, अल्लाह नहीं। और उस वक्त अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारने से कोई फायदा नहीं होगा। सुख-दुःख सब प्रकृति के खेल है और ये दोनों एक-दूसरे के बगैर अधुरे है। सच्चे और पवित्र मानव इस बात को अच्छी तरह समझते है।

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِنْ شَاءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ {41}

बल्कि उसी को पुकारोगे फिर अगर वह चाहेगा तो जिस के वास्ते तुमने उसको पुकारा है उसे दफा कर देगा और तुम दूसरे माबूदों को जिन्हे तुम शरीक समझते थे भूल जाओगे (४१)

व्याख्याः- हकीकत समझने के बाद मानव अपने ठहराये हुए शरीकों यानी लालच, ख्वाहिसात को भुल जायेगा।

पैगामः- मानव अगर अपने शरीकों यानी लालच, हवस, ख्वाहिसात जो उसका माबूद बनकर उसे गुनाह पर उकसाती है और जब अजाब आता है तो वो उन सब चीजों से किनाराकश होकर सिर्फ एक अल्लाह को ही याद करता है और उन सब ख्वाहिसात को भुल जाता है। इस आयत में उन सारी ख्वाहिसात को ही "शरीक" कहा गया है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا إِلَى أُمَمٍ مِّن قَبْلِكَ فَأَخَذْنَاهُم بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُونَ {42}

और जो उम्मतें तुमसे पहले गुज़र चुकी हैं हम उनके पास भी बहुतेरे रसूल भेज चुके हैं फिर तो हमने उनको सख़्ती और तकलीफ़ में गिरफ़्तार किया ताकि वह लोग गिड़गिड़ाए (४२)

व्याख्याः- हर सम्प्रदाय में अल्लाह ने समझाने के लिये पैगम्बर भेजे जो मौजूद है और जो गुजर चुके और अल्लाह ने मानव की बुरी फितरत को अन्तर्आत्मा द्वारा अनुभव करवाते है ताकि वो समझे।

فَلَوْلَا إِذْ جَاءَهُم بَأْسُنَا تَضَرَّعُوا وَلَكِن قَسَتْ قُلُوبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {43}

तो जब उन पर हमारा अज़ाब आ खड़ा हुआ तो वह लोग क्यों नहीं गिड़गिड़ाए मगर उनके दिल तो सख़्त हो गए थे और उनकी कारस्तानियों को शैतान ने आरास्ता कर दिखाया था (४३)

व्याख्याः- गुनाह के बदले में जब मानव को कष्ट पहुँचता है तब उन्हें गुनाह का एहसास होता है और मुक्ति पाने के बाद वही काम करते है जिससे उनको नुकसान पहुँचता था। शैतान उसकी बुरी फितरत को हथियार बनाकर उसके विवेक को मुर्दा कर देता है। गुनाह एक सामूहिक चमक है, लालची मानव इस चमक में बहककर अपने आपको अशांति के दलदल में डूबा देते है।

فلمّا نسوا ما ذُكّروا به فتحنا عليهم أبواب كلّ شيء حتّى إذا فرحوا بما أوتوا أخذناهم بغتة فإذا هم مُبلسون {44}

फिर जिसकी उन्हें नसीहत की गयी थी जब उसको भूल गए तो हमने उन पर हर तरह की नेअमतों के दरवाज़े खोल दिए यहाँ तक कि जो नेअमतें उनको दी गयी थी जब उनको पाकर ख़ुश हुए तो हमने उन्हें नागाहाँ ले डाला तो उस वक़्त वह नाउम्मीद होकर रह गए (४४)

व्याख्याः- मानव जब अल्लाह के नियमों को भुल कर अपने फितरत (बुरे ख्यालात, लालच और हवस) के वश में आ जाता है और कोई भी बात उसके विवेक को सुधार नहीं पाती तब अल्लाह उसके कामों को उसकी नजर में अच्छा दिखा कर शैतान के द्वारा उसके बुरे कामों को एक वक्त तक बढ़ाते रहते है और हद से बढ़ने के पहले उसे अपनी गिरफ्त में ले लेते है।

पैगामः- शैतान (पाप शक्ति) की पैदाइश भी अल्लाह की मर्जी से होती है और ये इसलिए कि अच्छे के साथ बुराई रखकर दुनिया को विभिन्न रंग दिये और मानव को एक-सा जिन्दगी नहीं दी। अगर बुराई नहीं होती तो अच्छाई की पहचान नहीं होती। अच्छाई का अनुभव करने के लिये बुराई की मौजुदगी जरूरी है।

فقُطِعَ دابرُ القوم الّذين ظلموا والحمدُ لله ربّ العالمين {45}

फिर ज़ालिम लोगों की जड़ काट दी गयी और सारे जहाँन के मालिक अल्लाह का शुक्र है (४५)

व्याख्याः- और जुल्म करने वालों को जड़ से उखाड़ फेंकते है। तमाम लोगों को चैन की सांस मिलती है और अल्लाह का शुक्र अदा करते है ।

पैगामः- ये आयत रसुल की या फरिश्तों की जबान से है क्योंकि इस आयत में अल्लाह अपने आपको धन्यवाद कैसे दे सकता है? और साथ में मानव की अन्तात्मा भी इस आयत में अल्लाह को धन्यवाद कर रही है।

قل أرأيتم إن أخذ الله سمعكم وأبصاركم وختم على قلوبكم من إلـه غير الله يأتيكم به انظر كيف نُصرّف الآيات ثمّ هم يصدفون {46}

उनसे पूछो तो कि क्या तुम ये समझते हो कि अगर अल्लाह तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखे लें ले और तुम्हारे दिलों पर मोहर कर दे तो अल्लाह के सिवा और कौन मौजूद है जो तुम्हें ये नेअमतें दे देखो तो हम किस किस तरह अपनी दलीले बयान करते है इस पर भी वह लोग मुँह मोड़े जाते है (४६)

व्याख्याः- किसी का कोई भी नुकसान हो अल्लाह के अलावा कोई भी उसे उस नुकसान से मुक्ति नहीं दिला सकता।

قل أرأيتكم إن أتاكم عذاب الله بغتة أو جهرة هل يُهلك إلاّ القوم الظّالمون {47}

उनसे पूछो कि क्या तुम ये समझते हो कि अगर तुम्हारे सर पर अल्लाह का अज़ाब बेख़बरी में या जानकारी में आ जाए तो क्या गुनाहगारों के सिवा और लोग भी हलाक किए जाएँगे (४७)

व्याख्याः- रसुल का पैगाम यही होता है कि जुल्म करने वाले पर हुए अभिश्राप को बयान करें। रसुल ये कहते है कि अल्लाह का अभिश्राप जुल्म करने वालों पर जरूर होता है।

وما نُرسل المرسلين إلاّ مبشّرين ومنذرين فمن آمن وأصلح فلا خوف عليهم ولا هم يحزنون {48}

और हम तो रसूलों को सिर्फ इस ग़रज़ से भेजते है कि ख़ुशख़बरी दें और डराएँ फिर जिसने इमान क़ुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए तो ऐसे लोगों पर न कोई ख़ौफ होगा और न वह ग़मग़ीन होगें (४८)

व्याख्याः- पैगम्बरों का काम है कि वो अल्लाह का अभिश्राप और आशीर्वाद के बारे में लोगों को बताये। जो मानव पाप छोड़ कर अच्छे कामों में अपने आपको लगाये उसे अभिश्राप का कोई डर नहीं होता।

والّذين كذّبوا بآياتنا يمسّهم العذاب بما كانوا يفسقون {49}

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया तो चूँकि बदकारी करते थे अज़ाब उनको पलट जाएगा (४९)

व्याख्याः- और जो मानव अल्लाह के प्राकृतिक नियमों को नहीं मानते और उसे झुठा समझते है उनका जीवन अभिसप्त हो जाता है।

قل لا أقول لكم عندي خزائن الله ولا أعلم الغيب ولا أقول لكم إنّي ملك إن أتّبع إلاّ ما يوحى إليّ قل هل يستوي الأعمى والبصير أفلا تتفكّرون {50}

उनसे कह दो कि मै तो ये नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने है और न मै ग़ैब के जानता हूँ और न मै तुमसे ये कहता हूँ कि मै फरिश्ता हूँ मै तो बस जो मेरे पास वही की जाती है उसी का पाबन्द हूँ कि अन्धा और आँख वाला बराबर हो सकता है तो क्या तुम नहीं सोचते (५०)

व्याख्याः- रसुल या पैगम्बर न ही फरिश्ता होते है और न ही अल्लाह और न ही उसे भविष्य के बारे में पता होता है। वो तो सिर्फ इतना बताते है जितना अल्लाह उनके दिमाग में डालते है, सच और झुठ कभी बराबर नहीं हो सकते।

وَأَنذِرْ بِهِ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَن يُحْشَرُوا إِلَى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُم مِّن دُونِهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ {51}

और उन लोगों को डराओ जो इस बात का ख़ौफ रखते है कि वह अपने ख़ुदा के सामने जमा किये जायेंगे उनका अल्लाह के सिवा न कोई सरपरस्त हे और न कोई सिफारिश करने वाला ताकि ये लोग परहेज़गार बन जाएँ (५१)

व्याख्याः- ऐसे जुल्म और गुनाह करने वाले लोग इस बात से डरे कि जब अल्लाह की दी हुई मुसीबत उन लोगों के पास आयेगी तो उनके मदद करने वाले यानी गैर अल्लाह (गुनाह) जिनकी वो ताबेदारी करते थे उनसे उनको मदद प्राप्त नहीं होगी।

पैगामः- श्रृष्टि में गैर अल्लाह कहकर कुछ भी नहीं है। ये मानव के नदान जहन को समझाने के लिए कहा गया है।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِينَ يَدْعُونَ رَبَّهُم بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجْهَهُ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَيْءٍ وَمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِم مِّن شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُونَ مِنَ الظَّالِمِينَ {52}

और जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार से उसकी ख़ुशनूदी की तमन्ना में दुआँए माँगा करते है- उनको अपने पास से न धुत्कारो-न उनक जवाब देही कुछ उनके ज़िम्मे है ताकि तुम उन्हें धुत्कार बताओ तो तुम ज़ालिम में हो जाओगे (५२)

व्याख्याः- ऐसे लोगों के साथ सख्ती नहीं करनी चाहिये जो अल्लाह के नियमों को पूरी तरह मानते है जैसे कि झुठ नहीं बोलना, चोरी नहीं करना, अपने जात से किसी को नुकसान नहीं पहुँचाना, हर किसी के लिये दिल में मोहब्बत रखना, जात-पात के भेदभाव के लड़ाई में नहीं पड़ना और जो लोग ऐसे लोगों को तकलीफ देते है वो जुल्म करने वाले लोगों में से है।

पैगामः- ईमान सिर्फ अच्छाई और मोहब्बत से तालुक रखता है। ईमान किसी भी मजहबी दायरे में सीमाबद्ध नहीं है। इस आयत में ''सुबह व शाम'' से मुराद मानव का अच्छा और बुरा वक्त और पाप-पुण्य ।

وَكَذَٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لِّيَقُولُوا أَهَٰؤُلَاءِ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْهِم مِّن بَيْنِنَا أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِالشَّاكِرِينَ {53}

और इसी तरह हमने बाज़ आदमियों को बाज़ से आज़माया ताकि वह लोग कहें कि हाएँ क्या ये लोग हममें से है जिन पर ख़ुदा ने अपना फ़ज़ल व करम किया है क्या अल्लाह शुक्र गुज़ारों को भी नही जानता (५३)

व्याख्याः- मानव को रंग-बिरंगी जीवन देने के लिए हर मानव के रंगरूप के साथ-साथ सोच-विचार, पसंद-नपसंद अलग-अलग रखें और इन आदर्शों पर प्रकृति निर्णय लेती है कि कौन सही और कौन गलत। सच्चाई अनुभव करने वालों को अल्लाह खूब जानता है।

पैगामः- हर कोई अपने सोच को अच्छा और दूसरों से बेहतर समझते है मगर हकीकत में अच्छा कौन है ये अल्लाह मानवों के सामने जाहिर कर देते है। अच्छा वो होता है जो सच्चाई के कदमों पर अपने सारे गलतफैमियों को कूरबान करना जानता हो, मानव समाज में दो सम्प्रदाय है पवित्र और पापी।

وَإِذَا جَاءَكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِنَا فَقُلْ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلَىٰ نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ أَنَّهُ مَنْ عَمِلَ مِنكُمْ سُوءًا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِن بَعْدِهِ وَأَصْلَحَ فَأَنَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {54}

और जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाए हैं तुम्हारे पास आँए तो तुम सलामुन अलैकुम कहो तुम्हारे परवरदिगार ने अपने ऊपर रहमत लाज़िम कर ली है बेशक तुम में से जो शख़्स नादानी से कोई गुनाह कर बैठे उसके बाद फिर तौबा करे अल्लाह उसका गुनाह बख़्श देगा वह यक़ीनी बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (५४)

व्याख्याः- जो लोग अल्लाह के आदर्शों पर चलते है और उस पर विश्वास रखते है उन पर अल्लाह का आशीर्वाद बरकरार रहेगा और जो मानव अंजाने में गलत काम करता है और उस गलती को समझने के बाद दुबारा न करने का एहद करता है और साथ-साथ उस गलती के नतीजे को सुधारने की कोशिश करता है उसे जरूर अल्लाह का आशीर्वाद के रूप में शान्ति प्राप्त होगी।

पैगामः- बिता हुआ वक्त कभी वापस नहीं आता और इस प्रकृति नियमों के अनुसार अंजाने में की गई गलती सुधारने का तरीका है सच्चे दिल से और पक्के एहद से न करने का संकल्प। अगर ये संकल्प न किया जाये तो गलती करने वाले का विवेक उसे शान्ति से जीने नहीं देगा। धार्मिक तौर पर इस मसले का कोई हल नजर अगर आता है तो गलती करने वाले को शान्ति हासिल होगी। हर धर्म का एक ही मकसद है मानव और मानवी समाज को शान्ति प्रदान करना । जान-बूझकर अगर एक ही गलती बार-बार दोहराई जाये तो वो गुनाह है और उसकी कोई माफी नहीं।

وَكَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلِتَسْتَبِينَ سَبِيلُ الْمُجْرِمِينَ {55}

और हम आयतों को यूँ तफ़सील से बयान करते है ताकि गुनाहगारों की राह खुल जाए और वह इस पर न चले (५५)

व्याख्याः- और प्रकृति अपना हर पहलू लोगों के सामने जाहिर कर देती और लोगों को सही-गलत की पहचान खुद बाखुद हो जाती है।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ قُل لَّا أَتَّبِعُ أَهْوَاءَكُمْ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ {56}

तुम कह दो कि मुझसे उसकी मनाही की गई है कि मै अल्लाह को छोड़कर उन माबूदों की इबादत करुं जिन को तुम पूजा करते हो कह दो कि मै तो तुम्हारी ख़्वाहिश पर चलने का नहीं फिर तो मै गुमराह हो जाऊँगा और हिदायत याफ़ता लोगों में न रहूँगा (५६)

व्याख्याः- अल्लाह ताला के नियमों के अलावा दूसरे नियमों को यानी शैतानी नियमों को अपनाना पुरी तरह मना है और वो अशान्ति के अंधकार के मुसीबत में पड़ जायेगा तथा समझदारों में नहीं गिना जायेगा।

قُلْ إِنِّي عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَكَذَّبْتُم بِهِ مَا عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفَاصِلِينَ {57}

तुम कह दो कि मै तो अपने परवरदिगार की तरफ से एक रौशन दलील पर हूँ और तुमने उसे झुठला दिया तुम जिस की जल्दी करते हो वह कुछ मेरे पास तो है नहीं हुकूमत तो बस ज़रुर खुदा ही के लिए है वह तो बयान करता है और वह तमाम फैसला करने वालों से बेहतर है (५७)

व्याख्याः- रसुल हमेशा सच्चाई की दलील पेश करते रहे मगर लोगों ने उसे झुठलाया। लोग रसुल के पास आते अपनी ख्वाहिसात को जल्द पूरी करने के लिये जो रसुल के वश में नहीं वो अल्लाह के इख्तियार में है। रसुल तो सिर्फ हकीकत बयान करते है और अल्लाह सबकी किस्मत का फैसला करने वाला है'

قُل لَّوْ أَنَّ عِندِي مَا تَسْتَعْجِلُونَ بِهِ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِالظَّالِمِينَ {58}

कह दो कि जिस की तुम जल्दी करते हो अगर वह मेरे पास होता तो मेरे और तुम्हारे दरम्यिान का फैसला कब का चुक गया होता और अल्लाह तो ज़ालिमों से खूब वाकिफ़ है (५८)

व्याख्याः- रसुल कहते है कि उनके पास ऐसी चीज होती जिसकी लोग जल्दी करते है तो यकीनन हर पहलू का फैसला हो जाता और जालिमों को अल्लाह खूब पहचानता है।

पैगामः- इन सारी आयतों में अल्लाहताला ने "आप केह दो" कहकर अपनी बातें रसुल के द्वारा लोगों को बताई, मगर क्यों? क्या अल्लाह को रसुल की मदद की जरूरत है? क्या अल्लाह खुद लोगों के दिमाग में ये बात नहीं डाल सकता? ये भी प्राकृतिक नियम है कि दुनिया की तमाम खास बाते खास लोगों के द्वारा ही लोगों तक पहुँचती है, अगर सारी खास बातें आम हो जाये तो इन बातों की एहमियत कम हो जाती है। इस तरह अल्लाह ताला मानवों को खास और आम बातों की पहचान देता है। आज तक दुनिया में जितने भी अविष्कार हुए है वो विशेष रूप से कोई विशेष व्यक्ति की मस्तिक्ष से उत्पन्न हुई है।

وَعِندَهُ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَا إِلَّا هُوَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَا تَسْقُطُ مِن وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِي ظُلُمَاتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَلَا يَابِسٍ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ {59}

और उसके पास ग़ैब की कुन्जियाँ है जिनको उसके सिवा कोई नही जानता और जो कुछ खुशकी और तरी में है उसको वही जानता है और कोई पत्ता भी नहीं खटकता मगर वह उसे ज़रुर जानता है और ज़मीन की तारिकियों में कोई दाना और न कोई खुश्क चीज़ है मगर वह नूरानी किताब में मौजूद है (५९)

व्याख्याः- सारे राज का मालिक अल्लाह है और अल्लाह की मर्जी के बगैर एक पत्ता भी हिल नहीं सकता।

पैगामः- एटम के अंदर जो शक्ति है उसी शक्ति से दुनिया चलती है और यही शक्ति अल्लाह यानी ईश्वर है।

وَهُوَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُم بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُم بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيهِ لِيُقْضَىٰ أَجَلٌ مُّسَمًّى ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ {60}

वह वही है जो तुम्हें रात को उठा लेता हे और जो कुछ तूने दिन को किया है जानता है फिर तुम्हें दिन को उठा कर खड़ा करता है ताकि मियाद जो मुअय्युन है पूरी की जाए फिर तुम सबको उसी की तरफ लौटना है फिर जो कुछ तुम करते हो तुम्हें बता देगा (६०)

व्याख्याः- वही प्रकृति है जो मानव की जिन्दगी के बुरे वक्त में यानी ये कह सकते है कि पुरी तरह गुनह में डूबे हुए मानव के जीवन में शान्ति नहीं होने देती और गुनहगार मानव के जीवन में अंधेरा छा जाता है यानी रात आ जाती है। प्रकृति ये भी जानती है कि मानव का जीवन जब पवित्र होता है और ज्ञान से उज्जवल होता है तब वो अपने अर्न्तात्मा और ज्ञान का इस्तेमाल किस तरह करता है। कुछ वक्त तक पापी मानव का विवेक और इसकी अर्न्तात्मा उसे पवित्रता की तरफ पुकारती रहती है। एक विशेष वक्त के बाद पाप में डूबा हुए मानव का शांति और चैन छीन लिया जाता है, हर प्राणी की मृत्यु निश्चित है और उसे प्रकृति में ही विलीन होना होता है, जो मानव भूल जाता है और अपनी जरूरत से ज्यादा मोह माया, उत्वाकांक्षा, लोभ और अहंकार में डूब कर प्राकृतिक अभिश्राप का उत्तरदायी बनता है।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهِ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُم حَفَظَةً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُونَ {61}

वह अपने बन्दों पर ग़ालिब है वह तुम लोगों पर निगेहबान भेजता है-यहाँ तक कि जब तुम में से किसी की मौत आए तो हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते उसको उठा लेते है और वह कोताही नहीं करते (६१)

व्याख्याः- वही अल्लाह और उनकी प्रकृति है जो हर चीज पर गालिब है और उसी ने दूनिया में कानून और कानून के रखवालो की श्रृष्टि की और प्राकृतिक नियमों के अनुसार जब किसी की मृत्यु या परिवर्तन होता है वो समय के साथ-साथ एटम से बनी चीज को एटम में परिवर्तित करते है और इस नियम का उल्लंघन नहीं होता।

ثُمَّ رُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ أَلَا لَهُ الْحُكْمُ وَهُوَ أَسْرَعُ الْحَاسِبِينَ {62}

फिर ये लोग अपने सच्चे मालिक ख़ुदा के पास वापस बुलाए गए-आगाह रहो कि हुकूमत ख़ास उसी के लिए है और वह सबसे ज़्यादा हिसाब लेने वाला है (६२)

व्याख्याः- सबको प्रकृति में विलीन होना होगा और सारे फैसला (कर्मफल की) प्रकृति द्वारा ही की जाएगी और इसी तरह अल्लाह अपने शक्ति द्वारा मानव को उनके कर्मफल देते है।

قُلْ مَن يُنَجِّيكُم مِّن ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُونَهُ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً لَّئِنْ أَنجَانَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ {63}

उनसे पूछो कि तुम ख़ुश्की और तरी के अँधेरों से कौन छुटकारा देता है जिससे तुम गिड़ गिड़ाकर दुआएँ माँगते हो कि अगर वह हमें उस से छुटकारा दे तो हम ज़रुर उसके शुक्र गुज़ार रहेगें (६३)

व्याख्याः- मानव जीवन के हर उतार-चढ़ाव प्रकृति के ऊपर निर्वशील है'

قُلِ اللَّهُ يُنَجِّيكُم مِّنْهَا وَمِن كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ أَنتُمْ تُشْرِكُونَ {64}

तुम कहो उन से और हर बला में ख़ुदा तुम्हें नजात देता है उस पर भी तुम शिर्क करते ही जाते हो (६४)

व्याख्याः- दुःख के बाद सुख देकर प्रकृति ने मानव को एक-सा और हताश जिन्दगी से मुक्ति दी फिर भी मानव पाप के साथ अपना सम्पर्क जोड़ के अल्लाह का शरीक (अमम्मानना) करते है।

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَىٰ أَن يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّن فَوْقِكُمْ أَوْ مِن تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُم بَأْسَ بَعْضٍ انظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُونَ {65}

तुम कह दो कि वही उस पर अच्छी तरह क़ाबू रखता है कि अगर तुम पर अज़ाब तुम्हारऊपर से नाज़िल करे या तुम्हारे पाँव के नीचे से या एक सम्प्रदाय को दूसरे से भिड़ा दे और तुम में से कुछ लोगों को बाज़ आदमियों की लड़ाई का मज़ा चखा दे ज़रा ग़ौर तो करो हम किस किस तरह अपनी आयतों को उलट पुलट के बयान करते है ताकि लोग समझे (६५)

व्याख्याः- अल्लाह की शक्ति हर अणु-परमाणु में उपस्थित है उसके द्वारा ही अल्लाह समस्त क्रिया-प्रक्रिया को अंजाम देते है। मानव के बुरे कर्मो के फल कही से भी मानव के सामने आ सकते है और मानव की निजी मतभेद का अंजाम भी प्राकृतिक है। श्रृष्टि, परिवर्तन और विनाश का जिम्मेदार अल्लाह है मगर मानव हकीकत नहीं समझता और आपस में असुलों की बुनियाद पर सम्प्रदाय की सृष्टि करके फसाद करते है और सत्य को बिगाड़ कर अपनी सुख शांति को अपने ही हाथों नष्ट करते है।

وَكَذَّبَ بِهِ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ قُل لَّسْتُ عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ {66}

और उसी को तुम्हारी क़ौम ने झुठला दिया हालाँकि वह बरहक़ है तुम उनसे कहो कि मै तुम पर कुछ निगेहबान तो हूँ नहीं (६६)

व्याख्याः- कुसंस्कार से सब को प्रभावित करके मानव आपस में टुकड़े-टुकड़े होकर अपने जीवन की राह को मुश्किल कर देते है और मानव के इस चरित्र का जिम्मेदार अल्लाह, कूदरत, पवित्र मानव या रसुल नहीं है।

لِكُلِّ نَبَإٍ مُسْتَقَرٌّ وَسَوْفَ تَعْلَمُونَ {67}

हर ख़बर का एक ख़ास वक़्त मुक़र्रर है और अनक़रीब ही तुम जान लोगे (६७)

व्याख्याः- हर बेबुनियाद, अयौगतिक और कुसंस्कार का एक वक्त होता है, समय चक्र में ये झुठा प्रमाणित होकर मानव के सामने आ जाता है।

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِينَ يَخُوضُونَ فِي آيَاتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتَّى يَخُوضُوا فِي حَدِيثٍ غَيْرِهِ وَإِمَّا يُنسِيَنَّكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرَى مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ {68}

और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों में बेहूदा बहस कर रहे हैं तो उन से टल जाओ यहाँ तक कि वह लोग उसके सिवा किसी और बात में बहस करने लगें और अगर तुम्हें शैतान भुला दे तो याद आने के बाद ज़ालिम लोगों के साथ हरगिज़ न बैठना (६८)

व्याख्याः- अल्लाह के नियमों को लेकर बेफिजुल की लड़ाई से दूर रहना ही नेक और ईमानदारों का चरित्र होता है। याद रखें अल्लाह यानी प्रकृति ने अपनी जिम्मेदारी किसी पर नहीं ठोपी। अल्लाह और उनकी असुलों पर मतभेद श्रृष्टि करना शैतानी हरकत है और ये काम करने वालों का जालिम बना देती है।

وَمَا عَلَى الَّذِينَ يَتَّقُونَ مِنْ حِسَابِهِم مِّن شَيْءٍ وَلَكِن ذِكْرَى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ {69}

और ऐसे लोगों का जवाब देही कुछ परहेज़गारो पर तो है नहीं मगर याद दिलाना ताकि ये लोग भी परहेज़गार बनें (६९)

व्याख्याः- अल्लाह मानव के बुरे काम के वक्त उसके विवेक को अपने कब्जे में लेकर अच्छाई की तरफ ले आते है और मानव जो अच्छाई करता है अल्लाह उसे जानता है। जब दुनिया में मानव का वक्त पुरा हो जाता तब उसे अल्लाह की तरफ वापस लौट जाना होता है और उस वक्त अच्छा बुरा सब साबित हो जाता है।

وَذَرِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَعِبًا وَلَهْوًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهِ أَن تُبْسَلَ نَفْسٌ بِمَا كَسَبَتْ لَيْسَ لَهَا مِن دُونِ اللَّهِ وَلِيٌّ وَلَا شَفِيعٌ وَإِن تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أُبْسِلُوا بِمَا كَسَبُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ {70}

और जिन लोगों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना रखा है और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन को धोके में डाल रखा है ऐसे लोगों को छोड़ो और उनको नसीहत करते रहो कोई शख़्स अपने करतूत की बदौलत मुब्तिलाए बला हो जाए तो अल्लाह के सिवा उसका न कोई सरपरस्त होगा न सिफारिशी और अगर वह अपने गुनाह के ऐवज़ सारे बदला भी दे तो भी उनमें से एक न लिया जाएगा जो लोग अपनी करनी की बदौलत मुब्तिलाए बला हुए हैं उनको पीने के लिए खौलता हुआ गर्म पानी और दर्दनाक अज़ाब होगा क्यों की वह कुफ़्र किया करते थे (७०)

व्याख्याः- अल्लाह हर चीज पर गालिब है और हिफाजत देने वाला अल्लाह ही भेजता है और जब किसी की मौत आती है तब उसे उसके किये का नतीजा देने में कोई कसर नहीं छोड़ता, ऐसे लोगों से हमेशा दूर रहना चाहिये जो धर्म को खरीदते और बेचते है तथा लोगों को धर्म के नाम पर गैर खुदा की ताबेदारी करने की इजाजत देते है।

قُلْ أَنَدْعُو مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلَىٰ أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدَانَا اللَّهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيَاطِينُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ لَهُ أَصْحَابٌ يَدْعُونَهُ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا قُلْ إِنَّ هُدَى اللَّهِ هُوَ الْهُدَىٰ وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ {71}

उनसे पूछो तो कि क्या हम लोग ख़ुदा को छोड़कर उन से मुनाज़ात करें जो न तो हमें नफ़ा पहुँचा सकते हैं न हमारा कुछ बिगाड़ ही सकते हैं- और जब अल्लाह हमारी हिदायत कर चुका उसके बाद उल्टे पावँ कुफ़्र की तरफ उस शख़्स की तरह फिर जाएँ जिसे शैतानों ने भटका दिया हो और वह हैरान हो और उसके कुछ रफीक़ हो कि उसे राहे रास्त की तरफ पुकारते रह जाएँ कि हमारे पास आओ और वह एक न सुने तुम कह दो कि हिदायत तो बस अल्लाह की हिदायत है और हमें तो हुक्म ही दिया गया है कि हम सारे जहाँन के परवरदिगार अल्लाह के फरमाबरदार हैं (७१)

व्याख्याः- हर मानव अपनी अर्न्तात्मा से ये कहे कि अल्लाह की प्रकृति में ऐसी कोई चीज नहीं जिसका कोई काम न हो यानी न कोई फायदा दे और न कोई नुकसान इसलिए हर मानव को सिर्फ अल्लाह की इबादत ही करनी चाहिए और यही अल्लाह की सच्ची इबादत है जो अल्लाह ने हर मानव के अन्दर डाली। इस बात को मानव अच्छी तरह समझ लें (और रसुलों के द्वारा भी इस हकीकत को अल्लाह ने मानव तक पहुँचाया)।

पैगामः- प्रार्थना का कोई भी विशेष तरीका मानव या मानवी समाज को न कोई नफा दे सकता है और न नुकसान। मानव ऐसा काम क्यों करें जिसका कोई नतीजा न निकले इसलिये इस आयत का पैगाम है मानव की नेकी, परहेजगारी, अहिंसा, शिक्षा, प्रेम, मानवता और शान्ति की तरफ जाता है यानी मानव का अच्छा चरित्र। कुछ लोग ये समझते है कि ये आयत बुद्धपरस्ती की तरफ इशारा है और ये सच्चाई है कि बुथ मानव को कुछ नहीं देता सिर्फ आंखों और दिमाग की तसल्ली कुछ पल के लिये उसे मिलती है तो ये सवाल जरूर उठता है कि जो लोग अदृश्य की इबादत करते है उन्हें अदृश्य से क्या हासिल होता है? सिर्फ कुछ पल की तसल्ली। मानव के काम और उसका अमल ही इबादत है। अच्छे, नेक और अमन चाहने वाले लोग अल्लाह की इबादत करते है और बुरे यानी फसाद फैलाने वाले शैतान की इबादत करते है।

सुराः अम्बियां की आयत नं २२ पर गौर फरमाने से ये पता चलता है कि अल्लाह के अलावा दुनियां में कोई भी माबूद नहीं है यानी दुनियां में जो कुछ भी है सब अल्लाह का है। अलग-अलग माबूद के ख्यालात बिल्कुल कुसंस्कार है, इबादत का तरीका अलग-अलग हो सकता है मगर माबूद सबका एक ही है। इस आयत में ये भी कहा गया कि अगर कोई माबूद होता तो सब तहस-नहस हो जाता। इसका मतलब है अणु-परमाणु के अन्दर जो सकारात्मक शक्ति है अगर उसकी विपरीत शक्ति होता तो अणु-परमाणु की गठनशैली कभी भी नहीं बनती। अल्लाह की इबादत है अच्छे काम करना और अगर कोई मानव अच्छा काम यानी नेकी, परहेजगारी, शिक्षा, अहिंसा, सच्चाई, प्रेम और सुख-शान्ति बहाल करने की कोशिश करें और उनके सच्चे आदर्शों के साथ जिये तो वही उसकी इबादत है। प्रकृति की हर चीज एक शक्ति की बुनियाद पर टिकी हुई है और इस शक्ति का सही इस्तेमाल ही अल्लाह की इबादत है।

وَأَنْ أَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَاتَّقُوهُ وَهُوَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ {72}

और ये कि पाबन्दी से नमाज़ पढ़ा करो और उसी से डरते रहो और वही तो है जिसके हुज़ूर तुम सब के सब हाज़िर किए जाओगे (७२)

व्याख्याः- और इस बात को सही और पूरी तरह से मानना और न मानने पर जो मुसीबत आयेगी उससे डरना है। कूदरत में ही सबको खत्म हो जाना है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَيَوْمَ يَقُولُ كُن فَيَكُونُ قَوْلُهُ الْحَقُّ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنفَخُ فِي الصُّورِ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ {73}

वह जिसने ठीक ठीक बहुतेरे आसमान व ज़मीन पैदा किए और जिस दिन कहता है कि हो जा तो हो जाती है उसका क़ौल सच्चा है और जिस दिन सूर फूंका जाएगा ख़ास उसी की बादशाहत होगी ग़ायब हाज़िर का जानने वाला है और वही दाना वाक़िफकार है (७३)

व्याख्याः- और वही शक्ति है जिसकी बुनियाद पर सारी दुनिया कायम है और वही शक्ति है जिसने धरती-आकाश की सृष्टि की उस शक्ति की बुनियाद पर सृष्टि के सारे नियम चलते है और ये बात सच है और वही शक्ति छुपी हुई और जाहिरी बातों को जानती है तथा वही शक्ति सारा ज्ञान रखती है।

पैगामः- हर क्रिया-प्रक्रिया की पुकार शुरूआत और खात्में के साथ-साथ परिवर्तन, विवर्तन और अंत (सूर फूकना) सब वही शक्ति द्वारा अंजाम पाते है। बुराई को रोकने के लिए मानव की अन्तर्आत्मा की जागरूकता वही शक्ति द्वारा संगठित होती है और काफिरों की अन्तर्आत्मा बिल्कुल पत्थर की तरह शख्त हो जाती है, अन्तर्आत्मा की जागरूकता ही ''सूर फूकना'' है।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ آزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا آلِهَةً إِنِّي أَرَاكَ وَقَوْمَكَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ {74}

जब इबराहीम ने अपने बाप आज़र से कहा क्या तुम बुतों को अल्लाह मानते हो-मै तो तुमको और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में देखता हूँ (७४)

व्याख्याः- ये याद करने वाली बात है कि जब इब्राहीम ने अपने बाप आजर को कहा था कि मूर्तियों को अपना मकसद बनाकर सारी नेकी, परहेजगारी छोड़ देना। ये साफ और सीधे तौर पर गुमराही है और जो ऐसा करता है वो गुमराही पर है।

पैगामः- सच्ची बात को न अपनाकर अयौगतिक और बेबुनियाद बातों को अपना मकसद बनाना सरासर कुसंस्कार है। जिस काम से समाज को कोई फायदा नहीं पहुँचता या इंसानियत के भलाई के लिए जो काम नहीं होता वो बुथपरस्थी है। पत्थर का बुथ या इमारत मानव को कुछ भी फायदा नहीं पहुँचा सकता। मानव और इंसानियत के समाज को सिर्फ मानव के अमाल ही फायदा पहुँचा सकते है।

وَكَذَٰلِكَ نُرِي إِبْرَاهِيمَ مَلَكُوتَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُونَ مِنَ الْمُوقِنِينَ {75}

और हमने इबराहीम को सारे आसमान और ज़मीन की सल्तनत दिखाते रहे ताकि वह यक़ीन करने वालों से हो जाएँ (७५)

व्याख्याः- पैगम्बर इब्राहीम ने आकाश और पृथ्वी की सच्चाई को महसूस किया और उन्हें प्रकृति ने सच्चे ज्ञान का परिचय दिया।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَى كَوْكَبًا قَالَ هَذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَا أُحِبُّ الْآفِلِينَ {76}

तो जब उन पर रात की तारीकी छा गयी तो एक सितारे को देखा तो दफअतन बोल उठेयही मेरा अल्लाह है फिर जब वह डूब गया तो कहने लगे गुरुब हो जाने वाली चीज़ को तो मै पसन्द नही करता (७६)

व्याख्याः- चांद, सितारे कभी अस्त नहीं होते और वो अपनी जगह पर कायम रहते है। पृथ्वी अपने आप पर घूमती है जिसकी वजह से वो नजरों से दूर हो जाते है। ये प्राकृतिक क्रिया-प्रक्रिया इब्राहीम समझ गए थे और इसलिए क्रिया-प्रक्रिया के पीछे जो शक्ति है उसकी प्रार्थना की शपथ ग्रहण की थी।

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هَذَا رَبِّي فَلَمَّا أَفَلَ قَالَ لَئِن لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّي لَأَكُونَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ {77}

फिर जब चाँद को जगमगाता हुआ देखा तो बोल उठे यही मेरा अल्लाह है फिर जब वह भी गुरुब हो गया तो कहने लगे कि अगर मेरा परवरदिगार मेरी हिदायत न करता तो मै ज़रुर गुमराह लोगों में हो जाता (७७)

व्याख्याः- कभी-कभी लोग चांद को अपना रब समझ बैठते है मगर सही बात ये है कि एटम के अन्दर की ताकत जो अल्लाह की ताकत है उसको जब पहचान जाते है वो कभी गुमराह नहीं होते।

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هَذَا رَبِّي هَذَا أَكْبَرُ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَا قَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ {78}

फिर जब आफताब को दमकता हुआ देखा तो कहने लग यही मेरा खुदा है ये तो सबसे बड़ा है फिर जब ये भी गुरुब हो गया तो कहने लगे जिन जिन चीज़ों को तुम लोग शरीक बनाते हो उनसे मै बेज़ार हूँ (७८)

व्याख्याः- जब लोगों ने सूरज को चमकता हुआ देखा तब वो समझने लगे कि सूरज ही उनको पालने वाला है और ये आसमान में सबसे बड़ा है।

पैगामः- यकीनन सूरज ही तमाम प्राणियों का पालनहार है और ये उसका काम है और जो परमाणिवक शक्ति द्वारा संगठित होता है और इसी तरह सूरज-चाँद, पहाड़, दरक्त हर कोई अपना-अपना काम किये जा रहा है और इस काम को कराने वाली वही आला ताकत है जो एटम के अन्दर पाई जाती है और शैतान भी इस ताकत के दायरे के अन्दर है। वैज्ञानिक इस बात को प्रमाणित कर चुके कि सूरज, चांद, गृह नक्षत्र का निकलना-डूबना मानव का सबसे बड़ा भ्रम है। ये सारे अपने-अपने जगहों पर कायम है, पृथ्वी अपने आपपर घूमती है इसलिए मानव की दृष्टि उसे निकलते और डूबते हुए देखती है।

إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ {79}

मैने तो बातिल से कतराकर उसकी तरफ से मुँह कर लिया है जिसने बहुतेरे आसमान और ज़मीन पैदा किए और मै मुशरेकीन से नही हूँ (७९)

व्याख्याः- इब्राहीम ने इस बात को महसूस करने के बाद सच्चे असुलों की इबादत (रूख) करने लगे । जिस ताकत से जमीन और आसमान की सृष्टि हुई है और वो झुठ और फरेब (सिर्ख) करने वालों में से नहीं है।

وَحَاجَّهُ قَوْمُهُ قَالَ أَتُحَاجُّونِّي فِي اللَّهِ وَقَدْ هَدَانِ وَلَا أَخَافُ مَا تُشْرِكُونَ بِهِ إِلَّا أَن يَشَاءَ رَبِّي شَيْئًا وَسِعَ رَبِّي كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ {80}

और उनकी क़ौम के लोग उनसे हुज्जत करने लगे तो इबराहीम ने कहा था क्या तुम मुझसे खुदा के बारे में हुज्जत करते हो हालाँकि वह यकीनी मेरी हिदायत कर चुका और तुम मे जिन बुतों को उसका शरीक मानते हो मै उनसे डरता नही मगर हाँ मेरा अल्लाह खुद चाहे तो अलबत्ता कर सकता है मेरा परवरदिगार तो बाएतबार इल्म के सब पर हावी है तो क्या उस पर भी तुम नसीहत नहीं मानते (८०)

व्याख्याः- सच्चाई को लोगों के सामने रखने के बाद लोगों ने बहस करनी शुरू कर दी । उन्होंने लोगों से पूछा! क्या तकरार की वजह अल्लाह है? और कहा अल्लाह उन्हें सच्ची राह दिखाये। लोग अल्लाह के असुलों के सिवा जिस असुल को अपनाये उसकी ताकत से वो डरते नहीं । हर चीज अल्लाह की इच्छा के अनुसार होती है और हर वस्तु पाक परवरदिगार की शक्ति के दायरे में जकड़ी हुई है। लोग फिर भी समझते नहीं।

وَكَيْفَ أَخَافُ مَا أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُونَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُم بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ عَلَيْكُمْ سُلْطَانًا فَأَيُّ الْفَرِيقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ {81}

और जिन्हें तुम खुदा का शरीक बताते हो मै उन से क्यों डरुँ जब तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का

शरीक ऐसी चीज़ों को बनाया है जिनकी खुदा ने कोई सनद तुम पर नहीं नाज़िल की फिर अगर तुम जानते हो तो हम दोनों फरीक़ में अमन क़ायम रखने का ज़्यादा हक़दार कौन है (८१)

व्याख्याः- नेक परहेजगार मानव इन बातों से नहीं डरते जो अल्लाह के नियमों के विरुद्ध है और कही-कही लोग ऐसी बातों पर विश्वास कर लेते है जिसका कोई सबूत नहीं होता लेकिन अल्लाह अपने हर असुल को सबूत के साथ मौजूद रखता है और मानव सम्प्रदाय ज्यादा हक पर है जो सच्चाई को समझते है उसे कबूल करते है और हकीकत को समझते है।

पैगामः- इस आयत में अल्लाह ताला ने साफ और सीधे तौर पर फरमाया कि हर असुल का सबूत दुनिया में रखा है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُم مُّهْتَدُونَ {82}

जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और अपने ईमान को जुल्म से आलूदा नहीं किया उन्हीं लोगों के लिए अमन है और यही लोग हिदायत याफ़्ता है (८२)

व्याख्याः- और जो उसे पहचानते है वही हक पर है और जो लोग उनके असुलों को हक और सबूत के साथ पहचाना वहीं ईमान लाता है और अपने ईमान को बातिल के साथ नहीं मिलाता और ऐसे लोग ही सही राह पर है।

पैगामः- "जमाना" यानी समय अल्लाह का होता है और हर जमाना और हर वक्त अल्लाह की मर्जी के बगैर नमुमकिन है इस लिहाज से वैज्ञानिकों का अविष्कार भी अल्लाह की मर्जी से होता है और इस हक पर रहते हुए हक तलाश करने वालों की मदद, हर ईमान वाले पर फर्ज है चाहे वो किसी किस्म का भी हक तलाश करने वाला क्यों न हो।

وَتِلْكَ حُجَّتُنَا آتَيْنَاهَا إِبْرَاهِيمَ عَلَىٰ قَوْمِهِ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّن نَّشَاءُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ {83}

और ये हमारी दलीलें हैं जो हमने इबराहीम को अपनी क़ौम पर अता की थी हम जिसके मरतबे चाहते है बुलन्द करते है बेशक तुम्हारा परवरदिगार हिक़मत वाला बाख़बर है (८३)

व्याख्याः- पैगम्बर इब्राहीम को अल्लाह ने हक की पहचान दी थी और उन्होंने इस हक को साबित करने के लिये जहाद किया था अपने लोगों के साथ और अल्लाह सब जानता-देखता है।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ ۖ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ وَنُوحًا هَدَيْنَا مِن قَبْلُ وَمِن ذُرِّيَّتِهِ دَاوُودَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَىٰ وَهَارُونَ ۚ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ {84}

और हमने इबराहीम को इसहाक़ वा याक़ूब अता किया हमने सबकी हिदायत की और उनसे पहले नूह को हम ही ने हिदायत की और उन्ही को औलाद से दाऊद व सुलेमान व अय्यूब व यूसुफ व मूसा व हारुन और सभ्यों कारों को हम ऐसा ही इल्म अता फरमाते है (८४)

व्याख्याः- अल्लाह ने इब्राहीम को दो बेटों से नवाजा इशाक और याकूब और इन लोगों ने भी सच्चाई को महसूस किया और उसे माना और उससे पहले पैगम्बर नूह को अल्लाह ने सच्चाई की रोशनी से नवाजा और इसके साथ-साथ दाउद, सुलेमान, आयुब, युसुफ, मुसा, हारुण और भी बहुत सारे पैगम्बरों ने अल्लाह के असुलों को महसूस किया था और इन्हीं असुलों के साथ जीते थे।

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَإِلْيَاسَ ۖ كُلٌّ مِّنَ الصَّالِحِينَ {85}

और ज़करिया व यहया व ईसा व इलियास (सब की हिदायत की सब सभ्य बन्दों से है (८५)

व्याख्याः- जकरिया, यहयियां, ईसा और इलियास को भी हक का दीदार कराया और ये भी अल्लाह के असुलों के पाबंद थे।

وَإِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَيُونُسَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعَالَمِينَ {86}

और इसमाइल व इलियास व युनूस व लूत और सब को सारे जहाँन पर फज़ीलत अता की (८६)

व्याख्याः- इसमाइल, इलियास, यूनिस, लूत को अल्लाह ने दुनिया वाले के लिये इज्जत का हकदार बनाया था।

पैगामः- इन सारे पैगम्बरों का चरित्र यानी किरदार दुनिया वालों के लिये एक उदाहरण है।

وَمِنْ آبَائِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ۖ وَاجْتَبَيْنَاهُمْ وَهَدَيْنَاهُمْ إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ {87}

और उनके बाप दादाओं और उनकी औलाद और उनके भाई बन्दों में से और उनके मुन्तख़िब किया और उन्हें सीधी राह की हिदायत की (८७)

व्याख्याः- और इन सारों के वंश के कुछ लोगों को अल्लाह ताला ने अपनी असुलों की सच्चाई बतायी।

पैगामः- जितने पैगम्बरों का नाम कुरान-शरीफ में बताया गया है उसके अलावा और भी बहुत सारे पैगम्बर थे जिनका नाम कुरान-शरीफ में नहीं बताया गया और मैं (सिद्धार्थ चटर्जी) ये समझता हूँ कि अल्लाह ने उन पैगम्बरों का नाम जिस जुबान

में कुरान-शरीफ उतारा गया है, उस जुबान वालों को बताना मुनासिब नहीं समझा और ये बात भी नहीं है कि कुरान-शरीफ में बताये गये पैगम्बरों के अलावा और कोई पैगम्बर आया ही नहीं जैसे कि कुछ लोग सोचते है और कुछ लोग कुरान-शरीफ में बताये गये पैगम्बरों के नाम पर जो सम्प्रदाय है को एहले पुस्तक कहते है और इसके अलावा दूसरे लोगों के पैगम्बरों को जिनके मानने वाले अल्लाह की मर्जी से आज दुनियां में मौजूद है उनका इनकार करते है। ऐसी सूरत में कुरान-शरीफ में बताये गये पैगम्बरों के अलावा दूसरे पैगम्बरों की पहचान कैसे होगी? मेरे ख्याल से अल्लाह की मर्जी से जो पैगम्बरों की बातें अल्लाह के असुलों की तसदीक करती है और जिनके सम्प्रदाय दुनिया में मौजूद है यानी मानने वाले वो भी पैगम्बर है। और अल्लाह का असुल यही है कि हर मानव अल्लाह के हर पैगम्बर की इज्जत करे उनके असुलों की सच्चाई को महसूस करे और एक-दूसरे के बीच नफरत की दरार पैदा न करे और यही बात अल्लाह ताला ने सुरा बकर की आयत १३६ और सुरा इमरान की आयत ८४ में फरमायी है। फिर जब आफताब को चमकता हुआ देखा तो कहने लग यही मेरा खुदा है ये तो सबसे बड़ा है फिर जब ये भी गुरुब हो गया तो कहने लगे जिन जिन चीज़ों को तुम लोग शरीक बनाते हो उनसे मै बेज़ार हूँ (७८)

ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِي بِهٖ مَنْ يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ {88}

ये अल्लाह की हिदायत है अपने बन्दों से जिसको चाहे उसीकी वजह से राह पर लाए और अगर उन लोगों ने शिर्क किया होता तो उनका किया सब अकारत हो जाता (८८)

व्याख्याः- मानवों में वही मानव अल्लाह की हिदायत प्राप्त कर चुके है जिन्हें शान्ति की राह मिल चुकी हो।

पैगामः- अल्लाह ही जिसे चाहे हिदायत करे तो मानव विवेक का क्या काम है और ये सारी तबलीग, एक-दूसरे को हिदायत करना सब बेकार की बाते है। इस आयत का गहरा मतलब ये नहीं है । मानव के अंदर ही नेकी और बदी मौजूद है, मानव लाख चाहे वो कोई भी रास्ता अपनी मर्जी से इख्तियार नहीं कर सकता। उदाहरण के तौर पर हर किसी की हर चाहत पूरी नहीं होती जो अल्लाह चाहता है वही होता है। इस आयत पर बहुत सारे सवाल है

१. अल्लाह अपने बंदों में से जिसको चाहे हिदायत करता है।

२. और यकीनन जिसे हिदायत नहीं करता वो भी अल्लाह की मर्जी से ही है। मानव को क्या हक बनता है कि वो अल्लाह के मर्जी के विरुद्ध जाकर तबलीग या जहाद करे । ये बात तो सच है कि अल्लाह के मर्जी के बगैर कुछ नहीं होता । सारी दुनिया एटम के अन्दर की ताकत की जोर पर चल रही है और इस हिसाब से मानव के अन्दर ही पाप-पुण्य की लडाई भी चल रही है। जहाद और तबलीग या सारी हिदायत मानव की अंद्रोणी अन्तर्आत्मा के फैसले के लिये है।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ {89}

वह लोग थे जिनको हमने किताब और हुकूमत और नुबूवत अता फरमाई पस अगर ये लोग उसे भी न माने तो हमने तो उस पर ऐसे लोगों को मुक़र्रर कर दिया हे जो इन्कार करने वाले नहीं (८९)

व्याख्याः- अल्लाह के रहमो-करम से लोगों को नसीहत और सच्चाई बताने वाली पुस्तक और समझाने वाले नबी प्राप्त हुए थे। समाज में कुछ लोग ऐसे है जो हकीकत से मुँह फेर लेते है और कुछ ऐसे लोग भी है जो सच्चाई को कबूल करने से नहीं हिचकिचाते।

पैगामः- इस आयत में सिर्फ धार्मिक पुस्तक को सम्बोधित नहीं किया गया है। सारी हिकमत (ज्ञान) वाली पुस्तकों की तरफ इशारा है और जो हिकमत वाली पुस्तक व मानव और मानवता के फायदे के लिए दुनिया में प्रमाणित है वही सच्ची और फायदे वाली पुस्तक है।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰهُمُ اقْتَدِهْ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ {90}

वह लोग थे जिनकी अल्लाह ने हिदायत की पस तुम भी उनकी हिदायत की पैरवी करा कहो कि मै तुम से इस की मज़दूरी कुछ नहीं चाहता सारे जहाँन के लिए सिर्फ नसीहत है (९०)

व्याख्याः- लोगों को अल्लाह ने हुकुम दिया सच्चाई के रास्ते पर चलने का और इसके बदले अल्लाह मानव से कुछ नहीं मांगता।

पैगामः- मुसलमानों से पहले या इस कुरान-शरीफ से पहले हिदायत, नबूवत, और पुस्तक दी गई थी तो क्या मुसलमानों को इस आयत के द्वारा हुकुम दिया जा रहा है कि वो उससे पहले के नबियों को मानकर चले । इस आयत के द्वारा मुसलमानों का ये दावा खत्म हो जाता है कि हजरत मोहम्मद के आने के बाद पहले वाले तमाम रसुलों की शैरियत बातिल हो जाती है। मेरी (सिद्धार्थ चटर्जी) जाँच-पड़ताल के अनुसार अगर इस आयत को सच्चाई और हिकमत के साथ जोड़ दिया जाए तो यकीनन हर किसी को ये हक है कि वो सच्चाई और हक को तस्लीम करे चाहे वो पहले की हो या बाद की।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ إِذْ قَالُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَى بَشَرٍ مِّن شَيْءٍ قُلْ مَنْ أَنزَلَ الْكِتَابَ الَّذِي جَاءَ بِهِ مُوسَى نُورًا وَهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُونَهُ قَرَاطِيسَ تُبْدُونَهَا وَتُخْفُونَ كَثِيرًا وَعُلِّمْتُم مَّا لَمْ تَعْلَمُوا أَنتُمْ وَلَا آبَاؤُكُمْ قُلِ اللَّهُ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِي خَوْضِهِمْ يَلْعَبُونَ {91}

और बस और उन लोगों ने ख़ुदा की जैसी क़दर करनी चाहिए न की इसलिए कि उन लोगों न ये कह दिया कि ख़ुदा ने किसी बशर पर कुछ नाज़िल नहीं किया तुम पूछो तो कि फिर वह किताब जिसे मूसा लेकर आए थे किसने नाज़िल की जो लोगों के लिए रौशनी और हिदायत थी जिसे तुम लोगों ने अलग-अलग कागज़ के पन्ने बना डाला और इसमें को कुछ हिस्सा तो ज़ाहिर करते हो और बहुतेरे को छिपाते हो हालाँकि उसी किताब के ज़रिए से तुम्हें वो बातें सिखायी गयी जिन्हें न तुम जानते थे और न तुम्हारे बाप दादा तुम ही कह दो कि अल्लाह ने नाज़िल फरमाई उसके बाद उन्हें छोड़ के झक मारा करें और अपनी तू तू मै मै में खेलते फिरें (९१)

व्याख्याः- कुछ लोगों ने अल्लाह के हुकुमों को अनुभव नहीं किया जिस तरह उन्हें अनुभव करना चाहिए था। मुसा के द्वारा जो पुस्तक लोगों के बीच रखी गयी थी उसमें ज्ञान की रोशनी के साथ मानवता के लिए अमनो सकुन और सच्चाई का रास्ता दिखाया गया था और ऐसी बहुत सारी बातें थी जिसे लोग नहीं जानते थे और उस वक्त कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने इस पुस्तक कि सच्चाई को छुपाने की कोशिश की थी। और सच्चाई कभी छुप नहीं सकती। इस किस्म के गलत लोग अपने-अपने कामों में उलझ कर रह गये ।

وَهَذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ يُؤْمِنُونَ بِهِ وَهُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ {92}

और वह किताब है जिसे हमने बाबरकत नाज़िल किया और उस किताब की तसदीक़ करती है जो उसके सामने मौजूद है और ताकि तुम उसके ज़रिए से एहले मक्का और उसके एतराफ़ के रहने वालों को डराओ और जो लोग आख़िरत पर इमान रखते है वह तो उस पर इमान लाते है और वही अपनी अपनी नमाज़ में भी पाबन्दी करते है (९२)

व्याख्याः- वैज्ञानिक, ऐतिहासिक और सभ्यता के विकास के तमाम तथ्य से भरा हुआ है कुरान-शरीफ। मक्का के लोगों को इस कुरान के द्वारा ही रसुल-ए-पाक हजरत मुहम्मद ने सच्चाई और पवित्र रास्ते की पहचान दी थी।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَمَن قَالَ سَأُنزِلُ مِثْلَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنفُسَكُمُ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ {93}

और उससे बढ़ कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ कहे कि हमारे पास वही आयी है हालाँकि उसके पास वही वग़ैरह कुछ भी नही आयी या वह शख़्स दावा करे कि जैसा कुरान ख़ुदा ने नाज़िल किया है वैसा मै भी अभी नाज़िल किए देता हूँ और काश तुम देखते कि ये ज़ालिम मौत की सख़्तियों में पड़े है और फरिश्ते उनकी तरफ हाथ लपका रहे है और कहते जाते है कि अपनी जानें निकालो आज ही तो तुम को रुसवाई के अज़ाब की सज़ा दी जाएगी क्योंकि तुम अल्लाह पर नाहक़ झूठ छोड़ा करते थे और उसकी आयतों को से अकड़ा करते थे (९३)

व्याख्याः- और वो मानव महा पापी है जिसके पास ज्ञान न होते हुए भी अपने आपको ज्ञानी समझता है और कहता है कि अल्लाह ने जिसे ज्ञान दिया वो भी उसी की तरह कुछ न कुछ लेकर आयेगा। ऐसे पापी अज्ञानी लोग अपनी अशांति के अजाब से परेशान होकर अपनी मुक्ति की प्रार्थना करेंगे और इन लोगों का झूठ और धोखा लोगों के सामने जाहिर हो जाएगा।

وَلَقَدْ جِئْتُمُونَا فُرَادَى كَمَا خَلَقْنَاكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَتَرَكْتُم مَّا خَوَّلْنَاكُمْ وَرَاءَ ظُهُورِكُمْ وَمَا نَرَى مَعَكُمْ شُفَعَاءَكُمُ الَّذِينَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيكُمْ شُرَكَاءُ لَقَد تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنكُم مَّا كُنتُمْ تَزْعُمُونَ {94}

और आख़िर तुम हमारे पास इसी तरह तन्हा आए जिस तरह हमने तुम को पहली बार पैदा किया था और जा हमने तुमको दिया था वह सब अपने छोड़ आए और तुम्हारे साथ तुम्हारे उन सिफारिश करने वालों को भी नहीं देखते जिन को तुम ख़्याल करते थे कि वह तुम्हारी परवरिश मै साझेदार है अब तो तुम्हारे बाहरी ताल्लुक़ात ख़त्म हो गए और जो कुछ ख़्याल करते थे वह सब तुम से ग़ायब हो गए (९४)

व्याख्याः- इस दुनिया में हर मानव अकेला आया है और अकेला ही जाएगा और वो सब कुछ छोड़कर जो जीते-जी उसे प्राप्त हुआ था। मानव वो भी छोड़ जाएगा जिसे जीते-जी हमसफर और साथी बनाया था। हकीकत तो यही है कि पैदाइश के वक्त जो रिश्ते बनते है मौत के बाद वो सब टूट जाते है । मानव की मृत्यु के वक्त उसके सारे रिश्ते बेमायने हो जाते है।

पैगामः- कूदरती तौर पर हर मानव अकेला पैदा होता है और ये आयत कूदरत की जुबानी है और कूदरत ही अल्लाह है। और इस आयत में ये भी कहा गया है "जिस तरह हमने पहली बार तुमको पैदा किया था" जो पुनर्जन्म की तरफ इशारा है। सब कुछ पीछे छोड़ जाने की बात भी पीछले जन्म की दौलत, शोहरत और हमसफर छोड़ कर जाने की तरफ इशारा करती है। और मौजूदा जन्म में भी सब कुछ छोड़ कर जाने की तरफ इशारा है।

إِنَّ اللَّهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوَى يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ذَلِكُمُ اللَّهُ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ {95}

खुदा ही तो गुठली और दाने को चीर तो है वही मुर्दे में से ज़िन्दे को निकालता है और वही ज़िन्दा से मुर्दे को निकालने वाला है वही तुम्हारा अल्लाह है फिर तुम किधर बहके जा रहे हो (९५)

व्याख्याः- अनविक शक्ति, एटम की बुनियाद है। प्रोटोन, इलेक्ट्रोन और न्यूट्रोन एटम के अंदर की ये तीन शक्तियों का वजूद god particle यानी न्यूट्रीनों के द्वारा प्रभावित होता है। ठीक इसी तरह किसी भी प्राणियों की श्रृष्टि, पेड़-पौधों की पैदाइश सब एक कोशी (one cell) से पैदा होकर अलग-अलग शकल इख्तियार करते है और इस क्रिया-प्रक्रिया को अंजाम तक पहुँचाना god particle के शक्ति के द्वारा ही होता है और ये शक्ति हर एटम के अंदर मौजूद है। प्रकृति के नियामानुसार हर प्राणी को या यह कह सकते है कि हर वस्तु की मृत्यु निश्चित है यानी एटम से बना हुए अस्तित्व दुबारा एटम बन जाता है और फिर उसी एटम से दूसरे अस्तित्व की श्रृष्टि होती है। यही प्रकृति है और यही अल्लाह की शक्ति है और इस नियम को कोई भी बदल नहीं सकता।

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ {96}

उसी के लिए सुबह की पौ फटी और उसी ने आराम के लिए रात और हिसाब के लिए सूरज और चाँद बनाए ये अल्लाहए ग़ालिब व दाना के मुक़र्रर किए हुए किरदा है (९६)

व्याख्याः- और इसी शक्ति के द्वारा ही पृथ्वी अपने आप पर घूमते हुए सूरज के चारों तरफ परिक्रमा करती है। इस वजह से प्राणियों को दिन और रात का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। चांद और सूरज मानव को रास्ता पहचानने और समय की गिनती करने पर मदद करते है और यही है प्रकृति की उत्तम श्रृष्टि।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ النُّجُومَ لِتَهْتَدُوا بِهَا فِي ظُلُمَاتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ {97}

और वह वही है जिसने तुम्हारे वास्ते सितारे पैदा किए ताकि तुम जंगलों और दरियाओं की तारिकिया में उनसे राह मालूम करो जो लोग वाकिफकार हैं उनके लिए हमने निशानियाँ खूब तफ़सील से बयान कर दी है (९७)

व्याख्याः- सितारों की सृष्टि राह दिखाने के लिये है चाहे वो समुंदर में हो या सुखी जमीन पर हो। जो ज्ञानी है वो सब ये सारी बातें समझते है।

وَهُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَمُسْتَوْدَعٌ قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَفْقَهُونَ {98}

और वह वही खुदा है जिसने तुम लोगों को एक शख़्स से पैदा किया फिर क़रार की जगह और सौंपने की जगह मुक़र्रर है हमने समझदार लोगों के वास्ते निशानियाँ खूब तफसील से बयान कर दी हैं (९८)

व्याख्याः- अल्लाह ही है जिसने मानव को एक कोशिका से पैदा किया और कुछ दिन उसे इस पृथ्वी की गोद में रहने की अनुमति दी और ज्ञानी इस बात को खूब समझते है।

وَهُوَ الَّذِي أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُتَرَاكِبًا وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ وَجَنَّاتٍ مِنْ أَعْنَابٍ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ انْظُرُوا إِلَى ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَيَنْعِهِ إِنَّ فِي ذَلِكُمْ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ {99}

और वही जिसने आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने उसके ज़रिए से हर चीज़ के कोए निकालें फिर हम ही ने उससे हरी भरी टहनियाँ निकाली कि उससे हम बाहम गुत्थे दाने निकालते है और छुहारे के बोर से लटके हुए गुच्छे पैदा किए और अंगूर और ज़ैतून औरअनार के बाग़ात जो बाहम सूरत में एक दूसरे से मिलते जुलते और जुदा जुदा जब ये पिघले और पक्के तो उसके फल की तरफ ग़ौर तो करो बेशक अमन में इमानदार लोगों के लिए बहुत सी निशानियाँ है (९९)

व्याख्याः- और वो अल्लाह ही है जिसने पृथ्वी पर पानी की सृष्टि की और उसी पानी से प्राणियों की भी सृष्टि की और खुराक का इंतजाम भी किया और इन सारी बातों का प्रमाण प्रकृति के हर पहलू में समाया हुआ है। उदाहरण के तौर पर खजुर, अंगुर, बगीचा, जैतुन और अनार वगैरा के पेड़। जो ज्ञानी है वो ये बात समझते है।
पैगामः- यह आयत ecological balance की प्रतीक करती है।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوا لَهُ بَنِينَ وَبَنَاتٍ بِغَيْرِ عِلْمٍ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يَصِفُونَ {100}

और उनलोगा ने जिन्नात को अल्लाह का शरीक बनाया हालाँकि जिन्नात को भी अल्लाह ही ने पैदा किया उस पर भी उन लोगों ने बे समझे बूझे अल्लाह के लिए बेटे बेटियाँ गढ़ डाली जो बातों में लोग बयान करते है उससे वह पाक व पाकीज़ा और बरतर है (१००)

व्याख्याः- और लोग बुराई को अपना कर अल्लाह की अच्छे और सच्चे असुलों की तोहीन (शिर्क) करते है लेकिन ऐसे लोगों की सृष्टि भी अल्लाह ने ही कि और कूदरत की तोहीन करते हुए ऐसे लोग अपने दिमाग में अल्लाह की बेटे या बेटी की कल्पना करते है। अल्लाह के नियम इन सारी बातों की विरोधिता करती है।

بَدِيعُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنَّى يَكُونُ لَهُ وَلَدٌ وَلَمْ تَكُنْ لَهُ صَاحِبَةٌ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ {101}

सारे आसमान और ज़मीन का बनाने वाला है उसके कोई लड़का क्योंकर हो सकता है जब उसकी कोई बीबी ही नही है और उसी ने हर चीज़ को पैदा किया और वही हर चीज़ से खूब वाकिफ है (१०१)

व्याख्याः- आकाश और पृथ्वी की सारी वस्तुएं ही अल्लाह की सृष्टि है, वो एक शक्ति है जो बेजोड़ (यानी उसकी बीवी नहीं) है। तथा सृष्टि की हर वस्तु उसकी शक्ति से बनती है।
पैगामः- एटम के अंदर इलेक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन के जरिया जो शक्ति पैदा होती है, उसी से हर चीज बनती है। मानव की समझ मानव की जन्म तथ्य को जो मर्द और औरत से जुड़ा हुआ है सिर्फ उसको ही समझते है, मगर श्रृष्टि का हर पहलू अल्लाह की शक्ति द्वारा ही परिपूर्ण होता है।

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوهُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ {102}

वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार है उसके सिवा कोइ माबूद नहीं वही हर चीज़ का पैदा करने वाला है तो उसी की इबादत करो और वही हर चीज़ का निगेह बान है (१०२)

व्याख्याः- यही शक्ति अल्लाह ताला है। हर चीज का मालिक उसके अलावा ये काम कोई नहीं कर सकता। सृष्टि का मालिक - उसकी ही इबादत करे, वही हर काम करने वाला।

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ {103}

उसको आँखें देख नहीं सकती और वह नज़रों को खूब देखता है और वह बड़ा बारीक बीन खबरदार है (१०३)

व्याख्याः- इस शक्ति को कोई देख नहीं सकता मगर सब उस शक्ति के दायरे में बंधे हुए है।
पैगामः- इस आयत की शुरुआत में ''वही अल्लाह तुम्हारा रब'' कहा गया है और इस बात से ये साबित होता है कि अल्लाह की मौजूदगी हर जगह है। इस आयत पर सवाल किया जाये तो ये कहा जा सकता है कि ये आयत किसकी जुबानी है ''रसुल की या फरिश्ते की''? अगर अल्लाह हर चीज करता है, हर सृष्टि का मालिक अगर वो है तो ये सारी पुस्तके, तबलीग, रसुलों की क्या जरूरत है?
यकीनन अल्लाह हर चीज का मालिक है और हर काम को अंजाम देना का मालिक भी अल्ला ही है। इस लिहाज से समाज में शैतानी सोच रखने वालों की मौजूदगी भी अल्लाह की मर्जी से है और ये इसलिए कि अगर बुराई न होती तो लोगों को अच्छाई का अनुभव नहीं होता और लोगों की जिन्दगी विरान हो जाती। हर काम वो ही करता है मगर नाम बनता है लोगों का।

قَدْ جَاءَكُمْ بَصَائِرُ مِنْ رَبِّكُمْ فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ {104}

तुम्हारे पास तो सुझाने वाली चीजें आ ही चुकी फिर जो देख तो अपने दम के लिए और जो अन्धा बने तो उसका नुकसान खुद उस पर है कह दो कि मै तुम लोगों का कुछ निगेहबान तो हूँ नहीं (१०४)

व्याख्याः- कूदरत की हर पहलू की सच्चाई कूदरत ने मानव के सामने रखी जो नजर सच को पहचान लेती है, वो अपने आप ही अच्छा करते है और जिन्हें सच्चाई नजर नहीं आती वो खुद ही अपना विनाश करते है। कोई मानव किसी का निगेबान नहीं है।

وَكَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ وَلِيَقُولُوا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهُ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ {105}

और हम आयतें यूँ उलट फेरकर बयान करते है और ताकि वह लोग ज़बानी भी इक़रार कर लें कि तुमने पढ़ दिया और ताकि जो लोग जानते है उनके लिए खूब वाजेए करके बयान कर दें (१०५)

व्याख्याः- और कूदरत ने (जिसे लोग अल्लाह, ईश्वर या GOD कहते है) सारी सच्चाई सबूत के साथ लोगों के सामने बयान की और लोगों ने इस सच्चाई को आपस में बाट लिया। ये सच्चाई उन लोगों के लिये आसान है जो समझदार है।

اتَّبِعْ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِن رَّبِّكَ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ {106}

जो कुछ तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से 'वही' की जाए बस उसी पर चलो अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुशरिको से किनारा कश रहो (१०६)

व्याख्याः- लोग वही राह इख्तियार करे जिसकी सच्चाई लोगों के सामने साबित हो चुकी है और वो भी अल्लाह की मर्जी से। उसके अलावा कोई भी इबादत के लायक नहीं है। जो बुराई के रास्ते पर चलता है उसकी तरफ न देखना ही बेहतर है।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكُوا وَمَا جَعَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ {107}

और अगर खुदा चाहता तो ये लोग शिर्क ही न करते और हमने तुमको उन लोगों का निगेहबान तो बनाया नहीं है और न तुम उनके ज़िम्मेदार हो (१०७)

व्याख्याः- अल्लाह यानी प्रकृति की मर्जी अगर होती तो शिर्क यानी बुराई नहीं होती। कोई किसी का निगेबान नहीं है।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ فَيَسُبُّوا اللَّهَ عَدْوًا بِغَيْرِ عِلْمٍ كَذَٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّهِم مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {108}

और ये जिन की अल्लाह के सिवा इबादत करते है उन्हें तुम बुरा न कहा करो वरना ये लोग भी खुदा को बिना समझें अदावत से बुरा कह बैठे इस तरह पाबन्द हुए कि गोया हमने खुद हर सम्प्रदाय के आमाल उनको सँवाकर अच्छे कर दिखाए फिर उन्हें तो अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है तब जो कुछ दुनिया में कर रहे थे खुदा उन्हें बता देगा (१०८)

व्याख्याः- और बुरे लोग अल्लाह के नियमों के अलावा जिन नियमों का पालन करते है, उन्हें गाली नहीं देनी चाहिए और ये इसलिए कि ऐसे बुरे लोग अपनी मूर्खता से अल्लाह की शान में गुस्ताखी करेंगे और अल्लाह ही उनके नजरों में उनके कामों को अच्छा दिखा रखा है, ऐसे लोग आखिर कार अल्लह की कूदरत में ही समा जाते है और अल्लाह की मर्जी से अपने गलतियों का एहसास करते है।

पैगामः- अच्छा, बुरा हर चीज का मालिक अल्लाह है, अगर बुराई न होती तो अच्छाई की कोई कदर नहीं होती और लोगों की जिन्दगी विरान हो जाती। मानव की अंर्तात्मा हमेशा इसको इसके बुरे कामों का एहसास दिलाती रहती है।

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِن جَاءَتْهُمْ آيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِندَ اللَّهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ أَنَّهَا إِذَا جَاءَتْ لَا يُؤْمِنُونَ {109}

और उन लोगों ने अल्लाह की सख़्त सख़्त क़समें खायीं कि अगर उनके पास कोई मौजिज़ा आए तो वह ज़रूर उस पर इमान लाएँगे तुम कहो कि मौजिज़े तो बस अल्लाह ही के पास हैं और तुम्हें क्या मालूम ये यक़ीनी बात है कि जब मौजिज़ा भी आएगा तो भी ये ईमान न लाएँगे (१०९)

व्याख्याः- नेकी और परहेजगारी के रास्ते पर चलने के लिये अल्लाह के वजूद और नियमों का सबूत मांगने वाले लोग ये जान ले कि सारी प्रकृति और सबूत अल्लाह के इख्तियार में है। नेकी, परहेजगारी और शांति के पथ पर जो फायदा है उसे समझने के बावजूद भी लोग ईमान नहीं लाते।

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوا بِهِ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَنَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ {110}

और हम उनके दिल और उनकी आँखें उलट पलट कर देंगे जिस तरह ये लोग पहली मरतबा ईमान न लाए और हम उन्हें उनकी सरकशी की हालत में छोड़ देंगे कि सरगिरदाँ रहें (११०)

व्याख्याः- और अल्लाह भी ऐसे लोगों को यानी जो शांति पाना नहीं चाहते उनके विवेक को उलझा कर रखते है।

पैगामः- आखिर क्यों अल्लाह पापियों को पाप में उलझा कर रखते है? इसका विशेष कारण है कि अगर दुनिया में बुराई न हो तो अच्छाई की कदर न होगी और लोगों की जिन्दगी विरान हो जाएगी।

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَا إِلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتَى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُونَ {111}

और हम अगर उनके पास फरिश्ते भी नाज़िल करते और उनसे मुर्दे भी बातें करने लगते और तमाम चीज़ें अगर वह सम्प्रदाय उनके सामने ला खड़े करते तो भी ये ईमान लाने वाले न थे मगर जब अल्लाह चाहे लेकिन उनमें के अक्सर नहीं जानते (१११)

व्याख्याः- सच्चाई का जितना भी सबूत इन लोगों के सामने आ जाए और बेजान चीजों में जान (Atomic energy) का प्रमाण मिल जाये और ये भी प्रमाणित हो जाये कि दुनिया की हर चीज एटम से बनती है और फना के बाद दुबारा एटम में बदल जाती है तब भी ये लोग यकीन नहीं करेंगे मगर कुदरत चाहे तो मानव में ही कुछ मानवों को इसकी सच्ची रोशनी देती है और ज्यादा से ज्यादा लोग मन-गढ़त और बेबुनियाद बातें करते है।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيَاطِينَ الْإِنسِ وَالْجِنِّ يُوحِي بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُورًا وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ {112}

उसी तरह गोया हमने ख़ुद आज़माइश के लिए शरीर आदमियों और जिनों को हर नबी का दुश्मन बनाया वह लोग एक दूसरे को फरेब देने की ग़रज़ से चिकनी चुपड़ी बातों की सरगोशी करते है और अगर तुम्हारा परवरदिगार चाहता तो ये लोग ऐसी हरकत करने न पाते (११२)

व्याख्याः- दुनियां में जितने भी अवतार आए और जो सच्चाई लोगों को बताई इसकी विरोधीता करने वाले पापी युग-युग से सच्चाई के विरूद्ध में अपनी अवाज बुलंद करते रहे और उसके साथ-साथ मानव को सच्चाई से बहकाने के लिए तरह-तरह की चमकदार कहानियां और चक्रांत गढ़ते रहे। ये सारी झुठी कहानियां समय के साथ-साथ अल्लाह की मर्जी से गलत साबित हो गई।

وَلِتَصْغَىٰ إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوا مَا هُم مُّقْتَرِفُونَ {113}

तो उनको और उनकी इफ़तेरा परदाज़ियों को छोड़ दो ताकि जो लोग आख़िरत पर इमान नहीं लाए उनके दिल उन की तरफ मायल हो जाएँ और उन्हें पसन्द करें (११३)

व्याख्याः- अच्छे कर्मों का फल का नतीजा अच्छा होता है, जो इस बात पर विश्वास नहीं रखता और बुरे कामों के बदले अच्छा नतीजा ढूँढ़ता है और बुरे कामों में अपने अपको उलझा कर रखता है उसका नतीजा कभी अच्छा नहीं होता।

أَفَغَيْرَ اللَّهِ أَبْتَغِي حَكَمًا وَهُوَ الَّذِي أَنزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتَابَ مُفَصَّلًا وَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْلَمُونَ أَنَّهُ مُنَزَّلٌ مِّن رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ {114}

और ताकि जो लोग इफ़तेरा परदाज़ियाँ ये लोग ख़ुद करते है वह भी करने लगें मैं अल्लाह को छोड़ कर किसी और को सालिस तलाश करूँ हालाँकि वह वही अल्लाह है जिसने तुम्हारे पास वाज़ेए किताब नाज़िल की और जिन लोगों को हमने किताब अता फरमाई है वह यक़ीनी तौर पर जानते है कि ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ नाज़िल किया गया है (११४)

व्याख्याः- अल्लाह के नियमों के अलावा कोई भी नियम मानव के बीच फैसला नहीं कर सकता और अल्लाह के नियमों में वो सारी बातें परिपूर्ण तौर पर मौजूद है जो हकीकत है और इस हकीकत पर शक करना बेवकुफी है।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَعَدْلًا لَّا مُبَدِّلَ لِكَلِمَاتِهِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ {115}

तो तुम शक करने वालों से न हो जाना और सच्चाई और इन्साफ में तो तुम्हारे परवरदिगार की बात पूरी हो गई कोई उसकी बातों का बदलने वाला नही और वही बड़ा सुनने वाला वाक़िफ़कार है (११५)

व्याख्याः- अल्लाह के नियम, सच्चाई और इंसाफ के एतबार से परिपूर्ण है और अल्लाह के नियम बदलने वाले नहीं।

पैगामः- पुस्तकों में बदलाव तो हो सकता है पर अल्लाह के प्रकृतिक नियमों में बदलाव नहीं हो सकता। श्रृष्टि की शुरूआत से लेकर आज तक उनके नियम एक थे, एक है और एक ही रहेंगे।

وَإِن تُطِعْ أَكْثَرَ مَن فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوكَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ {116}

और दुनिया में तो बहुतेरे लोग ऐसे है कि तुम उनके कहने पर चलो तो तुमको अल्लाह की राह से बहका दें ये लोग तो सिर्फ अपने ख़्यालात की पैरवी करते है और ये लोग तो बस अटकल पच्चू बातें किया करते है (११६)

व्याख्याः- बहुत सारे लोग है जो नेक लोगों को हक से गुमराह करने की कोशिश करते रहते है। जो लोग गुमराहों और गुनाह करने वालों के पीछे भागते है वो यकीनन हक से कोसों दूर है और ऐसे लोग सिर्फ मनगढ़त और झुठी कहानियों पर ही यकीन रखते है।

पैगामः- हक जब लोगों के सामने आता है तो इतिहास साक्षी है कि लोग उसकी जबरदस्त मुखालफत करते है। उदाहरण के तौर पर गलेलो ने जब कहां कि दुनिया सूरज के चारों तरफ घुम रही है उससे पहले लोग यकीन करते थे कि सूरज दुनिया के चारो तरफ घुम रहा है मगर जब कुदरत यानी अल्लाह ने गलेलो के दिमाग में ये सच्चाई डाली तो लोगों को यकीन नहीं आया और वो गलेलो पर जुल्म करते रहे आखिर कार अल्लाह ने जिस सच्चाई को गलेलो के दिमाग में रखी थी वो दुनिया के ज्यादा से ज्यादा लोगों ने मानी और ये सच्चाई साबित भी हुई।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَن يَضِلُّ عَن سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ {117}

जो लोग उसकी राह से बहके हुए है उनका अल्लाह ही खूब जानता है और वह तो हिदायत याफ्ता लोगों से भी खूब वाकिफ है (११७)

व्याख्याः- अल्लाह को मालूम है जो उसकी राह से बेराह होता है और उन लोगों को भी जानता है जो उसकी राह पर चलते है।

فَكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ بِآيَاتِهِ مُؤْمِنِينَ {118}

तो अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो तो जिस ज़ीबह पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उसी को खाओ (११८)

व्याख्याः- जो पशु मानव की सेहत के लिये लाभकारी है यानी जिस पशु को अल्लाह ने मानव के लिये नियुक्त किया है उसे खाने में कोई हर्ज नहीं।

पैगामः- Ecological balance के अनुसार मानव के लिये शाकाहारी पशु अल्लाह ने नियुक्त किये है यानी मानव के लिये जिस पर अल्लाह का नाम हो।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُم مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ وَإِنَّ كَثِيرًا لَّيُضِلُّونَ بِأَهْوَائِهِم بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِينَ {119}

और तुम्हें क्या हो गया है कि जिस पर खुदा का नाम लिया गया हो उसमें नहीं खाते हो हालाँकि जो चीजें उसने तुम पर हराम कर दी है वह तुमसे तफसीलन बयान कर दी है मगर जब तुम मजबूर हो तो अलबत्ता और बहुतेरे तो अपनी नफसानी ख़्वाहिशों से बे समझे बूझे बहका देते है और तुम्हारा परवरदिगार तो हक़ से तजाविज़ करने वालों से खूब वाकिफ है (११९)

व्याख्याः- ऐसी कोई वजह नहीं जिसके कारण मानव गोस्त नहीं खा सकता। मानव की सेहत के लिये जिस पशु का मास फायदामंद है वो अल्लाह की मर्जी से आज लोगों के सामने है। अल्लाह ताला विज्ञान के द्वारा लोगों के सामने इसको उल्लेख कर चुके है। और जो मानव के लिये फायदेमंद नहीं है वो कभी-कभी जरूरत के अनुसार मानव को लाभ पहुँचा सकते है और अल्लाह हद पार करने वालों को खूब जानता है।

وَذَرُوا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهُ إِنَّ الَّذِينَ يَكْسِبُونَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوا يَقْتَرِفُونَ {120}

ज़ाहिरी और बातिनी गुनाह का छोड़ दो जो लोग गुनाह करते है उन्हें अपने आमाल का अनक़रीब ही बदला दिया जाएगा (१२०)

व्याख्याः- और मानव खुले और छुपे गुनाहों को त्याग दे जो गुनाह करेगा उसे जरूर सजा मिलेगा।

पैगामः- मानव की सबसे ज्यादा लज्जाजनक चरित्र होती है अपवित्रता और पाप, चाहे वो छुपा कर करें या खुलेआम। हर पापी अपने पाप को छुपाने की चेष्टा करते है मगर अल्लाह की मर्जी से वो जाहिर हो जाता है।

وَلَا تَأْكُلُوا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهُ لَفِسْقٌ وَإِنَّ الشَّيَاطِينَ لَيُوحُونَ إِلَى أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ {121}

और जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया उसमें से मत खाओये बेशक बदचलनी है और शयातीन तो अपने हवा ख़्वाहों के दिल में वसवसा डाला ही करते है ताकि वह तुमसे झगड़े किया करें और अगर तुमने उनका कहना मान लिया तो बेशुबहा तुम भी मुशरिक हो (१२१)

व्याख्याः- और ऐसे पशु बिलकुल नहीं खाने चाहिए जिस पर अल्लाह की कूदरत मानव के लिये लाभकारी नहीं रखी और ये गुनाह है।

पैगामः- अल्लाह का नाम लेने ये न लेने से जानवर पाक यानी हलाल नहीं होता। अल्लाह का नाम लेने का मतलब है वो नियम जो खुराक के मामले में अल्लाह ताला ने मानव के लिये मंजूर किये है।

أَوَ مَن كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَن مَّثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {122}

क्या जो शख़्स मुर्दा था फिर हमने उसको ज़िन्दा किया और उसके लिए एक नूर बनाया जिसके ज़रिए वह लोगों में चलता फिरता है उस शख़्स का सामना हो सकता है जिसकी ये हालत है कि अँधेरे म कि वहाँ से किसी तरह निकल नही सकता उसी तरह काफिरों के वास्ते उनके आमाल आरास्ता कर दिए गए है (१२२)

व्याख्याः- बड़े से बड़े मुर्दा विवेक वाले मानव को भी अल्लाह नेक रास्ते पर ले आया और ऐसा उपदेश दिया जिसे लेकर उन्होंने मानवों के बीच मिसाल कायम की और ऐसा मानव कभी भी उस मानव के बराबर नहीं जो गुनाह के रास्तों पर चल रहा हो।

पैगामः- उदाहरण के तौर पर पुरुष बालमीकी की मिसाल दे सकते है जो पहले डाकु था बाद में अल्लाह उसे नेक रास्ता पर ले आया और लोगों के दरमियान एक मिसाल कायम की।

وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا وَمَا يَمْكُرُونَ إِلَّا بِأَنفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ {123}

और जिस तरह हमने हर बस्ती में उनके कुसूरवारों को सरदार बनाया ताकि उनमें मक्कारी किया करें और वह लोग जो कुछ करते है अपने ही हक़ में बुरा करते है और समझत नहीं (१२३)

व्याख्याः- हर मानव समाज में अच्छाई के साथ बुराई मौजूद है और ये अल्लाह की कूदरत में से एक कूदरत है और यही वजह है कि अल्लाह की कूदरत मानव के लिये एक-सा यानी विरानियत से भरी हुई नहीं है। मुर्दा विवेक मानव में भी अल्लाह प्यार की ज्योत जला सकते है और वो लोगों के सामने एक उदाहरण बन सकते है। पुरे समाज को ज्ञान की रोशनी देकर उसे उजाले की तरफ ले आते है। काफिरों की नजर अपने गुनाह को देख नहीं सकती।

وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَن نُّؤْمِنَ حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ اللَّهِ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا صَغَارٌ عِندَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ {124}

और जब उनके पास कोई निशानी आई है तो कहते है जब तक हमको ख़ुद वैसी चीज़ न दी जाएगी जो पैग़म्बराने ख़ुदा को दी गई है उस वक़्त तक तो हम ईमान न लाएँगे और ख़ुदा जहाँ अपनी पैग़म्बरी क़रार देता है उस को ख़ूब जानता है जो लोग मुजरिम है उनको अनक़रीब उनकी मक्कारी की सज़ा अल्लाह के यहाँ बड़ी ज़िल्लत और सख़्त अज़ाब होगा (१२४)

व्याख्याः- जब गुनहगार लोगों के सामने कोई भी सच्चाई आये वह अपने जिद से उसे इनकार करते है और मांग करते है उस सच्चाई का सबूत जो सिर्फ अल्लाह की कूदरत से कुछ विशेष लोगों के पास ही होती है। कूदरत की सच्चाई का पैगाम कुछ विशेष लोगों को ही नसीब होता है और जो लोग सच्चाई पर विश्वास नहीं रखते उन्हें यकीनन बाद में बेइज्जत होना पड़ता है। समय के साथ-साथ अल्लाह ने पैगम्बरों को मानव समाज को पाप मुक्त कराने के लिए दुनियां में भेजा।

فَمَن يُرِدِ اللَّهُ أَن يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ وَمَن يُرِدْ أَن يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ {125}

तो ख़ुदा जिस शख़्स को राह रास्त दिखाना चाहता है उसके सीने को इस्लाम के वास्ते कुशादा कर देता है और जिसको गुमराही की हालत में छोड़ना चाहता है उनके सीने को तंग दुश्वार गुबार कर देता है गोया उसके लिए आसमान पर चढ़ना है जो लोग इमान नहीं लाते अल्लाह उन पर बुराई को उसी तरह मुसल्लत कर देता है (१२५)

व्याख्याः- जिस शख्स को अल्लाह सही रास्ते पर डालना चाहे उसके सीने को सच्चाई से भर देता है और जिसको सच्चाई के रास्ते पर न डालना चाहे उसे अपनी मर्जी से भटकने पर छोड़ देता है और तकलीफों के दायरे से घेर देते है जो सच्चाई को कबूल नहीं करते।

पैगामः- पवित्रता, प्रेम, शांति, अहिंसा, भाईचारा, मानवता और शिक्षा - इन नियमों के साथ जो मानव जीता है उसकी अंर्तात्मा ही ''इस्लाम'' से पवित्र होती है, ''इस्लाम'' किसी सम्प्रदाय का नाम नहीं ये एक मानव चरित्र है और पवित्र मानव ''इस्लाम'' के आदर्शों के साथ जीते है।

وَهَٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا قَدْ فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ {126}

और य तुम्हारे परवरदिगार का सीधा रास्ता है इबरत हासिल करने वालों के वास्ते हमने अपने आयात तफसीलन बयान कर दिए है (१२६)

व्याख्याः- ये सच्चाई ही रब का सीधा रास्ता है जिसे दुनिया के ज्यादा से ज्यादा लोगों ने कबूल किया और ये प्रमाणित है।

لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِندَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُم بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {127}

उनके वास्ते उनके परवरदिगार के यहाँ अमन व चैन का घर है और दुनिया में जो कारगुज़ारियाँ उन्होने की थीं उसके ऐवज़ खुदा उन का सरपरस्त होगा (१२७)

व्याख्याः- सच्चाई को कबूल करने और समझने वालों के लिये कूदरत की तरफ से शांति और आराम (जन्नत) है और अपने अमाल के द्वारा अल्लाह और उसकी कूदरत से मोहब्बत रखता है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُم مِّنَ الْإِنسِ وَقَالَ أَوْلِيَاؤُهُم مِّنَ الْإِنسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَبَلَغْنَا أَجَلَنَا الَّذِي أَجَّلْتَ لَنَا قَالَ النَّارُ مَثْوَاكُمْ خَالِدِينَ فِيهَا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيمٌ عَلِيمٌ {128}

और जिस दिन खुदा सब लोगों को जमा करेगा और शयातीन से फरमाएगा, ऐ सम्प्रदाय जिन्नात तुमने तो बहुतेरे आदमियों को बहका अपनी जमाअत बड़ी कर ली आदमियों से जो लोग दोस्त थे कहेंगे ऐ हमारे पालने वाले हमने एक दूसरे से फायदा हासिल किया और अपने किए की सज़ा पाने को, जो वक्त तू ने हमारे लिए मुअय्युन किया था अब हम अपने उस वक्त में पहुँच गए अल्लाह उसके जवाब में, फरमाएगा तुम सब का ठिकाना जहन्नुम है और उसमें हमेशा रहोगे मगर जिसे अल्लाह चाह बेशक तेरा परवरदिगार हिकमत वाला वाकिफकार है (१२८)

व्याख्याः- और जिस दिन समस्त प्राणी अल्लाह की प्रकृति में समा जाएगी, उस दिन लोग समझेंगे कि मानव को बेहकानी वाली सोच अपने किये का नतीजा भुगतेगी और इन सारे लोगों का स्थान है नर्क जो अशांति से भरा रहेगा और कूदरत महाज्ञानी है।

وَكَذَلِكَ نُوَلِّي بَعْضَ الظَّالِمِينَ بَعْضًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ {129}

और इसी तरह हम बाज़ ज़ालिमों को बाज़ का उनके करतूतों की बदौलत सरपरस्त बनाएँगे (१२९)

व्याख्याः- और इस तरह प्रकृति ने मानव के विवेक को अच्छे-बुरे से सजाया।

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا شَهِدْنَا عَلَىٰ أَنفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوا عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ {130}

ऐ सम्प्रदाय जिन व इन्स क्या तुम्हारे पास तुम ही में के पैगम्बर नहीं आए जो तुम तुमसे हमारी आयतें बयान करें और तुम्हें तुम्हारे उस रोज़ के पेश आने से डराएँ वह सब अर्ज़ करेंग हम खुद अपने ऊपर आप अपने गवाही देते ह उनको दुनिया की ज़िन्दगी ने उन्हें अँधेरे में डाल रखा और उन लोगों ने अपने खिलाफ आप गवाही दी (१३०)

व्याख्याः- मानव और मानव को चलाने वाली सोच यानी अंर्तात्मा के अन्दर से ही समझाने वाले या पैगाम देने वाली सोच आती है और मानवी समाज को प्रकृति ने अपनी सच्चाई को प्रमाणित किया। प्रकृति ने ही ऐसे कुछ लोगों के मस्तिष्क को सच्चाई की रोशनी से रोशन किया, और जो लोग इस सच्चाई पर संदेह करते है उनकी दुनियावी जिन्दगी को नजर में रखकर ऐसे लोग धोखे में रहते है यानी सच्चाई से वर्जित रहे और यही लोग गुनाहगार यानी काफिर है।

ذَٰلِكَ أَن لَّمْ يَكُن رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا غَافِلُونَ {131}

बेशक ये सब के सब काफिर थे और ये उस वजह से है कि तुम्हारा परवरदिगार कभी बस्तियों को जुल्म ज़बरदस्ती से वहाँ के बाशिन्दों के ग़फलत की हालत में हलाक नहीं किया करता (१३१)

व्याख्याः- सच्चाई को नहीं समझने के कारण कोई भी सम्प्रदाय मुसीबत में पड़ सकता है और सच्चाई समझने के बाद अगर कोई ये मुसीबत अपना ले तो वो अपनी बर्बादी खुद खरीद लेते है।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِّمَّا عَمِلُوا وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ {132}

और जिसने जैसा किया है उसी के मुवाफ़िक हर एक के दरजात हैं (१३२)

व्याख्याः- हर मानव को उसके कर्मों का फल जरूर मिलता है और बड़े से बड़े पापियों का कर्म भी प्रकृति से छुपता नहीं।

पैगामः- दुनिया में दो ही सम्प्रदाय है अच्छे और बुरे और ये आयत इस बात को प्रमाणित करती है।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ إِن يَشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِن بَعْدِكُم مَّا يَشَاءُ كَمَا أَنشَأَكُم مِّن ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ آخَرِينَ {133}

और जो कुछ वह लोग करते हैं तुम्हारा परवरदिगार उससे बेख़बर नहीं और तुम्हारा परवरदिगार बे परवाह रहम वाला है - अगर चाहे तो तुम सबके सबको ले लाए और तुम्हारे बाद जिसको चाहे तुम्हार जानशीन बनाए जिस तरह आख़िर तुम्हें दूसरे लोगों की औलाद से पैदा किया है (१३३)

व्याख्याः- अल्लाह को या प्रकृति को किसी भी चीज की जरूरत नहीं है वो सारी चीजों से परिपूर्ण है अगर चाहे तो सारी चीजें हटा सकता है। कोई भी या किसी भी लोगों की नसल को हटा कर दूसरे किस्म की नसल बना सकते है।

إِنَّ مَا تُوعَدُونَ لَآتٍ وَمَا أَنتُم بِمُعْجِزِينَ {134}

जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है वह ज़रूर आने वाली है (१३४)

व्याख्याः- मानव और प्रकृति के दरमियान एक वादा है और वो है ममता, दया, मया, प्रेम, मानवता और शांति। और इसी से मानव को मुक्ति प्राप्त होती है और मानव इससे बेजार नहीं हो सकता। मुक्ति यानी मोक्ष यानी जिस मानव का दिमाग काम, क्रोध, मोह, लालच, अहंकार से मुक्त है।

قُلْ يَا قَوْمِ اعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ مَن تَكُونُ لَهُ عَاقِبَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ {135}

और तुम उसके लाने में आजिज़ नहीं कर सकते कहो कि ऐ मेरी क़ौम तुम बजाए ख़ुद जो चाहो करो मैं अमल कर रहा हूँ फिर अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा कि आख़ेरत किसके लिए है ज़ालिम लोग तो हरगिज़ कामयाब न होंगे (१३५)

व्याख्याः- अल्लाह का पैगाम पहुँचाने वाले अपने नेक, परहेजगारी, मोहब्बत और मानवता चाहने वाले लोगों से कह दे कि वो इस सोच पर और अपने अमाल पर कायम रहे और बहुत जल्द ही उनके कर्मों का फल समाज के लिये और उनके लिये रहमत ले आयेगी। ये निश्चित है कि सच्चाई को गुमराह करने वाले कभी कामयाब नहीं होते।

وَجَعَلُوا لِلَّهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيبًا فَقَالُوا هَٰذَا لِلَّهِ بِزَعْمِهِمْ وَهَٰذَا لِشُرَكَائِنَا فَمَا كَانَ لِشُرَكَائِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللَّهِ وَمَا كَانَ لِلَّهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلَىٰ شُرَكَائِهِمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ {136}

और ये लोग अल्लाह की पैदा की हुयी खेती और चौपायों में से हिस्सा क़रार देते है और अपने ख़्याल के मुवाफिक कहते है कि ये तो ख़ुदा का है और ये हमारे शरीकों का फिर जो ख़ास उनके शरीकों का है वह तो ख़ुदा तक नहीं पहुँचने का और जो हिस्सा अल्लाह का है वो उसके शरीकों तक पहुँच जाएगा ये क्या ही बुरा हुक्म लगाते है और उसी तरह बहुतेरे मुशरकीन को उनके शरीकों ने अपने बच्चों को मार डालने को अच्छा कर दिखाया है (१३६)

व्याख्याः- अल्लाह यानी कूदरत की दी हुई सारी फसलें सही तरीके से इस्तेमाल करना ही अल्लाह के वास्तो खर्च करना ही हुआ और जो लोग इसका गलत इस्तेमाल अपने कु-संस्कार के वश में आकर करते है इसका समाज को कोई फायदा नहीं पहुँचता और ये कु-संस्कार कभी भी अच्छा नहीं होता।

وَكَذَٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَاؤُهُمْ لِيُرْدُوهُمْ وَلِيَلْبِسُوا عَلَيْهِمْ دِينَهُمْ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا فَعَلُوهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُونَ {137}

ताकि उन्हें हलाकत में डाल दें और उनके सच्चे दीन को उन पर मिला जुला दें और अगर अल्लाह चाहता तो लोग ऐसा काम न करते तो तुम और उनकी इफ़तेरा परदाज़ियों का छोड़ दो और ये लोग अपने ख़्याल के मुवाफिक कहने लगे कि ये चौपाए और ये खेती अछूती है (१३७)

व्याख्याः- कुछ लोग अपने गलत ख्यालात और अयौगतिक रीती-रिवाजों के आगे अपने बच्चों के अरमानों का कत्ल करके या अपने बच्चों के हुनूर का कत्ल करके अपनी जिद पुरी करते है। अगर अल्लाह ये चाहता तो जरूर उसका सही नतीजा निकलता।

وَقَالُوا هَٰذِهِ أَنْعَامٌ وَحَرْثٌ حِجْرٌ لَّا يَطْعَمُهَا إِلَّا مَن نَّشَاءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُورُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُونَ اسْمَ اللَّهِ عَلَيْهَا افْتِرَاءً عَلَيْهِ سَيَجْزِيهِم بِمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ {138}

उनको सिवा उसके जिसे हम चाहें कोई नहीं खा सकता और कुछ चारपाए ऐसे है जिनकी पीठ पर सवारी लादना हराम किया गया और कुछ चारपाए ऐसे है जिन पर ख़ुदा का नाम तक नहीं लेते और फिर यह ढकोसले हैं ये सब अल्लाह पर इफ़तेरा व बोहतान है अल्लाह उनके इफ़तेरा परदाज़ियों को बहुत जल्द सज़ा देगा (१३८)

व्याख्याः- कुछ लोग अपने ख्यालात के अनुसार खाने-पीने की चीजों में भी जायज और नजायज के वर्ग में बाट रखा है जिसकी कोई बुनियाद नहीं है। कुछ पशु ऐसे है जिन पर चढ़ना और उस पर बोझ लादना बिल्कुल गलत और बेरहमी है। और कुछ पशु ऐसे भी है जिसे बेरहमी की सजा मानव देते है और कहते है कि ये अल्लाह के बंदे नहीं है। बहुत जल्द उनकी बेरहमी लोगों के सामने आ जायेगी और अल्ला उन्हें सजा देगा।

وَقَالُوا مَا فِي بُطُونِ هَذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِذُكُورِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلَى أَزْوَاجِنَا وَإِن يَكُن مَّيْتَةً فَهُمْ فِيهِ شُرَكَاءُ سَيَجْزِيهِمْ وَصْفَهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ {139}

और कुफ्फ़ार ये भी कहते है कि जो बच्चा उन जानवरों के पेट में है सिर्फ हमारे मर्दों के लिए हलाल है और हमारी औरतों पर हराम है और अगर वह मरा हुआ हो तो सब के सब उसमें शरीक है अल्लाह अनक़रीब उनको बातें बनाने की सज़ा देगा बेशक वह हिकमत वाला बड़ा वाक़िफकार है (१३९)

व्याख्याः- किसी भी पशु के पेट में अगर बच्चा हो तो वो सबके लिये हराम या वर्जित है यानी उसे काटन-खाना नजायज है। अपनी वंश बढ़ाना हर प्राणी का हक है और जो इस कानून को नहीं मानता अल्लाह उसे सजा देते है और अल्लाह सब जानता है और हिकमत वाला है।

قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ قَتَلُوا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَحَرَّمُوا مَا رَزَقَهُمُ اللَّهُ افْتِرَاءً عَلَى اللَّهِ قَدْ ضَلُّوا وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ {140}

बेशक जिन लोगों ने अपनी औलाद को बे समझे बूझे बेवकूफी से मार डाला और जो रोज़ी अल्लाह ने उन्हें दी थी उसे अल्लाह पर इफ़तेरा बाँध कर अपने ऊपर हराम कर डाला और वह सख़्त घाटे में है ये यक़ीनन राहे हक़ से भटक गऐ और ये हिदायत पाने वाले थे भी नहीं (१४०)

व्याख्याः- हकीकत में मानवों में वो लोग ज्यादा नुकसान उठाते है जो लोग अपनी औलादों के भविष्य अपनी जहालत से कत्ल यानी उन्हें ज्ञान से वंचित करते है और खाने-पीने के मामले में भी बेतुखा परहेज का बोझ अपनी औलाद पर लाद देते है या जबरदस्ती कुसंस्कार के रीती-रिवाज उन पर ठोप देते है। और यकीनन ये लोग सही रास्ते पर नहीं है।

पैगामः- पशुओं में तंदरुस्त और अच्छे पशुओं की नसल अच्छी होती है इसी तरह मानवों में अच्छे इल्म वाले और नेक नसल समाज के लिये फायदेमंद होती है।

وَهُوَ الَّذِي أَنشَأَ جَنَّاتٍ مَّعْرُوشَاتٍ وَغَيْرَ مَعْرُوشَاتٍ وَالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُونَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَغَيْرَ مُتَشَابِهٍ كُلُوا مِن ثَمَرِهِ إِذَا أَثْمَرَ وَآتُوا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهِ وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ {141}

और वह तो वही अल्लाह है जिसने बहुतेरे बाग़ पैदा किए चढ़ाए हुए और बे चढ़ाए हुए और खजूर के दरख़्त और खेती जिसमें फल मुख़्तलिफ़ किस्म के है और ज़ैतून और अनार बाज़ तो सूरत रंग मज़े में, मिलते जुलते और बेमेल जब ये चीज़े फलें तो उनका फल खाओ और उन चीज़ों के काटने के दिन अल्लाह का हक़ दे दो और ख़बरदार फज़ूल ख़र्ची न करो - क्यों कि वह फ़ुज़ूल ख़र्चे से हरगिज़ उलफत नहीं रखता (१४१)

व्याख्याः- प्रकृति ने बाग और पेड़-पोधों की सृष्टि की, उन सबों का फल जो मानव की सेहत के लिये लाभकारी हो, वो मानव खा सकता है और खाने में अपने दायरे को महदूत रखे ताकि पेड़-पोधे जैसे प्राणियों की नसल बर्बाद न हो। अपने दायरे से बाहर जाने वाले लोगों को अल्लाह पसंद नहीं करता।

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا كُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِينٌ {142}

और चारपायों में से कुछ तो बोझ उठाने वाले और कुछ ज़मीन से लगे हुए पैदा किए अल्लाह ने जो तुम्हें रोज़ी दी है उस में से खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो (१४२)

व्याख्याः- चार पैर वाले जानवरों में से छोटे-बड़े जानवर खाने में कोई गुनाह नहीं है। इसको बढ़ा कर खाना शैतानियत है और शैतान की दी हुई बीमारी हमारी खुली दुश्मन है।

ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ مِّنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {143}

आठ जोड़े पैदा किए है - भेड़ से (नर मादा दो) और बकरी से (नर मादा) दो पूछो तो कि अल्लाह ने दोनों नरों को हराम कर दिया है या उन दोनों मादनियों को या उस बच्चे को जो उन दोनों मादनियों के पेट से अन्दर लिए हुए है (१४३)

व्याख्याः- नर हो या मादा उसमें कोई अंतर नहीं है।

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنثَيَيْنِ أَمْ كُنتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّاكُمُ اللَّهُ بِهَذَا فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِّيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ {144}

और ऊँट के दो और गाय के दो तुम उनसे पूछो कि अल्लाह ने उन दोनों नरों को हराम किया या दोनों मादनियों को या उस बच्चे को जो दोनों मादनियों अपने पेट के अन्दर लिये हुए है क्या जिस वक्त अल्लाह ने तुमको उसका

हुक्म दिया था तुम उस वक़्त मौजूद थे फिर जो अल्लाह पर झूठ बोताहन बाँधे उससे ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा ताकि लोगों के वे समझे बूझे गुमराह करें अल्लाह हरगिज़ ज़ालिम क़ौम में मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुचाता (१४४)

व्याख्याः- ऊँठ या गाय वो हराम है या हलाल क्या अल्लाह का निर्देश है। उसे मानव अपनी मर्जी से खाता है और उस पर जो अल्लाह के नाम से झुठ बांधते है वो सबसे बड़ा जालिम है । और जिसके पास उसके खाने या न खाने के बारे में अल्लाह के निर्देश का कोई प्रमाण नहीं है।

قُل لَّآ أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَى طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّآ أَن يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَّسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {145}

तुम कहो कि मै तो जो मेरे पास वही के तौर पर आया है उसमें कोई चीज़ किसी खाने वाले पर जो उसको खाए हराम नहीं पाता मगर जबकि वह मुर्दा या बहता हुआ ख़ून या सूअर का गोश्त हो तो बेशक ये नापाक और हराम है या नाफरमानी का बाएस हो कि अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो फिर जो शख़्स बेबस हो जाए नाफरमान व सरकश न हो और इस हालत में खाए तो अलबत्ता तुम्हारा परवरदिगार बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१४५)

व्याख्याः- वैज्ञानिकों की तहकीकात ने जिस खुराक को मानव के लिये हलाल साबित किया वो रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद वही के द्वारा लोगों के सामने लाये। जैसे कि सड़ा हुआ मुर्दा जानवर, रक्त और सुअर का गोस्त। अपने लालच में अंधे होकर ऐसी चीज न खाये जो मानव के शरीर के लिये हानिकारी हो। अगर बहुत मजबूरी हो तो अपनी जान बचाने के लिये थोड़ा सी मिकदार में खाना जायज है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ذَلِكَ جَزَيْنَاهُم بِبَغْيِهِمْ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ {146}

और हमने यहूदियों पर तमाम नाखूनदार जानवर हराम कर दिये थे और गाय और बकरी दोनों की चरबियां भी उन पर हराम कर दी थी मगर जो चरबी उनकी दोनों पीठ या आतों पर लगी हो या हडड्री से मिली हुयी हो ये हमने उन्हें उनकी सरक़शी की सज़ा दी थी और उसमें तो शक ही नहीं कि हम ज़रूर सच्चे है (१४६)

व्याख्याः- यहूदी, नाखून वाला जानवर खाना हराम समझते थे और ये अल्लाह की मर्जी से था यहां तक कि जानवर कि चर्बी भी नहीं खाते थे। और यकीनन अल्लाह सच्चा और रहमान है।

فَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل رَّبُّكُمْ ذُو رَحْمَةٍ وَاسِعَةٍ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهُ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِينَ {147}

पर अगर वह तुम्हें झुठलाएँ तो तुम में कहो कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ी वसीह रहमत वाला है मगर उसका अज़ाब गुनाहगार लोगों से टलता भी नहीं (१४७)

व्याख्याः- अगर लोग सच्चे को झुठा साबित करने की कोशिश करे तो उन्हें जरूर सजा मिलेगी।

سَيَقُولُ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَشْرَكْنَا وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِن شَيْءٍ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ حَتَّىٰ ذَاقُوا بَأْسَنَا قُلْ هَلْ عِندَكُم مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوهُ لَنَا إِن تَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنتُمْ إِلَّا تَخْرُصُونَ {148}

अनक़रीब मुशरेकीन कहेंगे कि अगर अल्लाह चाहता तो न हम लोग शिर्क करते और न हमारे बाप दादा और न हम कोई चीज़ अपने ऊपर हराम करते उसी तरह जो लोग उनसे पहले हो गुज़रे है झुठलाते रहे यहाँ तक कि उन लोगों ने हमारे अज़ाब को चखा तुम कहो कि तुम्हारे पास कोई दलील ह तो हमारे वास्ते उसको निकालो पेश करोगे तुम लोग तो सिर्फ अपने ख़्याल ख़ाम की पैरवी करते हो और सिर्फ अटकल पच्चू बातें करते हो (१४८)

व्याख्याः- कुछ लोग ऐसे है जो कहते है कि अगर अल्लाह चाहता तो वो गुनाह नहीं करते और उनके पुरवज भी गुनाह नहीं करते और वो किसी भी चीज को हराम नहीं कहते और सारी अच्छी बातों को झुठा साबित करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ते जब तक कि उन्हें अपने गुनाहों के सबब सजा न मिल जाये। ऐसे लोगों के पास अपने गुनाहों को अच्छा साबित करने के लिये कोई दलील नहीं होती, ये लोग अयौगतिक बातें और ख्वाहिसात से भरी हुई कल्पना के पीछे भागते है।

पैगामः- कुछ लोग समाज में ऐसे भी है जो गुनाह करने के बाद कहते है कि ये भी अल्लाह की मर्जी से है।

قُلْ فَلِلَّهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ فَلَوْ شَاءَ لَهَدَاكُمْ أَجْمَعِينَ {149}

तुम कहो कि अल्लाह तक पहुंचाने वाली दलील अल्लाह ही के लिए ख़ास है (१४९)

व्याख्याः- सारे प्रमाण और सच्ची बातें अल्लाह की मर्जी से ही लोगों को नसीब होती है। अगर वो चाहे तो सब लोगों को एक ही राह पर चलाये।

पैगामः- दुनिया में हर पहलू का विपरीत पहलू रखकर अल्लाह ने रंग-बिरंगी दुनिया सजायी और ये बात सच है कि हर चीज अल्लाह की मर्जी से ही होती है। मानव को दिमाग हासिल हुआ ये भी अल्लाह की मर्जी से है और उसे अच्छी तरह से इस्तेमाल करना भी अल्लाह की मर्जी है।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَاءَكُمُ الَّذِينَ يَشْهَدُونَ أَنَّ اللَّهَ حَرَّمَ هَذَا فَإِن شَهِدُوا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ وَهُم بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُونَ {150}

फिर अगर वही चाहता तो तुम सबकी हिदायत करता तुम कह दो कि अपने गवाहों को लाकर हाज़िर करो जो ये गवाही दें कि ये चीज़े खुदा ही ने हराम कर दी हैं फिर अगर वह गवाही दे भी दे तो कहीं तुम उनके साथ गवाही न देना और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और आख़िरत पर ईमान नहीं लाते और दूसरों को अपने परवरदिगार का हम सर बनाते है उनकी नफ़सियानी ख़्वाहिशों पर न चलना (१५०)

व्याख्याः- धोखादही, झुठ और गुनाह करने वाले लोग अपने गवाह तलब करे और जिन सारे गुनाहों को अल्लाह ने हराम करार दिया है उसको गवाही के द्वारा सच्चा साबित करने की चेष्टा करे। गुनाह कभी भी सच्चा और अच्छा नहीं हो सकता तथा जो अच्छाई, नेकी और परहेजगारी पर ईमान रखते है उनके कर्मफल को कभी भी गुनाह चाहने वाले लोग बिगाड़ नहीं सकते।

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُم مِّنْ إِمْلَاقٍ نَّحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ {151}

तुम उनसे कहो कि आओ जो चीज़ें अल्लाह ने तुम पर हराम की है वह मै तुम्हें पढ़ कर सुनाऊ यह कि किसी चीज़ को अल्लाह का शरीक न बनाओ और माँ बाप के साथ सभ्य सुलूक करो और मुफ़लिसी के ख़ौफ से अपनी औलाद को मार न डालना उनको और तुमको रिज़क देने वाले तो हम है और बदकारियों के क़रीब भी न जाओ ख़्वाह वह ज़ाहिर हो या पोशीदा और किसी जान वाले को जिस के क़त्ल को अल्लाह ने हराम किया है न मार डालना मगर हक़ के ऐवज़ में वह बातें है जिनका अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया है ताकि तुम लोग समझो और यतीम के माल के करीब भी न जाओ (१५१)

व्याख्याः- अच्छाई और शांति चाहने वाले लोग बुराई और गुनाह चाहने वाले को अच्छाई की तरफ बुलाये और प्रकृति की हकीकत अमनो शांति में है वो उन्हें समझाये और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार रखे और मूर्खता से अपनी औलाद के भविष्य को कत्ल न करे और जो चीजें मानव को शर्म (झुठ, चोरी, बेईमानी, जनाकारी इत्यादि) देती है उसके करीब न जाये चाहे वो खुलेआम हो या छुपी हुई हो और किसी का दिल दुखा कर उसके अरमानों का कत्ल न करे यही हक है उससे इनकार करना कुफरियत है और यही अल्लाह के आदेश है मानवों के लिये।

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ {152}

लेकिन इस तरीके पर कि बेहतर हो यहाँ तक कि वह अपनी जवानी की हद को पहुंच जाए और इन्साफ के साथ नाप और तौल पूरी किया करो हम किसी शख़्स को उसकी ताक़त से बढ़कर तकलीफ नहीं देते और जब बात कहो तो इन्साफ़ से अगरचे वह तुम्हारा अज़ीज़ ही हो और अल्लाह के एहद व पैग़ाम को पूरा करो यह वह बातें है जिनका ख़ुदा ने तुम्हें हुक्म दिया है कि तुम इबरत हासिल करो और ये भी कि यही मेरा सीधा रास्ता है (१५२)

व्याख्याः- अच्छे लोग अनाथों का माल हड़पने की कोशिश न करे। जब तक वो अपनी समझदारी में कामयाबी न पाये तब तक उसके माल का जिम्मा ले और समझदारी आने के बाद उसको उसका माल लौटा दे ये अल्लाह का फरमान है मानव उसे याद रखे।

وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَن سَبِيلِهِ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُم بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ {153}

तो उसी पर चले जाओ और दूसरे रास्ते पर न चलो कि वह तुमको ख़ुदा के रास्ते से भटका देगें यह वह बातें है जिनका अल्लाह ने तुमको हक्म दिया है ताकि तुम परहेज़गार बनो (१५३)

व्याख्याः- प्रेम, पवित्रता, ममता, दया, अहिंसा, शिक्षा, मानवता और ईमानदारी - ये अल्लाह का धर्म है जो सीधा और सच्चा है। इनके आदर्शों को अपनाना और इनके नियमों के साथ जीना मानव कर्त्तव्य है और वो सारे रास्ते जो गुनाह की तरफ जाते है उन्हें अपनाने का मतलब अपनी शांति और चैन को मुसीबत में डालना है और यही अल्ला का आदेश है।

ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لَّعَلَّهُم بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُونَ {154}

फिर हमने जो सभ्यी करें उस पर अपनी नेअमत पूरी करने के वास्ते मूसा को किताब अता फरमाई और उसमें हर चीज़ की तफ़सील थी और लोगों के लिए हिदायत व रहमत है ताकि वह लोग अपने परवरदिगार के सामने हाज़िर होने का यक़ीन करें (१५४)

व्याख्याः- पैगम्बर मुसा को अल्लाह की मर्जी से ये आदेश नसीब हुए थे और इस आदेश को सारी सच्चाई को परिपूर्णता से लोगों के सामने रखी गई थी जिसने उसे अपनाया उन्हें शान्ति और सुख-चैन प्राप्त हुआ। यही वो रास्ता है जो अल्लह की तरफ जाता है।

وَهَذَا كِتَابٌ أَنزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ {155}

और ये किताब जिसको हमने नाज़िल किया है क्या है-बरकत वाली तुम लोग उसी की पैरवी करो और डरते रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए (१५५)

व्याख्याः- और ये कुरान-शरीफ, प्रकृति और अल्लाह की मर्जी से लोगों के सामने आया और इसके उपदेश लोगों की कल्याण के लिये है और सारी दुनिया के लिये रहमत। इसके उपदेश को जीवन में लाना हर मानव का कर्त्तव्य है।

पैगामः- इस आयत में शब्द ''कुरान'' का मतलब है अल्लाह के नियम जो पैगम्बरों के द्वारा मानवी समाज में वक्त ब वक्त लोगों के सामने आये।

أَن تَقُولُوا إِنَّمَا أُنزِلَ الْكِتَابُ عَلَى طَائِفَتَيْنِ مِن قَبْلِنَا وَإِن كُنَّا عَن دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ {156}

यह कह बैठो कि हमसे पहले किताब अल्लाह तो बस सिर्फ दो ही सम्प्रदायों पर नाज़िल हुयी थी अगरचे हम तो उनके पढ़ने से बेखबर थे (१५६)

व्याख्याः- लोग कहते है हमसे पहले जो उपदेश की पुस्तकें आयी थी हम उनसे बेखबर है।

أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ لَكُنَّا أَهْدَى مِنْهُمْ فَقَدْ جَاءَكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَصَدَفَ عَنْهَا سَنَجْزِي الَّذِينَ يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ {157}

या ये कहने लगो कि अगर हम पर किताबे खुदा नाज़िल होती तो हम उन लोगों से कहीं बढ़कर राहे रास्त पर होते तो अब तो यक़ीनन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास एक रौशन दलील है और हिदायत और रहमत आ चुकी तो जो शख़्स खुदा के आयात को झुठलाए और उससे मुँह फेरे उनसे बढ़ कर ज़ालिम कौन है जो लोग हमारी आयतों से मुँह फेरते हैं हम उनके मुँह फेरने के बदले में अनक़रीब ही बुरे अज़ाब की सज़ा देगें क्या ये लोग सिर्फ उसके मुन्तिज़र है कि उनके पास फरिश्ते आएं (१५७)

व्याख्याः- और ये भी कहते है अगर उन पर कोई उपदेश आता तो वो सबसे अच्छे और सही रास्ते पर होते और जब साफ-सीधे और सच्चे उपदेश लोगों के सामने आये जिसमें ढेर सारे प्रमाण हो और उन सारे प्रमाणों और सत्यतों को इनकार और झुठा साबित करने की कोशिश करते है वो जालिम है और उन्हें शख्त सजा मिलेगी।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا أَن تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِن قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا قُلِ انتَظِرُوا إِنَّا مُنتَظِرُونَ {158}

या तुम्हारा परवरदिगार खुद आये या तुम्हारे परवरदिगार की कुछ निशानियाँ आ जाएं हालांकि जिस दिन तुम्हारे परवरदिगार की बाज़ निशानियाँ आ जाएंगी तो जो शख़्स पहले से ईमान नहीं लाया होगा या अपने मोमिन होने की हालत में कोई सभ्य काम नहीं किया होगा तो अब उसका ईमान लाना उसको कुछ भी मुफ़ीद न होगा तुम कह दो कि तुम इन्तिज़ार करो हम भी इन्तिज़ार करते हैं (१५८)

व्याख्याः- फरिश्तों के इंताजर में रहकर प्रमाण ढूँढ़ना बेवकुफी है और ऐसे लोग कभी भी सत्य के रास्ते पर नहीं चल सकते और कोई भी अच्छा काम नहीं कर सकते।

मैं सिद्धार्थ चटर्जी ये कहता हूँ कि ऐसे लोगों का इंतजार बेकार है जो सच्चाई को नहीं पहचानते और उसके आने का इंतजार करते है।

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ {159}

बेशक जिन लोगों ने आपने दीन में तफरका डाला और कई फरीक बन गए थे उनसे कुछ सरोकार नहीं उनका मामला तो सिर्फ अल्लाह के हवाले है फिर जो कुछ वह दुनिया में सभ्य या बद किया करते थे वह उन्हें बता देगा (१५९)

व्याख्याः- अल्लाह, प्रकृति और मानव सामज को धर्म के नाम पर जिन लोगों ने बांट कर सम्प्रदायिक भावना की श्रृष्टि की, वे सब और इसके साथ-साथ समस्त अत्याचारियों की जिम्मेदारी जो समाज और सभ्यता को बिगाड़ते है, पवित्र लोगों पर नहीं और ऐसे लोग ही जालिम है। प्रकृति ऐसे अत्याचारियों का अंत अपनी अदृश्य शक्ति द्वारा करती है और समय के साथ-साथ ये सोच मानव समाज से लुप्त हो जाती है।

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ {160}

जो शख़्स सभ्यी करेगा तो उसको दस गुना सवाब अता होगा और जो शख़्स बदी करेगा तो उसकी सज़ा उसको बस उतनी ही दी जाएगी और वह लोग सताए न जाएगें (१६०)

व्याख्याः- जो मानव गुनाह करेगा उसे उसी की तरह सजा मिलेगी और जो अच्छा काम करेगा उसके साथ कोई जुल्म नहीं होगा।

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ {161}

तुम उनसे कहो कि मुझे तो मेरे परवरदिगार ने सीधी राह यानि दीन इबराहीम के मज़हब की हिदायत फरमाई है बातिल से कतरा के चलते थे और मुशरेकीन से न थे (१६१)

व्याख्याः- प्रेम, पवित्रता, ममता, दया, अहिंसा, शिक्षा, मानवता और ईमानदारी यही अल्लाह का सीधा और सच्चा रास्ता है और ये इब्राहीम का भी बताया हुआ रास्ता था और इसमें कोई पेचदगी नहीं है और इब्राहीम मुशरीक नहीं थे।

पैगामः- इब्राहीम से लेकर हजरत मोहम्मद तक काबा में मूर्ति पुजा होती थी तो इस हिसाब से ''मुश्रीक'' शब्द बुथपरस्थों की तरफ इशारा नहीं करता।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ {162}

तुम उन लोगों से कह दो कि मेरी नमाज़ मेरी इबादत मेरा जीना मेरा मरना सब अल्लाह ही के वास्ते है जो सारे जहाँ का परवरदिगार है (१६२)

व्याख्याः- और यकीनन अल्लाह के इन नियमों के आगे सर झुका कर यानी पूरी तरह उसे अपना कर सारी इबादत और परिपूर्ण जिन्दगी और परिपूर्ण मौत हो सकती है। और यही अल्लाह का रास्ता है जो तमाम कायनात का रखवाला है।

لَا شَرِيكَ لَهُ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ {163}

और उसका कोई शरीक नहीं और मुझे इसी का हुक्म दिया गया है और मै सबसे पहले इस्लाम लाने वाला हूँ (१६३)

व्याख्याः- उसका कोई जोर नहीं और रसुलों पर ये जिम्मेदारी है कि इन नियमों को लोगों के दरमियान कायम रखे और मुझे (सिद्धार्थ चटर्जी) ये हुकुम हुए कि इन ख्यालात को लोगों को समझाऊँ तथा समाज में इसे लागू करने की चेष्टा करूँ।

قُلْ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِي رَبًّا وَهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُم مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ {164}

क्या मै अल्लाह के सिवा किसी और को परवरदिगार तलाश करूँ हालाँकि वह तमाम चीज़ो का मालिक है और जो शख़्स कोई बुरा काम करता है उसका उसी पर है और कोई शख़्स किसी दूसरे के गुनाह का बोझ नहीं उठाने का फिर तुम सबको अपने परवरदिगार के हुज़ूर में लौट कर जाना है तब तुम लोग जिन बातों में बाहम झगड़ते थे वह सब तुम्हें बता देगा (१६४)

व्याख्याः- मैं ये कह सकता हूँ कि अल्लाह की सच्चाई के अलावा दूसरी कोई सच्चाई नहीं हो सकती और इसकी खोज बेकार है। अल्लाह ही सारी वस्तुओं का मालिक है। जिस मानव का चरित्र जिस तरह का होगा उसे उसी तरह का नतीजा भुगतना होगा और कोई किसी का बोझ नहीं उठा सकता । हर किसी को अपने दुःख सुख और शान्ति के साथ कूदरत में समाना होगा। आपस का मतभेद जिस विषय पर था उन सारे मतभेदों का विस्तार प्रकृति सबूत के साथ मानव को दे देती है।

وَهُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَـٰئِفَ ا ـرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَبْلُوَكُمْ فِي مَا آتَاكُمْ إِنَّ رَبَّكَ سَرِـعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ {165}

और वही तो है जिसने तुम्हें ज़मीन में नायब बनाया और तुममें से बाज़ के बाज़ पर दर्जे बुलन्द किये ताकि वो तुम्हें दी है उसी पर तुम्हारा इमतेहान करें उसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बहुत जल्द अज़ाब करने वाला है और इसमें भी शक नहीं कि वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१६५)

व्याख्याः- और प्रकृति ने ही मानव को पृथ्वी में शक्तिशाली बनाया और प्रकृति ने ही मानव की इज्जत बढ़ायी तथा प्रकृति ही मानव को अच्छे-बुरे पर अजमाती है। और प्रकृति ही सारी वस्तुएं जो मानव के पास है उसे दी औ प्रकृति ही माफ करने वाली है।

सूराः अल-आराफ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

व्याख्याः-शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्षमाकारी है।

المص

अलिफ़ लाम मीम स्वाद (१)

व्याख्याः- अलीफ से अल्लाह।
लाम से ला इलाहा इल्लल्लाह।
मीम से मोहम्मद और
स्वाद से सीद्दीक यानी सच्चा।

इस सुरा में अल्लाह, प्रकृति और हजरत मोहम्मद के बताए हुए सच्चे और पवित्र आदर्शों का विस्तार उल्लेख है और ये भी कहा गया कि ये आदर्श सिद्दीक यानी सच्चे है।

كِتَابٌ أُنزِلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُن فِي صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنذِرَ بِهِ وَذِكْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِينَ {2}

ये किताब तुम पर इस ग़रज़ से नाज़िल की गई है ताकि तुम उसके ज़रिये से लोगों को अज़ाबे अल्लाह से डराओ तुम्हारे दिल में उसकी वजह से कोई न तंगी पैदा हा और ईमानदारों के लिए नसीहत का बायस हो (२)

व्याख्याः- अल्लाह के आदेश मानव को नसीब हुए बुरे का नतीजा बुरा होता है उससे डरे और अपने दिल में छोटापन आने न दे और यही नसीहत मोमिनों (पवित्र) के लिए है।

اتَّبِعُوا مَا أُنزِلَ إِلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۗ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ {3}

जो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया है उसकी पैरवी करो और उसके सिवा दूसरे बुता की पैरवी न करो तुम लोग बहुत ही कम नसीहत क़ुबूल करते हो (३)

व्याख्याः- मानव को चाहिए कि वो प्राकृतिक सच्चाई को अपनाए जो उनके लिये रखी गयी है यानी अल्लाह की तरफ से जिस हालत में वो है उस हालत को खुशी-खुशी अपनाए और अल्लाह की प्रकृति को अनुभव करे तथा किसी भी कुसंस्कार, नुकसानदेह और अयौगतिक तरीके की नकल न करें।

पैगामः- अल्लाह ने हर मानव को अलग-अलग जगह और अलग-अलग संस्कार के साथ पैदा किया है। अपने संस्कार को त्याग कर दूसरों के संस्कार को अपनाना कोई समझदारी नहीं है। ये बात सत्य है कि दूसरे के अच्छाई को अपनाना अच्छी बात है मगर अपने संस्कार को त्याग कर नहीं।

وَكَم مِّن قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا فَجَاءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا أَوْ هُمْ قَائِلُونَ {4}

और क्या ख़बर नहीं कि ऐसी बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्हें हमने हलाक कर डाला तो हमारा अज़ाब आ पहुचा कि वह लोग या तो रात की नींद सो रहे थे या दिन को क़ीलोला कर रहे थे (४)

व्याख्याः- बहुत सारी सम्प्रदायें ऐसी है जो प्रकृति तौर पर यानी अल्लाह की मर्जी से तबाह हो गयी है और इतिहास इसका साक्षी है और उन पर अल्लाह का प्रकोप तब हुआ जब उन लोगों ने प्रकृति को बिगाड़ कर (यानी समाज की शांति) रात की तरह काली कर दिया था और जब दोपहर के सूरज की तरह तेज रोशनी (सच्चाई) उनके पास आयी तो उन्होंने उसे ठुकरा दिया यानी अपनी अय्याशी और खुदगर्जी से वो सच्चाई को पहचान न पाएं।

فَمَا كَانَ دَعْوَاهُمْ إِذْ جَاءَهُم بَأْسُنَا إِلَّا أَن قَالُوا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ {5}

तब हमारा अज़ाब उन पर आ पड़ा तो उनसे सिवाए इसके और कुछ न कहते बन पड़ा कि हम बेशक ज़ालिम थे (५)

व्याख्याः- और जब अल्लाह का प्रकोप इन सम्प्रदायिकों पर गिरा तब इन गुनहगार लोगों ने अपने गुनाहों को महसूस किया।

فَلَنَسْأَلَنَّ الَّذِينَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْأَلَنَّ الْمُرْسَلِينَ {6}

फिर हमने तो ज़रूर उन लोगों से जिनकी तरफ पैग़म्बर भेजे गये थे सवाल करेंगे और खुद पैग़म्बरों से भी ज़रूर पूछेंगे (६)

व्याख्याः- ये सवाल जरूर प्रकृति की तरफ से आयेंगे, क्या सच बताने वाला उनके पास नहीं आए थे?

فلنقصنّ عليهم بعلم وما كنّا غائبين {7}

फिर हम उनसे हक़ीक़त हाल खूब समझ बूझ के दोहराएगें और हम कुछ ग़ायब तो थे नहीं (७)

व्याख्याः- प्रकृति सच को मानव के सामने खोल-खोल कर ब्यान करती है अगर लोग उसे न समझे तो उसमें अल्लाह का कोई दोष नहीं है।

والوزن يومئذ الحقّ فمن ثقلت موازينه فأولئك هم المفلحون {8}

और उस दिन तौला जाना बिल्कुल ठीक है फिर तो जिनके पल्ले भारी होगें तो वही लोग नजात पाये हुए होगें (८)

व्याख्याः- नेकी और बदी में जिसका पल्ला नेकी की तरफ ज्यादा होता है वही मानव अपनी जिन्दगी और मृत्यु के वक्त सफल होते है।

पैगामः- जो मानव प्रेम, मानवता, शांति, अहिंसा, शिक्षा, पवित्रता, भाईचारा, सच्चाई और ईमानदारी को अपनाते है उनकी सांसों की रफ्तार प्रकृति की रफ्तार के साथ समा जाती है, यानी उनकी हृदय और अंर्तात्मा पुरी तरह से प्रकृती की अघोश में होते है।

ومن خفّت موازينه فأولئك الذين خسروا أنفسهم بما كانوا بآياتنا يظلمون {9}

और जिनके पल्ले हलके होगें तो उन्हीं लोगों ने हमारी आयत से नाफरमानी करने की वजह से यक़ीनन अपना आप नुक़सान किया (९)

व्याख्याः- और जिसका चरित्र गुनाह की तरफ ढल जाता है वो बिलावास्ता अपना ही नुक्सान करते है और इसके कारण ये है कि उन लोगों ने हक को ठुकराया।

ولقد مكّناكم في الأرض وجعلنا لكم فيها معايش قليلا ما تشكرون {10}

और हमने तो यक़ीनन तुमको ज़मीन में क़ुदरत व इख़्तेदार दिया और उसमें तुम्हारे लिए असबाब ज़िन्दगी मुहय्या किए तुम बहुत ही कम शुक्र करते हो (१०)

व्याख्याः- और यकीनन प्रकृति ने मानव को जमीन में ठहराया और उसे जरूरत की हर चीज दी फिर भी मानव गुनाह की तरफदारी करके अल्लाह की न शुकरी करते है।

पैगामः- मानव के अन्दर ही अल्लाह वाली और शैतानी सोच मौजूद है और मानव के द्वारा ही अच्छे और बुरे काम होते है।

ولقد خلقناكم ثمّ صوّرناكم ثمّ قلنا للملائكة اسجدوا لآدم فسجدوا إلاّ إبليس لم يكن من السّاجدين {11}

हालाकि हमने तुम्हारे बाप आदम को पैदा किया फिर तुम्हारी सूरते बनायीं फिर हमनें फ़रिश्तों से कहा कि तुम सब के सब आदम को सजदा करो तो सब के सब झुक पड़े मगर शैतान कि वह सजदा करने वालों में शामिल न हुआ। (११)

व्याख्याः- सर्वशक्तिमान प्रकृति (अल्लाह) ने ही तमाम चीजों की सृष्टि की और साथ में मानव की भी और ऐसे चरित्र भी नियुक्त किये जो प्रकृति के नियमों के विपरीत चलते है।

पैगामः- इब्लीस वो शक्ति है जो दुनिया की सारी अच्छी शक्तियों के विरुद्ध रहती है। उदाहरण के तौर पर हर किस्म का गुनाह इब्लीस की फितरत है जो प्रकृति के नियमों के विरुद्ध चलती है और मानव की शांति को बिगाड़ती है।

قال ما منعك ألاّ تسجد إذ أمرتك قال أنا خير منه خلقتني من نار وخلقته من طين {12}

अल्लाह ने फरमाया जब मैंने तुझे हुक्म दिया कि तू फिर तुझे सजदा करने से किसी ने रोका कहने लगा मै उससे अफ़ज़ल हूँ तूने मुझे आग से पैदा किया और उसको मिटट्ी से पैदा किया (१२)

व्याख्याः- शैतानी शक्ति कभी भी प्यार, मोहब्बत और अमनो सकुन की बात नहीं करती और इसलिए वो मानव और मानवी समाज को सजदा नहीं करती और वो हमेशा प्रकृति के नियमों और अल्लाह के नियमों के विरुद्ध करते है और ये शैतानी शक्ति आग की तरह तेज है जो मानव की शांति को जलाकर राख कर देती है। मानव मिट्टी की तरह नर्म और कमजोर है।

قال فاهبط منها فما يكون لك أن تتكبّر فيها فاخرج إنّك من الصّاغرين {13}

अल्लाह ने फरमाया तो बेहश्त से नीचे उतर जाओ क्योंकि तेरी ये मजाल नहीं कि तू यहाँ रहकर ग़ुरूर करे तो यहाँ से निकल बेशक तू ज़लील लोगों से है (१३)

व्याख्याः- अल्लाह की बस्ती यानी अमनो सकुन, नेकी और मोहब्बत ये सारे किरदार से शैतान का दूर-दूर तक कोई वास्ता नहीं यानी प्रकृति ने उसे अपने बस्ती से निकाल दिया है। गुनाह नफरत के काबिल है और जलील मानव ही गुनाह करता है।

قالَ أنظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ {14}

कहने लगा तो हमें उस दिन तक की मोहलत दे (१४)

व्याख्याः- शैतानी शक्ति को आखिरी वक्त तक मोहलत मिली है।

قالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ {15}

फ़रमाया तुझे ज़रूर मोहलत दी गयी जिस दिन सारी उठा खड़े किये जाएगें (१५)

व्याख्याः- और प्रकृति ने ही उसे मोहलत दी है।

पैगामः- अल्लाह ने नेकी के साथ बदी रखकर दुनिया को रंग-बिरंगी बनाई। इब्लीस (शैतान) की क्या मजाल जो अल्लाह के विरुद्ध करे और यकीनन प्रकृति की शक्ति शैतानी शक्ति से बहुत ज्यादा है।

قالَ فَبِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيمَ {16}

कहने लगा चूँकि तूने मेरी राह मारी तो मै भी तेरी सीधी राह पर बनी आदम को ताक में बैठूं तो सही (१६)

व्याख्याः- हर नेकी को गुमराह करने के लिये शैतानी शक्ति दुनिया में मौजूद है।

ثُمَّ لَآتِيَنَّهُم مِّن بَيْنِ أَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَن شَمَائِلِهِمْ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شَاكِرِينَ {17}

फिर उन लोगों से और उनके पीछे से और उनके दाहिने से और उनके बाएं से उन पर आ पड़ूँगा और और तू उन में से बहुतरों की शुक्रगुज़ार नहीं पायेगा (१७)

व्याख्याः- शैतानी शक्ति हमेशा नेकी और शान्ति चाहने वाली शक्ति के सामने से, पीछे से, दाहिने, बाहिने से वार करती है। और कभी भी अच्छे कामों की प्रशंसा नहीं करती।

قالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْؤُومًا مَّدْحُورًا لَّمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنكُمْ أَجْمَعِينَ {18}

अल्लाह ने फरमाया यहाँ से बुरे हाल में निकल जा उन लोगों से जो तेरा कहा मानेगा तो मै यक़ीनन तुम सबको जहन्नुम में भर दूंगा (१८)

व्याख्याः- अल्लाह (प्रकृति) ने कभी भी ऐसी शैतानी शक्ति को सम्मलित नहीं किया और उन्हें शान्ति की बस्ती से निकाल दिया। गुनाह को अपना कर शैतानी शक्ति की फरमाबरदारी करने वाले हमेशा अशान्ति की आग में जलते रहते है यानी जहन्नम की आग में।

وَيَا آدَمُ اسْكُنْ أَنتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هَذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُونَا مِنَ الظَّالِمِينَ {19}

और ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीबी बेहश्त में रहा सहा करो और जहाँ से चाहो खाओ मगर उस दरख़्त के करीब न जाना वरना तुम अपना आप नुक़सान करोगे (१९)

व्याख्याः- क़ुदरती हुकुम मानव के लिये ऐसा है कि वो शान्ति से रहे और प्रकृति की दी हुई सारी अच्छाईयों का आनंद ले। सिर्फ वो शैतानी शक्ति (पेड़) को न अपनाये जिससे उसकी शान्ति और चैन छीन जाए और वो बुरा काम करने लगे।

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُورِيَ عَنْهُمَا مِن سَوْءَاتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهَاكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا أَن تَكُونَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ {20}

फिर शैतान ने उन दोनों को वसवसा दिलाया ताकि उनके अस्तर की चीज़े जो उनकी नज़र से बेहश्ती लिबास की वजह से पोशीदा थी खोल डाले कहने लगा कि तुम्हारे परवरदिगार ने दोनों को दरख़्त से सिर्फ इसलिए मना किया ह तुम दोनों फरिश्ते बन जाओ या हमेशा रह जाओ (२०)

व्याख्याः- शैतानी शक्ति हमेशा मानव को लुभा कर बुराई की तरफ ढकेल देती है और पाप मानव के शर्म की चीज है तथा प्रकृति ने मानव को शैतानी शक्ति से दूर रहने का विवेक अताह किया।

पैगामः- मानव का चरित्र मिट्टी की तरह नर्म और परिवर्तनशील है।

وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ النَّاصِحِينَ {21}

और उन दोनों के सामने क़समें खायी कि मै यक़ीनन तुम्हारा ख़ैर ख़्वाह हूँ (२१)

व्याख्याः- अपवित्र शक्ति हमेशा मानव मस्तिक्ष में जरूरत से ज्यादा लालच, ईर्ष्या, अहंकार और उत्वाकांक्षा के द्वारा विगाड़ती रहती है और पाप करने वाले ये सारे कुचरित्र को अपना दोस्त बना लेते है।

فَدَلَّاهُمَا بِغُرُورٍ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْءَاتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِن وَرَقِ الْجَنَّةِ وَنَادَاهُمَا رَبُّهُمَا أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَن تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَأَقُل لَّكُمَا إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِينٌ {22}

ग़रज़ धोखे से उन दोनों को उस की तरफ ले गया ग़रज़ जो ही उन दोनों ने इस दरख़्त को चखा कि उन पर उनकी शर्मगाहें ज़ाहिर हो गयीं और बेहश्त के पत्ते अपने ऊपर ढापने लगे तब उनको परवरदिगार ने उनको आवाज़ दी कि

क्यों मैंने तुम दोनों को इस दरख़्त के पास से मना नहीं किया था और ये न जता दिया था कि शैतान तुम्हारा यक़ीनन खुला हुआ दुश्मन है (२२)

व्याख्याः- हर मानव को शैतानियत के पेड़ का फल खाना पड़ता है और हर किसी का छुपा हुआ गुनाह जो मानव के लज्जा की चीज होती है जो प्रकाशित हो जाती है और हर पापी अपने पापों को छुपाने के लिये अच्छाई के पत्ते इस्तेमाल करने की प्रचेष्टा करते है तथा अल्लाह की तरफ से हमेशा ये कोशिश रहती है कि मानव गुनाह की तरफ न जाए और प्रकृति ने मानव को ये भी समझाया कि गुनाह मानव का खुला दुश्मन है।

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنفُسَنَا وَإِن لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ {23}

ये दोनों अर्ज़ करने लगे ऐ हमारे पालने वाले हमने अपना आप नुकसान किया और अगर तू हमें माफ न फरमाएगा और हम पर रहम न करेगा तो हम बिल्कुल घाटे में ही रहेगें (२३)

व्याख्याः- मानव ये महसूस करता है कि गुनाहों को अपना कर उसने खुद अपना नुकसान किया अगर प्रकृति की तरफ से उसे मुक्ति प्राप्त न हो तो ये उसका नुकसान है।

قَالَ اهْبِطُوا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ إِلَى حِينٍ {24}

हुक्म हुआ तुम सब के सब बेहशत से नीचे उतरो तुममें से एक का एक दुश्मन है और वक़्त तक तुम्हारा ज़मीन में ठहराव और ज़िन्दगी का सामना है (२४)

व्याख्याः- अल्लाह के हुकुम से गुनहगार मानव हमेश समाज में नीचे के वर्ग में रहते है यानी समाज में नफरत के लायक होते है। अच्छा और बुरा आपस में एक-दूसरे के दुश्मन है और वो आखिरी वक्त तक दुनिया में रहेंगे।

पैगामः- अच्छाई के साथ बुराई नियुक्त करके अल्लाह यानी प्रकृति ने पृथ्वी को रंगीन बनाया ताकी दुनिया एक-सा न लगे।

قَالَ فِيهَا تَحْيَوْنَ وَفِيهَا تَمُوتُونَ وَمِنْهَا تُخْرَجُونَ {25}

फरमाया कि तुम ज़मीन ही में जिन्दगी बसर करोगे और इसी में मरोगे और उसी में से उसी में से फिर दोबारा तुम ज़िन्दा करके निकाले जाओगे (२५)

व्याख्याः- प्राणी चाहे वो शैतानी हो या अच्छा प्रकृति के अनुसार उसे दुनिया में पैदा होना उसी में जीना है और उसी में मरना है और इसी जमीन से ही मानव की रचना होती है।

पैगामः- एटम एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तित होता रहता है और एक शक्ल से दूसरी शक्ल में बदलता रहता है।

يَا بَنِي آدَمَ قَدْ أَنزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُوَارِي سَوْآتِكُمْ وَرِيشًا وَلِبَاسُ التَّقْوَىٰ ذَٰلِكَ خَيْرٌ ذَٰلِكَ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ {26}

ऐ आदम की औलाद हमने तुम्हारे लिए पोशाक नाज़िल की जो तुम्हारे शर्मगाहों को छिपाती है और ज़ीनत के लिए कपड़े और इसके अलावा परहेज़गारी का लिबास है और ये सब से बेहतर है य भी खुदा की निशानियों से है ताकि लोग नसीहत व इबरत हासिल करें (२६)

व्याख्याः- अल्लाह यानी प्रकृति ने मानव को तन ढाकने के लिये और खूबसुरती बढ़ाने के लिये कपड़ों की सृष्टि की और इसका सही इस्तेमाल करना मानव का कर्त्तव्य है और ये प्रकृति का नियम भी है।

يَا بَنِي آدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطَانُ كَمَا أَخْرَجَ أَبَوَيْكُم مِّنَ الْجَنَّةِ يَنزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْآتِهِمَا إِنَّهُ يَرَاكُمْ هُوَ وَقَبِيلُهُ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ إِنَّا جَعَلْنَا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ {27}

ऐ औलादे आदम कहीं तुम्हें शैतान बहका न दे जिस तरह उसने तुम्हारे बाप माँ को बेहश्त से निकलवा छोड़ा उसी ने उन दोनों से पोशाक उतरवाई ताकि उन दोनों को उनकी शर्मगाहें दिखा दे वह और उसका कुनबा ज़रूर तुम्हें इस तरह देखता रहता है कि तुम उन्हे नहीं देखने पाते हमने शैतानों को उन्हीं लोगों का रफीक़ क़रार दिया है (२७)

व्याख्याः- मानव हमेशा ये ख्याल रखे कि वो बुरे कामों से बचता रहे। बुरे कामों या गुनाहों में लुप्त लोग शान्ति की जन्नत से बाहर होते है और ऐसे बाहर होते है कि उनके सारे बदन से अच्छाई का लिबाज उतर जाता है और उनके सारे गुनाह दिखाई देता है। गुनहगार लोग आपस में एक-दूसरे के दोस्त होते है और ये लोग प्रेम, मानवता, शांति, अहिंसा, शिक्षा, पवित्रता, भाईचारा, सच्चाई और ईमानदारी पर ईमान नहीं लाते।

وَإِذَا فَعَلُوا فَاحِشَةً قَالُوا وَجَدْنَا عَلَيْهَا آبَاءَنَا وَاللَّهُ أَمَرَنَا بِهَا قُلْ إِنَّ اللَّهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَاءِ أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ {28}

वह लोग जब कोई बुरा काम करते है कि हमने उस तरीके पर अपने बाप दादाओं को पाया और अल्लाह ने यही

हुक्म दिया है तुम कह दो कि अल्लाह हरगिज़ बुरे काम का हुक्म नहीं देता क्या तुम लोग अल्लाह पर वह बातें कहते हो जो तुम नहीं जानते (२८)

व्याख्याः- और जब कुछ लोग गुनाह यानी शर्म की काम करते है तब वो कहते है कि ये तो हमारे बाप-दादा की रश्में है, वो लोग जान ले कि अल्लाह के नियम कभी भी बेशर्मी की गवाही नहीं देती और जो गुनाह पर अल्लाह का नाम देते है उनके पास कोई सबूत नहीं होता और वही गुमराही पर है।

قُلْ أَمَرَ رَبِّي بِالْقِسْطِ وَأَقِيمُوا وُجُوهَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُودُونَ {29}

तुम कह दो कि मेरे परवरदिगार ने तो इन्साफ का हुक्म दिया है और हर नमाज़ के वक्त अपने अपने मुँह सीधे कर लिया करो और इसके लिए निरी खरी इबादत करके उससे दुआ मांगो जिस तरह उसने तुम्हें शुरू शुरू पैदा किया था उसी तरह फिर ज़िन्दा किये जाओगे(२९)

व्याख्याः- रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद ने अल्लाह की सच्चाई को लोगों के सामने बयान किया और सच्चाई यह है कि अल्लाह के हर नियमों की तरफ अपना रुख सीधा रखे और अल्लाह के नियमों को जो सिर्फ शान्ति और परहेजगारी के तरफ जाते है उन्हें सख्ती के साथ अपनाए। अल्लाह ने मानव को जिस तरह से बनाया यानी जिस तरह से उसकी परवरिश की उसी तरह उसे दुबारा परवरिश मिलेगी।

فَرِيقًا هَدَىٰ وَفَرِيقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلَالَةُ إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيَاطِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ اللَّهِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ {30}

उसी ने एक फरीक़ की हिदायत की और एक सम्प्रदाय पर गुमराही सवार हो गई उन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर शैतानों को अपना सरपरस्त बना लिया और बावजूद उसके गुमराह करते है कि वह राह रास्ते पर है (३०)

व्याख्याः- समाज में कुछ लोग ऐसे है जो अल्लाह के नियमों की सच्चाई को महसूस करते है और कुछ लोग ऐसे है जो गलत राह चलते है। अल्लाह की शान्ति और मोहब्बत वाले नियमों को छोड़कर नफरत और घमंड वाले शैतानी नियमों को अपनाते है और उन्हें ही सच्चा समझने लगते है।

يَا بَنِي آدَمَ خُذُوا زِينَتَكُمْ عِندَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَكُلُوا وَاشْرَبُوا وَلَا تُسْرِفُوا إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِينَ {31}

ऐ औलाद आदम हर नमाज़ के वक्त बन सवर के निखर जाया करो और खाओ और पियो और फिजूल खर्ची मत करा अल्लाह फिजूल खर्च करने वालों को दोस्त नहीं रखता (३१)

व्याख्याः- आदम की औलाद यानी मानव अल्लाह के नियमों के लिवाज को अपना ले और जमीन में प्रकृति यानी अल्लाह ने जो-जो चीजें रखी है उसे खाकर उसका मजा ले और याद रखें अपनी खुदगर्जी के कारण उसके दायरे से बाहर न जाए। दायरे से बाहर जाने वालों को अल्लाह पसंद नहीं करता।

पैगामः- प्रकृति को अपनी अय्याशी के लिए इस्तेमाल न करें।

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ الَّتِي أَخْرَجَ لِعِبَادِهِ وَالطَّيِّبَاتِ مِنَ الرِّزْقِ قُلْ هِيَ لِلَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ {32}

पूछो तो कि जो ज़ीनत और खाने की साफ सुथरी चीज़ें अल्लाह ने अपने बन्दो के वास्ते पैदा की है किसने हराम कर दी तुम खुद कह दो कि सब पाकीज़ा चीजे क़यामत के दिन उन लोगों के लिए खास है जो दुनिया की ज़िन्दगी में ईमान लाते थे हम यूँ अपनी आयतें समझदार लोगों के वास्ते तफसीलदार बयान करते है (३२)

व्याख्याः- रसुल ये बात कहते है कि अल्लाह के नियम यानी मानवता, मोहब्बत, नेकी, परहेजगारी और अमनोशान्ति जो प्रकृति ने सिर्फ अपने मानवों के लिए रखी और जो खाने की चीजे मानव की सेहत के लिए अच्छी हो उसे कोई भी खराब नहीं कर सकता। सच्चाई तो यह है कि प्रकृति की नेमत जब तक मानव सही तरीके से इस्तेमाल करते है अपनी जिन्दगी में और अल्लाह की मर्जी से ज्ञानी लोग फायदेमंद चीजों का फायदा सबो को ब्यान करते है।

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَأَن تُشْرِكُوا بِاللَّهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهِ سُلْطَانًا وَأَن تَقُولُوا عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ {33}

तुम साफ कह दो कि हमारे परवरदिगार ने तो तमाम बदकारियों को ख़्वाह ज़ाहिरी हो या बातिनी और गुनाह और नाहक़ ज़्यादती करने को हराम किया है और इस बात को कि तुम किसी को अल्लाह का शरीक बनाओ जिनकी उनसे कोई दलील न ही नाज़िल फरमाई और ये भी कि बे समझे बूझे खुदा पर बोहतान बाँधों (३३)

व्याख्याः- रसुल ये भी कहते है कि अल्लाह यानी प्रकृति ने हराम (वर्जित) किया मानव की बेशर्मी (गुनाह) को यानी गुनाह

को और जो गुनाह जाहिर है वो भी और जो सामने नहीं वो तथा हर तरह के गुनाहों को और किसी के ऊपर किसी किस्म का भी जुल्म हराम है और ऐसी बात अल्लाह के साथ न जोड़ो जिसका कोई प्रमाण न हो।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ {34}

और हर सम्प्रदाय का एक ख़ास वक्त है फिर जब उनका वक्त आ पहुंचता है तो न एक घड़ी पीछे रह सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं (३४)

व्याख्याः- अल्लाह ने मानव को जो वैज्ञानिक अविष्कार दिया उसके द्वारा ही समय के साथ्-साथ हर सोच जो कुसंस्कार और अयौगतिक होती है वो बातिल हो जाती है और ये न समय से पहले होती है और न समय के बाद, प्रकृति ही इसका समय निर्धारित करती है।।

पैगामः- हजारों साल पहले मानव जंगली जिन्दगी जीते थे और आज मानव चाँद पर पहुँच गया है। वक्त से पहले कोई भी काम मुमकिन नहीं। मानव हजारों साल पहले चाँद तक क्यों न जा पाया, जो आज पहुँच गया है, ये एक उदाहरण है।

يَا بَنِي آدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِنْكُمْ يَقُصُّونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِي فَمَنِ اتَّقَى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {35}

ऐ औलादे आदम जब तुम में क पैग़म्बर तुम्हारे पास आए और तुमसे हमारे एहकाम बयान करे तो जो शख़्स परहेज़गारी और सभ्य काम करेगा तो ऐसे लोगों पर न तो कोई ख़ौफ़ होगा और न वह आर्ज़दा ख़ातिर होंगे (३५)

व्याख्याः- सारे मानव के दरमियान ऐसे लोग आये जिन्होंने अल्लाह की मर्जी से अल्लाह के प्रकृति सत्य के कुछ-कुछ हिस्सों का राज ब्यान किया और आगे भी करते रहेंगे, जो मानव इस सच्चाई को सबूत के साथ इस्तेमाल करेगा और अपने आपको सुधार लेगा उसे कोई तकलीफ नहीं होगी और सवालों की बौछार से परेशान भी नहीं होगा।

पैगामः- अल्लाह के राज और सच्चाई दुनिया के कुछ खास लोगों को ही हासिल होती है। कोई उन्हें वैज्ञानिक और कोई उन्हें रसुल कहते है।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {36}

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे सरताबी कर बैठे वह लोग जहन्नुमी हैं कि वह उसमें हमेशा रहेंगे (३६)

व्याख्याः- और जो लोग प्रकृति के इस सत्य पर एहतराज करते है तथा इनका गलत इस्तेमाल करते है और मगरुर होकर सच्चाईयों को कबूल नहीं करते वो हमेशा अशान्ति के नर्क में रहते है।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ أُولَئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيبُهُمْ مِنَ الْكِتَابِ حَتَّى إِذَا جَاءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا وَشَهِدُوا عَلَى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا كَافِرِينَ {37}

तो जो शख़्स अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा फिर तो वह लोग है जिन्हें उनकी का लिखा हिस्सा वग़ैरह मिलता रहेगा यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए उनके पास आकर उनकी रूह कब्ज़ करेंगे तो पूछेगें कि जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारा करते थे अब वह जवाब देगें कि वह सब तो हमें छोड़ कर चल चंपत हुए और अपने खिलाफ आप गवाही देगें कि वह बेशक काफ़िर थे (३७)

व्याख्याः- और वो मानव सबसे बड़ा जालिम है जो प्रकृति या अल्लाह के सच्चे नियमों पर झुठ बांधते है, अपने पाप मकसद पर कामयाबी पाने के लिए, उनकी किस्मत में जो होना होता है वही होता है। यहां तक कि प्रकृति का कोई भी प्रमाण उन लोगों को सच्चाई कबूल नहीं करवा सकता और ये लोग झुठ और कुसंस्कार का लिबास अपने हाथों से अपने आपको ओढ़ा देते है।

قَالَ ادْخُلُوا فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَعَنَتْ أُخْتَهَا حَتَّى إِذَا ادَّارَكُوا فِيهَا جَمِيعًا قَالَتْ أُخْرَاهُمْ لِأُولَاهُمْ رَبَّنَا هَؤُلَاءِ أَضَلُّونَا فَآتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِنَ النَّارِ قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَلَكِنْ لَا تَعْلَمُونَ {38}

फरमाएगा कि जो लोग जिन व इन्स के तुम से पहले बसे हैं उन्हीं में मिलजुल कर तुम भी जहन्नुम वासिल हो जाओ एहले जहन्नुम का ये हाल होगा कि जब उसमें एक सम्प्रदाय दाख़िल होगा तो अपने साथी दूसरे सम्प्रदाय पर लानत करेगा यहाँ तक कि जब सब के सब पहुंच जाएगें तो उनमें की पिछली जमात अपने से पहली जमाअत के वास्ते बददुआ करेगी कि परवरदिगार उन्हीं लोगों ने हमें गुमराह किया था तो उन पर जहन्नुम का दोगुना अज़ाब फरमा अल्लाह फरमाएगा कि हर एक के वास्ते दो गुना अज़ाब है लेकिन तुफ़ है तुम जानते नहीं (३८)

व्याख्याः- इतिहास साक्षी है कि समय के साथ-साथ हर बुराई का अंत होता है और हर पापी को अपना कर्मफल भुगतना पड़ता है।

وَقَالَتْ أُولَاهُمْ لِأُخْرَاهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِن فَضْلٍ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْسِبُونَ {39}

और उनमें से पहली जमाअत पिछली जमाअत की तरफ मुख़ातिब होकर कहेगी कि अब तो तुमको हमपर कोई फज़ीलत न रही पस तुम भी अपने करतूत की बदौलत अज़ाब चखा (३९)

व्याख्याः- गुनाह की प्रतियोगिता सिर्फ पापी ही करते है।

إِنَّ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَاسْتَكْبَرُوا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَاءِ وَلَا يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ حَتَّى يَلِجَ الْجَمَلُ فِي سَمِّ الْخِيَاطِ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِينَ {40}

बेशक जिन लोगों ने हमारे आयात को झुठलाया और उनसे सरताबी की न उनके लिए आसमान के दरवाज़े खोले जाएंगें और वह बेहश्त ही में दाखिल होने पाएगें यहाँ तक कि ऊँट सूई के नाके में होकर निकल जाए उसी तरह उनका बेहश्त में दाखिल होना मुहाल है और हम मुजरिमों को ऐसी ही सज़ा दिया करते है (४०)

व्याख्याः- जो प्राकृतिक सत्य को झुठलाये (यानी दुनिया के वर्तमान हाल को) और अपने पुराने घटिया दकिया नौसी ख्यालात को अपनाकर मगरुरियत दिखलाये यानी अपने ख्यालात को चाहे वो जितने भी गलत क्यों न हो उसे सच्चा साबित करने का प्रयास करे, ऐसे लोगों के लिये सच्चाई और अच्छाई का कोई भी दरवाजा खुला नहीं रहता और जो सच्चाई को कबूल नहीं कर सकते वो कभी भी सुकुन की जन्नत हासिल नहीं कर सकते। यहां तक कि सुई के नाके के बराबर सुराख भी उनके लिये बराबर नहीं रहता यही उनकी सजा है।

لَهُم مِّن جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَمِن فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ وَكَذَٰلِكَ نَجْزِي الظَّالِمِينَ {41}

उनके लिए जहन्नुम का बिछौना होगा और उनके ऊपर से ओढ़ना भी और हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते है (४१)

व्याख्याः- ऐसे लोगों को अशान्ति की आग चारों तरफ से ढाँक देती है और अल्लाह ऐसे लोगों को इसी तरह सजा देते है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {42}

जिन लोगों ने ईमान कुबुल किया और अच्छे अच्छे काम किये और हम तो किसी शख़्स को उसकी ताकत से ज़्यादा तकलीफ देते ही नहीं यही लोग जन्नती है कि वह हमेशा जन्नत ही में रहा करेगें (४२)

व्याख्याः- और जिन लोगों ने सच्चाई को कबूल किया और अल्लाह के नियमों को पहचाना और अच्छे कामों में अपने आपको समर्पन किया अल्लाह कभी भी मानव को उसकी क्षमता के बाहर कोई भी काम करने के लिये नहीं कहते और ऐसे लोग हमेशा जन्नत में रहते है।

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِم مِّنْ غِلٍّ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَٰذَا وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَا أَنْ هَدَانَا اللَّهُ لَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ وَنُودُوا أَن تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ {43}

और उन लोगों के दिल में जो कुछ होगा वह सब हम निकाल देगें उनके महलों के नीचे नहरें जारी होगी और कहते होगें शुक्र है उस ख़ुदा का जिसने हमें इस तक पहुंचाया और अगर ख़ुदा हमें यहाँ न पहुंचाता तो हम किसी तरह यहाँ न पहुंच सकते बेशक हमारे परवरदिगार के पैग़म्बर दीने हक़ लेकर आये थे और उन लोगों से पुकार कर कह दिया जाएगा कि वह बेहिश्त है जिसके तुम अपनी कारगुज़ारियों की जज़ा में वारिस व मालिक बनाए गये हो (४३)

व्याख्याः- पवित्र लोगों के हृदय में ईर्ष्या, घृणा, अहंकार और जरूरत से ज्यादा उत्चाकांक्षा नहीं होती, ऐसे लोगों के दिलों में मोहब्बत और मानवता की ठंडी छाव मौजूद रहती है और जरा सा भी छोटापन नहीं रहता। इनका किरदार नहर के ठंडे पानी की तरह निर्मल होता है और प्रकृति की कृपा से ही मानव को ऐसी डंठक प्राप्त होती है। अल्लाह की मर्जी से ही मानव को नेक हिदायत प्राप्त होती है। हर सच्चाई बताने वाले चाहे वो रसुल हो या वैज्ञानिक उनके ख्यालात को कबूल करना ही शान्ति की जन्नत हासिल करने का रास्ता है।

وَنَادَىٰ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابَ النَّارِ أَن قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدتُّم مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوا نَعَمْ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ أَن لَّعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ {44}

और जन्नती लोग जहन्नुमी वालों से पुकार कर कहेगें हमने तो बेशक जो हमारे परवरदिगार ने हमसे वायदा किया था ठीक ठीक पा लिया तो क्या तुमने भी जो तुमसे तम्हारे परवरदिगार ने वायदा किया था ठीक पाया अहले जहन्नुम कहेगें हा एक मुनादी उनके दरमियान निदा करेगा कि ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है (४४)

व्याख्याः- नेक काम करने वाले जिनके दिलों में प्रेम, मानवता, शिक्षा, पवित्रता, अहिंसा, भाईचारा, ईमानदारी और शांति की भावना हो वो गुनहगार और नफरत करने वालों को बुला कर कहेंगे की प्रकृति के साथ उन लोगों के जो तालुकात है उन्हें उसका ज्ञान पुरी तरह से मिल गया और ठीक-ठीक तरीके से ये कहा जाएगा कि मौजूदा हक जो लोगों के सामना है वही अच्छे-बुरे का फैसला करेगा।

الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا وَهُم بِالْآخِرَةِ كَافِرُونَ {45}

जो अल्लाह की राह से लोगों को रोकते थे और उसमें कजी करना चाहते थे और वह रोजे आखेरत से इन्कार करते थे (४५)

व्याख्याः- जो मानव सच्चाई को गुमराह करने की कोशिश करेगा और अपने मतलब का रास्ता निकालने की कोशिश करेगा वो आखिर कार सच्चाई, प्रकृति और अल्लाह को इनकार करने वालों में से होगा यानी काफिर होगा।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَعْرِفُونَ كُلًّا بِسِيمَاهُمْ وَنَادَوْا أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَن سَلَامٌ عَلَيْكُمْ لَمْ يَدْخُلُوهَا وَهُمْ يَطْمَعُونَ {46}

और बेहश्त व दोजख के दरमियान एक हद फासिल है और कुछ लोग आराफ पर होगें जो हर शख्स को उनकी पेशानी से पहचान लेगें और वह जन्नत वालों को आवाज देगें कि तुम पर सलाम हो या लोग अभी दाखिले जन्नत नहीं हुए है मगर वह तमन्ना जरूर रखते है (४६)

व्याख्याः- अच्छाई और बुराई, सच्चाई और झुठ, पाप और पुण्य इन सबों के बीच एक पर्दा यानी ''उनके बीच का दायरा'', अल्लाह और उनकी प्रकृति हर मानव को उसके चरित्र से इनके कर्मफल को पहचान लेंगे और पवित्र लोगों को अनंत शांति का आर्शीवाद मिलेगा और पापियों को अशांति का अभिश्राप।

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَاءَ أَصْحَابِ النَّارِ قَالُوا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ {47}

और जब उनकी निगाहें पलटकर जहन्नुमी लोगों की तरफ जा पड़ेगी ऐ हमारे परवरदिगार हमें जालिम लोगों का साथी न बनाना (४७)

व्याख्याः- जब अच्छे लोग बुरे लोगों की तरफ नजर फेरेंगे और उनकी तकलीफों को देखेंगे तो कभी भी अपने आपको बुरे लोगों के गिरोह में शामिल न करेंगे।

وَنَادَى أَصْحَابُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَعْرِفُونَهُم بِسِيمَاهُمْ قَالُوا مَا أَغْنَى عَنكُمْ جَمْعُكُمْ وَمَا كُنتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ {48}

और आराफ वाले कुछ लोगों को जिन्हें उनका चेहरा देखकर पहचान लेगें आवाज देगें और और कहेगें अब न तो तुम्हारा जत्था ही तुम्हारे काम आया और न तुम्हारी शेखी बाजी ही (४८)

व्याख्याः- और बुरे लोगों को उनके लक्षण से पहचान लिया जाएगा और न ही उनकी दौलत और उनका अहंकार किसी को काम आयेगा।

أَهَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللَّهُ بِرَحْمَةٍ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ {49}

जो तुम दुनिया में किया करते थे यही लोग वह है जिनकी निस्बत तुम कसमें खाया करते थे कि उन पर अल्लाह रहमत न करेगा बेहश्त में चलो जाओ न तुम पर कोई खौफ है और न तुम किसी तरह आर्जुदा खातिर परेशानी होगी (४९)

व्याख्याः- हक और सबूत के साथ कह जा सकता है कि मानवी समाज में उनके लिए कूदरत कोई रहम नहीं छोड़ेगी और वो अशान्ति के आग में जलते रहेंगे और उनकी जिन्दगी नर्क बन जाएगी। कूदरत का यही फैसला है उनके लिये और कोई भी उनकी तकलीफों को अनुभव नहीं करेगा या हमदर्दी नहीं जतायेगा।

وَنَادَى أَصْحَابُ النَّارِ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيضُوا عَلَيْنَا مِنَ الْمَاءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ قَالُوا إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكَافِرِينَ {50}

और दोजख वाले अहले बेहिश्त को आवाज देगें कि हम पर थोड़ा सा पानी ही उंडेल दो या जा अल्लाह ने तुम्हें दी है उसमें से कुछ कहेंगें कि अल्लाह ने तो जन्नत का खाना पानी काफिरों पर कतई हराम कर दिया है (५०)

व्याख्याः- तकलीफों से भरी हुई जिन्दगी से बेजार होकर चीख-चीखकर शान्ति की भीख और अपनी जिन्दगी में पानी की तरह ठंडी जिन्दगी मांगेंगे तथा वो कूदरत का लुत्फ उठाने में बेचैन हो जायेंगे। नेक लोग कहेंगे कूदरत यानी अल्लाह ने पापियों के लिए कोई भी आनंद नहीं रखा।

الَّذِينَ اتَّخَذُوا دِينَهُمْ لَهْوًا وَلَعِبًا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فَالْيَوْمَ نَنسَاهُمْ كَمَا نَسُوا لِقَاءَ يَوْمِهِمْ هَٰذَا وَمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا يَجْحَدُونَ {51}

जिन लोगों ने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया था और दुनिया की ज़िन्दगी ने उनको फरेब दिया था तो हम भी आज उन्हें भूल जाएग जिस तरह यह लोग आज की हुज़ूरी को भूले बैठे थे और हमारी आयतों से इन्कार करते थें (५१)

व्याख्याः- जिन लोगों ने अपनी जिन्दगी को और अपने अमाल को खेल-तमाशा बनाया था और गुनाह के जरिए ऐशो-आराम की जिन्दगी हासिल करने की कोशिश की और प्रकृति के सारे नियमों को ठुकराया ठीक उसी तरह कूदरत भी उन्हें ठुकरायेगी, जब वो अपनी जिन्दगी से बेजार हो जायेंगे और दया की भीख मांगेंगे।

وَلَقَدْ جِئْنَاهُم بِكِتَابٍ فَصَّلْنَاهُ عَلَىٰ عِلْمٍ هُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ {52}

हालांकि हमने उनके पास जिसे हर तरह समझ बूझ के तफसीलदार बयान कर दिया है ईमानदार लोगों के लिए हिदायत और रहमत है (५२)

व्याख्याः- गुनहगार लोगों के पास ज्ञान की रोशनी और सच्चाई आने के बाद भी इन लोगों ने उसे ठुकराया लेकिन नेक और सच्चे लोगों ने उसे कूदरत की रहमत समझकर अपनाया।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا تَأْوِيلَهُ يَوْمَ يَأْتِي تَأْوِيلُهُ يَقُولُ الَّذِينَ نَسُوهُ مِن قَبْلُ قَدْ جَاءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ فَهَل لَّنَا مِن شُفَعَاءَ فَيَشْفَعُوا لَنَا أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ قَدْ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ {53}

क्या ये लोग बस सिर्फ अन्जाम के मुन्तज़िर है जिस दिन उसके अन्जाम का वक्त आ जाएगा तो जो लोग उसके पहले भूले बैठे थे बोल उठेगें कि बेशक हमारे परवरदिगार के सब रसूल हक् लेकर आये थे तो क्या उस वक्त हमारी भी सिफरिश करने वाले हैं जो हमारी सिफारिश करें या हम फिर लौटाएं जाएं तो जो जो काम हम करते थे उसको छोड़कर दूसरें काम करें बेशक उन लोगों ने अपना सख़्त घाटा किया और जो इफ़तेरा परदाज़िया किया करते थे वह सब गायब हो गयीं (५३)

व्याख्याः- जो लोग इंतजार करते है सच्चाई और ज्ञान के नतीजे का और इनकार करते है ये सोचकर कि इसमें कुछ फायदा नहीं है और सच्चाई बताने वालों को झुठा साबित करने के लिये सिफारिश तलब करते है, ऐसे लोग ही अपना नुकसान करते है और कूदरत के खिलाफ काम करते है।

पैगामः- कूदरत ने मानव को दिमाग दिया, अगर वो साफ और सीधी सच्चाई को नहीं पहचानते तथा हर बार सबूत की रोशनी में तौलने की कोशिश करते है तो कूदरत या अल्लाह की कोई जिम्मेदारी नहीं कि वो सबूत पेश करें। सबूत मानव को खुद तलाश कर लेना चाहिये। हर मानव को चाहिये कि कूदरत के असुलों के अनुसार काम करता जाये नतीजा खुद-ब-खुद सामने आ जायेगा।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ {54}

बेशक तुम्हारा परवरदिगार अल्लाह ही है जिसके (सिर्फ) ६ दिनों में आसमान और ज़मीन को पैदा किया फिर अर्श के बनाने पर आमादा हुआ वही रात को दिन का लिबास पहनाता है तो (गोया) रात दिन को पीछे पीछे तेज़ी से ढूंढती फिरती है और उसी ने आफ़ताब और माहताब और सितारों को पैदा किया कि ये सब के सब उसी के हुक्म के ताबेदार है देखो हुकूमत और पैदा करना बस ख़ास उसी के लिए है वह अल्लाह जो सारे जहाँन का परवरदिगार बरकत वाला है (५४)

व्याख्याः- दिन और रात की श्रृष्टि होती है पृथ्वी के अपने आपपर घूमने की वजह से। दुनियां की जिस तरफ सूरज की रोशनी पड़ती है, वहां दिन होता है तथा उसके पीछे की तरफ रात। दुनियां की पैदाइश से पहले दिन-रात का अस्तित्व नहीं था, इस आयत में छः दिन का मतलब है सूरज से निकली हुई छः किस्त की गैसें, ये गैसें जब ठंडी होकर सख्त हुई तब दुनियां की जमीन बनी और बिग बैंग के नियमों के अनुसार दुनियां धीरे-धीरे फैलती गई। कुरान-शरीफ की इस आयत की सच्चाई को वैज्ञानिकों ने प्रमाण कर दिया। प्रकृति ने फिर पृथ्वी को रात की तरह ठंडक दी यानी ओजन लेयर के द्वारा सूरज से निकली हुई अल्ट्रा वायलेट रेय से सुरक्षा दी और पृथ्वी अपने औरबीट पर चलते हुए और एक विशेष गति से घुमते हुए सूरज का प्रदक्षीण करती है और दिन-रात की श्रृष्टि होती है। वही गति gravitational pull की श्रृष्टि करते हुए

दुनियां के अन्दर के हर चीज को ठहराव दिया और प्रकृति ने इस तरह चांद, सूरज, नक्षत्र, इत्यादि सबको नियंत्रित किया।।

ادْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ {55}

अपने परवरदिगार से गिड़गिड़ाकर और चुपके – चुपके दुआ करो, वह हद से तजाविज़ करने वालों को हरगिज़ दोस्त नही रखता (५५)

व्याख्याः-मानव को चाहिये कि इस प्रकृति को न बिगाड़ कर चुपचाप अपने अमाल के द्वारा इसकी सेवा करे और पाप से प्राकृतिक नियमों की सच्चाई को कलोशित (नापाक) करना अल्लाह को पसंद नहीं।

وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا إِنَّ رَحْمَتَ اللَّهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ {56}

और ज़मीन में असलाह के बाद फसाद न करते फिरो और के ख़ौफ से और की आस लगा के अल्लाह से दुआ मांगो सभ्यी करने वालों से अल्लाह की रहमत यक़ीनन क़रीब ह (५६)

व्याख्याः- अल्लाह, प्रकृति और सच्चाई इनके असुल एक है और इन असुलों को गुमराह करने के लिए पापी फसाद की श्रृष्टि करते है कुछ पाने के मकसद से। मगर पवित्र मानव, मानव कल्याण के लिए आपस में फसाद नहीं करते। प्राकृतिक आदर्शों की सच्चाई को समझकर इसे अपने जीवन में पुरी तरह लागू करके उसके साथ जीना ही मानव का धर्म है।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَاحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهِ حَتَّى إِذَا أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنَاهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنزَلْنَا بِهِ الْمَاءَ فَأَخْرَجْنَا بِهِ مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ كَذَٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتَىٰ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ {57}

और वही तो अल्लाह है जो अपनी रहमत से पहले खुशखबरी देने वाली हवाओ को भेजता है यहाँ तक कि जब हवाएं बोझल बादलों के ले उड़े तो हम उनको किसी शहर की तरफ मर चुका था हँका दिया फिर हमने उससे पानी बरसाया, फिर हमने उससे हर तरह के फल ज़मीन से निकाले हम यूँ ही मुर्दों को निकालेंगें ताकि तुम लोग नसीहत व इबरत हासिल करो (५७)

व्याख्याः- कूदरत की रहमत है आग, पानी, हवा और मिट्टी और वही हवा जो कूदरत के असुलों के अनुसार बादल को एक जगह से दूसरी जगह ले जाकर बरसाते है। और वही बारिश जमीन में फसल पैदा करने में मदद करती है और वही कूदरत है जो हर वस्तु का विनश के बाद उसे दूसरी रूप देती है यानी एटम से बनी हुई कोई भी शक्ल जब विनाश और चुर-चुर होकर कूदरत में समा जाती है और फिर दुबारा वही कूदरत उसे दूसरा रूप देती है। और इस तरह प्राकृतिक क्रिया-प्रक्रिया के द्वारा हर मुर्दा दुबारा जिन्दा होता है, ये मानव के लिये एक सबक है।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهُ بِإِذْنِ رَبِّهِ وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا كَذَٰلِكَ نُصَرِّفُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَشْكُرُونَ {58}

और उम्दा ज़मीन उसके परवरदिगार के हुक्म से उस सब्ज़ा है और जो ज़मीन बड़ी है उसकी पैदावार ख़राब ही होती है हम यू अपनी आयतों को उलेटफेर कर शुक्रगुजार लोगों के वास्ते बयान करते है (५८)

व्याख्याः- दुनिया में कुछ जमीने है जो बहुत ज्यादा पैदावार देती है (ठीक उसी तरह दुनिया के हर पहलू में कुछ अच्छा और कुछ बुरा पहलू होता है) और कुछ जमीने ऐसी है जिन पर मेहनत करके अनाज उगाया जाता है। कूदरत यानी अल्लाह ने ये एक उदाहरण रखा मानवी समाज के लिये।

पैगामः- प्रकृति में मौजूद हर पहलू में अच्छा और बुरा पहलू मौजूद है। इसी तरह मानवों में कोई बहुत ज्ञानी और कोई अज्ञानी होता है किसी को कूदरत दौलतमंद बनाती है तथा किसी को गरीब किसी को खूबसुरत तथा किसी को बदसुरत और ये सारे मानव के कूदरती हाल है। इसमें बहस करना, ईर्ष्या करना या कूदरत या किसी और पर इलजाम लगाना बिल्कुल गुनाह है। जो मानव अपनी हालत पर खुश नहीं रह सकता उसे कूदरती तौर पर जहनी तकलीफ़ मिलती है।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَقَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ {59}

बेशक हमने नूह को उनकी क़ौम के पास भेजा तो उन्होन कहाकि ऐ मेरी क़ौम अल्लाह की ही इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नही है और मै तुम्हारी निस्बत बड़े ख़ौफनाक दिन के अज़ाब से डरता हूँ (५९)

व्याख्याः- नुः नाम का पैगम्बर जो लोगों को सच्चाई बताता था, उन्होंने अपने साथ रहने वालों से कहा था कि कूदरत की हर चीज की खिदमत ही अल्लाह की इबादत है और यही अल्लाह की इबादत का तरीका। अगर ये काम सही तरीके से न किया जाये तो बरबादी का डर पैगम्बर को भी सताया था। पैगम्बरों को अपने साथ रहने वाले लोगों से मोहब्बत होती थी।

قَالَ الْمَلأُ مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي ضَلاَلٍ مُّبِينٍ {60}

तो उनकी क़ौम के चन्द सरदारों ने कहा हम तो यक़ीनन देखते है कि तुम खुल्लम खुल्ला गुमराही में हो (६०)

व्याख्याः- मगर उसके साथ रहने वाले या उस जगह के रहने वाले लोगों में कुछ घमंडी लोग भी थे जो अपने आपको समाज का हाकीम समझते थे उन्हीं लोगों ने नुः को कहा कि वो गलत रास्ते पर है।

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي ضَلاَلَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ {61}

कहा कि ऐ मेरी क़ौम मुझ में गुमराही तो कुछ नहीं बल्कि मै तो परवरदिगारे आलम की तरफ से रसूल हूँ (६१)

व्याख्याः- नुः ने अपनी कोम को प्राकृतिक सत्य समझाया और अपनी पहचान दी।

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالاَتِ رَبِّي وَأَنصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللّهِ مَا لاَ تَعْلَمُونَ {62}

तुम तक अपने परवरदिगार के पैग़ामात पहुचाएं देता हूँ और तुम्हारे लिए तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करता हूँ और अल्लाह की तरफ से जो बातें मै जानता हूँ तुम नहीं जानते (६२)

व्याख्याः- ऐश्वर्रिक सत्य की पहचान जो प्रकृति के हर अणु-परमाणु में उपस्थित है वो नुः ने अपने लोगों के सामने प्रमाणित किया।

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ {63}

क्या तुम्हें उस बात पर ताअज्जुब है कि तुम्हारे पास तुम्ही में से एक मर्द के ज़रिए से तुम्हारे परवरदिगार का ज़िक्र आया है ताकि वह तुम्हें डराए और ताकि तुम परहेज़गार बनों और ताकि तुम पर रहम किया जाए (६३)

व्याख्याः- सच्चाई का पहला चरण लोगों को अचंबे में डाल देता है और सच्चाई समझने का मतलब क़ूदरत की मेहरबानी हासिल करना है।

فَكَذَّبُوهُ فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْماً عَمِينَ {64}

इस पर भी लोगों ने उनको झुठला दिया तब हमने उनको और जो लोग उनके साथ कश्ती में थे बचा लिया और बाक़ी जितने लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था सबको डुबो मारा ये सब के सब यक़ीनन अन्धे लोग थे (६४)

व्याख्याः- फिर भी शुरू-शुरू में हक बताने वालों को समाज झुठा कहती है, नतीजतन सच्चाई बताने वालों की कश्ती यानी गिरोह में अल्लाह की तरफ से मुक्ति है। और जो सच्चाई को झुठा समझते है तथा उसकी सच्चाई को महसूस नहीं करते वो अंधे है।

وَإِلَى عَادٍ أَخَاهُمْ هُوداً قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَـهٍ غَيْرُهُ أَفَلاَ تَتَّقُونَ {65}

और क़ौम आद की तरफ उनके भाई हूद को तो उन्होनें लोगों से कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह ही की इबादत करो उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं तो क्या तुम डरते नहीं हो (६५)

व्याख्याः- और आद नाम की सम्प्रदाय को हुद नाम की पैगम्बर ने सच्चाई बताई और कहा था कि क़ूदरत या अल्लाह को छोड़कर यानी अल्लाह के असुलों को छोड़कर और कोई असुल नहीं। उस सम्प्रदाय के लोगों ने फिर भी सच्चाई को इनकार किया।

قَالَ الْمَلأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرَاكَ فِي سَفَاهَةٍ وَإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكَاذِبِينَ {66}

उनकी क़ौम के चन्द सरदार जो काफिर थे कहने लगे हम तो बेशक तुमको हिमाक़त में देखते है और हम यक़ीनी तुम को झूठा समझते है (६६)

व्याख्याः- हर सम्प्रदाय में सच्चाई के विरुद्ध भड़काने वाले जो सरदार होते है वो लोगों को भड़काते हुए सच्चाई बताने वालों को झुठा साबित करने की हर मुमकिन कोशिश करते है।

قَالَ يَا قَوْمِ لَيْسَ بِي سَفَاهَةٌ وَلَكِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ {67}

हूद ने कहा ऐ मेरी क़ौम मुझमें में तो हिमाक़त की कोई बात नहीं बल्कि मै तो परवरदिगार आलम का रसूल हूँ (६७)

व्याख्याः- पैगम्बर हुद ने अपनी सम्प्रदाय को प्रकृति का वैज्ञानिक तथ्य समझाया।

أُبَلِّغُكُمْ رِسَالاَتِ رَبِّي وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِينٌ {68}

मै तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार के पैग़ामात पहुँचाए देता हूँ और मै तुम्हारा सच्चा ख़ैरख़्वाह हूँ (६८)

व्याख्याः- सच्चाई और वैज्ञानिक बातें लोगों तक पहुँचाना मानव का कर्तव्य है।

أَوَعَجِبْتُمْ أَن جَاءَكُمْ ذِكْرٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَلَى رَجُلٍ مِّنكُمْ لِيُنذِرَكُمْ وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاءَ مِن بَعْدِ قَوْمِ نُوحٍ وَزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَسْطَةً فَاذْكُرُوا آلَاءَ اللَّهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ {69}

क्या तुम्हें इस पर ताअज्जुब है कि तुम्हारे परवरदिगार का हुक्म तुम्हारे पास तुम्ही में एक मर्द के ज़रिए से आया कि तुम्हें डराए और याद करो जब उसने तुमको क़ौम नूह के बाद ख़लीफा बनाया और तुम्हारी ख़िलाफ़त में भी बहुत ज़्यादती कर दी तो अल्लाह की नेअमतों को याद करो ताकि तुम दिली मुरादे पाओ (६९)

व्याख्याः- लोगों को आश्चर्य होता है कि विशेष मानव को ही सच्चाई क्यों नजर आती है, मगर ये तो प्रकृति का नियम है कि उसने हर पहलू में अच्छा-बुरा रखा है। हर मानव को अलग-अलग समझ दी है और ठीक इसी नियम के अनुसार किसी विशेष व्यक्ति से ही सच्चाई साबित होती है। जैसे कि किसी खास जगह के लोग किसी खास हुनर के हकदार होते है अगर ये लोग सोचे तो उन्हें अल्लाह की प्रकृति की सच्चाई नजर आ जाएगी और उन्हें मुक्ति हासिल होगी।

पैगामः- जिस्मानी बनावट बुद्धि और रहन-सहन का तौर-तरीका दुनिया में हर किसी का अलग-अलग होता है और ये आखिर क्यों? ये इसलिए जिस तरह प्रकृति अपने नियमों के द्वारा लोगों को रंग-बिरंगी जीवन प्रदान किया और कुछ विशेष लोगों को अपनी विशेष सच्चाई की समझ दी।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ {70}

तो वह लोग कहने लगे क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि सिर्फ ख़ुदा की तो इबादत करें और जिनको हमारे बाप दादा पूजते चले आए छोड़ बैठें पस अगर तुम सच्चे हो तो जिससे तुम हमको डराते हो हमारे पास लाओ (७०)

व्याख्याः- जब खुदा की सच्चाई लोगों के सामने आती है तो वो कहते है कि क्या वो उन सब बातों को छोड़ दे जो नसल दर नसल चली आ रही है और वो सच्चाई प्रमाणित करें।

पैगामः- जिस तरह मुर्तियों में जान नहीं होती और न ही उनमें देने और लेने की ताकत होती है, ठीक उसी तरह एक खुदा नाम का वजूद इन सारी चीजों को साबित नहीं कर सकता। मैं (सिद्धार्थ चटर्जी) कहता हूँ कि तमाम कायनात जिस ताकत पर टिकी हुई है यानी एटम के अन्दर की ताकत वही प्रमाणित है। और जिसकी ताकत से प्रकृति की तमाम क्रिया-प्रक्रिया वजूद में आते है।

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُم مِّن رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَغَضَبٌ أَتُجَادِلُونَنِي فِي أَسْمَاءٍ سَمَّيْتُمُوهَا أَنتُمْ وَآبَاؤُكُم مَّا نَزَّلَ اللَّهُ بِهَا مِن سُلْطَانٍ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ {71}

हूद ने जवाब दिया कि तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम पर अज़ाब और ग़ज़ब नाज़िल हो चुका क्या तुम मुझसे चन्द नामों के बारे में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने गढ़ लिए हैं हालाकि अल्लाह ने उनके लिए कोई सनद नहीं नाज़िल की पस तुम इन्तज़ार करो मै भी तुम्हारे साथ मुन्तिज़र हूँ (७१)

व्याख्याः- नेक मानव हमेशा ये समझाने की कोशिश करता है कि बुराई का नतीजा बुरा है और ये प्रकृतिक निर्णय हर गुनहगार के ऊपर लागू होता है लेकिन ऐसी कुछ मन गढ़त और गैर मुनतकी बाते जो नसल दर नसल से चली आ रही है जिसका सबूत प्रकृति में मौजूद नहीं होता उसके लिए हर कोई इंतजार में रहता है।

पैगामः- एटम से हर चीज बनी है और हर एटम में सर्वशक्तिमान का अस्तित्व प्रमाण हो चुका और इस प्रमाणित तथ्य को झुठलाने वाला मूर्ख है और उसने अपने आपको अंधकार में डाल रखा है।

فَأَنجَيْنَاهُ وَالَّذِينَ مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَمَا كَانُوا مُؤْمِنِينَ {72}

आखिर हमने उनको और जो लोग उनके साथ थे उनको अपनी रहमत से नजात दी और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था हमने उनकी जड़ काट दी और वह लोग ईमान लाने वाले थे भी नहीं (७२)

व्याख्याः- कूदरत ने हर कुसंस्कार की जड़ काट दी और जो लोग प्राकृतिक सत्य यानी अल्लाह की सच्चाई को झुठा साबित करने की कोशिश करते है वो नेक मानव नहीं है।

पैगामः- आज दुनिया उस मुकाम पर खड़ी है जहां सारे मजहबी झुठ को सबूत के साथ उखाड़ फेंका और ये मानव का व्यहम है जो हजारों साल पुराने कुसंस्कार और झुठे ख्यालात को अपना कर सच्चाई को ठुकराती है।

وَإِلَى ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةً فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {73}

और समूद की तरफ उनके भाई सालेह को रसूल बनाकर भेजा तो उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह ही की इबादत करो और उसके सिवा कोई तुम्हारा माबूद नहीं है तुम्हारे पास तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वाज़ेए और रौशन

दलील आ चुकी है ये ख़ुदा की भेजी हुयी ऊँटनी तुम्हारे वास्ते एक मौजिज़ा है तो तुम लोग उसको छोड़ दो कि ख़ुदा की ज़मीन में जहाँ चाहे चरती फिरे और उसे कोई तकलीफ़ ना पहुँचाओ वरना तुम दर्दनाक अज़ाब में गिरफ़्तार हो जाओगे (७३)

व्याख्याः- पैगम्बर समुद के भाई सालेह ने भी लोगों को प्राकृतिक सत्य बताया था और अल्लाह की शक्ति हर एटम में मौजूद है ये भी समझाया और इसका प्रमाण भी दिया। अल्लाह के नियम जो हर बुराई में भी बुलंदी से अपनी जगह पर कायम रहते है उसे न बिगाड़ने की सलाह दी थी यानी अल्लाह के सच्चे असुलों का फायदा और आजादी का मशवरा दिया था (अल्लाह के प्राकृतिक सच्चे नियमों के साथ ऊँठ की तुलना की गई है) और जो पापी मानव अल्लाह के नियमों को बिगाड़ने की चेष्टा करते है, इन्हें प्रकृति का अभिश्राप प्राप्त होता है।

وَاذْكُرُوا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاء مِن بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِي الْـــأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا فَاذْكُرُوا آلاء اللّهِ وَلاَ تَعْثَوْا فِي الأَرْضِ مُفْسِدِينَ {74}

और वह वक़्त याद करो जब उसने तुमको क़ौम आद के बाद ख़लीफा बनाया और तुम्हें ज़मीन में इस तरह बसाया कि तुम हमवार व नरम ज़मीन में महल उठाते हो और पहाड़ों को तराश के घर बनाते हो तो अल्लाह की नेअमतों को याद करो और रूए ज़मीन में फसाद न करते फिरो (७४)

व्याख्याः- मानव याद रखे आद नाम के पैगम्बर की बात उनके असुल दुनिया में उनके बाद कायम हुए थे, मानव जमीन में अपना घर बनाता है जो उसे कूदरत के कहर से बचाता है चाहे वो पहाड़ों में हो या जमीन पर। घर बनाने का तरीका भी प्राकृतिक तौर पर मानवों को हासिल हुआ और ये अल्लाह यानी प्रकृति की मेहरबानी है जिसे मानव याद करे और आपस में न झगड़े।

पैगामः- इस आयत को दोहरा मतलब ये है ''नर्म जमीन'' अगर मानव का जमीर है तो हर मानव के अन्दर ये सोच आती है कि उसके पास जो है वो उससे बढ़कर सोचे और हमेशा से मानव के अन्दर ये फितरत भी रही है कि वो ऊँचे पहाड़ों की तरह अपने ख्वाहिसात में अपना ठिकाना तलाशे और ये मानव के जीने का मक्सद भी है। इंसानी दिमाग अगर चाहत और ख्वाहिसात से उब जाता है तो वो योगी हो जाता है। अल्लाह की तलाश या उसकी खोज भी एक चाहत है।

قَالَ الْمَلَـــأُ الَّذِيـــنَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لِلَّذِيـــنَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ آمَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَالِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلَ بِهِ مُؤْمِنُونَ {75}

तो उसकी क़ौम के बड़े बड़े लोगों ने बेचारे ग़रीबों से उनमें से जो ईमान लाए थे कहा क्या तुम्हें मालूम है कि सालेह अपने परवरदिगार के सच्चे रसूल है - उन बेचारों ने जवाब दिया कि जिन बातों का वह पैग़ाम लाए है हमारा तो उस पर ईमान है (७५)

व्याख्याः- पैगम्बर सालेह की सम्प्रदाय में जो पैसे वाले थे उन्होंने सालेह के मानने वाले गरीब लोगों से सालेह की सच्चाई के बारे में पुछा। सालेह ने जो पैगाम लोगों तक पहुँचाया उसकी सच्चाई पर शक किया गया था।

पैगामः- पैसे वाले लोग चाहे वो किसी भी सम्प्रदाय के क्यों न हो समझते है कि अल्लाह की बरकत और रहमत उन पर है मगर ये उनकी भुल है। अल्लाह यानी कूदरत की बरकत उन पर है जिनकी जिन्दगी में शांति बरकरार है। जो शान्ति के लाभ को पहचान लेते है और अपना हर कदम अमनो-शान्ति की तरफ ही उठाते है।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا بِالَّذِيَ آمَنتُمْ بِهِ كَافِرُونَ {76}

तब जिन लोगों को घमन्ड था कहने लगे हम तो जिस पर तुम ईमान लाए हो उसे नहीं मानते (७६)

व्याख्याः- दौलत के अहंकार से चुर मानव ने नेकी, परहजेगारी, मोहब्बत और मानवता की बातों को इनकार किया।

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَا صَالِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ {77}

ग़रज़ उन लोगों ने ऊँटनी के कूचें और पैर काट डाले और अपने परवरदिगार के हुक्म से सरताबी की और कहने लगे अगर तुम सच्चे रसूल हो तो जिस से हम लोगों को डराते थे अब लाओ (७७)

व्याख्याः- अगर ऊँठ की तरह ऊँचे जानवर का पैर काट दिया जाए और रेगिस्तान में उसके चलने की राह को बिगाड़ दिया जाए तो वो ऊँठ बिलकुल नकारा हो जाएगा। ठीक इसी तरह दौलतमंद मानव जो अहंकार में चुर थे सालेह के तमाम कूदरती असुलों को अपने अयौगतिक बातों से नकारने की कोशिश की और सबूत मांगा ताकि ऊँठ की तरह उनकी असुल औंधे मुँह गिर जाए।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ {78}
तब उन्हें ज़लज़ले ने ले डाला और वह लोग ज़ानू पर सर किए बैठे थे बैठे के बैठे रह गए (७८)
व्याख्याः- और नतीजतन ऐसे लोगों की जिन्दगी जलजले की तरह तहस-नहस हो गयी यानी उनकी जिन्दगी से अमनो-सुकुन खत्म हो गया और वो अपने सोच के दायरे में सीमट कर रह गये और खुद उनकी सोच ही उन्हें ले डुबी।
पैगामः- इस आयत के साथ जो कहानी जुड़ी हुई है वो बिल्कुल अयौगतिक और कुसंस्कार है।

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلَكِن لَّا تُحِبُّونَ النَّاصِحِينَ {79}
उसके बाद सालेह उनसे टल गए और कहा मेरी क़ौम मैंने तो अपने परवरदिगार के पैग़ाम तुम तक पहुचा दिए थे और तुम्हारे ख़ैरख़्वाही की थी मगर अफसोस तुम समझाने वालों को अपना दोस्त ही नहीं समझते (७९)
व्याख्याः- सालेह ने अपनी सम्प्रदाय से कहा कि मैंने अपने रब का पैगाम पहुँचा दिया है और मैं तुम्हारा भला चाहता हूँ मगर शायद तुम खैरख्वाही के लायक ही नहीं हो।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُم بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعَالَمِينَ {80}
और लूत को हमने रसूल बनाकर भेजा था जब उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसी बदकारी करते हो कि तुमसे पहले सारी खुदाई में किसी ने ऐसी बदकारी नहीं की थी (८०)
व्याख्याः- लुत ने अपनी सम्प्रदाय के लोगों से कहा की सारे जिनसी गुनाहों से आजाद रहो यानी बलात्कार चाहे वो मर्द को हो या औरत का या बच्चे का।

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّن دُونِ النِّسَاءِ بَلْ أَنتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ {81}
हाँ तुम औरतों को छोड़कर शहवत परस्ती के वास्ते मर्दों की तरफ माएल होते हो मगर तुम लोग कुछ हो ही बेहूदा (८१)
व्याख्याः- उनकी सम्प्रदाय के कुछ लोग छोटे-छोटे लड़कों को भी अपनी हवस का शिकार बनाते और अपने दायरे से बाहर जाकर जिनसी हवस पुरी करते थे।
पैगामः- वैज्ञानिकों ने आज प्रमण कर दिया कि हिजड़ा, छक्का और होमो सेक्सुअल इत्यादि सब प्राकृतिक है। मानव के अलावा दूसरे जानवरों में भी ये आदत पायी जाती है। प्रकृति के किसी भी पहलू को इनकार करने का हक किसी को नहीं है। जिसे मानवी समाज ने गैर कूदरती की उपाधि दी वो वास्तव में प्रकृति का एक अधूरा पहलू है। जबरदस्ती कूदरत को बिगाड़ना यानी बलात्कार करना गुनाह है। प्राकृतिक तौर पर हमेशा से ही मर्द औरत के दरमियान का मानव दुनिया में पाया जाता है।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَن قَالُوا أَخْرِجُوهُم مِّن قَرْيَتِكُمْ إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَتَطَهَّرُونَ {82}
उसकी क़ौम का उसके सिवा और कुछ जवाब नही था कि वह आपस में कहने लगे कि उन लोगों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो क्योंकि ये तो वह लोग हैं जो पाक साफ बनना चाहते हैं (८२)
व्याख्याः- लुत की सम्प्रदाय के पास बलत्कार जायज था और उनके पास इसका कोई जवाब नहीं था। अप्रकृति यौन सम्पर्क करने वाले लोगों को उनके घरों से निकाल बाहर किया गया।

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ {83}
तब हमने उनको और उनके घर वालों को नजात दी मगर सिर्फ उनकी बीबी को कि वह पीछे रह जाने वालों में थी (८३)
व्याख्याः- अल्लाह ने लुत को और उसके घर वालों को मुक्ति दी मगर उसकी गुनहगार बदकार बीवी को मुक्ति नहीं हुई।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِم مَّطَرًا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ {84}
और हमने उन लोगों पर पत्थर का मेह बरसाया-पस ज़रा ग़ौर तो करो कि गुनाहगारों का अन्जाम आखिर क्या हुआ (८४)
व्याख्याः- कूदरत ने बारिश की तरह हिदायत उन पर बरसायी और नेक लोगों के सैलाब से गुनहगारों का नतीजों क्या हुआ ये भी देखने के लायक था और गुनहगारों का कोई ठिकाना नहीं था।
पैगामः- समाज में नेक लोगों की तादाद बढ़ गयी और गुनाहगार इस सैलाब में बह गये।

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُ قَدْ جَاءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {85}

और मदयन पास उनके भाई शुएब को तो उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम अल्लाह ही की इबादत करो उसके सिवा कोई दूसरा माबूद नहीं तुम्हारे पास तो तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक वाज़ेए व रौशन मौजिज़ा आ चुका तो नाप और तौल पूरी किया करो और लोगों को उनकी चीज़ में कम न दिया करो और ज़मीन में उसकी असलाह व दुरूस्ती के बाद फसाद न करते फिरो अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है (८५)

व्याख्याः- पैगम्बर शुएब को अल्लाह ताला ने मानव कल्याण के लिए नियुक्त किया और उन्होंने लोगों को समझाया केवल अल्लाह के नियमों के साथ चलें और शैतानी नियमों को अपना माबूद न बनाए। प्रकृति ने अल्लाह के सच्चे नियमों को मानव सभ्यता के सामने दलील के साथ पेश किया। मानव को चाहिए कि पाप-पुण्य और माप-तोल पुरा करते हुए मानव जाति और मानव सभ्यता का हक अदा करें। समाज में शांति की स्थापना करें और शांति का पथ ही मानव का सबसे उत्तम पथ है।

وَلَا تَقْعُدُوا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوعِدُونَ وَتَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِهِ وَتَبْغُونَهَا عِوَجًا وَاذْكُرُوا إِذْ كُنتُمْ قَلِيلًا فَكَثَّرَكُمْ وَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ {86}

और तुम लोग जो रास्तों पर जो ख़ुदा पर ईमान लाया है उसको डराते हो और ख़ुदा की राह से रोकते हो और उसकी राह में कज़ी ढूँढ निकालते हो अब न बैठा करो और उसको तो याद करो कि जब तुम कम थे तो अल्लाह ही ने तुमको बढ़ाया, और ज़रा ग़ौर तो करो कि फसाद फैलाने वालों का अन्जाम क्या हुआ (८६)

व्याख्याः- नेकी और तरक्की के रास्ते में रुकावट पैदा करके नेक और अच्छे काम करने वालों को न डराये। मानव और इंसानियत के लिये काम करना अल्लाह की राह है और उसमें रुकावट पैदा न करे और न इस काम में छोटी-छोटी गलतियां निकाले। फसाद करने वाले लोगों की संख्या में कमी होती है तब उस हालत पर गौर करे कि उसका नतीजा क्या होने वाला है।

وَإِن كَانَ طَائِفَةٌ مِّنكُمْ آمَنُوا بِالَّذِي أُرْسِلْتُ بِهِ وَطَائِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوا فَاصْبِرُوا حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ بَيْنَنَا وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ {87}

और जिन बातों का मै पैग़ाम लेकर आया हूँ अगर तुममें से एक सम्प्रदाय ने उनको मान लिया और एक सम्प्रदाय ने नहीं माना तो तुम सब्र से बैठे रहो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे दरम्यिान फैसला कर दे, वह तो सबसे बेहतर फैसला करने वाला है (८७)

व्याख्याः- पैगम्बर के दिमाग में जो सच्चाई कूदरत ने डाली है, उस पर कुछ लोग विश्वास रखते है और कुछ लोग विश्वास नहीं रखते। सच्चाई का फैसला करने वाली कूदरत है यानी अल्लाह है और एक खास वक्त के बाद सच्चाई लोगों के सामने जरूर प्रमाणित हो जाती है।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِ لَنُخْرِجَنَّكَ يَا شُعَيْبُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَكَ مِن قَرْيَتِنَا أَوْ لَتَعُودُنَّ فِي مِلَّتِنَا قَالَ أَوَلَوْ كُنَّا كَارِهِينَ {88}

तो उनकी क़ौम में से जिन लोगों को बड़ा घमण्ड था कहने लगे कि ऐ शुएब हम तुम्हारे साथ इमान लाने वालों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर कर देगें मगर जबकि तुम भी हमारे उसी मज़हब मिल्लत में लौट कर आ जाओ (८८)

व्याख्याः- हर सम्प्रदाय में कुछ शक्तिशाली लोग होते है जो सिर्फ अपने फायदे के लिये समाज को गुमराह करते रहते है और ऐसे ही कुछ लोगों ने पैगम्बर शुएब से कहा था कि अगर वो उनकी बात नहीं मानेंगे तो उसे और उनके साथियों को उनकी सम्प्रदाय से निकाल देंगे। ताकतवर लोगों की धमकियों को पैगम्बर शुएब ने इनकार किया और सच्चाई का साथ नहीं छोड़ा।

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللَّهِ كَذِبًا إِنْ عُدْنَا فِي مِلَّتِكُم بَعْدَ إِذْ نَجَّانَا اللَّهُ مِنْهَا وَمَا يَكُونُ لَنَا أَن نَّعُودَ فِيهَا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّنَا وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَأَنتَ خَيْرُ الْفَاتِحِينَ {89}

हम अगरचे तुम्हारे मज़हब से नफरत ही रखते हों जब तुम्हारे बातिल दीन से अल्लाह ने मुझे नजात दी उसके बाद भी अब अगर हम तुम्हारे मज़हब मे लौट जाएँ तब हमने अल्लाह पर बड़ा झूठा बोहतान बाँधा और हमारे वास्ते तो किसी तरह जायज़ नहीं कि हम तुम्हारे मज़हब की तरफ लौट जाएँ मगर हाँ जब मेरा परवरदिगार अल्लाह चाहे तो

हमारा परवरदिगार तो इल्म से तमाम चीज़ों को घेरे हुए है हमने तो अल्लाह ही पर भरोसा कर लिया ऐ हमारे परवरदिगार तू ही हमारे और हमारी क़ौम के दरमियान ठीक ठीक फैसला कर दे और तू सबसे बेहतर फ़ैसला करने वाला है (८९)

व्याख्याः- ईमान वाले यानी सच्चाई को महसूस करने वाले लोग अगर झुठ या गुनाह पर यकीन करने लगे तो अल्लाह पर तोहमत या उसकी बेईजती करने के बराबर होगी। अल्लाह की मर्जी यानी कूदरत के आर्शीवाद से ही लोगों को सच्चाई का दीदार होता है और जो सच्चाई को एक बार महसूस कर ले उसके लिए ये नमुमकिन है कि वो सच्चाई को छोड़कर फिर से झुठ को मानने लगे। प्रकृति का सच्चा ज्ञान सारी चीजों को घेरे हुए है और नेक लोग अल्लाह पर ही भरोसा करते है जिसने उसे पैदा किया और कूदरत ही फैसला करने वाली है सच्चाई और झुठ का तथा कूदरत सबसे बड़ा फैसला करने वाला है।

पैगामः- ये आयत किसकी जुबानी है अल्लाह की, फरिश्ते जिब्रील की या रसुल की?

ये अल्लाह की जुबानी नहीं हो सकती क्योंकि इस आयत में किसी और की जुबान से अल्लाह की तारीफ की जा रही है और अल्लाह अपनी तारीफ खुद से नहीं कर सकता। राजनीतिक दृष्टिकोण से अगर इस आयत को देखा जाए तो ये इल्जाम जरूर लगाया जा सकता है कि धर्म परिवर्तन रोकने के लिये इस आयत का इस्तेमाल किया गया है ताकि कोई भी मुसलमान दूसरा धर्म इख्तियार न करें। जब सारे दिन अल्लाह के है और अल्लाह की मर्जी से दुनिया में मौजूद है और अल्लाह के मर्जी के बगैर एक पत्ता भी हिलना मुमकिन नहीं तो इस आयत के साथ राजनीति या धर्म परिवर्तन जुड़ नहीं सकता। अल्लाह के असुलों के अनुसार दुनिया में दो तरह के ही सम्प्रदाय है, एक नेक, परहेजगार और अमन चाहने वाला सम्प्रदाय और दूसरा गुनहगार, पापी, नफरत और ईर्ष्या करने वाला सम्प्रदाय।

وَقَالَ الْمَلأُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَوْمِهِ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخَاسِرُونَ {90}

और उनकी क़ौम के चन्द सरदार जो काफिर थे कहने लगे कि अगर तुम लोगों ने शुएब की पैरवी की तो उसमें शक ही नहीं कि तुम सख़्त घाटे में रहोगे (९०)

व्याख्याः- पापी, पवित्र लोगों को अपनी झुठ और अपवित्रता से प्रभावित करने की प्रचेष्टा करते है।

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جَاثِمِينَ {91}

ग़रज़ उन लोगों को ज़लज़ले ने ले डाला बस तो वह अपने घरों में औन्धे पड़े रह गए (९१)

व्याख्याः- और जलजले की तरह पापियों की जिन्दगी तहस-नहस हो जाती है।

الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَأَن لَّمْ يَغْنَوْا فِيهَا الَّذِينَ كَذَّبُوا شُعَيْبًا كَانُوا هُمُ الْخَاسِرِينَ {92}

जिन लोगों ने शुएब को झुठलाया था वह गोया उन बस्तियों में कभी आबाद ही न थे जिन लोगों ने शुएब को झुठलाया वही लोग घाटे में रहे (९२)

व्याख्याः- जिन लोगों ने पैगम्बर शुएब को झुठा साबित करने की कोशिश की थी उनके घरों में शान्ति और सच्चाई की रोशनी कभी नहीं जली और जिन लोगों ने उन्हें इनकार किया उन्होंने अपना ही नुकसान किया।

فَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا قَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَاتِ رَبِّي وَنَصَحْتُ لَكُمْ فَكَيْفَ آسَى عَلَى قَوْمٍ كَافِرِينَ {93}

कहा ऐ मेरी क़ौम मैं ने तो अपने परवरदिगार के पैग़ाम तुम तक पहुँचा दिए और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की थी, फिर अब मै काफिरों पर क्यों कर अफसोस करूँ (९३)

व्याख्याः- पैगम्बर शुएब ने उन लोगों से अपना मुँह मोड़ लिया उनके दिल में झुठ और गुनाह कबुल करने वालों के लिए कोई पश्चाताप नहीं था।

وَمَا أَرْسَلْنَا فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّبِيٍّ إِلَّا أَخَذْنَا أَهْلَهَا بِالْبَأْسَاءِ وَالضَّرَّاءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُونَ {94}

और हमने किसी बस्ती में कोई नबी नही भेजा मगर वहाँ के रहने वालों को सख़्ती और मुसीबत में मुब्तिला किया ताकि वह लोग गिड़गिड़ाएँ (९४)

व्याख्याः- कोई भी सच्चाई बताने वाले जिसे लोग नबी कहते है ऐसा नहीं था कि उन्होंने अपनी सच्चाई गरीबों, मजबूरों या बीमारों तक न पहुँचाई हो।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتَّى عَفَوا وَّقَالُوا قَدْ مَسَّ آبَاءَنَا الضَّرَّاءُ وَالسَّرَّاءُ فَأَخَذْنَاهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ {95}

फिर हमने तकलीफ़ की जगह आराम को बदल दिया यहाँ तक कि वह लोग बढ़ निकले और कहने लगे कि इस तरह की तकलीफ़ व आराम तो हमारे बाप दादाओं को पहुँच चुका है तब हमने उन लोगा को सज़ा में गिरफ्तार किया (९५)

व्याख्याः- विज्ञान और सच्चाई जब लोगों के पास प्रकृतिक तौर पर पहुँचती है तब उस जगह के लोगों को गरीबी और अशान्ति से मुक्ति मिलती है और वो अच्छाई की तरफ जाने लगते है। जब विज्ञान और सच्चाई की तरक्की होने लगती है और लोगों को सच्चाई का दीदार होता है तब वो सोचते है कि हमारे पुरवज सच्चाई से कितने दूर और तकलीफों में थे। कूदरत यानी अल्लाह उन्हें धीरे-धीरे सच्चाई की तरफ ले आई जिनका उन्हें पता भी नहीं था।

وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ {96}

और वह बिल्कुल बेख़बर थे और अगर उन बस्तियों के रहने वाले इमान लाते और परहेज़गार बनते तो हम उन पर आसमान व ज़मीन की बरकतों खोल देते मगर उन लोगों ने झुठलाया तो हमने भी उनके करतूतों की बदौलत उन को गिरफ्तार किया (९६)

व्याख्याः- अगर दुनिया के सारे रहने वाले प्रेम, मानवता, शिक्षा, पवित्रता, अहिंसा, भाईचारा, ईमानदारी और शांति पर ईमान ले आते तो आकाश और पृथ्वी के सारे राज उनके सामने खुल जाते। मगर मानव प्रकृति से ज्यादा अपने आप पर विश्वास रखता है और हमेशा प्रकृति बिगाड़ने की कोशिश करता है, इसलिए मानव को हमेशा प्रकृति की यानी अल्लाह की गिरफ्त में रहना पड़ता है।

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ {97}

बस्तियों के रहने वाले उस बात से बेख़ौफ है कि उन पर हमारा अज़ाब रातों रात आ जाए जब कि वह पड़े बेख़बर सोते हों (९७)

व्याख्याः- क्या दुनिया के रहने वाले कूदरत के निर्देश के बारे में बेफिकर है, जब कूदरत का आजाब इस बेफिकरी में मानव को घेर लेता है और वो कुसंस्कार के अंधेरे में घिरे रहते है।

اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ {98}

या उन बस्तियों वाले इससे बेख़ौफ हैं कि उन पर दिन दहाड़े हमारा अज़ाब आ पहुँचे जब वह खेल कूद में मशगूल हो (९८)

व्याख्याः- मानव जब मोह-माया में उलझा हुआ रहता है तब वो उसके नतीजे के बारे में कोई फिक्र नहीं करता यानी जब ज्यादा मोह माया में मानव डूब जाता है तो प्राकृतिक तौर पर सब उसके अपने-करीबी उससे दूर हो जाते है यहां तक कि वो अपने आपसे भी दूर हो जाता है। इसका मतलब है चीजों के लालच में शान्ति की दुनिया से दूर हो जाता है और कूदरत का आजाब दिन की रोशनी की तरह साफ-सुथरा बनकर उसकी जिन्दगी में छा जाता है।

اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ {99}

तो क्या ये लोग अल्लाह की तद्बीर से ढीट हो गए हैं तो अल्लाह के दाँव से घाटा उठाने वाले ही निडर हो बैठे हैं (९९)

व्याख्याः- नशा चाहे वो दौलत का हो, औरत का हो या शोहरत का हो जिसमें मानव की हालत ऐसी हो जाती है कि वो सही-गलत की पहचान नहीं कर सकता तब वो उसके नतीजे के बारे में (कूदरती पकड़) बेफिक्र हो जाता है और उसके जिन्दगी में अशान्ति छा जाती है।

اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ {100}

क्या जो लोग एहले ज़मीन के बाद ज़मीन के वारिस होते है उन्हें ये मालूम नहीं कि अगर हम चाहते तो उनके गुनाहों की बदौलत उनको मुसीबत में फँसा देते उनके दिलों पर हम खुद मोहर कर देते है कि ये लोग कुछ सुनते ही नही (१००)

व्याख्याः- दुनिया में जिन लोगों को कूदरत ने हुकुमत करने का अधिकार दिया (जमीन के वारिश) और बाकी लोगों को जिन्हें ये उपाधि हासिल नहीं है और जो अपना भला-बुरा समझ नहीं सकते उन पर जुल्म उठाने वाले शक्तिशाली लोगों के गुनाह को अजाब के तौर पर कभी न कभी खत्म होना पड़ता है क्योंकि दुनिया में कोई भी या किसी किस्म की बुरी ताकत ज्यादा दिन तक ठहर नहीं सकती और गुनहगार मानवों को जब हलाकत की सजा सुना दी जाती है तो कूदरत उनके कानों पर मोहर लगा देती है और नेकी की बात सुन नहीं सकते।

تِلْكَ الْقُرَى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنبَائِهَا وَلَقَدْ جَاءتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا مِن قَبْلُ كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْكَافِرِينَ {101}

ये चन्द बस्तियाँ है जिन के हालात हम तुमसे बयान करते है और इसमें तो शक ही नहीं कि उनके पैग़म्बर उनके पास वाज़ेए व रौशन मौजिज़े लेकर आए मगर ये लोग जिसके पहले झुठला चुके थे उस पर भला काहे को इमान लाने वाले थे अल्लाह यूँ काफिरों के दिलों पर अलामत मुकर्रर कर देता है (१०१)

व्याख्याः- कूदरत ऐसे कुछ शक्तिशाली लोगों का इतिहास ब्यान कर रही है जिनकी हत्या कर दी गयी थी। उदाहरण के तौर पर हिटलर और उसकी सम्प्रदाय, फिरोन और उसकी सम्प्रदाय। ऐसे लोगों के पास नेकी, परहेजगारी और मोहब्बत का पैगाम लेकर उनके नबी उनके पास जरूर आये थे। तब ऐसे लोगों ने शान्ति की बातों को झुठा साबित किया और अपनी बरबादी चुन ली। प्रकृति यानी अल्लाह ऐसे लोगों के विवेक को मुर्दा कर देता है।

पैगामः- प्रमाण मिलने के बावजूद कुछ लोग अपने जिद में अंधे होकर सच्चाई को कबूल नहीं करते। बाद में जब सच्चाई का फायदा दूसरों को मिलता है तब ऐसे लोग उसे बिगाड़ने की कोशिश करते है या अफसोस करते है।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِم مِّنْ عَهْدٍ وَإِن وَجَدْنَا أَكْثَرَهُمْ لَفَاسِقِينَ {102}

और हमने तो उसमें से अक्सरों का एहद न पाया और हमने उनमें से अक्सरों को बदकार ही पाया (१०२)

व्याख्याः- मानतवा का एहद जो एक मानव को दूसरे मानव से जोड़ता है वो ऐसे लोगों के अन्दर उपस्थित नहीं होता और ये लोग नफरमान थे।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَظَلَمُوا بِهَا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِينَ {103}

फिर हमने मूसा को फिरआऊन और उसके सरदारों के पास मौजिज़े अता करके भेजा तो उन लोगों ने उन मौजिज़ात के साथ शरारतें की पस ज़रा ग़ौर तो करो कि आख़िर फसादियों का अन्जाम क्या हुआ (१०३)

व्याख्याः- जैसे कि पैगम्बर मुसा ने नेकी, मोहब्बत, परहेजगारी का नतीजा शान्ति वाली जिन्दगी ये बात उन्होंने अपनी सम्प्रदाय पर साबित की थी मगर उनके सम्प्रदाय के सरदार फिरोन ने उसे इनकार किया था और ऐसे झुठलाने वालों का अंजाम बुरा है।

وَقَالَ مُوسَىٰ يَا فِرْعَوْنُ إِنِّي رَسُولٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ {104}

और मूसा ने कहा ऐ फिरआऊन मैं यक़ीनन परवरदिगारे आलम का रसूल हूँ (१०४)

व्याख्याः- पैगम्बर मुसा ने फिरोन से कहा कि वो जो कुछ कह रहे है वो प्राकृतिक सत्य है।

حَقِيقٌ عَلَىٰ أَن لَّا أَقُولَ عَلَى اللَّهِ إِلَّا الْحَقَّ قَدْ جِئْتُكُم بِبَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِي إِسْرَائِيلَ {105}

मुझ पर वाजिब है कि अल्लाह पर सच के सिवा न कहूँ मैं यक़ीनन तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से वाजेए व रोशन मौजिज़े लेकर आया हूँ (१०५)

व्याख्याः- और उनके लिये सच्चाई के अलावा कोई भी बात बताना न मुमकिन था क्योंकि मुसा सच्चे मानव थे और कूदरत की सच्चाई सबूत के साथ बनी इसरायिल को भी दी गई थी।

قَالَ إِن كُنتَ جِئْتَ بِآيَةٍ فَأْتِ بِهَا إِن كُنتَ مِنَ الصَّادِقِينَ {106}

तो तू बनी ईसराइल को मेरे हमराह करे दे फिरआऊन कहने लगा अगर तुम सच्चे हो और वाक़ई कोई मौजिज़ा लेकर आए हो तो उसे दिखाओ (१०६)

व्याख्याः- फिर भी फिरोन ने उनकी सच्चाई पर सबूत मांगा।

فَأَلْقَىٰ عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِينٌ {107}

मूसा ने अपनी छड़ी डाल दी पस वह यकायक ज़ाहिर बज़ाहिर अजदहा बन गई (१०७)

व्याख्याः- तब मुसा ने अपनी सच्चाई की लाठी फिरोन पर फेंकी और इस सच्चाई ने फिरोन को सांप की तरह लपेट लिया।

पैगामः- जिस तरह अजगर साप अपने शिकार को लपेट कर निगल जाता है ठीक उसी तरह मुसा की सच्चाई ने फिरोन को लपेट कर निगल लिया। ये किसी जादूगर की जादूगरी नहीं जो जादू के जरिए लोगों को बस में करने की तरकीब थी। ये लाठी सच्चाई की लाठी है जिसके जरिया मुसा ने लोगों को हक बताया और ये कोई जादुई खेल-तमाशा नहीं था।

وَنَزَعَ يَدَهُ فَإِذَا هِيَ بَيْضَاءُ لِلنَّاظِرِينَ {108}

और अपना हाथ बाहर निकाला तो क्या देखते है कि वह हर शख़्स की नज़र मे जगमगा रहा है (१०८)

व्याख्याः- जब मुसा ने अपनी सच्चाई लोगों को खुलकर बताई तब तमाम लोगों का दिमाग इस सच्चाई से रोशन हो गया था यानी चमकता हुआ।

قَالَ الْمَلأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هَـذَا لَسَاحِرٌ عَلِيمٌ {109}

तब फिरआऊन के क़ौम के चन्द सरदारों ने कहा ये तो अलबत्ता बड़ा माहिर जादूगर है (१०९)

व्याख्याः- फिरोन के लोगों ने मुसा पर जादुगर होना का इल्जाम लगाया था जो अपने जादू के जरिए लोगों को बस में करने की कोशिश करते है।

يُرِيدُ أَن يُخْرِجَكُم مِّنْ أَرْضِكُمْ فَمَاذَا تَأْمُرُونَ {110}

ये चाहता है कि तुम्हें तुम्हारें मुल्क से निकाल बाहर कर दे तो अब तुम लोग उसके बारे में क्या सलाह देते हो (११०)

व्याख्याः- फिरोन ने मुसा पर ये भी इल्जाम लगाया कि मुसा चाहता है कि लोगों को अपनी चलाकी से बहकर कर उनसे उनका वजूद छीन ले।

قَالُوا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَائِنِ حَاشِرِينَ {111}

सबने मुत्तफिक़ अलफाज़ कहा कि उनको और उनके भाई को चन्द दिन क़ैद में रखिए और शहरों में हरकारों को भेजिए (१११)

व्याख्याः- लोगों ने फिरोन को ये भी कहा कि मुसा और उनके भाई को उनके हाल पर छोड़ दे और सच्चाई का सबूत तलब करें और उसके परखे।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ {112}

कि तमाम बड़े बड़े जादूगरों का जमा करके अपके पास दरबार में हाज़िर करें (११२)

व्याख्याः- बड़े से बड़ा जादूगर भी कूदरती सच्चाई पर कामयाबी हासिल नहीं कर सकता।

وَجَاءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوا إِنَّ لَنَا لأَجْرًا إِن كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ {113}

ग़रज़ जादूगर सब फिरआऊन के पास हाज़िर होकर कहने लगे कि अगर हम जीत जाएँ तो हमको बड़ा भारी इनाम ज़रुर मिलना चाहिए (११३)

व्याख्याः- और बहुत सारे जादूगर यानी अपने आपको गैब का इलम जानने का दावा करने वाले फिरोन के पास आए और मुसा से वार्तालाप का फैसला किया।

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ {114}

फिरआऊन ने कहा बल्कि फिर तो तुम हमारे दरबार के मुक़र्रबीन मे से होगे (११४)

व्याख्याः- फिरोन ने उन्हें तोफा और ऊँचा मुकाम देने का फैसला किया ।

قَالُوا يَا مُوسَى إِمَّا أَن تُلْقِيَ وَإِمَّا أَن نَّكُونَ نَحْنُ الْمُلْقِينَ {115}

और मुक़र्रर वक़्त पर सब जमा हुए तो बोल उठे कि ऐ मूसा या तो तुम्हें या हम ही अपने अपने मंत्र फेंके (११५)

व्याख्याः- और फिर वार्तालाप शुरू हुई और हर किसी ने अपने-अपने ख्यालात दावे के साथ पेश किये।

قَالَ أَلْقُوا فَلَمَّا أَلْقَوْا سَحَرُوا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوهُمْ وَجَاءوا بِسِحْرٍ عَظِيمٍ {116}

मूसा ने कहा तुम ही फेंक तो तब जो ही उन लोगों ने डाली तो लोगों की नज़र बन्दी कर दी और लोगों को डरा दिया (११६)

व्याख्याः- जब ज्ञानियों ने अपने-अपने दलील पेश किये तो कुछ पल के लिये लोगों को अचंबा हुआ और वो डर गये और बड़ी-बड़ी मिसाले ब्यान की।

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ {117}

और उन लोगों ने बड़ा भारी जादू दिखा दिया और हमने मूसा के पास वही भेजी कि तुम भी अपनी छड़ी डाल दो तो क्या देखते है कि वह छड़ी उनके बनाए हुए एक एक करके निगल रही है (११७)

व्याख्याः- और अल्लाह के हुकुम से मुसा ने अपनी दलीलें पेश की और सच्चे दलील की ताकत से फिरोन के बुलाये हुए सारे लोगों की दलीलें झुठी साबित हुई।

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {118}

अल किस्सा हक़ बात तो जम के बैठी और उनकी सारी कारस्तानी मटियामेट हो गई (११८)

व्याख्याः- और सच जाहिर हो गया और बातिल यानी झुठी दलीलें जाती रही।

فَغُلِبُوا هُنَالِكَ وَانقَلَبُوا صَاغِرِينَ {119}

पस फिरआऊन और उसके तरफदार सब के सब इस अखाड़े मे हारे और ज़लील व रूसवा हो के पलटे (११९)

व्याख्याः- और झुठ सच्चाई के सामने हार गया और जलील हुआ।

وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سَاجِدِينَ {120}

और जादूगर सब मूसा के सामने सजदे में गिर पड़े (१२०)

व्याख्याः- और सच्चाई अनुभव करने के बाद गलतफैमी में भटके हुए लोग सजदे में गिर गये।

قَالُوا آمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِينَ {121}

और बोले हम सारे जहाँन के परवरदिगार पर ईमान लाए (१२१)

व्याख्याः- और कूदरत यानी प्रकृति यानी अल्लाह पर ईमान लाये।

رَبِّ مُوسَى وَهَارُونَ {122}

जो मूसा व हारून का परवरदिगार है (१२२)

व्याख्याः- जो मुसा और हरून का रब है।

قَالَ فِرْعَوْنُ آمَنتُم بِهِ قَبْلَ أَنْ آذَنَ لَكُمْ إِنَّ هَذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوهُ فِي الْمَدِينَةِ لِتُخْرِجُوا مِنْهَا أَهْلَهَا فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ {123}

फिरआऊन ने कहा तुम लोग मेरी इजाज़त के क़ब्ल उस पर ईमान ले आए ये ज़रूर तुम लोगों की मक्कारी है जो तुम लोगों ने उस शहर मे फैला रखी है ताकि उसके बाशिन्दों को यहाँ से निकाल कर बाहर करो पस तुम्हें अन क़रीब ही उस शरारत का मज़ा मालूम हो जाएगा (१२३)

व्याख्याः- लोग जब फिरोन की इजाजत के बगैर मुसा की बात मानने लगे तब फिरोन ने उसे साजिश कहा और ये भी कहा कि इस साजिश के तहत जरूर मुसा शहर के लोगों को घर से बेघर कर देगा।

لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُم مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِينَ {124}

मै तो यक़ीनन तुम्हारे हाथ और दूसरी तरफ के पॉव कटवा डालूँगा फिर तुम सबके सब को सूली दे दूँगा (१२४)

व्याख्याः- फिर फिरोन ने लोगों को ये बात कहकर डराया कि जो लोग मुसा की बात मानेंगे उनकी एक तरफ के हाथ और दूसरे तरफ के पैर काटकर उन्हें सूली चढ़ाया जाएगा।

قَالُوا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُنقَلِبُونَ {125}

जादूगर कहने लगे हम को तो अपने परवरदिगार की तरफ लौट कर जाना है (१२५)

व्याख्याः- सच्चाई पर ईमान लाने वाले लोग डरे नहीं और अपने सच्चाई की जरिया पाक-परवरदिगार की कृपा प्राप्त करने की बात कही।

وَمَا تَنقِمُ مِنَّا إِلَّا أَنْ آمَنَّا بِآيَاتِ رَبِّنَا لَمَّا جَاءَتْنَا رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَتَوَفَّنَا مُسْلِمِينَ {126}

तू हमसे उसके सिवा और काहे की अदावत रखता है कि जब हमारे पास अल्लाह की निशानियाँ आयी तो हम उन पर ईमान लाए ऐ हमारे परवरदिगार हम पर सब्र का मेंह बरसा (१२६)

व्याख्याः- इन लोगों ने फिरोन से ये भी पुछा कि इनका कसूर क्या है? सिर्फ वो लोग सिवाये सच्चाई पर यकीन लाने के और उन लोगों ने ईश्वर से प्रार्थना की ज्ञान प्रदान करने की और सच्चाई पर कायम रहने की।

पैगामः- मुसा के समय भी ''मुसलमान'' शब्द की उपस्थिति ये प्रमाण करती है कि ''मुसलमान'' शब्द सिर्फ एक मानव चरित्र है, किसी सम्प्रदाय का नाम नहीं और ये शब्द हर पैगम्बर, हर नबी और उनके साथ रहने वाले नेक लोगों पर भी इस्तेमाल हुआ (कुरान शरीफ में)।

وَقَالَ الْمَلَأُ مِن قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوسَى وَقَوْمَهُ لِيُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَآلِهَتَكَ قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَاءَهُمْ وَنَسْتَحْيِي نِسَاءَهُمْ وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قَاهِرُونَ {127}

और हमने अपनी फरमाबरदारी की हालत में दुनिया से उठा ले और फिरआऊन की क़ौम के चन्द सरदारों ने से कहा कि क्या आप मूसा और उसकी क़ौम को उनकी हालत पर छोड़ देंगे कि मुल्क में फ़साद करते फिरे और आपके और आपके अल्लाहआ को छोड़ बैठें- फिरआऊन कहने लगा हम अनक़रीब ही उनके बेटों की क़त्ल करते है और उनकी औरतों को जिन्दा रखते है और हम तो उन पर हर तरह क़ाबू रखते है (१२७)

व्याख्याः- फिरोन के खास करीबी सरदारों ने फिरोन को मशवरा दिया कि क्या वो मुसा और उनके मानने वाले लोगों को जो फिरोन और उसके मानने वालों को नहीं मानते क्या वो उन्हें छोड़ देगा। फिरोन ने जवाब दिया कि वो मुसा से ज्यादा शक्ति रखता है और वो मुसा के मानने वालों को और उनके बच्चों की हत्या कर देगा, औरतों को छोड़कर।

قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ اسْتَعِينُوا بِاللَّهِ وَاصْبِرُوا إِنَّ الْأَرْضَ لِلَّهِ يُورِثُهَا مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ {128}

मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह से मदद माँगों और सब्र करो सारी ज़मीन तो अल्लाह ही की है वह अपने बन्दों में जिसकी चाहे उसका वारिस बनाए और ख़ातमा बिल ख़ैर तो सब परहेज़गार ही का है (१२८)

व्याख्याः- मुसा ने अपने मानने वालों से कहा कि अल्लाह पर भरोसा रखो जो अपने बंदों में से ही जिसे चाहे अपना हाकिम बना दे, जो क़ूदरती आजाब से डरते है और सच्चाई पर ईमान लाते है मानव समाज को पवित्र और शांतिमय रखने के लक्ष्य से।

قَالُوا أُوذِينَا مِن قَبْلِ أَن تَأْتِيَنَا وَمِن بَعْدِ مَا جِئْتَنَا قَالَ عَسَى رَبُّكُمْ أَن يُهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ {129}

वह लोग कहने लगे कि तुम्हारे आने के क़ब्ल ही से और तुम्हारे आने के बाद भी हम को तो बराबर तकलीफ ही पहुँच रही है मूसा ने कहा अनकरीब ही तुम्हारा परवरदिगार तुम्हारे दुश्मन को हलाक करेगा और तुम्हें बनाएगा फिर देखेगा कि तुम कैसा काम करते हो (१२९)

व्याख्याः- मुसा की सम्प्रदाय के लोग अपने तकलीफों से मुक्ति पाने के लिये मुसा से कहा कि उनके आने के पहले जो उनका हाल था वही हाल अब भी है, मुसा ने उन्हें तसल्ली दी और कहा कि जल्द ही अल्लाह उनके दुश्मनों को खत्म करके उन्हें उसी सर जमीन का सरदार बनायेगा और अल्लाह उनके काम भी देखेगा।

وَلَقَدْ أَخَذْنَا آلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِينَ وَنَقْصٍ مِّن الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ {130}

और बेशक हमने फिरआऊन के लोगों को बरसों से कहत और फलों की कम पैदावार में गिरफ्तार किया ताकि वह इबरत हासिल करें (१३०)

व्याख्याः- कूदरत ने फिरोन की सम्प्रदाय को अपनी गिरफ्त में लिया और सजा दी और उन्हें भुखमरी में डुबा दिया।

فَإِذَا جَاءتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوا لَنَا هَذِهِ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَطَّيَّرُوا بِمُوسَى وَمَن مَّعَهُ أَلَا إِنَّمَا طَائِرُهُمْ عِندَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ {131}

तो जब उन्हें कोई राहत मिलती तो कहने लगते कि ये तो हमारे लिए सज़ावार ही है और जब उन्हें कोई मुसीबत पहुँचती तो मूसा और उनके साथियों की बदशुगूनी समझते देखो उनकी बदशुगूनी तो अल्लाह के हा थी मगर बहुतेरे लोग नही जानते है (१३१)

व्याख्याः- खुशहाली में फिरोन के सम्प्रदाय के लोग कहते थे कि खुशहाली सिर्फ उनके लिये ही है और जब कोई तकलीफ पहुँचती थी तो कहते कि ये अशुभ है। खुशहाली और अशुभ का ज्ञान अल्लाह के पास है और मानव इसके बारे में कुछ नहीं जानता।

وَقَالُوا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهِ مِنْ آيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ {132}

और फिरआऊन के लोग मूसा से एक मरतबा कहने लगे कि तुम हम पर जादू करने के लिए चाहे जितनी निशानियाँ लाओ मगर हम तुम पर किसी तरह ईमान नही लाएँगे (१३२)

व्याख्याः- कोई भी अचंबा या सच्चाई या कोई भी सबूत (जादू) फिरोन के सम्प्रदाय के लोगों को विश्वास नहीं दिला सका।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ آيَاتٍ مُّفَصَّلَاتٍ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ {133}

तब हमने उन पर तूफान और टिड्डियाँ और जुएँ और मेंढ़कों और खून (का अज़ाब भेजा कि सब निशानियाँ थी उस पर भी वह लोग तकब्बुर ही करते रहें और वह लोग गुनेहगार तो थे ही (१३३)

व्याख्याः- कूदरती तौर पर फिरोन की सम्प्रदाय पर तुफान आया, सैलाब के बाद कीड़े-मकौड़े से जमीन भर गई और लोग तरह-तरह के बीमारी का शिकार होने लगे। सैलाब का पानी जमने से जहरीले मेढकों की पैदाइश बढ़ गयी और गंदा पानी पीने की वजह से लोग खून की बीमारी का शिकार हुए ये सारी मानवी तकलीफें जो फिरोन की सम्प्रदाय के लोगों को मिली थी वो सीधे और साफ तौर पर एक सबक था। फिर भी फिरोन की सम्प्रदाय घमंड से चुर अपने अय्याशी और जुल्म की हद पार करके गुनाहगार सम्प्रदाय बन गई थी।

पैगामः- कूदरत का गलत इस्तेमाल मानव को बरबादी की तरफ ढकेल देता है। प्रदूषण चाहे वो मानवी समाज में हो या कूदरत में हर तरह से बर्बादी करती है। मानव के अय्याश वाली जिन्दगी जो प्रदूषण की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं देती वही विशेष वजह है मानव की तकलीफों की।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوا يَا مُوسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ لَئِن كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي إِسْرَائِيلَ {134}

और जब उन पर अज़ाब आ पड़ता तो कहने लगते कि ऐ मूसा तुम से जो अल्लाह ने अहद किया है उसी की उम्मीद पर अपने अल्लाह से दुआ माँगों और अगर तुमने हम से अज़ाब को टाल दिया तो हम ज़रूर भेज देगें (१३४)

व्याख्याः- कष्ट के समय फिरोन की सम्प्रदाय मुसा का सहारा ढूँढ़ती थी कहती थी कि कष्ट से मुक्ति पाने के बाद वो मुसा की सच्चाई पर ईमान लायेंगे और इसरायिली सम्प्रदाय जिसे उन लोगों ने गुलाम बना कर रखा था उन्हें भी आजाद कर देंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلَى أَجَلٍ هُم بَالِغُوهُ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ {135}

फिर जब हम उनसे उस वक़्त के वास्ते जिस तक वह ज़रूर पहुँचते अज़ाब को हटा लेते तो फिर फौरन बद अहदी करने लगते (१३५)

व्याख्याः- फिर जब मुसा ने अपने विवेक और ज्ञान के द्वारा जो उन्हें अल्लाह से मिला था उनकी तकलीफों का हाल बता दिया करते थे और ठीक होने के बाद प्रतिज्ञा भंग करने लगे।

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ {136}

तब आख़िर हमने उनसे बदला लिया तो चूँकि वह लोग हमारी आयतों को झुटलाते थे और उनसे ग़ाफिल रहते थे हमने उन्हें दरिया में डुबो दिया (१३६)

व्याख्याः- कूदरत ने इस बेईमानी के सबब फिरोन की सम्प्रदाय को जबरदस्त जलोच्वास में डूबो दिया क्योंकि कूदरत के हर असुलों को फिरोन की सम्प्रदाय तोड़ती रही और कभी भी अपना ध्यान सच्चाई की तरफ नहीं लाती थी।

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِينَ كَانُوا يُسْتَضْعَفُونَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِي بَارَكْنَا فِيهَا وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنَى عَلَى بَنِي إِسْرَائِيلَ بِمَا صَبَرُوا وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهُ وَمَا كَانُوا يَعْرِشُونَ {137}

और जिन बेचारों को ये लोग कमज़ोर समझते थे उन्हीं को ज़मीन का जिसमें हमने बरकत दी थी उसके पूरब पच्छिम का वारिस बना दिया और चूँकि बनी इसराईल ने सब्र किया था इसलिए तुम्हारे परवरदिगार का सभ्य वायदा पूरा हो गया और जो कुछ फिरआऊन और उसकी क़ौम के लोग करते थे और जो ऊँची ऊँची इमारते बनाते थे सब हमने बरबाद कर दी (१३७)

व्याख्याः- और जिन गरीब और लाचार लोगों को फिरोनियों ने पूरब और पश्चिम की तरफ जो ऊँची जमीन थी उसमें ढकेल दिया था वो उस जमीन के मालिक या मुखतार बन गये जिसमें बरकतें थी और कूदरत ने सच्चाई, ईमानदारी और सब्र करने वाले बनी इसरायिल को जुल्म से आजाद किया और फिरोन की सम्प्रदाय को बरबाद कर दिया। जो लोग बड़े-बड़े एहराम (pyramid) बनाते थे और साथ में बड़े-बड़े कारखाने बनाते थे।

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلَى قَوْمٍ يَعْكُفُونَ عَلَى أَصْنَامٍ لَّهُمْ قَالُوا يَا مُوسَى اجْعَل لَّنَا إِلَهًا كَمَا لَهُمْ آلِهَةٌ قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُونَ {138}

और हमने बनी ईसराइल को दरिया के उस पार उतार दिया तो एक ऐसे लोगों पर से गुज़रे जो अपने बुतों की परसतिश पर जमा बैठे थे कहने लगे ऐ मूसा जैसे उन लोगों के माबूद है वैसे ही हमारे लिए भी एक माबूद बनाओ मूसा ने जवाब दिया कि तुम लोग जाहिल हो (१३८)

व्याख्याः- कूदरत ने बनी इसरायिल को गहरी तकलीफों के दरिया से पार कर दिया और उन्हें एक ऐसी सम्प्रदाय के पास पहुँचाया जो लोग मूर्ति पूजा करते थे। मुसा ने उस सम्प्रदाय को सच्चाई बयान करते हुए फरमाया कि अल्लाह एक और उसका कोई माबूद नहीं है और जो कूदरत को शकल देते है वो बेवकुफ है।

पैगामः- गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था कि न समझ लोग मूर्ति पूजा करते है और मुसा के जन्म की कहानी और कृष्ण के जन्म की कहानी तकरीबन एक-सा है और ऐतिहासिक प्रमाण के अनुसार और मेरी तहकीकात के अनुसार ईसा की

पैदाइश के तकरीबन २००० साल पहले कृष्ण जी उपस्थित हुए थे और बनी इसरायिल की सम्प्रदाय को दरिया किनारे ला उतारना क्या ये साबित नहीं करता है कि कृष्ण और मुसा एक ही मानव थे जिन्होंने आधी जिन्दगी दरिया-ए-नील के किनारे गुजारी और आधी जिन्दगी दरिया-ए-सिन्ध के किनारे गुजारी।

إِنَّ هَـٰؤُلَاءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيهِ وَبَاطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ {139}

ये लोग जिस मज़हब पर ह और जो अमल ये लोग कर रहे है वह सब मिटिया मेट हो जाएगा (१३९)

व्याख्याः- कु-संस्कार में उलझे हुए लोग ऐसे काम करते है जिसका कोई नतीजा नहीं निकलता और मानव का मस्तिक्ष इसे जल्द ही अपने समाज से निकाल बाहर कर देते है।

قَالَ أَغَيْرَ اللَّهِ أَبْغِيكُمْ إِلَـٰهًا وَهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ {140}

कहा क्या तुम्हारा ये मतलब है कि अल्लाह को छोड़कर मै दूसरे को तुम्हारा माबूद तलाश करू हालाँकि उसने तुमको सारी खुदाई पर फज़ीलत दी है (१४०)

व्याख्याः- क्या मानव के लिए कूदरत यानी अल्लाह के सिवा और किसी की सच्चाई पर यकीन करना सही है। जहां पर कूदरत ने मानव को तमाम प्राणियों पर सर्वश्रेष्ठ बनाया है।

وَإِذْ أَنجَيْنَاكُم مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ يُقَتِّلُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ وَفِي ذَٰلِكُم بَلَاءٌ مِّن رَّبِّكُمْ عَظِيمٌ {141}

जब हमने तुमको फिरआऊन के लोगों से नजात दी जब वह लोग तुम्हें बड़ी बड़ी तकलीफें पहुँचाते थे तुम्हारे बेटों को तो क़त्ल कर डालते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रख छोड़ते और उसमें तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे सख़्त आज़माइश थी (१४१)

व्याख्याः- मानवी समाज में एक ऐसा वक्त भी गुजरा है जब शैतानी लोग ऐसे थे जो नेक लोगों को और उनके औलाद का कत्ल करते थे मगर औरतों को छोड़ देते अपनी जिनसी भूख पूरी करने के लिये। मगर कूदरत ने मानव समाज को इस तरह के गुनाहों से भी आजाद किया और नेक लोगों ने जुल्म सह कर भी अपने सब्र का इम्तिहान दिया।

وَوَاعَدْنَا مُوسَىٰ ثَلَاثِينَ لَيْلَةً وَأَتْمَمْنَاهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيقَاتُ رَبِّهِ أَرْبَعِينَ لَيْلَةً وَقَالَ مُوسَىٰ لِأَخِيهِ هَارُونَ اخْلُفْنِي فِي قَوْمِي وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيلَ الْمُفْسِدِينَ {142}

और हमने मूसा से तौरैत देने के लिए तीस रातों का वायदा किया और हमने उसमें दस रोज़ बढ़ाकर पूरा कर दिया ग़रज़ उसके परवर दिगार का वायदा चालीस रात में पूरा हो गया और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि तुम मेरी क़ौम में मेरे जानशीन रहो और उनकी इसलाह करना और फसाद करने वालों के तरीक़े पर न चलना (१४२)

व्याख्याः- तीस रातों की तपस्या के बाद फिर दस रातों तक मुसा को मानवी समाज के चक्रव्यूह की सच्चाई का ज्ञान प्राप्त हुआ और मुसा ने अपने भाई हारुन को इस सच्चे ज्ञान को समझाते हुए ये कहा था कि मेरे बाद तमाम लोगों को ये ज्ञान पहुँचाने की जिम्मेदारी तुम पर है।

وَلَمَّا جَاءَ مُوسَىٰ لِمِيقَاتِنَا وَكَلَّمَهُ رَبُّهُ قَالَ رَبِّ أَرِنِي أَنظُرْ إِلَيْكَ قَالَ لَن تَرَانِي وَلَـٰكِنِ انظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهُ فَسَوْفَ تَرَانِي فَلَمَّا تَجَلَّىٰ رَبُّهُ لِلْجَبَلِ جَعَلَهُ دَكًّا وَخَرَّ مُوسَىٰ صَعِقًا فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ سُبْحَانَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِينَ {143}

और जब मूसा हमारा वायदा पूरा करते आए और उनका परवरदिगार उनसे हम कलाम हुआ तो मूसा ने अर्ज़ किया कि अल्लाहया तू मेझे अपनी एक झलक दिखला दे कि मै तूझे देखूँ अल्लाह ने फरमाया तुम मुझे हरगिज़ नहीं देख सकते मगर हाँ उस पहाड़ की तरफ देखो पस अगर अपनी जगह पर क़ायम रहे तो समझना कि अनक़रीब मुझे भी देख लोगे फिर जब उनके परवरदिगार ने पहाड़ पर तजल्ली डाली तो उसको चकनाचूर कर दिया और मूसा बेहोश होकर गिर पड़े फिर जब होश में आए तो कहने लगे खुदा वन्दा तू पाक व पाकीज़ा है-मैंने तेरी बारगाह में तौबा की और मै सब से पहले तेरी अदम रवायत का यक़ीन करता हूँ (१४३)

व्याख्याः- कूदरत के नियुक्त किये हुए विशेष समय के बाद मुसा और कूदरत के दरमियान जो फासला था उसका दर्शन हुआ और दिव्यज्ञान की ज्योति प्राप्त हुई और इस ज्ञान के प्राप्त होने के बाद कुछ पल के लिये मुसा अच्छेम्बे में रह गये और उस सच्चे नूर के दीदार में मदहोश हो गये और सच्चाई पर ईमान और भी गहरा हुआ।

قَالَ يَا مُوسَى إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسَالَاتِي وَبِكَلَامِي فَخُذْ مَا آتَيْتُكَ وَكُن مِّنَ الشَّاكِرِينَ {144}

ऐ मूसा मैने तुमको तमाम लोगों पर अपनी पैग़म्बरी और हम कलामी बरगूज़ीदा किया है तब जा हमने तुमको अता की है उसे लो और शुक्रगुज़ार रहो (१४४)

व्याख्याः- कूदरत की तरफ से मुसा के जहन को ये हुकुम मिला कि सच्चे ज्ञान का प्रकाश लोगों में बांटे और खुद ज्ञान प्राप्त होने का शुक्र अदा करे।

وَكَتَبْنَا لَهُ فِي الْأَلْوَاحِ مِن كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَتَفْصِيلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوا بِأَحْسَنِهَا سَأُرِيكُمْ دَارَ الْفَاسِقِينَ {145}

और हमने तख़्तियों में मूसा के लिए हर तरह की नसीहत और हर चीज़ का तफसीलदार बयान लिख दिया था ता तुम उसे मज़बूती से अमल करो और अपनी क़ौम को हुक्म दे दो कि उसमें की अच्छी बातों पर अमल करें और बहुत जल्द तुम्हें बदकिरदारों का घर दिखा दूँगा (१४५)

व्याख्याः- कूदरत ने अपनी सच्चाई का निशान दुनिया के हर कोने में रखा है और इस सच्चाई को गहराई से लोगों तक पहुँचाना और अच्छा काम करना यही कूदरत का आदेश है और जो इस सच्चाई से इनकार करते है या इस पर झूठ बांधते है उसकी सजा कूदरत में ही मौजूद है।

سَأَصْرِفُ عَنْ آيَاتِيَ الَّذِينَ يَتَكَبَّرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَإِن يَرَوْا كُلَّ آيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوا بِهَا وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا وَإِن يَرَوْا سَبِيلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوهُ سَبِيلًا ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ {146}

जो लोग ज़मीन पर नाहक़ अकड़ते फिरते है उनको अपनी आयतों से बहुत जल्द फेर दूँगा और मै क्या फेरूँगा अल्लाह अगर दुनिया जहॉन के सारे मौजिज़े भी देखते तो भी ये उन पर इमान न लाएगें और सीधा रास्ता भी देख पाएँ तो भी अपनी राह न जाएगें और अगर गुमराही की राह देख लेगें तो झटपट उसको अपना तरीक़ा बना लेगें ये कजरवी इस सबब से हुयी कि उन लोगों ने हमारी आयतों को झुठला दिया और उनसे ग़फलत करते रहे (१४६)

व्याख्याः- और कूदरत ऐसे लोगों को अपने आशीर्वाद से अलग रखती है, जो दुनिया में घमंड करते है जिसका उनको कोई हक नहीं और अगर तमाम निशानियां देख भी ले तब भी ईमान न लायेंगे और अगर हिदायत का रास्ता देखे तो उसको अपना तरीका न बनाये और अगर गुमराही का रास्ता देखे तो उसको अपना तरीका बना ले और इसलिये कि उन्होंने कूदरत को झूठलाया और उससे गाफिल रहे।

पैगामः- अपनी जिद और अहंकार से सच्चाई को कबूल न करना कूफरियत है और अल्लाह की बेइजती भी।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَاءِ الْآخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {147}

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आख़िरत की हुज़ूरी को झूठलाया उनका सब किया कराया अकारत हो गया, उनको बस उन्हीं आमाल की जज़ा या सज़ा दी जाएगी जो वह करते थे (१४७)

व्याख्याः- और जो मानव अल्लाह के नियुक्त किये हुए मानवी कानून और इंसानियत के नियमों को और उसके साथ-साथ हर चीज फानी है यानी एक न एक दिन खत्म होना है उसको झुठलाते है। मानव को खुद समझ लेना चाहिये, ऐसी सोच पूरी तरह से व्यर्थ है। और ऐसे लोगों को उनके कर्मों की सजा जरूर मिलती है।

पैगामः- ऐसी सोच मानव को लोभी और उत्वाकांक्षी बना देती है।

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِن بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهُ خُوَارٌ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهُ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيهِمْ سَبِيلًا اتَّخَذُوهُ وَكَانُوا ظَالِمِينَ {148}

और मूसा की क़ौम ने उनके जाने के बाद अपने ज़ेवरों को एक बछड़े की मूरत बनाइ जिसमें गाए की सी आवाज़ थी क्या उन लोगों ने इतना भी न देखा कि वह न तो उनसे बात ही कर सकता और न किसी तरह की हिदायत ही कर सकता है और आप अपने ऊपर जुल्म करते थे (१४८)

व्याख्याः- मुसा ने जो सच्चाई अपनी उम्मत के लोगों को बताई थी उनके धर्म प्रचार में जाने के बाद उनकी उम्मती बेबनियाद और कुसंस्कार वाली बातों पर अमल करने लगे। वो लोग अपने अमाल में इतने अंधे हो गये थे और ये भुल गये थे कि जो कुछ कर रहे है उसमें से कोई अच्छा नतीजा नहीं निकल सकता। मानव समाज में ऐसा काम जिसका कोई अच्छा नतीजा न हो और समाज को कोई फायदा न हो सिवाये नुकसान के वो कभी भी अच्छा काम नहीं हो सकता।

وَلَمَّا سُقِطَ فِي أَيْدِيهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوا قَالُوا لَئِن لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ {149}

और जब वह पछताए और उन्होंने अपने को यक़ीनी गुमराह देख लिया तब कहने लगे कि अगर हमारा परदिगार हम पर रहम नहीं करेगा और हमारा क़ुसूर न माफ़ करेगा तो हम यक़ीनी घाटा उठाने वालों में हो जाएगें (१४९)

व्याख्याः- जब लोग ये समझेंगे और सच्चाई उनके सामने आ जायेगी तब वो अपने किये पर शर्मींदा हो जायेंगे और महसूस करेंगे की वो गुमराही पर थे। और अपने किये पर पश्चताप करते हुए माफी की उम्मीद रखेंगे मगर अफसोस जो नुकसान उनकी बदोलत हुआ था वक्त के अलावा किसी में ताकत नहीं कि इसकी भरपाई कर पाये।

وَلَمَّا رَجَعَ مُوسَى إِلَى قَوْمِهِ غَضْبَانَ أَسِفًا قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُونِي مِن بَعْدِيَ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيهِ يَجُرُّهُ إِلَيْهِ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونَنِي فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ {150}

और जब मूसा पलट कर अपनी क़ौम की तरफ आए तो रंज व गुस्से में कहने लगे कि तुम लोगों ने मेरे बाद बहुत बुरी हरकत की-तुम लोग अपने परवरदिगार के हुक्म किस कदर जल्दी कर बैठे और तख़्तियों को फेंक दिया और अपने भाई के सर के बालों को पकड़ कर अपनी तर फ खींचने लगे उस पर हारून ने कहा ऐ मेरे मांजाए मै क्या करता क़ौम ने मुझे हक़ीर समझा और बल्कि क़रीब था कि मुझे मार डाले तो मुझ पर दुश्मनों को न हँसवाइए और मुझे उन ज़ालिम लोगों के साथ न करार दीजिए (१५०)

व्याख्याः- जब मुसा अपने सम्प्रदाय के पास दुबारा वापस आये और कुसंस्कार वाली हरकतें देखकर उन्हें क्रोध और कष्ट हुआ और अपने लोगों से कहा कि ये बहुत घिनौना काम उन लोगों ने किया है और अपने भाई हारुण जिस पर अपनी उम्मत की जिम्मेदारी छोड़ कर गये थे उसे खूब धूतकारा मगर हारुण की मजबूरी ये थे कि लोगों ने इनकी बातों को नहीं सुना।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِأَخِي وَأَدْخِلْنَا فِي رَحْمَتِكَ وَأَنتَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ {151}

ऐ मेरे परवरदिगार मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल कर और तू सबसे बढ़के रहम करने वाला है (१५१)

व्याख्याः- मुसा ने अपने लिये और अपने भाई हारुण के लिये माफी मांगी।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَكَذَلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِينَ {152}

बेशक जिन लोगों ने बछड़े को बना लिया उन पर अनक़रीब ही उनके परवरदिगार की तरफ से अज़ाब नाज़िल होगा और दुनियावी ज़िन्दगी में ज़िल्लत और हम बोहतान बाँधने वालों की ऐसी ही सज़ा करते हैं (१५२)

व्याख्याः- कु-संस्कार और समाज को नुकसान देनी वाली बातों पर जिसने यकीन किया उस पर कूदरत का प्रकोप और अपमान निश्चित रूप से लिखा होता है और झुठ बांधने वालों के लिये सजा।

पैगामः- कु-संस्कार और मूर्खता की प्रतीक है जेवरात (धोखे से कमाई हुई दौलत) और गाय। दुनिया में जो लोग इसका शिकार है उस पर अल्लाह का आजाब साफ दिखता है। मूर्खता और कु-संस्कार में डूबे हुए लोग दुनिया की तरक्की की खुशी से वर्जित है और वो आपस में लड़कर और मूर्खता में अंधे होकर अपना ही नुकसान उठाते रहते है।

وَالَّذِينَ عَمِلُوا السَّيِّئَاتِ ثُمَّ تَابُوا مِن بَعْدِهَا وَآمَنُوا إِنَّ رَبَّكَ مِن بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ {153}

और जिन लोगों ने बुरे काम किए फिर उसके बाद तौबा कर ली और इमान लाए तो बेशक तुम्हारा परवरदिगार तौबा के बाद ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है (१५३)

व्याख्याः- और जो लोग अपने जीवन का कुछ हिस्सा पाप कार्य करने में बिताया वो अगर तौबा कर ले और दुबारा पाप न करने का इरादा करे और सच्चाई पर ईमान लाये तो उन्हें जरूर जहनी सकून हासिल होगा यानी कूदरत इन्हें जरूर माफ कर देगी।

وَلَمَّا سَكَتَ عَن مُّوسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ وَفِي نُسْخَتِهَا هُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُونَ {154}

और जब मूसा का गुस्सा ठण्डा हुआ तो तौरैत की तख़्तियों को उठा लिया और तौरैत के नुस्खे में जो लोग अपने परवरदिगार से डरते है उनके लिए हिदायत और रहमत है (१५४)

व्याख्याः- जब मुसा का घुस्सा ठंडा हुआ तब वो सच्चाई के प्रचार में जुट गये जिसे लोगों ने भुला दिया था।

وَاخْتَارَ مُوسَى قَوْمَهُ سَبْعِينَ رَجُلاً لِّمِيقَاتِنَا فَلَمَّا أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُم مِّن قَبْلُ وَإِيَّايَ أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَاءُ مِنَّا إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ تُضِلُّ بِهَا مَن تَشَاءُ وَتَهْدِي مَن تَشَاءُ أَنتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنتَ خَيْرُ الْغَافِرِينَ {155}

और मूसा ने अपनी क़ौम से हमारा वायदा पूरा करने को सत्तर आदमियों को चुना फिर जब उनको ज़लज़ले ने आ पकड़ा तो अर्ज़ किया परवरदिगार अगर तू चाहता तो मुझको और उन सबको पहले ही हलाक कर डालता क्या हम में से चन्द बेवक़ूफ़ों की करनी की सज़ा में हमको हलाक करता है ये तो सिर्फ तेरी आज़माइश थी तू जिसे चाहे उसे गुमराही में छोड़ दे और जिसको चाहे हिदायत दे तू ही हमारा मालिक है तू ही हमारे क़ुसूर को माफ कर और हम पर रहम कर और तू तो तमाम बख़्शने वालों से कहीं बेहतर है (१५५)

व्याख्याः- हर समाज में कुछ बेवकुफ लोग होते है जो अपना और समाज का भला-बुरा नहीं समझते और ये न मुमकिन है के चंद बेवकुफों के लिये सारे समाज को गुनहगार ठहराया जाए। ये तो एक समाजिक इम्तिहान है जो किसी को बेवकुफी में ढकेल देता है और किसी को ईमान पर कायम रखता है और अल्लाह क्षमा करने वालों में से है।

وَاكْتُبْ لَنَا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ إِنَّا هُدْنَا إِلَيْكَ قَالَ عَذَابِي أُصِيبُ بِهِ مَنْ أَشَاءُ وَرَحْمَتِي وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِينَ يَتَّقُونَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَالَّذِينَ هُم بِآيَاتِنَا يُؤْمِنُونَ {156}

और तू ही इस दुनिया और आख़िरत में हमारे वास्ते भलाई के लिए लिख ले हम तेरी ही तरफ रूझू करते है अल्लाह ने फरमाया जिसको मै चाहता हूँ अपना अज़ाब पहुँचा देता हूँ और मेरी रहमत हर चीज़ पर छाई है मै तो उसे बहुत जल्द ख़ास उन लोगों के लिए लिख दूँगा जो बुरी बातों से बचते रहेंगे और ज़कात दिया करेंगे और जो हमारी बातों पर ईमान रखा करेंगें (१५६)

व्याख्याः- नेक लोगों को नेकी के बदले शान्ति हासिल होती है और जिन्दगी की आखरत में भी शान्ति की मृत्यु हासिल होती है और अल्लाह के नियमों की तरफ कामयाबी से जो अपनी जिन्दगी को रजू करते है उसे अल्लाह की तरफ से रहम और खुशहाली मिलती है और अल्लाह जिसे चाहे तकलीफ दे और जिसे चाहे खुशी दे। नेक मानव के लिये रहमत है जो अल्लाह के नियमों को पूरी तरह से अपनाते है और जकात (हकुमत वालों की तरफ से जो टैक्स मुकर्रर किया गया) अदा करते है।

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِندَهُمْ فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ يَأْمُرُهُم بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَاهُمْ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبَاتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبَائِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلَالَ الَّتِي كَانَتْ عَلَيْهِمْ فَالَّذِينَ آمَنُوا بِهِ وَعَزَّرُوهُ وَنَصَرُوهُ وَاتَّبَعُوا النُّورَ الَّذِي أُنزِلَ مَعَهُ أُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ {157}

जो लोग हमारे नबी उम्मी पैग़म्बर के क़दम बा क़दम चलते है जिस को अपने हाँ तौरैत और इन्जील में लिखा हुआ पाते है जो अच्छे काम का हुक्म देता है और बुरे काम से रोकता है और जो पाक व पाकीज़ा चीज़े तो उन पर हलाल और नापाक गन्दी चीज़े उन पर हराम कर देता है और बोझ जो उनकी गर्दन पर था और वह फन्दे जो उन पर थे उनसे हटा देता है पस जो लोग इमान लाए और उसकी इज़्ज़त की और उसकी मदद की और उस नूर की पैरवी की जो उसके साथ नाज़िल हुआ है तो यही लोग अपनी दिली मुरादे पाएँगे (१५७)

व्याख्याः- ज्ञान खुद एक नबी है और जो लोग ज्ञान की ताबेदारी करते है चाहे वो किसी के पास से ही क्यों न आये जैसे की कोई उम्मी (न जानने वाला) व्यक्ति ज्ञान की बाते करें और अच्छे कामों के लिये लोगों को उत्साहित करे और बुरे कामों से रोके और मानव के लिये जो लाभकारी नहीं है उसे हराम करार दे और जो लाभकारी है उसे मानव के इस्तेमाल के लिये लाये। अयौगतिक और कु-संस्कार वाली बातों से रोके जो मानवी समाज के लिये बोझ और जंजीर की तरह है और जो लोग नेक और सच्चे ज्ञान के फैलाव में मदद करे। ज्ञान एक नूर है उसे समझे और अपने ऊपर लागू करे तो वही मानव एक कामयाब मानव है और इस बात को तोरायत और इंजील में भी कहा गया है।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ فَآمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ {158}

तुम कह दो कि लोगों में तुम सब लोगों के पास उस अल्लाह का भेजा हुआ पैग़म्बर हूँ जिसके लिए ख़ास सारे आसमान व ज़मीन की बादशाहत है उसके सिवा और कोई माबूद नहीं वही ज़िन्दा करता है वही मार डालता है पस

अल्लाह और उसके रसूल नबी उल उम्मी पर ईमान लाओ जो ख़ुदा पर और उसकी बातों पर ईमान रखता है और उसी के क़दम बा क़दम चलो ताकि तुम हिदायत पाओ (१५८)

व्याख्याः- मानव समझ ले कि सच्चा ज्ञान जो मानव समाज में ही किसी विशेष मानव के दिमाग से होते हुए उसकी जुबान से अदा होकर लोगों तक पहुँचा और ऐसा सच्चा ज्ञान अल्लाह की तरफ से ही आता है और ये सच्चा ज्ञान रसुलों की जुबान से ब्यान होता है और इस ब्यान का मालिक आसमान और जमीन का भी मालिक है। इस ज्ञान के मालिक की ही इबादत करनी चाहिये जो जिन्दगी और मौत का भी मालिक है। यकीनन मानव को ईमान लाना चाहिये उस नूर पर और उस ताकत पर जिसने मानव के दिमाग को सच्चे ज्ञान से रौशन किया है।

पैगामः- मानव की नजर में जिसने दुनियायी तालिम हासिल की हुई है वही ज्ञानी है मगर मानव के जानकारी के बाहर भी बहुत सारे ऐसे राज है जो अभी भी मानव का दिमाग अविष्कार नहीं कर पाया। जो राज मानव के दिमाग से अब तक नहीं निकला उस राज के लिये मानव उम्मी (न जानने वाला) है। इस लिहाज से मजहबी ज्ञान रसुलों के दिमाग से निकलने से पहले रसुल उस ज्ञान के लिये उम्मी थे।

وَمِن قَوْمِ مُوسَى أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ {159}

और मूसा की क़ौम के कुछ लोग ऐसे भी है जो हक़ बात की हिदायत भी करते हैं और हक़ के इन्साफ़ भी करते है (१५९)

व्याख्याः- और मुसा के सम्प्रदाय में भी ऐसे लोग मौजूद थे जो सच्चा ज्ञान रखते थे।

وَقَطَّعْنَاهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى إِذِ اسْتَسْقَاهُ قَوْمُهُ أَنِ اضْرِب بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَأَنزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوَى كُلُوا مِن طَيِّبَاتِ مَا رَزَقْنَاكُمْ وَمَا ظَلَمُونَا وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ {160}

और हमने बनी ईसराइल की औलाद को जुदा जुदा बारह सम्प्रदाय बना दिए और जब मूसा की क़ौम ने उनसे पानी माँगा तो हमने उनके पास वही भेजी कि तुम अपनी छड़ी पत्थर पर मारो कि उस पत्थर से पानी के बारह चश्मे फूट निकले और ऐसे साफ साफ अलग अलग कि हर क़बीले ने अपना अपना घाट मालूम कर लिया और हमने बनी ईसराइल पर अब्र का साया किया और उन पर मन व सलवा नाज़िल की जो पाक चीजे़ तुम्हें दी है उन्हें शौक़ से खाओ पियो और उन लोगों ने कुछ हमारा नहीं बिगाड़ा बल्कि अपना आप ही बिगाड़ते है (१६०)

व्याख्याः- जिसमानी साख्त के अनुसार मानव को बारह किस्मों की जिस्मानी साख्त और शकल कूदरत की तरफ से मिली और मुसा ने कूदरत के नियमों को समझते हुए मानव को यानी अपने करीब के लोगों को उनकी मांग पर ये हिदायत (पानी) दी कि मानव के दरमियान मानव के हर किसी मानवी साख्त और शकल मौजूद है और हर कोई अपने-अपने तरीके से अपनी जिन्दगी जीता है और किसी के ऊपर जो नेक है वो प्रकृति की शान्ति की छाव तले रहते है और ये उन्हें अपने नेकी के सबब मिलता है यानी चैन और सुकुन (मन व सलवा) और जो लोग कूदरती असुलों को नहीं मानते वो अपना ही नुकसान करते है।

وَإِذْ قِيلَ لَهُمُ اسْكُنُوا هَٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ وَادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَاتِكُمْ سَنَزِيدُ الْمُحْسِنِينَ {161}

और जब उनसे कहा गया कि उस गाँव में जाकर रहो सहो और उसके मेवों से जहाँ तुम्हारा जी चाहे खाओ पियो और मुँह से हुतमा कहते और सजदा करते हुए दरवाजे़ में दाखिल हो तो हम तुम्हारी ख़ताए बख़्श देगें और सभ्यी करने वालों को हम कुछ ज़्यादा ही देगें (१६१)

व्याख्याः- कूदरत की तरफ से मानव को हुकुम है कि वो अपनी पैदाइश की जगह का वफादार रहे यानी जहा वो पैदा हुआ है और इस जगह की तहजीब, खुराक और इस समाज का एहतराम करे और अपने गुनाहों से तौबा करें। ज्ञान हासिल करे और झुक कर लोगों से मिले यानी अहंकार न करे, मानवों की छोटी गलतियों को गुनाह का शकल न दे अल्लाह गलतियों को माफ करता है गुनाहों को नहीं और इस तरह मानव को हुकुम है कि वो अमन के शहर में दाखिल हो जाए उसमें रहें और जितना उसे मिले उसपर खुश रहे।

فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَظْلِمُونَ {162}

तो ज़ालिमों ने जो बात उनसे कही गई थी उसे बदल कर कुछ और कहना शुरू किया तो हमने उनकी शरारतों की बदौलत उन पर आसमान से अज़ाब भेज दिया (१६२)

व्याख्याः- जुल्म करने वालों ने हर वक्त नेक और परहेजगार लोगों को बदलने की कोशिश करते है अपने झुठे असुलों के द्वारा, जो प्राकृतिक असुलों के विपरीत होता है। ऐसे झुठे लोगों पर प्राकृतिक आजाब जो आसमान की तरह विशाल होता है। सच्चाई को बिगाड़ने की कोशिश मानव समाज को फसाद की तरफ ढकेल देती है और अत्याचारी ये काम बखूबी करते है।

وَاسْأَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِي كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ إِذْ يَعْدُونَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيهِمْ حِيتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَيَوْمَ لَا يَسْبِتُونَ لَا تَأْتِيهِمْ كَذَٰلِكَ نَبْلُوهُم بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ {163}

उनसे ज़रा उस गाँव का हाल तो पूछो जो दरिया के किनारे वाक़ऐ था जब ये लोग उनके बुर्जुग शुम्बे (सनीचर) के दिन ज़्यादती करने लगे कि जब उनका शुम्बे दिन होता तब तो मछलियाँ सिमट कर उनके सामने पानी पर उभर के आ जाती और जब उनका शुम्बा दिन न होता तो मछलियाँ उनके पास ही न फटकती और चूँकि ये लोग बदचलन थे उस दरजे से हम भी उनकी यूँ ही आज़माइश किया करते थे (१६३)

व्याख्याः- समुंदर के किनारे रहने वाले लोग मछली पकड़ने में या खुराक के तौर पर मछली का इस्तेमाल करने में हद से न बढ़े। हफ्ते के आखिरी दिन यानी शनिवार को मछली पकड़ने का हिसाब-किताब रखे और ध्यान रखे कि मछली पर कोई ज्यादती न हो।

पैगामः- कहा जाता है कि कुरान शरीफ परिपूर्ण पुस्तक है मगर इस आयत के तर्जुमो के अनुसार की ये आयत आज के दौर में भी परिपूर्ण है। किसी कहानी की बुनियाद पर कुरान-शरीफ नहीं टिका हुआ है। कुरान-शरीफ की आयतों का एक खास और निजी मुकाम है जो मैं (सिद्धार्थ चटर्जी) बयान कर रहे है और यही इसका असली पैगाम है।

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُونَ قَوْمًا اللَّهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا قَالُوا مَعْذِرَةً إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ {164}

और जब उनमें से एक जमाअत ने कहा कि जिन्हें अल्लाह हलाक करना या सख़्त अज़ाब में मुब्तिला करना चाहता है उन्हें क्यो नसीहत करते हो तो वह कहने लगे कि फक़त तुम्हारे परवरदिगार में इल्ज़ाम से बचाने के लिए शायद इसलिए कि ये लोग परहेज़गारी एख़्तियार करें (१६४)

व्याख्याः- मानव के दरमियान सच्चाई बताने वाले लोग जब कु-संस्कार में डूबे हुए लोगों को सच्चाई समझाने की कोशिश करते है तब समाज के ही कुछ लोग उसे रोकने की कोशिश करते है डर के मारे क्योंकि कु-संस्कार में डूबे हुए और जाहिलों को अकल नहीं होती सच्चाई को समझने के बजाय जो सच्चाई बयान करने वालों को मारने के लिये खड़े हो जाते है।

فَلَمَّا نَسُوا مَا ذُكِّرُوا بِهِ أَنجَيْنَا الَّذِينَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوءِ وَأَخَذْنَا الَّذِينَ ظَلَمُوا بِعَذَابٍ بَئِيسٍ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ {165}

फिर जब वह लोग जिस चीज़ की उन्हें नसीहत की गई थी उसे भूल गए तो हमने उनको तो नजात दे दी जो बुरे काम से लोगों को रोकते थे और जो लोग ज़ालिम थे उनको उनकी बद चलनी की वजह से बड़े अज़ाब में गिरफ्तार किया (१६५)

व्याख्याः- सच्चाई को इनकार करने वाला किसी भी हिदायत को नहीं मानते और जितना भी उन्हें समझाया जाय वो अपने अंधविश्वास से पीछे नहीं हटते। हर बुरा काम जो तहजीब के दायरे को पार करता है ऐसे लोग इन कामों में उलझे हुए रहते है और कूदरत का आजाब इन्हें घेर लेता है और इनके जीवन में अशान्ति छा जाती है।

فَلَمَّا عَتَوْا عَن مَّا نُهُوا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ {166}

फिर जिस बात की उन्हें मुमानिअत की गई थी जब उन लोगों ने उसमें सरकशी की तो हमने हुक्म दिया कि तुम ज़लील और राएन्दे धुत्कारे हुए बन्दर बन जाओ (१६६)

व्याख्याः- ऐसे लोग वो काम करते है जिससे उन्हें और समाज को नुकसान पहुँचता है। ऐसे कामों से जब उन्हें रोका जाये तब ये लोग बन्दर की तरह ढीट हरकतें करने लगते है।

पैगामः- रामायण में ऐसे लोगों का जिक्र पाया जाता है जो बन्दरों की तरह हरकतें किया करते थे तथा उनकी शकल और सूरत भी बन्दरों की तरह ही थी।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَن يَسُومُهُمْ سُوءَ الْعَذَابِ إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيعُ الْعِقَابِ وَإِنَّهُ لَغَفُورٌ رَّحِيمٌ {167}

जब तुम्हारे परवरदिगार ने पुकार पुकार के कह दिया था कि वह क़यामत तक उन पर ऐसे हाकिम को मुसल्लत रखेगा जो उन्हें बुरी बुरी तकलीफें देता रहे इसमें तो शक ही नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बहुत जल्द अज़ाब करने वाला है और बड़ा बख़्शने वाला भी है (१६७)

व्याख्याः- पापी, अत्याचार करने वाले याद रखें कि मानव समाज और प्रकृति में इनका काम कभी भी सम्मानित नहीं होता और असम्मनित जीवन व्यतीत करने वालों के लिए बड़ा ही कठिन अभिश्राप है। इनकी शांति और सुख प्राकृतिक तौर पर छीन ली जाती है और अल्लाह माफ करने वाला दयालु है।

وَقَطَّعْنَاهُمْ فِي الأَرْضِ أُمَمًا مِّنْهُمُ الصَّالِحُونَ وَمِنْهُمْ دُونَ ذَلِكَ وَبَلَوْنَاهُمْ بِالْحَسَنَاتِ وَالسَّيِّئَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ {168}

और हमने उनको रूए ज़मीन में तितिर बितिर कर दिया उनमें के कुछ लोग तो सभ्य है और कुछ लोग और तरह के है और हमने उन्हें सुख और दुख से आज़माया ताकि वह बाज़ आए (१६८)

व्याख्याः- दुनिया में मानवों के दरमियान दो ही तरह का समाज मौजूद है कुछ मानव अच्छाई और खुशहाली में रहते है और कुछ मानवों का हाल बहुत बुरा है। ये दोनों हाल के लोगों को कूदरती अजमाइश से गुजरना पड़ता है ताकी वो हक को समझे और सच्चाई का रास्ता कबूल करे।

पैगामः- मानव समाज में ऐसे लोग मौजूद है जो जहलात, बीमारी, कु-संस्कार और नफरत का शिकार है और अपनी हालात से वाकीफ न होकर दूसरों पर इल्जाम लगाते रहते है। फसाद और नफरत की आग से मानव समाज को गंदा करते रहते है। हमेशा अपने आपको बड़ा और दूसरों को छोटा साबित करने में लगे रहते है। कूदरत के जरिया जो हाल अल्लाह वक्तन-फकतन मानवों को बयान करते है इस हाल से ऐसे लोग इत्तेफाख नहीं रखते।

فَخَلَفَ مِن بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَرِثُوا الْكِتَابَ يَأْخُذُونَ عَرَضَ هَذَا الأَدْنَى وَيَقُولُونَ سَيُغْفَرُ لَنَا وَإِن يَأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهُ يَأْخُذُوهُ أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِم مِّيثَاقُ الْكِتَابِ أَن لاَّ يَقُولُوا عَلَى اللّهِ إِلاَّ الْحَقَّ وَدَرَسُوا مَا فِيهِ وَالدَّارُ الآخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِينَ يَتَّقُونَ أَفَلاَ تَعْقِلُونَ {169}

फिर उनके बाद कुछ जानशीन हुए जो किताब के वारिस बने और अल्लाह के एहकामे को बदलकर उसके ऐवज़ सामान ले लेते हैं कहते हैं कि हम तो अनक़रीब बख़्श दिए जाएँगें अगर उनके पास भी वैसा ही दूसरा सामान आ जाए तो उसे ले ही लें क्या उनसे किताब का एहदो पैमान नहीं लिया गया था कि अल्लाह पर सच के सिवा झूठ नहीं कहेगें और जो कुछ उस किताब में है उन्होंने पढ़ लिया है और आख़िर का घर तो उन्हीं लोगों के वास्ते ख़ास है जो परहेज़गार है तो क्या तुम इतना भी नहीं समझते (१६९)

व्याख्याः- ऐसे लोग हमेशा के लिये समाज में मौजूद नहीं रहते। मानव क्रांति इनक्लाब बनकर ऐसे लोगों को हटा देती है। कूदरत या अल्लाह पर झुठ बांध कर यानी अल्लाह के नियमों को जो पुस्तक के द्वारा लोगों के बीच मौजूद है, उसके बदले दौलत हासिल करने का प्रयास करते है। अल्लाह की सच्चाई को कोई भी बदल नहीं सकता, जो लोग नहीं समझते। जो नेक काम करेगा उसे नेक नतीजा और शान्ति मिलेगी। क्या इस असुल को लोग नहीं समझते।

وَالَّذِينَ يُمَسِّكُونَ بِالْكِتَابِ وَأَقَامُوا الصَّلاَةَ إِنَّا لاَ نُضِيعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِينَ {170}

और जो लोग किताब को मज़बूती से पकड़े हुए है और पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं हम हरगिज़ सभ्योकारो का सवाब बरबाद नही करते (१७०)

व्याख्याः- और जिन लोगों ने अल्लाह के असुलों को जो मानव के लिये नियुक्त किये गये है (प्रेम, मानवता, शिक्षा, पवित्रता, अहिंसा, भाईचारा, ईमानदारी और शांति) उनका सख्ती से पालन करे और इन नियमों के आगे अपना सर झुका दे यानी (नमाज) इन नियमों के आगे किसी भी ख्यालात को कोई एहमियत न दे यानी इन नियमों के लिये किसी किस्म की तकलीफ भी उठा ले। यानी इस असुल के साथ किसी भी असुल का सौदा न करे यकीनन अल्लाह या उनकी कूदरत ऐसे लोगों को शान्ति की जिन्दगी बख्शते है।

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَاكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ {171}

तो जब हम ने उन पर पहाड़ को इस तरह लटका दिया कि गोया साएबान था और वह लोग समझ चुके थे कि उन पर अब गिरा और हमने उनको हुक्म दिया कि जो कुछ हमने तुम्हें अता किया है उसे मज़बूती से पकड़ लो और जो कुछ उसमें लिखा है याद रखो ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ (१७१)

व्याख्याः- जमीन के पानी को भाप बनाकर पहाड़ की तरह विशाल बादलों को आसमान में रखा गया (और कूदरत ने मानव को अपनी मेहरबानी के दायरे में रखा) और मानव को दिमाग दिया ताकी वो सही गलत की पहचान कर सके और सही गलत के असुलों को पुस्तक की शकल में मानवों के बीच रखा और इन्हीं असुलों को मानव याद रखे और परहेजगार बने और इन असुलों के तले शांति की ठंडी छाव होती है।

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِن بَنِي آدَمَ مِن ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَى أَنفُسِهِمْ أَلَسْتَ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَى شَهِدْنَا أَن تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَذَا غَافِلِينَ {172}

जब तुम्हारे परवरदिगार ने आदम की औलाद से बस्तियों से उनकी औलाद से खुद उनके मुक़ाबले में एक़रार कर लिया कि क्या मैं तुम्हारा परवरदिगार नहीं हूँ तो सब के सब बोले हाँ हम उसके गवाह हैं ये हमने इसलिए कहा कि ऐसा न हो कहीं तुम क़यामत के दिन बोल उठो कि हम तो उससे बिल्कुल बे ख़बर थे (१७२)

व्याख्याः- और जब सृष्टि की शुरुआत में एक कोशी (कोशिका/cell) वाली प्राणी से अनेक कोशी वाले प्राणियों की सृष्टि हुई, उस वक्त से ही प्राणियों की प्रतिपालन की जिम्मेदारी कूदरत यानी अल्लाह ने अपने पास रखी (यानी सही शकल दी) और कूदरत के इस चमत्कार की गवाही सृष्टि के हर कोने में मौजूद है। और जब दुनिया खत्म हो जायेगी तब कोई भी ये नहीं कह सकता कि वो इस बात से बेखबर थे।

أَوْ تَقُولُوا إِنَّمَا أَشْرَكَ آبَاؤُنَا مِن قَبْلُ وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّن بَعْدِهِمْ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُونَ {173}

या ये कह बैठो कि हमारे तो बाप दादाओं ही ने पहले शिर्क किया था और हम तो उनकी औलाद थे उनके बाद दुनिया में आए तो क्या हमें उन लोगों के जुर्म की सज़ा में हलाक करेगा जो पहले ही बातिल कर चुके (१७३)

व्याख्याः- और कोई भी ये नहीं कह सकता कि अल्लाह के नियमों के खिलाफी यानी शिर्क उन्हें विरासत में मिला और पूरवजों से गुनाहों को अपने आगे वाली नसल को पहुँचाने की जिम्मेदारी कोई नहीं उठाता क्योंकि कोई भी अपनी बर्बादी की जिम्मेदारी खुद पर नहीं लेता।

पैगामः- हर मानव की श्रृष्टि का वैज्ञानिक और प्राकृतिक तथ्य एक ही है और इस बात पर मानव सम्प्रदाय के बीच भेदभाव की श्रृष्टि करना महापाप है। परंपरा और कुसंस्कार के नाम पर मानवता की हत्या करना और इस पर अपने पूर्वजों का नाम डाल देना मूर्खता है, इस्लाम इस बात के विरूद्ध है।

وَكَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ {174}

और हम यूँ अपनी आयतों को तफसीलदार बयान करते हैं और ताकि वह लोग बाज़ आएँ (१७४)

व्याख्याः- और कूदरती नियम मानवों के सामने साफ और खुले तौर पर मौजूद है ताकि वो उन्हें समझे और गुनाह छोड़ कर नेकी की तरफ वापस आये।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا فَانسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَاوِينَ {175}

और तुम उन लोगों को उस शख़्स का हाल पढ़ कर सुना दो जिसे हमने अपनी आयतें अता की थी फिर वह उनसे निकल भागा तो शैतान ने उसका पीछा पकड़ा और आख़िरकार वह गुमराह हो गया (१७५)

व्याख्याः- गुनाह की नतीजे की मिशाल बयान करके गुनहगारों को सुनाना चाहिये और ये काम वो कर सकता है जिसे अल्लाह के नियमों की सच्चाई और फायदा खुद महसूस हो यानी अल्लाह की आयते जिसे मिली शैतानी विवेक यानी बुरा विवेक हमेशा से ही मानव वजूद के साथ मौजूद है। जो मानव इस विवेक की गुलामी कबुल करते है वो खुद मुसीबत में है।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ إِن تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَث ذَّلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ {176}

और अगर हम चाहें तो हम उसे उन्हें आयतों की बदौलत बुलन्द मरतबा कर देते मगर वह तो ख़ुद ही पस्ती की तरफ झुक पड़ा और अपनी नफसानी ख़्वाहिश का ताबेदार बन बैठा तो उसकी मसल है कि अगर उसको धुत्कार दो तो भी ज़बान निकाले रहे और उसको छोड़ दो तो भी ज़बान निकले रहे ये मसल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया तो ये क़िस्से उन लोगों से बयान कर दो ताकि ये लोग खुद भी ग़ौर करें (१७६)

व्याख्याः- मोह-माया में जकड़ा हुआ मानव सच्चाई से मुँह फेर कर अपने इन्द्रियां के वश में आ जाता है। इन्द्रियों को अपने वश में करने की ताकत उसमें नहीं होती और वो कुत्तों की तरह लालच में आकर अपनी जुबान बाहर निकालता रहता है (कुत्ते की एक एहम फितरत ये है कि वो अपने खुराक देखते ही अपनी जुबान बाहर निकाल देता है और खाने पर टूट पड़ता और साथ में हाफने लगता है)। और दुनिया की मोह-माया मानव को कुत्ते की तरह बना देती है, ऐसे लोगों का हाल अशान्ति पर दम तोड़ देता है और जिन लोगों ने अल्लाह के नियमों को झुठा साबित करने की कोशिश करते है उनका हाल भी ऐसा ही होता है फिर भी वो सोचते नहीं।

سَاءَ مَثَلًا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَأَنفُسَهُمْ كَانُوا يَظْلِمُونَ {177}

जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया है उनकी भी क्या बुरी मसल है और अपनी ही जानों पर सितम ढाते रहे (१७७)

व्याख्याः- जो मानव अल्लाह के कूदरती नियमों को ठुकराते है वो अपना ही नुकसान करते है।

مَن يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي وَمَن يُضْلِلْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ {178}

राह पर बस वही शख़्स है जिसकी अल्लाह हिदायत करे और जिनको गुमराही में छोड़ दे तो वही लोग घाटे में है (१७८)

व्याख्याः- मानव को रंग-बिरंगी जिन्दगी देने के लिये कूदरत ने कुछ लोगों की फितरत अच्छी रखी और कुछ लोगों की बुरी। मानव को ये शक्ति कुछ हद तक कूदरत ने दी है कि वो अपनी मर्जी से नेकी का रास्ता इख्तियार करे। और जो शैतानी फितरत यानी बुरे असुलों को कबूल करते है वही काफिर है और वही शिर्क करते है।

सवालः- १. इस आयत के वर्तमान तर्जुमा के अनुसार अच्छा और बुरा रास्ता सब अल्लाह की मर्जी से लोग इख्तियार करते है तो सवाल ये है कि जब मानव के हाथ में कुछ भी नहीं है तो किसी को सजा और किसी को जजा क्या अल्लाह न इंसाफी कर सकता है?

२. क्या अल्लाह के नियमों में भेदभाव पाया जाता है? जब सब कुछ मुकरर्र शुदा है तो मानव के अमाल का कोई वजूद नहीं हुआ। अल्लाह ने मानव को दिमाग दिया उसका क्या होगा? ये सारी ज्ञान की बाते, ये सारी मजहबी पुस्तके क्या हक रखती है? हकीकत तो ये है कि अल्लाह यानी कूदरत ने मानव को दिमाग दिया, सही-गलत की पहचान दी और साथ में उसके दिमाग में मोह, माया, लालच, हषद और नफरत भी डाल दी। जब ये सारी बाते मानव को गुनाह की तरफ ले जाती है तब कूदरती तौर पर वो गुनहगार बन जाता है। लेकिन जब ये सारी बाते नेकी से हार जाती है यानी मानव के दिमाग में ही नेक सोच के आगे बदी यानी बुरी सोच की शिकस्त होती है तब वो अच्छे रास्ते पर होता है। गलतियों का एहसास मानव को गुनाह की तरफ नहीं ले जा सकता जिसे गलतियों का एहसास होता है वो गुनाह की तरफ नहीं जाता।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ لَهُمْ قُلُوبٌ لَّا يَفْقَهُونَ بِهَا وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُونَ بِهَا وَلَهُمْ آذَانٌ لَّا يَسْمَعُونَ بِهَا أُولَٰئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ أُولَٰئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ {179}

और गोया हमने बहुतेरे जिन्नात और आदमियों को जहन्नुम के वास्ते पैदा किया और उनके दिल तो है उन से देखते ही नहीं और उनके कान भी है उनसे सुनने का काम ही नहीं लेते ये लोग गोया जानवर हैं बल्कि उनसे भी कहीं गए गुज़रे हुए यही लोग से बिल्कुल बेख़बर हैं (१७९)

व्याख्याः- कूदरत यानी अल्लाह ने कूदरती तौर पर ऐसे बहुत सारे मानवों की सृष्टि की है जिनकी फितरत हमेशा गुनाह या लालच की तरफ झुकी रहती है और कभी-कभी अपने बुरे ख्यालात में या मकसद में उन्हें कामयाबी हासिल हो जाती है। एक अदृश्य शक्ति बुरे कामों में कामयाबी दिलाती रहती है और ऐसे मानव और ऐसी शक्ति हमेशा से ही अशान्ति की आग में जलती रहती है, ऐसे लोग हकीकत को नहीं समझते। और उनकी आंख, कान और सारी इंद्रियां सच्चाई का मजा नहीं ले सकती, चोपाहे जीव की तरह और यही लोग गलत रास्ते पर है।

وَلِلَّهِ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ فَادْعُوهُ بِهَا وَذَرُوا الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي أَسْمَائِهِ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {180}

और अच्छे नाम अल्लाह ही के ख़ास है तो उसे उन्हीं नामों में पुकारो और जो लोग उसके नामों में कुफ़्र करते है उन्हें छोड़ दो और वह बहुत जल्द अपने करतूत की सज़ाएँ पाएँगे (१८०)

व्याख्याः- कूदरत में अल्लाह के अच्छे-अच्छे पैगाम मौजूद है जैसे कि प्रेम, मानवता, शिक्षा, पवित्रता, अहिंसा, भाईचारा, ईमानदारी और शांति और इन सारे अमाल के द्वारा मानव अल्लाह को और उसकी सच्चाई को पा सकता है और ऐसे लोगों के साथ दोस्ती नहीं रखनी चाहिए जो अल्लाह के नियमों के खिलाफ काम करके मानव समाज में अशान्ति और नफरत का बीज बोते है, ऐसे लोगों को उनके काम का नतीजा जरूर मिलता है।

पैगामः- किसी भी शक्ति या चीज का नाम देना इंसानी जरूरत है और उस अस्तित्व का नाम देकर मानव उसे अलग-अलग तरीका से पहचानते है और इसी तरह मानव अल्लाह के अलग-अलग नाम देकर सर्वशक्तिमान की प्रार्थना करते है।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَا أُمَّةٌ يَهْدُونَ بِالْحَقِّ وَبِهِ يَعْدِلُونَ {181}

और हमारी मख़लूक़ात से कुछ लोग ऐसे भी है जो दीने हक़ की हिदायत करते है और हक़ से इन्साफ़ भी करते है (१८१)

व्याख्याः- और अल्लाह यानी कूदरत के बनाये हुए मानव समाज में ऐसे लोग भी मौजूद है जो सच्चाई के अनुसार हिदायत करते है और इसके मुआफिक इंसाफ भी करते है।

وَالَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُم مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ {182}

और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया हम उन्हें बहुत जल्द इस तरह आहिस्ता आहिस्ता जहन्नुम में ले जाएँगें कि उन्हें ख़बर भी न होगी (१८२)

व्याख्याः- और जो लोग अल्लाह के नियमों को झुठा और गलत साबित करने की कोशिश करते है इन्हें कूदरती तौर पर धीरे-धीरे कु-संस्कार के अंधेरे में डुबा देते है और इनका जीवन अशान्त हो जाता है।

وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ {183}

और मै उन्हें ढील दूँगा बेशक मेरी तदबीर मज़बूत है (१८३)

व्याख्याः- कुछ दिनों तक ऐसे लोगों को जरूर मोहलत मिलती है मगर कूदरत के असुल यानी अल्लाह का फैसला बहुत पक्का है।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا مَا بِصَاحِبِهِم مِّن جِنَّةٍ إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ {184}

क्या उन लोगों ने इतना भी ख़्याल न किया कि आख़िर उनके रफीक़ को कुछ जुनून तो नहीं वह तो बस खुल्लम खुल्ला डराने वाले है (१८४)

व्याख्याः- क्या गुनहगार लोग गौर नहीं करते नेक लोगों की तरफ। नेक लोगों का शान्त और खुशहाल जीवन क्या उन्हें दिखाई नहीं देता। नेक लोग तो सिर्फ सच्चाई बताने वाले और गुनाहों के नतीजों से डराने वालों में से है।

أَوَلَمْ يَنظُرُوا فِي مَلَكُوتِ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ مِن شَيْءٍ وَأَنْ عَسَى أَن يَكُونَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ {185}

क्या उन लोगों ने आसमान व ज़मीन की हुकूमत और अल्लाह की पैदा की हुयी चीज़ों में ग़ौर नहीं किया और न इस बात में कि शायद उनकी मौत क़रीब आ गई हो फिर इतना समझाने के बाद किस बात पर ईमान लाएँगें (१८५)

व्याख्याः- गुनहगार लोग क्या आसमान और जमीन की सच्चाई पर गौर नहीं करती जिसकी सृष्टि उस आला ताकत के द्वारा हुई जिसे लोग अल्लाह कहते है और अपने मृत्यु के बारे में भी नहीं सोचते। सच्चे असुल और कूदरती हकीकत के बाद ये लोग किस बात पर यकीन ला सकते है।

مَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَلَا هَادِيَ لَهُ وَيَذَرُهُمْ فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ {186}

जिसे अल्लाह गुमराही में छोड़ दे फिर उसका कोई राहबर नहीं और उन्हीं की सरकशी में छोड़ देगा कि सरगरदाँ रहें (१८६)

व्याख्याः- किसी के वश की बात नहीं जो कूदरती तौर पर अपनी मर्जी से गुनाह का रास्ता इख्तियार करते है। उन्हें सही रास्ता पर लाये जब तक वो खुद न चाहे और ऐसे मानव को कूदरत भटकता हुआ छोड़ देती है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ رَبِّي لَا يُجَلِّيهَا لِوَقْتِهَا إِلَّا هُوَ ثَقُلَتْ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَا تَأْتِيكُمْ إِلَّا بَغْتَةً يَسْأَلُونَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِندَ اللَّهِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ {187}

तुमसे लोग क़यामत के बारे में पूछा करते हैं कि कहीं उसका कोई वक़्त भी तय है तुम कह दो कि उसका इल्म बस फक़त पररवदिगार ही को है वही उसके वक़्त मुअय्युन पर उसको ज़ाहिर कर देगा। वह सारे आसमान व ज़मीन में एक कठिन वक़्त होगा वह तुम्हारे पास अचानक आ जाएगी तुमसे लोग इस तरह पूछते हैं गोया तुम उनसे बखूबी वाक़िफ हो तुम कह दो कि उसका इल्म बस अल्लाह ही को है मगर बहुतेरे लोग नही जानते (१८७)

व्याख्याः- लोग अपनी मौत से बेफिक्र होकर यानी आखिरत की सच्चाई से बेफिक्र होकर चाहे अपनी हो या दुनिया की सवाल करते है कि जब इनकी मौत आयेगी या दुनिया खत्म हो जायेगी तब देखा जायेगा लेकिन उसकी हकीकत तो सिर्फ अल्लाह यानी कूदरत के पास ही होती है। कब आखरत आयेगी या कब किसकी मौत होगी ये कोई नहीं कह सकता और न ये मानव के वश की बात है कि वो किसी की मौत या दुनिया की आखिरत की बात बता दे।

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي نَفْعًا وَلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ وَلَوْ كُنتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ وَمَا مَسَّنِيَ السُّوءُ إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ {188}

तुम कह दो कि मै खुद अपना आप तो एख़्तियार रखता ही नहीं न नफ़े का न ज़रर का मगर बस वही अल्लाह जो चाहे और अगर ग़ैब को जानता होता तो यक़ीनन मै अपना बहुत सा फ़ायदा कर लेता और मुझे कभी कोई तकलीफ़ भी न पहुँचती मै तो सिर्फ ईमानदारों को और बेहशत की खुशख़बरी देने वाला हूँ (१८८)

व्याख्याः- कोई भी ज्ञानी व्यक्ति या सच्चाई बताने वाले रसुलों को खुद ये पता नहीं होता कि उनकी मौत कब होगी या उनकी जिन्दगी में किस तरह का उतार-चढ़ाव का सामना होगा। अगर भविष्य मानव के वश में होता तो मानव कूदरत की हर प्रकोप का सामना कर सकता। कोई भी नुकसान मानव को छु नहीं सकता। नेकी बताने वाले लोग सिर्फ सही और सच्चे राह पर चलने की हिदायत दे सकते है। अतीत से तर्जुबा हासिल करने के बाद जो नेक रास्ते पर है उसके लिये सच्चाई के रास्ते पर चलना आसान है।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا فَلَمَّا تَغَشَّاهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيفًا فَمَرَّتْ بِهِ فَلَمَّا أَثْقَلَت دَّعَوَا اللَّهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ آتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ {189}

वह अल्लाह ही तो है जिसने तुमको एक शख़्स (आदम) से पैदा किया और मिट्टी से उसका जोड़ा भी बना डाला ताकि उसके साथ रहे सहे फिर जब इन्सान अपनी बीबी से हम बिस्तरी करता है तो बीबी हमला हो जाती है फिर उसे लिए चलती फिरती है फिर जब वह ज़्यादा दिन होने से बोझल हो जाती है तो दोनो अपने परवरदिगार अल्लाह से दुआ करने लगे कि अगर तो हमें सभ्य फरज़न्द अता फरमा तो हम ज़रूर तेरे शुक्रगुज़ार होगें (१८९)

व्याख्याः- वही सर्वशक्तिमान जिसे लोग अल्लाह कहते है जिसकी मौजूदगी जर्रे-जर्रे में है उसी शक्ति ने मानव को एक कोशिका वाली प्राणी बनाया और उसके बाद अनेक कोशिका वाली प्राणी बनायी। एक के साथ एक को जोड़कर समाज की सृष्टि की ताकी मानव दुनिया में अकेलापन अनुभव न करे और सुख-शान्ति हासिल करे। मानवों के बीच औरत और मर्द को रखा और उसे मानव नसल की बुनियाद बनाई। कूदरत का तरह-तरह से मजा लेने लगे और अपनी नेक नसल के लिये मानव कूदरत का शुक्रिया अदा करते है।

فَلَمَّا آتَاهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهُ شُرَكَاءَ فِيمَا آتَاهُمَا فَتَعَالَى اللَّهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ {190}

फिर जब खुदा ने उनको सभ्य औलाद अता फ़रमा दिया तो जो अल्लाह ने उन्हें अता किया था लगे उसमें खुदा का शरीक बनाने तो खुदा शिर्क से बहुत ऊँची है (१९०)

व्याख्याः- जब कूदरत के द्वारा मानव को नेक नसल नसीब होती है और वो शान्ति की जिन्दगी बसर करते है और उसी नसल से ही बुराई की शुरुआत भी होती है। यानी अल्लाह के साथ शिर्क करना मगर अल्लाह हर बुराई से पाक है।

أَيُشْرِكُونَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ {191}

क्या वह लोग खुदा का शरीक ऐसों को बनाते है जो कुछ भी पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद पैदा किए हुए है (१९१)

व्याख्याः- मानव समाज में कुछ लोग ऐसे भी है जो ऐसे ख्यालात पालते है जिनमें कोई चीज सृष्टि करने की ताकत नहीं यानी कु-संस्कार ये मानव के खराब दिमाग की पैदाइश है।

وَلَا يَسْتَطِيعُونَ لَهُمْ نَصْرًا وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ {192}

और न उनकी मदद की कुदरत रखते है और न आप अपनी मदद कर सकते है (१९२)

व्याख्याः- न इससे मानव को कोई मदद हासिल होती है और न ही कु-संस्कार अपने आप में सच्चाई का हक रखते है। किसी भी सृष्टि में कु-संस्कार का कोई योगदान नहीं हो सकता।

पैगामः- इन दोनों आयतों का वर्तमान तर्जुमा कुछ लोगों के दिमाग में मूर्तियों की जिसे कुछ मानव पुजते है उनकी तरफ ले जाती है मगर यहां पर सवाल ये है कि मानव समाज में ऐसी कोई चीज नहीं जिसे अल्लाह खुद आकर परिपूर्ण करते है। क्या कोई भी मजहबी पुस्तक अल्लाह ने खुद अपने हाथों से लिखकर दी है? मानव के द्वारा ही मानव समाज के सारे काम पूरे होते है। मूर्ति के अन्दर कुछ करने की ताकत नहीं है! ये सच्चाई है मगर क्या कोई कह सकता है कि किसी भी मजहबी पुस्तक के द्वारा या किसी भी इमारत के द्वारा जिसका लोग तवाफ करते है कोई भी काम हासिल हुआ? मगर इन सवालों का राज ये है कि असली शिर्क कु-संस्कार में डूब जाना है। पत्थरों की चीजों से अगर मानव कोई उम्मीद करता है तो वो सिर्फ अपनी जहनी तसल्ली के लिये। कूदरत के अलावा मानव को कुछ देने की ताकत किसी भी पत्थर में नहीं है चाहे वो जिस शकल में हो।

وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَتَّبِعُوكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوهُمْ أَمْ أَنتُمْ صَامِتُونَ {193}

और अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाओंगे भी तो ये तुम्हारी पैरवी नहीं करने के तुम्हारे वास्ते बराबर है ख़्वाह तुम उनको बुलाओ या तुम चुपचाप बैठे रहो (१९३)

व्याख्याः- कु-संस्कार अपना रास्ता इख्तियार करके चलता है उसे जितना भी सच्चाई का प्रमाण दिया जाये, वो सच्चे पथ का अनुसरण नहीं करता?

पैगामः- क्या अल्लाह यानी कूदरत मानव के नक्श कदम पर चलती है या मानव की मर्जी के अनुसार चलती है। वर्तमान तर्जुमा के अनुसार ये एक एहम सवाल है।

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {194}

वह लोग जिनकी तुम खुदा को छोड़कर हाजत करते हो वह तुम्हारी तरह बन्दे हैं भला तुम उन्हें पुकार के देखो तो अगर तुम सच्चे हो तो वह तुम्हारी कुछ सुन लें (१९४)

व्याख्याः- गुनहगार लोगों के लिये सच्चाई और झुठ किसी भी बात में कोई फर्क नहीं होता। गुनहगार या कु-संस्कार में डुबे हुए लोग ही अल्लाह यानी कूदरत के अलावा दूसरों की इबादत करते है अगर उनके गुनाह या कु-संस्कार में कुछ भी फायदा या सच्चाई होती तो जरूर ये बात कूदरत में साबित होती।

पैगामः- इस आयत में कहा गया है "पापी अल्लाह के सिवा जिसे पुजते है, वो उसी की तरह एक बंदा है" इससे ये प्रमाण होता है कि ये पत्थर की मूर्ति नहीं है और इससे ये भी प्रमाण होता है कि हर पाप करने वाले और सिखाना वाला सब मानव से ही होता है।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا أَمْ لَهُمْ آذَانٌ يَسْمَعُونَ بِهَا قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنظِرُونِ {195}

क्या उनके ऐसे पॉव भी हैं जिनसे चल सकें या उनके ऐसे हाथ भी है जिनसे पकड़ सके या उनकी ऐसी आँखे भी है जिनसे देख सकें या उनके ऐसे कान है जिनसे सुन सकें कह दो कि तुम अपने बनाए हुए शरीको को बुलाओ फिर सब मिलकर मुझ पर दाँव चले फिर मोहलत न दो (१९५)

व्याख्याः- गुनाह और कु-संस्कार के क्या हाथ और पैर होते है जो वो चल कर मानव के पास आते है। क्या उनके हाथ है जो वो किसी भी चीज को पकड़ सकते है। क्या अंधविश्वास और कु-संस्कार के पास आंखे होती है जो वो सच्चाई देख पाये। गुनाह, कु-संस्कार और अंधविश्वास के पास कान है जो वो नेकी की बाते सुन सके। नेक लोगा ये कहते है कि गुनाह, कु-संस्कार और अंधविश्वास में डूबे हुए लोगों के पास कोई शक्ति नहीं होती किसी का नुकसान करने के लिये।

إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ {196}

बेशक मेरा मालिक तो बस अल्लाह है जिस ने किताब को नाज़िल फरमाया और वही सभ्य बन्दों का हाली है (१९६)

व्याख्याः- यकीनन कूदरत यानी अल्लाह ही मानव की सारी मुश्किले आसान फरमाते है, नेक और परहेजगार लोगों की हर मुश्किल राह कूदरती तौर पर आसान हो जाती है और कूदरत के हर असुल जो पुस्तक के द्वारा लोगों के दरमियान मौजूद है उसकी सच्चाई को मानकर चलने वालों लोगों को नेक और शान्ति वाला नतीजा मिलता है।

وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنفُسَهُمْ يَنصُرُونَ {197}

और वह लोग जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो न तो वह तुम्हारी मदद की कुदरत रखते हैं और न ही अपनी मदद कर सकते हैं (१९७)

व्याख्याः- ऐसे कुछ लोग है जो अल्लाह या कूदरती असुलों को छोड़कर ऐसे लोगों के असुलों को अपनाते है जो लोग खुद नफरत और अशान्ति की जिन्दगी जीते है और दूसरों को अच्छी जिन्दगी जीने में कोई मदद नहीं करते।

وَإِن تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا وَتَرَاهُمْ يَنظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ {198}

और अगर उन्हें हिदायत की तरफ बुलाएगा भी तो ये सुन ही नहीं सकते और तू तो समझता है कि वह तुझे देख रहे है हालाँकि वह देखते नही (१९८)

व्याख्याः- अगर ऐसे लोगों को सच्चाई, नेकी और उसके फायदे की बात बताई जाय फिर भी उन्हें यकीन नहीं आता और ये लोग इस तरह का ढोंग रचाते है जैसे उन्हें कुछ नजर नहीं आता।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ {199}

तुम दरगुज़र करना एख़्तियार करो और अच्छे काम का हुक्म दो और जाहिलों की तरफ से मुह फेर लो (१९९)

व्याख्याः- नेक लोग दर-गुजर करे और नेकी की तालीम दे और कु-संस्कार में डूबे हुए जिद्दी और न समझ लोगों से किनारा कर ले।

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ إِنَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {200}

अगर शैतान की तरफ से तुम्हारी दिल में किसी तरह का वसवसा पैदा हो तो अल्लाह से पनाह माँगा उसमें तो शक ही नहीं कि वह बड़ा सुनने वाला वाक़िफकार है (२००)

व्याख्याः- शैतानी साजीश या शैतान की तरफ से दी गई कोई भी लालच नेक लोगों को बेहकाती रहे तो अल्लाह यानी कूदरत की दुआ अपने दिमाग में दोहराये और अल्लाह यानी कूदरत महा ज्ञानी है।

إِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوا إِذَا مَسَّهُمْ طَائِفٌ مِّنَ الشَّيْطَانِ تَذَكَّرُوا فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ {201}

बेशक लोग परहेज़गार है जब भी उन्हें शैतान का ख़्याल छू भी गया तो चौक पड़ते है फिर फौरन उनकी आँखें खुल जाती है (२०१)

व्याख्याः- यकीनन जिसका दिमाग गुनाह के नतीजे से डरता हो उसे शैतान के बहकावे का कोई डर नहीं होता और कूदरत के हुकुमों को जानने की बेचैनी उसे सच्चाई का दीदार कराती है।

وَإِخْوَانُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِي الْغَيِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ {202}

उन काफिरों के भाई बन्द शैतान उनको गुमराही के तरफ घसीटे जाते है फिर किसी तरह की कोताही नही करते (२०२)

व्याख्याः- और जो लोग शैतान यानी गुनाह की तरफ अपने आपको झुका कर रखते है उसे गुनाह यानी शैतान आसानी से अपनी तरफ खींच लेता है।

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِم بِآيَةٍ قَالُوا لَوْ ـــــــ اجْتَبَيْتَهَا قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَى إِلَيَّ مِن رَّبِّي هَذَا بَصَائِرُ مِن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ {203}

और जब तुम उनके पास कोई मौजिज़ा नही लाते तो कहते हैं कि तुमने उसे क्यों नही बना लिया तुम कह दो कि मै तो बस इसी वही का पाबन्द हूँ जो मेरे परवरदिगार की तरफ से मेरे पास आती है ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से दलीलें है और इमानदार लोगों के वास्ते हिदायत और रहमत है (२०३)

व्याख्याः- नेक बात बताने वाले लोगों से गुनहगार लोग चमत्कार की उम्मीद रखते है। मगर नेक लोग हमेशा कूदरती हुकुमों के अनुसार सच्चाई बयान करते है और अल्लाह की रहमत और हिदायत तमाम नेक लोगों के लिये है।

पैगामः- प्राकृतिक सत्य अपने आप पर एक चमत्कार है, पापी इस चमत्कार को न देख सकते है और न अनुभव कर सकते है।

وَإِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ {204}

जब कुरान पढ़ा जाए तो कान लगाकर सुनो और चुपचाप रहो ताकि तुम पर रहम किया जाए (२०४)

व्याख्याः- और जब अल्लाह के असुलों को बयान किया जाये तो उसे ध्यान से सुनते रहे और चुप रहे कि अल्लाह की रहमत उन्हें महसूस हो और उन्हें समझ आये।

وَاذْكُر رَّبَّكَ فِي نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَخِيفَةً وَدُونَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ وَلَا تَكُن مِّنَ الْغَافِلِينَ {205}

और अपने परवरदिगार को अपने जी ही में गिड़गिड़ा के और डर के और बहुत चीख़ के नहीं आवाज़ से सुबह व शाम याद किया करो और ग़ाफिल बिल्कुल न हो जाओ (२०५)

व्याख्याः- इस लिये हर मानव को चाहिये कि कूदरती असुलों और रहमत को अपने विवेक के द्वारा याद करे और चिला-चिलाकर यानी गले की आवाज से जाहिर किये बगैर कूदरती हुकुमों को सुबह व शाम महसूस किया करे।

إِنَّ الَّذِينَ عِندَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيُسَبِّحُونَهُ وَلَهُ يَسْجُدُونَ {206}

बेशक जो लोग तुम्हारे परवरदिगार के पास मुक़र्रिब है और वह उसकी इबादत से सर कशी नही करते और उनकी तसबीह करते है और उसका सजदा करते है सजदा (२०६)

व्याख्याः- और यकीनन जो लोग कूदरत की आघोश में समाये हुए है वो लोग कूदरत की खिदमत में घमंड जाहिर नहीं करते और कूदरत की पाकी बयान करते है और उसी के आगे सिर झुकाते है।

सूराः अल-अनफ़ाल

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है

व्याख्याः-अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्षमाकारी है।

يَسْأَلُونَكَ عَنِ الأَنفَالِ قُلِ الأَنفَالُ لِلّهِ وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا اللّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَأَطِيعُوا اللّهَ وَرَسُولَهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {1}

तुम से लोग माले-गनीमत के बारे में पूछा करते है तुम कह दो कि माले-गनीमत अल्लाह और रसूल के वास्ते है तो खुदा से डरो अपने बाहमी मामलात की असलाह करो और अगर तुम सच्चे हो तो खुदा की और उसके रसूल की इताअत करो (१)

व्याख्याः- लोग रसुल से पाप से कमाई हुई सम्पत्ति के उचित व्यवहार के बारे में पूछते है (जो पापी मनुष्य संयम, पवित्रता, प्रेम, अहिंसा और सुख-शांति की शपथ लेते है यानी ईमान लाते है और ईमान लाने से पहले जो गलत तरीके से सम्पत्ति कमाई थी उसको गनीमत का माल कहा गया है)। गनीमत की सम्पत्ति का उचित व्यवहार के लिए अल्लाह या रसुल की सुरक्षा के दायरे में रखने का आदेश दिया गया है (उस जमाने में मनुष्य की सम्पत्ति की सुरक्षा की उत्तरदायी अल्लाह या उसके किसे नेक बंदे की सुरक्षा में रखी जाती थी)। पाप के परिणाम से जो अल्लाह की तरफ से होता है उससे पापी डरे (अल्लाह से डरकर उसके नियमों को अपनाने के बजाये अल्लाह से प्रेम करके उसके नियमों को अपनाना बेहतर है)। इस आयत में ''अल्लाह से डरो'' का मतलब है अल्लाह के द्वारा दिया गया प्रकोप जो पाप की वजह से है और अल्लाह के नियम पर लोगों को चलने का उपदेश दिया गया उन लोगों को जो ईमानदार और मानवता के नियमों को बरकरार रखते है।

पैगामः- इस आयत का वर्तमान अनुवाद और हदीसों के अनुसार ''गनीमत का माल'' का मतलब है युद्ध में जीती हुई सम्पत्ति और औरत मगर सवाल ये आता है कि किसी भी सूरत में क्या लूटना हलाल है? मनुष्य को लूटकर उसे बेचना या खरीदना या उसे आपस में बाट लेने की अनुमति क्या अल्लाह और उसके रसुल देते है?

वर्तमान समय के अनुसार लूटना और मनुष्य को बेचना-खरीदना कानूनी तौर पर पूरी तरह वर्जित हो गया है। ऐसी सूरत में इस आयत का क्या नतीजा होगा? कहा जाता है कि कुरान-शरीफ हर युग के लिए परिपूर्ण है? मनुष्य आपस के रिश्तो का एहतराम और इज्जत जरूर करे यानी मानवता के नियमों को बरकरार रखे। इन सवालों के आधार पर मै (सिद्धार्थ चटर्जी) कह सकता हूँ वर्तमान समय के अनुसार ''गनीमत का माल'' का मतलब होगा पाप से कमाई हुई सम्पत्ति।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَاناً وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ {2}

सच्चे ईमानदार तो बस वही लोग है कि जब खुदा का जिक्र किया जाता है तो उनके दिल हिल जाते है और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती है तो उनके इमान को और भी ज्यादा कर देती है और वह लोग बस अपने परवरदिगार ही पर भरोसा रखते है (२)

व्याख्याः- ईमान का स्तंभ ये है कि जब कोई प्रकृति यानी अल्लाह के नियमों को बयान करें तो अल्लाह या प्रकृति पर विश्वास ईमान वालों का और बढ़ जाता है। सच्चाई अपने आप पर इतनी शक्तिशाली है और समझने वाले उसे समझ जाते है तब उनका प्रकृति यानी अल्लाह पर ईमान और भी मजबूत हो जाता है और प्रकृति के नियमों के विरूद्ध जाने वालों का जो नतीजो होता है वो उस नतीजे से डर जाते है।

पैगामः- अल्लाह और उनके प्राकृतिक नियमों के पाँच स्तंभ है जो मानव को पवित्रता प्रदान करती है - संयम, अहिंसा और शांति, मानवता, एक ईश्वर और उनके प्रकृति से प्रेम तथा समय और सभ्यता के विकास पर ईमान

लाना। जो मानव इन पांच आदर्शों की सच्चाई को अनुभव कर लेते है उसे प्राकृतिक सत्य यानी अल्लाह का दीदार होता है। मनुष्य के अंदर जो अपवित्र यानी शैतानी विवेक होता है वो अल्लाह यानी प्राकृतिक सत्य से डरेगा और नेक ईमान वाला विवेक जो अल्लाह से प्रेम करता है वो कभी भी अल्लाह से नहीं डरेगा।

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ {3}

नमाज़ को पाबन्दी से अदा करते है और जो हम ने उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते है (३)

व्याख्या:- इन पाँच नियमों से जो मनुष्य अपने आपको और इंसानी सभ्यता को रोशन करते है और प्राकृतिक नियमों को अपनाकर इसके आदेशों को सही तरीके से अदा करते है। प्रकृति की दी हुई जो चीज उनके इख्तियार में है उसे मानवता के लिए खर्च करते है।

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَّهُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ {4}

यही तो सच्चे ईमानदार है उन्हीं के लिए उनके परवरदिगार के हाँ दरजे है और बख़्शिश और इज़्ज़त और आबरू के साथ रोज़ी है (४)

व्याख्या:- वही लोग सच्चे और ईमान वाले है और उनके लिए समाज में सम्मान और शांति का जीवन है। यही लोग शांति प्राप्त करके अल्लाह के निकट रह सकते है। यही लोग दयावान और क्षमाकारी चरित्र के अधिकारी होते है और इन्हें सुख-शांति की छत्र-छाया प्राप्त होती है।

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِن بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَارِهُونَ {5}

जिस तरह तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें बिल्कुल ठीक तुम्हारे घर से निकाला था और मोमिनीन का एक सम्प्रदाय नाखुश था (५)

व्याख्या:- प्रत्येक मानव प्राकृतिक सत्य के साथ ही अपने जीवन का आरंभ करता है यानी प्राकृतिक झूठ-सच और पाप-पुण्य का ज्ञान मानव को पैदा होने के उपरांत पाँच वर्ष के अंदर ही मिल जाता है। कुछ लोग ऐसे भी होते है जो सच्चे नियमों को नहीं मानते और बोझ समझते है।

पैगाम:- एक बच्चा जब पैदा होता है तो वो अपने चक्र के साथ ही पैदा होता है। पिछले जन्म की सोच कहां तक सही है और प्रमाणित है ये तो बताना मुश्किल है मगर प्राकृतिक नियमों के साथ एक बच्चा पृथ्वी पर आता है और उसी नियम के चक्र में उसका जीवन व्यतीत होता है।

يُجَادِلُونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنظُرُونَ {6}

कि वह लोग हक़ के ज़ाहिर होने के बाद भी तुमस सच्ची बात में झगड़ते थे और इस तरह गोया मौत के मुँह में ढकेले जा रहे हैं (६)

व्याख्या:- इस सत्य के साथ प्रकृति ही मानव को जन्म देती है फिर वो इसे सोच और समझ देती है फिर उसी सोच और समझ के मतभेद पर वो आपस में लड़ते-झगड़ते रहते है जैसे कि उन्हें कोई मृत्यु की तरफ ढकेल रहा हो और वो खड़े-खड़े देख रहे हो।

पैगाम:- सत्य को समझते हुए भी मानव नियमों के मतभेद पर लड़ते रहते है। हर मानव अपने-अपने विचारों, अपनी-अपनी पसंद और न पसंद और अपनी-अपनी आदत और किरदार के साथ पैदा होता है ये मतभेद कभी-कभी फसाद और झगड़ा की शक्ल इख्तियार कर लेता है।

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَن يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ {7}

और उसे देख रहे है और जब ख़ुदा तुमसे वायदा कर रहा था कि दो जमाअतों में से एक तुम्हारे लिए ज़रूरी है और तुम ये चाहते थे कि कमज़ोर जमाअत तुम्हारे हाथ लगे और अल्लाह ये चाहता था कि अपनी बातों से हक़ को साबित करें और काफिरों की जड़ काट डाले (७)

व्याख्या:- हर शक्तिशाली चाहता है कि दुर्बल वर्ग के मानव इसके वश में रहे मगर मानव को ये बात याद रखनी चाहिए कि सब बाते अल्लाह के वश में है कि कौन किसके वश में रहेगा। शक्तिशाली या कोई भी सम्प्रदाय का

मानव सोचता है कि दूसरे सम्प्रदाय का मानव उनके गिरोह में आ जाये ताकि उनके सम्प्रदाय की बढ़ोतरी हो और उनकी सम्प्रदायिक दुनिया में राज करे। निहत्था, लाचार, मजबूर और गरीब (गैर-मसलाह) मानव को बहला-फूसला कर अपने सम्प्रदाय में सम्मिलित करने की चेष्टा अल्लाह के नियमों के विरूद्ध है। अल्लाह के नियम ये है सत्य को प्रमाण के साथ लोगों के सामने रखे और असत्य, अयौगतिक, कु-संस्कार और पाप में डूबे हुए लोगों यानी काफिरों को सच के द्वारा इनकी जड़ काट दे।

पैगाम:- हर सम्प्रदाय के लोग एक-दूसरे के सम्प्रदाय को तोड़ने में या अपनी सम्प्रदाय की संख्या को बढ़ाने में लगे रहते है। जैसा कि एक हिंदू अगर मूसलमान होता है तो मुसलमान खुश हो जाते है ठीक उसी तरह अगर कोई मुसलमान हिंदू बनता है तो हिंदू खुश हो जाता है, मगर ये सोच क्यों? ऐसी सोच अल्लाह के नियमों के विरूद्ध है। हर विचार का दायरा अल्लाह के हाथों में होता है। धर्म परिवर्तन से विचार नहीं बदलते और इंसानी विचार की बुनियाद पर अल्लाह के नियमों का तोल-मोल नहीं हो सकता। विचारों का मतभेद या नियमों के मतभेद में इंसानी समाज को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। आश्चर्य की बात है की अल्लाह के नियम एक है और वो आरंभ से आज तक नहीं बदले। मानव अपनी इच्छा पुरी करने के लिए अल्लाह के नियमों के साथ अपने मतलब के नियम जोड़ते गये और आपस में बटते गये।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ {8}

ताकि हक़ को साबित कर दे और बातिल का मिटियामेट कर दे अगर चे गुनाहगार नाखुश ही क्यों न हो (८)

व्याख्या:- ताकि सत्य का सत्य होना और असत्य का असत्य होना प्रमाणित हो जाये लेकिन पापी इसे नहीं मानते।

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُم بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ {9}

जब तुम अपने परवदिगार से फरियाद कर रहे थे उसने तुम्हारी सुन ली और जवाब दे दिया कि मै तुम्हारी लगातार हज़ार फरिश्तों से मदद करूँगा (९)

व्याख्या:- मानव को वो वक्त याद रखना चाहिए जब वो अज्ञानता वाली जंगली जिन्दगी जीते थे। अल्लाह मानव के कष्टों को कबूल करते हुए प्रकृति के हजारों पहलूओं से उसकी मदद की और जंगली जिन्दगी से मानव को शानदार समाजिक सुविधाएं उपलब्ध करवाई।

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ قُلُوبُكُمْ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِندِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {10}

और ख़ुदा ने सिर्फ तुम्हारी ख़ातिर के लिए की थी और तुम्हारे दिल मुतमइन हो जाएँ और मदद ख़ुदा के सिवा और कहीं से नहीं होती बेशक अल्लाह ग़ालिब हिकमत वाला है (१०)

व्याख्या:- और अल्लाह ताला ने ये मदद इसलिए कि क्योंकि मानव खुश रहे और इसके दिलों को सुख-चैन आ जाये और सहायता सिर्फ अल्लाह की तरफ से ही है जो कि जबरदस्त हिकमत वाला है।

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ {11}

ये वह वक़्त था जब अपनी तरफ से इत्मिनान देने के लिए तुम पर नींद को ग़ालिब कर रहा था और तुम पर आसमान से पानी बरस रहा था ताकि उससे तुम्हें पाक कर दे और तुम से शैतान की गन्दगी दूर कर दे और तुम्हारे दिल मज़बूत कर दे और पानी से और तुम्हारे क़दम ब क़दम जमाए रहे (११)

व्याख्या:- मानव को वो बात याद रखनी चाहिए जब उसे शांति की नींद प्राप्त होती है और आकाश से पानी यानी प्रकृति रहमत यानी उपदेश यानी ज्ञान, सच्चा ज्ञान यानी प्रेम भरा हृदय यानी संयमी और शांति मिलती है और यही चीजे मानव को पवित्र कर देती है और मानव के मस्तिक्ष से बुरे ख्यालात को दूर कर देती है। और यही चीजे मानव के पवित्र विवेक को शक्तिशाली बना देती है और इस शक्तिशाली विवेक के बदले मानव जीवन को स्थिरता प्रदान करते है।

إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِينَ آمَنُوا سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ {12}

जब तुम्हारा परवरदिगार फरिश्तों से फरमा रहा था कि मै यकीनन तुम्हारे साथ हूँ तुम ईमानदारों को साबित क़दम रखो मै बहुत जल्द काफिरों के दिलों में रौब डाल दूँगा तो उन कुफ्फार की गर्दनों पर मारो और उनकी पोर पोर को चटिया कर दो (१२)

व्याख्या:- मानव को ये बात याद रखनी चाहिए कि अल्लाह ने अपनी प्रकृति (फरिश्ते) के हर पहलू के द्वारा लोगों को हर सुविधाएं उपलब्ध करवाई। ईमान वालो को मजबूती से सत्य का साथ देना चाहिए और अल्लाह अपने प्रकृति के द्वारा पापियों को यानी काफिरों को डराते है यानी मजबूर कर देते है। ईमान वालो को चाहिए कि अपनी सत्यता के द्वारा काफिरों के हर कामों को या उनकी हर चेष्टा को टुकड़े-टुकड़े कर दे जो पापी काफिरों के द्वारा यानी उनके हाथों के द्वारा अदा होता है।

पैगाम:- अल्लाह कभी भी मानव को या एक-दूसरे को मारने-काटने का आदेश नही देता और ये इसलिए कि क्या मारने-काटने से मानव की सोच बदल जाती है?यहां पर गर्दन के पोर पर मारना एक चिह्न है। ज्ञान और सत्य के द्वारा पापियों और कु-संस्कार में डूबे हुए लोगों की गर्दनों पर वार करने के लिए कहा गया है और गर्दन में इसलिए की हमारी मस्तिक्ष और शरीर को जोड़ती है। हर काम मानव के मस्तिक्ष में पैदा होता है और शरीर के द्वारा अंजाम पाता है। अगर इस आयत के तजुर्मा के अनुसार मारने-पीटने की इजाजत है तो इस हिसाब से वर्तमान दुनियां में मुसलमानों की तादद दूसरे सम्प्रदाय से कम है, अगर यही मारने पीटने का काम मुसलमानों के विरूद्ध हो, तो मुसलमान क्या करेगा? इस लिहाज से किसी भी सूरत में मानव को मारने का हुकुम नही और कुरान शरीफ हर इंसान के लिए परिपूर्ण पुस्तक है।

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَمَنْ يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ {13}

ये इसलिए है कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल की मुख़ालिफ की और जो शख़्स खुदा और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करेगा तो खुदा बड़ा सख़्त अज़ाब करने वाला है (१३)

व्याख्या:- मनुष्य के पाप की सजा है सत्यता और पाप के प्रकोप के बारे में उसे अगाह कर दिया जाये तो ये उसकी सजा है। अल्लाह और उसके नियम जो रसुलों के द्वारा बयान होते है और काफिर यानी पापी इसका विरोध करते है और सत्यता के विरूद्धता करने वालो को अशांति का प्रकोप मिलता है।

ذَلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ {14}

लो फिर उस (सज़ा का चखो और काफिरों के वास्ते जहन्नुम का अज़ाब ही है (१४)

व्याख्या:- पापी मानव अशांति का प्रकोप चखता है। मानव इन नियमों को जाने और पहचाने। अवश्य पापियों के लिए अशांति और बेचैनी का नर्क प्रकृति में उपस्थित है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوهُمُ الْأَدْبَارَ {15}

ऐ ईमानदारों जब तुमसे कुफ़्फ़ार से मैदाने जंग में मुक़ाबला हुआ तो उनकी तरफ पीठ न करना (१५)

व्याख्या:- ऐ सत्यता समझने वाले संयमी और शांति चाहने वाले पापियों और फसाद चाहने वाले लोगों से लड़ाई करो ताकि समाज में शांति स्थापित हो और इस बात से मुंह न मोड़ो।

पैगाम:- मानव अगर पाप के विरूद्ध लड़ना छोड़ दे तो बिलावास्ता उनका और समाज का भी नुकसान होता है।

وَمَنْ يُوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهُ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَى فِئَةٍ فَقَدْ بَاءَ بِغَضَبٍ مِنَ اللَّهِ وَمَأْوَاهُ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ {16}

उस शख़्स के सिवा जो लड़ाई वास्ते कतराए या किसी जमाअत के पास मौक़े पाए जो शख़्स भी उस दिन उन कुफ़्फ़ार की तरफ पीठ फेरेगा वह यक़ीनी अल्लाह के ग़जब में आ गया और उसका ठिकाना जहन्नुम ही है और वह क्या बुरा ठिकाना है (१६)

व्याख्या:- सत्यता और शांति को कायम करने के लिए जो लोग लड़ते हैं (ईमान वाले) उनका साथ न देकर जो मानव उनके हक के लड़ाई में पीठ दिखाते है और तरह-तरह के बहाने बनाकर अपनी तरह की सोच वाले लोगों के तरफ हो जाते है ऐसे लोगों को कभी भी शांति प्राप्त नहीं हो सकती और उनके रहने का ठिकाना नर्क ही होता है जहां पर शांति का नामो निशान भी नही होता।

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَى وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {17}

और उन कुफ़्फ़ार को कुछ तुमने तो क़त्ल किया नही बल्कि उनको तो ख़ुदा ने क़त्ल किया और जब तुमने तीर मारा तो कुछ तुमने नही मारा बल्कि ख़ुद ख़ुदा ने तीर मारा और ताकि अपनी तरफ से मोमिनीन पर खूब एहसान करे बेशक अल्लाह सुनता और जानता है (१७)

व्याख्या:- ऐसे लोगों के हाल का उत्तरदायी ईमान वाले नहीं है। उनको जीते-जी मृत्यु अल्लाह ने दी है और अल्लाह ने मुठ्ठी भर मिट्टी भी नहीं फेकी यानी अल्लाह की तरफ से उन्हें मुठ्ठी भर चैन और शांति भी नहीं मिली (मिट्टी के साथ चैन और शांति की तुलना की गई है और ये इसलिए की मनुष्य की सारी आवश्यकताएं जमीन से ही पूरी होती है) और जिस मनुष्य ने सत्य के रास्ते को इख्तियार किया है उसे बेहतर जिन्दगी यानी शांति व चैन वाली जिन्दगी प्राप्त है और नि:संदेह अल्लाह महाज्ञानी और सब सुनने वाला है।

पैगाम:- मानव और मानवता का कत्ल किसी भी सुरत में अल्लाह का हुकुम नहीं हो सकता और इबादत की तरीके और असुलों की बुनियाद पर तो कभी भी नहीं।

ذَلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ {18}

ये तो ये अल्लाह तो काफिरों की मक्कारी का कमज़ोर कर देने वाला है (१८)

व्याख्या:- एक बात तो ये है और दूसरी बात ये है कि पापियों यानी काफिरों की हर चेष्टा अल्लाह के आगे दुर्बल हो जाती है।

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا فَقَدْ جَاءَكُمُ الْفَتْحُ وَإِنْ تَنْتَهُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ وَإِنْ تَعُودُوا نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ {19}

अगर तुम ये चाहते हो फ़तेह हो फ़तेह भी तुम्हारे सामने आ मौजूद हुयी अब क्या ग़ुरूर बाक़ी है और अगर तुम से बाज़ रहो तो तुम्हारे वास्ते बेहतर है और अगर कहीं तुम पलट पड़े ता हम भी पलट पड़ेगें और तुम्हारी जमाअत अगरचे बहुत ज़्यादा भी हो हरगिज़ कुछ काम न आएगी और ख़ुदा तो यक़ीनी मामिनीन के साथ है (१९)

व्याख्या:- पापी यानी काफिर अपने पापों से अगर तौबा करना चाहते है तो जरूर उनकी तौबा उनके सामने है। अगर वो पाप से दूर रहे तो ये उनके लिए बेहतर है। लेकिन अगर दुबारा पाप के दलदल में फंस जाये तो अवश्य अल्लाह का प्रकोप उनपर उपस्थित रहेगा। पापियों की सम्प्रदाय जितनी भी बड़ी क्यों न हो उनकी कोई भी शक्ति उनके काम नहीं आयेगी और सच बात तो ये है कि अल्लाह सदैव से ही नेकी, संयमी, प्रेम, अहिंसा और शांति चाहने वालों के साथ होता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ {20}

ऐ ईमानदारों अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो और उससे मुँह न मोड़ो जब तुम समझ रहे हो (२०)

व्याख्या:- मानव अपनी जिद छोड़कर अल्लाह यानी प्राकृतिक नियमों पर ईमान लाये, जो रसुलों के द्वारा बयान हुए।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ قَالُوا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ {21}

और उन लोगों के ऐसे न हो जाओं जो कहते थे कि हम सुन रहे हैं हालाकि वह सुनते न थे (२१)

व्याख्या:- मानव समाज में कुछ मानव ऐसे भी है जो मुंह से कहते है कि उन्होंने सत्य को समझा मगर सच्चाई उसके विपरीत होती है। ईमान वाले ऐसे मानव की तरह न हो।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ {22}

इसमें शक नही कि ज़मीन पर चलने वाले तमाम हैवानात से बदतर अल्लाह के नज़दीक वह बहरे गूँग है जो कुछ नही समझते (२२)

व्याख्या:- मानव में सबसे नीचे और गंदे मानव वो होते है जो सत्यता को देखकर भी अंदेखा करते है या अंधे बन जाते है या सत्य को सुनकर बहरे बन जाते है और जब कोई सच्चाई को बिगाड़ता है या किसी पर जुल्म होता है तब गुंगे बन जाते है। ऐसे मानव ये नहीं समझते कि उनका ये किरदार कभी उनपर भी भारी पड़ सकता है।

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوا وَّهُم مُّعْرِضُونَ {23}

और अगर खुदा उनमें सभ्यी देखता तो ज़रूर उनमें सुनने की क़ाबलियत अता करता मगर ये ऐसे है कि अगर उनमें सुनने की क़ाबिलयत भी देता तो मुँह फेर कर भागते। (२३)

व्याख्या:- प्रकृति तौर पर अगर ऐसे लोग सत्य को समझते तो अल्लाह के आशीर्वाद से ये जरूर सत्य के मार्ग पर होते। उनको सच सुनाना ईमान वालो का कर्त्तव्य है चाहे वो जितना भी सत्य से मुंह मोड़कर चले जाए या इन्हे जितना भी नपसंद हो।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اسْتَجِيبُوا لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ وَأَنَّهُ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ {24}

ऐ ईमानदार जब तुम को हमारा रसूल ऐसे काम के लिए बुलाए जो तुम्हारी रूहानी ज़िन्दगी का बाइस हो तो तुम अल्लाह और रसूल के हुक्म दिल से क़ुबूल कर लो और जान लो कि अल्लाह वह क़ादिर मुतलिक़ है कि आदमी और उसके दिल के दरमियान इस तरह आ जाता है और ये भी समझ लो कि तुम सबके सब उसके सामने हाज़िर किये जाओगे (२४)

च्याख्या:- जो ईमान वाला होगा वो जरूर अल्लाह के रसुल के आदेश को मानेगा और ये इसलिए कि अल्लाह का रसुल अल्लाह की प्राकृतिक सत्यता को बयान करते है और जिन्दगी को सरल और सुख-शांति पाने का रास्ता बताते है और मानव ये जान ले कि अल्लाह की सत्यता या अल्लाह के नियम मानव और मानव के विवेक के मध्य आग बनकर खड़े रहते है। आखिरकर जो सत्य है यानी अल्लाह की प्राकृतिक सत्यता उसकी तरफ हर किसी को जाना पड़ता है यानी मृत्यु।

पैगाम:- हर प्राणियों को मृत्यु का मजा चखना पड़ता है, दुनिया में कुछ भी लामहदूद नहीं है सिवाये उस आला शक्ति के जिससे तमाम दुनिया कायम है। इस सच्चाई को जानने के उपरांत मानव मोह-माया और लालसा का शिकार होता है और अपने हाथों अपनी सुख-शांति बिगाड़ता है।

وَاتَّقُوا فِتْنَةً لَّا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنكُمْ خَاصَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ {25}

और उस फितने से डरते रहो जो ख़ास उन्ही लोगों पर नही पड़ेगा जिन्होने तुम में से जुल्म किया और यक़ीन मानों कि अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब करने वाला है (२५)

व्याख्या:- पाप, घृण, फसाद अहंकार और मानव की सुख-शांति को भंग करना - इन सारे कर्मो से मानव को दूर रहना चाहिए। जो मानव किसी भी सम्प्रदाय का क्यों न हो इन सब कुकर्मो में लुप्त रहता है वो जान ले कि अल्लाह की प्रकृति में किसी न किसी और कही न कही इनकी सजा अवश्य नियुक्त है।

وَاذْكُرُوا إِذْ أَنتُمْ قَلِيلٌ مُّسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَن يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُم بِنَصْرِهِ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ {26}

जब तुम सर ज़मीन में बहुत कम और बिल्कुल बेबस थे उससे सहमे जाते थे कि कहीं लोग तुमको उचक न ले जाए तो अल्लाह ने तुमको पनाह दी और ख़ास अपनी मदद से तुम्हारी ताईद की और तुम्हे पाक व पाकीज़ा चीज़े खाने को दी ताकि तुम शुक्र गुज़ारी करो (२६)

व्याख्या:- मानव उस समय को याद करे जब वो दूसरे प्राणियों से संख्या में कम थे और उनसे कमजोर भी। जंगली जिन्दगी गुजारते थे और जंगल के दूसरे प्राणियों की खुराक भी बनते थे फिर प्रकृति के आशीर्वाद से मानव को

मस्तिक्ष प्राप्त हुआ और वो सारे प्राणियों से शक्तिशाली भी हुए और प्रकृति में उपस्थित तमाम सुविधाएं पाने का राज भी उन्हें मिला। मानव जरा शुक्र अदा करो।

पैगाम:- शुक्र अदा करने का मतलब ये नही है कि अल्लाह की पुजा की जाए। अल्लाह की पुजा करने का मतलब है उनके असुलों को मानना।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَخُونُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا أَمَانَاتِكُمْ وَأَنتُمْ تَعْلَمُونَ {27}

ऐ ईमानदारों न तो ख़ुदा और रसूल की ख़्यानत करो और न अपनी अमानतों में ख़्यानत करो हालाँकि समझते बूझते हो (२७)

व्याख्या:- ईमान वाले अल्लाह के रसुल और सत्य से मुंह नहीं फेरते और अपनी सुरक्षा करने वाली चीजों को बर्बाद नहीं करते। ईमान वाले खूब जानते है समय, हालात और सच्चाई की कदर।

पैगाम:- प्रकृति की सत्यता और रसुल के सच्चे आदर्शों को बिगाड़ने की कोशिश न करें। अल्लाह की अमानत यानी प्रकृति और रसुल की अमानत है हिदायत और सही रास्ता।

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ وَأَنَّ اللَّهَ عِندَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ {28}

और यक़ीन जानों कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारी आज़माइश की चीज़ें हैं कि जो उनकी प्रेम में भी अल्लाह को न भूले और वह दीनदार है और यक़ीनन ख़ुदा के हाँ बड़ी मज़दूरी है (२८)

व्याख्या:- मानव की जब मृत्यु होती है तब उसके साथ कुछ भी नहीं जाता चाहे वो धन-दौलत हो या संतान, ये सिर्फ मानव जीवन के लिए एक परीक्षा है। मानव अपने जीवन में पवित्रता और कर्त्तव्य की नींव पर इस परीक्षा में कितना उत्तीर्ण होता है वही देखने की बात है और जो उत्तीर्ण होता है उसे पवित्र अल्लाह ताला अपने योग मायाबल के द्वारा पुरूषकार स्वरूप सुख और शांति प्रदान करते है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَتَّقُوا اللَّهَ يَجْعَل لَّكُمْ فُرْقَانًا وَيُكَفِّرْ عَنكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ {29}

ऐ ईमानदारो अगर तुम ख़ुदा से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे वास्ते इम्तियाज़ पैदा करे देगा और तुम्हारी तरफ से तुम्हारे गुनाह का कफ़्फ़ारा क़रार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और ख़ुदा बड़ा साहब फज़्ल है (२९)

व्याख्या:- पवित्र, संयमी और जिनके हृदय में प्रेम बसता है ऐसे मनुष्य पाप के प्रतिफल से डरते है। ऐसे मानव को पाप और पुण्य की पहचान होती है (प्राकृतिक तौर पर) और अंजाने में उनके किये गये गलती से उन्हें अल्लाह की कृपा से मुक्ति मिलती है।

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ {30}

और जब कुफ़्फ़ार तुम से फरेब कर रहे थे ताकि तुमको क़ैद कर लें या तुमको मार डाले तुम्हें निकाल बाहर करे वह तो ये तदबीर कर रहे थे और ख़ुदा भी तदबीर कर रहा था और ख़ुदा तो सब तदबीर करने वालों से बेहतर है (३०)

व्याख्या:- और इन पवित्र लोगों की वो सारी घटनाएं याद करनी चाहिए जब पापी लोग सच्चाई के विरूद्ध चकांत करते है और इसके बारे में विचार करते और सत्य को कैद करने की चेष्टा करते है यानी छिपाने की चेष्टा करना या जबरदस्ती दबाने की चेष्टा करना। और कही-कही सत्य बताने वाले रसुलो को बंदी बनाने की या उसे मार डालने की या उसे अपने देश से निकाल देनी की चेष्टा करते है। अपवित्र विवेक वाले मानव अपनी चेष्टा में व्यस्त रहते है और अल्लाह अपने सत्य को पापियों की पुरी चेष्टा के उपरांत समाज में और मानव के मध्य ''सत्य'' को प्रतिष्ठित करती है।

وَإِذَا تُتْلَى عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَٰذَا إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ {31}

और जब उनके सामने हमारी आयते पढ़ी जाती है तो बोल उठते हैं कि हमने सुना तो लेकिन अगर हम चाहें तो यक़ीनन ऐसा ही हम भी कह सकते है-तो बस अगलों के क़िस्से है (३१)

व्याख्या:- अल्लाह की सत्यता प्रमाणित होने से पहले कु-संस्कार में डूबे हुए लोगों के सामने प्राकृतिक तौर पर सत्य उपस्थित होता है तब कु-संस्कार में डूबे हुए लोग कहते है, ऐसे सत्य की कोई नींव या जड़ नहीं है और कहते है कि ये सारी बाते प्राचीन काल से चली आ रही है।

وَإِذْ قَالُوا اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَـٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِندِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَاءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ {32}

और जब उन काफिरों ने दुआएँ माँगी थी कि खुदा अगर ये हक़ है और तेरे पास से तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर कोई और दर्दनाक अज़ाब ही नाज़िल फरमा (३२)

व्याख्या:- सत्य को न मानने वाले लोग प्रमाण मांगते है कि अगर सत्य अल्लाह की तरफ से है तो उन पर पत्थर बरसाया जाये या कोई पीड़ा देकर शास्ती प्रदान कि जाये।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنتَ فِيهِمْ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ {33}

हालाँकि जब तक तुम उनके दरम्यान मौजूद हो अल्लाह उन पर अज़ाब नहीं करेगा और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि लोग तो उससे अपने गुनाहो की माफी माँग रहे है और खुदा उन पर नाज़िल फरमाए (३३)

व्याख्या:- न समझ लोगों को प्राकृतिक तौर पर अल्लाह सजा नहीं देते लेकिन अगर सत्य को उपलब्धि करने के बाद कोई सत्य को स्वीकार न करे तब डंड अवश्य मिलेगा।

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا أَوْلِيَاءَهُ إِنْ أَوْلِيَاؤُهُ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَـٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ {34}

और जब ये लोग लोगों को मस्जिदुल हराम से रोकते है तो फिर उनके लिए कौन सी बात बाक़ी है कि उन पर अज़ाब न नाज़िल करे और ये लोग तो खानाए काबा के मुतवल्ली भी नहीं इसके मुतवल्ली तो सिर्फ परहेज़गार लोग है मगर इन काफ़िरों में से बहुतेरे नहीं जानते (३४)

व्याख्या:- मगरीब और मशरीक यानी पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण सब दिशाएं अल्लाह की है यानी हर इबादतगह और इबादत करने का तरीका अल्लाह की तरफ ही जाता है। जो लोग इबादत और इबादतगह में मतभेद पैदा करते है उन्हें जरूर डंड मिलेगा। इबदात सिर्फ संयमी, प्रेम और अमन-शांति चाहने वाले लोगों की ही होती है और ज्यादा से ज्यादा लोग इस सत्यता को नहीं समझते।

पैगाम:- ''मस्जिद हराम'' शांति की निशानदेही करती है।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِندَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً وَتَصْدِيَةً فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ تَكْفُرُونَ {35}

और खानाए काबे के पास सीटियाँ तालिया बजाने के सिवा उनकी नमाज ही क्या थी तो जब तुम कुफ्र किया करते थे उसकी सज़ा में अज़ाब के मज़े चखो (३५)

व्याख्या:- कुछ लोगों की इबादत सिर्फ रश्मों रिवाज पर निर्भर होती है जैसे कि सीटी बजाकर या ताली बजाकर प्रार्थना करना और पीठ पीछे पाप करते है और ऐसे काफिरों के लिए जरूर अजाब तैयार है भुगतने के लिये।

पैगाम:- मानव समाज और मानवता के आदर्शों को इनकार करते हुए सिर्फ अचार और कु-संस्कार द्वारा पूजा पद्धथि कुफरियत है यानी अल्लाह या ईश्वर के विरूद्ध है और महापाप है।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا عَن سَبِيلِ اللَّهِ فَسَيُنفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُونَ وَالَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ {36}

इसमें शक नहीं कि ये कुफ्फार अपने माल महज़ इस वास्ते खर्च करेगें फिर उसके बाद उनकी हसरत का बाइस होगा फिर आख़िर ये लोग हार जाएँगे और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तियार किया सब के सब जहन्नुम की तरफ हाके जाएँगें (३६)

व्याख्या:- जो मानव ये काम करते है उनकी कोशिश ये रहती है कि पवित्र और संयमी लोगों को अल्लाह के रास्ते से हटाने की और इस रास्ते पर पैसा, दौलत और संपत्ति खर्च करने में संकोच नहीं करते। मगर आखिरकार ऐसे लोग सच्चाई के आगे पराजित होते है और पश्चताप के परिणाम स्वरूप इनका जीवन अशांति का नर्क बन जाता है।

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضَهُ عَلَىٰ بَعْضٍ فَيَرْكُمَهُ جَمِيعًا فَيَجْعَلَهُ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ {37}

ताकि ख़ुदा पाक को नापाक से जुदा कर दे और नापाक लोगों को एक दूसरे पर रखके ढेर बनाए फिर सब को जहन्नुम में झोंक दे यही लोग घाटा उठाने वाले हैं (३७)

व्याख्या:- पवित्र और अपवित्र यानी पाप और पुण्य प्राकृतिक तौर पर अल्लाह की इच्छानुसार हमेशा अलग-अलग लक्ष्य की अधिकारी है। पाप अपने आप पर एक सम्प्रदाय की सृष्टि करता है और पापी सम्प्रदाय अशांति के नर्क और विवेकदंशन से बेचैनी होती है।

قُل لِّلَّذِينَ كَفَرُوا إِن يَنتَهُوا يُغْفَرْ لَهُم مَّا قَدْ سَلَفَ وَإِن يَعُودُوا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ {38}

तुम काफिरों से कह दो कि अगर वह लोग बाज़ रहें तो उनके पिछले कुसूर माफ कर दिए जाएँ और अगर फिर कहीं पलटें तो यक़ीनन अगलों के तरीक़े गुज़र चुके जो, उनकी सज़ा हुयी वही इनकी भी होगी (३८)

व्याख्या:- पापी काफिर ये जान ले कि अगर पाप कर्मों से अपने आपको पूरी तरह से मुक्त कर ले तो अल्लाह उनके पहले किये गये पाप (प्राकृतिक तौर पर) क्षमा कर देंगे, मगर एक ही पाप समय के उपरांत बार-बार किया जाए तो उसकी कोई क्षमा नहीं है।

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ لِلَّهِ ۚ فَإِنِ انتَهَوْا فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ {39}

लड़े जाओ यहाँ तक कि कोई फसाद न रहे और ख़ुदा की दीन ही दीन हो जाए फिर अगर ये लोग न बाज़ आएँ तो ख़ुदा उनकी कारवाइयों को ख़ूब देखता है (३९)

व्याख्या:- पवित्र, संयमी और शांतिकामी मानव उस हद तक युद्ध करें जब तक समाज से पाप, घृणा, हिंसा और झगड़ा फैलाने वाले मानव के पाप कर्म पुरी तरह से खत्म न हो जाये और जब तक शांति और मानव के मध्य प्रेम प्रतिष्ठित न हो जाये। अल्लाह सबके चरित्र को ख़ूब जानता है।

وَإِن تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَوْلَاكُمْ ۚ نِعْمَ الْمَوْلَىٰ وَنِعْمَ النَّصِيرُ {40}

और अगर सरताबी करें तो समझ लो कि ख़ुदा यक़ीनी तुम्हारा मालिक है और वह क्या अच्छा मालिक है और क्या अच्छा मददगार है (४०)

व्याख्या:- अगर पापी मानव अपने पाप कर्मों को छोड़ने से इनकार करें तो पवित्र मानव ये जान ले कि अल्लाह ही सबका अभिभावक है और वही सब का मदद करने वाला है।

पैगाम:- इस आयत का मतलब ये है कि अगर पवित्र मानव को एक हद तक पाप कर्मों को रोकना उनके वश में होगा लेकिन पाप चक्र बहुत ज्यादा शक्तिशाली हो और पवित्र मानव की हर प्रचेष्टा के बावजूद पाप और अहिंसा खत्म नहीं होती तो पवित्र मानव ये समझ ले कि उनका काम अल्लाह ने इसी हद तक सीमित रखा और अल्लाह सब का अभिभावक है।

وَاعْلَمُوا أَنَّمَا غَنِمْتُم مِّن شَيْءٍ فَأَنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسَاكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ إِن كُنتُمْ آمَنتُم بِاللَّهِ وَمَا أَنزَلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعَانِ ۗ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {41}

और जान लो कि जो कुछ तुम लूटो तो उनमें का पाँचवाँ हिस्सा मख़सूस ख़ुदा और रसूल और क़राबतदारों और यतीमों और मिस्कीनों और परदेसियों का है अगर तुम अल्लाह पर और उस पर ईमान ला चुके हो जो हमने ख़ास बन्दे पर फ़ैसले के दिन नाज़िल की थी जिस दिन दो जमाअतें बाहम गुथ गयी थी और ख़ुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर है (४१)

व्याख्या:- मानव ये बात जान ले कि पाप से कमाई हुई सम्पत्ति यानी गनीमत (जब पापी मानव पाप कर्म छोड़ने की प्रतिज्ञा करते है और दुबारा पाप नहीं करते तब उनके पाप कर्मों से कमाई हुई सम्पत्ति को किस तरह इस्तेमाल करना है उसका उल्लेख है) का जो कुछ भी है उस सम्पत्ति को समाज के संयमी (रसुल) मानव की निगेबानी में मानव और मानव समाज के कल्याण के लिए खर्च करते है।

पैगाम:- इस्लाम में फसाद यानी युद्ध और लुटमार चाहे वो युद्ध में हो या आम हालात में पुरी तरह हराम है और आज के दुनिया में ये कानून है कि कोई भी किसी के साथ युद्ध करें तो वो उसके देश को लुट नहीं सकता। लुटी हुई सम्पत्ति रसुल और उसके परिवार को बांटने के ख्यालात पुरी तरह से गलत है जब कि आज की दुनिया में रसुल की उपस्थिति नही है।

إِذْ أَنتُم بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُم بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَى وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَلَوْ تَوَاعَدتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَادِ وَلَكِن لِّيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَن بَيِّنَةٍ وَيَحْيَىٰ مَنْ حَيَّ عَن بَيِّنَةٍ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ {42}

जब तुम क़रीब नाके पर थे और वह कुफ़्फ़ार बईद के नाके पर और सवार तुम से नशेब में थे और अगर तुम एक दूसरे से वायदा कर लेते हो तो और वक़्त पर गड़बड़ कर देते मगर अल्लाह ने अचानक तुम लोगों को इकट्ठा कर दिया ताकि जो बात होनी थी वह पूरी कर दिखाए ताकि जो शख़्स हलाक हो वह हुज्जत तमाम होने के बाद हलाक हो और जो ज़िन्दा रहे वह हिदायत की हुज्जत तमाम होने के बाद ज़िन्दा रहे और अल्लाह यक़ीनी सुनने वाला ख़बरदार है (४२)

व्याख्या:- मानव याद करें कि कुछ मानव ईमान के निकट थे और कुछ ईमान से बहुत दूर और उनके विवेक का दायरे बहुत नीचे था और समाज में अच्छाई, मानवता और सत्यता कायम करने के लिए नेक और पवित्र मानव की लड़ाई में अपवित्र मानव हमेशा फूट डालते रहे और जान-बूझकर मतभेद पैदा करते रहे। वास्तव में जो होता है वो अल्लाह की तरफ से होता है और सत्यता प्रकाशित हो जाती है और अल्लाह सब देखता-जानता है।

पैगाम:- जो मानव पवित्रता, संयम, मानवता, प्रेम, अहिंसा और शांति को अपने जीवन में पुरी तरह ग्रहण करके अल्लाह को सजदा करते है वही ईमान वाले होते है।

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَامِكَ قَلِيلًا وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ {43}

जब ख़ुदा ने तुम्हें ख़्वाब में कुफ़्फ़ार को कम करके दिखलाया था और अगर उनको तुम्हें ज़्यादा करते दिखलाता तुम यक़ीनन हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में झगड़ने लगते मगर अल्लाह ने इसे से बचाया इसमें तो शक ही नहीं कि वह दिली ख़्यालात से वाक़िफ़ है (४३)

व्याख्या:- पवित्र और संयमी लोगों के मस्तिक्ष में ये बात सदेव रहती है कि संख्या में पापियों की तुलना संयमी लोगों से ज्यादा है लेकिन प्राकृतिक सत्य ये है कि पापी दुनिया में पवित्र लोगों से कम है। पवित्र मानव पापियों के दृष्टि में बहुत मामूली होते है और अल्लाह सारे किया-प्रकिया का मालिक है।

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِي أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا وَيُقَلِّلُكُمْ فِي أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُولًا وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ {44}

जब तुम लोगों ने मुठभेड़ की तो ख़ुदा ने तुम्हारी आँखों में कुफ़्फ़ार को बहुत कम करके दिखलाया और उनकी आँखों में तुमको थोड़ा कर दिया ताकि अल्लाह को जो कुछ करना मंजूर था वह पूरा हो जाए और कुल बातों का दारोमदार तो अल्लाह ही पर है (४४)

व्याख्या:- हर सम्प्रदाय एक-दूसरे को छोटा या नीचा समझता है और कही-कही ये सोच घृणा और शत्रुता तक पहुँच जाती है और ये सोच सरासर प्राकृतिक आदर्शों के विरूद्ध है। हर किसी को प्रकृति में ही समादिष्ट होना पड़ता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوا وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ {45}

ऐ इमानदारों जब तुम किसी फौज से मुठभेड़ करो तो ख़बरदार अपने क़दम जमाए रहो और अल्लाह को बहुत याद करते रहो ताकि तुम फलाह पाओ (४५)

व्याख्या:- पवित्र विवेक वाले मानव यानी मुसलमान कभी भी दोहरा रास्ता ग्रहण नहीं करते इनके आदर्श हमेशा अटल रहते है और अंत में अल्लाह की मर्जी से ऐसे मानव की ही विजय होती है। बड़ी से बड़ी मुसीबत या पापियों का सामना करने की ताकत भी उनमें होती है।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَلَا تَنَازَعُوا فَتَفْشَلُوا وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ وَاصْبِرُوا إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ {46}
ख़ुदा की और उसके रसूल की इताअत करो और आपस में झगड़ा न करो वरना तुम हिम्मत हारोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और झेल जाओ अल्लाह तो यक़ीनन सब्र करने वालों का साथी है (४६)
व्याख्या:- अल्लाह और उनके प्राकृतिक सत्य बताने वाले रसुल का अनुसरण करना पवित्र मानव का कर्त्तव्य है। पवित्र मानव आपस में लड़ाई या विवाद नही करते। लड़ाई या विवाद से मानव का धैर्य और मनोबल टूटता है और जो मानव धैर्यशील होते है उनकी सहायता स्वयं अल्लाह करता है।

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِم بَطَرًا وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن سَبِيلِ اللَّهِ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ {47}
और उन लोगों के ऐसे न हो जाओ जो इतराते हुए और लोगों के दिखलाने के वास्ते अपने घरों से निकल खड़े हुए और लोगों को अल्लाह की राह से रोकते है और जो कुछ भी वह लोग करते है ख़ुदा उस पर अहाता किए हुए है (४७)
व्याख्या:- पवित्र मानव कभी भी अशांति का पथ ग्रहण न करे और जो मानव पवित्र मानव की शांति और अल्लाह के आदर्शों को विनष्ट करने की चेष्टा करते है उन्हें अल्लाह अपने प्राकृतिक चक्र में घेरे हुए है।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّي جَارٌ لَّكُمْ فَلَمَّا تَرَاءَتِ الْفِئَتَانِ نَكَصَ عَلَىٰ عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِّنكُمْ إِنِّي أَرَىٰ مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّي أَخَافُ اللَّهَ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ {48}
और जब शैतान ने उनकी कारस्तानियों को उम्दा कर दिखाया और उनके कान में फूँक दिया कि लोगों में आज कोई ऐसा नहीं जो तुम पर ग़ालिब आ सके और मै तुम्हारा मददगार हूँ फिर जब दोनों लश्कर मुकाबिल हुए तो अपने उलटे पाँव भाग निकला और कहने लगा कि मै तो तुम से अलग हूँ मै वह चीज़े देख रहा हूँ जो तुम्हे नही सूझती मै तो अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह बहुत सख़्त अज़ाब वाला है (४८)
व्याख्या:- अपवित्र मानव की दृष्टि से इनकी अपवित्रता में ही सत्य नजर आता और समझते है कि अहंकार में चूर होकर कोई भी मानव या कोई भी सम्प्रदाय इन पर विजय प्राप्त नही कर सकता। पापियों पर अल्लाह का अभिश्राप बड़ा कठिन है।

إِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ غَرَّ هَٰؤُلَاءِ دِينُهُمْ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {49}
जब मुनाफिक़ीन और जिन लोगों के दिल में मर्ज़ है कह रहे थे कि उन मुसलमानों को उनके दीन ने धोके में डाल रखा है कि इतराते फिरते है हालाँकि जो शख़्स ख़ुदा पर भरोसा करता है ख़ुदा तो यक़ीनन ग़ालिब और हिकमत वाला है (४९)
व्याख्या:- झूठ और पाप में विश्वास करने वाले मानव कहते है कि पवित्र, संयमी मानव का मस्तिश्क बीमार है। पवित्र मनुष्य अल्लाह और उसकी प्रकृति पर विश्वास रखते है, अल्लाह महापराक्रमी और बुद्धिमान है।

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِينَ كَفَرُوا الْمَلَائِكَةُ يَضْرِبُونَ وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ {50}
और काश तुम देखते जब फ़रिश्ते काफ़िरों की जान निकाल लेते थे और रूख़ और पुश्त पर कोड़े मारते थे और अज़ाब जहन्नुम के मज़े चखो (५०)
व्याख्या:- मानव की दृष्टि अगर ये देख सकती कि पापियों की अंर्तात्मा कितने अशांति और नर्क जंतना से भरी हुई है तो यक़ीनन वो पाप नही करते।

ذَٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ {51}
ये सज़ा उसकी है जो तुम्हारे हाथों ने पहले किया कराया है और अल्लाह बन्दों पर हरगिज़ जुल्म नही किया करता है (५१)
व्याख्या:- ये पापियों के पाप कर्मो का प्रतिफल है अल्लाह या प्रकृति किसी को कष्ट नही देती।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ {52}
क़ौमे फिरआऊन और उनके लोगों की सी है जो उन से पहले थे और ख़ुदा की आयतों से इन्कार करते थे तो ख़ुदा

ने भी उनके गुनाहों की वजह से उन्हें ले डाला बेशक अल्लाह ज़बरदस्त और बहुत सख़्त अज़ाब देने वाला है (५२)

व्याख्या:- उदाहरण स्वरूप मिश्र के राजा फिरौन और उनकी सम्प्रदाय को किस तरह अन्याय का डंड मिला था।

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا مَا بِأَنفُسِهِمْ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {53}

ये सज़ा इस वजह से कि जब कोई नेअमत अल्लाह किसी क़ौम को देता है तो जब तक कि वह लोग ख़ुद अपनी कलबी हालत न बदलें अल्लाह भी उसे नहीं बदलेगा और ख़ुदा तो यक़ीनी और सब कुछ जानता है (५३)

व्याख्या:- अल्लाह के वरदान परिवर्तनशील नहीं है जब तक मानव खुद अपने पाप कर्मों से उस वरदान को कोलोशीत न करे।

كَدَأْبِ آلِ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُم بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا آلَ فِرْعَوْنَ وَكُلٌّ كَانُوا ظَالِمِينَ {54}

क़ौम फिरआऊन और उन लोगों की सी है जो उनसे पहले थे और अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाते थे तो हमने भी उनके गुनाहों की वजह से उनको हलाक़ कर डाला और फिरआऊन की क़ौम को डुबा मारा और सब के सब ज़ालिम थे (५४)

व्याख्या:- फिरोन के सम्प्रदाय और उसे पहले वाले सम्प्रदाय से अल्लाह के आदर्शों का उल्लंघन किया था और उनके पाप कर्मों के वजह से उन्हें डंड भोगना पड़ा।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِندَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ {55}

इसमें शक नहीं कि ख़ुदा के नज़दीक जानवरों में कुफ़्फ़ार सबसे बदतरीन तो फिर ईमान नहीं लाते (५५)

व्याख्या:- सारे प्राणियों में सबसे नीच प्राणी वो है जो अल्लाह के प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन करतै है और अपने अपवित्र चरित्र से मानव समाज की शांति को बिगाड़ते है।

पैगाम:- अल्लाह ने जब मानव की सृष्टि की तब उनके मस्तिक्ष में प्रेम, मानवता और सत्य की अनुभूति डाल देते है और जो मानव इन सारी बातों को इनकार (कुफ़) करते है वो पापी है और यही अल्लाह का दिया हुआ प्राकृतिक नियम है।

الَّذِينَ عَاهَدتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ {56}

जिन लोगों से तुम ने एहद व पैमान किया था फिर वह लोग अपने एहद को हर बार तोड़ डालते है और नहीं डरते (५६)

व्याख्या:- ईश्वर के साथ मानव का एहद है प्रेम, भाईचारा, प्रकृति की सुरक्षा और शांति। पापियों को रसुल के द्वारा ईश्वर का जो एहद मिलता है वो उसे बार-बार तोड़ते रहते है।

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِم مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ {57}

उनके साथ साथ उन लोगों का तो अगर वह लड़ाई में तुम्हारे हत्थे चढ़ जाएं तो उनके साथ उन लोगों को भी तितिर बितिर कर दो जो उन के पुश्त पर हों (५७)

व्याख्या:- पापियों को समाजिक तौर पर ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि उसे देखकर लोग पाप कर्मों से डरे।

पैगाम:- सजा और जजा का मालिक अल्लाह है और मानव का कोई हक नहीं बनता कि वो अल्लाह के नियमों के लिए किसी को सजा दे। मगर अल्लाह की मर्जी से ही मानव समाज कानून के दायरे में सीमित है।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِن قَوْمٍ خِيَانَةً فَانبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ {58}

ताकि ये इबरत हासिल कर और अगर तुम्हें किसी क़ौम की ख़्यानत का ख़ौफ हो तो तुम भी बराबर उनका एहद उन्ही की तरफ से फेंक मारो ख़ुदा हरगिज़ दग़ाबाजों को दोस्त नहीं रखता (५८)

व्याख्या:- समाजिक, प्राकृतिक और ऐश्वर्य नियमों का उल्लंघन महापाप है और ईमान वालों को चाहिए कि ऐसे पापियों को रोकने की हर संभव प्रचेष्टा करें और दगाबाजों को कोई पसंद नहीं करता।

पैगाम:- ईमान वाले पापियों के साथ कोई एहद न करें।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ {59}

और कुफ़्फ़ार ये न ख़्याल करें कि वह आगे बढ़ निकले वह हरगिज़ हरा नहीं सकते (५९)

व्याख्या:- गुनहगार यानी अपवित्र मानव कभी भी पवित्र और संयमी लोगों को कमजोर न समझे। सच और प्रेम में बहुत शक्ति है और यही शक्ति पवित्र लोगों को शांति प्रदान करती है।

وَأَعِدُّوا لَهُم مَّا اسْتَطَعْتُم مِّن قُوَّةٍ وَمِن رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِن دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ وَمَا تُنفِقُوا مِن شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنتُمْ لَا تُظْلَمُونَ {60}

और वास्ते जहाँ तक तुमसे हो सके ज़ोर से और बँधे हुए घोड़े से लड़ाई का सामान मुहय्या करो इससे ख़ुदा के दुश्मन और अपने दुश्मन और उसके सिवा दूसरे लोगों पर भी अपनी धाक बढ़ा लेगें जिन्हें तुम नहीं जानते हो मगर अल्लाह तो उनको जानता है और अल्लाह की राह में तुम जो कुछ भी ख़र्च करोगें वह तुम पूरा पूरा भर पाओगें और तुम पर किसी तरह ज़ुल्म नहीं किया जाएगा (६०)

व्याख्या:- पाप चक्र और पापियों को खत्म करने के लिए या उनसे मुकाबला करने के लिए अपने मनोबल को पवित्र मानव सख्त रखते है और यही शक्ति ऐश्वरिक शक्ति है और अल्लाह पवित्र लोगों को इस शक्ति द्वारा अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त करवाते है।

وَإِن جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ {61}

और अगर ये सुलह की तरफ माएल हो तो तुम भी उसकी तरफ माएल हो और अल्लाह पर भरोसा रखो वह बेशक सुनता जानता है (६१)

व्याख्या:- अपवित्र पापी मानव अगर अपने जीवन को पवित्र और सत्य कर्मों पर लाने की शपथ लेते है तो पवित्र मानव उन्हें इस काम में सहायता करें और अल्लाह पर भरोसा रखें, और अल्लाह सब सुनता जानता है।

وَإِن يُرِيدُوا أَن يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ هُوَ الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ {62}

और अगर वह लोग तुम्हें फरेब देना चाहे तो अल्लाह तुम्हारे वास्ते यक़ीनी काफी है-वही तो वह है जिसने अपनी ख़ास मदद और मोमिनीन से तुम्हारी ताईद की (६२)

व्याख्या:- अगर अपवित्र मानव इस मामले में छल करते है तो ऐश्वरिक शक्ति ही उनके लिए काफी है और अल्लाह सब देखता-सुनता है और उनकी शक्ति पवित्र मानव की शक्ति बन जाती है।

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ لَوْ أَنفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَّا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ إِنَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {63}

और उसी ने उन के दिलों में बाहम ऐसी उलफ़त पैदा कर दी कि अगर तुम जो कुछ ज़मीन में है सब का सब ख़र्च कर डालते तो भी उनके दिलो में ऐसी उलफ़त पैदा न कर सकते मगर ख़ुदा ही था जिसने बाहम उलफत पैदा की बेशक वह ज़बरदस्त हिक़मत वाला है (६३)

व्याख्या:- मनुष्य का विवेक जो प्रेम और पवित्रता से अल्लाह ने भर रखा है उस प्रेम, पवित्रता और शांति के साथ पृथ्वी की कोई भी सम्पत्ति मुकाबला नहीं कर सकती और अल्लाह बड़ा ही पराकर्मी है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ {64}

ऐ रसूल तुमको बस अल्लाह और जो मोमिनीन तुम्हारे ताबेए फरमान है काफी है (६४)

व्याख्या:- पवित्र मानव के लिए ऐश्वरिक शक्ति ही काफी है और पवित्र मानव ही अल्लाह के आदर्शों का पालन करते है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ إِن يَكُن مِّنكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ يَغْلِبُوا مِائَتَيْنِ وَإِن يَكُن مِّنكُم مِّائَةٌ يَغْلِبُوا أَلْفًا مِّنَ الَّذِينَ كَفَرُوا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ {65}

ऐ रसूल तुम मोमिनीन को जिहाद के वास्ते आमादा करो अगर तुम लोगों में के साबित क़दम रहने वाले बीस भी होगें तो वह दो सौ पर ग़ालिब आ जायेगे और अगर तुम लोगों में से साबित कदम रहने वालों सौ होगें तो हज़ार पर ग़ालिब आ जाएँगे इस सबब से कि ये लोग ना समझ है (६५)

व्याख्या:- नबी, रसुल और समाज के ज्ञानी पवित्र मानव को अपवित्रता के विरूद्ध संघर्ष करने पर सहायता करते है। अगर संयमी २० लोग हो तो वो २०० पापियों का मुकाबला कर सकते है और १०० पवित्र मानव हजार पापियों पर विजय प्राप्त कर सकते है क्योंकि पापी बुद्धिहीन और डरपोक होते है।

पैगाम:- किसी की अंर्तात्मा अगर पाप के विरूद्ध धर्मयुद्ध में शामिल होना नहीं चाहती तो निश्चित रूप से ये इसके विश्वास की कमजोरी है।

الآنَ خَفَّفَ اللهُ عَنكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا فَإِن يَكُن مِّنكُم مِّئَةٌ صَابِرَةٌ يَغْلِبُوا مِئَتَيْنِ وَإِن يَكُن مِّنكُمْ أَلْفٌ يَغْلِبُوا أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللهِ وَاللهُ مَعَ الصَّابِرِينَ {66}

अब खुदा ने तुम से तख़्फ़ीफ कर दी और देख लिया कि तुम में यक़ीनन कमज़ोरी है तो अगर तुम लोगों में से साबित क़दम रहने वाले सौ होगें तो दो सौ पर ग़ालिब रहेंगें और अगर तुम लोगों में सेएक हज़ार होगें तो अल्लाह के हुक्म से दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे और झेल जाने वालों का अल्लाह साथी है (६६)

व्याख्या:- अल्लाह की शक्ति से ही पवित्र मानव निडर होते है और अल्लाह की शक्ति ही पवित्र मानव का बोझ हल्का करती है। अल्लाह जानता है कि पवित्र मानव में भी दुर्बलता है लेकिन यही दुर्बलता पापियों में ज्यादा होती है। इसलिए पवित्र मानव की विजय अपवित्र मानव पर सदेव होती रहती है।

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَن يَكُونَ لَهُ أَسْرَى حَتَّى يُثْخِنَ فِي الأَرْضِ تُرِيدُونَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللهُ يُرِيدُ الآخِرَةَ وَاللهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {67}

कोई नबी जब कि रूए ज़मीन पर खून न बहाए उसके यहाँ क़ैदियों का रहना मुनासिब नहीं तुम लोग तो दुनिया के साज़ो सामान के ख़्वाहाँ हो और खुदा आख़िरत का ख्वाहाँ है और अल्लाह ज़बरदस्त हिकमत वाला है (६७)

व्याख्या:- जब तक पाप और पापियों का विनाश न हो तब तक पवित्र मानव अपना संघर्ष बंद न करे और अल्लाह बड़ा पराकर्मी है।

पैगाम:- अल्लाह कभी भी मानव को रक्तपाथ और फसाद की प्रेरणा नहीं देते अगर यही सोच मुसलमानों के विरूद्ध दूसरे लोग रखे और कहे कि मुसलमानों को खत्म कर दो तो इस आयत का वर्तमान अनुवाद मुसलमानों पर भारी पड़ेगा। कुरान शरीफ की हर आयत हर मनुष्य के लिए अल्लाह के तरफ से रसुल के द्वारा दुनिया में आई और इस आयत का साफ और स्पष्ट पैगाम ये है कि अल्लाह फसाद और आपस में रक्तपाथ पसंद नहीं करता और याद रखें कि आज के दौर में मुसलमान केवल २१प्रतिशत है।

لَّوْلا كِتَابٌ مِّنَ اللهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ {68}

और अगर अल्लाह की तरफ से पहले ही (उसकी) माफी का हुक्म आ चुका होता तो तुमने जो फिदिया लिया था उसकी सज़ा में तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होकर रहता (६८)

व्याख्या:- फसाद करने वाले और मानवता की हत्या करने वाले पापी मानव अगर नेक काम नहीं करते तो उनके लिए जबरदस्त डंड मौजूद है।

فَكُلُوا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلالاً طَيِّبًا وَاتَّقُوا اللهَ إِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {69}

तो अब तुमने जो माल ग़नीमत हासिल किया है उसे खाओ हलाल तय्यब है और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (६९)

व्याख्या:- अपने विवेक के संघर्ष में जो पवित्रता प्राप्त होती है उसके द्वारा अच्छा पवित्र और शांति का जीवन उपभोग करें और अल्लाह से डरे और पाप कर्म छोड़ने के बाद दुबारा उसे न अपनाये तो अल्लाह उनके लिये क्षमाकारी और दयालु है।

पैगाम:- लूटना, हत्या करना और फसाद फैलाना, अल्लाह और इसके रसुल के नियमों के बिल्कुल विरूद्ध है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّمَن فِي أَيْدِيكُم مِّنَ الأَسْرَى إِن يَعْلَمِ اللهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّا أُخِذَ مِنكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ وَاللهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {70}

ऐ रसूल जो क़ैदी तुम्हारे कब्ज़े में है उनसे कह दो कि अगर तुम्हारे दिलों में सभ्यी देखेगा तो जो तुम से छीन लिया

गया है उससे कहीं बेहतर तुम्हें अता फरमाएगा और तुम्हें बख़्श भी देगा और अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (७०)

व्याख्या:- ज्ञानियों के आस-पास जो अज्ञानी व्यक्ति है उन्हें कह देना चाहिए कि अगर वो ज्ञान प्राप्त करे और पवित्र कर्मों में अपने आपको लगाये तो निश्चित रूप से उसने जो खोया उससे बहुत ज्यादा उपलब्ध होगा और अल्लाह क्षमाकारी और दयालु है।

وَإِن يُرِيدُوا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللَّهَ مِن قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ {71}

और अगर ये लोग तुमसे फरेब करना चाहते है तो ख़ुदा से पहले ही फरेब कर चुके है तो ख़ुदा ने उन पर तुम्हें क़ाबू दे दिया और ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफ़कार हिकमत वाला है (७१)

व्याख्या:- अगर अज्ञानी पवित्र लोगों के साथ जुल्म करें तो ये जुल्म अल्लाह की शपथ तोड़ने के बराबर होगा। पवित्र लोगों को अल्लाह ने अपवित्र लोगों से ज्यादा शक्ति दी है।

पैगाम:- आज वर्तमान दुनिया इस आयत का उदाहरण बयान करती नजर आती है यानी अज्ञानी तकलीफों का जीवन व्यतीत करते है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يُهَاجِرُوا مَا لَكُم مِّن وَلَايَتِهِم مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا وَإِنِ اسْتَنصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُم مِّيثَاقٌ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ {72}

जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और हिजरत की और अपने अपने जान माल से अल्लाह की राह में जिहाद किया और जिन लोगों ने उनकी ख़बर गीरी की यही लोग एक दूसरे के सरपरस्त दोस्त है और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और हिजरत नहीं की तो तुम लोगों को उनकी सरपरस्ती से कुछ सरोकार नहीं-यहाँ तक कि वह हिजरत एख़्तियार करें और मगर दीनी अम्र में तुम से मदद के ख़्वाहाँ हो तो तुम पर उनकी मदद करना लाज़िम है मगर उन लोगों के मुक़ाबले में जिनमे और तुममें बाहम एहदो पैमान है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह देख रहा है (७२)

व्याख्या:- जिस मानव ने पवित्रता और संयम की शपथ ली और अपने रोजगार की सम्पत्ति को या अपने जीवन को प्राणियों की सेवा में लगा दिया तो ऐसे लोग आपस में एक दूसरे के मित्र होते है और ये एक ही सम्प्रदाय (भक्त) के अंतर्गत होते है और प्राणियों के लिए एक जगह से दूसरी जगह (हिजरत) जाते है। जिन लोगों ने पवित्रता और सेवा की शपथ ली है मगर प्राणियों की सेवा के लिए दूर देश नहीं जा सकते तो उन लोगों को कोई पश्चताप नहीं होगा। प्राणियों की सेवा के लिए कोई भी मदद की आवश्यकता हो तो सबका कर्त्तव्य है की उनकी आवश्यकता को पूरा करे और अल्लाह सबके काम को देखता है।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ {73}

और जो लोग काफ़िर है वह भी एक दूसरे के सरपरस्त है अगर तुम वायदा न करोगे तो रूए ज़मीन पर फ़ितना बरपा हो जाएगा और बड़ा फ़साद होगा (७३)

व्याख्या:- पापी और अपवित्र मानव आपस में एक-दूसरे के मित्र होते है। अगर पवित्र मानव आपस में इकाई न रखे और विचारधारा की एकता न रहे तो अशांति फैलने का अंदेशा रहता है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ آوَوا وَّنَصَرُوا أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا لَّهُم مَّغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ {74}

और जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और हिजरत की और ख़ुदा की राह में लड़े भिड़े और जिन लोगों ने जगह दी और उनकी हर तरह ख़बरगीरी की यही लोग सच्चे ईमानदार है उन्हीं के वास्ते मग़फिरत और इज़्ज़त व आबरू वाली रोज़ी है (७४)

व्याख्या:- जिन लोगों ने प्राणियों की सेवा में अपने आपको नियुक्त किया और पुरी तरह से इस पथ को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और दरिद्र, अपाहिज और पीड़ित लोगों को शरण दिया वही सच्चे मुसलमान है। और ऐसे लोगों के लिए उनकी पुरानी जिन्दगी के पाप कर्मों की पुरी तरह क्षमा है।

وَالَّذِينَ آمَنُوا مِن بَعْدُ وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا مَعَكُمْ فَأُولَٰئِكَ مِنكُمْ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ {75}

और जिन लोगों ने बाद ईमान क़ुबूल किया और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वह लोग भी तुम्हीं में से है और साहबाने क़राबत ख़ुदा की किताब में बाहम एक दूसरे के ज़्यादा हक़दार है बेशक ख़ुदा हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ है (७५)

व्याख्या:- और जिसने शिक्षा, मानवता, प्रेम, शांति, अहिंसा, पवित्रता और प्राणियों की सेवा को अपना धर्म स्वरूप अपनाया और इसी लक्ष्य में अपवित्र मानव के विरूद्ध युद्ध किया ऐसे लोग ईमान वालों की सम्प्रदाय के है और अल्लाह सब देखता-जानता है।

सूरा: तौबा

بَرَاءةٌ مِّنَ اللّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ {1}

जिन मुशरिकों से तुम लोगों ने सुलह का एहद किया था अब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ से उनसे बेज़ारी है (१)

व्याख्या:- ऐसे एहद को तोड़ देना चाहिए जो अल्लाह और उसके रसुलों के बताये हुए नियमों के विरूद्ध हो।

فَسِيحُوا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّهِ وَأَنَّ اللّهَ مُخْزِي الْكَافِرِينَ {2}

तो बस तुम चार महीने तो रूए ज़मीन में सैरो सियाहत कर लो और ये समझते रहे कि तुम ख़ुदा को आजिज़ नहीं कर सकते और ये भी कि ख़ुदा काफ़िरों को ज़रूर रूसवा करके रहेगा (२)

व्याख्या:- चार महीने तक पापियों को वक्त दिया जाये उन्हें सुधरने का और पापी ये जान ले कि उनके नियमों से अल्लाह के नियम कभी कमजोर नहीं हो सकते। पापियों के अयौगतिक, कु-संस्कार और नफरत वाले नियम आखिरकार मानव और मानव समाज में बेनकाब होकर बेइज्जत होते है।

وَأَذَانٌ مِّنَ اللّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللّهَ بَرِيءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ وَرَسُولُهُ فَإِن تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّهِ وَبَشِّرِ الَّذِينَ كَفَرُوا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ {3}

और ख़ुदा और उसके रसूल की तरफ से हज अकबर के दिन लोगों को मुनादी की जाती है कि ख़ुदा और उसका रसूल मुशरिकों से बेज़ार है तो अगर तुम लोगों ने तौबा की तो तुम्हारे हक़ में यही बेहतर है और अगर तुम लोगों ने मुँह मोड़ा तो समझ लो कि तुम लोग ख़ुदा को हरगिज़ आजिज़ नहीं कर सकते और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तेयार किया उनको दर्दनाक अज़ाब की ख़ुश ख़बरी दे दो (३)

व्याख्या:- अल्लाह और उनके प्राकृतिक सत्य को बताने वाले ये घोषणा करते है कि असत्य और पापी आदर्शों पर जीने वाले मुशिरकों के साथ अल्लाह के प्राकृतिक सत्य आदर्शों का कोई सम्पर्क नही। अल्लाह के प्राकृतिक सत्य आदर्श पापियों के सामने प्रमाणित होने के उपरांत भी पापी उसे ग्रहण नहीं करते यानी अल्लाह के आदर्श पापी चरित्र मानव के सामने प्रमाणित हो चुका। पापी मानव पवित्र और सत्य धर्म को ग्रहण करे तो वो उनके लिए सबसे उत्तम पथ है। पापी याद रखे कि अगर वो सत्यता और पवित्रता के पथ पर ढोंग रचायें तो निश्चित रूप से उनके असत्य चरित्र, सत्य को कभी भी कमजोर नहीं कर सकते और यही संदेश अपवित्र मानव के लिए है।

पैगाम:- अल्लाह किसी के अमाल से बेजार नहीं होता। मुशिरक वो है जो अल्लाह के पवित्र और सत्य आदर्शों को ठुकरा कर पाप और अपवित्र आदर्शों को अपनाते है। यहां पर ''हज'' से मुराद पवित्रता और धैर्य।

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّم مِّنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنقُصُوكُمْ شَيْئًا وَلَمْ يُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلَى مُدَّتِهِمْ إِنَّ اللّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ {4}

मगर जिन मुशरिकों से तुमने एहदो पैमान किया था फिर उन लोगों ने भी कभी कुछ तुमसे कमी नहीं की और न तुम्हारे मुक़ाबले में किसी की मदद की हो तो उनके एहद व पैमान को जितनी मुद्दत के वास्ते मुक़र्रर किया है पूरा कर दो ख़ुदा परहेज़गारों को यक़ीनन दोस्त रखता है (४)

व्याख्या:- जो मानव घृणा, हत्या और धर्म के नाम पर मानवता के आदर्शों का उल्लंघन करते है वो मुशिरक है। ऐसे लोग आपस में एक सम्प्रदाय है और इस सम्प्रदाय के अंदर कुछ लोग ऐसे भी होते है जो ऐसी सोच रखते है मगर इस पर अमल नहीं करते यानी किसी का नुकसान नहीं करते। उनके लिए कोई सख्त सजा नहीं होनी चाहिए।

पैगाम:- इंसान के चरित्र का पता उसके रूप से ज्ञात नहीं होता और कभी-कभी बुराई के बीच भी अच्छाई देखने को मिलती है। ईमान वाले इंसान सदेव मानव के नेक अमाल की कद्र करते है और अपनी प्रतिज्ञा पूरी करते है।

فَإِذَا انسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِينَ حَيْثُ وَجَدتُّمُوهُمْ وَخُذُوهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ وَاقْعُدُوا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَخَلُّوا سَبِيلَهُمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {5}

फिर जब हुरमत के चार महीने गुज़र जाएँ तो मुशरिको को जहाँ पाओ कत्ल करो और उनको गिरफ्तार कर लो और उनको क़ैद करो और हर घात की जगह में उनकी ताक में बैठो फिर अगर वह लोग बाज़ आएँ और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात दे तो उनकी राह छोड़ दो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (५)

व्याख्या:- चार महीने का मौका देने के बाद अगर पापी (यानी फसाद करने वाले, बलत्कार करने वाले, जुल्म करने वाले, बच्चों के साथ शारीरिक और मानसिक अत्याचार करने वाले, सच्चे और प्रकृतिक आदर्शों को अपने घिनौनी हरकत से नफरत वाले आदर्शों में परिवर्तन करने वाले और संवारने के नाम पर बिगाड़ने वाले) न सुधरे तो उन्हें बंदी बना दिया जाये ताकि वो अपने कामों को फैला न सकें। ऐसे लोग अगर बंदी न हो या वो खुले घूम रहे हो तो उन्हें पकड़ने के लिए हर मोड़ पर उनका इंतजार करें लेकिन अगर वो पाप कर्मों से तौबा कर ले और अल्लाह के सच्चे और प्राकृतिक नियमों को अपना ले और पाप से कमाई हुई सम्पत्ति हुकुमत को दे दें उन्हें क्षमा मिलनी चाहिए, नहीं तो उनके उपर हर तरह की पाबंदी लगे ताकि उनके गलत सोच की मौत है यानी इस तरह से मुशिरकों का कत्ल किया जाए।

पैगाम:- अल्लाह ने मनुष्य को शारीरिक कत्ल करने की अनुमति इस आयत में नहीं दी है और न ही अल्लाह किसी की इबादत का मोहताज है। जब हर काम अल्लाह की मर्जी से ही होता है तो यकीनन मुशिरक कोई दूसरी सम्प्रदाय या कोई दूसरे धर्म को मानने वाले नहीं हो सकते। मुशिरक शब्द का अर्थ है गुनहगार यानी जो अल्लाह के आदर्शों को नहीं मानता और शैतान के आदर्शों पर चलता है। अल्लाह पर ईमान लाने के मतलब है अहिंसा, शिक्षा, सत्यता, प्रेम, मानवता, शांति और अल्लाह को एक मानकर समस्त प्राणियों को इसका हिस्सा मानना और ये भी मानना की इंसानी इबादत की बुनियाद इंसानी अमल से शुरू होती है, तरीकात से नहीं। कुरान शरीफ की हर आयत हर समय के लिए परिपूर्ण है तो इस हिसाब से इस आयत का वर्तमान अनुवाद आज के आधुनीक समय पर पुरी तरह से बातिल हो जाता है। मेरी व्याख्या की सच्चाई और गहराई को अनुभव करें।

وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّى يَسْمَعَ كَلَامَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهُ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُونَ {6}

और अगर मुशरिकीन में से कोई तुमसे पनाह मागें तो उसको पनाह दो यहाँ तक कि वह ख़ुदा का कलाम सुन ले फिर उसे उसकी अमन की जगह वापस पहुँचा दो ये इस वजह से कि ये लोग नादान है (६)

व्याख्या:- अगर पापी (मुशिरक) सम्प्रदाय में से कोई भी मानव शरण की प्रार्थना करते है तो उसे शरण देना और उसे अच्छाई की तरफ पहुँचा देना पवित्र लोगों का धर्म है।

पैगाम:- मौलानाओं के अनुवाद के अनुसार आयत नं0 ५ में ''ताक में बैठ कर मुशिरकों की हत्या करने का आदेश देते है'' और आयत नं0 ६ में ''मुशिरक को शरण देने की बात करते है'', कौन सी बात सही है - मुशिरकों की हत्या करना या उन्हें पनाह देना?

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَهْدٌ عِندَ اللَّهِ وَعِندَ رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدتُّمْ عِندَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَامُوا لَكُمْ فَاسْتَقِيمُوا لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ {7}

मुशरिकीन ने ख़ुद एहद शिकनी की तो उन का कोई एहदो पैमान ख़ुदा के नज़दीक और उसके रसूल के नज़दीक क्योंकर रह सकता है मगर जिन लोगों से तुमने खानाए काबा के पास मुआहेदा किया था तो वह लोग तुमसे क़ायम रखना चाहें तो तुम भी उन से क़ायम रखो बेशक अल्लाह परहेज़ करने वालों को दोस्त रखता है (७)

व्याख्या:- गुनहगारों (मुशिरक) के आदर्शों के साथ अल्लाह के सच्चे और पवित्र आदर्श जो रसुलों के द्वारा लोगों तक पहुँचे उनके मध्य कोई भी एहद नहीं हो सकता यानी अच्छाई और बुराई दोनों अलग-अलग रास्ते है और उनके मध्य कोई भी समझौता नहीं। सुख-शांति और पवित्रता (मस्जिद-ए-हराम) जिसकी निशानदेही करती है उसके आगे

जो भी कानून बने उसके द्वारा ही मानव समाज में पवित्र और अपवित्र यानी पाप और पुण्य का संतुलन बरकरार है। ईश्वर और पवित्र मानव के मध्य प्रेम का बंधन है।

كَيْفَ وَإِن يَظْهَرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوا فِيكُمْ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً يُرْضُونَكُم بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبَى قُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فَاسِقُونَ {8}

क्योंकर जब कि अगर तुम पर ग़लबा पा जाएँ तो तुम्हारे में न तो रिश्ते नाते ही का लिहाज़ करेगें और न अपने क़ौल व क़रार का ये लोग तुम्हें अपनी ज़बानी खुश कर देते है हालाँकि उनके दिल नहीं मानते और उनमें के बहुतेरे तो बदचलन हैं (८)

व्याख्या:- अपवित्र मानव कभी भी वादे के पक्के नहीं होते और उनके वादे पर कभी भी भरोसा नहीं करना चाहिए। इसलिए कोई भी एहद उनके साथ हो या पवित्रता या पुण्य की तरफ अगर वो आये तो पवित्रता के आदर्शों वो नहीं मानेगा। मानव समाज में ऐसे मानव भी उपस्थित है जो सिर्फ दिखावे के लिए पुण्य की बात करते है मगर वास्ते में उनकी अंर्तात्मा अपवित्रता से भरी हुई है और अरबी भाषा में ऐसे लोगों को फासिक कहा गया है।

اشْتَرَوْا بِآيَاتِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا فَصَدُّوا عَن سَبِيلِهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {9}

और उन लोगों ने अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ी सी क़ीमत हासिल करके उसकी राह से रोक दिया बेशक ये लोग जो कुछ करते हैं ये बहुत ही बुरा है (९)

व्याख्या:- अल्लाह के आदर्शों को ऐसे लोगों ने अपने गंदे और अपवित्र विचार से कोलोशीत किया और सत्य को छुपाने या इसे बिगाड़ना सबसे घिनौना काम है।

لَا يَرْقُبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلًّا وَلَا ذِمَّةً وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُونَ {10}

ये लोग किसी मोमिन के बारे में न तो रिश्ता नाता ही कर लिहाज़ करते है और न क़ौल का क़रार का और यही लोग ज़्यादती करते है (१०)

व्याख्या:- प्रेम, शांति और मानवता पर विश्वास न रखने वाले मुसलमानो का सम्मान नहीं करते और फासिक लोग अपनी सीमा का उल्लंघन करते है।

فَإِن تَابُوا وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتَوُا الزَّكَاةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّينِ وَنُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ {11}

तो अगर तौबा करें और नमाज़ पढ़ने लगें और ज़कात दें तो तुम्हारे दीनी भाई है और हम अपनी आयतों को वाक़िफकार लोगों के वास्ते तफ़सीलन बयान करते है (११)

व्याख्या:- ज्ञानी व्यक्ति नमाज और जकात के अर्थो की गहराई समझने में भुल नहीं करेगा इसलिए प्रेम, भाईचारा और ज्ञान को अपनाना ही नमाज है और पापी अपने चरित्र से तौबा करें और पवित्र आदर्शों को अपना ले। सरकारी कानून को हक समझकर उसे माने तो सब पवित्र मानव आपसे में भाई-भाई है।

وَإِن نَّكَثُوا أَيْمَانَهُم مِّن بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ إِنَّهُمْ لَا أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنتَهُونَ {12}

और अगर ये लोग एहद कर चुकने के बाद अपनी क़समें तोड़ डालें और तुम्हारे दीन में तुमको ताना दें तो तुम कुफ़्र के सरवर आवारा लोगों से खूब लड़ाई करो उनकी क़समें का हरगिज़ कोई एतबार नहीं ताकि ये लोग बाज़ आएँ (१२)

व्याख्या:- अगर कोई मानव सच्चाई और शांति के पथ को कबूल करने के बाद सच्चे और शांति के नियमों को तोड़ने लगे यानी सच्चाई और शांति के नियमों को तोड़ दे और सच्चाई को झूठ से अपवित्र करने की कोशिश करें यानी झूठे नियमों के द्वारा मानव समाज की सुख-शांति बिगाड़ने की चेष्टा करे तो पवित्र मानव ऐसे लोगों के साथ हर मुमकिन तरीके से युद्ध करें जब तक वो बाज न आये। पापी मानव के किसी भी वादे का मूल्य नहीं होता इस बात को समझते हुए पापी मानव के हर चरित्र पर या उसके हर काम पर अपनी दृष्टि रखें।

पैगाम:- इस सुरा की आयत नंबर ५ में यह कह गया है कि "हर मोड़ पर मुशरकों की ताक में बैठे रहो" इस बात का मतलब आयत नंबर १२ में साफ हुआ कि पापी और अपवित्र लोगों के हर काम पवित्र मानव के नजरों में रहना चाहिए ताकि मानव समाज में पाप का प्रचार न हो।

أَلَا تُقَاتِلُونَ قَوْمًا نَّكَثُوا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوا بِإِخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُم بَدَؤُوكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ أَتَخْشَوْنَهُمْ فَاللَّهُ أَحَقُّ أَن تَخْشَوْهُ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ {13}

भला तुम उन लोगों से क्यों नहीं लड़ते जिन्होंने अपनी क़समों को तोड़ डाला और रसूल को निकाल बाहर करना ठान लिया था और तुमसे पहले छेड़ भी उन्होंने ही शुरू की थी क्या तुम उनसे डरते हो तो अगर तुम सच्चे ईमानदार हो तो ख़ुदा उनसे कहीं बढ़ कर तुम्हारे डरने के क़ाबिल है (१३)

व्याख्या:- पवित्र मानव अपवित्रता के विरूद्ध युद्ध क्यों नहीं करेगा और ऐसे लोगों के साथ युद्ध करना चाहिए जो सत्य और शांति को बिगाड़ते है और मानवते के हर आदर्शों को कुचलते है यानी मानवता और शांति की शर्त को भंग करते है यानी मानव समाज के हर पवित्र कानून को तोड़ते है। पवित्र मानव को मानव समाज से निकालने की चेष्टा करते है। ऐसे लोगों से लड़ने में क्या पवित्र मानव डरेगा?जो खुदगर्ज होगा वही अपवित्रता के विरूद्ध लड़ने से डरेगा। सच्चा मनुष्य सिर्फ अपने नियमों पर कायम रहेगा और किसी से नहीं डरेगा।

पैगाम:- ये लड़ाई पाप और पुण्य की लड़ाई है और यही बात महाभारत में कृष्ण जी ने अर्जुन से कही थी।

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ {14}

इनसे लड़ो अल्लाह तुम्हारे हाथों उनकी सज़ा करेगा और उन्हें रूसवा करेगा और तुम्हें उन पर फतेह अता करेगा और इमानदार लोगों के कलेजे ठन्डे करेगा (१४)

व्याख्या:- जो मानव पाप के विरूद्ध सत्य और पुण्यता के लिए लड़ते है उन्हें प्रकृति यानी अल्लाह विजय बनाती है और ऐसे लोगों को ही शांति प्राप्त होती है।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوبِهِمْ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ {15}

और उन मोनिनीन के दिल की कुदरतें जो दफ़ा कर देगा और ख़ुदा जिसकी चाहे तौबा क़ुबूल करे और ख़ुदा बड़ा वाक़िफकार हिकमत वाला है (१५)

व्याख्या:- पराजित होने के बाद पापियों का विवेक क्रोध से दूर होगा और अल्लाह चाहे तो उनकी तौबा कबूल करेगा। सत्य ज्ञान और हर वैज्ञानिक सत्य अल्लाह के इख्तियार में है।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَن تُتْرَكُوا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللَّهُ الَّذِينَ جَاهَدُوا مِنكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوا مِن دُونِ اللَّهِ وَلَا رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ وَلِيجَةً وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ {16}

क्या तुमने ये समझ लिया है कि तुम छोड़ दिए जाओगे और अभी तक तो अल्लाह ने उन लोगों को मुमताज़ किया ही नहीं जो तुम में क जिहाद करते है और ख़ुदा और उसके रसूल और मोमेनीन के सिवा किसी को अपना राज़दार दोस्त नहीं बनाते और जो कुछ भी तुम करते हो ख़ुदा उससे बाख़बर है (१६)

व्याख्या:- अत्याचार करने वाला मनुष्य क्या ये सोचता है कि उसे अत्याचार का नतीजा नहीं मिलेगा। हो सकता है कि अल्लाह उसे अजमा रहा हो समय देकर और जो मानव अल्लाह और सत्य बताने वाले और सत्य समझाने वालों के अलावा किसी को और दोस्त बनाते है (यानी पाप कर्मों का समर्थन करते है और उपर से पवित्रता की शपथ लेते है) उनके कामों से अल्लाह पुरी तरह परीचित है।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِينَ أَن يَعْمُرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ شَاهِدِينَ عَلَى أَنفُسِهِم بِالْكُفْرِ أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَالِدُونَ {17}

मुशरेकीन का ये काम नहीं कि जब वह अपने कुफ़्र का खुद इक़रार करते है तो अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करे यही वह लोग है जिनका किया कराया सब अकारत हुआ और ये लोग हमेशा जहन्नुम में रहेंगे (१७)

व्याख्या:- ये नहीं हो सकता कि पवित्रता, प्रेम, मानवता और सुख-शांति की प्रतीक (मस्जिद) की रक्षा कोई पापी मानव करें। जो मानव अपने पाप लोगों के सामने जाहिर करते हुए गर्भ अनुभव करते है हर दिशा से उनका काम व्यर्थ है और उनका ठिकाना अशांति की आग है।

पैगाम:- वर्तमान युग में देखा जाता है कि समाज की ठेकेदारी गुंडे, बदमाश व चोरों के हाथों में है और

कुरान-शरीफ की ये आयात इन लोगों की निशानदेही करती है और यही लोग निकाबपोश यानी धार्मिक दिखने वाले अधार्मिक है।

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَى أُولَئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ {18}

खुदा की मस्जिदों को बस सिर्फ वही शख़्स आबाद कर सकता है जो खुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाए और नमाज़ पढ़ा करे और ज़कात देता रहे और खुदा के सिवा किसी से न डरो तो अनक़रीब यही लोग हिदायत याफ़्ता लोगों मे से हो जाएँगे (१८)

व्याख्या:- पवित्रता की निशानी (मस्जिद) की रक्षा पवित्र लोग ही कर सकते है यानी जो खुद पवित्र है वही पवित्रता का उदाहरण देकर उसकी रक्षा कर सकते है और जो सर्वशक्तिमान की सत्यता पर विश्वास रखते है और विश्वास रखते है कर्मफल पर और कायम करते है नमाज (प्रेम, पवित्रता, अहिंसा, शिक्षा, मानवता और संयम को अपने जीवन की नीव समझते है) और जकात देते है और कर्त्तव्य के आगे उन्हें किसी का डर या दबाव प्रभावित नही करता, ऐसे लोग ही सच्चे ज्ञानी है।

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَاجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَاهَدَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوُونَ عِنْدَ اللَّهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ {19}

क्या तुम लोगों ने हाजियों की सक़ाई और मस्जिदुल हराम को उस शख़्स के हमसर बना दिया है जो अल्लाह और रोज़े आख़ेरत के दिन पर ईमान लाया और अल्लाह के राह मे जेहाद किया खुदा के नज़दीक तो ये लोग बराबर नही और अल्लाह ज़ालिम लोगों की हिदायत नही करता है (१९)

व्याख्या:- जो मानव मनुष्य को पानी पिलाता है या खाना खिलाता है और धर्म स्थान की सुरक्षा करते है वो कभी भी उस मानव के समान नही हो सकते जो प्राणियों की सेवा के आदर्शों के विरूद्ध हो, और जो असत्य और अधर्म के विरूद्ध युद्ध करते है। अल्लाह और प्रकृति के लिए ये दो किस्म के मानव एक-सा नही हो सकते यानी जो दिखावे की नेकी करते है और अपने अमाल द्वारा लोगों पर अत्याचार करते है, ऐसे लोग और पवित्र लोग कभीभी एक नही हो सकते।

पैगाम:- इस आयत की आखिर में ''जुल्म करने वाले का उल्लेख करना'' ये प्रमाण होता है कि अत्याचार करने वाला और अधर्म के मार्ग पर चलने वाला मानव कितना ही मानव की सेवा में अपने आपको नियुक्त करें मानव समाज को कुछ फर्क नही पड़ता।

नोट:- इस आयत में ''हज और मस्जिद हराम'' को उदाहरण के तौर पर उल्लेख किया गया है।

الَّذِينَ آمَنُوا وَهَاجَرُوا وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَائِزُونَ {20}

जिन लोगों ने ईमान क़ुबूल किया और हिजरत एख़्तियार की और अपने मालों से और अपनी जानों से खुदा की राह में जिहाद किया वह लोग खुदा के नज़दीक दर्जे में कही बढ़ कर है और यही लोग आला दर्जे पर फायज़ होने वाले है (२०)

व्याख्या:- जो मानव ये समझता है कि सृष्टि की हर वस्तु एक ही शक्ति से प्रचालित होती है और प्रेम, सत्यता, पवित्रता और प्राणियों की सेवा को अपना धर्म समझते है (यानी ईमान लाना) और सुख-शांति और सत्य को समाज में प्रतिष्ठित करने के लिए एक जगह से दूसरी जगह जाते है यानी मानव समाज को प्रगति का पथ दिखाते है (हिजरत) और इस पथ में अपना जीवन और अपनी मेहनत की कमाई खर्च (जहाद) करते है। ऐसे लोग समाज में सह-सम्मान प्रतिष्ठित होते है और यही लोग मानव समाज में महान है और यही पथ मानव जीवन को सफलता प्रदान करता है।

पैगाम:- इस आयत में अच्छे कामों पर अपनी जान और माल को खर्च करने का आदेश है और ये इसलिए की हर इंसान सबसे ज्यादा मोहब्बत अपने आप से करता है और जब किसी नेक कार्य में कोई इंसान अपने आपको कूरबान करें यानी नेक कार्य में अपना फायदा न ढूँढे, वही मनुष्य सबसे उत्तम होता है।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُم بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَجَنَّاتٍ لَّهُمْ فِيهَا نَعِيمٌ مُّقِيمٌ {21}

उनका परवरदिगार उनको अपनी मेहरबानी और खुशनूदी और ऐसे बाग़ों की खुशख़बरी देता है जिसमें उनके लिए दाइमी ऐश होगा (२१)

व्याख्या:- सृष्टि की तरफ से ऐसे मानव सुख और शांति की चरम सीमा पर विराजमान होते है।

पैगाम:- इस आयत में ''उन्हें उनका रब खुशखबरी देता है''- क्या हर किसी का रब अलग-अलग है?--- बिल्कुल नहीं! स्बका रब एक है मगर पृथ्वी के हर कोने के मानव सम्प्रदाय अलग-अलग नाम से अपने-अपने रब को याद करते है और उन लोगों की इबादत का तरीका भी अलग-अलग है और ये सब अल्लाह की मर्जी से ही संभव है। ये एक एहम वजह है कुरान-शरीफ को मुकम्मिल कहने की। हर सम्प्रदाय के रब का नाम और उनकी इबादत का तरीका अपनी-अपनी जगह परिपूर्ण है। मनुष्य का अच्छा-बुरा, पाप-पुण्य सिर्फ उसके अमाल पर निर्भर करता है और अच्छे अमाल के बगैर कोई भी इबादत का तरीका परिपूर्ण नहीं होता और कुरान शरीफ हर समय, हर जगह और हर मनुष्य के लिए परिपूर्ण पुस्तक है।

सूत्र:- इबादत की बुनियाद है अमाल यानी मानव चरित्र और व्यवहार।

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِندَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ {22}

और ये लोग उन बाग़ों में हमेशा अब्दआलाबाद तक रहेंगे बेशक अल्लाह के पास तो बड़ा बड़ा अज्र है (२२)

व्याख्या:- मानव की सर्वश्रेष्ठ कामना है सुख-शांति और अच्छा स्वास्थ्य और पवित्र मानव इसमें विराजमान रहेगा। और ये अल्लाह की तरफ से उत्तम पुरूषकार है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا آبَاءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَاءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيمَانِ وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ {23}

ऐ ईमानदारों अगर तुम्हारे माँ बाप और तुम्हारे भाई ईमान के मुक़ाबले कुफ़्र को तरजीह देते हो तो तुम उनको ख़ैर ख़्वाह न समझो और तुममें जो शख़्स उनसे उलफ़त रखेगा तो यही लोग ज़ालिम है (२३)

व्याख्या:- पवित्र मानव अपने भाई या पिता के पाप आदर्शों को कभी नहीं अपनाते। जो पवित्र है या जिनके आदर्श सत्य और पवित्रता की नींव पर निर्भरशील होती है वो एक दूसरे के दोस्त या भाई है। निश्चित रूप से मानव जाति में ही कुछ मानव पापी विवेक का शिकार होते है। अपने करीबी रिश्तेदारों के पाप कर्मों का समर्थन पवित्र मानव नहीं करते और अत्याचार करने वाला चाहे वो बाप, भाई ही क्यों न हो पवित्र मानव का साथी नहीं हो सकता।

قُلْ إِن كَانَ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَاكِنُ تَرْضَوْنَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُم مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ {24}

तुम कह दो तुम्हारे बाप दादा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई बन्द और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे कुनबे वाले और वह माल जो तुमने कमा के रख छोड़ा है और वह तिजारत जिसके मन्द पड़ जाने का तुम्हें अन्देशा है और वह मकानात जिन्हें तुम पसन्द करते हो अगर तुम्हें अल्लाह से और उसके रसूल से और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा अज़ीज़ है तो तुम ज़रा ठहरो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म मौजूद करे और अल्लाह नाफरमान लोगों की हिदायत नहीं करता (२४)

व्याख्या:- मोह-माया में उलझे हुए मानव सत्य और संयम के पथ को अपनाने में डरते है। पवित्रता और शांति प्रतिष्ठित करने के लिए जिहाद नहीं करते। यही लोग दुष्कृति है और प्रकृति की तरफ से उन्हें हमेशा अशांति का प्रकोप मिलता है।

पैगाम:- संयम, पवित्रता और शांति की आदर्शों को मानव सबसे पहले अपने उपर लागू करें और अपनी इन्द्रियों को पवित्रता प्रदान करना ही जहाद है। हर मानव अपने आपको पवित्र बना ले तो मानव समाज और सभ्यता एक पवित्र भूमि होगी, जहां पर मानव के लिए सुख और शांति होगी।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُم مُّدْبِرِينَ {25}

अल्लाह ने तुम्हारी बहुतेरे मक़ामात पर इमदाद की और जंग हुनैन के दिन जब तुम्हें अपनी क़सरत ने मग़रूर कर दिया था फिर वह क़सरत तुम्हें कुछ भी काम न आयी और ज़मीन बावजूद उस वसअत के तुम पर तंग हो गई तुम पीठ कर भाग निकले (२५)

व्याख्या:- अल्लाह की मदद हमेशा सच और शांति के लिए होती है, किसी के अन्दर अगर ज्यादा से ज्यादा पाप है तो यकीनन उसे अल्लाह की मदद नहीं मिलेगी और दुनियां की सारी खूबियां उनके नजर में छोटी नजर आएगी तथा वो सच्चाई से मुँह फेर कर भागेंगे।

ثُمَّ أَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَنزَلَ جُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَذَٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِينَ {26}

तब ख़ुदा ने अपने रसूल पर और मोमिनीन पर अपनी तसकीन नाज़िल फरमाई और फ़रिश्तों के लश्कर भेजे जिन्हें तुम देखते भी नहीं थे और कुफ़्फ़ार पर अज़ाब नाज़िल फरमाया और काफिरों की यही सज़ा है (२६)

व्याख्या:- अल्लाह ताला रसुलों और पवित्र लोगों को सत्यता प्रतिष्ठित करने में सहायता की और ये शक्ति अदृश्य शक्ति है और पापी मानव किसी अदृश्य योग मायाबल के द्वारा ही अशांति का प्रकोप भोगते है।

ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِن بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ مَن يَشَاءُ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {27}

उसके बाद ख़ुदा जिसकी चाहे तौबा क़ुबूल करे और ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (२७)

व्याख्या:- प्रकोप से प्रभावित होकर जो अपवित्र मानव अपने पापों को समझेगा और पाप से तौबा करेगा उसके लिए अल्लाह और उसकी प्रकृति की तरफ से क्षमा। अल्लाह महान और करूणमयी है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هَٰذَا وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِن فَضْلِهِ إِن شَاءَ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ {28}

ऐ ईमानदारों मुशरेकीन तो निरे नजिस है तो अब वह उस साल के बाद मस्जिदुल हराम के पास फिर न फटकने पाएँ और अगर तुम फक़रों फाक़ा से डरते हो तो अनकरीब ही अल्लाह तुमको अगर चाहेगा तो अपने फज़ल से ग़नीकर देगा बेशक अल्लाह बड़ा वाक़िफकार हिकमत वाला है (२८)

व्याख्या:- पवित्र मानव ये बात ध्यान में रखे कि मोह-माया, अपवित्रता और पाप में उलझे हुए मानव (मुशिरक) बिल्कुल अपवित्र है। पवित्रता, संयम, प्रेम, मानवता की निशानी है ''मस्जिद हराम'' और इसकी पवित्रता को अपवित्र न करें। पवित्रता की शपथ लेने वाले जितने भी गरीब क्यों न हो अल्लाह उनकी रक्षा करेगा। यकीनन अल्लाह ज्ञानी और सर्वशक्तिमान है।

पैगाम:- मात्रा से ज्यादा उत्वाकांक्षा में भटके हुए मानव पाप कर्मों को अपनाते है। इस आयत में दरिद्र का उल्लेख करके अल्लाह ताला ने पवित्र मानव को ये उपदेश दिया कि अपने उत्वाकांक्षा को गरीबी पर हावी न होने दे। यहा पर सवाल ये आता है कि आयात के पहले श्लोक में मुशिरक और मस्जिद हराम की बात कही गयी और दूसरे श्लोक में दरिद्रता की इसका मतलब की ईमान वाले हर हाल में (यानी गरीबी या खुशहाली) अपने ईमान को कायम रखें और अल्लाह पर भरोसा रखें और मुशिरक की नापाक सोच के खिलाफ लड़े। इस सवाल पर गौर करने से समझ में आ जाएगा कि मुशिरक और मस्जिद हराम किस बात की निशानदेही करती है।

قَاتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَلَا يَدِينُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَن يَدٍ وَهُمْ صَاغِرُونَ {29}

एहले किताब में से जो लोग न तो अल्लाह ही पर इमान रखते है और न रोज़े आख़िरत पर और न अल्लाह और उसके रसूल की हराम की हुयी चीज़ों को हराम समझते है और न सच्चे दीन ही को एख़्तियार करते है उन लोगों से लड़े जाओ यहाँ तक कि वह लोग ज़लील होकर हाथ से जज़िया दे (२९)

व्याख्या:- सभ्य यानी ईमान वाले यानी पवित्र मानव जो सत्य, प्रेम और अहिंसा पर विश्वास रखते है वो हर मुमकिन चेष्टा करें पापी और अपवित्र मानव को सत्य, एक ईश्वर और जिन्दगी के आखिरी दिनों पर ईमान लाने की और जो वस्तु मानव समाज और सभ्यता के लिए हानिकारी यानी हराम (पाप, असत्य, अपवित्रता और मानव चरित्र के कु-गुण) है, जो रसुलों के द्वारा अल्लाह का निर्देश है। सत्य और मानव धर्म का पालन करते है। कोई अगर इस धर्म को नहीं मानता है तो इसके विरूद्ध हर मुमकिन संघर्ष करना चाहिए। मानव समाज में अल्लाह की मर्जी से हुकुमत करने वाले मौजूद है इस हुकुमत के जो कायदे-कानून है उसे मानना मानव समाज के लिए बेहतरीन है और सरकारी टैक्स (जजिया) जरूर अदा करें।

पैगाम:- ''जजिया'' कमजोर तबका के लिए वसूली नहीं है। अगर मुसलमान एक सम्प्रदाय है तो जिस देश में वो कमजोर है या संख्या में कम है तो यही टैक्स क्या उसके उपर लागू हो सकता है तब उन्हे कैसा लगेगा? याद रखें अल्लाह के दरबार में न इंसाफी की कोई गुंजाइश नहीं है ''जजिया'' उस मनुष्य पर लागू किया गया है जो सरकारी कानून को नहीं मानता और अवाम की अमानत जो सरकार के पास मौजूद होती है उसको अपने स्वार्थ के लिए इस्तेमाल करते है।

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللَّهِ وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُم بِأَفْوَاهِهِمْ يُضَاهِؤُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِن قَبْلُ قَاتَلَهُمُ اللَّهُ أَنَّى يُؤْفَكُونَ {30}

यहूद तो कहते है कि अज़ीज़ खुदा के बेटे है और नुसैरा कहते है कि मसीहा खुदा के बेटे है ये तो उनकी बात है और उन्हीं के मुँह से ये लोग भी उन्हीं काफ़िरों की सी बातें बनाने लगे जो उनसे पहले गुज़र चुके है खुद उनको क़त्ल करके कहाँ से कहाँ भटके जा रहे है (३०)

व्याख्या:- सृष्टि के हर वस्तु या हर प्राणी परमाणिवक शक्ति द्वारा चलते है और वही परमाणिवक शक्ति अल्लाह की शक्ति है। सृष्टि की हर वस्तु को वही शक्ति बनाती या बिगाड़ती है यानी जो सृष्टि होती है, उसकी मृत्यु अवश्य है। कोई-कोई सम्प्रदाय जैसे कि यहूदी या नूसरानी अपने पैगम्बरों को अल्लाह का पुत्र समझते है, ये सिर्फ उनका व्यहम है। जो पाप करते है यानी काफिर वे इस बात का लाभ उठाते हुए इन नियमों पर कु-संस्कार और मनगढ़त कहानियां बनाकर अपना लाभ लेने की चेष्टा करते है। लेकिन कुछ समय के बाद यानी समय चक्र में ये सारे नियम गलत प्रमाण हो जाते है और इन गलत नियमों की हत्या हो जाती है।

पैगाम:- समय ये बात प्रमाण कर चुका है कि ब्रहमाण्ड की हर वस्तु परमाणिवक शक्ति से चलती है और इसी शक्ति से अपना रूप परिवर्तन करती है। इसलिए इस आयात में कहा गया है ''अल्लाह हत्या कर देगा कु-संस्कार वाली सोच को''।

اتَّخَذُوا أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّن دُونِ اللَّهِ وَالْمَسِيحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا إِلَـٰهًا وَاحِدًا لَّا إِلَـٰهَ إِلَّا هُوَ سُبْحَانَهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ {31}

उन लोगों ने तो अपने खुदा को छोड़कर अपनी आलिमों को और अपने ज़ाहिदों को और मरियम के बेटे मसीह को अपना परवरदिगार बना डाला हालाँकि उन्होंने सिवाए इसके और हुक्म ही नहीं दिया गया कि खुदाए यकता की इबादत करें उसके सिवा और कोई क़ाबिले परसतिश नहीं (३१)

व्याख्या:- कुछ लोग अल्लाह और उनके असुल (कुरान शरीफ) को छोड़कर अपने-अपने सम्प्रदाय के उल्माओं को अपनी इबादत का लक्ष्य बनाया और कही-कही ये भी देखा गया कि इन्हीं उल्माओं को अल्लाह का दर्जा देकर पुजा गया, मगर श्रृष्टि की क्रिया-प्रक्रिया अल्लाह की शक्ति द्वारा प्रचालित होती है और ये प्रमाण होने के बाद उन उल्माओं को चाहिए कि आम इंसानों को ये सच्चाई समझा दे ताकि आम लोग अल्लाह को बांटकर मानव समाज में सम्प्रदायिक फसाद न फैलायें और एक खुदा की इबादत करें।

يُرِيدُونَ أَن يُطْفِؤُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَن يُتِمَّ نُورَهُ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ {32}

जिस चीज़ को ये लोग उसका शरीक बनाते है वह उससे पाक व पाकीजा है ये लोग चाहते है कि अपने मुँह से

खुदा के नूर को बुझा दें और खुदा इसके सिवा कुछ मानता ही नहीं कि अपने नूर को पूरा ही करके रहे अगरचे कुफ्फ़ार बुरा माना करें (३२)

व्याख्या:- परमाणिवक शक्ति अल्लाह का ''नूर/ज्योति'' है और जो मानव पाप कर्मों में उलझे रहते है और अल्लाह के इस नूर को फूँक से बुझाने की चेष्टा करते है, अल्लाह का नूर यानी उसकी शक्ति हर कार्य को पूरा करती है। और जो लोग काफिर है वो इस बात को नहीं मानते।

पैगाम: जो मनुष्य पाप करता है वो अल्लाह के अस्तित्व को इनकार करते है इसलिए वो पाप करते है यानी उनके दिल में अल्लाह का डर या मोहब्बत नहीं होती और वो इसलिए उनके असुलों को और नियमों को ठुकराते है। जिन्हें अल्लाह से मोहब्बत होगी वो कभी भी उनके नियमों के विरूद्ध नहीं जाएंगे।

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ {33}

वही तो है कि जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजता कि उसको तमाम दीनो पर ग़ालिब करे अगरचे मुशरेकीन बुरा माना करे (३३)

व्याख्या:- हर अवतार, सत्य और अल्लाह के प्राकृतिक सत्य नियमों के साथ युग-युग से आते रहे। सत्य धर्म हर कु-संस्कार पर जो धर्म की शक्ल लिये हुए है उस पर भारी होता है और पापी इस बात को नहीं मानते।

पैगाम:- इस आयत के वर्तमान अनुवाद या व्याख्या के अनुसार कुछ प्रश्न पैदा होते है

१. वर्तमान व्याख्या के अनुसार रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद और उनकी उपदेश वाली पुस्तक कुरान-शरीफ हर रसुल और उनकी किताबों पर सर्वश्रेष्ठ है। तो सवाल ये आता है कि हजरत मोहम्मद से पहले जितने भी रसुल आए क्या वो गलत थे? अगर ये कहा जाए कि उनकी पुस्तकें बदल दी गई है तो क्या लोगों के अन्दर इतनी शक्ति है कि वो अल्लाह के नियमों को बदल दे और इस बात का क्या प्रमाण है कि हजरत मोहम्मद जो उल्लेख करके गए है क्या वो बदला नहीं गया?

सूत्र:- अल्लाह के नियम कभी भी बदल नहीं सकते और ये हर धार्मिक पुस्तक में उल्लेख है और वो नियम हर युग में प्रमाण हुए और हर कु-संस्कार वाले विचारों पर गालिब रहे और ये सारे विचार रसुलों, वैज्ञानिकों और ज्ञानियों के द्वारा ही प्रमाणित हुए। पुस्तकें बातिल हो गई या पुस्तकों में फूट डाला गया, इन सब बातों पर बहस बेबुनियाद और फसाद की जड़ है, जो ये काम करते है वो फसादी है और अल्लाह फसादियों से सख्त नफरत करता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ {34}

ऐ ईमानदारों इसमें उसमें शक नहीं कि बहुतेरे आलिम ज़ाहिद लोगों के माले नाहक़ चख जाते है और खुदा की राह से रोकते है और जो लोग सोना और चाँदी जमा करते जाते है और उसको खुदा की राह में खर्च नहीं करते तो उन को दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी सुना दो (३४)

व्याख्या:- धार्मिक मनुष्य कभी भी कु-संस्कार में डूबे हुए और अपने आपको धर्म के ठेकेदार कहलाने वालों का विश्वास नहीं करते, वो विश्वास करते है तो सिर्फ सत्यता पर और इसी पथ पर ईमान लाते है जो खुद को और मानव समाज को लाभ पहुँचाए। समाज में ऐसे बहुत सारे ज्ञानी और दुर्वेष है जो सिर्फ नाम के है काम के नही और मानव को सत्य के पथ से रोकते है और कु-संस्कार के पथ पर ढकेल देते है। जिस पथ पर अल्लाह ने मनुष्य के लिए कोई प्रमाण नहीं रखा। सोने चांदी जैसी चमकती हुई मिट्टी के पीछे जो मानव भागता है और उसे अपने पास रखने की हर मुमकिन चेष्टा करता है और अपनी मेहनत से कमाई हुई सम्पत्ति को सिर्फ अपने उपर ही खर्च करता है और दूसरों का ख्याल नहीं करता वो मानव और मानवता का दुश्मन है और उन्हें प्रकृति के तरफ से अशांति और बेचैनी का प्रकोप मिलता है।

पैगाम:- मानव चरित्र ये है जो सदेव चमकती हुई वस्तुओं के पीछे भागते है और उसकी मोह-माया मानव को पाप कर्मो में ढकेल देती है। इस आयत में केवल सोना-चांदी का उल्लेख करके चमकती हुई वस्तुओं की निशानदेही की गई है।

يَوْمَ يُحْمَى عَلَيْهَا فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوَى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوبُهُمْ وَظُهُورُهُمْ هَذَا مَا كَنَزْتُمْ لِأَنفُسِكُمْ فَذُوقُوا مَا كُنتُمْ تَكْنِزُونَ {35}

जिस दिन वह जहन्नुम की आग में गर्म किया जाएगा फिर उससे उनकी पेशानियाँ और उनके पहलू और उनकी पीठें दाग़ी जाएँगी ये वह है जिसे तुमने अपने लिए जमा करके रखा था तो अपने जमा किए का मज़ा चखो (३५)

व्याख्या:- ऐसे मनुष्य को जब अशांति के अग्नि में झुलसना पड़ेगा और इस अग्नि में जलने की निशानी इसके मुंह, पीठ और पहलू पर नजर आएगी यानी इसकी तकलीफों की गवाही इसके जिस्म का हर हिस्सा देगा तब वो अनुभव करेगा अपने जीवन में किये गये पाप कर्मो का फल और वो चखेगा मजा उस पाप के फल का जो उसने कमाया।

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِندَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِينَ كَافَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَّةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ {36}

इसमें तो शक ही नहीं कि अल्लाह ने जिस दिन आसमान व ज़मीन को पैदा किया अल्लाह के नज़दीक ख़ुदा की किताब में महीनों की गिनती बारह महीने है उनमें से चार महीने हुरमत के है यही दीन सीधी राह है तो उन चार महीनों में तुम अपने ऊपर जुल्म न करो और मुशरेकीन जिस तरह तुम से सबके बस मिलकर लड़ते है तुम भी उसी तरह सबके सब मिलकर उन से लड़ों और ये जान लो कि ख़ुदा तो यक़ीनन परहेज़गारों के साथ है (३६)

व्याख्या:- प्राकृतिक तौर पर मानव और मानव सभ्यता के मध्य और मानव द्वारा ही महीना और दिनों का हिसाब रखा गया है। दुनिया के हर कोने में लगभग ३० दिनों का महीना और ७ दिनों का हफता गिनती में आता है और ये गिनती सुरज और चांद को देखकर की गई है। सभ्यता के आरंभ से अलग-अलग तरीकों से मानव इस गिनती को पुरा करता है और सभ्यता के आरंभ से चार मुख्य दिशाओं की पहचान पाई उदाहरण के तौर पर उत्तर, दक्षिण, पुरब और पश्चिम और ये सब बातें प्रकृति ने मानव को सीखाकर इज्जत बक्शी। सत्य ज्ञान ही मानव का सही धर्म है इसलिए महीना और दिनों को लेकर कोई कु-संस्कार लोग न पाले। असत्य और समाज को नुकसान पहुंचाने वालों से लड़े, ये धर्म और अधर्म की लड़ाई है अल्लाह के सारे सच्चे नियम संयमी मानव के साथ होते है।

पैगाम:- ये आयत एक वैज्ञानिक आयत है इसमें मानव सभ्यता के दरमियान दिन, महीना, समय और दिशाओं की पहचान दी गई है। दिन और महीन लेकर जो कु-संस्कार मानव के मस्तिक्ष में पनपते है उसे भी खारिज किया गया है जो इसके बाद वाली आयत में पुरी तरह स्पष्ट की गई है।

सूत्र:- अल्लाह की सृष्टि में हर समय, हर दिन और हर महीना बराबर है।

إِنَّمَا النَّسِيءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَيُحَرِّمُونَهُ عَامًا لِّيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوا مَا حَرَّمَ اللَّهُ زُيِّنَ لَهُمْ سُوءُ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ {37}

महीनों का आगे पीछे कर देना भी कुफ़्र ही की ज़्यादती है कि उनकी बदौलत कुफ़्फ़ार बहक जाते है एक बरस तो उसी एक महीने को हलाल समझ लेते है और दूसरे साल उसी महीने को हराम कहते है ताकि ख़ुदा ने जो हराम किए है उनकी गिनती ही पूरी कर लें और अल्लाह की हराम की हुयी चीज़ को हलाल कर लें उनकी बुरी कारस्तानियाँ उन्हें भली कर दिखाई गई है और अल्लाह काफिर लोगो को मंज़िले मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (३७)

व्याख्या:- कु-संस्कार और अयौगतिक बातें जो चांद, सूरज, महीना और दिन को लेकर है इसमें बढ़ोतरी अज्ञानता से बढ़ती है। महीना दिन को गिनती में आगे पीछे करना कुफरियत की निशानी है। कुसंस्कार और पाप को अल्लाह ने हराम करार दिया मगर अत्याचारी (काफिर), अज्ञानी और दिल में नफरत रखने वाले लोग अपने मन से अल्लाह के

दिन को, समय और दिशा को हराम करते है या हलाल करते है, ये कुसंस्कार है जो सत्य को पथभ्रष्ट कर देता है। जिद से अंधे पथभ्रष्ट काफिर को अल्लाह हिदायत नहीं देता।

पैगाम:- सभ्यता, सत्य नियमों के बुनियाद पर चलती है और कुसंस्कार कभी न कभी संस्कार की रोशनी से झूठा प्रमाणित हो जाता है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ لَكُمُ انفِرُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرَضِيتُم بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا مِنَ الْآخِرَةِ فَمَا مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ {38}

ऐ ईमानदारों तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि खुदा की राह में निकलो तो तुम लदधड़ हो कर ज़मीन की तरफ झुके पड़ते हो क्या तुम आखिरत के बनिस्बत दुनिया की जिन्दगी को पसन्द करते थे तो दुनिया की ज़िन्दगी का साज़ो सामान आखिर के ऐश व आराम के मुक़ाबले में बहुत ही थोड़ा है (३८)

व्याख्या:- ईमान वाले मानव जो ये समझते है कि प्रकृति की हर वस्तु अल्लाह की शक्ति से बनती है और सब अल्लाह की ही है और इन नियमों पर गहरा विश्वास रखते है तब कभी भी उस मनुष्य को चमकती हुई वस्तुओं की मोह-माया परेशान नहीं कर सकती उनका दिमाग चमकती हुई चीजों की चाहत से परेशान नहीं होगा और उनका दिमाग प्रेम और ज्ञान से भर जाएगा और उन्हें शांति प्राप्त होगी यानी उन्हें अपने जीवन के कर्मफल स्वरूप शांति प्राप्त होगी यानी दुनियावी वस्तुओं से प्रभावित होकर वो पाप नहीं करेंगे। सृष्टि के भंडार से जो उन्हें मिलेगा वो उसी पर संतुष्ट होंगे। अपने कर्मों को भोग विलास से प्रभावित नहीं करेंगे।

إِلَّا تَنفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا وَيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ شَيْئًا وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ {39}

अगर तुम न निकलोगे तो खुदा तुम पर दर्दनाक अज़ाब नाज़िल फरमाएगा और तुम्हारे बदले किसी दूसरी क़ौम को ले आएगा और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते और खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है (३९)

व्याख्या:- सभ्य और संयमी मनुष्य अगर सत्य और प्रेम की राह में युद्ध न करें यानी शांति स्थापित करने के लिए परिश्रम न करें तो अल्लाह उन्हें कठोर प्रकोप से घेर लेगा। शांति प्रतिष्ठित करने के लिए इंसानी समाज में से ही कुछ लोगों को तैयार करेंगे याद रखें अल्लाह को किसी भी चीज की जरूरत नहीं होती और उसका कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता और अल्लाह सर्वशक्तिमान है।

إِلَّا تَنصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَى وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {40}

अगर तुम उस रसूल की मदद न करोगे तो उसने तो अपने रसूल की उस वक़्त मदद की जब उसकी कुफ्फ़ार ने निकल बाहर किया उस वक़्त सिर्फ दूसरे रसूल थे जब वह दोनो ग़ार में थे जब अपने साथी को समझा रहे थे कि घबराओ नहीं खुदा यक़ीनन हमारे साथ है तो खुदा ने उन पर अपनी तसकीन नाज़िल फरमाई और ऐसे लश्कर से उनकी मदद की जिनको तुम लोगों ने देखा तक नहीं और अल्लाह ने काफिरों की बात नीची कर दिखाई और खुदा ही का बोल बाला है और खुदा तो ग़ालिब हिकमत वाला है (४०)

व्याख्या:- सत्य बताने वालों के सत्य नियम को समाज में प्रतिष्ठित करने में अगर कोई सहायता न करें जबकि सत्य बताने वालों को या पवित्र रास्ता बताने वालों को गुनाहगार या पापियों के साजिश से समाज से बहार निकाला जाता है और बातिल वक्ती तौर पर समाज पर हावी हो जाते है। तब सत्य बताने वाला रसुल गारों के अंधकार में रहते हुए भी अपने साथियों से अल्लाह की सहायता की बात करते है। वो जानते है कि सत्य अपने आपपर इतना शक्तिशाली है और उन्हें पुरी तरह अल्लाह की सहायता हासिल होती है। अल्लाह का सत्य कभी न कभी मानव समाज में प्रमाणित होता है तब पापियों के ख्यालात बातिल हो जाते है और अदृश्य शक्ति द्वारा मानव मस्तिक्ष में बदलाव लाते है। और अल्लाह के आदर्श जो सृष्टि के हर अणु-परमाणु में उपस्थित है वही सत्य है और यही अल्लाह का कलमा है।

انْفِرُوا خِفَافًا وَثِقَالًا وَجَاهِدُوا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ {41}

तुम हलके फुलके हो या भारी भरकम बहर हाल जब तुमको हुक्म दिया जाए फौरन चल खड़े हो और अपनी जानों से अपने मालों से खुदा की राह में जिहाद करो अगर तुम समझ लो कि यही तुम्हारे हक़ में बेहतर है (४१)

व्याख्या:- सभ्य और संयमी मनुष्य निकल पड़े ज्ञान हासिल करने के लिए चाहे वो गरीब हो या अमीर, काला हो या गोरा, दुबला हो या मोटा। ज्ञान सत्यता और पवित्रता से शांति के पथ में जहाद करो (अपने अंदर के अपवित्र शक्ति और समाज में उपस्थित अपवित्र मनुष्य से) और इस पथ में अपनी सम्पत्ति और अपने जीवन का बलिदान कर दो। अल्लाह का पथ ज्ञान, सत्य, प्रेम, पवित्रता और शांति है। समझदार मनुष्य के लिए यही उत्तम पथ है यानी ज्ञान, शांति और प्रेम ।

पैगाम:- अल्लाह का पथ शांति का पथ है युद्ध का पथ नही और इन नियमों के अनुसार इस आयत में ''भारी और हलका'' की तुलना हथियार के साथ करना अनुचित है। इस आयत से पहले वाले आयत नं0 ४0 में ''अदृश्य सेना'' की बात की गई है अगर अल्लाह अदृश्य सेना भेजकर मनुष्य के मस्तिक्ष पर बदलाव कर सकते है तो अल्लाह क्यों इंसान को हथियार उठाने का आदेश देगा? इस लिहाज से ये आयत किसी भी सुरत में हथियार या धन-दौलत पर निर्भर नही करती और ये नियम भी बिलकुल गलत है कि अल्लाह की राह में अपनी सम्पत्ति से हथियार खरीदकर गैर मुसलमानों पर आक्रमण करे।

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوكَ وَلَٰكِن بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ وَسَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ يُهْلِكُونَ أَنفُسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ {42}

अगर सरे दस्त फ़ायदा और सफर आसान होता तो यक़ीनन ये लोग तुम्हारा साथ देते मगर इन पर मुसाफ़त की मशक़्क़त तूलानी हो गई और अगर पीछे रह जाने की वज़ह से पूछोगे तो ये लोग फौरन खुदा की क़समें खाँएगें कि अगर हम में सकत होती तो हम भी ज़रूर तुम लोगों के साथ ही चल खड़े होते ये लोग झूठी कसमें खाकर अपनी जान आप हलाक किए डालते हैं और अल्लाह तो जानता है कि ये लोग बेशक झूठे हैं (४२)

व्याख्या:- कामचारे और अय्याश किस्म के मनुष्य ये सोचते है कि अगर उन्हें मेहनत के बगैर शांति और सम्पत्ति मिल जाए और जिन्दगी का सफर परहेजगारी से आसान हो तो ऐसे लोग कहते है कि वो उनके साथ है यानी अपनी लालच काबू में नहीं रख सकते है। जो लोग अय्याशी की जिन्दगी का ख्वाब रखते हैं यही लोग परहेजगारी की जिन्दगी से डरेंगे। अपनी उंची ख्वाहीश को काबू में रखना भी एक मेहनत तलब काम है ऐसे अय्याश किस्म के मनुष्य कभी भी परहेजगारों के साथी नहीं हो सकते। परहेजगारी से उनका दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है। उनकी जुबान में हमेशा अल्लाह की कसम होती है अपनी नकामयाब जिन्दगी को छुपाने के लिए और ऐसा करके ये खुद अपना ही नुकसान उठाते है और अल्लाह उनके सारे झुठ से परीचित है।

عَفَا اللَّهُ عَنكَ لِمَ أَذِنتَ لَهُمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ صَدَقُوا وَتَعْلَمَ الْكَاذِبِينَ {43}

खुदा तुमसे दरगुज़र फरमाए तुमने उन्हें इजाज़त ही क्यों दी ताकि अगर ऐसा न करते तो तुम पर सच बोलने वाले ज़ाहिर हो जाते और तुम झूटों को मालूम कर लेते (४३)

व्याख्या:- ऐसे अय्याश और कामचोर मनुष्य को अल्लाह की माफी मिले यानी उन्हें सही हिदायत मिले और उन लोगों को अपने जिन्दगी के सफर में दाखिल होने की इजाजत नहीं होनी चाहिए यानी पवित्र और मेहनती मनुष्य अपने जीवन में या अपने कामों में इस किस्म के लोगों को जोड़ कर अपने काम का नुकसान नहीं करते और इससे सच झूठ का फैसला मेहनती लोगों के सामने होता है।

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَن يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالْمُتَّقِينَ {44}

जो लोग खुदा और रोज़े आख़िरत पर ईमान रखते है वह तो अपने माल से और अपनी जानों से जिहाद करने की इजाज़त माँगने के नही और खुदा परहेज़गारों से खूब वाक़िफ़ है (४४) ।।

व्याख्या:-सच्चाइ और शांति स्थापित करने के लिए इंसानी समाज में जो मनुष्य अपने मेहनत और अपना वक्त खर्च करते है और एक खुदा पर ईमान रखते हुए दुनिया के किसी भी चीज से घृणा नहीं करते और अपने कर्मफल पर भी ईमान रखते है। सभ्य और पवित्र चरित्र वाले मनुष्य को अल्लाह खूब जानता है।

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ فِي رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُونَ {45}

इजाज़त तो बस वही लोग माँगेंगे जो खुदा और रोज़े आखिरत पर ईमान नहीं रखते और उनके दिल के शक कर रहे है तो वह अपने शक में डावाँडोल हो रहे है (४५)

व्याख्या:- मनुष्य का चरित्र जब शक के दायरे में आ जाता है तब उसका अच्छी बातों पर भी विश्वास नहीं होता और सच्चाई को तलाश किये बगैर वो उसे ठुकरा देता है। अल्लाह या कयामत पर ईमान न लाकर सच्चाई को ठुकराने वाला मनुष्य खुद परेशान रहता है । अल्लाह की सच्चाई और अपने कर्मो का नतीजा मनुष्य के जिंदगी के हर पल और हर अणु-परमाणु में उपस्थित है जो वो अनुभव नहीं करते।

पैगाम:- इंसान के दिमाग में शक जब अनुसंधान की शक्ल लेती है तब नये अविष्कार जन्म लेते है। मगर शक जब कुसंस्कार से प्रभावित होता है तब मनुष्य को अंधकार में ढकेल देता है।

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَأَعَدُّوا لَهُ عُدَّةً وَلَكِنْ كَرِهَ اللَّهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيلَ اقْعُدُوا مَعَ الْقَاعِدِينَ {46}

और अगर ये लोग निकलने की ठान लेते तो कुछ न कुछ सामान तो करते मगर खुदा ने उनके साथ भेजने को नापसन्द किया तो उनको काहिल बना दिया और उनसे कह दिया गया कि तुम बैठने वालों के साथ बैठे रहो (४६)

व्याख्या:- कुसंस्कार में डूबे हुए संदेह प्रवन मनुष्य जिसे सत्यता नजर नहीं आती या जो सत्यता को पसंद नहीं करते ऐसे मनुष्य अगर समाज में सभ्य और शांति कायम करने के लिए जहाद करने की सोचे तो अवश्य ये अपनी पूरी तैयारी कर लेते यानी अपनी पवित्रता और युद्ध अपने से ही आरंभ करते है और सत्यता के युद्ध में अल्लाह ऐसे लोगों को न पसंद करते है, जो सिर्फ स्वार्थ के लिए जीते है उनका जीवन नाकाम बनकर रह जाता है।

لَوْ خَرَجُوا فِيكُمْ مَا زَادُوكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَلَأَوْضَعُوا خِلَالَكُمْ يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيكُمْ سَمَّاعُونَ لَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ {47}

अगर ये लोग तुममें निकलते भी तो बस तुममे फ़साद ही बरपा कर देते और तुम्हारे हक़ में फ़ितना कराने की ग़रज़ से तुम्हारे दरम्यिान घोड़े दौड़ाते फिरते और तुममें से उनके जासूस भी है और खुदा शरीरों से खूब वाकिफ़ है (४७)

व्याख्या:- सभ्य, संयम और शांति चाहने वाले लोगों में ऐसे लोग भी मौजूद होते है जो अपनी चालाकी से और अपने कामों से या अपनी सम्पत्ति से सच्चे नियमों को बिगाड़ने की चेष्टा करते है और उनकी चेष्टा रहती है कि मनुष्य के दरमियान आपस में फसाद खड़ा करने की। हर मनुष्य की पसंद-नपसंद और नियमों में पक्के रहना का इरादा यानी दिमाग अलग-अलग होता है। और इस बात को हथियार बनाकर सच्चे नियमों को बिगाड़ कर गलत तरीके से या झुठ बांध कर लोगों को बहकाने की चेष्टा करते है। ऐसे लोग खुद पर और इंसानी समाज पर अत्याचार करते है और अत्याचारों को अल्लाह खूब जानता है।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوا لَكَ الْأُمُورَ حَتَّى جَاءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ كَارِهُونَ {48}

इसमें तो शक नहीं कि उन लोगों ने पहले ही फ़साद डालना चाहा था और तुम्हारी बहुत सी बातें उलट पुलट के यहाँ तक कि हक़ आ पहुँचा और खुदा ही का हुक्म ग़ालिब रहा और उनको नागवार ही रहा (४८)

व्याख्या:- युग-युग से ऐसे लोग अल्लाह के सच्चे असुलों को बहकाते और उसे उलट-पलट कर पेश करते आए है मगर इंसानी समाज में वही नियम कामयाब होते है जो प्रमाण होते है और सत्य पर कायम है। सत्य पर चलने वाले सदेव विजय प्राप्त करते है।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ ائْذَنْ لِي وَلَا تَفْتِنِّي أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ {49}

उन लोगों में से बाज़ ऐसे भी है जो साफ कहते है कि मुझे तो इजाज़त दीजिए और मुझ बला में न फँसाइए आगाह हो कि ये लोग खुद बला में गिर पड़े और जहन्नुम तो काफिरों का यकीनन घेरे हुए ही है (४९)

व्याख्या:- ईसानी समाज में ऐसे लोग भी होते है जो संयम और धैर्य के इम्तिहान से गुजरना नहीं चाहते या ये भी कह सकते है कि इस इम्तिहान से ऐसे लोग डरते है यकीनन ऐसे लोग मुसीबत में रहते है क्योंकि सत्यता को वो

अगर कबूल न करेंगे तो झूठ उनका दरवाजा खटखटाएगा और मजबूरन ऐसे मनुष्य को नर्क की अशांति का कष्ट उठाना पड़ जाएगा।

إِن تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ وَإِن تُصِبْكَ مُصِيبَةٌ يَقُولُوا قَدْ أَخَذْنَا أَمْرَنَا مِن قَبْلُ وَيَتَوَلَّوا وَّهُمْ فَرِحُونَ {50}

तुमको कोई फायदा पहुँचा तो उन को बुरा मालूम होता है और अगर तुम पर कोई मुसीबत आ पड़ती तो ये लोग कहते हैं कि हमने अपना काम पहले ही ठीक कर लिया था और खुश खुश वापस लौटते है (५०)

व्याख्या:- सभ्य, सयंमी लोगों को अगर कोई भलाई मिले तो मतलब परस्त लोग इससे जलते है और अफसोस करते है कि क्यों उन्होंने सच्चाई का रास्ता कबूल नही किया और अगर कोई मुसीबत या तकलीफ आए तो यही मतलब परस्त लोग कहते है कि उन्होंने ठीक ही किया जो अपना रास्ता अलग कर लिया।

قُل لَّن يُصِيبَنَا إِلاَّ مَا كَتَبَ اللّهُ لَنَا هُوَ مَوْلاَنَا وَعَلَى اللّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ {51}

तुम कह दो कि हम पर हरगिज़ कोई मुसीबत पड़ नही सकती मगर जो खुदा ने तुम्हारे लिए लिख दिया है वही हमारा मालिक है और ईमानदारों को चाहिए भी कि खुदा ही पर भरोसा रखें (५१)

व्याख्या:- पवित्र और संयमी मनुष्य अल्लाह को ही अपना मालिक समझते है और सुख-दुख सब अल्लाह का दिया हुआ हाल समझकर उसे खुशी-खुशी अपना लेते है।

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُونَ بِنَا إِلاَّ إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَن يُصِيبَكُمُ اللّهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِندِهِ أَوْ بِأَيْدِينَا فَتَرَبَّصُوا إِنَّا مَعَكُم مُّتَرَبِّصُونَ {52}

तुम मुनाफिकों से कह दो कि तुम तो हमारे वास्ते दो भलाइयों में से एक के ख़्वाह मख़्वाह मुन्तज़िर ही हो और हम तुम्हारे वास्ते उसके मुन्तज़िर है कि खुदा तुम पर अपने ही से कोई अज़ाब नाज़िल करे या हमारे हाथों से फिर तुम भी इन्तेज़ार करो हम भी तुम्हारे साथ इन्तेज़ार करते है (५२)

व्याख्या:- पवित्र लोग ये कह दे कि प्रेम, पवित्रता और शांति को अपनाकर उन्होंने दो बरकतें कमाई एक सेहत और दूसरा शांति वाला मस्तिक्ष। पवित्र लोग अपवित्र वालों के लिए दुआ करते है कि ऐसा ही जीवन उन्हें प्राप्त हो और वो भी प्रेम, पवित्रता को अपनाए नहीं तो इसके विपरीत उनके नसीब होगा उनके कर्मों के कारण।

पैगाम:- इस आयत के वर्तमान अनुवाद के अनुसार लड़ाई में विजय हासिल करना और शहादत पाने में दो बरकतों की निशानदेही की गई है। पृथ्वी का हर काम अल्लाह की मर्जी से होता है और इस लिहाज से मनुष्य आपस में लड़े ये कभी भी अल्लाह का नियम नहीं हो सकता। अल्लाह दुर्बल नहीं है जो उसके रास्ते पर लड़ने के लिए मनुष्य को मृत्यु की तरफ ढकेल दें। इस आयत में पाप और पुण्य की बात की गई है और इसके साथ-साथ मनुष्य के लिए शांति और अच्छी सेहत की बात की गई है। अल्लाह की राह में विजय और पराजय कुछ माने नहीं रखता ये सिर्फ एक कर्त्तव्य है जो निभाया जाता है। उलमाओं के व्याख्या के अनुसार जब युद्ध नहीं होगी तब इस आयत को क्या समझा जाएगा?(कुरान शरीफ की हर आयत, हर इंसान और हर समय के लिए परिपूर्ण है।)

قُلْ أَنفِقُوا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّن يُتَقَبَّلَ مِنكُمْ إِنَّكُمْ كُنتُمْ قَوْمًا فَاسِقِينَ {53}

तुम कह दो कि तुम लोग ख़्वाह खुशी से खर्च करो या मजबूरी से तुम्हारी ख़ैरात तो कभी कुबूल की नहीं जाएगी तुम यकीनन बदकार लोग हो (५३)

व्याख्या:- पापी मनुष्य जब तहजीब की सीमा को पार करते है तब उनकी कोई भी सफाई कबूल नहीं होती यानी पाप से कमाई हुई सम्पत्ति से या पापी मनुष्य गुनाह करने के बाद जितनी भी भरपाई करें वो कबूल नहीं होती।

पैगाम:- प्रकृति में कोई एक ऐसा कार्य होता है जो एक बार अगर हो जाए तो उसकी भरपाई नमुमकिन है।

وَمَا مَنَعَهُمْ أَن تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَاتُهُمْ إِلاَّ أَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللّهِ وَبِرَسُولِهِ وَلاَ يَأْتُونَ الصَّلاَةَ إِلاَّ وَهُمْ كُسَالَى وَلاَ يُنفِقُونَ إِلاَّ وَهُمْ كَارِهُونَ {54}

और उनकी ख़ैरात के कुबूल किए जाने में और कोई वजह मायने नहीं मगर यही कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल की नाफ़रमानी की और नमाज़ को आते भी हैं तो अलकसाए हुए और खुदा की राह में खर्च करते भी हैं तो बे दिली से (५४)

व्याख्या:- अवश्य पाप से कमाई हुई सम्पत्ति से दान या खैरात कबूल नहीं होता। पाप अल्लाह और उसके पैगाम पहुँचाने वाले रसुलों के असुलों के विरूद्ध है और पापी मनुष्य नेकी, परहेजगारी और शांति को न अपनाकर नमाज अदा नहीं करते (उपर से दिखावट की नमाज जिसमें अल्लाह के लिए प्रेम और उनकी सृष्टि के लिए इज्जत नहीं है)

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ {55}

तुम को न तो उनके माल हैरत में डाले और न उनकी औलाद खुदा तो ये चाहता है कि उनको आल व माल की वजह से दुनिया की ज़िन्दगी में मुबितलाए अज़ाब करे और जब उनकी जानें निकलें तब भी वह काफिर रहें (५५)

व्याख्या:- पवित्रता और दिल में प्रेम रखने वाले मनुष्य पापियों की सम्पत्ति और उनके वंश की चमक-धमक से ताजूब न हो क्योंकि ये चमक-धमक उनकी जिन्दगी की शांति की नीव नहीं हो सकती और इनकी मृत्यु अशांति के अजाब से ही परिपूर्ण होती है।

وَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَمِنكُمْ وَمَا هُم مِّنكُمْ وَلَٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَفْرَقُونَ {56}

और ये लोग अल्लाह की क़सम खाएँगे फिर वह तुममें ही के है हालाँकि वह लोग तुममें के नही है मगर है ये लोग बुज़दिल है (५६)

व्याख्या:- पापियों का विवेक उनकी शांति छिन लेता है और इस अशांति को छिपाने के लिए सदेव जबान पर अल्लाह का नाम और अल्लाह की पाकीजगी बयान करते है ताकि परहेजगारों के सामने ये प्रमाण हो जाए कि ये लोग उन्हीं के जमात के है मगर ऐसे लोग अंदर से खोखले और डरपोक होते है।

لَوْ يَجِدُونَ مَلْجَأً أَوْ مَغَارَاتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُونَ {57}

कि गर कहीं ये लोग पनाह की जगहया ग़ार या घुस बैठने की कोई जगह पा जाएँ तो उसी तरफ रस्सियाँ तोड़ाते हुए भाग जाएँ (५७)

व्याख्या:- ऐसे पापियों का विवेक दुनिया के ऐशो आराम और मोह-माया में उलझा हुआ रहता है और मौका मिलते ही अपना नकाब उतार कर अपने पाप वाले अमाल के तरफ लौट जाते है या उन चमकती हुई चीजों के तरफ भागते है।

وَمِنْهُم مَّن يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ فَإِنْ أُعْطُوا مِنْهَا رَضُوا وَإِن لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَا إِذَا هُمْ يَسْخَطُونَ {58}

उनमें से कुछ तो ऐसे भी हैं जो तुम्हें खैरात में इल्ज़ाम देते है फिर अगर उनमे से कुछ दे दिया गया तो खुश हो गए और अगर उनकी मर्ज़ी के मुवाफिक़ उसमें से उन्हें कुछ नहीं दिया गया तो बस फौरन ही बिगड़ बैठे (५८)

व्याख्या:- पापी और अपवित्र विवेक वाले नेक और परहेजगार लोगों के दान खैरात पर संदेह प्रकट करते है। अगर पापियों को उसमें कोई लाभ नजर आता हो तो वो उनकी प्रशंसा करते है और अगर लाभ नजर न आए तो बुराई में लग जाते है।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا آتَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَقَالُوا حَسْبُنَا اللَّهُ سَيُؤْتِينَا اللَّهُ مِن فَضْلِهِ وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ رَاغِبُونَ {59}

और जो कुछ अल्लाह ने और उसके रसूल ने उनको अता फरमाया था अगर ये लोग उस पर राज़ी रहते और कहते कि खुदा हमारे वास्ते काफी है अनक़रीब ही अल्लाह हमें अपने फज़ल व करम से उसका रसूल दे ही देगा हम तो यक़ीनन अल्लाह ही की तरफ लौ लगाए बैठे है (५९)

व्याख्या:- ऐसे लोगों को तब शांति मिलती है जब ये लोग अपनी सोच बदलकर ये सोचते है कि जो इन लोगों के पास है वो अल्लाह के तरफ से दिया हुआ वरदान है और वो इसी में खुश रहते है और सब्र करते है।

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَامِلِينَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغَارِمِينَ وَفِي سَبِيلِ اللَّهِ وَابْنِ السَّبِيلِ فَرِيضَةً مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ {60}

खैरात तो बस खास फकीरों का हक़ है और मोहताजों का और उस के कारिन्दों का और जिनकी तालीफ़ क़लब की गई है और गर्दनों में और ग़द्दारों का और अल्लाह की राह में और परदेसियों की किफ़ालत में खर्च करना चाहिए ये हुकूक़ खुदा की तरफ से मुक़र्रर किए हुए है और खुदा बड़ा वाक़िफ कार हिकमत वाला है (६०)

व्याख्या:- सदका (हर किस्म की मदद) सिर्फ मजबूरों के लिए होता है और पाप के विरूद्ध युद्ध में इस सम्पत्ति को खर्च किया जा सकता है और मुसाफिरों के मदद के लिए भी और किसी का कर्ज उतारने में भी इसे इस्तेमाल किया जा सकता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।

पैगाम:- ये कुरान-शरीफ की एक महान आयत है और इस आयत में कोई जात-पात, रंग-रूप और उच-नीच का भेदभाव नहीं है और यकीनन असहारों का कोई रंग-रूप, जात-पात या उच-नीच नहीं होता। मुसलमान शब्द किसी सम्प्रदाय का नाम नहीं है। मुसलमान एक इंसानी चरित्र है और जब कोई इंसान इसे ठीक-ठीक अदा करता है तब वो इस्लाम में दाखिल होता है।

وَمِنْهُمُ الَّذِينَ يُؤْذُونَ النَّبِيَّ وَيَقُولُونَ هُوَ أُذُنٌ قُلْ أُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِينَ آمَنُوا مِنكُمْ وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ رَسُولَ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {61}

और उसमें से बाज़ ऐसे भी है जो रसूल को सताते है और कहते है कि बस ये कान ही है तुम कह दो कि तुम्हारी भलाई सुन्ने के कान है कि खुदा पर ईमान रखते है और मोमिनीन की बातों का यक़ीन रखते है और तुममें से जो लोग ईमान ला चुके है उनके लिए रहमत और जो लोग रसूले खुदा को सताते है उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (६१)

व्याख्या:- समाज में कुछ लोग ऐसे भी होते है जो सच्चाई का रास्ता बताने वाले नबियों को कष्ट देते है और कहते है कि ये तो हर मामले में दखल अंदाजी करते है। सच्चाई और भलाई बताने वाले नबियों की दखल अंदाजी भी नेकी और परहेजगारी के लिए होती है इनकी बातों से लोगों को शांति मिलती है और जो मनुष्य नबी के बताए हुए सच्चे और शांति के पथ को ठुकराते है और उन्हें कष्ट देते है वो खुद अशांति की अग्नि में तपते रहते है और उन्हें अल्लाह का अजाब।

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ لِيُرْضُوكُمْ وَاللَّهُ وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَن يُرْضُوهُ إِن كَانُوا مُؤْمِنِينَ {62}

ये लोग तुम्हारे सामने खुदा की क़समें खाते हैं ताकि तुम्हें राज़ी कर ले हालाँकि अगर ये लोग सच्चे ईमानदार है (६२)

व्याख्या:- अगर मनुष्य अपने अमाल द्वारा अल्लाह और उसके रसुल को खुश करे तो अवश्य इसके बदले में उन्हें खुशी और शांति प्राप्त होगी।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّهُ مَن يُحَادِدِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَأَنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيمُ {63}

तो अल्लाह और उसका रसूल कहीं ज़्यादा हक़दार है कि उसको राज़ी रखें क्या ये लोग ये भी नहीं जानते कि जिस शख़्स ने खुदा और उसके रसूल की मुख़ालेफ़त की तो इसमें शक ही नहीं कि उसके लिए जहन्नुम की आग (तैयार रखी) है (६३)

व्याख्या:- अल्लाह के असुल यानी प्राकृतिक नियम मानव और मानव समाज के लिए रसुलों के द्वारा मानव को समझाये गए।जो इन नियमों की विरूद्धता या इस सच्चाई को बिगाड़ने की चेष्टा करते है यकीनन ऐसे लोगों का जीवन अशांत होता है और दिमागी बेचैनी उनके जीवन को नर्क बना देती है और वे इसमें सदेव रहते है।

يَحْذَرُ الْمُنَافِقُونَ أَن تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُورَةٌ تُنَبِّئُهُم بِمَا فِي قُلُوبِهِمْ قُلِ اسْتَهْزِئُوا إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُونَ {64}

जिसमें वह हमेशा रहेगा यही तो बड़ी रूसवाई है मुनाफ़ेक़ीन इस बात से डरते है कि इन मुलसमानों पर कोई सूरा नाज़िल हो जाए जो उनको जो कुछ उन मुनाफिक़ीन के दिल में है बता दे तुम कह दो कि तुम मसख़रापन किए जाओ जिससे तुम डरते हो खुदा उसे ज़रूर ज़ाहिर कर देगा (६४)

व्याख्या:- पापी और खुदगर्ज मनुष्य ये समझता है कि सभ्य यानी ईमान वाले अल्लाह के रहम और कर्म से कुछ ऐसा अविष्कार न कर ले जिससे उनके झूठ और कु-संस्कार गलत प्रमाणित हो जाए। अपवित्र पापी और कु-संस्कार में उलझे हुए लोग ये जान ले कि सच्चाई को जितना भी छुपाने की कोशिश करें वो अल्लाह के रहमो करम से जरूर प्रकट हो जाती है।

وَلَئِن سَأَلْتَهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوضُ وَنَلْعَبُ قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ {65}

और अगर तुम उनसे पूछा तो ज़रूर यूँ ही कहेगें कि हम तो यूँ ही बातचीत कर रहे थे तुम कहो कि हाए क्या तुम ख़ुदा से और उसकी आयतों से और उसके रसूल से हँसी कर रहे थे (६५)

व्याख्या:- सच्चाई प्रमाणित होने के बाद पापी और झूठे लोग अपने दावे को छुपाने के लिए और अपनी झूठी शान को बरकरार रखने के लिए कहते है कि पहले तो हम ने मजाक किया था। अल्लाह के नियम, रसुलों की सच्चाई और प्राकृतिक अविष्कार कभी भी किसी की हसी-मजाक का मुकाम नहीं हो सकते।

لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ إِن نَّعْفُ عَن طَائِفَةٍ مِّنكُمْ نُعَذِّبْ طَائِفَةً بِأَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ {66}

अब बातें न बनाओं हक़ तो ये है कि तुम ईमान लाने के बाद काफ़िर हो बैठे अगर हम तुममें से कुछ लोगों से दरगुज़र भी करें तो हम कुछ लोगों को सज़ा ज़रूर देगें इस वजह से कि ये लोग क़ुसूरवार ज़रूर हैं (६६)

व्याख्या:- हर पापी अपने पाप को छुपाने के लिए बहाने बनाता है और कुछ मनुष्य ऐसे भी होते है जो झूठ और कु-संस्कार पर विश्वास रखते है और जब उनका झूठ, कु-संस्कार या पाप गलत प्रमाणित होता है तब वो उस सच्चाई को कबूल नहीं करते और अपने झूठे ख्यालात को सच्चाई का दर्जा देने के लिए तमाम किस्म के बहाने बनाते है, जो मनुष्य बिना समझे झूठ पर विश्वास रखते है अल्लाह उन्हें माफ कर देता है और जो मनुष्य सच्चाई को समझते हुए झूठ को कबूल करके बैठे रहते है वो गुनहगार यानी पापी है और अल्लाह की तरफ से उनपर अजाब होता है।

الْمُنَافِقُونَ وَالْمُنَافِقَاتُ بَعْضُهُم مِّن بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمُنكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوفِ وَيَقْبِضُونَ أَيْدِيَهُمْ نَسُوا اللَّهَ فَنَسِيَهُمْ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ هُمُ الْفَاسِقُونَ {67}

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें एक दूसरे के बाहम जिन्स हैं कि बुरे काम का तो हुक्म करते है और सभ्य कामों से रोकते है और अपने हाथ बन्द रखते हैं ये लोग ख़ुदा को भूल बैठे तो ख़ुदा ने भी उन्हें भुला दिया बेशक मुनाफ़िक़ बदचलन है (६७)

व्याख्या:- मुनाफिक मर्द औरत (बुराई का हुक्म देने वाला) की पहचान ये है कि खुद पाप करते है और उसे सच्चा प्रमाणित करने के लिए तमाम किस्म का बहाना देते हुए दूसरों को भी पाप करने पर उत्साहित करते है। अपने राज को छुपाने की कोशिश करते है यानी अपनी मुठ्ठी बंद रखते है। वो ये समझते है कि अपने राज उन्होंने अल्लाह से छिपा लिए। अल्लाह और उसके नियम इन लोगों से कोसों दूर है, नि:संदेह ऐसे लोग नफरमान और एहसान फरामोश है।

पैगाम:- वर्तमान दुनिया में नजर दौड़ाने से ही मुनाफिक लोगों की पहचान हो जाती है। दुनियां में ऐसे लोग भी मौजूद है, जो सिर्फ अपने बारे में ही सोचते है और समाज के लिए जो जिम्मेदारी है वो उसे निभाना नहीं चाहते। दूसरों की तरक्की देखकर जलते है और जाहिल होते हुए भी अपने आपको आलिम समझते है।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا هِيَ حَسْبُهُمْ وَلَعَنَهُمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ {68}

मुनाफिक़ मर्द और मुनाफिक़ औरतें और काफिरों से ख़ुदा ने जहन्नुम की आग का वायदा तो कर लिया है कि ये लोग हमेशा उसी में रहेगें और यही उन के लिए काफ़ी है और ख़ुदा ने उन पर लानत की है और उन्हीं के लिए दाइमी अज़ाब है (६८)

व्याख्या:- ऐसी सोच रखने वाले मर्द या औरत पर प्राकृतिक तौर पर अशांति का अजाब का वादा है जिसमें वो हमेशा रहेंगे।

كَالَّذِينَ مِن قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنكُمْ قُوَّةً وَأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَأَوْلَادًا فَاسْتَمْتَعُوا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُم بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِينَ مِن قَبْلِكُم بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِي خَاضُوا أُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ {69}

उनकी मसल है जो तुमसे पहले थे वह लोग तुमसे क़ूवत में ज़्यादा थे और औलाद में कही बढ़ कर तो वह अपने हिस्से से भी फ़ायदा उठा चुके तो जिस तरह तुम से पहले लोग अपने हिस्से से फायदा उठा चुके है इसी तरह तुम ने

अपने हिस्से से फायदा उठा लिया और जिस तरह वह बातिल में घुसे रहे उसी तरह तुम भी घुसे रहे ये वह लोग है जिन का सब किया धरा दुनिया और आख़िरत में अकारत हुआ और यही लोग घाटे में है (६९)

व्याख्या:- सभ्यता की आरंभ से ही इंसानी समाज में ऐसे लोग मौजूद है जो अपनी धन-दौलत और तादद में कभी-कभी पवित्र लोगों से ज्यादा होते है। निश्चित रूप से ऐसे लोगों के काम और ख्यालात समय के साथ-साथ औंदे मुंह गिर पड़ते है और उनके सारे नियम गलत प्रमाणित हो जाते है और वही है नुकसान उठाने वाले।

पैगाम:- संख्या में ज्यादा होना कोई बड़ी बात नहीं, असली बात तो यह है कि ज्ञान, पवित्रता, शिक्षित, वंश और बेहतरीन शांति का जीवन किस सम्प्रदाय में ज्यादा है इसकी गिनती होती है।

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكَاتِ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ {70}

क्या इन मुनाफिक़ों को उन लोगों की ख़बर नहीं पहुँची है जो उनसे पहले हो गुज़रे है नूह की क़ौम और आद और समूद और इबराहीम की क़ौम और मदियन वाले और उलटी हुयी बस्तियों के रहने वाले कि उनके पास उनके रसूल वाजेए मौजिज़े लोकर आए तो अल्लाह ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया मगर ये लोग ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म करते थे (७०)

व्याख्या:- नुह, आद और समुद की सम्प्रदाय का लोगों के सामने एक उदाहरण दीया जा रहा है। इब्राहीम और मदीने के रहने वाले लोगों की जिन्होंने हिदायत पाने के उपरांत पाप में उलझ कर अपने समाज और सभ्यता को खत्म किया और अपनी ही सुख-शांति को बिगाड़े। ऐसा नहीं है कि प्रकृति या अल्लाह की तरफ से कोई अजाब था, इन लोगों ने अपनी जिन्दगी और समाज को अपनी हाथों से बिगाड़ा था।

पैगाम:- अल्लाह की हिदायत में कोई कमी नहीं थी।

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاء بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنكَرِ وَيُقِيمُونَ الصَّلاَةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَيُطِيعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أُوْلَـئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ {71}

और ईमानदार मर्द और ईमानदार औरते उनमें से बाज़ के बाज़ रफीक़ है और नामज़ पाबन्दी से पढ़ते है और ज़कात देते है और ख़ुदा और उसके रसूल की फरमाबरदारी करते है यही लोग है जिन पर ख़ुदा अनक़रीब रहम करेगा बेशक ख़ुदा ग़ालिब हिकमत वाला है (७१)

व्याख्या:- प्रेम, शान्ति, मानवता और भाईचारा पर विश्वास रखने वाले जिसे मुसलमान (मोमिन) कहते है। वो सारे पुरूष नारी पृथ्वी के किसी भी कोने में क्यों न हो आपस में दोस्त है, ऐसे लोग सदेव ईमानदारी और परहेजगारी की शिक्षा देते है और अपने आपको उदाहरण के तौर पर पेश करते है। गुनाह, पाप और बेईमानी से लोगों को रोकने की चेष्टा करते है। अल्लाह के सारे प्राकृतिक नियमों को अपनाते है (नमाज) और उस पर अमल करते है और साथ-साथ सरकार के बनाए हुए हर किस्म का टैक्स (जकात) अदा करते है और अल्लाह के सारे प्राकृतिक नियम जो रसुलों से मिले है उन्हें मानकर चलते है, ऐसे लोगों पर अल्लाह की रहमत बरसती है। निसन्देह अल्लाह ताला सर्वशक्तिमान और हिकमत वाला है।

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَمَسَاكِنَ طَيِّبَةً فِي جَنَّاتِ عَدْنٍ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ أَكْبَرُ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ {72}

ख़ुदा ने ईमानदार मर्दों और ईमानदारा औरतों से उन बाग़ों का वायदा कर लिया है जिनके नीचे नहरें जारी है और वह उनमें हमेशा रहेगें अदन के बाग़ो में उम्दा उम्दा मकानात का और ख़ुदा की ख़ुशनूदी उन सबसे बालातर है- यही तो बड़ी कामयाबी है (७२)

व्याख्या:- ऐसा करने पर अल्लाह की प्रकृति से मानव समाज एक खूबरसुरत बाग की तरह बन जाएगा जिसमें नहर की ठंडक की तरह शान्ति होगी। अल्लाह के नियमों पर कायम रहने से मानव और मानव समाज को ठंडी नहर जैसी शान्ति प्राप्त होगी और यही मानव के लिए सबसे ज्यादा कामयाबी है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ {73}

ऐ रसूल कुफ़्फ़ार के साथ और मुनाफिकों के साथ जिहाद करो और उन पर सख़्ती करो और उनका ठिकाना तो जहन्नुम ही है और वह बुरी जगह है (७३)

व्याख्या:- सच्चाई बताने वाले नबी और उनके नियमों पर चलने वालों को आदेश है कि झूठ, पाप और पापियों के विरूद्ध जहाद करें और उन लोगों के साथ सख्ती के साथ पेश आए। निश्चित रूप से ये लोग अशान्ति का नर्क भोग करते है और यही इनके रहने का ठिकाना है।

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَالُوا وَلَقَدْ قَالُوا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوا بِمَا لَمْ يَنَالُوا وَمَا نَقَمُوا إِلَّا أَنْ أَغْنَاهُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ مِن فَضْلِهِ فَإِن يَتُوبُوا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ وَإِن يَتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ {74}

ख़ुदा की क़समें खाते है हालाँकि उन लोगों ने कुफ़्र का कलमा ज़रूर कहा और अपने इस्लाम के बाद काफिर हो गए और जिस बात पर क़ाबू न पा सके उसे ठान बैठे और उन लोगों ने सिर्फ इस वजह से अदावत की कि अपने फज़्ल व करम से ख़ुदा और उसके रसूल ने दौलत मन्द बना दिया है तो उनके लिए उसमें ख़ैर है कि ये लोग अब भी तौबा कर लें और अगर ये न मानेंगें तो अल्लाह उन पर दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब नाज़िल फरमाएगा और तमाम दुनिया में उन का न कोई हामी होगा और न मददगार (७४)

व्याख्या:- समाज में कुछ मनुष्य ऐसे भी है जो अल्लाह के नियमों और सच्चाई पर कस्म खाते है अपने कर्मफल से बचने के लिए अपने किये पर शर्मींदा नहीं होते और कहते है कि उन्होंने ये काम किया ही नहीं। हकीकत तो यही होती है कि पापियों का पाप (यानी कुफ्र का कलमा) उनके हाथों हो चुका था। ''कुफ्र का कलमा'' से मुराद है सच्चाई को जानने के बाद, नेकी की हिदायत पाने के बाद और अल्लाह के नियमों को समझने के बाद अगर कोई पाप करता है तो वो हुआ ''कुफ्र का कलमा''। इस्लाम यानी शान्ति, सुख-चैन, नेकी, परहेजगारी और प्रेम पर ईमान लाना मतलब अल्लाह के इन नियमों को पुरी तरह कबुल करना और इसे अपनी जिन्दगी में लागू करना। इन नियम को जुबानी तौर पर कबुल करने के बाद अगर कोई पाप करता है अपनी सम्पत्ति की शक्ति द्वारा जो अल्लाह की कृपा से उसे प्राप्त हुई थी यानी पाप के साथ सम्पत्ति का एक गहरा रिश्ता होता है और इस रिश्ते का गलत इस्तेमाल करने वाला यानी ''कुफ्र का कलमा'' अपनाने वाला कभी भी तौबा करें तो ये उनके लिए बेहतर है और अगर नहीं करें तो इंसानी समाज में उसे नफरत के साथ जीना पड़ेगा और नफरत के साथ जीना एक दर्दनाक अजाब है।

पैगाम:- इस आयत के द्वारा मानव समाज में सम्प्रदाय की सोच को रद्द किया गया है और वो इस तरह की इस आयत में कहा गया है ''कुफ्र का कलमा'' अगर काफिर कोई सम्प्रदाय है तो यकीनन मुसलमान छोड़कर किसी भी कौम में कलमा पढ़ा नहीं जाता तो ''काफिर का कलमा'' क्या है?काफिर कौन सा कलमा पढ़ते है?काफिर वो कलमा पढ़ते है जिसमें अल्लाह के नियम और उनके बताए हुए पथ के विपरीत बातें है यानी पाप।

इस आयत में काफिर से मतलब पाप या पापी ये बात प्रमाणित होती है और ये भी प्रमाण होता है कि ईमान वाला और काफिर किसी उम्मत के दायरे में सीमित नहीं है और इस आयत के आखिर में ''तौबा'' की बात करके इस आयत के सच्चे नियमों को और भी प्रमाणित तौर पर पेश किया।

وَمِنْهُم مَّنْ عَاهَدَ اللَّهَ لَئِنْ آتَانَا مِن فَضْلِهِ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُونَنَّ مِنَ الصَّالِحِينَ {75}

और इन में से बाज़ ऐसे भी है जो ख़ुदा से क़ौल क़रार कर चुके थे कि अगर हमें अपने फज़्ल से देगा तो हम ज़रूर ख़ैरात किया करेगें और सभ्योकार बन्दे हो जाएँगे (७५)

व्याख्या:- और कुछ मनुष्य ऐसे भी है जो ये सोचते है और कहते है कि अगर उनका जो अर्थनैतिक हाल है उस पर वो दान-पुण्य करने के काबिल नहीं है। अगर वो पैसे वाले बन जाए तो जरूर दान-पुण्य करेंगे और नेक काम करेंगे और अल्लाह के रास्ते पर चलने वाले बन जाएंगे।

पैगाम:- दान-पुण्य करना इंसान की नियत पर निर्भर करता है अर्थनैतिक हाल पर नही। इस आयत के द्वारा बताए गए मनुष्य की जो उदाहरण दी गई है ऐसे मनुष्य को नियमों के तराजु में पापी कहा जाएगा। अपनी ख्वाहिसात और उत्वकांक्षा और जरूरत को समेट कर दूसरे मानव के दु:ख मुसिबत में साथ देना ही दान-पुण्य है और मनुष्य के लिए कर्त्तव्य भी चाहे वो मुआसी हो, रूहानी हो या ज्ञान प्रदान द्वारा या अपनी मेहनत द्वारा। मनुष्य का अर्थनैतिक हाल अल्लाह यानी प्रकृति पर निर्भर है और मानवता के नाते एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से रिश्ता प्रेम और सम्मान का होना चाहिए और जब दो मनुष्य के मध्य मगरूरियत या भेदभाव के ख्यालात पैदा होते है तब वो प्रकृति यानी अल्लाह की नजर में नीच किस्म का मनुष्य होता है।

فَلَمَّا آتَاهُم مِّن فَضْلِهِ بَخِلُوا بِهِ وَتَوَلَّوا وَّهُم مُّعْرِضُونَ {76}

तो जब अल्लाह ने अपने फज़्ल से उन्हें अता फरमाया-तो लगे उसमें बुख़्ल करने और कतराकर मुँह फेरने लगे (७६)

व्याख्या:- ऐसा खुदगर्ज मनुष्य जब धनी हो जाता है तब भी वो नेकी के लिए खर्च नहीं करते और मानव समाज की तकलीफों से दरगुजर करते है और अपने ऐशो आराम और उत्वकांक्षा को पुरा करते रहते है।

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَىٰ يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ بِمَا أَخْلَفُوا اللَّهَ مَا وَعَدُوهُ وَبِمَا كَانُوا يَكْذِبُونَ {77}

फिर उनसे उनके ख़ामयाज़े में अपनी मुलाक़ात के दिन तक उनके दिल में निफाक डाल दिया इस वजह से उन लोगों ने जो ख़ुदा से वायदा किया था उसके ख़िलाफ किया और इस वजह से कि झूठ बोला करते थे (७७)

व्याख्या:- ऐसे लोगों की सजा में अल्लाह ताला ने उनके दिलों में अशान्ति और बेचैनी डाल दी और जिन्दगी के आखिरी सांस तक यानी खत्म होने तक क्योंकि उन्होंने वादा खिलाफी की थी।

पैगाम:- इस आयत में ''कयामत'' से मुराद मनुष्य की मृत्यु है। मृत्यु के बाद मनुष्य का जिस्म प्रकृति में विलीन हो जाता है और प्रकृति अल्लाह की शक्ति द्वारा चलती है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوَاهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ {78}

क्या वह लोग इतना भी न जानते थे कि अल्लाह सारे भेद और उनकी सरगोशी जानता है और ये कि ग़ैब की बातों से ख़ूब आगाह है (७८)

व्याख्या:- अल्लाह और उसकी प्रकृति से ही हर मनुष्य बनता है। मनुष्य के दिमाग में जो सोच बनती और अमल में आती है वो भी प्रकृति यानी अल्लाह के इख्तियार में होती है।

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُطَّوِّعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَجِدُونَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُونَ مِنْهُمْ سَخِرَ اللَّهُ مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {79}

जो लोग दिल खोलकर ख़ैरात करने वाले मोमिनीन पर और उन मोमिनीन पर जो सिर्फ अपनी शफ़क़कत की मज़दूरी पाते इल्ज़ाम लगाते हैं फिर उनसे मसख़रापन करते तो ख़ुदा भी उन से मसख़रापन करेगा और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है (७९)

व्याख्या:- समाज में कुछ मनुष्य ऐसे भी होते है जो दिल खोल कर दान-पुण्य करते है मगर दिमाग में नफरत, अहंकार, मानव में भेदभाव और सच्चाई के विरूद्ध और झूठ को पकड़े रहते है और वे उन लोगों को ताना देते है जो सच्चाई, परहेजगारी और अपनी मेहनत की कमाई पर रहकर सब्र करते है और सृष्टि की भंडार से जो उन्हें मिलता है उस पर संतुष्ट रहते है और अल्लाह मजाक उड़ाने वालों को उनकी पाप की सजा अवश्य देंगे यानी कष्ट, बेचैनी और अशान्ति।

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِن تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ {80}

ख़्वाह तुम उन के लिए मग़फिरत की दुआ माँगों या उनके लिए मग़फिरत की दुआ न माँगो तुम उनके लिए सत्तर बार भी बख़्शिश की दुआ मांगोगे तो भी अल्लाह उनको हरगिज़ न बख़्शेगा ये इस सबब से है कि उन लोगों ने

खुदा और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और खुदा बदकार लोगों को मंज़िलें मकसूद तक नही पहुँचाया करता (८०)

व्याख्या:- ऐसे मनुष्य को जो सच्चाई के विरूद्ध रहते है और झूठ को अपनाते है उन लोगों की अच्छाई के लिये जितनी भी प्रार्थना की जाए अल्लाह उनके कष्ट को कम नहीं करेंगे जब तक वो अपने पापों से तौबा न कर ले और नेकी का रास्ता इख्तियार न कर लें।

पैगाम:- सुरा तौबा में ७० किस्म के चारित्रिक पापों का जिक है। वेद में इसे ''रक्त बिजा सुर'' के नाम से सम्बोधित किया गया है। ७० किस्म के इंसानी चारित्रिक पाप जो मानव समाज की सत्यता और शान्ति विनष्ट करते है इसलिए नेक लोगों को विशेष ७० बार दुआ करने का उल्लेख किया गया है। गौर करने वाले बात है के क्षमा के गिनती सिरफ ७० वार किंयु कहा गया ? सो बार या हजार बार किंयु नहीं ? मानव दिमाग में जो अपवित्र सोच उत्पन्न होती है वो उसकी पवित्र अंतर्रात्मा को बहकाती रहती है वो और दो किसम की होती है। सुरा तौबा की आयतो में मानव चरित्र के इस ७० किसम की अपवित्र सौंच छुपी हुई है। जब सुरा तौबा की विशेष पुस्तक लिंखुगा तब उसके राज का उल्लेख होगा और हजरत वारिस पाक की तरफ से मैं दुनिया के तमाम मौलवी और आलिमों को जो आपने आप को इसलाम का पंडित कहते है उन लोगों को मैं इस सुरा से ७० किसम के गुनाह को निकाल ने का अनुरोध करुंगा ? अल्लाह के मर्जी से आयते के अन्दर छुपे हुए इनसानी गुनाह का पैगाम जो मेरे सिने में दफन है वो मैं अल्लाह के हुकुम के अनुसार वक्त आने पर उसे जरुर पुस्तक की शक्ल के द्वारा पेश करुंगा।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللَّهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ {81}

रसूले खुदा के पीछे रह जाने वाले अपनी जगह बैठ रहने से खुश हुए और अपने माल और आपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद करना उनको मकरू मालूम हुआ और कहने लगे गर्मी में न निकलो तुम कह दो कि जहन्नुम की आग उससे कहीं ज़्यादा गर्म है (८१)

व्याख्या:- रेगिस्तान की गर्मी से भी ज्यादा गर्म है अशान्ति की आग। जो मनुष्य समाज में सच्चाई और पवित्रता स्थापित करने के लिए जहाद (धर्म युद्ध) नहीं करते, वह अज्ञानी है।

فَلْيَضْحَكُوا قَلِيلًا وَلْيَبْكُوا كَثِيرًا جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ {82}

अगर वह कुछ समझें जो कुछ वह किया करते थे उसके बदले उन्हें चाहिए कि वह बहुत कम हँसें और बहुत रोएँ (८२)

व्याख्या:- झुठ और व्यहम पर कायम रहने वाला मनुष्य हसने और रोने को अपनी आदत समझते है। जब वे दूसरों पर हसते है तब उन्हें खुशी होती है मगर उन्हें मालूम नहीं कि सच्चाई पर हंसना उन्हें खुद तकलीफ में डाल देगा और नतीजे में उन्हें बहुत दिन तक रोना होगा।

فَإِنْ رَجَعَكَ اللَّهُ إِلَى طَائِفَةٍ مِنْهُمْ فَاسْتَأْذَنُوكَ لِلْخُرُوجِ فَقُلْ لَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ تُقَاتِلُوا مَعِيَ عَدُوًّا إِنَّكُمْ رَضِيتُمْ بِالْقُعُودِ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْخَالِفِينَ {83}

अगर अल्लाह तुम इन मुनाफेक़ीन के किसी सम्प्रदाय की तरफ वापस लाए फिर तुमसे निकलने की इजाज़त माँगें तो तुम साफ़ कह दो कि तुम मेरे साथ हरगिज़ न निकलने पाओगे और न हरगिज़ दुश्मन से मेरे साथ लड़ने पाओगे जब तुमने पहली मरतबा बैठे रहना पसन्द किया तो पीछे रह जाने वालों के साथ बैठे रहो (८३)

व्याख्या:- पवित्रता और सच्चाई के लिए लड़ने वाले लोग कभी भी डरपोक और स्वार्थियों को साथ नहीं लेते, वो अपनी लड़ाई खुद लड़ते है, ऐसे लोगों को अपना साथी बनाते है जो खुद सच्चे है और ईमानदार भी।

وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ {84}

उन मुनाफिक़ीन में से जो मर जाए तो कभी ना किसी पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर खड़े होना इन लोगों ने यक़ीनन खुदा और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और बदकारी की हालत में मर गए (८४)

व्याख्या:- मतलब परस्त डरपोक और बेईमान की मृत्यु पर किसी किस्म का गम नहीं करना चाहिए। बेईमानी

एहसान फरामोशी और इंसान के दिल को तकलीफ देना और सच्चाई को बिगाड़ना महापाप है। इनकी मृत्यु समाज में खुशी लाती है, ऐसे लोगों के जनाजे को नफरत के साथ ही विदा करना बेहतर है।

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ أَن يُعَذِّبَهُم بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنفُسُهُمْ وَهُمْ كَافِرُونَ {85}

और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें ताज्जुब में न डाले अल्लाह तो बस ये चाहता है कि दुनिया में भी उनके माल और औलाद की बदौलत उनको अज़ाब में मुब्तिला करे और उनकी जान निकालने लगे तो उस वक़्त भी ये काफ़िर रहें (८५)

व्याख्या:- गुनाह के साथ दौलत का एक गहरा संबंध है। जो गुनाह के द्वारा दौलत हासिल करते है और इस दौलत से अपने बाल-बच्चो को एसी आराम की जिन्दगी देते है उसे देखकर परहेजगार और तकलीफ शुदा इंसान को अचंबा न हो।

وَإِذَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ أَنْ آمِنُوا بِاللَّهِ وَجَاهِدُوا مَعَ رَسُولِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُو الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوا ذَرْنَا نَكُن مَّعَ الْقَاعِدِينَ {86}

और जब कोई सूरा इस बारे में नाज़िल हुआ कि ख़ुदा को मानों और उसके रसूल के साथ जिहाद करो तो जो उनमें से दौलत वाले है वह तुमसे इजाज़त मांगते है और कहते है कि हमें यहीं छोड़ दीजिए कि हम भी बैठे रहें (८६)

व्याख्या:- जब कोई अविष्कार (सुरत) मानव द्वारा मानव सभ्यता को दी जाती है तब कहा जाता है कि इस अविष्कार पर विश्वास लाओ और इस सच्चे अविष्कार पर अविष्कार (रसुल) करने वाले के साथ सच्चाई कायम करने के लिए जहाद करें और कुछ बीच में रहने वाले मनुष्य यानी झुठ को छोड़ेंगे भी नहीं और सच को कबूल भी नहीं करेंगे। ऐसे ख्यालात रखने वाले रसुल से इजाजत मांगते है कि अविष्कार के नतीजे पर उनका भी हिस्सा हो।

رَضُوا بِأَن يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ {87}

ये इस बात से ख़ुश है कि पीछे रह जाने वालों के साथ बैठे रहें और उनके दिल पर मोहर कर दी गई तो ये कुछ नहीं समझते (८७)

व्याख्या:- बाहुदरी और ईमानदारी जिसमें नहीं होती वो सच कबुल करने में डरते है। जिस तरह मर्दों की हुकुमत वाली समाज में अपने ख्यालात और अपनी ख्वाहिसात को दबा कर जो मजलुम औरत रहती है ऐसे मर्द उन्हीं के साथ रहना पसंद करते है यानी डरपोक, बुजदील, बेईमान मर्द और औरत।

पैगाम:- कुरान-शरीफ की हर आयत मर्द, औरत या ख्वाजा के लिए एक-सा है और कुरान-शरीफ दुनिया के हर कोने के इंसानों के लिए है। मर्दों के अय्याशी का एक एहम जरिया है औरत का जिस्म। समाज में कुछ ऐसे मर्द-औरत है जो संभोग के नशा में चूर रहते है और शरीर की पवित्रता को नष्ट करते है और वो तरह-तरह की बीमारियों का शिकार हो जाते है, कहीं-कहीं समाज की नैतिकता और रिश्तों की विशेषता पर ध्यान नहीं देते।

لَكِنِ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ جَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ وَأُولَٰئِكَ لَهُمُ الْخَيْرَاتُ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ {88}

मगर रसूल और जो लोग उनके साथ ईमान लाए हैं उन लोगों ने अपने अपने माल और अपनी अपनी जानों से जिहाद किया- यही वह लोग है जिनके लिए भलाइयाँ है और यही लोग कामयाब होने वाले है (८८)

व्याख्या:- ऐसे लोग जो सच्चाई को कबुल करते है और परहेजगारी को अपना लिबास बनाते है मोहब्बत, मानवता और अमनो चैन को अपने विवेक की परछाई बनाते है, नेक लोगों के साथ यानी रसुलों के आदर्श के साथ सच्चाई के लिए पाप और झुठ के खिलाफ जहाद करते है और इसमें अपने जान व माल की कोई परवाह नहीं करते। ऐसे लोग दुनियां में कामयाब है क्योंकि उन्हें ही शान्ति प्राप्त है और उन्हें उसकी कोई पश्चताप नहीं।

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ {89}

ख़ुदा ने उनके वास्ते के वह बाग़ तैयार कर रखे है जिनके नीचे नहरे जारी है इसमें हमेशा रहेंगे यही तो बड़ी कामयाबी है (८९)

व्याख्या:- ऐसे लोगों के लिए प्रकृति की तरफ से शान्ति वाला बाग होता है जिसके नीचे नहर की पानी की तरह शान्ति की छाव होती है और हमेशा के लिए ये इसमें रहते है। जिन्हें ये प्राप्त है वही जिन्दगी में कामयाब है।

وَجَاءَ الْمُعَذِّرُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ سَيُصِيبُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ {90}
और कुछ हीला करने वाले गवार देहाती आ मौजदू हुए ताकि उनको भी इजाज़त दी जाए और जिन लोगों ने ख़ुदा और उसके रसूल से झूठ कहा था वह बैठ रहे उनमें से जिन लोगों ने कुफ़्र एख़्तेयार किया अनक़रीब ही उन पर दर्दनाक अज़ाब आ पहुँचेगा (९०)

व्याख्या:- मानव समाज में कुछ लोग ऐसे भी होते है जो अशीक्षित (उम्मी) है, उन्हें सच्ची और यौगतिक बातें समझ में नही आती और उनकी इस कमजोरी को हथियार बनाकर पापी उन्हें अपने पाप में शामिल करते है। ऐसे उम्मी और अशीक्षित लोग व्यहम और झूठ का शिकार होते है जो लोग अल्लाह और उसके रसुल के बारे में झूठ बांधते थे उनके बेहकावे में आ जाते है और ऐसी हालात में ही रहना पसंद करते यानी अपने और समाज की बेहतरी के लिए कदम नही उठाते। वो काफिर रहेंगे, काफिर मरेंगे।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضَى وَلَا عَلَى الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يُنْفِقُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا لِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَبِيلٍ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ {91}
न तो कमज़ोरों पर कुछ गुनाह है न बीमारों पर और न उन लोगों पर जो कुछ नहीं पाते कि ख़र्च करें बशर्ते कि ये लोग ख़ुदा और उसके रसूल की ख़ैर ख़्वाही करें सभ्यी करने वालों पर कोई सबील नही और ख़ुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (९१)

व्याख्या:- दुर्बल और बीमार जहन वाले मनुष्य जो अनजाने में गलती करते है और जहाद का मतलब नही समझते या सच्चाई के लिए लड़ना अपनी जिस्मानी कमजोरी और जयफी की वजह से नहीं लड़ते, ऐसे लोगों पर कोई इलजाम नहीं आ सकता। ये लोग दिल से सच्चाई बताने वाले रसुलों पर ईमान रखते है और अल्लाह ताकातवर, बक्षने वाला और मेहरबान है।

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا مَا أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَا أَجِدُ مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ تَوَلَّوْا وَأَعْيُنُهُمْ تَفِيضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوا مَا يُنْفِقُونَ {92}
और न उन्हीं लोगों पर कोई इल्ज़ाम है जो तुम्हारे पास आए कि तुम उनके लिए सवारी बाहम पहुँचा दो और तुमने कहा कि मेरे पास मौजूद नहीं कि तुमको उस पर सवार करूँ तो वह लोग फिर गए और हसरत उसे उस ग़म में कि उन को ख़र्च मयस्सर न आया उनकी आँखों से आँसू जारी थे (९२)

व्याख्या:- जयफ और कमजोर इंसान की मदद करने के बाद कोई भी नेक इंसान मुआवजे की उम्मीद नही रखते और ऐसे भी कुछ इंसान होते है जिनके पास मुआवजा देने की मुआसी हैसियत नहीं होती। ऐसे लोग सिर्फ अपने आंसुओं से अपना हाल बयान करते है और वो भीख नहीं मांगते।

पैगाम:- इस आयत का वर्तमान अनुवाद कोई विशेष यौगतिक तत्व प्रमाण नहीं करता। ये आयत सिर्फ कुछ लोगों की आर्थिक अवस्था की व्याख्या करती है और साथ-साथ दूसरों की कष्ट में अपने आपको दुर्बल पाने का दु:ख का अनुभव दर्शाती है। वो पत्थर दिल, अपवित्र पापी मानव होता है जो दूसरों की अनुभव और तकलीफों को प्रधानता नहीं देता।

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ {93}
सबील तो सिर्फ उन्हीं लोगों पर है जिन्होंने बावजूद मालदार होने के तुमसे न जाने की इजाज़त चाही और उनके पीछे रह जाने वाले के साथ रहना पसन्द आया और ख़ुदा ने उनके दिलों पर मोहर कर दी है तो ये लोग कुछ नही जानते (९३)

व्याख्या:- इलजाम तो सिर्फ उनपर लग सकता है जो हर तरह से शक्तिशाली होने के उपरांत नेकी के लिए इजाजत तलब करते है ताकि वो घर में रहने वाली औरतों के साथ रह सके। ऐसे लोगों को सच-झूठ, पाप-पुण्य की समझ नही होती।

पैगाम:- सच्चाई के लिए लड़ना और नेकी, परहेजगारी, इंसानी विवेक का एक एहसास है उसके लिए किसी की

इजाजत मांगने का मतलब होता है जरूर उसके दिल में संदेह है जो वो नेक काम और परहेजगारी को करना नही चाहते। इजाजत मांगना सिर्फ एक बहाना है।

يَعْتَذِرُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ قُل لَّا تَعْتَذِرُوا لَن نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللَّهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ وَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ {94}

जब तुम उनके पास वापस आओगे तो ये तुमसे की माअज़रत करेंगे तुम कह दो कि बातें न बनाओ हम हरगिज़ तुम्हारी बात न मानेंगे हमे तो खुदा ने तुम्हारे हालात से आगाह कर दिया है अनक़ीरब खुदा और उसका रसूल तुम्हारी कारस्तानी को मुलाहज़ा फरमाएगें फिर तुम ज़ाहिर व बातिन के जानने वालों की हुज़ूरी में लौटा दिए जाओगे तो जो कुछ तुम करते थे बता देगा (९४)

व्याख्या:- पवित्र लोगों के पास आकर पवित्रता की बातें करने और पीछे से सारे अपवित्र कार्य करना और अपने आपको पवित्र दिखाने की चेष्टा करना विश्वासघात है (मानव सभ्यता के प्रति), जो लोग ऐसा करते है उनका कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए। ऐसे लोगों की पहचान अल्लाह प्राकृतिक तौर पर पवित्र मानव के सामने रख देते है और आखिरकार ऐसे लोगों के अमाल उनके खुद पर भारी पड़ता है।

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا انقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوا عَنْهُمْ فَأَعْرِضُوا عَنْهُمْ إِنَّهُمْ رِجْسٌ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ {95}

जब तुम उनके पास वापस आओगे तो तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएगें ताकि तुम उनसे दरगुज़र करो तो तुम उनकी तरफ से मुँह फेर लो बेशक ये लोग नापाक है और उनका ठिकाना जहन्नुम है सज़ा है उसकी जो ये किया करते थे (९५)

व्याख्या:- झूठ बोलने वालों के लिए कस्म एक मामूली बात है चाहे वो अल्लाह की हो या किसी और की।

يَحْلِفُونَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِن تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضَىٰ عَنِ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ {96}

तुम्हारे सामने ये लोग क़समें खाते हैं ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ तो अल्लाह बदकार लोगों से हरगिज़ कभी राज़ी नहीं होगा (९६)

व्याख्या:- ऐसे लोगों में एक फितरत पायी जाती है कस्म खाने की और जितना ज्यादा झूठ उतना ज्यादा झूठी कस्में। जो मनुष्य ऐसा करते है वो जहनी तौर पर बीमार और गंदे है और उनका ठिकाना अशान्ति का नर्क।

पैगाम:- अपने झूठे ख्यालात को प्रमाण करने के लिए, अपना ऐब छुपाने के लिए समाज में अपनी हैसियत साबित करने के लिए झूठे लोग कस्में खाते है। सच्चाई प्रमाण करने के लिए कस्मों की जरूरत नहीं होती। कुरान शरीफ की ये आयत प्रमाण करती है कि कस्म खाने वाला सबसे ज्यादा झुठा होता है। जहां पर कस्म की बात आती है तो यकीनन वहां पर कही न कहीं झुठ की बुनियाद है नहीं तो यकीनन कही न कही सच्चाई कमजोर है।

सूत्र:- शपथ और प्रतिज्ञा सब अलग-अलग शब्द है और उनके माने भी जुदा-जुदा है।

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَنِفَاقًا وَأَجْدَرُ أَلَّا يَعْلَمُوا حُدُودَ مَا أَنزَلَ اللَّهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ {97}

अरब के गँवार देहाती कुफ्र व निफाक़ में बड़े सख़्त हैं और इसी क़ाबिल है कि जो किताब अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल फरमाई है उसके एहक़ाम न जानें और अल्लाह तो बड़ा दाना हकीम है (९७)

व्याख्या:- अज्ञानी, अनपढ़ लोग कु-संस्कार को अपनी जिद का मकसद बना लेते है और उस सच्चाई को कबूल नहीं करते जो अल्लाह ने रसुलों के द्वारा लोगों तक पहुँचायी। अल्लाह सब देखता-जानता है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ مَغْرَمًا وَيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَائِرَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {98}

और कुछ गँवार देहाती अल्लाह की राह में खर्च करते है उसे तावान समझते है और तुम्हारे हक़ में गर्दिशों के मुन्तज़िर है उन्हीं पर बुरी गर्दिश पड़े और अल्लाह तो सब कुछ सुनता जानता है (९८)

व्याख्या:- और कुछ अज्ञानी नेक और अच्छाई पर खर्च करने को बोझ समझते है और बेदिली से इस कर्त्तव्य को पुरा करते है। अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَن يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنفِقُ قُرُبَاتٍ عِندَ اللَّهِ وَصَلَوَاتِ الرَّسُولِ أَلَا إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ سَيُدْخِلُهُمُ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {99}

और कुछ देहाती तो ऐसे भी है जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखते है और जो कुछ खर्च करते है उसे अल्लाह की नज़दीकी और रसूल की दुआओं का ज़रिया समझते है आगाह रहो वाक़ई ये ज़रूर उनके तक़र्रुब का बाइस है अल्लाह उन्हें बहुत जल्द अपनी रहमत में दाख़िल करेगा बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (९९)

व्याख्या:- नेक कामों में खर्च करना बहुत ही अच्छी बात है मगर कुछ अज्ञानी ऐसे होते है जो नेक कामों पर खर्च करने के बदले कुछ पाने की उम्मीद रखते है, ये उन लोगों की नसमझी है। अल्लाह के रहमों करम से ऐसे लोगों को ज्ञान की रौशनी प्राप्त होती है और सच्चाई का दीदार होता है।

पैगाम:- उम्मीद रखना मानव चरित्र है, नेक कामों के बदले में नेक प्रतिफल का वादा अल्लाह के तरफ से मानव के लिए वरदान है। ज्यादा उम्मीद मानव को अशांत कर देता है।

وَالسَّابِقُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنصَارِ وَالَّذِينَ اتَّبَعُوهُم بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي تَحْتَهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ذَٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ {100}

और मुहाजिरीन व अन्सार में से सबक़त करने वाले और वह लोग जिन्होंने सभ्य नीयती से क़ुबूले ईमान में उनका साथ दिया अल्लाह उनसे राज़ी और वह ख़ुदा से खुश और उनके वास्ते ख़ुदा ने बाग़ जिन के नीचे नहरें जारी है तैयार कर रखे हैं वह हमेशा अब्दआलाबाद तक उनमें रहेगें यही तो बड़ी कामयाबी है (१००)

व्याख्या:- चाहे वो मोहाजरीन हो या अंसार यानी किसी भी कोम या किसी भी सम्प्रदाय का कोई भी मानव सच्चाई कबुल करने में आगे आ जाए तो अल्लाह उनसे राजी है यानी अल्लाह की रहमत उन पर है और ये समझा जाएगा कि वो मनुष्य भी अल्लाह के नियमों पर राजी है।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُم مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنَافِقُونَ وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ مَرَدُوا عَلَى النِّفَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَنُعَذِّبُهُم مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّونَ إِلَىٰ عَذَابٍ عَظِيمٍ {101}

और तुम्हारे एतराफ़ के गँवार देहातियों में से बाज़ मुनाफिक़ है और ख़ुद मदीने के रहने वालों मे से भी जो निफ़ाक पर अड़ गए है तुम उन को नही जानते हम उनको जानते है अनक़रीब हम उनकी दोहरी सज़ा करेगें फिर ये लोग एक बड़े अज़ाब की तरफ लौटाए जाएँगें (१०१)

व्याख्या:- जाहिलों में जहलात जब पाप की शक्ल इख्तियार कर लेती है और वो अत्याचार करने लग जाते है तो अल्लाह का आजाब उनपर दो गुना होता है और इस तरह एक तो जहालत का अजाब और दूसरा अत्याचार करने के बाद विवेक की पुकार जो उन्हें चैन से जीने नहीं देती।

وَآخَرُونَ اعْتَرَفُوا بِذُنُوبِهِمْ خَلَطُوا عَمَلًا صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللَّهُ أَن يَتُوبَ عَلَيْهِمْ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ {102}

और कुछ लोग है जिन्होंने अपने गुनाहों का एकरार किया उन लोगों ने भले काम को और कुछ बुरे काम को मिला जुला कर दिया क़रीब है कि ख़ुदा उनकी तौबा क़ुबूल करे ख़ुदा तो यक़ीनी बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१०२)

व्याख:- और कुछ मनुष्य ऐसे भी होते है जो पाप के साथ-साथ थोड़ी-थोड़ी अच्छाइयां भी करते है यानी दोहरी जिन्दगी और ये उम्मीद रखते है कि जो थोड़ी बहुत नेकी वो करते है इसके द्वारा उनके पाप धुल जाएंगे। अल्लाह क्षमा करने वाला और रहम करने वाला है।

पैगाम:- अनजाने में किये गये गलत काम को पाप नहीं कहा जा सकता और गलत काम को जान-बूझकर बार-बार किया जाए तो वो पाप की शक्ल इख्तियार कर लेता है और उसकी कोई माफी नहीं। कुरान शरीफ में इस बात को साफ और सीधे तौर पर कहा गया है कि हर काम की सजा और जजा जरूर मिलती है।

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَاتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ {103}

तुम उनके माल की ज़कात लो इसकी बदौलत उनको पाक साफ करों और उनके वास्ते दुआएँ ख़ैर करो क्योंकि तुम्हारी दुआ इन लोगों के हक़ में इत्मेनान और ख़ुदा तो सुनता जानता है (१०३)

व्याख्या:- पापी जब तौबा करते है और दुबारा पाप नहीं करते तो उनके पाप से कमाई हुई सम्पत्ति को जाया न करके उसमें से कुछ हिस्सा लेकर नेक कामों में इस्तेमाल करें (सदका) और ये इसलिए कि धन-दौलत जो मनुष्य को प्रकृति के भंडार से मिलती है वो मरते वक्त किसी के साथ नहीं जाती। और ये इसलिए कि ऐसा करने से पापियों के पाप का बोझ यानी पाप पर पश्चताप जो पापियों को अशान्त और बेबस कर देता है उस कष्ट से उन्हें थोड़ी बहुत निजात दिलवा सकती है और इसकी प्रार्थना सबको करनी चाहिए।

पैगाम:- भीख मांगना गलत बात है इसलिए इस आयत में सदका से मुराद किसी की दया नहीं है और न ही सदका से किसी के पाप का अजाब कम हो सकता है। कुरान शरीफ में ये फरमाया गया है ''हर किसी को अपने किये की सजा जरूर मिलेगी'' यानी कर्मफल से किसी को मुक्ति नहीं है।

أَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ {104}

क्या इन लोगों ने इतने भी नहीं जाना यक़ीनन ख़ुदा बन्दों की तौबा कुबूल करता है और वही ख़ैरातें लेता है और इसमें शक नहीं कि वही तौबा का बड़ा कुबूल करने वाला मेहरबान है (१०४)

व्याख्या:- कर्मफल यानी अपने किये का नतीजा या दान खैरात सब अल्लाह के इख्तियार में है।

وَقُلِ اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَتُرَدُّونَ إِلَى عَالِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ {105}

और तुम कह दो कि तुम लोग अपने अपने काम किए जाओ अभी तो ख़ुदा और उसका रसूल और मोमिनीन तुम्हारे कामों को देखेंगे और बहुत जल्द ज़ाहिर व बातिन के जानने वाले की तरफ लौटाए जाएँगे तब वह जो कुछ भी तुम करते थे तुम्हें बता देगा (१०५)

व्याख्या:- लोग जान ले कि वो ''काम किये जाए'' और नतीजा अल्लाह के हाथ में है।

पैगाम:- भगवद् गीता में पैगम्बर कृष्ण के मुंह से भी अल्लाह ने यही बात कहलवायी थी। कुरूक्षेत्र के युद्ध के मैदान में।

وَآخَرُونَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللَّهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوبُ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ {106}

और कुछ लोग है जो हुक्मे ख़ुदा के उम्मीदवार किए गए हैं ख़्वाह उन पर अज़ाब करे या उन पर मेहरबानी करे और ख़ुदा बड़ा वाकिफकार हिकमत वाला है (१०६)

व्याख्या:- समाज में कुछ लोग ऐसे भी है जो सच और ईमानदारी को कबुल करने के बाद भी उन्हें शान्ति प्राप्त नहीं होती और ये पुरी तरह अल्लाह यानी प्रकृति के इख्तियार में होती है। अल्लाह अन्तर्यामी और महाज्ञानी है।

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِن قَبْلُ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَا إِلَّا الْحُسْنَى وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ {107}

और जिन्होंने नुकसान पहुँचाने और कुफ़्र करने वाले और मोमिनीन के दरम्यिान तफरक़ा डालते और उस शख़्स की घात में बैठने के वास्ते मस्जिद बनाकर खड़ी की है जो अल्लाह और उसके रसूल से पहले लड़ चुका है ज़रूर क़समें खाएगें कि हमने भलाई के सिवा कुछ और इरादा ही नहीं किया और ख़ुदा ख़ुद गवाही देता है ये लोग यक़ीनन झूठे है (१०७)

व्याख्या:- नकाबपोश, झूठे और लालची मनुष्य दिखावे के लिए मुंह से नेकी, परहेजगारी और ईमान की बात करते है और अपनी दिखावट और अदाओं से बड़ी-बड़ी मस्जिदे बनाने की कस्में भी खाते है और कस्मे खाते है नेकी की और शांति की लेकिन उनका अमल पापियों जैसा होता है।

لَّا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا لَّمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَى مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَن تَقُومَ فِيهِ فِيهِ رِجَالٌ يُحِبُّونَ أَن يَتَطَهَّرُوا وَاللَّهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِينَ {108}

तुम इस में कभी खड़े भी न होना वह मस्जिद जिसकी बुनियाद अव्वल रोज़ से परहेज़गारी पर रखी गई है वह ज़रूर उसकी ज़्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े होकर उसमें वह लोग है जो पाक व पाकीज़ा रहने को पसन्द करते है और अल्लाह भी पाक व पाकीज़ा रहने वालों को दोस्त रखता है (१०८)

व्याख्या:- नेक, पवित्र और ईमान वाले मनुष्य कभी भी उनके साथ उनकी झूठी और बनावटी इमारत में उनके साथ खड़े न हो। निश्चय उनकी इमारत इबादत गाह नहीं है क्योंकि वो झूठ और बेईमानी की बुनियाद पर खड़ी हुई है। नेक मनुष्य सदेव पवित्रता और शान्ति को पसंद करते है और अल्लाह भी ऐसे नेक लोगों को पसंद करता है।

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَى تَقْوَى مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَم مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ عَلَى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ {109}

क्या जिस शख़्स ने ख़ुदा के ख़ौफ और ख़ुशनूदी पर अपनी इमारत की बुनियाद डाली हो वह ज़्यादा अच्छा है या वह शख़्स जिसने अपनी इमारत की बुनियाद इस बोदे किनारे के लब पर रखी हो जिसमें दरार पड़ चुकी हो और अगर वह चाहता हो फिर उसे ले दे के जहन्नुम की आग में फट पड़े और अल्लाह ज़ालिम लोगों को मंज़िलें मक़सूद तक नहीं पहुँचाया करता (१०९)

व्याख्या:- समाज में कुछ ऐसे सच्चे लोग भी होते है या बिलावास्ता ये भी कहा जा सकता है जिनकी इमारत की बुनियाद सच्चाई और अमन पर बनती है चाहे ऐसे इंसान हैसियत और मुआश में कमजोर ही क्यों न हो बेहतर होते है उन लोगों से जो गुनाह की इमारत पर खड़े होते है और वो अशांति के आग में झुलसते है यानी दोजक के आग में गिर पड़ते है और मजहब के नाम पर जुल्म करते है अल्लाह ऐसे लोगों को हिदायत नहीं देता।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَن تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ {110}

बुनियाद जो उन लोगों ने क़ायम की उसके सबब से उनके दिलो में हमेशा धरपकड़ रहेगी यहाँ तक कि उनके दिलों के परख़चे उड़ जाएँ और ख़ुदा तो बड़ा वाक़िफकार हकीम है (११०)

व्याख्या:- गुनाह से बनाई हुई इमारत या हुकुमत गुनहगारों की अन्तात्मा को हमेशा शक और बेचैनी में डाल कर रखती है और वो अंदर ही अंदर से खोखले होते रहते है यानी अशांति की आग से गुनहगार बर्बाद होते रहेंगे, अल्लाह अन्तर्यामी और हिकमत वाला है।

إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَى مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُم بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنجِيلِ وَالْقُرْآنِ وَمَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُم بِهِ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ {111}

इसमें तो शक ही नहीं कि अल्लाह ने मोमिनीन से उनकी जानें और उनके माल इस बात पर ख़रीद लिए है कि उनके लिए बेहश्त हैये लोग ख़ुदा की राह में लड़ते है तो मारते है और ख़ुद मारे जाते है पक्का वायदा है ख़ुदा पर लाज़िम है और ऐसा पक्का है कि तौरैत और इन्जील और क़ुरान में और अपने एहद का पूरा करने वाला ख़ुदा से बढ़कर कौन है तुम तो अपनी ख़रीद फरोख़्त से जो तुमने ख़ुदा से की है ख़ुशियाँ मनाओ यही तो बड़ी कामयाबी है (१११)

व्याख्या:- नेक, पवित्र और शांति चाहते वाले अपनी सोच और कर्म के बदले में शांति वाला जीवन प्राप्त करते है और ये जन्नत का सुकुन उनके जीवन में ही आर्शीवाद बनकर हमेशा रहता है। सच्चाई को समाज में प्रतिष्ठित करने के लिए ऐसे लोग अपना वक्त, मेहनत और सम्पत्ति से लड़ते है। कभी वो गुनहगारों को खत्म कर देते है और कभी वो खुद मिट जाते है। हर मजहबी किताब उदाहरण के तौर पर तोरात, इंजील और कुरान शरीफ जैसी किताबों में भी ऐसे लोगों का जिक है और अल्लाह का वादा यानी कूदरत से जो नतीजा इंसान को मिलता है वो सच्चा है। कूदरत के साथ नेक और पवित्र इंसानों का जो मेल-जोल उस पर वो खुशी और जश्न मनाये यही मानव जीवन की सफलता है।

पैगाम:- मानव जीवन का मकसद - नेकी, पवित्रता, शांति, प्रेम और मानवता के द्वारा प्रकृति का आनंद लें।

التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ اللَّهِ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ {112}

तौबा करने वाले इबादत गुज़ार हम्दो सना करने वाले सफर करने वाले रूकूठ करने वाले सजदा करने वाले सभ्य काम का हुक्म करने वाले और बुरे काम से रोकने वाले और अल्लाह की हदो को निगाह रखने वाले है और उन मोमिनीन को ख़ुशख़बरी दे दो (११२)

व्याख्या:- नेक, परहेजगार और ईमान वालों के गुण:-

१. तौबा करने वाले:- जो इंसान अपने गलतियों को पहचानते है और उस से तौबा करते है और आगे होने वाली गलतियों से भी तौबा करते है और गलतियों को गुनाह की शक्ल नहीं देते यानी समझने के बाद अगर वही काम दुबारा करते है तो वो गुनाह हुआ।

२. इबादत करने वाले:- हर प्राणी की बुनियाद है अल्लाह का नूर और उसकी आत्मा भी अल्लाह की नूर से बनती है। किसी का न हक दिल दुखाना अल्लाह के नूर की बेहुरमती है। अल्लाह की इबादत यानी तमाम मखलूक और उनकी कूदरत की खिदमत जो इससे बाहर काम करते है वो अल्लाह के असुलों के विरूद्ध जाते है। इबादत का तरीका कुछ भी हो अगर इसकी बुनियाद गलत होगी तो कोई भी इबादत अल्लाह कबुल नहीं करता और इसकी बुनियाद है नेकी, पवित्रता, मानवता, प्रेम, अहिंसा, शिक्षा और शांति। कुरान शरीफ आखिरी और मुकम्मिल किताब होने के उपरांत इसमें इबादत का तरीका मौजूद नहीं है और ये तमाम इंसानों और इंसानियत के लिए परिपूर्ण पुस्तक है।

३. हमद व सना करने वाले:- अल्लाह किसी की तारीफ का मोहताज नहीं है और उनकी तारीफ करने का मतलब अपनी अर्न्तात्मा से उनके दिये हुए हाल पर खुश रहना। जबान से उसकी तारीफ करना और दिल में अपने हाल पर तमाम किस्म की शिकायते रखना ये गुनाह है।

४. सफर करने वाले:- हर इंसान को अपनी हालत, अपने चारों तरफ के हालात और दुनिया के मौजूदा हाल की खबर रखनी चाहिए और अपने दिमाग से उस हाल को अच्छी तरह परख कर अपने उपर और समाज पर लागू करना चाहिए। हालात का मुआयना करना ही सफर करना है। अल्लाह ने इंसान को दिमाग दिया और उसे अशरफुल मखलुकात बनाया।

५. रकू करने वाले:- प्रकृति ने इंसान के दिमाग में अहंकार यानी मगरूरियत यानी घमंड यानी जिद ये सारी बुरी फितरत डाली है। रकू का लब्जी मतलब है सर झुकाना और ये एक चिह्न है इंसान की सारी बुरी फितरतों को त्यागने की।

६. सजदा करने वाले:- शैतानी फितरत यानी सारी बुरी फितरत जब इंसान त्याग देगा तब उसे अल्लाह के असुल यानी प्रकृति का हर पहलू जो इंसान को शांति और प्रेम के मार्ग पर चलना सिखाता है पुरी तरह से वो अपने आपको अल्लाह के इन असुलों में रंग दे या वक्फ कर दे।

७. नेकी का हुकुम देने वाले और बुराई से रोकने वाले:- जब इंसान अल्लाह के असुलों को समझ कर और उसे महसूस करके अपनी जिन्दगी में लागू करेगा तब उसके उपर एक और जिम्मेदारी प्राकृतिक तौर पर मिलेगा और वो ये है कि इंसान को सच्चे और फायदेमंद रास्ते पर चलने की हिदायत देना और बुराई से रोकने की हर मुमकिन कोशिश करना।

८. अल्लाह की हदों की हिफाजत करने वाले:- इंसान को प्राकृतिक तौर पर हर पहलू का दायरा मिला यानी इंसान की पहुंच और उसके अमाल का दायरा कूदरती तौर पर मुकर्रर है। इंसान कभी भी इस दायरे से बाहर न जाये यानी अपनी चादर से बाहर पैर न फैलाये।

९. और मोमिनों को खुशखबरी दे दें:- यही इस्लाम है। नेक और परहेजगारों के लिए खुशखबरी है।

१०. रोजा रखने वाले:- अपने जीवन को जरूरत से ज्यादा लोभ, मोह-माया और उत्वाकांक्षा से मुक्त रखने और साल में एक महीना (रमजान) अपनी खुराक, जुबान, चरित्र और अपने जीवन की हर किया-प्रकिया को पवित्रता देने की चेष्टा करें और अपनी पुरी जिन्दगी में इसे बरकरार रखें। पाप शक्ति इंसान की अंर्तात्मा को हमेशा बहकाती रहती है, उससे सचेत रहे।

पैगाम:- सुरा २२ अलहज की आयत ७८ में अल्लाह ने फरमाया - और अल्लाह की राह में कोशिश करो जैसे कोशिश करने का हक है, उसने तुम्हें चुना और उसने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं डाली, तुम्हारे बाप इब्राहीम का

दीन उसने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है इससे कबल और इस कुरान शरीफ में भी ताकि रसुल तुम्हारे गवाह हो और तुम नजर रखों और गवाह हो लोगों पर नमाज कायम करो, जकात अदा करो और मजबूती से थाम लो अल्लाह को वही तुम्हारा कारसाज है सो क्या ये अच्छा है कारसाज और क्या ये अच्छा मददगार।

हजरत मोहम्मद से पहले काबा में बूत होते थे और इन बूतों की इबादत की रश्म हजरत इब्राहीम के वक्त से चली आ रही थी।

इस आयत के अनुसार हजरत मोहम्मद का दीन और हजरत इब्राहीम का दीन एक है और इसपर कायम रहने के लिए कहा गया है। दोनों के दीन के मानने वालों को ''मुसलमान'' कहा गया है यानी ''मुसलमान'' शब्द हजरत मोहम्मद से पहले हजरत इब्राहीम के वक्त से ही प्रचालित था और बहुत सारे नबियों के लिए भी इस शब्द का प्रयोग हुआ, कुरान शरीफ की आयतों के अनुसार।

१. क्या बूत परस्थी मुसलमानों के इबादत का मुकाम था? अगर नहीं था तो ये कौन सा दीन है जो ''मुसलमान'' शब्द के साथ जोड़ा गया है और जो हजरत इब्राहीम से लेकर हजरत मोहम्मद के वक्त तक की निशानदेही करता है?

२. ''मुसमलान'' शब्द कोई विशेष सम्प्रदाय का नाम नहीं है और ये बात इस आयत से साबित हो चुकी है। ''मुसलमान'' शब्द एक इंसानी किरदार की निशानदेही करता है जिसे अदा करके एक इंसान अपने समाज में सुख शांति कायम कर सकते है। ये आयत साबित करती है कि सारे तरीकात एक तरफ, इंसानियत और कूदरत के असुल एक तरफ। रकू, सजदा, सफर, तौबा, इबादत, हमद व सना, नेकी का हुकुम देना और बुराई से रोकना और अल्लाह की हदे कायम करना। इन सारे अक्षरों के अंदर जो रहस्य है उन्हें प्रमाण के साथ इस आयत में बयान किया गया है। अल्लाह ने इंसान को दिमाग दिया ताकि वो सच्चाई को समझे और कु-संस्कार के पीछे भागना छोड़ दे।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَن يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِن بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ {113}

नबी और मोमिनीन पर जब ज़ाहिर हो चुका कि मुशरेकीन जहन्नुमी है तो उसके बाद मुनासिब नहीं कि उनके लिए मग़फिरत की दुआएँ माँगें अगरचे वह मुशरेकीन उनके क़राबतदार हो` (११३)

व्याख्या:- नबी या कोई भी नेक इंसान का रिश्तेदार अगर गुनाह करता है तो उनके गुनाह के लिए बख्शीश चाहने न इंसाफी है। गुनाहगार अपनी सजा जरूर भुगतेंगे यानी दोजक की आग यानी अशांति आग बनकर उनके जीवन को नष्ट कर देगी।

पैगाम:- पवित्र, अपवित्र लोगों की शुद्धीकरण की प्रार्थना करें।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا عَن مَّوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ {114}

और इबराहीम का अपने बाप के लिए मग़फिरत की दुआ माँगना सिर्फ इस वायदे की वजह से था जो उन्होंने अपने बाप से कर लिया था फिर जब उनको मालूम हो गया कि वह यक़ीनी ख़ुदा का दुश्मन है तो उससे बेज़ार हो गए, बेशक इबराहीम यक़ीनन बड़े दर्दमन्द बुर्दबार थे (११४)

व्याख्या:- उदाहरण के तौर पर हजरत इब्राहीम का इतिहास बताया जा सकता है। जब उनके गुनहगार पिता को सजा मिली और उसका कारण था के वो अल्लाह के दुश्मन थे और खुद अपने आपको अल्लाह के बराबर समझते थे। अल्लाह ने उन्हें ऐसी मौत दी जिसकी मिसाल इतिहास बन गई। उनके पिता का नाम था हिरण्यकश्यपु और उनके भाई का नाम था प्रहलाद जिसे कुरान शरीफ में पैगम्बर आद कहा गया है। हजरत इब्राहीम बहुत नरम दिल और खुले दिल के ज्ञानी इंसान थे।

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُم مَّا يَتَّقُونَ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ {115}

ख़ुदा की ये शान नहीं कि किसी क़ौम को जब उनकी हिदायत कर चुका हो उसके बाद बेशक ख़ुदा उन्हें गुमराह कर दे हता कि वह उन्हीं चीज़ों को बता दे जिससे वह परहेज़ करें बेशक अल्लाह हर चीज़ से (११५)

व्याख्या:- अल्लाह की प्रकृति में उनके नियम साफ और सीधे तौर पर लोगों के सामने होते है उसके बावजूद अगर कोई सच्चाई को कबूल नहीं करें और सच्चाई को छिपाने की चेष्टा करें तो यकीनन अल्लाह सब देखता जानता है।

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَمَا لَكُم مِّن دُونِ اللهِ مِن وَلِيٍّ وَلا نَصِيرٍ {116}

इसमें तो शक ही नहीं कि सारे आसमान व ज़मीन की हुकूमत ख़ुदा ही के लिए ख़ास है वही जिलाता है और मारता है और तुम लोगों का ख़ुदा के सिवा न कोई सरपरस्त है न मददगार (११६)

व्याख्या:- सृष्टि की हर प्रकृति परमाणिवक शक्ति द्वारा नियंत्रित होती है चाहे वो आकाश हो या पृथ्वी, मृत्यु हो या जन्म सब उन्हीं के द्वारा ही होती है। अल्लाह के अलावा इंसान का कोई दोस्त नहीं है। इंसान की आपस की दोस्ती भी अल्लाह के द्वारा ही पुरी होती है।

لَقَد تَّابَ اللهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالأَنصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِن بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيغُ قُلُوبُ فَرِيقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ بِهِمْ رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ {117}

अलबत्ता ख़ुदा ने नबी और उन मुहाजिरीन अन्सार पर बड़ा फज़्ल किया जिन्होंने तंगदस्ती के वक़्त रसूल का साथ दिया और वह भी उसके बाद कि क़रीब था कि उनमें से कुछ लोगों के दिल जगमगा जाएँ फिर अल्लाह ने उन पर फज़्ल किया इसमें शक नहीं कि वह उन लोगों पर पड़ा तरस खाने वाला मेहरबान है (११७)

व्याख्या:- सच्चाई बताने वाले पैगम्बर को कहीं न कहीं से मदद जरूर हासिल होती है कि वो लोगों को सच्चाई बयान कर सकें।

وَعَلَى الثَّلاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا حَتَّى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَن لا مَلْجَأَ مِنَ اللهِ إِلاَّ إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ {118}

और उन यमीमों पर जोयहाँ तक कि ज़मीन बावजूद उस वसअत के उन पर तंग हो गई और उनकी जानें उन पर तंग हो गई और उन लोगों ने समझ लिया कि ख़ुदा के सिवा और कहीं पनाह की जगह नहीं फिर ख़ुदा ने उनको तौबा की तौफीक दी ताकि वह रूजू करें बेशक ख़ुदा ही बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला मेहरबान है (११८)

व्याख्या:- मानव सभ्यता के इतिहास से पहले मानव जंगली जिन्दगी जीते थे और उनका जीवन और जीविका संघर्ष एक युद्ध के बराबर था। पृथ्वी उनके लिए एक तकलीफ दाह जीने का आश्रा थी इनके पास तन ढापने के लिए न तो कपड़े थे, न आग थी और न तो सर छुपाने की जगह। इंसान को प्रकृति ने तीन किस्म की जिनसी पहचान दी यानी तीन किस्म के इंसान मर्द, औरत और क्लीब। अल्लाह की करूणा से इंसान और उसके समाज में सभ्यता की रोशनी आई और इन्हें आराम से जीने की तमाम किस्म की सहुलियत नसीब हुई और ये सभ्यता की तरक्की आगे भी जारी है। अल्लाह ताला मेहरबानी और रहम करने वाला है।

पैगाम:- इंसान को ये ख्याल रखना चाहिए कि कुरान शरीफ की कोई भी आयत किसी विशेष इंसान के लिए नहीं उतरी और न ही किसी इतिहास के बुनियाद पर इसलिए इन आयतों को किसी इतिहास या किसी खास शख्स को सम्बोधित करना बेबुनियाद है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَكُونُوا مَعَ الصَّادِقِينَ {119}

ऐ ईमानदारों ख़ुदा से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ (११९)

व्याख्या:- ईमान वाले हमेशा सच्चाई का साथ देते है और झूठ के नतीजे से डरते है।

مَا كَانَ لأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ الأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ اللهِ وَلا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلا نَصَبٌ وَلا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللهِ وَلا يَطَؤُونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ الْكُفَّارَ وَلا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلاً إِلاَّ كُتِبَ لَهُم بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللهَ لا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ {120}

मदीने के रहने वालों और उनके गिर्दोनवाँ देहातियों को ये जायज़ न था कि रसूल ख़ुदा का साथ छोड़ दें और न ये कि रसूल की जान से बेपरवा होकर अपनी जानों के बचाने की फ़िक्र करें ये हुक्म उसी सब्ब से था कि उन को ख़ुदा की रूह में जो तकलीफ़ प्यास की या मेहनत या भूख की शिद्दत की पहुँचती है या ऐसी राह चलते है जो

कुफ़्फ़ार के ग़ैज़ ग़ज़ब का बाइस हो या किसी दुश्मन से कुछ ये लोग हासिल करते हैं तो बस उसके ऐवज़ में एक सभ्य काम लिख दिया जाएगा बेशक अल्लाह सभ्यी करने वालों का अज्र बरबाद नहीं करता है (१२०)

व्याख्या:- उदाहरण के तौर पर मदीना और उसके आस-पास के कुछ अनपढ़ और इंसानी तहजीब के असुलों के दायरे के बाहर के लोगों की दी जा सकती है। जो लोग घुस्सा, फसाद और दुश्मनी को अपने जीवन का हिस्सा बना लेते है उनके ख्यालात पर नेक और शांति वाले असुल नबी के जरिया दिये गये क्योंकि वो अंजान थे और बाद में सच्चाई को अपनाने का नेक नतीजा उन्हें मिला।

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {121}

और ये लोग थोड़ा या बहुत माल नहीं खर्च करते और किसी मैदान को नहीं क़तआ करते मगर फौरन उनके नाम लिख दिया जाता है ताकि अल्लाह उनकी कारगुज़ारियों का उन्हें अच्छे से अच्छा बदला अता फरमाए (१२१)

व्याख्या:- नेकी छोटी हो या बड़ा वो हमेशा समाज में अच्छा फल देती है और नेक काम करने वालों को बेहतरीन नतीजा मिलता है।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لِيَنفِرُوا كَافَّةً فَلَوْلَا نَفَرَ مِن كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَائِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ {122}

और ये भी मुनासिब नहीं कि मोमिनिन कुल के कुल निकल खड़े हों उनमें से हर सम्प्रदाय की एक जमाअत क्यों नहीं निकलती ताकि इल्मे दीन हासिल करे और जब अपनी क़ौम की तरफ पलट के आवे तो उनको डराए ताकि ये लोग डरें (१२२)

व्याख्या:- अंजान और अज्ञानियों के सामने झुण्ड बनाकर नेक लोग अगर उन्हें समझाये और सच्चाई की बात करें तो कम अकल लोग इस झुण्ड को देखकर डर जाएंगे इसलिए उन्हें चाहिए कि दिखावट न करके छोटे-छोटे गिरोह में कम अकल लोगों को जाकर समझाये नहीं तो अज्ञानियों को सच्चाई नसीब नहीं होगी और इसके जिम्मेदार होंगे ईमान वाले।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُم مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوا فِيكُمْ غِلْظَةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ {123}

ऐ इमानदारों कुफ्फार में से जो लोग तुम्हारे आस पास के है उन से लड़ो और चाहिए कि वह लोग तुम में करारापन महसूस करें और जान रखो कि बेशुबहा अल्लाह परहेज़गारों के साथ है (१२३)

व्याख्या:- नेक, परहेजगार, मोहब्बत और अमनो चैन चाहने वाले लोग अपने आस-पास रहने वाले गुनहगारों के ख्यालत से और उनके रहन-सहन के तरीकात से अपनी सच्चाई और अपने अच्छे असुलों के उदाहरण से लड़ाई करें और जरूर विश्वास रखें कि अल्लाह उनके साथ है।

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ فَمِنْهُم مَّن يَقُولُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَٰذِهِ إِيمَانًا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يَسْتَبْشِرُونَ {124}

और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उन मुनाफिक़ीन में से पूछता है कि भला इस सूरे ने तुममें से किसी का ईमान बढ़ा दिया तो जो लोग ईमान ला चुके है उनका तो इस सूरे ने ईमान बढ़ा दिया और वह वहा उसकी खुशियाँ मनाते है (१२४)

व्याख्या:- इंसानी समाज में अगर कोई सच्चाई (अविष्कार) साबित हो तो न मानने वाले सवाल उठाते रहते है सच्चाई साबित होने के बावजूद। ईमान वाले पवित्र लोगों के लिए कोई अविष्कार खुशी की बात है और वो अपने ईमान को और भी मजबूत कर लेते है।

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلَىٰ رِجْسِهِمْ وَمَاتُوا وَهُمْ كَافِرُونَ {125}

मगर जिन लोगों के दिल में बीमारी है तो उन खबासत पर इस सूरो ने एक खबासत और बढ़ा दी और ये लोग कुफ्र ही की हालत में मर गए (१२५)

व्याख्या:- और कु-संस्कार, नफरत, हषद, मगरूरियत ये सारे रोग जिसके दिमाग में होते है सच्चाई साबित होने के बाद उनका भ्रम टूट जाता है और उनके दिलो दिमाग पर और भी मनहुसियत छा जाती है और कुफ्र यानी न समझने की हालात में ही उनकी मृत्यु हो जाती है।

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ {126}

क्या वह लोग नहीं देखते कि हर साल एक मरतबा या दो मरतबा बला में मुबितला किए जाते है फिर भी न तो ये लोग तौबा ही करते है और न नसीहत ही मानते है (१२६)

व्याख्या:- ऐसे लोग क्या नहीं समझते कि इनकी जिन्दगी का हर पल बेचैनी और अशांति से घिरा हुआ रहता है चाहे वो एक बार हो या दो बार। ये सब होता है उनके कु-संस्कार और अयौगतिक ख्यालात के बदौलत। फिर भी वो सच्चाई के तरफ मुंह नहीं फेरते।

وَإِذَا مَا أُنزِلَتْ سُورَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ هَلْ يَرَاكُم مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبَهُم بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُونَ {127}

और जब कोई सूरा नाज़िल किया गया तो उसमें से एक की तरफ एक देखने लगा तुम को कोई देखता तो नहीं है फिर पलट जाते है अल्लाह ने उनके दिलों को पलट दिया है इस सबब से कि ये बिल्कुल नासमझ लोग है (१२७)

व्याख्या:- अगर कोई अच्छाई की बात उनके सामने करें तो ये एक-दूसरे को देखते रहते है और समझते है कि उनके इस गुनाह को किसी ने नहीं देखा। सच्चाई को दर-गुजर करके चले जाते है, ऐसे लोग मूर्ख है।

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَؤُوفٌ رَّحِيمٌ {128}

तुम्हारे पास एक ऐसे रसुल तशरीफ लाए है जो तुम्हारे नसल से है जिनको तुम्हारी तकलीफ की बात निहायत गिरा गुजरती है, जो तुम्हारे फायदे के बड़े ख्वाहिशमंद रहते है, ईमानदारों के साथ बड़े ही शफीक और मेहरबान है (१२८)

व्याख्या:- मानव की रूहानी तकलीफों को दूर करने के लिए मानव में से ही एक रसुल कूदरत भेजती है और रसुल इंसानी समाज और इंसानियत के लिए निहायत रहमत और फायदेमंद है।

فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ {129}

अगर इस पर भी ये लोग मुँह फेरें तो तुम कह दो कि मेरे लिए अल्लाह काफी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं मैंने उस पर भरोसा रखा है वही अर्श का मालिक है (१२९)

व्याख्या:- अगर रसुल की सच्चाई से कोई मुंह फेर ले तो रसुल अल्लाह की हकीकत समझा दें यानी अल्लाह के अलावा कुछ नहीं यानी तमाम कायनात अल्लाह के नूर से बनती है और उनकी ताकत से ही कायनात का हर काम होता है, महाकाश का मालिक वही है।

सूराः यूनुस

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान निहायत रहम वाला है
व्याख्याः- अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्षमाकारी है।

الر تِلْكَ آيَاتُ الكِتَابِ الحَكِيمِ {1}

ये आयतें उस किताब की है जो अज़ सरतापा हिकमत से (मलूउ) भरी है (१)
अलिफ़ लाम रा (१)
अलीफ-अल्लाह
लाम- ला इलाहा- नहीं कोई सिवाये अल्लाह के
रे- रायना- सच को इनकार न करने वाला
कुरान शरीफ की हर आयत वैज्ञानिक तौर पर साबित शुदा है और ये सुरा उसी का एक हिस्सा है।
पैगामः- कुरान शरीफ की हर आयत में प्राकृतिक, वैज्ञानिक रहस्य छुपा हुआ है और एक गुप्त सूत्र भी है जो मेरे (सिद्धार्थ चटर्जी) द्वारा ईश्वर ने हर आयत में बताया और इस सत्य से रायना यानी इनकार नहीं करना चाहिए।

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَا إِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ آمَنُوا أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ قَالَ الكَافِرُونَ إِنَّ هَذَا لَسَاحِرٌ مُبِينٌ {2}

क्या लोगों को इस बात से बड़ा ताज्जुब हुआ कि हमने उन्हीं लोगों में से एक आदमी के पास वही भेजी कि लोगों को डराओ और ईमानदारो को इसकी खुश खबरी सुना दो कि उनके लिए उनके परवरदिगार की बारगाह में बुलन्द दर्जे है कुफ्फार कहने लगे कि ये जादूगर है (२)
व्याख्याः- ये कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इंसानों में से ही किसी विशेष इंसान के दिमाग को इस्तेमाल करके अल्लाह यानी प्राकृति ने मानव और मानव सभ्यता को सच्चाई की पहचान देते है और जिस बात से मानव या इसकी सभ्यता को नुकसान पहुँचता है उस बात से डराते है। जिस बात से इंसान को शांति या लाभ प्राप्त होता है वो इस बात को समझाते है मगर जो अपने जिद में अंधे, मोह-माया में डूबे हुए और अहंकार में चूर है वो सत्य को स्वीकार नहीं करते (काफिर) और सत्य बताने वालों को जादूगर या तांत्रिक की उपाधि देते है।
पैगामः- मुझे (सिद्धार्थ चटर्जी) भी लोगों ने तांत्रिक कहा और ये भी कहा था कि मै लोगों को अपना रक्त पिलाता हूँ और रक्त से कुरान शरीफ भी लिखता हूँ। अल्लाह के हुक्म के अनुसार मैंने उन तमाम लोगों को माफ कर दिया जो मेरे विरूद्ध है वो मेरे दोस्त है और मै उनसे भी मोहब्बत करता हूँ क्योंकि उन लोगों में भी खुदा का नुर है और मेरे खुदा के मर्जी के अनुसार उन्होंने मुझपर और मेरे खुदा पर इलजाम लगाया।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى العَرْشِ يُدَبِّرُ الأَمْرَ مَا مِنْ شَفِيعٍ إِلَّا مِنْ بَعْدِ إِذْنِهِ ذَلِكُمُ اللهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ {3}

इसमें तो शक ही नहीं कि तुमरा परवरदिगार वही अल्लाह है जिसने सारे आसमान व ज़मीन को ६ दिन में पैदा किया फिर उसने अर्श को बुलन्द किया वही हर काम का इन्तज़ाम करता है उसके सामने किसी का सिफारिशी नहीं मगर उसकी इजाज़त के बाद वही अल्लाह तो तुम्हारा परवरदिगार है तो उसी की इबादत करो तो क्या तुम अब भी ग़ौर नही करते (३)
व्याख्याः- बिग बैंग की थ्योरी के अनुसार सूरज से निकला हुआ गैस को गोला से लेकर जमीन और ओजन लेयर बनने तक (आसमान) के समय को छः हिस्सों में बाटा जा सकता है। अल्लाह की शक्ति समस्त सृष्टि की बुनियाद

है और इस शक्ति के द्वारा ही सृष्टि के सारे किया-प्रकिया संघटित होते है। इस शक्ति के बगैर कुछ भी संभव नही। इस शक्ति की इबादत करनी चाहिए वही सब का रब है।

पैगाम:- ये प्रमाण हो चुका है कि परमाणविक शक्ति द्वारा ही सृष्टि का हर काम पुरा होता है और इसके बाहर कोई जा नहीं सकता। इस कानून के द्वारा कुछ इंसान सच्चाई को समझते है और कुछ उसे इनकार करते है। इस तरह इंसानी समाज में नेकी के साथ बदी रखकर इंसान के जीवन और उसके समाज को मुखतलीफ और रंगीन बनाया उदाहरण के तौर पर बदबू अगर न होती तो खुशबु का अस्तीत्व ही नहीं होता। हर इंसान का रंगरूप, पसंद-न पसंद अलग-अलग होती है। इस बात पर गौर फरमाने से ही अल्लाह का अस्तीत्व जो हर जर्रे में उपस्थित है वो हर इंसान को साफ-साफ नजर आ जाएगा।

सवाल १: जब पलक झपकाते ही अल्लाह सब कुछ कर सकते है तो दुनिया बनाने के लिये उन्हें छ: दिनों की क्या जरूरत है?

२: जब दिनों की बात आती है तो यकीनन पृथ्वी श्रृष्टि से पहले दिनों की गिनती होती थी?

३: छ: दिनों में दुनिया पैदा करने के बाद सातवें दिन अल्लाह ने आराम किया। मेहनत में थकान किसे होती है जिसका जिस्म होता है, क्या अल्लाह का जिस्म है?

इस आयत में छ: दिन एक चिह्न है जिसमें वैज्ञानिक प्रमाण मौजूद है और ये कोई अयौगतिक बात नहीं है।

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا وَعْدَ اللَّهِ حَقًّا إِنَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شَرَابٌ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ {4}

तुम सबको उसी की तरफ लौटना है अल्लाह का वायदा सच्चा है वही यकीनन मख़लूक को पहली मरतबा पैदा करता है फिर वही दुबारा जिन्दा करेगा ताकि जिन लोगों ने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उनको इन्साफ के साथ जज़ाए ख़ैर अता फरमाएगा और जिन लोगों ने कुफ्र एख़्तियार किया उन के लिए उनके कुफ्र की सज़ा में पीने को खौलता हुआ पानी और दर्दनाक अज़ाब होगा (४)

व्याख्या:- हर प्राणी को मौत का मजा चखना है और सृष्टि की हर वस्तु जो प्रकृति की फसल है वो प्रकृति में ही समा जाएगी। अंतिम सत्य है मृत्यु जो अल्लाह यानी कूदरत का वादा है और अल्लाह ही सृष्टि और हर परिवर्तन का मालिक है (यानी परमाणिवक परिवर्तन यानी एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तित होना) और जो अच्छे काम करेगा उन्हें अपने कर्मफल यानी शांति प्राप्त होगी और पापियों के लिए अशांति की आग की गरमी और कष्ट उनके पाप फल के बदले में।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَّرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ {5}

वही वह है जिसने आफ़ताब को चमकदार और महताब को रौशन बनाया और उसकी मंज़िलें मुक़र्रर की ताकि तुम लोग बरसों की गिनती और हिसाब मालूम करो ख़ुदा ने उसे हिकमत व मसलहत से बनाया है वह आयतों का वाक़िफ़कार लोगों के लिए तफ़सीलदार बयान करता है (५)

व्याख्या:- दुनिया की सृष्टि की बुनियाद है सूरज और सूरज की रोशनी से चांद को रोशन किया। सूरज और चांद की गति को मानव सभ्यता के लिए दिन-रात और साल की गिनती का मुकाम बनाया। ये सारी सृष्टि प्राकृतिक है जो अल्लाह ने इंसानों और उसकी सभ्यता के लिए की है। अल्लाह इसका ज्ञान उसे देते है जिसे वो चाहते है।

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ {6}

इसमें ज़रा भी शक नहीं कि रात दिन के उलट फेर में और जो कुछ ख़ुदा ने आसमानों और ज़मीन में बनाया है परहेज़गारों के वास्ते बहुतेरी निशानियाँ हैं (६)

व्याख्या:- दुनिया अपने आप पर घूमते हुए सूरज के चारों तरफ घूम रही है और इस घूमने की वजह से दुनिया का जो हिस्सा सूरज के सामने होता है वो रोशन होता है यानी दिन और ठीक उसके पीछे वाले हिस्से में अंधेरा यानी

रात होती है और ये दुनिया का अपने आप पर घूमते हुए सूरज का चक्र लगाना सृष्टि का एक नियम है और ये नियम अल्लाह की शक्ति से ही मुकम्मिल होता है। दुनिया की जमीन और उसके उपर हवा की तह यानी आसमान ये भी सृष्टि का एक हिस्सा है और समझदारों के लिए ये एक निशानी है।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوا بِهَا وَالَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَافِلُونَ {7}

इसमें भी शक नहीं कि जिन लोगों को हमारी हुज़ूरी का ठिकाना नहीं और दुनिया की ज़िन्दगी से निहाल हो गए और उसी पर चैन से बैठे हैं और जो लोग हमारी आयतों से ग़ाफिल है (७)

व्याख्या:- अल्लाह की महा शक्ति पर जिसको यकीन नहीं और ऐसे इंसान जो गुनाह और ऐशो आराम में अपनी जिन्दगी व्यतीत करना पसंद करते है और अपने कामों पर खुश होते है वही लोग अल्लाह के नियमों और उसके वजूद को दरगुजर करते है।

पैगाम:- पवित्र आत्मा मृत्यु के बाद परम आत्मा से मिल जाती है और इस बात का एक विशेष वैज्ञानिक तथ्य है -- न्यूट्रीनो यानी गॉड पार्टिकल के अविष्कार के बाद और इसके चारित्रिक गुणों के अनुसार हर समय हमारे मस्तिक्ष में, इसके द्वारा ही तमाम किस्म की सोचें उत्पन्न होती है और यही सोच जब पवित्र और शांतिकामी होती है तब ये एक पवित्र शक्ति की श्रृष्टि करती है और वही पवित्र शक्ति जब प्रकृति की पवित्र शक्ति के साथ जा मिलती है तो आत्मा का परमात्मा का मिलन होता है और इस आयत के अनुसार अल्लाह से मिलन होता है।

أُولَئِكَ مَأْوَاهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ {8}

यही वह लोग हैं जिनका ठिकाना उनकी करतूत की बदौलत जहन्नुम है (८)

व्याख्या:- उनके पाप फल उनके जीवन को अशांति के नर्क यानी बदसकुनी के दोजक में ढकेल देते है।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ تَجْرِي مِن تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ {9}

बेशक जिन लोगों ने इमान कुबूल किया और अच्छे अच्छे काम किए उन्हें उनका परवरदिगार उनके इमान के सबब से मंज़िल मक़सूद तक पहुँचा देगा कि आराम व आसाइश के बाग़ों में और उन के नीचे नहरें जारी होगी उन बाग़ों में उन लोगों का बस ये कौल होगा ऐ अल्लाह पाक व पाकीज़ा है (९)

व्याख्या:- जो लोग सत्य और प्रेम पर ईमान लाये और नेकी, परहेजगारी को अपने अमाल के जरिए अदा करते है उनके लिए सुकुन और सुख-शांति की जन्नत और उनका जीवन नेक रिश्तेदारों से एक खुबसुरत बाग की शकल लेगी जिसमें नदी की ठंडक की तरह उनके जीवन में सुकुन की ठंडक पहुँचेगी।

पैगाम:- इस आयत में ईमान वाले की मिसाल बयान करते हुए अल्लाह की आयत में बताया गया ''कि उनका रब'' जब रब सबका एक है तो उनका और मेरा रब क्यों? कुरान शरीफ किसी विशेष उम्मत के लिए नहीं है ये तमाम इंसानों और इंसानी सभ्यता के लिए है। दुनिया के हर कोने के इंसानों ने अल्लाह को अलग-अलग नामों से पुकारा है और ये आयत ये प्रमाण करती है कि उस सर्वशक्तिमान को किसी भी नाम से पुकारा जा सकता है।

دَعْوَاهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ وَآخِرُ دَعْوَاهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ {10}

और उनमें उनकी बाहमी ख़ैरसलाही सलाम से होगी और उनका आख़िरी क़ौल ये होगा कि सब तारीफ अल्लाह ही को सज़ावार है जो सारे जहाँन का पालने वाला है (१०)

व्याख्या:- जर्रे-जर्रे में अल्लाह का नुर होने की वजह से दुनिया की हर चीज की मलकियत अल्लाह की शक्ति पर जाती है। कूदरत की आखिरी बात ये है यानी आखिरी रहमत यानी इंसान को अशरफुल मखलुकात बनाना। इसलिए इस लिहाज से सारी तारीफ उसी को पहुँचती है जो सारे जहानों का रब है।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُم بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ فَنَذَرُ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ {11}

और जिस तरह लोग अपनी भलाई के लिए जल्दी कर बैठे है उसी तरह अगर अल्लाह उनकी शरारतों की सज़ा में बुराई में जल्दी कर बैठता है तो उनकी मौत उनके पास कब की आ चुकी होती मगर हम तो उन लोगों को जिन्हें

हमारी हुज़ूरी का खटका नहीं छोड़ देते है कि वह अपनी सरकशी में आप सरगि़रदा रहें (११)

व्याख्या:- इंसान का विवेक बड़ा ही ना सबरा है अपना फायदा हासिल करने के लिए जल्दी करते है और बर्दाश्त करना उन्हे गवारा नहीं है। जो लोग सब्र नहीं करते और अल्लाह पर भरोसा नहीं करते वही भटके हुए में से है और उन लोगों को अल्लाह से मिलने की तमन्ना नहीं होती।

وَإِذَا مَسَّ الإِنسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَى ضُرٍّ مَّسَّهُ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ {12}

और इन्सान को जब कोई नुकसान छू भी गया तो अपने पहलू पर या बैठा हो या खड़ा हम को पुकारता है फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ को दूर कर देते है तो ऐसा खिसक जाता है जैसे उसने तकलीफ के लिए जो उसको पहुँचती थी हमको पुकारा ही न था जो लोग ज़्यादती करते है उनकी कारस्तानियाँ यूँ ही उन्हें अच्छी कर दिखाई गई है (१२)

व्याख्या:- जब इंसान को तकलीफ होती है तब वो अल्लाह को याद करता है जमीन पर लेट कर, बैठ कर और सो कर। तकलीफ से छुटकारा पाने के बाद ये अपनी सारी नेकियां छोड़ देते है और ऐशो-आराम में हद से गुजर जाते है यही लोग अपना अमाल नामा अपने हाथों से लिखते है।

पैगाम:- दुनिया में सुख के साथ दु:ख को जोड़कर अल्लाह ने इंसानी जिन्दगी को रंग-बिरंगी बनाई। खुदगर्जी बिल्कुल गुनाह वाली फितरत है जो इंसानी समाज को नुकसान पहुँचाती है।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونَ مِن قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ {13}

और तुमसे पहली उम्मत वालों को जब उन्होंने शरारत की तो हम ने उन्हें ज़रुर हलाक कर डाला हालाँकि उनके रसूल वाजेए व रौशन मोजि़ज़ात लेकर आ चुके थे और वह लोग ईमान न लाए हम गुनेहगार लोगों की यूँ ही सज़ा किया करते है (१३)

व्याख्या:- हर शक्तिशाली अत्याचारी ने पैगम्बरों की हिदायत के बावजूद गुनाह और जुल्म किया और करते रहे और सच्चाई पर यकीन नहीं रखा और अल्लाह का आजाब भुगते।

ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلَائِفَ فِي الْأَرْضِ مِن بَعْدِهِمْ لِنَنظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ {14}

फिर हमने उनके बाद तुमको ज़मीन में जानशीन बनाया ताकि हम देखें कि तुम किस तरह काम करते हो (१४)

व्याख्या:- सभ्यता के इतिहास में जब-जब गुनाह और झुठ सच्चाई और पवित्रता पर हावी होता है तब अल्लाह इंसानी समाज में गुनाहों को कम करने के लिए इंसानों में से ही किसी विशेष इंसान से अपना पैगाम पहुँचाते है। इनके मानने वालों को गुनाह वाले समाज से मुक्ति दिलाते है और इंसानी समाज को फिर से पाक व साफ करते है।

وَإِذَا تُتْلَى عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا ائْتِ بِقُرْآنٍ غَيْرِ هَٰذَا أَوْ بَدِّلْهُ قُلْ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أُبَدِّلَهُ مِن تِلْقَاءِ نَفْسِي إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ {15}

और जब उन लोगों के सामने हमारी रौशन आयतें पढ़ी जाती है तो जिन लोगों को हमारी हुज़ूरी का खटका नहीं है वह कहते है कि हमारे सामने इसके अलावा कोई दूसरा कुरान लाओ या उसका रद्दो बदल कर डालो तुम कह दो कि मुझे ये एख़्तेयार नहीं कि मै उसे अपने जी से बदल डालूँ मै तो बस उसी का पाबन्द हूँ जो मेरी तरफ वही की गई है मै तो अगर अपने परवरदिगार की नाफरमानी करु तो बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ (१५)

व्याख्या:- सच्चाई और अल्लाह के दिये हुए प्राकृतिक नियम जब लोगों के सामने प्रमाणित होते है तब पुराने नियमों को न छोड़ने वालों और सच्चाई को नहीं समझने वाले लोग कहते है कि उनकी मर्जी के अनुसार कोई नये नियम लाये जाए या सच्चाई को बदला जाए। सच बताने वालों के लिए ये असंभव है कि वो अपनी तरफ से प्रकृति नियम बदल दें अगर वो ऐसा करने की चेष्टा करते है तो वो खुद सच्चाई से गुमराह हो जाएंगे। सत्य जानने के उपरांत अगर कोई इंसान उसे त्याग दे तो वो गुनाहगार होगा और जबरदस्त बेचैनी और बदसुकुनी का आजाब उसपर होगा।

قُل لَّوْ شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُهُ عَلَيْكُمْ وَلَا أَدْرَاكُم بِهِ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّن قَبْلِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ {16}

कह दो कि अल्लाह चाहता तो मै न तुम्हारे सामने इसको पढ़ता और न वह तुम्हें इससे आगाह करता क्योंकि मै तो तुमने इससे पहले मुद्दतों रह चुका हूँ (१६)

व्याख्या:- सच्चाई बताने वाले आम लोगों की तरह ही होते है और लोगों को ये सोचना चाहिए कि आम लोगों के दरमियान से ही कोई विशेष इंसान के जहन में से ही कोई विशेष लाभदायक बात अगर निकले तो वो यकीनन कूदरत यानी अल्लाह ही की तरफ से है।

पैगाम:- रसुल-ए-पाक हजरत मोहम्मद के मस्तिश्क को इस्तेमाल करके अल्लाह ताला ने मानव और मानव समाज को पवित्र पुस्तक कुरान शरीफ का ज्ञान तौफे में दीया ताकि उन्हें सच्चाई का अनुभव हो और वो सुख शांति से अपना जीवन व्यतीत करें।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُونَ {17}

तो क्या तुम नही समझते तो जो शख़्स अल्लाह पर झूठ बोहतान बाँधे या उसकी आयतो को झुठलाए उससे बढ़ कर और ज़ालिम कौन होगा इसमें शक नहीं कि गुनाहगार कामयाब नहीं हुआ करते (१७)

व्याख्या:- अल्लाह के नियमों को यानी प्रकृति नियमों को झुठ से गुमराह करने वाले इंसान को अपने झुठे असुलों के जरिया गुमराह करने वाला इंसान महापापी होता है। ये न तो अपने उपर जुल्म करते है बल्कि समस्त मानवता पर जुल्म करते है। इन्हें किसी भी सूरत में बरकत नहीं होगी और न ही ये लोग शांति से जी सकेंगे।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَٰؤُلَاءِ شُفَعَاؤُنَا عِندَ اللَّهِ قُلْ أَتُنَبِّئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَاوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ {18}

या लोग अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की परसतिश करते है जो न उनको नुकसान ही पहुँचा सकती है न नफा और कहते है कि अल्लाह के यहाँ यही लोग हमारे सिफारिशी होगे तुम कहो तो क्या तुम खुदा को ऐसी चीज़ की खबर देते हो जिसको वह न तो आसमानों में पाता है और न ज़मीन में ये लोग जिस चीज़ को उसका शरीक बनाते है (१८)

व्याख्या:- इनके अलावा ऐसे लोग भी है जो ऐसे नियमों पर चलते है जिसमें न कोई लाभ है और न कोई नुकसान (कु-संस्कार) और कहते है कि इन नियमों के द्वारा वो अल्लाह के करीब पहुंच जाएंगे। ऐसे नियमों की सच्चाई, आसमान और जमीन की सच्चाई वो पाक परवरदिगार जो सब जानता है।

पैगाम:- इस आयत को अगर सरसरी तौर पर देखा जाए तो ये आयत इंसान की इबादत के लक्ष्य का इशारा करती है, इबादत का मुकाम कुछ भी हो चाहे वो बुत या इमारत, ये तो सिर्फ इंसान के मन के व्यहम को सुकुन देती है। इंसान को जो भी हासिल होता है वो कूदरत से हासिल होता है और ये भी कूदरत का एक हिस्सा है। गैर मुनतकी (अयौगतिक) और कु-संस्कार वाली बातें इंसान और इंसानी समाज को कुछ भी लाभ नहीं देती है। इस आयत की गहराई इस बात की निशानदेही भी करती है कि इंसान के वो सारे अमाल जो नुकसानदेह हो या किसी को कोई फायदा न दें या कूदरत को नुकसान पहुँचाये। हर काम का नतीजा नेक होना चाहिए और कूदरत इस नतीजे को ही इबादत कहती है। अदृश्य खुदा के नाम पर अगर कोई अयौगतिक और कुसंस्कार वाली आचार-विचार का पालन करें तो ये शिर्क है यानी ये इंसानी समाज को नुकसान पहुँचाते है।

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيمَا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ {19}

सब लोग तोएक ही उम्मत थे और अगर तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से एक बात पहले न हो चुकी होती जिसमें ये लोग एख़्तिलाफ कर रहे है उसका फैसला उनके दरम्यिान कर दिया गया होता (१९)

व्याख्या:- अल्लाह उसकी सृष्टि और इंसान के बीच कोई भेदभाव नहीं यानी इंसान नाम की एक उम्मत की अल्लाह ने सृष्टि की और इंसान को दिमाग दिया और इसी दिमाग के जरिए ही वो अलग-अलग ख्यालात का मालिक बना

और आपस में मतभेद की सृष्टि की जैसा कि अमीर-गरीब, गोरा-काला। इसके उपरांत मजहब के नाम पर प्राकृतिक इंसानी नियमों के खिलाफ अलग-अलग मजहबी नियम और सम्प्रदाय की सृष्टि की। अगर कूदरत यानी अल्लाह की तरफ से प्रकृति नियम साबित नहीं होते तो इंसान आपस में जिस इख्तिलाफ की बुनियाद डाली थी उसमें वो बरबाद हो जाते।

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ {20}

और कहते है कि उस पैगम्बर पर कोई मोजिज़ा क्यों नहीं नाज़िल किया गया तो तुम कह दो कि गैब तो सिर्फ अल्लाह के वास्ते खास है तो तुम भी इन्तज़ार करो और तुम्हारे साथ मै यक़ीनन इन्तज़ार करने वालों में हूँ (२०)

व्याख्या:- लोग ये समझते है कि अल्लाह की तरफ से कोई निशानी या अचम्बा क्यों नहीं होता या अल्लाह गैब लोगों के सामने जाहिर क्यों नहीं होता और ये उम्मीद सच्चाई बताने वाले रसुलों से लोग करते है और उन्हें बात-बात पर मोइजात (चमत्कार) न दिखाने पर ताना देते है। लोग ये जान ले कि गैब और अल्लाह के राज सिर्फ अल्लाह ही जानता है। लोग वक्त का इंतजार करे और वक्त आने पर सच्चाई साबित हो जाएगी।

وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُم مَّكْرٌ فِي آيَاتِنَا قُلِ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا تَمْكُرُونَ {21}

और लोगों को जो तकलीफ पहुँची उसके बाद जब हमने अपनी रहमत का जाएका चखा दिया तो यकायक उन लोगों से हमारी आयतों में हीले बाज़ी शुरू कर दी तुम कह दो कि तद्बीर में अल्लाह सब से ज़्यादा तेज़ है तुम जो कुछ मक्कारी करते हो वह हमारे भेजे हुए लिखते जाते है (२१)

व्याख्या:- सच्चाई को गुमराह करने के लिए तमाम किस्म की चालें गुनेहगार इस्तेमाल करते है मगर अल्लाह की चाल या सच्चाई की बुलंदी उन सारी साजिशों को नाकामयाब कर देती है। इन सारी बुरी साजिशों का नतीजा अल्लाह की कूदरत (फरिश्ते) में लिखी जाती है। समय के चक्रव्यूह में या समय के दायरे में ये सारी साजिशें मुंह के बल गिर पड़ती है।

पैगाम:- धार्मिक पुस्तकों की आदर्शों का गलत मतलब निकालना या किसी विशेष मकसद से इसकी सच्चाई को गुमराह करने की कोशिश करना गुनाह है और समय उसे कभी न कभी गलत साबित कर देता है।

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّى إِذَا كُنتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِم بِرِيحٍ طَيِّبَةٍ وَفَرِحُوا بِهَا جَاءَتْهَا رِيحٌ عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِن كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ لَئِنْ أَنجَيْتَنَا مِنْ هَٰذِهِ لَنَكُونَنَّ مِنَ الشَّاكِرِينَ {22}

वह वही खुदा है जो तुम्हें खुश्की और दरिया में सैर कराता फिरता है यहाँ तक कि जब तुम कश्तियों पर सवार होते हो और वह उन लोगों को बाद मुवाफिक़ की मदद से लेकर चली और लोग उस से खुश हुए कश्ती पर हवा का एक झोंका आ पड़ा और हर तरफ से उस पर लहरें आ रही है और उन लोगों ने समझ लिया कि अब घिर गए तब अपने अक़ीदे को उसके वास्ते निरा खरा करके अल्लाह से दुआएँ मागँने लगते है कि अगर तूने इस से हमें नजात दी तो हम ज़रुर बड़े शुक्र गुज़ार होंगे (२२)

व्याख्या:- अल्लाह ताला ने इंसानी जिन्दगी को सुख और दु:ख के साथ संवारा यानी खुशकी और तरी। और मानव जीवन को एक नाव की तरह बनाया जिस तरह नाव लोगों को लेकर दरिया में चलती और जब मवाफिक हवा आती है तो खुश होते है मतलब मानव जीवन में जब सुख आता है तो दु:ख को भुला कर अपने खुशी में मगन रहते है। और जब दरिया में चलती हुई नाव पर तुफान आता है और चारों तरफ से पानी की लहरे इसे डुबाने की कोशिश करती है यानी मानव जीवन में जब दु:ख आता है और चारों तरफ से मुसीबतें उसे घेर लेती है तब वो अल्लाह को याद करने लगता है और कहता है कि अल्लाह उसे मुक्ति दे और जब उसे मुक्ति मिल जाती है तो वो अल्लाह का शुक्रगुजार बंदा बन जाता है।

فَلَمَّا أَنجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلَى أَنفُسِكُم مَّتَاعَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُم بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ {23}

फिर जब अल्लाह ने उन्हें नजात दी तो वह लोग ज़मीन पर फौरन नाहक़ सरकशी करने लगते है तो तुम्हारी ही जान पर है दुनिया की ज़िन्दगी का फायदा है फिर आख़िर हमारी तरफ तुमको लौटकर आना है तो हम तुमको जो कुछ करते थे बता देगे (२३)

व्याख्या:- मुसीबत में पड़े हुए इंसान को अल्लाह जब सुख-शांति प्रदान करते है तब उसकी उत्वाकांक्षा उसे कभी-कभी बहका देती है और जमीन में यानी इंसानी समाज में रहते हुए वो अल्लाह के नियमों का विरूद्ध करते है तो इंसान ये सुन ले अल्लाह के नियमों का विरूद्ध करना खुद अपने आप पर जुल्म उठाना है। दुनिया की मोह-माया में उलझ कर और पाप कर्मों में अपने आप को नियुक्त करना और इसका नतीजा भुगतना ऐसे लोगों की किस्मत होती है। मानव जमीन से पैदा होता है और मृत्यु के बाद जमीन में ही फना हो जाता है। बीच का सफर अगर सही हो तो सुकुन की मौत मिलेगी और अगर सफर गलत हो तो अशांति की जिन्दगी और मौत मिलेगी। ये प्रकृति नियम हर इंसान को पता होता है।

पैगाम:- आयत नं २२ में अगर दरिया के नांव की बात होती तो आयत नं २३ में मनुष्य के कर्मफल की बात नहीं की जाती। दरिया की नांव से निजात पाने के बाद लोग क्यों जमीन में सरकशी करेंगे? आयत नं २३ से साबित होता है कि आयत नं २२ में बताई गई नांव, दरिया, खुशकी, तुफान और फायदेमंद हवा ये सारी बातें इंसानी जिन्दगी और उसके कर्मफल की निशानदेही करती है।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّىٰ إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَادِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا كَأَن لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ كَذَٰلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ {24}

दुनियावी ज़िदगी की मसल तो बस पानी की सी है कि हमने उसको आसमान से बरसाया फिर ज़मीन के साग पात जिसको लोग और चौपाए खा जाते है यहाँ तक कि जब ज़मीन ने अपना बनाओ सिंगार कर लिया और आरास्ता हो गई और खेत वालों ने समझ लिया कि अब वह उस पर यक़ीनन क़ाबू पा गए यकायक हमारा हुक्म व अज़ाब रात या दिन को आ पहुँचा तो हमने उस खेत को ऐसा साफ कटा हुआ बना दिया कि गोया कुल उसमें कुछ था ही नहीं जो लोग ग़ौर व फिक्र करते है उनके वास्ते हम आयतों को यूँ तफसीलदार बयान करते है (२४)

व्याख्या:- इस आयत में मानव जीवन का उदाहरण है जैसे अल्लाह ने आकाश से पानी (रहमत) उतारा। जमीन के लिए पानी और सूरज की किरण और इन दिनों के मिलन से जमीन आबाद हुई और यही है जीवन की बुनियाद और इस बुनियाद में हर प्राणी की जरूरत का सारा सामान मौजूद है। जमीन ने अपनी रौनक पकड़ ली यानी बिग बैंग की थ्योरी के अनुसार सूरज से निकली हुई दुनिया एक गैस का गोला थी और उसके बाद हाइड्रोजन-आक्सीजन मिलकर पानी बना यानी आसमान से उतरा हुआ पानी और इसी पानी से दुनिया की हर चीज आबाद हुई यहां तक कि मनुष्य भी और इंसान को युग-युग से आधुनिक बनाता गया। इस तरह प्रकृति ने इंसान को इतना आधुनिक बनाया की आज उसके पास अपने तरह के इंसान (क्लोन) बनाने की सुविधा या तरकीब मौजूद है। इंसान को कूदरत की हर खुशी मिली है और इसे दिमाग देकर परिपूर्ण किया। सच्चे ज्ञान से रोशन किया, सुकुन से जीने की तरकीब बताई मजहबी किताबों के द्वारा। अल्लाह की रहमत रात-दिन यानी इंसानी सुख-दु:ख और तकलीफें भी इंसान को मिलती रही। किस तरह इंसान को तकलीफो से निजात मिले जैसे कि जंगली जिन्दगी जीने वाले इंसानों को तहजीब के दायरें में लाया गया (एक वक्त था जब इंसान कच्चा मांस और इंसानों का मांस भी खाता था) और बिखरे हुए इंसान को मानव बंधन में यानी प्रेम, मानवता और भाईचारे में बांध दिया जिसे इंसान सभ्य समाज कहते है और ये इतनी नजदीक आ गई है कि आज दुनिया के हर कोने के इंसान एक-दूसरे को जानते है और अल्लाह ने

इंसानी वजूद को इतनी तरक्की दी कि उसकी जंगली जिन्दगी का नामों निशान भी नहीं रहा और अल्लाह इस तरह अपना प्राकृतिक यानी विश्व रूप बयान करते है और ज्ञानी इसे समझते है।

पैगाम:- दुनिया में आज भी जंगली जिन्दगी जीने वाले लोग मौजूद है और अल्लाह ने इसे मिशाल के तौर पर रखा है ताकि इंसान अल्लाह की दी हुई रहमत (आसमान से उतारा) का एहसास कर सके।

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ {25}

और अल्लाह तो आराम के घर की तरफ बुलाता है और जिसको चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत करता है (२५)

व्याख्या:- ये सारी सहुलियत देकर अल्लाह इंसान को सच्चाई, परहेजगारी, ईमानदारी, मोहब्बत वाला दिल और सुकुन वाला समाज यानी सलामती की तरफ बुलाते है यही इंसान की सीधी और सच्ची राह है और इंसान को दिमाग देकर इस राह पर चलने की ताकत दी।

لِّلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {26}

जिन लोगों ने दुनिया में भलाई की उनके लिए भलाई है और कुछ बढ़कर और न उनके चेहरों पर कालिक लगी हुयी होगी और उन्हें ज़िल्लत होगी !यही लोग जन्नती है कि उसमें हमेशा रहा सहा करेंगे (२६)

व्याख्या:- जो इंसान सच्ची राह को इख्तियार करेगा उसका जीवन दूसरे लोगों के लिए एक मिसाल होगा यानी उसके चेहरे से उनके कर्मों का फल साफ दिखाई देगा और इन्हीं लोगों को सुकुन की जन्नत मिलेगी और वो उसमें रहेंगे।

وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ مَّا لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ كَأَنَّمَا أُغْشِيَتْ وُجُوهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ اللَّيْلِ مُظْلِمًا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ {27}

और जिन लोगों ने बुरे काम किए है तो गुनाह की सज़ा उसके बराबर है और उन पर रुसवाई छाई होगी अल्लाह से उनका कोई बचाने वाला न होगा गोया उनके चेहरे शबों यजूर के टुकड़े से ढक दिए गए है यही लोग जहन्नुमी है कि ये उसमें हमेशा रहेंगे (२७)

व्याख्या:- गुनेहगार का ठीकाना दोजख है यानी बदसुकुनी की जिन्दगी और उनके चेहरों से उनके कर्मफल साफ नजर आयेंगे यानी तकलीफों के अंधेरे (रात का टुकड़ा) से उनकी जिन्दगी घिर जाएगी।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنتُمْ وَشُرَكَاؤُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاؤُهُم مَّا كُنتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ {28}

जिस दिन सब को इकट्ठा करेंगे-फिर मुशरेकीन से कहेंगे कि तुम और तुम्हारे शरीक ज़रा अपनी जगह ठहरो फिर हम वाहम उनमें फूट डाल देगें और उनके शरीक उनसे कहेंगे कि तुम तो हमारी परसतिश करते न थे (२८)

व्याख्या:- गुनेहगारों को वो दिन याद करना चाहिए जिस दिन सच्चाई की रोशनी से झुठ गलत साबित होगा और न मानने वाला हर कोई अपने-अपने असुलों पर जबरदस्ती टिकने की कोशिश करेंगे और कूदरत यानी अल्लाह की मर्जी से झुठे असुल आपस में ही टुकड़े-टुकड़े होकर लड़ मरेंगे और इन झुठे असुलों पर रहने वाले लोग अलग-अलग फिरकों में बट जाएंगे और हर कोई एक-दूसरे को भला-बुरा कहेगा। अपने सम्प्रदाय की तादद बढ़ाने के लिए तमाम किस्म के झुठे बहाने, साजिश और तरकीबें अपनाएंगे।

पैगाम:- अल्लाह के दरबार में न इंसाफी नहीं है। अगर किसी विशेष दिन में अल्लाह के इंसान का दरबार बैठेगा जिस तरह के लोग समझते है उस हिसाब से कयामत के दिन से हजार साल पहले जिसकी मृत्यु हुई होगी उसको हिसाब-किताब के लिए इंतजार करना पड़ेगा और जो कयामत से एक घंटा पहले मरा तो उसका इंसाफ फौरन हो जाएगा। याद रखें अल्लाह के अदोलो इंसाफ का तराजू हर पल इंसान के साथ है, प्रलय या कयामत नाम का कोई विशेष दिन कब आएगा इसका किसी को भी पता नहीं, मगर कभी न कभी इसका निजाम जरूर बदलेगा।

فَكَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِن كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغَافِلِينَ {29}

हमारे और तुम्हारे दरमियान गवाही के वास्ते अल्लाह ही काफी है हम को तुम्हारी परसतिश की ख़बर ही न थी (२९)

व्याख्या:- नेकी और बदी के दरमियान अल्लाह ताला और उसकी कूदरत सबसे बड़ा साक्षी है और कोई भी ये बात नही कह सकता कि अल्लाह ताला ने उसे सच्चाई की रोशनी से रोशन न किया हो।

هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ {30}

वहाँ हर शख़्स जो कुछ जिसने पहले किया है जाँच लेगा और वह सब के सब अपने सच्चे मालिक अल्लाह की बारगाह में लौटकर लाए जाएँगे और जो कुछ इफ़्तेरा परदाज़िया करते थे सब उनके पास से चल चंपत हो जाएगे (३०)

व्याख्या:- इंसान के अमाल का नतीजा वो खुद अपनी अंतर्आत्मा के द्वारा जांच सकता है और ये इसकी जिम्मेदारी है। और जब वो सच्चाई को समझ ले तो उसकी जिम्मेदारी है कि वो उसे अपनी नसल में प्रचालित करें और वो ये जान ले कि हर इंसान को मौत के बाद कूदरत में ही विलीन हो जाना है। न ही उसके साथ धन-दौलत जाती है और न ही उसकी कोई चाहत। इंसान जीते-जी जो सपने और चाहते रखते थे वो सब फना होने के बाद गुम हो जाएंगी।

قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَن يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ {31}

ज़रा पूछो तो कि तुम्हें आसमान व ज़मीन से कौन रोज़ी देता है या कान और आँखों का कौन मालिक है और कौन शख़्स मुर्दे से ज़िन्दा को निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दे को निकालता है और हर अम्र का बन्दोबस्त कौन करता है तो फौरन बोल उठेंगे कि अल्लाह तुम कहो तो क्या तुम इस पर भी नहीं डरते हो (३१)

व्याख्या:- लोग ये समझ ले कि इंसान की जरूरत का सारा समान जो वो इस्तेमाल करते है वो सारे उसे प्रकृति (आसमान और जमीन) से मिलती है। इंसान की आंख, कान या सारे नब्स कूदरत के इख्तियार में होते है और कूदरत ही यानी अल्लाह मुर्दा जमीर (गुनहगार) वाले इंसान को मुर्दा (गुनाह) से ईमान वाला (जिन्दा) करते है या अज्ञानी को ज्ञान देकर जिन्दा करते है या मृत्यु के बाद मनुष्य के जिस्म के सारे जर्रे (एटम) से दूसरी जान की सृष्टि करते है या मनुष्य को गैब (मौत) का इल्म देते है जिसे लोग अविष्कार कहते है। दुनिया की हर जान की मृत्यु भी वही करते है। परमाणिवक शक्ति यानी ईश्वर यानी अल्लाह की शक्ति द्वारा दुनिया की हर चीज को प्रचालित भी अल्लाह ही करता है। लोग ये क्यों नहीं समझते कि शांति का रास्ता ही मनुष्य का उत्तम अंजाम है।

فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَالُ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ {32}

फिर वही अल्लाह तो तुम्हारा सच्चा रब है फिर हक़ बात के बाद गुमराही के सिवा और क्या है फिर तुम कहाँ फिरे चले जा रहे हो (३२)

व्याख्या:- और अल्लाह ही है मनुष्य का पालनहार। सच्चाई को समझने के बाद गुमराही को कबूल करना मनुष्य को अशांति में ढकेल देता है और गुमराह इंसान समाज के लिए नुकसानदेह है।

كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ {33}

ये तुम्हारे परवरदिगार की बात बदचलन लोगों पर साबित होकर रही कि ये लोग हरगिज़ इमान न लाएँगे (३३)

व्याख्या:- ये बात साबित हो चुकी है और वे कभी भी ईमान नहीं लाएंगे।

قُلْ هَلْ مِن شُرَكَائِكُم مَّن يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلِ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ {34}

उनसे पूछो तो कि तुम ने जिन लोगों को शरीक बनाया है कोई भी ऐसा है जो मख़लूकात को पहली बार पैदा करे फिर उन को दोबारा ज़िन्दा करे तुम्ही कहो कि अल्लाह ही पहले भी पैदा करता है फिर वही दोबारा ज़िन्दा करता है तो किधर तुम उल्टे जा रहे हो (३४)

व्याख्या:- सृष्टि का मालिक है अल्लाह, पैदा करना और मारना सब उसी के इख्तियार में है और यही सत्य है। लोगों को इस बात को कबुल करके सच्ची राह पर चलते हुए अपना फर्ज अदा करना चाहिए।

قُلْ هَلْ مِن شُرَكَائِكُم مَّن يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلِ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَن يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَن يُتَّبَعَ أَمَّن لَّا يَهِدِّي إِلَّا أَن يُهْدَىٰ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ {35}

कहो तो कि तुम्हारे शरीकों में से कोई ऐसा भी है जो तुम्हें हक़ की राह दिखा सके तुम ही कह दो कि दीन की राह दिखाता है तो जो तुम्हे दीने हक़ की राह दिखाता है क्या वह ज़्यादा हक़दार है कि उसके हुक्म की पैरवी की जाए या वह शख़्स जो की हिदायत तो दर किनार ख़ुद ही जब तक दूसरा उसको राह न दिखाए राह नही देख पाता तो तुम लोगों को क्या हो गया है (३५)

व्याख्या:- इंसान को मस्तिक्ष देकर अल्लाह ने कुछ जिम्मेदारी उसे सौपी और वो जिम्मेदारी है कि उस दिमाग को सही तौर पर इस्तेमाल करना और सही फैसला करना। नतीजा अल्लाह के इख्तियार में होता है।

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ {36}

तुम कैसे हुक्म लगाते हो और उनमें के अक्सर तो बस अपने गुमान पर चलते है गुमान यक़ीन के मुक़ाबले में हरगिज़ कुछ भी काम नहीं आ सकता बेशक वह लोग जो कुछ कर रहे है अल्लाह उसे खूब जानता है (३६)

व्याख्या:- और कुछ लोग ऐसे भी है जो कु-संस्कार और उत्वाकांक्षा में डूब कर अयौगतिक ख्यालात कि कल्पना करते है जो बिलकुल लाभदायक नही होता और सच्चाई के करीब भी नही है। और अल्लाह सब कुछ देखता-सुनता है।

وَمَا كَانَ هَٰذَا الْقُرْآنُ أَن يُفْتَرَىٰ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَٰكِن تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِن رَّبِّ الْعَالَمِينَ {37}

और ये कुरान ऐसा नहीं कि अल्लाह के सिवा कोई और अपनी तरफ से झूठ मूठ बना डाले बल्कि जो पहले की उसके सामने मौजूद है उसकी तसदीक़ और किताबों की तफ़सील है उसमें कुछ भी शक नहीं कि ये सारे जहाँन के परवरदिगार की तरफ से है (३७)

व्याख्या:- और यही सच्ची अल्लाह की हिदायत जिसे लोग कुरान शरीफ कहते है और किताब की शक्ल में लोगों के बीच मौजूद है वो न ही कोई कालपनिक कविताएं और न ही किसी कहानियों के आधार पर इसकी बुनियाद डाली गयी है। इसकी हर आयत में एक सच्ची और सीधी राह बयान की गई है और ये सच्ची हिदायत कूदरत की रहमत बनकर इंसान को मिली।

पैगाम:- कुरान शरीफ की हर आयत में एक पैगाम है और इंसान के हर दौर के सभ्यता के लिए मुकम्मिल है। न ही ये कोई कहानियों का ढेर है और न ही कोई अयौगतिक या कालपनिक पुस्तक। कुरान शरीफ का हर पैगाम युग-युग से समस्त नबियों के पैगाम की तफसील बयान करता है इस वजह से ये कुरान शरीफ मुकम्मिल है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُم مِّن دُونِ اللَّهِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {38}

क्या ये लोग कहते है कि इसको रसूल ने खुद झूठ मूठ बना लिया है तुम कहो कि तो तुम अगर सच्चे हो तोएक ही सूरा उसके बराबर का बना लाओ और अल्लाह के सिवा जिसको तुम्हें बुलाते बन पड़े बुला लो (३८)

व्याख्या:- लोग ये समझ ले कि अल्लाह की कूदरत का कोई भी एक पहलू (सुरत) इंसान को बना लेना नामुमकिन है यानी कूदरत की चीजों को इस्तेमाल करके ही इंसान अपने लिए कुछ बना सकता है इसके अलावा और कुछ भी इंसान के वश में नही। ये सच्चाई है जिसे इंसान को सच्चे दिल से ही कबुल करना ही इसके लिए बेहतर है और इसी को विज्ञान कहते है।

पैगाम:- अगर इस आयत में लिखी गई ''सुरत'' को लोग समझे कि कुछ अरबी अक्षरों से जुड़े हुए कलमें या बाते तो ये सरासर गलत है। मुसलमानों के दरमियान ''दुआ-ए-कनुत'' मौजूद है और ये एक बेहतरीन दुआ भी है लेकिन वो कुरान शरीफ का हिस्सा नहीं है। तमाम मजहबी किताबें उदाहरण के तौर पर वेद, गीता, बाइबल, तौरायत, ट्रिपीटॉक, जैन अवस्था, ये सारी किताबें अल्लाह की है लेकिन सिर्फ चार किताबों का उल्लेख कुरान में है इसके अलावा मुसलमानों के दरमियान ''हदीस'' जैसी मुकददस किताब भी उपस्थित है तो इस लिहाज से इस

आयत में बयान की गई ''सुरत'' का मतलब है अल्लाह की वो कूदरत जिसे बनाना इंसान के लिए असंभव है। चार किताबों के उपरांत कुरान शरीफ में बहुत सारी किताबों का उल्लेख है जिसका नाम देना अल्लाह ताला ने मुनासिब नहीं समझा। सुरा बकरा की आयत १३६ और सुरा इमरान की आयत १८४ में इस बात की पुष्टि होती है और इसके साथ-साथ कोई भी अविष्कार जो किसी विशेष मानव के मस्तिक्ष से निकलता है वो सब प्रकृति के इच्छानुसार ही होता है और जिसको नियंत्रिक सर्वशक्तिमान अल्लाह करते है।

بَلْ كَذَّبُوا بِمَا لَمْ يُحِيطُوا بِعِلْمِهِ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيلُهُ كَذَٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ {39}

बल्कि जिसके जानने पर उनका हाथ न पहुँचा हो लगे उसको झुठलाने हालाँकि अभी तक उनके ज़ेहन में उसके मायने नहीं आए इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया था जो उनसे पहले थे-तब ज़रा ग़ौर तो करो कि ज़ालिमों का क्या अन्जाम हुआ (३९)

व्याख्या:- इंसान अपने दिमाग का थोड़ा सा हिस्सा ही इस्तेमाल कर सकते है और जितना वो जानता है या जितने उसके दिमाग के इख्तियार में होता है उतना ही वो बयान कर सकता यानी इसके ज्ञान के दायरे में जो होता है। इससे बाहर की बाते न वो सोच सकता है और न वो बयान कर सकता है और जब कोई उसे बयान करने की कोशिश करते है तो वे कु-संस्कार और झुठ से प्रभावित हो जाते है और अपने ही उपर जुल्म करते है अपने दिमाग को परेशानी देकर।

وَمِنْهُم مَّن يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُم مَّن لَّا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ {40}

और उनमें से बाज़ तो ऐसे है कि इस कुरान पर आइन्दा ईमान लाएँगें और बाज़ ऐसे है जो ईमान लाएँगें ही नहीं (४०)

व्याख्या:- इंसानी समाज में कुछ ऐसे इंसान भी होते है जो सच्चाई को कबुल करते है और पुराने ख्यालात को छोड़ने में अपने आपको साबित कदम रखते है यानी ईमान लाते है और कुछ लोग ऐसे भी जो अपनी जिद और उत्वाकांक्षा के वश में आकर सच साबित होने के उपरांत उसे कबुल नहीं करते और अल्लाह जालिमों को अच्छी तरह जानते है।

وَإِن كَذَّبُوكَ فَقُل لِّي عَمَلِي وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ أَنتُم بَرِيئُونَ مِمَّا أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيءٌ مِّمَّا تَعْمَلُونَ {41}

और तुम्हारा परवरदिगार फसादियों को खूब जानता है और अगर वह तुम्हें झुठलाएँ तो तुम कह दो कि हमारे लिए हमारी कार गुजारी है और तुम्हारे लिए तुम्हारी कारस्तानी जो कुछ मै करता हूँ उसके तुम जिम्मेदार नहीं और जो कुछ तुम करते हो उससे मै बरी हूँ (४१)

व्याख्या:- अगर वो सच को कबुल नहीं करेंगे तो उनके अमल उनके साथ और सच्चों के अमल सच्चों के साथ और कोई किसी के अमल का उत्तरदायी नहीं और न ही सच्चाई बताने वाले किसी को जवाबदेही है।

وَمِنْهُم مَّن يَسْتَمِعُونَ إِلَيْكَ أَفَأَنتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا لَا يَعْقِلُونَ {42}

और उनमें से बाज़ ऐसे है कि तुम्हारी ज़बानों की तरफ कान लगाए रहते है ता वह तुम्हारी सुन लेगें हरगिज़ नहीं अगरचे वह कुछ समझ भी न सकते हो (४२)

व्याख्या:- इंसानी समाज में कुछ लोग ऐसे भी होते है जो सच्चाई पर नुक्स निकालते है और बेबुनियाद नुक्स से लोगों को गुमराह करते है यानी (कान लगाने वाले) ऐसे अंधे लोगों को कोई भी राह नहीं दिखा सकता जो जान-बुझकर अंधा-बहरा रहना पसंद करते है।

وَمِنْهُم مَّن يَنظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوا لَا يُبْصِرُونَ {43}

तुम कही बहरों को कुछ सुना सकते हो और बाज़ उनमें से ऐसे है जो तुम्हारी तरफ देखते है तो अगरचे उन्हें कुछ न सूझता हो तो तुम अन्धे को राहे रास्त दिखा दोगे (४३)

व्याख्या:- जिनकी अन्तर्आत्मा मुर्दार हो उसे सही राह नजर नहीं आएगी और ऐसे मुर्दा विवेक वालों को राह दिखाना इंसानों के वश की बात नहीं है।

إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَٰكِنَّ النَّاسَ أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ {44}

अल्लाह तो हरगिज़ लोगों पर कुछ भी जुल्म नहीं करता मगर लोग खुद अपने ऊपर जुल्म किया करते है (४४)

व्याख्या:- यकीनन ऐसे लोगों को राह दिखाना अल्लाह का काम है और अल्लाह किसी पर जुल्म नही करता। इंसान खुद ही कूदरत को बिगाड़ कर या इसका गलत इस्तेमाल करके अपने उपर जुल्म उठा रहे है।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ {45}

और जिस दिन खुदा इन लोगों को जमा करेगा तो गोया ये लोग बस घड़ी दिन भर ठहरे और आपस में एक दूसरे को पहचानेंगे जिन लोगों ने अल्लाह की बारगाह में हाज़िर होने को झुठलाया वह ज़रुर घाटे में है और हिदायत याफता न थे (४५)

व्याख्या:- इंसान की नेकी या बुराई का नतीजा जिस दिन मिलेगा तब उनकी जिन्दगी के सारे अमाल को इकट्ठा किया जाएगा और उस वक्त कोई किसी का मददगार या साथी नहीं होगा, नुकसान उस इंसान को होगा जिसने अल्लाह के असुलों को गलत साबित करने की कोशिश की थी और उसे अपनाया नहीं था और ये साबित हो जाएगा के ऐसे लोगों के लिए सच्ची हिदायत थी ही नहीं।

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ {46}

जिस का उनसे वायदा कर चुके हैं उनमें से बाज़ ख़्वाहा तुम्हें दिखा दें या तुमको उठा ले फिर तो उन सबको हमारी तरफ लौटना ही है फिर जो कुछ ये लोग कर रहे हैं अल्लाह तो उस पर गवाह ही है (४६)

व्याख्या:- कर्मफल साफ और सीधे तौर पर दिखाई देने के बाद भी इंसान उस पर यकीन नही रखता। सजा के तौर पर गुनेहगारों की बदसकुनी या इसका थोड़ा सा हिस्सा भी अगर लोग देख पाते या गुनहगारों की दर्दनाक मौत अगर लोगों को दिखाई देती तो लोग गुनाह से दूर रहते। हर इंसान को आखिरकार कूदरत की तरफ ही लौटना है और कूदरत नाम की किताब जो अल्लाह के द्वारा प्रचालित होती है उसमें हर इंसान का काम और उसका नतीजा दर्ज रहता है।

पैगाम:- विवर्तन एक प्राकृतिक नियम है, मानव अस्तित्व को इस प्राकृतिक नियमों से गुजरना पड़ता है।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رَسُولُهُمْ قُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ {47}

और हर उम्मत का ख़ास एक रसूल हुआ है फिर जब उनका रसूल आएगा तो उनके दरम्यिान इन्साफ़ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर ज़र्रा बराबर जुल्म न किया जाएगा (४७)

व्याख्या:- ज्ञान या सच्चाई बताने वाले रसुल मानव की हर प्रजाति में रहते है और रसुल की वाणी इंसान के पाप-पुण्य का फैसला करने वाली होती है और उनके दरबार में झुठ या गुनाह की कोई गुंजाइश नहीं है।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ {48}

ये लोग कहा करते है कि अगर तुम सच्चे हो तो ये कब पूरा होगा (४८)

व्याख्या:- सच्चाई के सबूत की तलाशी हर मानव का चरित्र है मगर सच्चाई को वो मानव अनुभव कर सकता है जिसके हृदय में प्रेम और मानवता हो।

पैगाम:- सच बताने वालों पर शक किया गया और सच को सच्चाई की रोशनी से रोशन करना मानव की अंर्तात्मा का कर्तव्य है। जिद्दी और अहंकारी मानव की अंर्तात्मा इस बात का अनुभव नहीं कर सकती।

قُل لَّا أَمْلِكُ لِنَفْسِي ضَرًّا وَلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ {49}

तुम कह दो कि मै खुद अपने वास्ते नुकसान पर क़ादिर हूँ न नफा पर मगर जो अल्लाह चाहे हर उम्मत का एक वक्त मुक़र्रर है-जब उन का वक्त आ जाता है तो न एक घड़ी पीछे हट सकती है और न आगे बढ़ सकते है (४९)

व्याख्या:- ऐसे लोग जान ले अगर वो सच्चाई, नेकी, मोहब्बत, अहिंसा, परहेजगारी और इंसानियत को कबुल नहीं करते तो यकीनन वो उनका नुकसान है सच्चाई बताने वाले का नहीं। अल्लाह जो चाहता है वही होता है, हर

प्रजाति के लिए एक विशेष समय नियुक्त किया जाता है यानी मानव की हर सभ्यता कभी न कभी वक्त की गर्दीश में इतिहास बन जाती है और पापी अमानविक सम्प्रदाय के लोग इस नियम के दायरे में न आगे बढ़ सकते है और न पीछे जा सकते यानी सभ्यता के विकास के साथ जो मानव नही चल सकते वो पीछे रह जाता है और कु-संस्कार उनके दिमाग की तरक्की को रोक देती है।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتَاكُمْ عَذَابُهُ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُونَ {50}

तुम कह दो कि क्या तुम समझते हो कि अगर उसका अज़ाब तुम पर रात को या दिन को आ जाए तो फिर गुनाहगार लोग आख़िर काहे की जल्दी मचा रहे है (५०)

व्याख्या:- लोग जब गुनाह पर गुनाह करते चले जाते है ये सोचकर कि इसपर अल्लाह की सजा तो नाजिल नही हो रही है या नाजिल होने के लिए वक्त लग रहा है मगर वो ये जान ले कि अल्लाह की सजा कभी भी किसी भी वक्त दिन में हो या रात में आ सकती है। गुनहगार अजाब आने की देर से अपने गुनाहों को बढ़ा देते है। मिसाल के तौर पर अगर कोई चोरी करता है और नहीं पकड़ा जाता तो यकीनन वो जान ले कि किसी भी वक्त उसका राज खुल जाएगा और रूहानी तौर पर ये भी कह सकते है कि उसकी अन्तात्मा उसके दिमाग का सकुन छीन लेती है और इसी तरह रिश्वतखोरी, धोखाबाजी, एहसानफरामोशी, बलतकार, जना और इसके उपरांत और भी बहुत सारी इंसान की बुरी फितरते इस आयत के दायरे में आती है।

أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ آمَنْتُمْ بِهِ آلْآنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ {51}

फिर क्या जब आ चुकेगा तब उस पर इमान लाओगे क्या अब हालाँकि तुम तो इसकी जल्दी मचाया करते थे (५१)

व्याख्या:- क्या ऐसे लोग बदसकुनी के अजाब में घिर जाएंगे या चारों तरफ से उनकी बेबसी बढ़ जाएगी तो क्या तब इन लोगों को सच्चाई पर यकीन आएगा और इनका दिमाग यानी अन्तात्मा उनसे पुछेगी कि वक्त रहते उन्होंने सच्चाई को कबुल क्यों नहीं किया था।

ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ {52}

फिर ज़ालिम लोगों से कहा जाएगा कि अब हमेशा के अज़ाब के मज़े चखो जैसी तुम्हारी करतूतें तुम्हें वैसा ही बदला दिया जाएगा (५२)

व्याख्या:- इस तरह के जुल्म करने वाले लोग बदसकुनी के अजाब में आखिरी दम तक रहेंगे और यही उनके कामों का नतीजा है।

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقٌّ هُوَ قُلْ إِي وَرَبِّي إِنَّهُ لَحَقٌّ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ {53}

तुम से लोग पूछते है कि क्या वह सब ठीक है तुम कह दो अपने परवरदिगार की कसम ठीक है और तुम हरा नहीं सकते (५३)

व्याख्या:- गुनेहगार पुछते है कि क्या गुनाह का नतीजा उन्हे मिलेगा या नहीं मिलेगा वो जान ले यकीनन कूदरत में हर गुनाह का अजाब या सजा मौजूद है और ये परम सत्य है और इस कूदरती सच को कोई इनकार नहीं कर सकता।

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ {54}

और जिस जिसने जुल्म किया है अगर तमाम खज़ाने जो जमीन में हैं उसे मिल जाएँ तो अपने गुनाह के बदले ज़रुर फिदया दे निकले और जब वह लोग अज़ाब को देखेगें तो इज़हारे निदामत करेगें और उनमें बाहम इन्साफ़ के साथ हुक्म दिया जाएगा और उन पर ज़र्रा जुल्म न किया जाएगा (५४)

व्याख्या:- कोई भी दौलत कितनी भी मिकदार में क्यों न हो गुनहगारों को उसके नतीजे से बचा नहीं सकती और उन्हें इस कूदरती सच को कबुल करना ही होगा। अपनी अन्तात्मा की पुकार से जितना भी वो छुपाने की या बचने की कोशिश करें वो नकामयाब रहेंगे। अल्लाह के दरबार में किसी के लिए भी न इंसाफी नहीं है।

أَلا إِنَّ لِلَّهِ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ أَلا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لا يَعْلَمُونَ {55}

आगाह रहो कि जो कुछ आसमानों में और ज़मीन में है अल्लाह ही का है आगाह राहे कि अल्लाह का वायदा यक़ीनी ठीक है मगर उनमें के अक्सर नही जानते है (५५)

व्याख्या:- याद रखें सृष्टि की हर वस्तु या हर किया-प्रकिया अल्लाह की शक्ति के बगैर (परमाणिवक शक्ति) पुरा नहीं हो सकती और याद रखें कूदरत और इंसान के दरमियान जो एहद है वो परम सत्य है मगर गुनहगार उस पर यकीन नहीं रखते।

هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ {56}

वही ज़िन्दा करता है और वही मारता है और तुम सब के सब उसी की तरफ लौटाए जाओगे (५६)

व्याख्या:- जन्म-मृत्यु सब प्रकृति के इख्तियार में है और सृष्टि की हर वस्तु का फना होना निश्चित है। फना होने के बाद वो कूदरत में ही विलीन हो जाती है।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَتْكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ {57}

लोगों तुम्हारे पास तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से नसीहत आ चुकी और जो दिल में है उनकी दवा और ईमान वालों के लिए हिदायत और रहमत (५७)

व्याख्या:- ऐ इंसानों! आज तुम्हारे पास सच्चाई और उसका नतीजा सबुत के साथ मौजूद है और ये तुम्हारे लिए नसीहत है। मनुष्य के अंदर ही पाप और पुण्य मौजूद होता है। जिसका विवेक या अन्तात्मा गुनाह से ढक जाती है उसके दिल में बीमारी यानी रोग है और इस बीमारी का इलाज है नेकी, परहेजगारी, मोहब्बत, अहिंसा, शिक्षा और शांति को अपनाना और यही सही रास्ता है मोमिनों के लिए।

قُلْ بِفَضْلِ اللَّهِ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ {58}

तुम कह दो कि ख़ुदा के फज़्ल व करम और उसकी रहमत से तुमको मिला है तो उन लोगों को इस पर खुश होना चाहिए और जो कुछ वह जमा कर रहे हैं उससे कही बेहतर है(५८)

व्याख्या:- अल्लाह ने इंसान के दिमाग में पाक जमीर रखकर इंसान के लिए रहमत बनाई और अल्लाह के इस वरदान पर हर किसी को खुश होना चाहिए इसकी बदौलत जो सकुन और इतमीनान लोगों को मिलता है वो बेहतर है। उन सारे ख्यालात के लिए जो वो दिमाग में जमा कर रखे हैं मिशाल के तौर पर उची ख्वाहिसात, हषद, अहंकार, लोभ, इत्यादि।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلالا قُلْ آللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ {59}

तुम कह दो कि तुम्हारा क्या ख़्याल है कि अल्लाह ने तुम पर रोज़ी नाज़िल की तो अब उसमें से बाज़ को हराम बाज़ को हलाल बनाने लगे तुम कह दो कि क्या अल्लाह ने तुम्हें इजाज़त दी है या तुम अल्लाह पर बोहतान बाँधते हो (५९)

व्याख्या:- खुराक के तौर पर कूदरत ने इंसान को तमाम किस्म की नेमते दी और उनकी ही कूदरत है कि दुनिया के हर कोने के इंसानों को अलग-अलग किस्म की खुराक भी दी। जमीन की पैदावार या जमीन की फसल तकरीबन हर जगह एक-सा है। अल्लाह ने इंसानों को दिमाग भी दिया की जमीन की कौन सी चीज उनके लिए फायदेमंद (हलाल) है और कौन सी चीज नुकसानदेह (हराम) है, मगर कुछ-कुछ इंसान ऐसे भी है जो नुकसानदायक चीज को यानी नशे को अपनाते है और उसे सही ठहराने के लिए झुठ बांधते है।

وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لا يَشْكُرُونَ {60}

और जो लोग अल्लाह पर झूठ मूठ बोहतान बाँधा करते है रोज़े क़यामत का क्या ख़्याल करते है उसमें शक नही कि ख़ुदा तो लोगों पर बड़ा फज़्ल है मगर उनमें से बहुतेरे शुक्र गुज़ार नहीं है (६०)

व्याख्या:- और जो लोग अल्लाह की कूदरत पर झूठ बांधते है उन लोगों की आखरत बीमारियों के अजाब से घिरी रहती है और हकीकत में अल्लाह की कृपा इंसान को चारों तरफ से घेरे हुए है मगर इंसान नाशुकरा है।

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُو مِنْهُ مِن قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَن رَّبِّكَ مِن مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِن ذَٰلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ {61}

तुम किसी हाल में हो और क़ुरान की कोई सी भी आयत तिलावत करते हो और तुम कोई सा भी अमल कर रहे हो हम जब तुम उस काम में मशग़ूल होते हो तुम को देखते रहते है और तुम्हारे परवरदिगार से ज़र्रा भी कोई चीज़ ग़ायब नहीं रह सकती न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ ज़र्रे से छोटी है और न उससे बड़ी चीज़ मगर वह रौशन किताबें में ज़रुर है (६१)

व्याख्या:- इंसान किसी भी हाल में क्यों न हो और कितना भी अल्लाह के असुलों को जुबानी रटे उनका सारा हिसाब-किताब अल्लाह जानता है। हर जर्रे में अल्लाह की ताकत मौजूद होने की वजह से आसमान और जमीन में यानी सृष्टि के हर छोटे से छोटा और बड़े से बड़ी कोई भी वस्तु उनकी ताकत की दायरे से बाहर नहीं है (परमाणविक शक्ति) और हर असुल या पहलू या वस्तु सब ''कूदरत'' नाम की रोशन किताब में मौजूद है।

أَلَا إِنَّ أَوْلِيَاءَ اللَّهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ {62}

इसमें शक नहीं कि दोस्ताने अल्लाह पर न तो कोई ख़ौफ होगा और न वह आजुर्दा होंगे (६२)

व्याख्या:- अल्लाह और उनकी कूदरत से जो दोस्ती रखते है यानी कूदरत के हर पहलू को या कूदरत के हर असुल को जो इंसानों को अल्लाह ने दिये उसपर अमल करते है और इस सच्चाई पर भी ईमान (यकीन) रखते है उन्हें न कोई खौफ होगा और न वो गमगीन होंगे।

الَّذِينَ آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ {63}

ये वह लोग है जो ईमान लाए और डरते थे (६३)

व्याख्या:- और यही लोग नेकी, परहेजगारी, मोहब्बत, इंसानियत, शिक्षा, अहिंसा और शांति के आदर्शों को अपनी जिन्दगी में लागू करते है और दिलो दिमाग से अपनाते है।

لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ {64}

उन्हीं लोगों के वास्ते दीन की जिन्दगी में भी और आख़िरत में ख़ुशख़बरी है ख़ुदा की बातों में अदल बदल नहीं हुआ करता यही तो बड़ी कामयाबी है (६४)

व्याख्या:- ऐसे लोगों का जीवन अमन सकुन से भर जाता और मौत भी उनकी आसान होती है और यही इंसान की सबसे बड़ी कामयाबी है। इंसान और कूदरत के दरमियान यही सच्चा एहद है और इसमें कोई रदोबदल नहीं होता और अल्लाह के प्रकृति नियम परिवर्तनशील नहीं है।

وَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ {65}

औरउन की बातों का तुम रंज न किया करो इसमें तो शक नहीं कि सारी इज़्ज़त तो सिर्फ अल्लाह ही के लिए है वही सबकी सुनता जानता है (६५)

व्याख्या:- बुरे लोग हमेशा बुरा काम करते है और अपने कामों में अच्छे लोगों को घसीटने की कोशिश करते है। अच्छे लोगों के आदर्श इन लोगों के आदर्शों से प्रभावित नहीं होते और अल्लाह सब देखता-सुनता है।

أَلَا إِنَّ لِلَّهِ مَن فِي السَّمَاوَاتِ وَمَن فِي الْأَرْضِ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ إِن يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ {66}

इसमें शक नहीं कि जो लोग आसमानों में है और जो लोग ज़मीन में है अल्लाह ही के लिए है और जो लोग अल्लाह को छोड़कर दूसरों को पुकारते है वह तो शरीकों की राह पर भी नहीं चलते बल्कि वह तो सिर्फ अपनी अटकल पर चलते है और वह सिर्फ वहमी और ख़्याली बातें किया करते है (६६)

व्याख्या:- इंसान याद रखें सृष्टि में जो कुछ है यानी आसमान या जमीन सब अल्लाह का है। बुराई को अपनाकर अल्लाह का शरीक ठहराना और बुरे लोगों के नक्शे कदम पर चलना एक व्यहम और कु-संस्कार है। अल्लाह और कूदरत की सच्चाई जानने के बाद जो लोग ये काम करते है वो गुनहगार या काफिर है।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ {67}

वह वही है जिसने तुम्हारे नफा के वास्ते रात को बनाया ताकि तुम इसमें चैन करो और दिन को कि उसकी रौशनी में देखो भालो उसमें शक नही जो लोग सुन लेते है उनके लिए इसमें कुदरत की बहुतेरी निशानियाँ है (६७)

व्याख्या:- कूदरती तौर पर इंसान को रात मिली आराम फरमाने के लिए और परहेजगारों को सकुन की नींद हासिल है और दिन बनाया ताकि उसकी रोशनी में इंसान को कूदरती सच्चाई हासिल हो और कूदरत के हर पहलू में अच्छा-बुरा मौजूद है जो ज्ञान रखते है उन लोगों को इसका सबुत पाना आसान है।

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ إِنْ عِندَكُم مِّن سُلْطَانٍ بِهَٰذَا أَتَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ {68}

लोगों ने तो कह दिया कि अल्लाह ने बेटा बना लिया-ये महज़ लगों वह तमाम नकायस से पाक व पाकीज़ा वह हर तरह से बेपरवाह है व जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है उसी का है तुम कहते हो बे जाने बूझे झूठ बोला करते हो (६८)

व्याख्या:- लोग अल्लाह को इंसानी शक्ल में देखने की कल्पना करते है और ये भी कहते है कि उनकी औलाद भी है जैसे की इंसानों की है। अल्लाह एक शक्ति है जो हर जर्रे में मौजूद है और उसी ताकत के द्वारा आसमान की सारी चीजे वजूद में आती है और इस हकीकत को वैज्ञानिक साबित कर चुके। मगर कु-संस्कार वालों के पास इस सच्चाई का कोई सबुत नहीं और अल्लाह के बारे में जो कल्पना करते है वो उसकी हकीकत भी नही जानते।

पैगाम:- जो मनुष्य अदृश्य शक्ति को समझने और इसकी इबादत का दावा करते है वो आज तक ये प्रमाण नही कर पाये जो वो कहते है -- इनकी इस सोच का क्या प्रमाण है? कि अल्लाह औलाद रखता है या नहीं---ये बात तो सिर्फ अल्लाह कह सकते है। इनकी श्रृष्टि में न कोई बाप है और न कोई बेटा, सिर्फ एक शक्ति द्वारा आकाश-पृथ्वी की हर पहलू की श्रृष्टि परिवर्तित और विनाश होती है।

قُلْ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ {69}

तुम कह दो कि बेशक जो लोग झूठ मूठ खुदा पर बोहतान बाधते है वह कभी कामयाब न होगें (६९)

व्याख्या:- वो लोग जान ले जो अल्लाह की कूदरती सच्चाई पर झुठ बांधते है वो कभी भी कामयाब नहीं हो सकते।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ {70}

दुनिया के फायदे है फिर तो आखिर हमारी ही तरफ लौट कर आना है तब उनके कुफ्र की सज़ा में हम उनको सख्त अज़ाब के मज़े चखाएँगें (७०)

व्याख्या:- सृष्टि के भंडार से इंसान को इस्तेमाल करने के लिए जो चीज मिलती है वो सिर्फ और पुरी तरह से कूदरत की है और इंसान की मौत के बाद वो कूदरत में समा जाती है कोई भी उसे साथ लेकर नही जाता। इस असुल को जानते हुए भी इंसान अपनी उची ख्वाहिश और ज्यादा ऐशो-आराम पाने की लालच में गुनाह करते है यानी अल्लाह के असुलों के साथ कुफ करते है और इसके लिए उन्हें दर्दनाक बदसकुनी के अजाब से गुजरना पड़ता है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يَا قَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُم مَّقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنظِرُونِ {71}

और तुम उनके सामने नूह का हाल पढ़ दो जब उन्होंने अपनी कौम से कहा ऐ मेरी कौम अगर मेरा ठहरना और खुदा की आयतों का चर्चा करना तुम पर शाक व गरॉ गुज़रता है तो मै सिर्फ खुदा ही पर भरोसा रखता हूँ तो तुम और तुमहारे शरीक सब मिलकर अपना काम ठीक कर लो फिर तुम्हारी बात तुम पर महज़ न रहे फिर मेरे साथ कर गुज़रो और गुझे मोहलत न दो (७१)

व्याख्या:- पैगम्बर नुह का किरदार इंसान के लिए एक मिशाल है और इस मिशाल को लोगों के सामने बयान करना चाहिए। नुह ने अपनी कोम से कहा था अगर उनकी कोम उनके असुलों, कूदरती सच्चाई और जो ज्ञान उन्हें अल्लाह

की तरफ से मिला था उसपर यकीन न हो या भरोसा न हो तो नुह पर कोई जिम्मेदारी नहीं। इंसान को यकीन दिलाना और सच्चाई पर इंसान का भरोसा और विश्वास दिलवाना पुरी तरह अल्लाह के इख्तियार में है। नहीं मानने वाले लोग अपने संगी साथियों के साथ अपने संस्कार में रहे जो सच्चाई के बिलकुल विपरीत होता है। मगर याद रखें उनका अंधविश्वास उनकी बदसकुनी का कारण न बन जाए और उसके बाद अगर उनके विश्वास में सच्चाई हो तो निश्चित रूप से सच्चाई बताने वाले को कोई मौका न दे।

فَإِن تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُم مِّنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلاَّ عَلَى اللّهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ {72}

फिर भी अगर तुम ने मुँह मोड़ा तो मैने तुम से कुछ मज़दूरी तो न माँगी थी-मेरी मज़दूरी तो सिर्फ अल्लाह हीपरहै और मुझे हुक्म दिया गया है कि मै उसके फरमाबरदार बन्दों में से हो जाऊँ (७२)

व्याख्या:- सच्चाई बताने वाले नबी अपने नेक कामों के बदले कोई मुआवजा नहीं लेते और इंसान को मुआवजा सिर्फ अल्लाह ही दे सकता है और नबी कभी भी अल्लाह के असुलों के दायरे से बाहर नहीं जाते।

पैगाम:- इस आयत में मुसलमान शब्द का प्रयोग ये प्रमाण करता है कि ''मुसलमान'' शब्द किसी सम्प्रदाय के दायरे में सीमित नही है और ये कदीम जमाने से चला आ रहा है और पवित्र लोगों का ''अरबी भाषा'' का नामकरण है।

فَكَذَّبُوهُ فَنَجَّيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلاَئِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ {73}

उस पर भी उन लोगों ने उनको झुठलाया तो हमने उनको और जो लोग उनके साथ कश्ती में थे नजात दी और उनको जानशीन बनाया और जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो मारा फिर ज़रा ग़ौर तो करो कि जो डराए जा चुके थे उनका क्या अन्जाम हुआ (७३)

व्याख्या:- कूदरत ने नुह के साथियों को जिन्होंने उनकी सच्चाई पर यकीन किया और उसे अपने जीवन में अमली तौर पर लागू भी किया था उसे नुह की कश्ती यानी ज्ञान की कश्ती यानी सकुन की कश्ती यानी खुशहाली की जिन्दगी प्राप्त हुई थी और जिन लोगों ने उनकी सच्चाई को झुठलाया था वो लोग जहलियत के अंधेरे में डूब कर रह गये। ये उसका नतीजा था और ये लोगों के लिए एक मिशाल।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِ رُسُلاً إِلَى قَوْمِهِمْ فَجَاؤُوهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِمَا كَذَّبُوا بِهِ مِن قَبْلُ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَى قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ {74}

फिर हमने नूह के बाद और रसूलों को अपनी क़ौम के पास भेजा तो वह पैग़म्बर उनके पास वाज़ेए रौशन मौजिज़े लेकर आए इस पर भी जिस चीज़ को ये लोग पहले झुठला चुके थे उस पर ईमान न लाए हम यूँ ही हद से गुज़र जाने वालों के दिलों पर खुद मोहर कर देते हैं (७४)

व्याख्या:- नुह के बाद बहुत सारे पैगम्बर सच्चा ज्ञान लेकर हिन्दुस्तान आए थे। तमाम ऋषिमुनि पीढ़ी दर पीढ़ी से यहां के इंसानों को सच्चा ज्ञान बताते आए मगर यहा की नसल कभी जात-पात के नाम पर और कभी छुआ-छुत के नाम पर बढ़ती और लड़ती गयी यानी वेद में बताई गयी सच्चाई को अपने अमाल के द्वारा झुठा साबित करते गये और नतीजतन अल्लाह ने उनको उनके ख्यालात पर छोड़ दिया। और अभी-भी किसी न किसी बहाने से ये आपस में लड़ रहे है और बदसकुनी की जिन्दगी जी रहे है।

पैगाम:- सवाल उठाने वाले ये कहते है कि कुरान-शरीफ में हिन्दुस्तानी नसल का जिक्र नही है मगर मै (सिद्धार्थ चटर्जी) दावे के साथ कह सकता हूँ कि दुनिया के हर कोने और हर तरह के इंसान का जिक्र कुरान शरीफ में मौजूद है और अल्लाह ने ''वारिस पाक'' के द्वारा मुझे (सिद्धार्थ चटर्जी) वो नजर और जिम्मेदारी भी दी कि इंसानों तक इस बात को पहुचांउं।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِن بَعْدِهِم مُّوسَى وَهَارُونَ إِلَى فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ {75}

फिर हमने इन पैग़म्बरों के बाद मूसा व हारुन को अपनी निशानियाँ लेकर फिरआऊन और उस के सरदारों के पास भेजा तो वह लोग अकड़ बैठे और ये लोग थे ही कुसूरवार (७५)

व्याख्या:- मौजूदा मिश्र (उत्तरी अफरीका) मुसा और हारून नाम के दो पैगम्बरों ने लोगों को अल्लाह और उनके असुल बताने के लिए जन्म लिये थे। जैसे कि दुनिया के हर कोने में अल्लाह ने सच्चाई बताने वाले रसुल भेजे और वो इसलिए कि जहां पर गुनाह और जुल्म करने वालों की तादद बढ़ जाती है वहां पर पैगम्बरों का आना जरूरी हो जाता है। मिश्र में फिरौन नाम का राजा हुआ करता था जो इंसान और इंसानियत पर इतना जुल्म उठाता था कि इंसान का जीना दुश्वर हो गया था। मुसा कि बात इन लोगों ने नही मानी और वो इतना अहंकारी हो गये थे कि खुद को अल्लाह समझे बैठे थे और गुनाह पर गुनाह करते चले जा रहे थे।

पैगाम:- हिन्दुस्तान में कृष्ण जी का आगमन २000बी.सी. से लेकर ३000 बी.सी. के दरमियान हुआ था और इसी दरमियान मिश्र में मुसा और फिरौन का वाकया हुआ था कृष्ण जी की पैदाइश का इतिहास और मुसा की पैदाइश का इतिहास तकरीबन एक-सा है। क्या हजरत मुसा ही कृष्ण जी थे? जिन्होंने मिश्र से आकर गुजरात के समुद्री तट पर राज कायम किया था। मै (सिद्धार्थ चटर्जी) इस बात को साबित नहीं कर सकता हूँ क्योंकि मेरे पास कोई सबुत नही है ये अल्लाह का राज है और इसकी हकीकत अल्लाह ही लोगों के दिमाग में देगा।

فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا لَسِحْرٌ مُبِينٌ {76}

फिर जब उनके पास हमारी तरफ से हक़ बात पहुँच गए तो कहने लगे कि ये तो यक़ीनी खुल्लम खुल्ला जादू है (७६)

व्याख्या:- मुसा के पास से जब लोगों को सच्चा और आधुनिक ज्ञान मिला तब लोगों ने उसे जादू समझा।

قَالَ مُوسَى أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَكُمْ أَسِحْرٌ هَذَا وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ {77}

मूसा ने कहा क्या जब तुम्हारे पास आया तो उसके बारे में कहते हो कि क्या ये जादू है और जादूगर लोग कभी कामयाब न होगें (७७)

व्याख्या:- मुसा ने लोगों को समझाया कि ये जादू नही है जो विज्ञान की बातें लोगों को समझायी वो कोई जादू नहीं था अगर वो जादू होता तो कुछ देर के लिए होता और इससे कोई फायदा नहीं होता।

पैगाम:- इंसानी समाज में इंसानों के दरमियान जो नफरत है चाहे वो जिस शक्ल में भी हो उसे मिटाना ही इंसानी सभ्यता के लिए फायदेमंद है और ये बात मुसा और कृष्ण जी के इतिहास से मिलती है। कृष्ण जी ने भी हिंदुस्तानी समाज में जिसे छोटा जाति कहा जाता था उसे अपना लिया और हिन्दुस्तानी नसल के लिए एक मिशाल कायम की थी। हिन्दुस्तानी नसल ने कृष्ण जी की मूर्ति बनाकर तो जरूर पूजने लगे मगर उनके नक्शे कदम पर नहीं चले और इस नसल की आपसी नफरत उसे कुसंस्कार और अयौगतिक सोच की तरफ ले गई है।

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا وَتَكُونَ لَكُمَا الْكِبْرِيَاءُ فِي الْأَرْضِ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِينَ {78}

वह लोग कहने लगे कि क्यों तुम हमारे पास उस वास्ते आए हो कि जिस दीन पर हमने अपने बाप दादाओं को पाया उससे तुम हमे बहका दो और सारी ज़मीन में ही दोनों की बढ़ाई हो और ये लोग तुम दोनों पर ईमान लाने वाले नहीं (७८)

व्याख्या:- भारतवर्ष की नसल के लोग आज भी अपने पुराने अयौगतिक और नफरत वाले ख्यालात से आजाद नहीं हो पाए उनके बाप-दादाओं ने जो नफरत वाली सोच पाल रखी थी वो उसी पर कायम है। ज्ञान और सच्चाई बताने वालों पर ये लोग इलजाम लगाते है कि दुनिया में नाम कमाने के लिए ये लोग उन्हें उनके असुलों से हटाने की कोशिश कर रहे है। ऐसे लोग किसी भी सुरत में पैगम्बरों के बताये हुए प्रेम और भाईचारा के असुलों को नहीं मानेंगे।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سَاحِرٍ عَلِيمٍ {79}

और फिरआऊन ने हुक्म दिया कि हमारे हुजूर में तमाम खिलाड़ी जादूगर को तो ले आओ (७९)

व्याख्या:- जैसा कि उस वक्त फिरौन ने मुसा को कहा था कि उसके पास भी ऐसे ही जादूगर मौजूद है।

فلمَّا جَاء السَّحَرَةُ قَالَ لَهُم مُّوسَى أَلْقُوا مَا أَنتُم مُّلْقُونَ {80}

फिर जब जादूगर लोग आ मौजूद हुए तो मूसा ने उनसे कहा कि तुमको जो कुछ फेंकना हो फेंको (८०)

व्याख्या:- फिरौन ने ऐसे लोगों को सामने लाकर खड़ा किया था जिनके ख्यालात (जादू) बहुत चलाकी से सच्चाई को बिगाड़ने की ताकत रखते थे।

فلمَّا أَلْقَوا قَالَ مُوسَى مَا جِئتُم بِهِ السِّحْرُ إِنَّ اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِينَ {81}

फिर जब वह लोग डाल चुके तू मूसा ने कहा जो कुछ तुम लाए हो जादू है-इसमें तो शक ही नहीं कि खुदा उसे फौरन मिटियामेट कर देगा अल्लाह तो हरगिज़ मफ़सिदों का काम दुरुस्त नहीं होने देता (८१)

व्याख्या:- मगर अफसोस मुसा ने उस वक्त भी ये कहा था और ये कूदरती सच्चाई भी है कि अल्लाह की कूदरती सच्चाई अपने आप में इतनी बुलंद और पवित्र है कि इसके आगे कोई भी साजिश घुटनों के बल गिर पड़ती है और फसादियों की कोई भी साजिश पुरी नहीं हो सकती।

وَيُحِقُّ اللَّهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ {82}

और खुदा सच्ची बात को अपने कलाम की बरकत से साबित कर दिखाता है अगरचे गुनाहगारों को ना गँवार हो (८२)

व्याख्या:- और अल्लाह हक को अपने हुकुम से साबित कर देता है किसी को पसंद हो या न पसंद।

पैगाम:- इन सारी आयतों में किसी जादू के कम्पटीशन का बयान नहीं है। इस आयत में बताया गया ''जादू'' एक चिह्न है जो हक और बातिल की निशानदेही करता है।

فَمَا آمَنَ لِمُوسَى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّن قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِّن فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ أَن يَفْتِنَهُمْ وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الْمُسْرِفِينَ {83}

अलग़रज़ मूसा पर उनकी क़ौम की नस्ल के चन्द आदमियों के सिवा फिरआऊन और उसके सरदारों के इस ख़ौफ से कि उन पर कोई मुसीबत डाल दे कोई ईमान न लाया और इसमें शक नहीं कि फिरआऊन रुए ज़मीन में बहुत बढ़ा चढ़ा था और इसमें शक नहीं कि वह यक़ीनन ज़्यादती करने वालों में से था (८३)

व्याख्या:- मुसा और उनके वक्त के लोगों में से कुछ लोगों ने ही सच्चाई पर यकीन लाया और कुछ लोगों ने फिरौन का साथ दिया था उसके डर से और जुल्म से बचने के लिए। हककीत तो ये है कि उस वक्त फिरौन बहुत ही ज्यादा ताकतवर था और अपनी ताकत से लोगों पर जुल्म पर जुल्म करता रहता था।

وَقَالَ مُوسَى يَا قَوْمِ إِن كُنتُمْ آمَنتُم بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ {84}

और मूसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम अगर तुम अल्लाह पर इमान ला चुके तो अगर तुम फरमाबरदार हो तो बस उसी पर भरोसा करो (८४)

व्याख्या:- मुसा ने अपने लोगों से कहा कि सिर्फ अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए और उनके असुलों की ही फरमोबरदारी करनी चाहिए।

فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ {85}

उस पर उन लोगों ने अर्ज़ की हमने तो खुदा ही पर भरोसा कर लिया है और दुआ की कि ऐ हमारे पालने वाले तू हमें ज़ालिम लोगों का इम्तिहान न बना (८५)

व्याख्या:- मुसा की सम्प्रदाय से ही कुछ लोगों ने ही सच्चाई पर ईमान लाये और दुआ की थी जुल्म करने वालों का शिकार न हो।

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ {86}

और अपनी रहमत से हमें इन काफ़िर लोगों से नजात दे (८६)

व्याख्या:- और ये भी दुआ की थी कि ऐसे काफिरों से उन्हें अल्लाह की रहमत से निजात मिले।

وَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى وَأَخِيهِ أَن تَبَوَّءَا لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوتًا وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ {87}

और हमने मूसा और उनके भाई के पास 'वही' भेजी कि अपनी क़ौम के लिए घर बना डालो और अपने अपने घरों ही को मस्जिदें क़रार दे लो और पाबन्दी से नमाज़ पढ़ो और मोमिनीन को खुशख़बरी दे दो (८७)

व्याख्या:- मुसा और उनके भाई के दिमाग में अल्लाह की तरफ से ये सोच आई कि अपने असुलों पर कायम रहते हुए मिश्र में ही मुकम्मिल तौर पर डटे रहे और अपने बुलंद असुलों की इतनी पाबंदी करें कि लोग उनके असुलों को इबादत का मुकाम समझने लगे। अपने असुलों के जरिया मुसा और उसका भाई अल्लाह की इबादत करें, नेकी, मोहब्बत, परहेजगारी, अहिंसा, शिक्षा और शांति चाहने वालों तक ये पैगाम पहुँचे कि अल्लाह के सिवा किसी से भी मत डरो।

وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهُ زِينَةً وَأَمْوَالًا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا رَبَّنَا لِيُضِلُّوا عَن سَبِيلِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ {88}

और मूसा ने अर्ज़ की ऐ हमारे पालने वाले तूने फिरआऊन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में आराइश और दौलत दे रखी है ताकि ये लोग तेरे रास्ते से लोगों को बहकाएँ परवरदिगार तू उनके माल को ग़ारत कर दे और उनके दिलों पर सख़्ती कर जब तक ये लोग तकलीफ देह अज़ाब न देख लेगें ईमान न लाएगें (८८)

व्याख्या:- मुसा ने अल्लाह से दुआ कि कि जितने भी जुल्म फिरोन और उसकी कोम क्यों न करें अपने अहंकार और मोह-माया में डूब कर जब तक उन्हें अपने किये की सजा न मिले तब तक उन्हें उनके हाल पर कायम रहने दे और ये दुआ इसलिए कि गई थी कि लोगों को ये समझ में आये कि गुनाह और गुनाहगारी का नतीजा क्या होता है।

قَالَ قَدْ أُجِيبَت دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيمَا وَلَا تَتَّبِعَانِّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ {89}

फरमाया तुम दोनों की दुआ क़ुबूल की गई तो तुम दोनों साबित कदम रहो और नादानों की राह पर न चलो (८९)

व्याख्या:- क़ूदरत या अल्लाह की तरफ से ये वादा है कि गुनाहगारों को सजा जरूर मिलेगी। इस लिहाज से नेक और परहेजगार लोगों को अपने असुलों पर कायम रहकर सच्चाई के रास्ते पर चलते हुए गुनाह को त्याग दे और जो लोग गुनाह का रास्ता इख्तियार करते है वो अज्ञानी है।

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَائِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدْوًا حَتَّى إِذَا أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ آمَنتُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنَتْ بِهِ بَنُو إِسْرَائِيلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِينَ {90}

और हमने बनी इसराइल को दरिया के उस पार कर दिया फिर फिरआऊन और उसके लश्कर ने सरकशी की और शरारत से उनका पीछा किया-यहाँ तक कि जब वह डूबने लगा तो कहने लगा कि जिस अल्लाह पर बनी इसराइल इमान लाए है मै भी उस पर ईमान लाता हूँ उससे सिवा कोई माबूद नही और मै फरमाबरदार बन्दों से हूँ (९०)

व्याख्या:- मुसा की कोम यानी बनी इसराइल को तकलीफों का समुद्र पार करवाकर फिरौन और उनके मानने वालों को एक मिशाल दिखाई और मिशाल से डरकर फिरौन और उनके लोगों ने मुसा के लोगों का पीछा किया उन्हें तकलीफ और जुल्म देने के मकसद से लेकिन वे खुद बदसकुनी और तकलीफों के समुद्र में डूब गये। इस हालात में फिरौन और उनके लोगों ने ईमान लाने की बात की।

آلْآنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ {91}

अब के वक़्त ईमान लाता है हालाँकि इससे पहले तो नाफ़रमानी कर चुका और तू तो फ़सादियों में से था (९१)

व्याख्या:- तो सवाल ये है कि इस वक्त ईमान लाने के बजाये अगर पहले इस बात को समझ जाते तो उनके लिए बेहतर होता।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَنْ خَلْفَكَ آيَةً وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ {92}

तो हम आज तेरी रुह को तो नही तेरे बदन को बचाएँगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए इबरत का हो और इसमें तो शक नही कि तेरे लोग हमारी निशानियों से यक़ीनन बेख़बर है (९२)

व्याख्या:- वक्त बीत जाने के बाद और गुनाह जब इंसानी समाज में बढ़ जाता है तब अगर अल्लाह ताला गुनेहगारों को निजात देते तो जरूर लोगों में गलत पैगाम पहुँचेगा। इस लिहाज से अल्लाह ताला कभी भी इंसानी समाज में ये न इंसाफी नहीं करेगा और इस असुल के तहत अल्लाह हद पार करने वाले गुनहगारों को सजाये मौत देते है।

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ مُبَوَّأَ صِدْقٍ وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا اخْتَلَفُوا حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ {93}

और हमने बनी इसराइल को बहुत अच्छी जगह बसाया और उन्हें अच्छी अच्छी चीजें खाने को दी तो उन लोगों के पास जब तक इल्म न आ चुका उन लोगों ने एख़्तेलाफ़ नहीं किया इसमें तो शक ही नहीं जिन बातों में ये बाहम झगड़े रहे है क़यामत के दिन तुम्हारा परवरदिगार इसमें फैसला कर देगा (९३)

व्याख्या:- और अल्लाह ने बनी इसराइल को (फिरौन और उसकी कोम के खातमे के बाद) यानी मिश्र को एक खुबसुरत और अमनोचैन वाला मकाम बनाया और इसे अच्छी नसल और बेहतर जिन्दगी जीने का साज व समान मुहइया करवाया और इसमें कोई दो बाते नही है कि उनकी कोम को ज्ञान और अलामात से नवाजा। मुसा की सम्प्रदाय में से कुछ लोग जिन्होंने असुलों के मामले में शक जाहिर किया था उनका फैसला आखिरत में जरूर हो जाएगा।

فَإِن كُنتَ فِي شَكٍّ مِّمَّا أَنزَلْنَا إِلَيْكَ فَاسْأَلِ الَّذِينَ يَقْرَؤُونَ الْكِتَابَ مِن قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ {94}

पस जो क़ुरान हमने तुम्हारी तरफ नाज़िल किया है अगर उसके बारे में तुम को कुछ शक हो तो जो लोग तुम से पहले से किताब पढ़ा करते है उन से पूछ के देखों तुम्हारे पास यक़ीनन तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से बरहक़ किताब आ चुकी तो तू न हरगिज़ शक करने वालों से होना (९४)

व्याख्या:- अगर लोगों को मुसा या किसी भी पैगम्बर के असुलों पर शक हो तो जरूर वो कूदरत मौजूदा हालात और ऐतिहासिक सबुतों पर नजर दोड़ाये तो उन्हें जरूर सच्चाई का दीदार होगा और ऐसे लोगों को किसी भी तरह की दुविधा नहीं होगी।

وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونَ مِنَ الْخَاسِرِينَ {95}

न उन लोगों से होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया तुम भी घाटा उठाने वालों से हो जाओगे (९५)

व्याख्या:- और ऐसे लोगों का साथ नही देना चाहिए जो अल्लाह के असुलों को और अल्लाह के कानून को जो इंसान और इंसानी समाज को दिये है उसे तोड़े या उसे बिगाड़े।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ {96}

इसमें शक नहीं कि जिन लोगों के बारे में तुम्हारे परवरदिगार को बातें पूरी उतर चुकी है (९६)

व्याख्या:- बेशक जो इंसान गुनाह को अपना मकसद बना लेते है वो कभी भी ईमान नहीं लाएंगे।

पैगाम:- अल्लाह की मर्जी से ही कुछ लोग इंसानी समाज में ऐसे भी होते है जो सच्चाई को नही समझते और दिमाग में जिद पाल कर गुनाह करते रहते है और ये अल्लाह की मर्जी से ही है ताकि इंसान को मुखतलीफ किस्म की जिन्दगी मिले और इसे विरानियत महसूस न हो।

وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ {97}

वह लोग जब तक दर्दनाक अज़ाब देख न लेगें इमान न लाएँगें अगरचे इनके सामने सारी मौजिज़े आ मौजूद हो (९७)

व्याख्या:- अपनी जिद और अहंकार में आकर कुछ लोग ऐसे भी होते है कि किसी भी सुरत में वो सच्चाई को कबुल नहीं करते चाहे जितना भी सबुत उन्हें क्यों न दिया जाए। नतीजे के तौर पर उन्हें आखिरी दम तक आजाब भुगतना पड़ता है।

فلولا كانت قرية آمنت فنفعها إيمانها إلا قوم يونس لما آمنوا كشفنا عنهم عذاب الخزي في الحياة الدنيا ومتعناهم إلى حين {98}

कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुयी कि इमान कुबूल करती तो उसको उसका इमान फायदे मन्द होता हाँ यूनुस की क़ौम जब इमान लाई तो हमने दुनिया की ज़िन्दगी में उनसे रुसवाई का अज़ाब दफा कर दिया और हमने उन्हें एक ख़ास वक़्त तक चैन करने दिया (९८)

व्याख्या:- सच्चाई बताने वाले के मेहनत के अलावा कोई भी सच्चाई समाज में खुद ब खुद कायम नहीं होती यानी सच्चाई को कबुल करवाने में और कु-संस्कार से इंसानियत को आजाद करवाने में तमाम नेक इंसान कुरबान हुए। पैगम्बर युनुस की कोम की मिशाल दी जा सकती है। जब उसकी कोम वाले ईमान लाए तब उन्हें दुनियावी तकलीफो से निजात मिली और सुकुन की जिन्दगी अता हुई थी।

ولو شاء ربك لآمن من في الأرض كلهم جميعا أفأنت تكره الناس حتى يكونوا مؤمنين {99}

और अगर तेरा परवरदिगार चाहता तो जितने लोग रुए ज़मीन पर हैं सबके सब इमान ले आते तो क्या तुम लोगों पर ज़बरदस्ती करना चाहते हो ताकि सबके सब इमानदार हो जाएँ हालाँकि किसी शख़्स को ये एख़्तेयार नहीं (९९)

व्याख्या:- ख्यालात और असुलों का इखतलाफात इंसान की कूदरती फितरत है और अगर अल्लाह चाहता तो दुनिया का हर इंसान एक ही सोच के मालिक होते यानी ईमान लाते। क्या इंसान के पास ये हक है? कि अपनी सोच को कायम करने के लिए किसी दूसरे इंसान के साथ जबरदस्ती करें।

وما كان لنفس أن تؤمن إلا بإذن الله ويجعل الرجس على الذين لا يعقلون {100}

कि बग़ैर खुदा की इजाज़त ईमान ले आए और जो लोग अक़्ल से काम नहीं लेते उन्हीं लोगों पर खुदा की गन्दगी डाल देता है (१००)

व्याख्या:- यकीनन अल्लाह की मर्जी के बगैर किसी का ईमान नामुमकिन है और अल्लाह जाहिलों को जहलियत जैसी नापाकी में कायम रखते है।

قل انظروا ماذا في السماوات والأرض وما تغني الآيات والنذر عن قوم لا يؤمنون {101}

तुम कहा दो कि ज़रा देखों तो सही कि आसमानों और ज़मीन में क्या कुछ है और जो लोग ईमान नहीं कुबूल करते उनको हमारी निशानियाँ और डरावे कुछ भी मुफीद नही (१०१)

व्याख्या:- लोग ये समझ ले और सोच कर देखे क्या-क्या चीजे सृष्टि में मौजूद है फिर भी वो ईमान नहीं लाते और ईमान नही लाने वालों को कोई भी सबुत या किसी किस्म का डर ईमान लाने पर मजबूर नहीं कर सकता (क्योंकि ये अल्लाह का फैसला है)।

فهل ينتظرون إلا مثل أيام الذين خلوا من قبلهم قل فانتظروا إني معكم من المنتظرين {102}

तो ये लोग भी उन्हें सज़ाओं के मुन्तिज़र है जो उनसे क़ब्ल वालो पर गुज़र चुकी है कह दो कि अच्छा तुम भी इन्तज़ार करो मै भी तुम्हारे साथ यक़ीनन इन्तज़ार करता हूँ (१०२)

व्याख्या:- सच्चाई को कबूल न करने वाले अपने पुराने ख्यालात के नतीजा का इंतजार करते है और सच्चाई समझने वाले भी इंतजार करते है अपने नतीजे का।

ثم ننجي رسلنا والذين آمنوا كذلك حقا علينا ننج المؤمنين {103}

फिर हम अपने रसूलों को और जो लोग ईमान लाए उनको बचा लेते है यूँ ही हम पर लाज़िम है कि हम इमान लाने वालों को भी बचा लें (१०३)

व्याख्या:- इंसानी समाज में जितने भी गुनाह का इजाफा क्यों न हो रसुल और ईमान वालों की मौजूदगी जरूर होती है और उनकी हिफाजत और निजात अल्लाह की जिम्मेदारी है।

पैगाम:- ईमान वालों की मौजूदगी दुनिया के हर कोने में है और इसके लिये दुनिया कायम है जब दुनिया में ईमान और ईमान वालों का खात्मा हो जाएगा तो यकीनन दुनिया फना हो जाएगी।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنتُمْ فِي شَكٍّ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَفَّاكُمْ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ {104}

तुम कह दो कि अगर तुम लोग मेरे दीन के बारे में शक में पड़े हो तो खुदा के सिवा तुम भी जिन लोगों की परसतिश करते हो मै तो उनकी परसतिश नही करने का मगर मै उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें उठा लेगा और मुझे तो ये हुक्म दिया गया है कि मोमिन हूँ (१०४)

व्याख्या:- गुनाह और झुठे असुलों पर कायम रहने वाले सच्चाई, नेकी, परहेजगारी, शिक्षा, मोहब्बत, अहिंसा और शांति पर चलने वालों के असुलों पर शक जाहिर करते है। नेकी और बदी की लड़ाई इंसानी जमीर से शुरू होती है और सृष्टि के शुरूआत से ही ये लड़ाई जारी है। फसादी फितरत नेक असुलों के फायदों को समझने नही देती और नेक पवित्र लोग सच्चे सुकुन और मोहब्बत वाले सोच पर कायम रहते है।

وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ {105}

ये भी कि बातिल से कतरा के अपना रुख़ दीन की तरफ कायम रख और मुशरेकीन से हरगिज़ न होना (१०५)

व्याख्या:- नेकी, परहेजगारी, मोहब्बत, अहिंसा, शिक्षा, इंसानियत और शांति (दीन) पर कायम रहे और इन असुलों के साथ जिये और हरगिस अपवित्र (मुशिरकों) सोच को न अपनाए।

وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِن فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظَّالِمِينَ {106}

और अल्लाह को छोड़ ऐसी चीज़ को पुकारना जो न तुझे नफा ही पहुँचा सकती है न नुक़सान ही पहुँचा सकती है तो अगर तुमने किया तो उस वक़्त तुम भी ज़ालिमों में होगे (१०६)

व्याख्या:- ऐसे असुलों की फरमाबरदारी न करो जिसका कोई पवित्र नतीजा न निकले और जो ऐसा करेगा वो समाज को क्षति पहुँचाएगा।

पैगाम:- ये आयत अगर मूर्ति पूजा की तरफ इशारा करती है तो उसमें कुछ सवाल आते है---

१. इंसान की इबादत निजी फायदे के लिए है जैसे की अगर कोई मूर्ति के सामने बैठकर इबादत करता है तो उससे उसे सुकुन मिलता है। मूर्ति को भगवान मानने वाले मूर्ति से डरते भी है और गुनाह नही करते क्या ये समाज के लिए फायदेमंद नही है?

और जो लोग गैब पर ईमान लाते है क्या गैब खुद आकर उनकी मदद करते है?

नुकसान या फायदा जो भी उन्हें मिलता है वो सारा कूदरत की तरफ से मिलता है और कूदरत अल्लाह की ताकत के द्वारा ही चलती है। इस ताकत की इबादत का मतलब ये नहीं कि उस ताकत के नाम के आगे घुटने टेक कर, या सजदा करके या उसकी तारीफ करके इबादत की जाए। ''गैब'' की इबादत का मतलब ये है कि कूदरत के उन सारे असुलों को अपनाना जो इंसान और इंसानियत को फायदा पहुँचाते है।

मूर्ति हो या चौकोर इमारत या किसी की कब्र सब अल्लाह की मर्जी से दुनिया में मौजूद है और इन्हें इंसान के दिमगा की उची ख्वाहिसात को ठंडा करने का मुकाम बनाया अगर ये सब नहीं होते तो इंसान अपनी उची ख्वाहिसात और लालच में आकर आपस में लुटमार और कत्ल जैसे घिनौने काम करते और समाज को बिगाड़ते रहते।

وَإِن يَمْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِن يُرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَن يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ {107}

और अगर अल्लाह की तरफ से तुम्हे कोई बुराई छू भी गई तो फिर उसके सिवा कोई उसका दफा करने वाला नही होगा और अगर तुम्हारे साथ भलाई का इरादा करे तो फिर उसके फज़ल व करम का लपेटने वाला भी कोई नहीं वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे फायदा पहुँचाएँ और वह बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है (१०७)

व्याख्या:- और अगर अल्लाह तुम्हें कोई नुकसान पहुँचाना चाहे तो कोई उसे रोक नहीं सकता और अगर अल्लाह तुम्हारा भला करना चाहे तो कोई इसको रोकने वाला नहीं और अल्लाह जैसा चाहे अपने बंदो पर फजल करता है।

पैगाम:- उपर में बयान किये गये इबादत के तरीकात और मुकाम के बारे में जो ख्यालात कूदरत के तरफ से मुझे (सिद्धार्थ चटर्जी) मिले ये आयत उसका सबुत बयान करती है।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدَى فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِوَكِيلٍ {108}

तुम कह दो कि ऐ लोगों तुम्हारे परवरदिगार की तरफ से तुम्हारे पास हक़ आ चुका फिर जो शख़्स सीधी राह पर चलेगा तो वह सिर्फ अपने ही दम के लिए हिदायत एख़्तेयार करेगा और जो गुमराही एख़्तेयार करेगा वह तो भटक कर कुछ अपना ही खोएगा और मै कुछ तुम्हारा ज़िम्मेदार तो हूँ नहीं (१०८)

व्याख्या:- इल्म और ज्ञान, मोहब्बत, इंसानियत, नेकी, परहेजगारी, अहिंसा और अमनोसकुन को अपनाना ही सच्चा मजहब है। और इसकी बुनियाद पर ही इंसान के अमाल बनते है और वो ही सच्चा मजहबी होता है और यही सही रास्ता है।

अल्लाह के हुकुम से ही मै (सिद्धार्थ चटर्जी) लोगों को बता रहा हूँ और जो इसके खिलाफ है वो गलत रास्ते पर है और वही गुनेहगार और काफिर है। ये साफ और सीधी बात है और इन असुलों पर किसी की कोई जिम्मेदारी नही। इबादत के तरीकात और सम्प्रदाय के नाम पर जो फसाद करते है वो अत्याचारी और अधार्मिक है। लड़ाई तो सिर्फ पाप के विरूद्ध जायज है और यही अल्लाह का हुकुम भी।

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَى إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّى يَحْكُمَ اللَّهُ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ {109}

और तुम्हारे पास जो 'वही' भेजी जाती है तुम बस उसी की पैरवी करो और सब्र करो यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हारे दरम्यिान फैसला फरमाए और वहतो तमाम फैसला करने वालों से बेहतर है (१०९)

व्याख्या:- सच्चे असुलों पर कायम रहने वाले अल्लाह की मर्जी से अपने असुलों पर कायम रहे और सब्र करें अल्लाह का फैसला आने तक, अल्लाह के काम को या उनके फैसले को अपनी जिम्मेदारी समझने की भुल न करें।

पैगाम:- पैगाम पहुँचाने के अलावा मेरी (सिद्धार्थ चटर्जी) और कोई जिम्मेदारी नहीं, कौन समझेगा या कौन नहीं, ये अल्लाह की मर्जी है।